राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६ पटना-६

भगवती चरण वर्मा

श्री भगवतीचरण वर्मा १९६८

प्रथम संस्करण | १९६८

मूल्य | रु० १५.००

प्रकाशक | राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०, दिल्ली ६

मुद्रक | नवीन प्रेस, दिल्ली ६

आवरण | रिफार्मा स्टुडियो दिल्ली

पहला खण्ड

१

यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी से लौटकर जगतप्रकाश ने स्टोव जलाया और चाय के लिए पानी चढा दिया। यह नित्य चार बजे शाम को स्टोव जलाना और फिर चाय के लिए पानी चढाना उसकी आदत है। यही नही, चाय का पानी चढाकर अपनी चारपाई पर बैठ जाना और बैठकर थोडी देर चुपचाप सोचना यह भी उसकी आदत है। चाय का पानी उबलने मे प्राय पन्द्रह मिनट लगते हैं और इन पन्द्रह मिनटो मे उसने दिन भर क्या किया है और उसे अगले दिन क्या करना है, इस सब पर शान्तिपूर्वक सोचने की काफी फुरसत मिल जाया करती है, क्योंकि उसके पास समय का कुछ अभाव है, दिन-भर उसे व्यस्त रहना पडता है। वैसे समय का अभाव उसके पास न होना चाहिए था, क्योकि उसने अर्थशास्त्र में एम० ए० पास कर लिया था और उसे एम० ए० मे फर्स्ट क्लास मिला था, लेकिन जगतप्रकाश ने रिसर्च करना आरम्भ कर दिया था, क्योकि उसे रिसर्च स्कॉलरशिप मिल गया था। जगतप्रकाश दुनिया का एक विशिष्ट अर्थशास्त्री बनना चाहता था और इसके लिए उसे अध्ययन करना था। असीमित एव अथाह ज्ञान के क्षेत्र मे उसने अपने को एक प्रकार से खो दिया था। उसके जीवन का सारा समय इसी ज्ञान की प्राप्ति के लिए अर्पित था।

चारपाई पर बैठा हुआ वह सोच रहा था और उसे अचानक ही याद आ गया कि आज बृहस्पति है। और वैसे ही उसने दरवाजे की ओर देखा। दरवाजे से कुछ दूर हटकर कोने म पडे हुए पत्र पर उसकी नजर पडी, एक हल्की मुस्कराहट के साथ उठकर उसने वह पत्र उठाया। नियमित रूप से हरेक बृहस्पतिवार को दोपहर की डाक से उसे अनुराधा का पत्र मिलता था,

अगर इसमे कभी कोई व्यतिक्रम हो जाता था तो डाक-विभाग की लापर-वाही के कारण, अनुराधा के कारण नही। बडी निश्चिन्तता के साथ उसने वह पत्र उठाया था, किसी तरह की उत्सुकता नही थी उसके अन्दर, किसी भी तरह का उतावलापन नही था उसके उठकर पत्र उठाने म। एक शान्त, स्निग्ध, पुलक भर था, जैसे थोडी देर के लिए स्वय अनुराधा आ गई हो उसके सामने, उससे बात करने के लिए, उस पर अपनी ममता उँडेलने के लिए।

अनुराधा जगतप्रकाश की बडी बहन थी, और अनुराधा के सिवा उसका कोई आत्मीय भी तो नही था दुनिया म। और अनुराधा का भी सिवाय जगतप्रकाश के और कोई नही था। बस्ती जिले के एक छोटे से गाव महोना मे अनुराधा रहती थी, नितान्त अकेली। पन्द्रह साल पहले जब विधवा होकर वह महोना मे अपने पिता के पास लौटी थी, उसकी अवस्था प्राय अठारह साल की थी। केवल एक साल उसने वैवाहिक सुख या दुख—उसे जो भी कहा जाए—भोगा था, और जब उसके विधवा होने के छ महीने बाद उसके ससुराल वालो ने उसे अपने यहा से एक तरह से निकालकर उसके पिता के घर भेजा था, तब उसके मन मे न किसी तरह का विषाद था, न किसी तरह की कसक। उसके पिता सत्यप्रकाश महोना मे सरकारी मिडिल स्कूल के अध्यापक थे, साथ ही उनकी बारह बीघे की खेती भी थी। खेती उन्होने बटाई पर उठा रखी थी। पिता के घर मे आते ही अनुराधा ने खेती अपने हाथ मे ले ली थी और गाय भैंसें भी पाल ली थी। अनुराधा के महोना मे आने के बाद सत्यप्रकाश की आर्थिक अवस्था अच्छी हो गई थी, लेकिन बेटी के वैधव्य तथा बेटी के प्रति उसके ससुराल वालो के दुर्व्यवहार से उसकी माता को गहरा आघात लगा और लडकी के घर आने के एक साल के अन्दर ही अनुराधा की माता की मृत्यु हो गई।

जगतप्रकाश की माता का स्थान अब उसकी बडी बहन अनुराधा ने ले लिया था। गेहुँए रग की लम्बी-सी और तगडी-सी स्त्री जो सुन्दर तो किसी हालत मे नही कही जा सकती थी, एक साल के अन्दर वज्र की तरह कठोर बन गई थी। उसके शरीर मे कठोरता थी, उसकी वाणी मे कठोरता थी। उसके मुख पर कठोरता थी, उसकी आत्मा मे कठोरता थी—और एक तरह

से यह भी कहा जा सकता है कि उसके मन मे कठोरता थी—जैसे जीवन उसके लिए अनवरत संघर्ष रहा हो। रोज़ सुबह चार बजे उठती थी और रात के दस बजे तक वह काम करती रहती थी। गाव वाले उससे डरते थे, उसके पिता तक उससे डरते थे। अगर कोई उससे नही डरता था तो वह था जगतप्रकाश। और अगर सच कहा जाए तो वह स्वय जगतप्रकाश से बेतरह डरती थी। उसकी ममता का एकमात्र केन्द्र बिन्दु जगतप्रकाश था, जगतप्रकाश की सुख सुविधा ही उसकी समस्त सुख-सुविधा थी।

जगतप्रकाश मे बुद्धि थी, यह बुद्धि प्रतिभा कही जा सकती थी। हिन्दी मिडिल की परीक्षा मे उसे प्रदेश मे दूसरा स्थान मिला, और आगे पढने के लिए सत्यप्रकाश ने उसे बस्ती के हाई स्कूल मे भरती करवा दिया। वहा वह बोर्डिंग हाउस मे रहता था, जिससे सत्यप्रकाश का खर्च कुछ बढ गया था। लेकिन अनुराधा के कारण उनकी आय भी तो बढ गई थी। जगतप्रकाश को छात्रवृत्ति भी मिलती थी।

जिस साल जगतप्रकाश ने हाई स्कूल की परीक्षा दी, उस साल की गर्मिया मे हैज़े का एक भयानक प्रकोप पूर्वी उत्तर प्रदेश मे आया। सत्यप्रकाश दूसरो को बचाने के प्रयत्न मे स्वय हैज़े के शिकार हुए, और जगतप्रकाश स्तब्ध-सा रह गया अपने पिता की इस आकस्मिक मृत्यु से। लेकिन अनुराधा पर मानो पिता की मृत्यु का कोई खास असर न पडा हो। अपने छोटे भाई से उसने पिता का क्रिया-कर्म करवाया, पूरी तौर से उसने पिता के अन्त्येष्टि-सस्कार पर खर्च भी किया। चौदह वर्ष का बालक जगतप्रकाश भारी मन और उदास भाव से मशीन की भाति सब-कुछ कर रहा था। उसकी समझ मे न आ रहा था कि यह सब क्यो हो गया, कैसे हो गया। चौबीस-पच्चीस वर्ष की अनुराधा और भी अधिक कठोर बन गई थी। उसकी आँख सूखी थी, उसके दात भिचे हुए थे। जो कुछ सामने आता है उसे स्वीकार करना पडेगा, हँसकर या रोकर, उससे कोई छुटकारा नही। एक रास्ता बन्द हुआ तो दूसरा रास्ता बनाना पडेगा। जब तक वह ज़िन्दा है तब तक वह हार नहीं मानेगी।

जून के अन्तिम सप्ताह मे हाई स्कूल का परीक्षा फल निकला और जगतप्रकाश को प्रदेश मे चौथा स्थान मिला। परीक्षा फल पाकर

जगतप्रकाश के मन मे किसी प्रकार की प्रसन्नता नही हुई, जैसे उसके मन मे किसी तरह का उत्साह ही न रह गया हो। एक महीना पहले ही तो उसके पिता की मृत्यु हुई थी। लेकिन अनुराधा का मन अभिमान से भर गया, एक अजीब तरह का उल्लास और पुलक उसमे जाग उठा था। उसने देवी-देवताओ पर प्रसाद चढाया, और रात के समय अपने भाई के पास बैठकर जगतप्रकाश के आगे पढने की योजना बनाई। वह जगतप्रकाश को सबसे ऊँचे अफसर के रूप मे देखना चाहती थी जिससे सब लोग डरें, जिसके आगे दुनिया झुके। अनुराधा ने सुन रखा था कि ऊँची शिक्षा का सबसे बडा केन्द्र इलाहाबाद है, और अनुराधा ने जगतप्रकाश से आग्रह किया कि वह इलाहाबाद जाकर पढे। उसे हाई स्कूल की छात्रवृत्ति मिलेगी, बाकी खर्चा वह किसी-न-किसी तरह नियमित रूप से भेजती रहेगी। जगतप्रकाश ने बहुत आनाकानी की, लेकिन अनुराधा अपने सकल्प पर जिद पकड गई। अनुराधा ने अब उसके पिता का स्थान भी तो ले लिया था।

जगतप्रकाश मे उसके पिता की सात्त्विक प्रवृत्तिया थी। वह सच्चरित्र था और मितव्ययी भी। एक हफ्ते बाद ही वह इलाहाबाद चला गया और गवनमेट इण्टरमीडिएट कालेज मे भरती हो गया। अनुराधा उसे नियमित रूप से बीस रुपया महीना मनीआडर से भेज देती थी और छात्रवृत्ति के रुपया की सहायता से उसका काम आसानी से चल जाता था।

इण्टरमीडिएट मे जगतप्रकाश को दूसरा स्थान मिला और उसने प्रयाग विश्वविद्यालय मे प्रवेश किया। वहा भी उसे छात्रवृत्ति मिली। बी० ए० मे वह प्रथम आया और इसके बाद अथशास्त्र लेकर प्रथम श्रेणी मे एम० ए० पास किया। उसके प्रोफेसर ने उसे रिसच स्कॉलरशिप दिलवाकर रिसच विभाग मे ले लिया, क्योकि उस समय अथशास्त्र विभाग म प्राध्यापक की कोई जगह खाली नही थी। दो साल बाद जब जगह खाली होगी, वह उसे प्राध्यापक बना लेंगे। जब तक उसकी डॉक्टरेट के लिए थीसिज़ भी तैयार हो जाएगी।

अगले साल उसकी थीसिज़ पूरी हो जाएगी और डेढ साल बाद—यानी अगस्त सन १९४० तक उसको यूनिवर्सिटी मे नौकरी भी मिल जाएगी। थीसिज़ के लिए खोज म उसका मन लग गया था। वह किसी पाश्चात्य

विश्वविद्यालय मे जाकर और अधिक ठोस काम करना चाहता था। लोगो ने उसे बतलाया कि अर्थशास्त्र मे, बर्लिन विश्वविद्यालय अद्वितीय है। अपने शोध-कार्य के साथ-साथ वह जर्मन और फ्रेंच भाषाएँ भी सीख रहा था। वह अच्छा भाषाशास्त्री न था, इसलिए इन दो भाषाओ को सीखने मे उसे काफी परिश्रम भी करना पड़ता था।

जगतप्रकाश ने अनुराधा का पत्र खोला और उसने वह पत्र पढ़ना आरम्भ किया। उस समय उसे लग रहा था जैसे उसकी बड़ी बहन अनुराधा उसके सामने खड़ी हुई उससे बातें कर रही है नपे-तुले शब्दो मे। इस बार आम मे अच्छा बौर आया है, दो गायें और बढ़ा ली हैं उसने। मकान के पीछे उसने एक पक्की कोठरी बनवाकर छवा ली है, बड़ी ठंडी और आरामदेह रहेगी वह गर्मियो मे। इस बार उसे गर्मियो मे महोना आना ही पड़ेगा, उसे महोना म किसी तरह का कष्ट नही होगा। महोना मे रहकर वह लिख पढ़ सकता है। अगर उसे रुपयो की ज़रूरत हो तो वह लिख दे, अनुराधा उसे रुपये भेज देगी। और जगतप्रकाश जो अपनी छात्रवृत्ति से बचाकर उसे पच्चीस रुपया महीना भेजता है, वे वैसे-के वैसे रखे हैं। आगे से वह घर मे रुपया न भेजे, घी, दूध, फलो पर वह यह रुपया खर्च करे, अच्छे-अच्छे कपड़े बनवा ले, आदि-आदि।

जगतप्रकाश पत्र पढ़ता जाता था और मुस्कराता जाता था, ठीक उसी तरह जिस तरह अनुराधा का उपदेश सुनने के समय वह मुस्कराया करता था। तभी उसका ध्यान स्टोव पर चढ़े हुए पानी पर गया जो उबल रहा था। अनुराधा का पत्र उसने तकिये के नीचे रख दिया, रात के समय वह उस पत्र का उत्तर लिखेगा। जिस दिन उसे अनुराधा का पत्र मिलता था, उसी दिन रात के समय वह उस पत्र का उत्तर लिख देता था, नियमित रूप से। और फिर उसने चाय बनाकर पी। चाय का प्याला मेज पर रखकर उसने घड़ी देखी—चार बज रहे थे।

मौसम काफी सुहावना था, सर्दी समाप्त हो गई थी, लेकिन गर्मी पड़नी अभी आरम्भ नही हुई थी। उस दिन दोपहर के समय ही उसे अपनी छात्र-वृत्ति मिली थी, मार्च की पाचवी तारीख थी न! और वह सोच रहा था कि बाजार जाकर अपने लिए गर्मी के कपड़े खरीदकर सिलने को दे दे। शाम

के ममय मर्दी वढ जाती है, सूती कपडे उतारकर वह ऊनी कपडे पहनने लगा। तभी उसके कमरे का दरवाजा खुला। चौंककर उसने दरवाजे की ओर देखा, कमलाकान्त खडा मुस्करा रहा था। उसे कमलाकान्त का स्वर सुनाई पडा, "तो चाय पी चुके ! बडी जल्दी की !"

"जल्दी तो नही की, तुम्ही को देर हो गई है आने म। तुम्हारे लिए चाय टी-पॉट मे रखी है।" उसने टी-पॉट की ओर इशारा किया, "चाय बना लो, तब तक मैं कपडे बदल लू। चौक जाना है कपडे खरीदने के लिए। चलो, तुम्हारा कोई दूसरा कार्यक्रम तो नही है?"

अपने लिए चाय बनाते हुए कमलाकान्त न कहा, 'अरे हाँ, अच्छी याद दिलाई। मुझे भी चौक चलकर खादी भण्डार से अपने लिए दो सेट खादी के कपडे खरीदने है।"

आश्चय के साथ जगतप्रकाश ने कमलाकान्त को देखा, "खादी के कपडा के दो सेट तुम अपने लिए लोगे? दिमाग तो ठीक है, आखिर बात क्या है?'

कमलाकान्त हँस पडा, 'न कोई खास बात है और न मेरा दिमाग खराब है। बात यह है कि बहुत दिनों से सोच रहा था कि खादी पहनना शुरू कर दू, मौके की तलाश मे था कि कब यह पुण्य काय आरम्भ किया जाए। तो वह मौका भी आखिर आ पहुँचा।" फिर किंचित् गम्भीर होकर वह बोला, "आज ५ माच है न ! ७ माच से त्रिपुरी कांग्रेस का सेशन आरम्भ हो रहा है। कल रात की गाडी से जबलपुर जाना है। वहा जाने के लिए कपडे लेने हैं। तो मुझे तुमसे कहना है कि तुम भी मेरे साथ जबलपुर चलो।"

जगतप्रकाश न उत्तर दिया, 'तुम तो जानते हो कि मुझे राजनीति मे ज़रा भी रुचि नही है। त्रिपुरी जाने का मतलब है समय की बरबादी, रुपयो की बरबादी। तो मुझे तो बख्शो !"

चाय का प्याला अपने होठो स लगाकर कमलाकान्त कुछ क्षणो तक जगतप्रकाश को देखता रहा। चाय खत्म करके वह बोला, "समय की बरबादी, रुपया की बरबादी। और इन दो बरबादियो के ऊपर दो बर-बादियाँ और हैं जीवन की बरबादी, मनुष्य की बरबादी। चारो तरफ बरबादी-ही-बरबादी दीखेगी। इस कमरे म बन्द, किताबो से चिपके हुए जीवन और गति मे दूर नही, विमुख। पता नही इस तुम अपने अन्दर वाल

मनुष्य की बरबादी कहोगे या नही, तुम इसे अपने जीवन की बरबादी समझोगे या नही ?"

उत्तर जैसे जगतप्रकाश के पास तैयार था, "जो चीज मेरे जीवन मे नही है उसमे रुचि लेना, मैं तो इसे जीवन की बरबादी समझता हूँ। राजनीति के मायाजाल मे फँसकर मैं अपने माग से हट जाऊँ, अपने जीवन का लक्ष्य छोड दू, यह तो मुझे युक्तिसगत नही दीखता, यह करना मेरे जीवन की बरबादी का रास्ता अपनाना होगा। नही कमलाकान्त, मैं जबलपुर नही जाऊँगा, मुझे अपने जीवन की तैयारी करनी है। मैंने अपना एक रास्ता बना लिया है, उसी रास्ते पर चलकर मुझे सफलता प्राप्त करनी है।"

कमलाकात ने उठते हुए कहा, "पता नही गुलाम का कोई अपना निजी रास्ता होता है, अपना निजी जीवन होता है! तुम अथशास्त्र म डॉक्टरेट ले रहे हो, शायद विदेश जाकर तुम यहा से भी अधिक महत्त्वपूण डॉक्टरेट लोगे। लेकिन उसके बाद? तुम किसी विश्वविद्यालय मे नौकरी करोगे, विदेशों से उधार लिये हुए अथशास्त्र के इन सिद्धान्तो को तुम अन्य भारतीय विद्यार्थियो पर आरोपित करोगे। और तुम्हारा अथशास्त्र का यह ज्ञान सच्चा है या झूठा है, तुम्हे इस बात को परखने का मौका नही मिलेगा, क्योकि तुम्हारे देश की अथव्यवस्था विदेशियो के हाथ मे है। जो गुलाम है उसका न कोई व्यक्तित्व है, न कोई जीवन है। उसका समस्त ज्ञान व्यग्य है, उसकी समस्त भावना कुण्ठाग्रस्त है।" कमलाकान्त ने जगतप्रकाश के साथ कमरे से निकलते हुए कहा, "मैं कहता हूँ जगतप्रकाश, अपने से ऊपर उठकर या फिर यह कहना अधिक ठीक होगा कि अपने को इस विवशता की स्थिति से कुछ समय के लिए ऊपर उठाकर बाहर के जीवन को देखो, उसे समझो और पहचानो। मैं तुमसे कह रहा हूँ कि त्रिपुरी का यह अधिवेशन बहुत महत्त्वपूण होगा।"

जगतप्रकाश ने अपने कमरे मे ताला लगाया और दोनो होस्टल के बाहर निकले। जगतप्रकाश ने कमलाकान्त की बात का कोई जवाब नही दिया, यह कुछ सोचता हुआ अपने साथी को बडे ध्यान मे देख रहा था। चाइना सिल्क का कीमती सूट पहने हुए यह कमलाकान्त, जिसके मुँह से कीमती सिगरट लगी हुई थी, जो तीन साल से यूनिवर्सिटी मे रिसच कर रहा

था लेकिन जिसकी थीसिज अभी आधी भी नहीं हो पाई थी, जिसके पिता इटावा जिला में एक बहुत बडे जमींदार थे और वह अपने लडके को दो सौ रुपया महीना पढने के लिए या मौज करने के लिए भेज दिया करते थे, वह कमलाकान्त यह सब कह रहा था, शायद उसे यह सब कहना शोभा भी देता था। यूनिवर्सिटी रोड के चौराहे पर एक तागा खडा था। जगतप्रकाश से कमलाकान्त ने कहा, "चलो, यही पर तागा मिल गया, कटरा तक पैदल नहीं चलना पडा।" और दोनो तागे पर बैठ गए। तागा चल रहा था और कमलाकान्त कह रहा था, "जगत, मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि तुम मेरे साथ जबलपुर चलो। खर्च की कोई चिन्ता न करना, मैं तुम्हे अपने साथ लिए चल रहा हूँ। तुम मेरे अतिथि के रूप म रहोगे। आज देश एक भयानक बेहोशी की हालत मे पडा है, कही कोई जीवन नही नजर आता। प्रान्तो म भारतीयो को मिनिस्टर बना दिया गया है, लेकिन यह सब ढोग है। सत्ता तो इन प्रान्तो के अग्रेज गवनरो के हाथ मे है जो ब्रिटिश नौकरशाही के प्रमुख ह। और ये हिन्दुस्तानी मिनिस्टर! ये ब्रिटिश साम्राज्यवाद को अतिशय शक्तिशाली बनाने के साधन-भर हैं, ये लोग निरे गुलाम हैं जिन्ह ब्रिटिश सरकार के बतलाए हुए रास्तो पर चलना है। ये कांग्रेस सरकारें! ये मखौल हैं!"

जगतप्रकाश को कमलाकान्त की बातो मे मजा आने लगा था, उसने कहा, लेकिन देश मे स्वतन्त्रता-सग्राम चलाने वाली एकमात्र सस्था तो यह काग्रेस है, और अगर काग्रेस ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद की कठपुतली बन गई तो देश की स्थिति नितान्त निराशाजनक हो जाएगी। मैं तो समझता हूँ कि महात्मा गाधी के नेतृत्व मे काग्रेस ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हाथ मे कठपुतली नही बन सकती।"

कमलाकान्त मुसकराया, "तुम ही नही, देश के करोडो आदमी ऐसा ही समझते है और इसीलिए देश की नवीन चेतना कुण्ठित और रुद्ध हो रही है। गाधी के दो बडे आन्दोलनो से हमे मिला कुछ भी नही, बल्कि एक बहुत बडा विग्रह देश मे आ गया है। जगतप्रकाश, इतना समझ लो कि हमारा वतमान नेतृत्व ह्रासोन्मुख है, मनुष्य की बढती हुई उम्र के साथ उसका विकास रुक जाता ह। गाधी का काम पूरा हो चुका, जब गाधी के

नेतृत्व मे देश उन्नति नही कर सकता। देश का नेतृत्व किसी जवान आदमी के हाथ मे आना चाहिए। त्रिपुरी काग्रेस मे चलकर हमे यह देखना है कि क्या यह देश का नेतृत्व जवान आदमियो के हाथ मे आएगा या उन्ही बूढे लोगो के हाथ मे रहेगा जो थके हारे हैं, जिनकी आन्तरिक प्रेरणा समाप्त हो चुकी है, जो अपने को किसी तरह से घसीट रहे है, जिनमे सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होती जा रही है, या फिर उन युवा नेताओ के हाथ मे है जिनकी जीवनी-शक्ति उन्हे लडने को प्रेरित कर रही है जो युग की गति-विधियो के साथ है।"

"लेकिन हमारे देश मे *यह नवीन नेतृत्व है कहा?*" जगतप्रकाश ने पूछा, "युवा नेताओ मे जवाहरलाल नेहरू का नाम लिया जा सकता है, और जवाहरलाल समाजवादी है, उनके इर्द गिर्द नवयुवक नेताओ का जमाव है। लेकिन जवाहरलाल का निर्माण महात्मा गाधी के हाथो हुआ है। क्या जवाहरलाल नेहरू गाधी को अलग हटाकर देश का नेतृत्व अपने हाथो मे ले सकते हैं? कम-से-कम मुझे तो ऐसी आशा नही है।"

ताँगा अब एल्फ्रेड पार्क पार कर चुका था। कमलाकान्त ने दूसरी सिगरेट सुलगाई, "नही, जवाहरलाल नेहरू से देश को कोई आशा नही रखनी चाहिए, जवाहरलाल गाधी का मानसपुत्र है, लोग यह जानते है—यह मानसपुत्र और मानसिक गुलाम एक ही है।" कमलाकान्त मुसकराया, "जो गुलाम है वह भला स्वतन्त्रता सग्राम किस तरह चलाएगा? नही, जवाहरलाल का प्रश्न नही है मेरे सामने। देश ने अपना नेता अनजाने ही चुन लिया है। वह नेता है सुभाषचन्द्र बोस। त्रिपुरी काग्रेस चलकर यह देखना है कि क्या वास्तव मे सुभाष के पास इतनी शक्ति और क्षमता है कि वह गाधी को अलग हटाकर उसका स्थान ले सके?"

इस बार जगतप्रकाश के मुसकराने की बारी थी, "या देश मे इतनी चेतना है कि वह गाधी को हटाकर सुभाष को अपना नेता मान ले। कमलाकान्त, सुभाष बाबू काग्रेस के सभापति इस बार जो चुन लिए गए वह गाधी की असावधानी के कारण। सुभाष के चुनाव मे यह न समझ लेना चाहिए कि देश ने महात्मा गाधी के नेतृत्व को छोड दिया है। महात्मा गाधी मृत्यु-पर्यन्त देश के नेता रहगे, क्योकि उनके पास अहिसा का सत्य है और अहिसा

ही हमारे देश को बचा सकती है। हिंसा का मार्ग अपनाकर देश असफलता का मार्ग अपना लेगा।"

कमलाकान्त ने गौर से जगतप्रकाश को देखा, "क्या तुम वास्तव में ऐसा समझते हो ? क्या तुम अहिंसा पर विश्वास करते हो ?"

जगतप्रकाश ने गम्भीर होकर कहा, "मैं क्या समझता हूँ या किस चीज पर मेरा विश्वास है यह मैं नही जानता, क्योंकि मैंने कभी इन प्रश्नो पर सोचा नही। लेकिन देश की जो हालत है, जिस अज्ञान और जिस आन्तरिक विद्वेष को हम युग-युग से अपने अन्दर समेटे रहे है, जिस घृणा और भेद भाव की नींव पर हमारा समाज कायम है, उसमें हिंसा की नीति अपना लेने से बहुत बडा विस्फोट हो सकता है। देश के कोटि-कोटि प्राणी इस विस्फोट के लिए तैयार नही है।"

तांगा अब चौक पर पहुँच गया था। तांगे से उतरकर कमलाकान्त ने तांगेवाले का किराया चुकाया, इसके बाद वह जगतप्रकाश के साथ खादी भण्डार की ओर बढा। लोगो की भीड लगी हुई थी वहा पर। त्रिपुरी कांग्रेस मे जाने की तैयारी मे अनगिनती लोग खादी के कपडे खरीदने के लिए दुकान पर आ रहे थे। जवान-बूढे, अमीर गरीब सभी थे वहाँ, और जगतप्रकाश ने कहा, "उफ कितनी भीड है ! क्या ये सभी लोग त्रिपुरी कांग्रेस जाएँगे ?"

"हाँ, ये सब लोग त्रिपुरी कांग्रेस जाएँगे, क्योंकि एक बहुत बडा यज्ञ हो रहा है वहा पर। देश के भाग्य को बनाने वाली शक्तिया एकत्रित हो रही है वहाँ और उस यज्ञ को देखने या उसमे भाग लेने के लिए देश के कोने-कोने से लोग इकट्ठा होगे।" कमलाकान्त काउटर की ओर बढा। दो खादी की धोतियाँ, और अपने नाप के दो खादी के कुरते उसने निकलवाए। इसके बाद उसने जगतप्रकाश के लिए दो धोतिया और दो कुर्ते निकालने को कहा।

जगतप्रकाश ने विरोध किया, "मैं नही चल रहा हूँ त्रिपुरी, मेरे लिए ये कपडे क्या निकलवा रहे हो ?"

'तुम चल रहे हो मेरे साथ !" दृढ आवाज मे कमलाकान्त ने कहा, तुमने जितनी बातें कही हैं व सब तर्कपूर्ण हैं, लेकिन तुम्हारा तर्क अधूरा है मेरे मत से। हम दोनों ही त्रिपुरी चलेंगे, वहा ठहरने की व्यवस्था की जिम्मेदारी मुझ पर। मैंने कहा न कि मैं तुम्हे अपने साथ त्रिपुरी लिए चल

रहा हूँ। चीजा को पढकर जानने और उन्ह देखकर जानने मे बडा फर्क होना है। मेरा आग्रह अस्वीकार न करो।"

और जैसे जगतप्रकाश मे कमलाकात के आग्रह को अस्वीकार करने की शक्ति न रही हो। "अच्छी बात है, मैं चलूगा तुम्हारे साथ। दो धोतियाँ, दो कुर्ते, दो गाधी टोपिया और इसके बाद एक जवाहर जैकेट। इतने कपडे मैं अभी लिए लेता हू, बाकी कपडे जबलपुर से लौटकर खरीदूगा।"

जगतप्रकाश जब चौक से लौटकर अपने कमरे मे आया वह स्वय अपने ऊपर आश्चय कर रहा था। कितनी आसानी स कमलाकान्त ने उसे त्रिपुरी चलने को राजी कर लिया था! लेकिन शायद यह सौदा महँगा नही था। दो साल के पहले यूनिवर्सिटी मे उसकी थीसिज स्वीकार नही होगी। तीन-चौथाई काम उसने कर लिया था और अभी सवा साल का समय उसे काटना था। यह समय त्रिपुरी मे बिताया जा सकता है, यह समय महोना मे बिताया जा सकता है, यह समय इलाहाबाद मे बिताया जा सकता है। और तभी उसने प्रथम बार यह अनुभव किया कि इधर उसने अपने अध्ययन मे कुछ आवश्यकता से अधिक परिश्रम किया है, उसे कुछ विश्राम की आवश्यकता है, शारीरिक नही मानसिक विश्राम की, और यह मानसिक विश्राम शायद उसे जबलपुर मे मिल जाए।

रात म खाना खाकर उसन अनुराधा को पत्र लिखा। वह मई के तीसरे सप्ताह मे महोना आएगा और जुलाई के दूसरे सप्ताह तक वह महोना म रहेगा। उसकी बहन कितनी प्रसन्न होगी यह खबर पाकर! और उसने अपनी बहन को यह भी लिख दिया कि वह दूसरे दिन एक सप्ताह के लिए जबलपुर जा रहा है तो उसके पत्र लिखने मे विलम्ब हो सकता है। और उसने अनुराधा को आदेश दिया था कि वह पिछले कमरे का फर्श पक्का सीमेण्ट का बनवा ले—पचास रुपए वह भेज रहा है।

सुबह जब वह सोकर उठा तो उसे याद आया कि रात के समय उसे कमलाकात के साथ जबलपुर जाना है। उसने अपनी बहन के नाम पचास रुपए मनीआर्डर से भेज दिए, फिर उसन जबलपुर चलन के लिए अपना सामान ठीक किया। उस दिन पढने मे उसका मन नही लगा, उसके मन की धारा ही बदल गई थी। चाय पीकर वह कमलाकात के कमरे मे पहुँचा।

कमलाकान्त के कमरे में उस समय दो व्यक्ति बैठे हुए उससे बातें कर रहे थे। इन दोनों व्यक्तियों को जगतप्रकाश ने पहले कभी नहीं देखा था। जगतप्रकाश कमरे के बाहर ठिठक गया और तभी कमलाकान्त ने उठकर जगतप्रकाश से कहा, "चले आओ—इन दोनों से तुम्हारा परिचय करा दूं। यह हैं श्री जसवन्त कपूर और यह दिल्ली के सिटी कालेज में राजनीति शास्त्र के लेक्चरर हैं। इनके पिता अमृतसर के सबसे बड़े कपड़े के थोक व्यापारी हैं। और यह हैं श्री त्रिभुवनदास मेहता। इनके पिता की बम्बई में विलायती मशीनों की तथा बिजली के सामान की ऑल इण्डिया एजेंसी है। अपनी फर्म की कानपुर में एक शाखा इन्होंने खोली है और वहां का कामकाज यह सम्हाल रहे हैं।' और फिर इन दोनों की ओर घूमकर उसने कहा, "यही श्री जगतप्रकाश हैं, जिन्हें अपने साथ जबलपुर चलने को मैंने राजी किया है। अर्थशास्त्र में यह इस विश्वविद्यालय में रिसर्च कर रहे हैं।"

जसवन्त कपूर दुबला-सा कोमल शरीर वाला युवा था। लेकिन उसके मुख पर एक प्रकार की दृढ़ता थी। गोरा सा आदमी सुन्दर आकृति और उसके व्यक्तित्व में एक प्रकार का आकर्षण। खादी का चूड़ीदार पाजामा और महीन खादी का कुरता और उसके ऊपर खादी सिल्क की शेरवानी। खादी की गांधी टोपी मेज़ पर रखी हुई थी। उसके हाथ में सोने की घड़ी थी और स्टेट एक्सप्रेस सिगरेट का टिन उसके सामने वाली मेज पर रखा था। जसवन्त की उम्र प्रायः सत्ताइस-अट्ठाईस साल की रही होगी।

त्रिभुवनदास मेहता भरे बदन का नाटा-सा आदमी था और उसकी अवस्था प्रायः पच्चीस वर्ष की रही होगी। उसका मुख गोल, आंखें बड़ी-बड़ी और रंग सांवले से कुछ खुलता हुआ था। वह खादी की महीन धोती और सिल्क का कुरता पहने था, उसके ऊपर पश्मीने की जवाहर जैकेट थी। सफेद गांधी टोपी उसके सर पर थी। जसवन्त कपूर ने उठकर जगतप्रकाश से हाथ मिलाया 'आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई, और मुझे इस बात में बड़ा सन्तोष है कि आप हम लोगों के साथ जबलपुर चल रहे हैं। हम लोगों को—यानी हम नौजवानों को इन बूढ़े और थके हुए लोगों के हाथ से नेतृत्व ले लेना चाहिए। आज देश का नेता सुभाषचन्द्र बोस है, कांग्रेस ने उसे चुना है, और हम लोगों को अपना पूरा सहयोग सुभाष बाबू को देना चाहिए,

यद्यपि सुभाष की नीतियों से मैं व्यक्तिगत रूप से सहमत नहीं हूँ।"

त्रिभुवन मेहता मुसकराया, और जगतप्रकाश को त्रिभुवन की मुसकराहट कुछ मीठी सी लगी, "सुभाष की असली नीति क्या होगी, इसका पता तो हम लोगों का तब लगेगा जब कांग्रेस की पूरी सत्ता सुभाषचन्द्र बोस के हाथ में आ जाए। अभी तक तो वह गांधी के दबाव में रहा है, इस बार वह गांधी की इच्छा को ठुकराकर अपने बल पर कांग्रेस का प्रेसीडेण्ट बना है और अब वह स्वतन्त्र रूप से अपनी नीतियों को अमल में ला सकेगा। अमल में हम लोगों का विरोध गांधी की पूंजीवादी और प्रगति की परम्परा से है। हम अपने देश में समाजवादी नेतृत्व चाहिए, लेकिन समाजवादी नेतृत्व को कायम करने के लिए हमें गांधी के हाथ से नेतृत्व छीनना पड़ेगा। पता नहीं सुभाष बाबू समाजवाद का प्रवर्तन करने में विश्वास करते हैं या नहीं, लेकिन सुभाष का विश्वास हिंसा में तो नहीं है। हमें अहिंसा के कायरता से भरे वातावरण से निकलना है।"

जगतप्रकाश आश्चर्य के साथ इन लोगों को देख रहा था। ये लोग हिंसा को अपनाने का दम भर रहे थे, ये लोग समाजवाद की हिमायत कर रहे थे—ये जो अच्छा खाते थे, जो अच्छा पहनते थे, जो सम्पन्न थे, अमीरी में पले थे। जगतप्रकाश को अपनी ओर आश्चर्य से देखते हुए देखकर जसवन्त कपूर मुसकराया, "मैं बतला सकता हूँ जगतप्रकाशजी कि आप क्या सोच रहे हैं। आप सोच रहे हैं कि हम लोग जो नगरों में ऐश-आराम की जिन्दगी बिता रहे हैं, हम लोग इस तरह की अनाप शनाप बातें क्या कर रहे हैं।" वह अब उन्मुक्त भाव से हँस पड़ा, "हम बात इसलिए करते हैं कि हम कर कुछ नहीं सकते। आपको यह जानकर शायद आश्चर्य होगा कि हम लोग यानी त्रिभुवन मेहता और मैं समाजवादी हैं। कमलाकान्त अभी तक पूरी तौर से समाजवादी तो नहीं बन सके लेकिन बड़ी तेज़ी के साथ हमारी विचारधारा को अपना रहे हैं, क्योंकि यह ठीक उसी तरह सोचने लग हैं जिस तरह हम लोग सोचते हैं। आप पढ़े लिखे समझदार आदमी हैं, तो मैं समझता हूँ कि आप भी कुछ समय बाद हमारी ही तरह सोचने लगेंगे।" और यह कहकर जसवन्त कपूर उठ खड़ा हुआ। उसने कमलाकान्त से कहा, "मामाजी से कह दिया है कि वह हम लोगों को त्रिवेणी

का स्नान करा लाएँ, खास तौर से इन त्रिभुवनदास मेहता को, क्योंकि इनके पापो का अम्बार इन दिनो बहुत बढता जा रहा है। मामाजी हम लोगो की प्रतीक्षा कर रहे होगे। चलो त्रिभुवन भाई !"

"यह क्या साला गगा वगा नहाकर होगा ! अपने को इन सबमे विश्वास नही। लेकिन यह जसवन्त कपूर हम लोगो को गगा नहलाने पर तुल गया है। तो त्रिवेणी भी नहा लेंगे हम लोग। चल भाई जसवन्त !" और त्रिभुवन मेहता उठ खडा हुआ। कमरे के बाहर निकलते हुए जसवन्त कपूर ने कमलाकान्त से कहा, "हम सब लोग इण्टर क्लास मे चलेंगे। हम लोग चार और कुल्सुम बेन तथा मालती बेन। तो कुल छ हुए। हम इण्टर क्लास के एक पूरे कम्पार्टमेण्ट पर कब्जा जमा लेंगे। तुम लोग गाडी छूटने के आधा घण्टे पहले आ जाना।'

जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता के जाने के बाद जगतप्रकाश ने कमलाकान्त से कहा, 'मुझे यह पता नही था कि तुम्हारे साथ ये लोग भी चल रहे है। काफी प्रगतिशील हैं ये लोग। हम चार और हमारे साथ दो लडकिया, और हम लोग एक ही कम्पार्टमेण्ट म।"

"जी हा, और ये दोना लडकिया बम्बई के ऊँचे खानदानो की, एम० ए० पास। यही नही, कुलसुम के पिता जमशेद कावसजी की कपडे की दो मिलें हैं और मालती के पिता की जहाजा की एक कम्पनी है। लेकिन ये दोना लडकिया स्वतन्त्र विचारा वाली है, इन दाना म ही जीवन शक्ति है। मैं पहले कभी इन दोनो स नही मिला हूँ, लेकिन त्रिभुवन मेहता से मैने इनके सम्बन्ध मे काफी सुना है।"

जगतप्रकाश कुछ देर तक कुछ सोचता रहा, फिर एक झटके के साथ उसने अपना सर हिलाया, 'मुझे क्षमा करना कमलाकान्त, में तुम लोगो के साथ न चल सकूगा।" यह कहकर वह दरवाजे की ओर मुडा।

कमलाकान्त ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, 'क्या, क्या बात है? यह तुम्हे हो क्या गया है?"

"कुछ नही, लेकिन मैं तुम लोगा के साथ नही चलूगा। मैं तुम लोगा के समाज से दूर, बहुत दूर का आदमी हूँ। तुम लोगा के धन, वैभव, सम्पन्नता क्या नही है, जबकि मैं अभाव स ग्रस्त, जीवित रहने के सघर्षो म रत निम्न

मध्यवर्ग का एक साधारण-सा प्राणी हूँ। तुम लोगों के साथ रहने मे, उठने-बैठने मे मुझे शर्म आती है। मैं तुम लोगों के समाज मे घुलमिल नही सकूगा।"

"बस इतनी-सी बात!" कमलाकान्त ने कहा, "तो तुम इतना समझ लो कि हम लोग उस समाज की व्यवस्था के समर्थक है जिसमे ऊँच-नीच की भावना न हो, जहा सम्पन्नता का गर्व न हो, अभाव की कुण्ठा न हो। मेरे ये साथी—इन्हे तुमने देखा है। कही भी अलगाव की भावना दिखी इन लोगों में तुम्हें? हम सब इस देश मे समाजवादी व्यवस्था कायम करना चाहते हैं, हम सब वर्गभेद मिटाना चाहते है। तुम्हे इन लोगों से मिलने जुलने मे सकोच नही होना चाहिए, बिना तुम्हारे जैसे आदमियो के सहयोग के हमारा प्रयत्न सफल नही हो सकता। तुम्हे हम लोगो के साथ चलना होगा।"

जगतप्रकाश ने कमलाकान्त की बात का कोई उत्तर नही दिया, चुपचाप वह बाहर के लॉन की ओर देख रहा था और कमलाकान्त कहता जा रहा था, "तुम स्वय देखोगे चलकर वहा। यह काग्रेस, समता और वर्गहीनता का ढिढोरा पीटने वाली यह काग्रेस—यह ढोग की नीव पर खड़ी है, क्योकि यह बनिया की अहिसा और कायरता पर पनप रही है। अहिसा और कायरता—ये दोनो पर्यायवाची शब्द हैं, और इनका एक तीसरा पर्यायवाची शब्द है—पूजी। मनुष्य मे हिंसा एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है, यह हिंसा मनुष्य मे हमेशा से रही है और हमेशा रहेगी। यह हिंसा मिट नही सकती, इसकी धारा भर बदली जा सकती है। और गाधी अहिसा के सिद्धान्त से यह मनुष्य के अन्दर वाली हिंसा पूजी की हिंसा मे बदल रही है जहा मानव का रक्त ही बिना उस रक्त को देखे हुए चूस लिया जाता है। तुम हमारे साथ चलो, तुम हमारा साथ दो। हम लोगो को अहिसा के इस ढोग को तोडना है। वसे मैं तुम्हे इस बात पर जोर नही दूगा कि तुम हम लोगो के दल मे सम्मिलित ही हो जाओ। तुम केवल हमारे इस सघर्ष को देखते रहना और इस पर मनन करना। हमारे कार्यक्रम मे अगर तुम्हे कोई त्रुटि दिखे तो तुम मुझे बतला देना, यदि तुम्हे हम लोगो का कार्यक्रम या हम लोगों की विचारधारा गलत लगे तो तुम तत्काल हमारा साथ छोड देना।"

"यह सब बाद मे भी किया जा सकता है कमलाकान्त, इस बार मुझे क्षमा करो। चलने की तबीअत नही होती।"

"यह तुम नही बोल रहे हो, तुम्हारे अन्दर वाली कायरता और हीन-भावना बोल रही है। इस कायरता और हीन भावना को तुम्हे दूर करना होगा। त्रिभुवन मेहता ने हम लोगो के टिकट ले लेने का वादा कर लिया है, तुम अगर न चलोगे तो एक टिकट बेकार जाएगा। फिर वे लोग तुम्हारे सम्बन्ध मे क्या सोचेंगे ? अभी थोडी देर पहले उन लोगो के सामने तुम चलने को तैयार थे, तुमने किसी तरह का इनकार नही किया था। इतनी जल्दी तो कार्यक्रम नही बदला जाता। तुम तो बुद्धि पर विश्वास करने वाले प्राणी हो, क्षणिक आवेश के वशीभूत तुम कैसे हो गए ? जाओ, अपनी तैयारी करो जाकर, साढे सात बजे शाम को मैं तुम्हे तुम्हारे कमरे से ले लूगा।"

पराजय और विवशता की एक गहरी सास लेकर जगतप्रकाश ने कहा, "अच्छी बात है, मैं तैयारी करता हूँ जाकर। लेकिन एक शर्त है, जबलपुर चलने और वहा रहने का खर्च मैं स्वय दूगा। मैं तुम लोगो के साथ रहकर अपने को हीन नही अनुभव करना चाहता हूँ। इसी शर्त पर मैं चलूगा।"

कमलाकान्त ने सतोष की एक सास ली, "तुम्हारी यह शर्त मुझे स्वीकार है। लेकिन टिकट और वहाँ के खर्च का हिसाब किताब रास्ते मे हो जाएगा।"

रात के समय जब कमलाकान्त के साथ जगतप्रकाश स्टेशन पहुँचा, उस समय त्रिभुवन मेहता और जसवन्त कपूर चिन्तित मुद्रा म एक इटर क्लास कम्पार्टमेंट के सामने खडे थे जो बिलकुल खाली था और उनके साथ वाली दो लडकियो मे एक ऊँचे स्वर मे कह रही थी, "इसमे कुल पाच बर्थे हैं और हम लोग छ हैं। और ऊपर की दो बर्थों पर कोई गद्दा नही—असबाब रखने के पटरे-भर हैं तो उन पर सोएगा कौन ? फिर मान लो रास्ते मे और मुसाफिर आ जाएँ तो झगडा ही होगा न ! तुम्हें त्रिभुवन मेहता, शर्म नहीं आती हम लोगो से यह कहते हुए कि हम दोनो लेडीज कम्पार्टमेण्ट मे सफर करें।"

जसवन्त कपूर कुछ अलग खडा हुआ सिगरेट पी रहा था, उन दो लडकियो से उलझा हुआ था त्रिभुवन मेहता। जसवन्त इन दोनो के पास आकर बोला, "अरे बाप रे, बडी तुनुकमिज़ाज लडकी है यह मालती मनुभाई, इसने तो त्रिभुवन मेहता की बोलती बन्द कर रखी है।"

और तभी दूसरी लडकी की आवाज आई, "जसवत, तुम मेरे साथ चलो, देखे कोई सेकण्ड क्लास कम्पाटमेट खाली है।" जसवन्त इन दोना के साथ उस लडकी के साथ चल दिया। जगतप्रकाश ने अनुमान लगा लिया कि वह लडकी कुलसुम कावसजी होगी। चलते हुए जसवन्त कमलाकान्त मे कह गया, "तुम लोग त्रिभुवन भाई को सँभालो, मैं अभी आया।"

अब जगतप्रकाश को त्रिभुवन मेहता का उत्तेजित स्वर सुनाई पडा, "अगर लेडीज कम्पाटमेट मे सफर कर लिया तो तुम्हारा क्या विगड जाएगा ? लेकिन अगर तुम इसी कम्पाटमेट मे सफर करना चाहती हो तो मैं अपना बिस्तर फश पर लगा लूगा।"

"तुम फश पर अपना विस्तर लगाओगे—तुम त्रिभुवन मेहता, जैसे मैं तुम्हे जानती नही। अपनी शक्ल तो दखो ! तुम अपने किसी साथी को फश पर सुलाओगे। नही, यह सब नही होगा।"

"तो फिर होगा क्या," झुझलाहट के स्वर मे त्रिभुवन मेहता ने पूछा।

"मैं क्या जानू कि क्या होगा, लेकिन वह नही होगा जो तुम सोचते हो। हम सब साथ चलेग, इतना तय हो चुका है। चाहे हम लोगा को तीसरे दर्जे मे चलना पडे, चाहे हम लोगो को यह गाडी छोडनी पडे। समझे त्रिभुवन मेहता।"

तीखे नक्श वाली वह सावली-सी लडकी कितनी तेज और कितनी जिद्दी है, जगतप्रकाश को त्रिभुवन मेहता पर दया आ रही थी। तब तक जसवन्त कपूर के साथ कुलसुम कावसजी वहा आ गई। उसने आते ही मालती से कहा, "छोडो भी इस वेचारे त्रिभुवन को, मैंने सब-कुछ ठीक कर दिया है।" और वह त्रिभुवन मेहता की ओर मुडी, 'वे छ टिक्ट कहा हैं त्रिभुवन भाई ? जसवन्त को वे टिक्ट दे दो।"

"क्यो, क्या बात है ?" अपनी जेब से टिक्ट निकालते हुए त्रिभुवन मेहता ने पूछा।

"बात कुछ भी नही है। पीछे एक सकण्ड क्लास कम्पाटमेण्ट है छ वर्थो वाला, बिलकुल खाली। मैंने टीटी से वह पूरा कम्पाटमेण्ट रिजव करा लिया है, टिक्ट बदलवाने हैं।" कुलसुम जसवन्त की ओर मुडी, "जल्दी टिक्ट बदलवाकर वापस आना, हम लोग उस कम्पाटमेण्ट मे बैठते हैं चल-

कर।" फिर उसने कुलियो से कहा, "चलो सेकण्ड क्लास में यह असबाब रखो चलकर।"

त्रिभुवन ने टिकट जसवन्तमयी को देते हुए कहा, "तुम रुपए दे रही हो, मैं दिये देता हूँ।"

उत्तर मालती मनुभाई ने दिया "तुम, कजूस कही के, तुम क्या रुपया दोगे! वाह, कुल्सुम बन खूब उपाय निकाला! यह त्रिभुवन मेहता, मैं नहीं जानती थी कि यह इतना कमीना निकलेगा, नहीं तो हम लोग इसके साथ सफर ही नही करती।"

त्रिभुवन पर मालती की इस बात का माना कोई असर ही नही हुआ, कुलियो को साथ लेकर वह सेकण्ड क्लास कम्पार्टमेण्ट की ओर चल दिया।

२

बहुत बडा मैदान, बहुत बडा पण्डाल, बहुत बडी भीड—सब-कुछ बहुत बडे पैमाने पर। जबलपुर नगर से आठ-दस मील की दूरी पर सैकडा एकड भूमि साफ करके और उसे समतल बनाकर यह त्रिपुरी काग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया था। उस काग्रेस अधिवेशन म भाग लेने के लिए या उस अधिवेशन को देखने के लिए देश के हरेक कोने से लाखो आदमियो की भीड उमड रही थी। विन्ध्याचल पवत के दक्षिण मे और नमदा नदी के उत्तर मे यह समतल भूमि, पथरीली और अनुपजाऊ—कनातो का एक नगर-सा बसा हुआ था वहाँ पर।

७ माच १६३६ से त्रिपुरी वाला काग्रेस का बावनवा अधिवेशन आरम्भ हो रहा था और इस बार काग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे श्री सुभाषचन्द्र बोस। प्रथा के अनुसार पहले तीन दिन—यानी, ७ माच से ६ माच तक ऑल इण्डिया काग्रेस कमेटी की बैठक के लिए रखे गए थे और १० माच से १२ माच तक काग्रेस के खुले अधिवेशन के लिए रखे गए थे। जसवन्त कपूर दिल्ली से ऑल इण्डिया काग्रेस कमेटी का सदस्य बनकर आया था, कुलसुम कावसजी और त्रिभुवन मेहता बम्बई से ऑल इण्डिया काग्रेस कमेटी के सदस्य बनकर आए थे। मालती मनुभाई बम्बई से साधारण डेलीगेट के रूप मे आई थी, और कमलाकान्त इटावा से काग्रेस डेलीगेट था।

बम्बई के शिविर मे त्रिभुवन मेहता और कुलसुम कावसजी ने दो खेमे, जिनम चार-चार आदमियो के ठहरने की व्यवस्था थी, अपने कब्जो मे तय करवा लिए थे।

स्टशन पर इन लोगा को लेने के लिए दिनशा झाबवाला की कार आ ग
थी। दिनशा झाबवाला की जबलपुर मे शराब की दुकान थी और साथ ह
वह फौज मे ठेकेदारी का काम करता था। दिनशा झाबवाला कुल्सुम क
मामा था और जबलपुर कण्टोनमेण्ट मे उसके चौदह बँगले थे। दिनशा क
लडका परवेज कार लेकर स्टेशन आया था—पुराने जमाने की एक बडी-स
बुइक कार थी वह। उसने इन छहो को मय असबाब के उस कार मे ठूस
फिर कुल्सुम से उसने कहा, "गवनर ने बँगले मे दो कमरे आप लोगो
लिए ठीक करा दिए है—गवनर बोला है कि जल्दी घर आ जाएँ, वह
ब्रेकफास्ट तैयार है। हमारे बँगले से त्रिपुरी करीब छ मील पडता है।"

कुलसुम ने त्रिभुवन मेहता की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा और स्थिति त्रिभुवन मेहता ने अपने हाथ मे ले ली। त्रिभुवन बोला, "बात यह है कि हम लोगो को विचार विमश के लिए त्रिपुरी मे वक्त-बेवक्त मिलते रहना है, वहा हम लोगो के टेण्ट बुक हो चुके हैं। हमारे वहा रहने से तुम दिन मे चार-पाच बार हम लोगो को वहा ले जाने और वहाँ से ले आने के झझट से बच जाओगे।"

त्रिभुवन मेहता का तक परवेज पर काम कर गया। उसने तपाक के साथ कहा, "मजा तो त्रिपुरी मे—ठीक सोचा। हम भी बोला था गवनर से, लेकिन गवनर जिद्दी आदमी, किसी की सुनता नही, किसी की मानता नही। बोला कि कुल्सुम बेन और आप सब लोगो को बँगले मे पहुँचा दो, फिर दूसरा काम। कुल्सुम बेन कार पर यहा से सीधे अपने बँगले चलेगी, वहाँ गवनर से बात कर लो तब आगे सब-कुछ। बँगले पर चाय-नाश्ता सब-कुछ तैयार!"

त्रिभुवन इस बात का उत्तर देने ही वाला था कि कुल्सुम ने मामला अपने हाथ मे ले लिया। "ठीक! चाय-नाश्ता परवेज झाबवाला के बँगले पर इसके बाद अगला प्रोग्राम! चल परवेज!"

परवेज की बगल मे कुल्सुम बैठी थी, उसकी बगल म मालती थी। पीछे की सीट पर जसवन्त कपूर, त्रिभुवन मेहता, कमलाकात और जगत प्रकाश कसे-कसाए बठे हुए थे। परवेज ने कार स्टाट की और कुलसुम ने पूछा, "कहो परवज, तुम्हारा ध धा कैसा चल रहा है?"

"धन्धा ! सब नसीब की बात !" परवेज बोला, "शराब की दुकान चौपट, ठेकेदारी चौपट, गवनर का दिमाग सनक गया है। डिप्टी कमिश्नर से झगड गया तो क्लब से रिजाइन कर दिया। कामकाज मिल्ता है मेल-मुलाकात मे।" परवेज कार चलाता और कहता जाता था, "गवनर अब बँगले से निकलते ही नही, हर वक्त सबको डाटते रहते हैं। हा, दुकानदार सुबह शाम आ जाते हैं तो वहा डिप्टी कमिश्नर को गाली देते रहते है।"

"यह तो बडी बुरी बात है।" कुलसुम बोली। "हा, तुम बीडी का कारखाना खोलने वाले थे परवेज, वह खोला या नही ?"

"गवनर खोल्ने नही देता, बोल्ता है बीडी का धन्धा बन्द हो जाएगा, अब सिगरेट और सिगार का जमाना आ गया है। फिर बीडी सिगरेट—इस धन्धे मे पारसी को हाथ नही डालना चाहिए। बोल्ना है कि विलायती शराब की एक फैक्टरी यहाँ जबल्पुर मे खोली जाए। लेकिन देश मे बनी हुई विलायती शराब को लेगा कौन ? सब बेकार की बकवास !"

जगतप्रकाश परवेज झाबवाला को गौर से देख रहा था और उसकी बातें बडे ध्यान से सुन रहा था। एक छरहरे बदन का और कामल आकृति का सुन्दर-सा युवक, एक तरह से वह नाटा कहा जा सकता था। उसकी अवस्था प्राय पचीस वष की रही होगी। वह कहता जा रहा था, "यह काग्रेस का हगामा, यह प्रोहिबिशन का शोर, और गवनर ब्रिउरी खोलने को बोलता है। तुम बात करो गवनर से कुलसुम, क्यो पैसा बरबाद करता है। हम बोलता है अगर काग्रेस राज आया तो सब लोग बीडी पीएँगे मिनिस्टर लोग तक। शराब बन्द, नीरा चलेगी, बहुत हुआ तो नीरा की ताडी बना लेंगे और अगर शराब ही पीना होगा तो सब लोग अपने-अपने घर मे बनाकर पीएँगे।"

कार अब दिनशा झाबवाला के बँगले मे पहुँच गई थी। दिनशा झाबवाला बरामदे मे बैठा हुआ एक अग्रेजी उपन्यास पढ रहा था। कार के बँगले मे प्रवेश करते ही वह उठ खडा हुआ। पोर्टिको मे कार रुकी और दिनशा ने बडे वात्सल्य भाव से कुल्सुम के सर पर हाथ रखते हुए कहा, "तू भी काग्रेस मे शामिल हो गई है। अरी छोड यह सब पागलपन, कुछ भी नही होगा।" फिर दिनशा ने कुलसुम के साथियो को देखा, "यहा रुकने का

इन्तजाम पूरा है। यह परवेज़—यह तुम लोगों की देखभाल करेगा, दुकान मैं सँभालूगा। इधर कांग्रेस होने से विलायती शराब की बिक्री बहुत बढ़ गई है।" और जैसे दिनशा झाबवाला को कोई बात याद आ गई हो। "ए परवेज़ वह ह्विस्की का कंसाइनमेण्ट छुड़ाना है आज, कल रात सब बोतलें खत्म हो गईं। तुम स्टेशन चले जाओ, तब तक ये लोग नाश्ता करके आराम करेंगे।"

त्रिभुवन मेहता ने आगे बढ़कर कहा, "नहीं, हम लोग आपको तकलीफ नहीं देंगे, त्रिपुरी में हम लोगों के ठहरने का सब इन्तजाम पक्का है। वहां बड़ा हैवी प्रोग्राम है हम लोगों का, दिन रात बैठकें होंगी। अगर कुलसुम चाहे तो यहां ठहर सकती है।"

"नहीं, मुझे भी तो वहां दिन रात मीटिंगें अटेण्ड करनी हैं, वहीं ठहरूँगी अकेले। नाश्ता करके परवेज़ हम लोगों को त्रिपुरी पहुँचा दे, वहां से वह ह्विस्की का कंसाइनमेण्ट छुड़ाने स्टेशन चला जाए।" त्रिभुवन मेहता और कुलसुम कावसजी की बातें दिनशा को अच्छी नहीं लगीं। उसने कुछ रूखे स्वर में कहा, "परवेज़ को अभी इसी वक्त स्टेशन जाना है। ह्विस्की का स्टाक खत्म हो गया, मुश्किल से दस-बारह बोतलें होंगी और दस बजते ही ये लोग तुम्हारे कांग्रेसी नेताओं के लिए शराब खरीदना शुरू कर देंगे।" वह परवेज़ की ओर घूमा, "इन लोगों को चाय-नाश्ता कराके इनके लिए दो तांगे मँगवा दो त्रिपुरी जाने के लिए।" दिनशा झाबवाला बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए बरामदे में पहुँचकर उपन्यास पढ़ने लगा।

कुलसुम मुस्कराई, परवेज़ से उसने कहा "जल्दी नाश्ता करवा दो। उसके बाद हम लोग चलें।" फिर वह अपने साथियों की ओर घूमी, "अभी दो घण्टे बाद अंकल का मूड ठीक हो जाएगा तब हम लोगों से माफी मांगने त्रिपुरी पहुँचेंगे।"

नाश्ता करके तांगे आए और तांगों पर सवार होकर ये लोग त्रिपुरी पहुँचे। उस समय दस बज रहे थे।

बहुत बड़ा मैदान, दूर पर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ। चारों तरफ खेमे लगे थे और कांग्रेस के वालन्टियरों की भीड़ दिखाई दे रही थी। लेकिन अधिकांश खेमे अभी तक खाली पड़े थे। कांग्रेस का खुला अधिवेशन तो दस मार्च से

होने वाला था। ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्यों का आना शुरू हुआ था। स्वयंसेवकों ने इन लोगों को बम्बई कैम्प में पहुँचा दिया और इन लोगों के खेमे इनके सुपुर्द कर दिए। ये दोनों खेमे अगल-बगल थे। एक में कुलसुम कावसजी, मालती मनुभाई और त्रिभुवन मेहता ठहरे, दूसरे में जसवन्त कपूर, कमलाकान्त और जगतप्रकाश ठहरे।

चार बजे शाम को चाय पीने के बाद जसवन्त कपूर ने कमलाकान्त से कहा, "यहाँ अकेले बैठे-बैठे हम लोग क्या करेंगे? मैं ज़रा पंजाब-दिल्ली कैम्प की ओर जाना चाहता हूँ, यह देखने के लिए कि कौन-कौन आया है अभी तक। फिर अगर कोई डेलीगेट नहीं आ रहा तो उसका टिकट और बैज जगतप्रकाश के लिए लेता आऊँगा। तुम भी मेरे साथ चलो।"

कमलाकान्त उठ खड़ा हुआ, "चलो, चलता हूँ।" और वह जगतप्रकाश की ओर घूमा। "चलो तुम भी, थोड़ा घूमना फिरना हो जाएगा और यहाँ की चहल-पहल भी देख लोगे।"

लेकिन, शायद जसवन्त कपूर को कमलाकान्त का यह प्रस्ताव रुचिकर नहीं लगा। उसने कहा, "यह वहाँ चलकर क्या करेंगे? इनकी तो वहाँ किसी से मुलाकात नहीं है, जबकि तुम्हारा परिचय मैंने उन लोगों से करा दिया है। बहुत संभव है कि इनके सामने खुलकर बात करने में वे लोग झिझकें।" और वह जगतप्रकाश की ओर घूमा, "हम लोगों को लौटने में कुछ देर हो सकती है, कुछ आवश्यक परामर्श करने हैं।" यह कहकर वह कमलाकान्त के साथ टेण्ट के बाहर चला गया। जगतप्रकाश अब अकेला रह गया।

जगतप्रकाश सर झुकाकर बैठ गया, सिवाय इसके वह कुछ कर भी तो नहीं सकता था। वह कहाँ आ गया है? क्यों आ गया है? उसकी समझ में यह सब न आ रहा था। उसके मन में एक बार आया कि वह उसी रात की गाड़ी से इलाहाबाद वापस चला जाए, लेकिन यह सम्भव न था। जसवन्त कपूर उसके लिए अनजाना था, लेकिन यह कमलाकांत, जिसे वह अच्छी तरह जानता था, जो उसके होस्टल में उसका घनिष्ठ मित्र था, यह कमलाकान्त भी अब उसके लिए अनजाना-सा दीखने लगा। नितान्त अनजाने आदमियों के बीच में वह आ पड़ा है, उसे अपने-ऊपर झुंझलाहट हो रही थी।

शाम घिरती आ रही थी और जगतप्रकाश सोच रहा था—सोच रहा

था। एकाएक वह चौक उठा एक सुरीली आवाज सुनकर, जो कह रही थी, "अरे जसवत कहाँ गया ? तुम अकेले बैठे क्या कर रहे हो यहा, इस अँधेरे मे ?" और उसने देखा कि कुल्सुम कावसजी टेण्ट के दरवाजे के पास खडी है।

एक और अनजानी सज्ञा—यह लडकी कौन है ? जगतप्रकाश उठ खडा हुआ, "जसवन्त कमलाकान्त को लेकर पजाब दिल्ली कैम्प की ओर गया है। कह गया है कि उन लोगो को लौटने मे देर लग सकती है।" वह खेमे से बाहर निकला, "अरे, अँधेरा हो रहा है! आप अकेली कैसे? त्रिभुवन मेहता और माल्तीबेन कहा हैं ?"

"मैं क्या जानू कहा हैं! एक घण्टा पहले उन दोनो मे आपस मे झगडा हुआ, तो उस झगडे के बीच मे न पडने के लिए मैं बाथरूम चली गई थी। बाथरूम से वापस लौटी तो देखा कि वे दोनो गायब है। सोचा लौटते होगे। लेकिन पूरा एक घण्टा हो गया और वे लोग नही लौटे तो मैं बाहर निकली। यहा आकर देखती हू कि जसवन्त भी यहा नही है।" कुछ रुककर उसने कहा, "पजाब दिल्ली कैम्प की तरफ गए है वे लोग। तुम नही गए उनके साथ ?"

एक दबी हुई कटुता के स्वर मे जगतप्रकाश बोला, "जाने की बात तो चली थी, लेकिन जसवन्त का कहना है कि वहा मैं अनजाना हू और मेरे लिए वे अनजाने लोग हैं।" एक हल्की सी मुसकराहट उसके चेहरे पर आई, "और मैं बैठा हुआ सोच रहा था कि मैं क्या अनजाने लोगो के साथ यहा चला आया हू।'

कुल्सुम भी मुसकराई, "अनजानो के साथ रहना ही ज़िन्दगी है। सच पूछो तो दुनिया का हरेक आदमी एक-दूसरे के लिए अनजाना है। यही नही, मुझे तो लगता है कि हरेक आदमी खुद अपने ही लिए अनजाना है। तो जान-पहचान की बात पर ध्यान देना, सोचना विचारना बेकार। इस अँधेरे मे मन की घुटन बढाने से कोई फायदा नही, चलो, हम लोग कही घूम आएँ चलकर।"

जगतप्रकाश ने एक ठडी सास ली, "शायद आप ठीक कहती है, हम सभी एक-दूसरे के लिए अनजाने हैं और इसलिए मन की घुटन बढाने से

कोई फायदा नही। चलिए, घूम ही आया जाए।"

जगतप्रकाश कुलसुम के साथ चल रहा था और कुलसुम कह रही थी, "यह त्रिभुवन! बडा नेक आदमी है, थोडा-सा कजूस जरूर है, लेकिन मन का बडा अच्छा है। और यह मालती बेहद जिद्दी और बद-मिजाज! इसके बाप की जहाज की कम्पनी है, लेकिन यह त्रिभुवन भी बहुत पैसे वाला है। और यह मालती हर बात पर त्रिभुवन को डाटती है। यह त्रिभुवन इस मालती के सामने एकदम निकम्मा और बुजदिल बन जाता है।"

"क्या त्रिभुवन मालती से प्रेम करता है?" जगतप्रकाश ने पूछा।

मुह बनाते हुए कुलसुम ने कहा, "प्रेम! जहा सुविधा के लिए माता-पिता विवाह तय करते है वहा प्रेम कैसा? लेकिन त्रिभुवन और मालती एक-दूसरे को चाहते जरूर हैं। आपस मे एक-दूसरे से लडते है और फिर उसी समय एक-दूसरे को मनाते भी है। जैसे बिना एक-दूसरे से लडे ये लोग रह ही नही सकते। इसी लडने झगडने मे इन्हे सुख मिलता है।" और कुलसुम मुसकराई, "तुम भी किसी से प्रेम करते हो क्या?" जगतप्रकाश को लगा कि कुलसुम की आँखो मे शरारत की चमक है, "अगर प्रेम करते हो तो गलती करते हो। अभी तुम्हारी उम्र प्रेम करने की नही है। फिर प्रेम के मामले मे बडी धोखाधडी चलती है।" कुलसुम अब खिलखिलाकर हँस पडी।

इस बार जगतप्रकाश ने कुलसुम को गौर से देखा और न जाने क्यो उसके समस्त शरीर मे एक हलकी-सी कँपकँपी आकर निकल गई। कठोर-सी दिखने वाली यह लम्बी और दुबली-सी लडकी, जगतप्रकाश को ऐसा लगा कि सुन्दरता का एक अनोखा मॉडल उसके साथ चल रहा है। सुनहला-पन लिए हुए गोरा रग, आखे बडी-बडी, नाक नुकीली और मुखाकृति मे एक तरह का तीखापन। घबराकर उसने कुलसुम पर से अपनी आँखें हटा ली, "नही, मुझसे भला कौन प्रेम करेगा? मैं तो अभी अध्ययन ही कर रहा हूँ। फिर हमारे समाज म पहले विवाह होना है, प्रेम बाद मे होता है।"

"हरेक समाज मे पहले यही हुआ करता था, लेकिन अब समाज की मान्यताएँ बदल रही हैं और इन बदलती हुई मान्यताओ के साथ समाज के

रूप भी बदल रहे हैं। परवेज को देखा है तुमने। अभी उसके साथ मेरी मँगनी नहीं हुई है, लेकिन बात उसके साथ मेरे विवाह की चल रही है। इस बातचीत के सिलसिले में वह मुझे चाहने लगा है।" कुछ रुककर फिर उसने कहा, "लेकिन मैं तो उसे नहीं चाहती। दिमाग का कमजोर, दब्बू किस्म का आदमी, भला कोई औरत कैसे उसके साथ सुखी रह सकती है?"

दोनों अब उस रास्ते पर आ गए थे जो मावल रावस की तरफ जाता था। उस समय रात हो रही थी, दूर त्रिपुरी कांग्रेस के मैदान में बिजली के बल्ब जगमगा रहे थे। कुल्सुम ने कहा, "हम लोग काफी दूर आ गए हैं, अब हमें लौटना चाहिए।' और दोनों लौट पड़े।

एक नितान्त नया अनुभव हो रहा था जगतप्रकाश को। यह कुल्सुम कुछ अजीब-सी लड़की थी। आत्मविश्वास की कठोरता के नीचे एक कोमल नारी, जो पुरुषत्व को महत्त्व देती थी, जो पुरुषत्व को ढूंढ रही थी। एकाएक उसने पूछ लिया, "तो क्या आप परवेज से विवाह करेंगी?"

जैसे एक तरह का धुंधलापन घिर आया हो कुल्सुम के मुख पर, लेकिन सिर्फ एक क्षण के लिए और फिर उसके मुख पर वही उल्लास की चमक, "मैं क्या जानूं? यह परवेज बड़ा नेक है दिल का बड़ा अच्छा है। मेरी हरेक बात मानता है, मुझसे बेतरह डरता है। इस परवेज से भला मैं कैसे प्यार कर सकती हूँ, इससे मुझे भला क्या सहारा मिलेगा। लेकिन डैडी समझते हैं कि परवेज ही मेरे लिए ठीक रहेगा। यह दिनशा झाववाला—इस परवेज का बाप—बड़ा अमीर आदमी है। जबलपुर में बहुत बड़ी जायदाद तो है ही, बम्बई में भी इसकी सात कोठियाँ हैं—छः हजार रुपया महीना किराया आता है उनका। उसके पास नकद पचीस-तीस लाख रुपया होगा। एक ही बेटा है परवेज और वह भी मेरे पीछे दीवाना है। इसके साथ मुझे जरा भी तकलीफ नहीं होगी, लेकिन इसके साथ मैं सुखी भी तो नहीं रह सकूंगी।" फिर एक ठंडी साँस लेकर उसने कहा, "जैसा मुकद्दर में लिखा है वैसा होगा। फिक्र करना बेकार।"

जगतप्रकाश को आश्चर्य हो रहा था कि एक नितान्त अनजानी लड़की सुसंस्कृत और सुशिक्षित, किस प्रकार अपने दिल की बातें उससे खोलकर कह सकती है, और मानो कुल्सुम ने उसके आश्चर्य के भाव को समझ

लिया हो, "तुम्ह ताज्जुब हो रहा होगा मैंने अपने दिल की बात तुमसे, जो मेरे लिए बिलकुल अनजाने हो, कैसे कह दी। लेकिन तुम मुझे बडे अच्छे लगे, एक अपनापन तुम्हारे लिए मैंने महसूस किया, बस इतनी-सी बात।"

जगतप्रकाश ने कुल्सुम की बात पर कोई टीका नही की, अपने विचारो मे डूबा हुआ वह चुपचाप चल रहा था। इस कुल्सुम ने उसके प्रति अपनापन अनुभव किया था, और जगतप्रकाश को भी कुल्सुम के प्रति अपनापन अनुभव हो रहा था। वे लोग अब अपने कैम्पो के निकट आ गए थे, और कुल्सुम ने दूर से देखा कि उसके टेण्ट के सामने एक कार खडी है और एक व्यक्ति उसके टण्ट के चारो ओर चक्कर काट रहा है। उस व्यक्ति के साथ एक स्वयसेवक भी है। कुलसुम ने जगतप्रकाश से कहा, 'मालूम होता है परवेज मुझे ढूढ रहा है।" वह जगतप्रकाश को पीछे छोडकर अपने टेण्ट की ओर दौडी। जिस समय कुलसुम अपने टेण्ट के पास पहुँची, परवेज अपनी कार पर बैठकर उसे स्टॉट कर रहा था। कुल्सुम ने चिल्लाकर कहा, "अरे परवेज, ठहरो, मैं आ गई।"

परवेज अपनी कार से उतरा, "तुम कहा गई थी? और लोग कहा गए है? मैं इतनी देर से तुम लोगो को ढूढ रहा हूँ—सोच रहा था कि गलत जगह तो नही आ गया।"

कुलसुम ने परवेज का हाथ पकड लिया, "मुझे बडा अफसोस है कि तुम्हे इतनी तकलीफ हुई बेचारे परवेज! सब लोग न जाने कहा चले गए, मैं अकेली रह गई।" इस समय तक जगतप्रकाश इन लोगो के पास आ गया था, "तो इन जगतप्रकाश के साथ मै भी कुछ थोडा-सा घूमने चली गई थी। मेरे और साथी अभी तक लौटे ही नही!"

परवेज ने झल्लाकर कहा, "अपने उन साथियो को गोली मारो जो तुम्हे छोडकर चले गए। इन्ही लोगो के लिए तुम गवनर को नाराज करके यहाँ चली आई। गवनर ने तुमसे माफी मागी है, और कहा है कि रात का खाना तुम गवनर के साथ खाओ। अगर तुम नही चलती तो गवनर तुम्हे मनाने के लिए खुद आएँगे।"

कुलसुम ने जगतप्रकाश की ओर देखा और जगतप्रकाश ने कहा, "आप वहाँ हो आइए, मैं उन लोगो से कह दूगा कि आप अपने मामा के यहाँ खाना

खाने चली गई ह, कल सुबह लौटेंगी।"

"कल सुवह नही, आज रात को ही खाना खाने के बाद लौट आऊँगी। दस ग्यारह बजे तक।" कुलसुम बोली, फिर कुछ सोचकर उसने जगनप्रकाश से कहा, "तुम भी मेरे साथ चलो, नही तो मामा मुझे रात मे रोक लेंगे। क्यो परवेज! खाना खिलाकर हम लोगो को वापस ले आओगे न ?"

"हा-हाँ, मैं तुम्हें वापस ले आऊँगा, इन्‍ह तकलीफ देने की कोई जरूरत नही, तुम्ह वापस लाने की जिम्मेदारी मेरी।" परवेज को जगत प्रकाश के साथ चलने का प्रस्ताव अच्छा नही लगा था। लेकिन कुलसुम ने कडे स्वर मे कहा "तुम क्या मुझे वापस लाओगे! मामा के आगे तुम्हारी जवान कभी खुली है!" और उसन जगतप्रकाश से कहा, "तुम मेरे साथ चलो, तुमसे मेरा आग्रह है। तुम्हारे साथ रहने से मुझे भरोसा रहेगा।"

जगतप्रकाश को आश्चय हो रहा था, इतनी जल्दी इतना विश्वास, उस पर इतना भरोसा, उसके प्रति इतनी आत्मीयता और धीरे धीरे कुलसुम के शरीर की सुदरता कुलसुम की आत्मा की सुदरता से मिलकर उसके समस्त अस्तित्व पर छाती चली जाती थी। फिर भी उसे यह वोध था कि कुलसुम पर परवेज का कोई अधिकार है, और उसे यह भी अनुभव हो रहा था कि कुलसुम के साथ उसका चलना परवेज को अच्छा नही लग रहा है। इतना तो स्पष्ट था कि परवेज मे इतना मनोवल नही है कि वह अपने विरोध का प्रदर्शन करे यह विरोध केवल एक घुटन बनकर उसके अदर दबा जा रहा था। उसे परवेज पर दया आ रही थी। उसने कुछ कमजोर स्वर में कहा, "मैं समझता हूँ कि मुझे यही रहना चाहिए। आपके मामा ने मुझे तो बुलाया नही है, फिर अगर मैं चलता हूँ तो सब लोगो को हम दोनो के सम्बन्ध मे चिन्ता होगी। मैं उन लोगो को बतला दूगा कि आप अपने मामा के यहा गई हैं। क्या मिस्टर परवेज, मैं ठीक कह रहा हूँ न ?"

इसके पहले कि परवेज कुछ बोले, कुलसुम बोल उठी, "मामा को मैं जानती हूँ। उन्होंने हम सब लोगो को खाना खाने को बुलाया होगा। क्यो परवेज, बोलो!"

परवेज के मुख पर एक खिसियाहट भरी मुस्कान आई, "हा बुलाया तो सब लोगो को है लेकिन यहा तो कोई है ही नही। तो मैंने सोचा कि

या तो सब लोग, या फिर तुम अकेली।"

"मैं अकेली नही जाऊँगी, किसी हालत मे नही जाऊँगी।" कुलसुम ने तेज़ आवाज़ मे कहा, "अगर यह जगतप्रकाश नही चलते तो मैं भी नही जाऊँगी। मैं जानती हूँ कि वहा जाने पर तुम मुझे लौटने नही दोगे, और लौटना मेरे लिए जरूरी है। सुन रहे हो परवेज़! जगतप्रकाश होंगे तो मैं तागे पर चली आऊँगी।"

विवशता की आवाज़ म परवेज ने कहा, "अगर तुम्हे मुझ पर विश्वास नही है तो इन्हे ले चलो।" उसने जगतप्रकाश से कहा, "मैं समझता हूँ कि आपको चलना चाहिए।"

कुलसुम ने परवेज़ को डाटा, "इस तरह नही, तुम्हे इनसे प्राथना करनी चाहिए, तभी यह चलेंगे।"

परवेज ने कहा, "मैं आपसे प्राथना करता हूँ कि आप हमारे यहाँ खाना खाने चलें।" फिर उसने कुलसुम से कहा, "अब तो ठीक तरह से कहा?"

"बिलकुल ठीक तौर से कहा।" कुलसुम बोली, फिर उसने जगतप्रकाश से कहा, "मैं एक नोट लिखकर माल्ती के पाउडर बॉक्स मे रखे आती हूँ, वह आते ही अपना पाउडर-बाक्स खोलेगी।" कुल्सुम हँसती हुई टेण्ट के अन्दर चली गई।

कुलसुम के जाते ही परवेज़ बोला, "बडी जिद्दी है यह कुलसुम, और जब जिद करती है तब बडी प्यारी लगती है। मेरा सब-कुछ न्योछावर है इस कुलसुम पर। गवनर भी इसे बेहद प्यार करते है। मैं कितना खुशनसीब हूँगा इस कुल्सुम को अपनी बीवी बनाकर!"

जगतप्रकाश को हँसी आ रही थी परवेज पर। कितना निरीह था, बिल्कुल बच्चे की भाति। स्त्रैण सुन्दरता का जहा तक सवाल था, वह कुल्सुम से अधिक सुन्दर दिख रहा था। जगतप्रकाश को कुछ तो कहना ही था, "मैं समझता हूँ कि कुल्सुम भी आपसे बेहद प्यार करती है।"

कुछ करुण स्वर मे परवेज़ बोला, "कभी-कभी लगता है कि वह मुझे बेहद प्यार करती है, कभी ऐसा मालूम होता है कि वह मेरी जरा भी परवाह नही करती, कभी खुशी कभी उदासी—यह कुलसुम अजीब लडकी है।" शायद परवेज़ कुछ और कहता कि कुल्सुम टेण्ट के अन्दर से आ गई। उसने

जगतप्रकाश से कहा, "बैठो गाडी पर, अभी साढे छ बजे हैं, दस-साढे दस बजे तक हम लोगो को लौट आना है।"

रात को साढे दस बजे परवेज इन दोनो को वापस कर गया। इस समय जगतप्रकाश के कैम्प मे कमलाकान्त, जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता बैठे हुए जोर जोर से बातें कर रहे थे। त्रिभुवन कह रहा था, "यह सब तो ठीक है, लेकिन महात्मा गाधी का इस समय काग्रेस से अलग हो जाना देश के हित मे नही होगा।"

जसवन्त कपूर का चेहरा लाल था और वह काफी उत्तेजित दिख रहा था, "गाधी के नेतृत्व को हमे उखाड फेकना है। सुभाष बाबू के नेतृत्व मे हमे भले ही विश्वास न हो, लेकिन गाधी के नेतृत्व से तो हमे मुक्ति पानी ही होगी। इस समय हम लोगो को एकमत होकर सुभाष बाबू का साथ देना चाहिए, यह जो अहिसा की अफीम खिला खिलाकर गाधी हमे सज्ञाहीन बना रहा है, यह सरासर गलत है।"

त्रिभुवन ने कहा, 'सुभाष के हाथ में नेतृत्व आ जाने से हम समाजवादियो का कितना बडा अहित होगा, यह तुम लोग नही समझ पा रहे हो। बम्बई कैम्प सुभाष का साथ किसी हालत मे नही देगा। सुभाष के पास सिवा हिसा के और कोई स्पष्ट आइडियालोजी नही है।'

और तभी कुल्सुम बोल उठी, 'तुम क्या कह रहे हो त्रिभुवन ? सुभाष और गाधी का झगडा आइडियालोजी का इतना नही है जितना व्यक्तित्व का है। सुभाष देश के उन सक्रिय युवको का प्रतिनिधि है जो अब अहिसा के इन प्रभावहीन नारो पर अपना विश्वास खो चुके हैं।"

इस बार कमलाकान्त ने कहा, 'देश के नवयुवको का असली नेता तो जवाहरलाल है, इस बात को नजरअन्दाज नही किया जा सकता।"

"और जवाहरलाल गाधी के साथ है, जवाहरलाल को महात्मा गाधी पर पूर्ण विश्वास है।" त्रिभुवन मेहता को कमलाकान्त की बात से मानो बहुत बडा सहारा मिला हो।

जसवन्त कपूर के स्वर की तेजी अब कम पड गई थी, 'मैं मानता हूँ कि जवाहरलाल गाधी के साथ है लेकिन मैं पूछता हूँ कि क्या जवाहरलाल गलती नही कर सकते ? वैसे जवाहरलाल ने स्पष्ट रूप से सुभाषचन्द्र का

विरोध भी तो कभी नही किया है, सुभाष का विरोध कर रहे हैं ये बूढे लोग ।"

और कुलसुम हँस पडी, "मैं फिर कहती हूँ, यह आदर्शों का झगडा नही है, यह व्यक्तित्व का झगडा है। जवाहरलाल को महात्मा गाधी अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं, सुभाष जवाहरलाल का स्थान लेना चाहते हैं। लेकिन यह उत्तराधिकार का झगडा मूल मे होते हुए भी कोई इसे प्रकट नही करना चाहता। जवाहरलाल बुद्धिमान हैं और इसलिए वह चुप है। जहा तक ऊपरी तौर से आदर्श का सवाल है, जवाहरलाल सुभाष बाबू के साथ हैं। लेकिन गाधी के नेतृत्व को समाप्त करने के पक्ष मे जवाहरलाल नही हैं। और गाधी का नेतृत्व गलत है मैं इतना महसूस करती हूँ। बम्बई कैम्प का युवक समुदाय सुभाष बाबू का साथ देगा, कम-से-कम मैं तो सुभाष बाबू का साथ दूगी—समझे त्रिभुवन मेहता ।"

त्रिभुवन ने हाथ पर हाथ मारते हुए कहा, "और यही सबसे बडा कारण है कि हमे सुभाष का साथ नही देना चाहिए। जब तक गाधी का नेतृत्व है तब तक हम सब लोग सही-सलामत है, क्योकि ब्रिटिश सरकार आश्वस्त है कि इस देश मे हिंसा नही होगी। कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध है, लेकिन काग्रेस के अन्दर वाली समाजवादी सस्था पर ब्रिटिश सरकार रोक नही लगा सकती। फिर सुभाष बाबू समाजवादी हैं या नही, इस पर शक किया जा सकता है, जबकि जवाहरलाल नेहरू तो अपने को समाजवादी घोषित करते हैं। कुलसुम, तुम व्यक्तिगत रूप से सुभाषचन्द्र बोस का साथ देकर गलती करोगी—हम लोगो की पार्टी को जवाहरलाल नेहरू का साथ देना चाहिए ।"

कुलसुम काफी थकी हुई मालूम होती थी, उसने उठते हुए कहा, "अब सब हम लोग फिर सोचेंगे, अभी तो रात काफी हो चुकी है, हम लोगों को चलकर सोना चाहिए ।"

जगतप्रकाश ने बडे ध्यान से इन लोगो की बातें सुनीं, लेकिन यह पार्टी क्या है और इस पार्टी के उद्देश्य क्या है, स्पष्ट रूप से [illegible] की समझ मे नही आई। कमलाकान्त से वह [illegible] पूछना और समझना चाहता था, लेकिन अकेले में [illegible] से [illegible]

आँधी-[illegible]

उसे अवसर नही मिल रहा था। जगतप्रकाश को देर तक नीद नही आई। उसे लग रहा था कि कुछ अजीब से अनजाने लोगो के बीच मे वह आ पडा है और इन सबमे सबसे अधिक अनजानी लग रही थी उसे कुलसुम रावसजी। कितनी सुखद शाम बीती थी उसकी कुलसुम के साथ, और वह कुलसुम उसके लिए एक पहेली थी। वह कुलसुम सुन्दर थी, वह कुलसुम बुद्धिमान थी। वह चीजो का साफ-साफ देख सकती थी, समझ सकती थी। यह झगडा गाधी और सुभाष का नही था, यह झगडा जवाहरलाल और सुभाष का था—एक नया दृष्टिकोण। लेकिन जैसे इस कुलसुम मे किसी चीज के लिए किसी तरह का लगाव न हो। तर्क और बुद्धि—एकमात्र आधार थे उसके सोचने के, उसके काम करने के। इस कुलसुम मे कठोरता थी, इस कुलसुम मे साहस था।

इस कुलसुम के पास धन था, वैभव था। शाम के समय कुलसुम के साथ कुछ घण्टे बिताकर वह सब कुछ जान गया था। अपने पिता की एकमात्र सन्तान थी—बम्बई के सबसे शानदार महल्ले वार्डेन रोड पर उसके बाप का बँगला था, उसके पास उसकी निजी शानदार कार थी। जैसे धन और वैभव से उसे तनिक भी मोह न हो, अति सुख उसे अभिशाप बन गया हो। वह अपने समस्त धन और वैभव को एक तरफ रखकर निकल पड़ी थी देश के लिए लडने वालो, देश के लिए कष्ट सहने वालो का साथ देने के लिए। उस कुलसुम मे जगतप्रकाश के लिए एक आत्मीयता की भावना जाग पडी।

एक पुलक-सा अनुभव हो रहा था उसे कुलसुम के सम्बन्ध मे सोचते हुए। उस पुलक मे खोया हुआ वह कब सो गया, इसका उसे पता ही नही चला। सुबह जब उसकी नीद खुली उसने देखा कि दिन काफी चढ आया है। कमलाकान्त उस समय भी सो रहा था, जसवन्त कपूर बैठा हुआ शेव कर रहा था। जगतप्रकाश अपना शेव का सामान निकालकर जसवन्त कपूर के सामने बैठ गया। जसवन्त ने जगतप्रकाश से कहा, "मिस्टर जगतप्रकाश, डेलीगेट का पास और बैज मैं आपके लिए ले आया हूँ—कल रात खाना की उलझन मे मैं आपको नही दे सका। आप लोगो ने हमारी बातचीत सुनी, आपका क्या खयाल है?"

'जहाँ तक मैं समझता हूँ स्थिति काफी उलझी हुई है। लेकिन महात्मा

गाधी तो इस काग्रेस मे आ नही रहे हैं, फिर झगडा किस बात का है ?"
जगतप्रकाश ने उत्तर देने के स्थान पर प्रश्न किया।

"महात्मा गाधी का इस काग्रेस मे न आना—यही तो सबसे बडी विडम्बना है। वैसे राजकोट की समस्या को उन्होने यहाँ न आने का बहाना बनाया है, लेकिन असली कारण यह है कि इस काग्रेस के अध्यक्ष सुभाषचन्द्र बोस है जो महात्मा गाधी की इच्छा के विरुद्ध चुन गए हैं। इधर कई वर्षो से काग्रेस के एकमात्र कणधार महात्मा गाधी हो गए हैं, और यह परम्परा-सी पड गई है कि काग्रेस का प्रेसीडेण्ट वही हो सकता है जिसे महात्मा गाधी मनोनीत करे। और अब महात्मा गाधी के समथकों द्वारा यह प्रयत्न हो रहा है कि सुभाषचन्द्र बोस को इस पद से हटा दिया जाए।"

जगतप्रकाश ने कुछ सोचकर कहा, "जहा तक मुझे याद है, महात्मा गाधी ने सुभाषचन्द्र के नाम का विरोध तो नही किया था।"

"यही तो मुसीबत उठ खडी हुई है। उन्होने सुभाष के नाम का विरोध नही किया, लेकिन उन्होने पटटाभि सीतारमैया का अपना आशीर्वाद देकर अपना मत प्रकट कर दिया था। फिर सुभाष बोस के चुने जाने के बाद उन्होने अपना वक्तव्य भी दे डाला कि पटटाभि सीतारमैया की पराजय को वह अपनी पराजय मानते हैं और इसीलिए वह काग्रेस से अपना सम्बन्ध तोड रहे हैं। जनमत के आगे न झुककर जनमत पर अपने को आरोपित करने का यह प्रयत्न डिक्टेटरशिप लादने का प्रयत्न है, मेरा तो ऐसा मत है।"

जगतप्रकाश मुसकराया, "तो इस डिक्टेटरशिप को उखाड फेंका जा सकता है, क्योंकि महात्मा गाधी के पास अपनी डिक्टेटरशिप को कायम रखने की न कोई शक्ति है, और न उनमे हिंसा है।"

कुछ उदासी के भाव से जसवन्त बोला, "यही तुम गल्ती करते हो। महात्मा गाधी के पास शक्ति है, उनके पास हिंसा है, लेकिन उनकी शक्ति और हिंसा का रूप ऐसा है जो दूसरो को दिखाई नही देता। हमारा देश कायरो और ढोंगियो का देश रहा है हमारा धर्म हजारो वर्ष तक अहिंसा की विकृतियों से ग्रस्त रहा है। हम निरामिषभोजी हैं, हममे रक्तपात से वितृष्णा है, दूसरे शब्दों में हमारा सामाजिक दृष्टिकोण कायरता का दृष्टिकोण है। गाधी हमारे इसी सामाजिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधि है।"

जगतप्रकाश की समझ में जसवन्त कपूर की बात नहीं आई, उसने कुछ हिचकिचाते हुए कहा, "लेकिन मिस्टर कपूर, हमारे समाज का एक छोटा सा वर्ग ही तो निरामिषभोजी है यह अहिंसा हमारा सामाजिक दृष्टिकोण किस तरह कहा जा सकता है ?"

"हां, हमारे समाज का एक छोटा-सा वर्ग ही निरामिषभोजी है, लेकिन यही छोटा-सा वर्ग तो हमारा बौद्धिक नेतृत्व करता है। हमारे समाज का बौद्धिक नेतृत्व ब्राह्मण के हाथ में है और अधिकांश ब्राह्मण निरामिषभोजी हैं हमारा आर्थिक नेतृत्व वणिक के हाथ में है और हमारे देश का बनिया निरामिषभोजी है। और ब्राह्मण तथा वणिक की यह अहिंसा एक ऐसी भयानक सामाजिक हिंसा में बदल गई है जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलेगी। ब्राह्मण सामाजिक शोषण का प्रतिनिधि है, बनिया आर्थिक शोषण का प्रतिनिधि है। यह धार्मिक ढोंग-आडम्बर, यह जातिवाद, छुआछूत, जहां मनुष्य को पशुओं से भी गया-बीता बना दिया गया है—कितनी भयानक हिंसा है इस सबमें! तुम गाय की पूजा कर सकते हो, तुम गोबर से अपनी रसोई लीप सकते हो तुम कुत्ता बिल्ली अपने घरों में पाल सकते हो, तुम हिरनों को आश्रमों में प्रश्रय दे सकते हो, लेकिन मनुष्य को तुमने अछूत बना दिया है, उसके स्पर्शमात्र से तुम्हें नहाना पड़ता है तुम्हें अपने को शुद्ध करना पड़ता है—यह तो है ब्राह्मण की अहिंसा। तुम मन्दिर बनवा सकते हो, धर्मशालाएं बनवा सकते हो, तुम सदाव्रत बांट सकते हो, तुम भिक्षा दे सकते हो, लेकिन तुम सूद दर-सूद में मनुष्य का रक्त चूस सकते हो, लम्बे मुनाफे के लिए तुम समाज में अभाव और दुर्भिक्ष की स्थिति पैदा कर सकते हो, यह है बनिये की अहिंसा। और इस बौद्धिक एवं आर्थिक हिंसा ने, जो अहिंसा का आवरण लपेटे हुए है, हमारे देश को कायरों का देश बना दिया है।"

आश्चर्यचकित और मन्त्र-मुग्ध-सा जगतप्रकाश जसवन्त कपूर की बात सुन रहा था। जो कुछ जसवन्त कपूर ने कहा, उसमें अतिशयोक्ति भले ही हो, लेकिन उसमें कहीं कोई सत्य भी है। लेकिन क्या उसमें यह सत्य अर्ध सत्य तो नहीं है जो मिथ्या से भी अधिक भयानक हो ? थोड़ी देर तक चुपचाप दोनों हजामत बनाते रहे, पर जैसे जसवन्त कपूर को लग रहा था कि उसकी बात अधूरी रह गई हो, उसने फिर कहा, "गांधी की अहिंसा उसकी परम्परा

गत बनिये की अहिंसा है, और यह परम्परागत अहिंसा ही कायरता की अहिंसा कहलाती है। एक ईमानदार आदमी की भांति गाधी अपनी अहिंसा की कमजोरी को अनुभव करता है, उस कमजोरी से लडना भी है जब वह कहता है कि उसकी अहिंसा कायर की अहिंसा नही है। गाधी ने अपनी अहिंसा मे वीरता को समाविष्ट करने का प्रयोग किया है, लेकिन यह प्रयोग वैयक्तिक प्रयोग की भांति भले ही सफल हो, सामाजिक प्रयोग के रूप मे सफल नही हो सकता। समाज ने इस अहिंसा को जो अपनाया है, वह इसलिए कि ब्रिटिश हिंसा सगठित है, उसका मुकाबला हमारे असगठित समाज की हिंसा नही कर सकती। और इसलिए जब गाधी अपने अहिंसा के सिद्धान्त म वीरता का पुट देकर सामने आता है तब समस्त समाज उसका नेतत्व स्वीकार कर लेता है।"

'तो क्या गाधी को आप ईमानदार और महान् नही समझते ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"गाधी महान् है, इससे किसी भी हालत मे इकार नही किया जा सकता। उसने हमारे समाज मे सगठन और सकल्प की भावना जागृत की है, उसने हमे एक सामाजिक दृष्टिकोण दिया है। और गाधी अपने प्रति, अपने विश्वासा के प्रति पूण रूप से ईमानदार है। परम्परागत होने के साथसाथ गाधी की अहिंसा उसके अन्दर वाली बौद्धिक अहिंसा भी है, गाधी उसी धरातल पर है जहाँ बुद्ध और महावीर थे। बुद्ध और महावीर ने वयक्तिक अहिंसा का सन्देश दिया, और यह वैयक्तिक अहिंसा एक लम्बे काल के बाद सामाजिक हिंसा बन गई, गाधी सामाजिक अहिंसा का सन्देश लाया है। उसकी सामाजिक अहिंसा एक ओर तो सामाजिक कायरता का रूप धारण कर लेगी, दूसरी ओर वह गाधी के अनुयायियो मे भयानक वैयक्तिक हिंसा बन जाएगी। लेकिन छोडो भी इस बात को! इस समय तो स्थिति यह है कि गाधी के पास एक अति सबल व्यक्तित्व है, फिर वह हमारे कायरता से भरे समाज का सबसे बडा प्रतिनिधि है। उसकी डिक्टेटरशिप के पीछे उसकी शक्ति इतनी महत्त्व की नही है जितनी हमारी सामाजिक कायरता है। नही मिस्टर जगतप्रकाश, गाधी को हटा सकना असम्भव-सा दिखता है, फिर भी हमे उसकी डिक्टेटरशिप को हटाने का प्रयत्न तो करना ही

चाहिए।" और जसवन्त कपूर उठकर बाथरूम चला गया।

अब जगतप्रकाश अनुभव कर रहा था कि उसने त्रिपुरी आकर अच्छा ही किया। उसे एक नवीन दृष्टिकोण का पता चला। उसे लग रहा था कि जसवन्त कपूर ने जो बातें कही हैं, अगर उन पर गम्भीरतापूर्वक सोचा जाए तो और भी कई महत्त्वपूर्ण बातें मालूम हो सकती हैं। तभी उसे कमलाकान्त की आवाज सुनाई दी, "जगतप्रकाश, कामरेड जसवन्त कपूर ने तुम्हें भी अपनी थीसिज समझा दी। मैं लेटा लेटा सब सुन रहा था। कहो, कल शाम तो तुम्हारी मौज में बीती।" और कमलाकान्त मुस्कराता हुआ जगतप्रकाश के सामने बैठ गया।

जगतप्रकाश भी मुस्कराया, "तुम दोनों तो पंजाब दिल्ली कैम्प की तरफ चले गए, उधर त्रिभुवन मेहता और मालती मनुभाई एक-दूसरे से लड़ते हुए तथा एक दूसरे को मनाते हुए कहीं गायब हो गए। कुल्सुम कावसजी हम लोगों को ढूंढते हुए मुझे मिल गई। हम दोनों यहीं पास घूमने निकले। इतने में परवेज झाबवाला हम लोगों को डिनर के लिए बुलाने आ गया। कुल्सुम अकेले जाना नहीं चाहती थी, तुम लोगों का कहीं पता नहीं था, और यह भी ठिकाना नहीं था कि कब लौटोगे। तो कुल्सुम जबर्दस्ती मुझे अपने साथ अपने मामा के यहां ले गई।"

"अजीब पागल-सी लड़की है यह कुल्सुम कावसजी, लेकिन है बड़ी जीवटवाली। बड़ा सबल व्यक्तित्व है इसका। कामरेड जसवन्त कपूर के पीछे दीवानी है और हमारे जसवन्त कपूर कि उसे प्रेम करने के लिए उन्हें फुरसत ही नहीं है।"

कमलाकान्त की बात सुनकर जगतप्रकाश को आश्चर्य हुआ, "यह क्या कह रहे हो? कुल्सुम की तो परवेज के साथ शादी करीब-करीब तय हो चुकी है, मुझे खुद कुल्सुम ने बतलाया है, और जहां तक मैं जान पाया हूँ कुल्सुम को इस शादी से कोई विरोध भी नहीं है।"

"हां, यह सब तो ठीक है, लेकिन यह स्त्री भी बड़ी विचित्र सत्ता होती है। यह कब क्या कर बैठेगी, वह खुद नहीं जानती। महीनों यह कुल्सुम दिल्ली में पड़ी रहती है, जसवन्त के नजदीक रहने के लिए। लेकिन जसवन्त के मन में कुल्सुम के प्रति कहीं भी कोई लगाव नहीं दीखता।"

जगतप्रकाश के मन मे एक नई और विचित्र हलचल। उसका मन नही हो रहा था कि वह कमलाकान्त की बात पर विश्वास करे। और आश्चय उसे इस बात पर भी हो रहा था कि उसे यह बात सुनकर बुरा क्या लग रहा है? परवेज से कुलसुम के विवाह की बात करीब-करीब पक्की हो चुकी है। जगतप्रकाश को यह बात सुनकर बुरा नही लगा था, लेकिन जसवन्त कपूर के प्रति कुल्सुम का लगाव है, यह बात सुनकर उसके मन मे कही कोई कसक जाग उठी। और फिर उसे कमलाकान्त की आवाज सुनाई पडी, "मेरी सलाह है कि इस कुलसुम से तुम दूर ही रहना। ऊपर से शिष्ट, शान्त और सौम्य, फिर यह सुन्दर भी है, लेकिन इसका भरोसा नही किया जा सकता, यह लडकी केवल अपने लिए जीवित है, अपने मन की है।"

जगतप्रकाश के अन्दर वाली कसक का स्थान एक अजीब-सी उलझन ने ले लिया, उसका अनुभव तो कुछ दूसरी ही किस्म का था, या फिर वह अपने अनुभव को ठीक तरह से नही समझ पाया। उस बात की गम्भीरता को दूर करने के लिए उसने कहा, "क्या तुम्हे भी किसी तरह का अनुभव हुआ है कुल्सुम से?"

कमलाकान्त ने उत्तर दिया, "नही, मुझे इस कुलसुम के [illegible] का कभी मौका ही नही मिला, एकाध बार देखा है इसे उसके [illegible], लेकिन दूर से, जसवन्त के साथ थी। इसके सम्बन्ध मे मुझे जो कुछ भी [illegible] है, वह त्रिभुवन मेहता से मिली है और स्वय त्रिभुवन भी इसके [illegible] कम आया है। त्रिभुवन को केवल इतना ही ज्ञान है [illegible] बनाया है, सच पूछो तो मालती को यह कुल्सुम [illegible]।"

उसी समय एक जानी पहचानी आवाज [illegible] जो उसे काफी कठोर लगी, "जसवन्त!" [illegible] कुल्सुम ने उसके टण्ट मे प्रवेश किया।

जगतप्रकाश उठकर खडा हो गया [illegible] ही हो, बैठिये।"

कुल्सुम ने उसे इन [illegible] ही वह निकले मेरे पास [illegible] के द्वार पर जाकर [illegible]

जगतप्रकाश से उसने कहा, "देखिए, भूलिएगा नहीं, उन्हें मेरे पास अवश्य भेज दीजिएगा। जब तक वह बाहर न निकलें तब तक आप यहीं बैठिएगा।" और बिना जगतप्रकाश के उत्तर की प्रतीक्षा किये कुलसुम तेज़ी के साथ चली गई।

उसके जाते ही कमलाकान्त ज़ोर से हँस पड़ा, "देख लिया, मालती मनुभाई का कहना ठीक ही है, हम लोगों की तरफ उसने ध्यान ही नहीं दिया केवल जसवन्त मे उसे दिलचस्पी है।"

जगतप्रकाश ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसने अनुभव अवश्य किया—अपमान, उपेक्षा, ईर्ष्या—क्या नहीं जा सकता, और तभी जसवन्त कपूर बाहर निकला। कमलाकान्त ने उससे कहा, "कुल्सुम कावसजी तुम्हें ढूंढ रही हैं, कह गई हैं कि जैसे बाथरूम से निकलें, वैसे ही तुमको उनके यहाँ भेज दूं।"

जसवन्त बोला, "हां, मैंने सुन लिया है।' और निर्लिप्त भाव से जसवन्त कपूर कपड़े बदलने लगा।

३

जगतप्रकाश चल रहा था, चलता जा रहा था, जैसे उसके पैर रुकना जानते ही न हो। उसके पैरो मे पहले तो थकन आई, लेकिन धीरे-धीरे वह थकन सूनी-सी पड गई, पैर बिना किसी इच्छा के, बिना किसी प्रेरणा के आप-ही-आप घिसटते जा रहे थे। अपार जन समूह और उस जन समूह का वह एक भाग। त्रिपुरी के उस क्षेत्र को, जहा काग्रेस का अधिवेशन हो रहा था, पूरी तौर से अपने पैरो से नाप लेने का सकल्प करके वह निकला था, और वह चलता जा रहा था, जैसे हर हालत मे उसे अपना सकल्प पूरा करना ही हो। प्रथम बार उसे अनुभव हो रहा था कि किस प्रकार तन और मन की थकावट एक-दूसरे से मिलकर जीवन का एक भाग बन जाया करती है, जहा गति तो रहती है, लेकिन उस गति मे पीछे किसी तरह के उत्साह का नितान्त अभाव रहता है।

खुला अधिवेशन आरम्भ होने मे अभी काफी देर थी। कुल्सुम कावसजी, जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता सब्जेक्ट्स कमेटी से अभी नहीं लौटे थे और मालती मनुभाई कमलाकान्त के साथ धुआधार का प्रपात देखने चली गई थी। इन दोना ने जगतप्रकाश से भी साथ चलने को कहा था, लेकिन जगतप्रकाश की इच्छा नही थी जाने की। जगतप्रकाश अकेला रह गया था और धीरे-धीरे जगतप्रकाश को अपना अकेलापन अखरने लगा। वह भी निकल पडा घूमने के लिए। लेकिन इतनी बडी भीड मे भी तो वह अकेला था। जगतप्रकाश के मुख पर एक मुसकान आई, यह अकेलापन अस्तित्व का एक अनिवाय भाग है इस अकेलेपन से किसी को छुटकारा नही मिलने का।

अब वह बगाल कैम्प के पास आ गया था और उसे अनुभव हुआ कि बगाल कैम्प मे कुछ आवश्यकता से अधिक सरगर्मी है। लोग चिल्ला चिल्लाकर आपस म बातें कर रहे थे, गाधी को, पत को, नेहरू को राजगोपालाचार्य को गालिया दे रह थे। जगतप्रकाश बँगला भाषा नहीं जानता था, लेकिन ७५ प्रतिशत अग्रेजी के शब्दो से लदी हुई वह बँगला भाषा, जो बगाल के प्रतिनिधिगण बोल रह थे, उसकी समझ मे आसानी स आ रही थी।

"सुभाष कायर है, उसे बीमार नही बनना चाहिए।" एक मोटा-सा आदमी कह रहा था, "सुभाष ने बगाल की नाक कटा दी। कितन बडे जलूस की व्यवस्था थी—एक-दो नही, बावन हाथिया से खीचा जाने वाला रथ—और सुभाष को उस रथ पर बैठकर चलना था।"

उस आदमी के पास खडे हुए एक बूढे-से आदमी ने उत्तर दिया, "सुभाष ने बहाना नही किया, वह वास्तव मे बीमार है। तुम्ह शम नहीं आती यह सब कहते हुए। देख नही रहे हो कि सुभाष पहाड से टक्कर ले रहा है। बगाल का यह सिंह, इसे कायर कौन कह सकता है—वह बीमार है।"

जगतप्रकाश आगे बढ गया इस बात को सुनकर उसे हँसी आ गई। लेकिन आगे बढकर भी वह इस उत्तेजना के वातावरण से मुक्ति नही पा सका। दूसरा दल, अधिक उत्तेजित। एक आदमी कह रहा था 'नेहरू ने सुभाष को धोखा दिया, नेहरू न देश के नवयुवको को धोखा दिया। लेकिन गाधी, नहरू, पत—सुभाष इन सबसे बहुत ऊपर है। पूरा बगाल सुभाष का साथ देगा, बगाल फिर से देश के नेतृत्व को अपने हाथ म लेगा।'

"राजनीतिक चेतना, बुद्धि और विद्या मे बगाल अग्रणी है। कोई भी बगाल को दबा नही सकता उसे पीछे नही हटा सकता।" एक नवयुवक ने एक एक शब्द पर जोर देत हुए कहा।

जगतप्रकाश को कुछ अजीब-सा लग रहा था। क्या सुभाष का प्रश्न हिंसा-अहिंसा का था, क्या सुभाष का प्रश्न जवानो और बूढो का था, या फिर सुभाष का प्रश्न प्रान्तीयता का प्रश्न था? अपने साथियो से बातें करते हुए उसे लगा था कि यह प्रश्न हिंसा-अहिंसा का मुख्य रूप से था, गौण रूप से यह प्रश्न जवानो और बूढो का था, लेकिन यहाँ इस बगाल कैम्प म तो

यह प्रश्न प्रान्तीयता का बना हुआ था।

जगतप्रकाश के मन मे अब अजीब तरह की वितृष्णा भर गई थी, वह जल्दी से-जल्दी बगाल कैम्प के बाहर निकल जाना चाहता था। लेकिन उसके पैर उठने का नाम ही नही ले रहे थे। इस कुरूपता को देखता हुआ, कटुता मे भरे शब्दो को सुनता हुआ, बोझिल कदमो को घसीटता हुआ वह आगे बढ रहा था और तभी सब्जेक्ट्स कमेटी के पण्डाल से आते हुए दो व्यक्ति उसके पास से निकले। एक कह रहा था, "विश्व-युद्ध निश्चित है। अगर सुभाष बाबू के छ महीने की अवधि के अल्टीमेटम का प्रस्ताव पास हो जाता तो निश्चय यह देश का बहुत ठोस कदम होता।"

"यह अल्टीमेटम कभी स्वीकार नही होगा इस गाधी की डिक्टेटरशिप से लदी हुई काग्रेस को, जो अहिंसा के बल पर स्वराज्य प्राप्त करना चाहती है।" दूसरे आदमी ने कहा और दोनो तेजी से निकल गए।

जगतप्रकाश चौक उठा। क्या वास्तव मे विश्व-युद्ध निश्चित है? और क्या वह साल-छ महीने मे ही होगा? यह काग्रेस का प्रेसीडेण्ट छ महीने के अल्टीमेटम का प्रस्ताव रख रहा है, इसके अर्थ यह हुए कि छ महीने और एक साल के भीतर अगर विश्व-युद्ध नही होता तो हमारा यह अहिंसा का आन्दोलन हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाएगा। वैसे यूरोप की हालत दिनोदिन बिगडती जा रही है—जगतप्रकाश यह जानता था। स्पेन का गृह-युद्ध, इटली का अबीसीनिया के विरुद्ध युद्ध-अभियान और जर्मनी की सैनिक तैयारिया। लेकिन ब्रिटेन निश्चिन्त है, फ्रास निश्चिन्त है। दुनिया की दो बडी ताकतें जहा निश्चिन्त हो वहा युद्ध की सम्भावना कैसी? फिर भी एक तरह की आशका व्याप्त थी समस्त वातावरण मे।

जगतप्रकाश बगाल कैम्प से निकलकर मुख्य पण्डाल की ओर बढ रहा था। उसे अब भूख लग रही थी, और सामने ही हलवाई की दुकान उसे दिखी, गरम-गरम पूडिया निकल रही थी और लोग दुकान के बाहर बैठे हुए खा रहे थे। उसने दुकानदार को एक पाव पूडी का आर्डर दिया और दाम देने के लिए जेब म पैसे निकालने के लिए हाथ डाला। उसका हृदय धक से रह गया। उसकी जेब मे पर्स नही था। उसकी बण्डी की जेब नीचे से कटी हुई थी। वह तेजी से आगे बढ गया।

उसकी जेब म करीब अठारह रुपए थे उसकी समस्त पूजी—और अब उसके पास एक पैसा नही था। उसके पैरा की थकन अब और बढ गई थी लेकिन उसकी भूख जाती रही थी।

उसके आगे तीन आदमी चल रहे थे उनम स एक कह रहा है, "यह काग्रेस का जमाव तो पूरा गिरहकटो का जमाव है, सब रुपए निकल गए। मैं कितने यत्न से जेब सम्हाले था लेकिन कोई जेब काट ही ले गया। कम नही, एक सौ सत्तर रुपए थ। घर वापस लौटने को पैसा भी नही बचा पास मे।'

दूसरे आदमी ने कहा, 'दो दिन की बात तो है ही पाच रुपए मुझसे ले लो, बाकी वापस जाना बिना टिकट। पकडे जाना ता कह देना कि काग्रेस म जेब कट गई। लेकिन पहले पुलिस म रिपोट लिखा लो। पुलिस का कम्प तो यहा है ही।"

तीसरा हँस पडा, "इस सबसे हवालात से तो नही बच सकोगे तुम्हारे लौटने का किराया मैं दे दूगा। यह रिपोट विपोट लिखाना बकार, पाच सौ से ऊपर रिपोर्टें लिखी जा चुकी हैं, पुलिस वाले अब रिपोर्टें लिखने से इन कार कर रहे हैं। गिरहकटो का एक बहुत बडा और सगठित समूह इस बार यहा काग्रेस म आया है।"

तभी उसे पीछे से एक जानी पहचानी आवाज सुनाई दी, "आधि पत्य पूजीवादियो का है इस काग्रेस म, जो सघष नही चाहते। कैसा अल्टी मेटम और कैसा आन्दोलन? प्रान्तो म काग्रेस सरकारें बन गई है। माना कि इन काग्रेस सरकारो के पास सत्ता नही है, क्योकि सत्ता अग्रेज गवनरो और अग्रेज नौकरशाही के हाथ म है, पर इन काग्रेस मिनिस्टरो के पास पद तो हैं। गाधी अग्रेजो का सबसे बडा समथक है और गाधी काग्रेस मे सर्वेसर्वा है। राजकोट म गाधी ने उपवास किया और उपवास के तीसरे ही दिन गाधी की बात मान ली गई। गाधी के साथ देश का पूजीपति समाज है, गाधी का समस्त आन्दोलन पूजी का आन्दोलन है। पूजीवाद जनता के सघष से घबराता है।"

जगतप्रकाश ने घूमकर पीछे देखा, करीब एक गज पीछे जसवन्त कपूर और त्रिभुवन महता दिखे। जसवन्त कपूर का स्वर काफी उत्तेजित था।

तभी त्रिभुवन मेहता बोला, "यह सघर्ष की बात कह देना बडा आसान है, लेकिन यह सघर्ष करना इतना आसान नही है। जो कुछ अभी तक हिदुस्तान को मिला वह काफी नही है, मैं यह मानता हूँ, लेकिन जब इतना मिल चुका है तब और भी अधिक मिलेगा। इस सघर्ष मे तो जो कुछ मिला है उसके छिन जाने का भी खतरा है।"

जगतप्रकाश ने अब अनुभव किया कि वह बम्बई कम्प मे प्रवश कर चुका है। उसने जसवन्त कपूर से कहा, "क्यो जसवन्तजी, विषय निर्वाचिनी कमेटी की मीटिंग समाप्त हो गई?"

जसवन्त कपूर को जैसे अब होश आया हो, "अरे जगतप्रकाश! क्या घूमकर लौट रहे हो?" वह एकाएक चौंक उठा, "अरे कुलसुम! कुलसुम कहा छूट गई?" उसने त्रिभुवन मेहता की ओर देखा।

"चले तो हम लोग साथ ही थे, फिर हम लोग जो बातो मे लगे तो कुलसुम का खयाल ही जाता रहा।"

जसवन्त कपूर हँस पडा, "कुलसुम ठहरी कुलसुम, उसका कौन ठिकाना! फिर न जाने क्यो वह आज के वातावरण मे बहुत अधिक उद्विग्न हो उठी थी। बगाल के प्रतिनिधियो ने, जो हर कदम पर महात्मा गाधी पर विश्वास के प्रस्ताव को बगाली और गैर बगाली का किस्सा बना लिया था, उससे सुभाष का अहित ही हुआ। भला इसमे कौन-सी ऐसी बात थी जो कुलसुम उद्विग्न हो जाती! सुभाष का मत ठीक हो सकता है, लेकिन यह बगाल वाली प्रान्तीयता का आरोपण, मैं समझता हूँ गलत था। इसकी प्रतिक्रिया मे गैर-बगालियो का रुख कुलसुम को क्यो बुरा लगा, यह बात मेरी समझ मे नही आई।"

जगतप्रकाश ने जो कुछ देखा-सुना था उससे वह जसवन्त कपूर की [illegible] का महत्त्व आसानी से समझ गया। उसने दबी जबान मे [illegible], [illegible] कुलसुम को ढूढना तो चाहिए। उफ कितनी भीड है, [illegible] न जाने कितने लुटेरे और गिरहकट घूम रहे है।"

त्रिभुवन मेहता ने आश्चर्य से जगतप्रकाश [illegible], "[illegible] कैसे [illegible] चला कि मेरी जेब कट गई? जानते हो, [illegible] हुए थे, वह उन परचो को नोट समझकर [illegible]। पन [illegible]

कुल्सुम के मुख पर एक रूखी तथा करुण मुसकान आई, "कौन दूसरो को देखता है, सब अपनी ही तरफ देखते रहते है ! मैं किसी की शिकायत नही करती, वे दोनो अपनी ओर देख रहे थे और मैं अपनी तरफ देख रही थी। सोच रही थी कि कही गिर न पडू । एकाध बार सोचा कि किसी रास्ता चलते आदमी से कहूँ कि वह मुझे मेरे टण्ट तक पहुँचा दे, लेकिन फिर मुझे अपने से ही ग्लानि हुई। क्या मैं इतना भी बर्दाश्त नही कर सकती ? मैं चलती रही, अपने को घसीटती रही। इस समय तो किसी को पुकारने की भी हिम्मत नही रह गई, गिरने ही वाली थी कि तुम आ गए।"

"हा, जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता ने मुझे बतलाया कि तुम उनके साथ चली थी, लेकिन न जाने कहा रह गइ ! तो मैं आपको—नही तुम्हे खोजता हुआ यहा आ गया।"

कुल्सुम की आखे झपी जा रही थी। उसने अपना सारा शरीर जगत-प्रकाश की बाहो के घेरे मे डाल दिया था, और वह कह रही थी, "सच ! तुमने मेरी खोज-खबर तो ली ! तुम शायद अपने से हटकर दूसरा की ओर देख सकते हो। लेकिन तुम्हारी यह प्रवृत्ति कब तक रहगी ? अभी तुम जीवन के सघर्षो म नही आए हो, अभी तुम्हार अन्दर वाला अबोध शिशु जीवित है, लेकिन यह सब कब तक ? जल्दी ही तुम भी अपने को दूसरा पर आरोपित करने लगोगे। तब तुम केवल अपनी ओर देखोगे, दूसरे तुम्हारे लिए साधन के रूप मे रह जाएँगे, जिनके द्वारा तुम अपने स्वार्थ की सिद्धि कर सको। बुरा न मानना, मैं ठीक कह रही हूँ।"

जगतप्रकाश ने कुल्सुम की इस बात का कोई उत्तर नही दिया, वह असीम सुख अनुभव कर रहा था कुलसुम के स्पर्श से, कुलसुम की बातो से। वह सोच रहा था कि कुल्सुम जो कुछ कह रही है वह सत्य है। वह कुलसुम को ढूढने आया था, क्योकि उसके अन्दर कही कोई भावना जाग उठी थी। कुल्सुम को ढूढने आने मे उसके अन्दर वाली प्रेरणा, और उस प्रेरणा द्वारा आत्म-सतोष सर्वोपरि थे।

थोडी देर चुप रहने पर कुल्सुम ने फिर कहा, "स्वार्थ-स्वार्थ—हर तरफ आदमी का स्वार्थ। हरेक आदमी का हरेक काम उसके स्वार्थ से प्रेरित है,

अपने से ऊपर उठकर या अपने से अलग होकर कोई आदमी नहीं देखता शायद देख भी नहीं सकता। महात्मा गांधी पर विश्वास का प्रस्ताव अगर ठीक तौर से देखा जाए तो सुभाषचन्द्र बोस पर अविश्वास का प्रस्ताव है। जिस दिन वर्किंग कमेटी के सदस्यों ने इस्तीफा दिया था उसी दिन उन लोगों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि उनका विश्वास सुभाष बोस पर नहीं है और अपनी विजय के उल्लास में भूला हुआ सुभाष—उन इस्तीफों के परिणाम के प्रति वह अन्धा बन गया। उसने उन इस्तीफों को मंजूर कर लिया। लेकिन फिर सवाल यह है कि अगर वह उन इस्तीफों को मंजूर न करता तो करता क्या? क्या वह गांधी के आगे घुटने टेक देता? अगर उसने यह किया होता तो वह कम से कम सभी नजरों से गिर गया होता। जनमत उसके साथ था उसने चुनाव के नतीजा ने यह प्रदर्शित कर दिया था लेकिन उस जनमत पर भरोसा कैसे किया जा सकता है? क्षणिक और अस्थायी आवेगों से भरा यह जनमत बड़ा भ्रामक होता है,' और कुल्सुम कहते कहते रुक गई जैसे अब उसे बात करने में कष्ट हो रहा हो।

जगतप्रकाश ने कहा 'तुम ठीक कहती हो, यह जनमत बड़ा भ्रामक होता है। लेकिन इसकी चिन्ता क्या कर रही हो तुम? मन को शान्त करने में ही भलाई है। ज्यादा बात करने से उद्विग्नता बढ़ती है।'

थके से स्वर में कुल्सुम बोली, 'लेकिन बात करके ही तो मैं अपने अन्दर वाली घुटन को दूर कर सकती हूँ। सब्जेक्टस कमेटी में पुराने लोगों का बहुमत है सुभाष का वहां पराजित होना ही था। लेकिन क्या खुले अधिवेशन में सुभाष विजयी होगा? मुझे तो इसकी सम्भावना तनिक भी नहीं दिखती क्योंकि जनमत बदल गया है राजकोट में गांधी के उपवास के कारण। हारी हुई बाजी खेल रहा है यह सुभाष और उसकी पराजय को और भी हास्यास्पद बना रही है सुभाष के समर्थकों की प्रान्तीयता। पूरा बंगाल सुभाष का साथ दे रहा है इसलिए कि सुभाष बंगाली है—सब्जेक्टस कमेटी में मैंने यह देखा। वहां से चीज़ें शुरू हुई और हम आज कहां आ पहुँचे! मानवता के आधार पर किसी में सोचने-समझने की न प्रवृत्ति है न क्षमता है। मुसलिम-गैर-मुसलिम, बंगाली गैर-बंगाली—हमारे देश का यही सबसे बड़ा अभिशाप है।'

दोनो अब अपने टेण्टो के नज़दीक आ गए थे। कुल्सुम ने राहत की सास लेते हुए कहा, "मजिल पर पहुँच गई हूँ। उफ ! बला की थकावट है मेरे अन्दर। मुझे मेरे बिस्तर पर लिटा दो चलकर। जी चाहता है सो जाऊँ और लगातार सोती रहूँ। सारा बदन टूट रहा ह, ऐसा लगता है कि मुझे बुखार चढ आया है। लेकिन इसकी फिक्र न करना, यह थकावट का बुखार जल्दी ही ठीक हो जाएगा, सिफ आराम की जरूरत है।"

कुलसुम का टेण्ट खाली पडा था। जगतप्रकाश ने अनुमान लगा लिया कि जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता उसके टण्ट मे बैठे हुए हैं। दो हिस्सो के उस टेण्ट मे, आगे वाले भाग मे मालती मनुभाई और त्रिभुवन मेहता के बिस्तर पडे थे, पीछे वाले भाग मे कुलसुम कावसजी का बिस्तर पडा था। जगतप्रकाश ने कुल्सुम को उसके बिस्तर पर लिटा दिया। बिस्तर पर लेटते हुए कुलसुम ने कहा, "तुम कितने अच्छे हो, कितनी मदद की तुमने मेरी ! अब तुम खाना खा आओ जाकर। मालूम होता है जसवन्त और त्रिभुवन खाना खाने चले गए हैं। मैं अब सोती हूँ, खाना बिलकुल नही खाऊँगी। सब लोगो से कह देना कि मुझे कोई जगाए नही, शाम तक ठीक हो जाऊँगी। खुले सेशन मे मुझे देखना है कि क्या जनमत अब भी सुभाष के साथ है।"

"तुम शान्त होकर सोओ, किसी तरह की चिन्ता न करो। शाम को चार-पाँच बजे मैं देखूगा आकर तुम्हे।" जगतप्रकाश बाहर निकल आया। अपने टेण्ट मे उसने आकर देखा कि कुलसुम का अनुमान ठीक था, जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता दोनो ही शायद खाना खाने चले गए थे। वह चुपचाप बिस्तर पर लेट गया कमलाकान्त की प्रतीक्षा मे। उसके पास एक पैसा न था, सिवा कमलाकान्त के वह किसी से कुछ माग भी तो नही सकता था। धीरे धीरे जगतप्रकाश को नीद आ गई।

जिस समय जगतप्रकाश की नीद खुली तो उसने देखा कि कमलाकान्त उसके सिरहाने खडा कह रहा है, "तुम कब तक सोते रहोगे ? पाँच बज रहे है। छ बजे से खुला अधिवेशन होने वाला है। मालती बेन ने चाय के लिए बुलाया है।"

जगतप्रकाश ने उठकर कपडे पहने और तभी उसे याद आ गई कुलसुम की। उसने कुलसुम से जो वायदा किया था उसे पूरा न कर सका था। कुलसुम

के टेण्ट म आकर उसने देखा कि कुल्सुम बैठी हुई चाय पी रही थी। मालती ने जगतप्रकाश और कमलाकान्त को देखकर कहा, "इस कुल्सुम को तो बहुत तेज बुखार है, अभी मैंने इसका टेम्परेचर लिया था, एक सौ दो निकला है। यह खुले अधिवेशन में कैसे जाएगी ?"

'बुखार तो इतना नहीं है, लेकिन कमजोरी बहुत लग रही है। मुझसे इतनी दूर चला न जाएगा।" कुल्सुम बोली, फिर उसने जगतप्रकाश की ओर देखकर कहा, "दोपहर को अगर तुम मुझे न मिल गए होते तो मैं रास्ते में ही बेहोश होकर गिर पड़ती। यह मालती एक घण्टा पहले लौटी तो इसने मुझे जगाया आकर।'

जगतप्रकाश कुछ देर तक मौन रहा फिर उसने कहा, "कुल्सुम यहाँ अकेली कैसे रहेगी फिर इनका इलाज भी तो होना चाहिए। यहाँ कांग्रेस कम्प में कोई डिस्पसरी तो होगी ही, मैं ढूँढता हूँ जाकर उसे डॉक्टर को बुलाकर दिखाना होगा। आप लोग हो आइए खुले अधिवेशन में।"

कुल्सुम मुसकराई, 'मैं बिना दवा दारू के ही अच्छे होने में विश्वास करती हूँ। डॉक्टर को लाने की कोई जरूरत नहीं है। मैं यहाँ अकेली रहूँगी और सोऊँगी। सुबह तक बुखार खुद उतर जाएगा।'

जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता अपने-अपने प्रभाव वाले डेलीगेटो से मिलने के लिए बहुत पहले चले गए थे। मालती और कमलाकान्त वहाँ थे। कमलाकान्त बोला "हम-तुम दोनों यहाँ रहेंगे मैं मालती बन को पहुँचाकर वापस आ जाऊँगा।'

"नहीं यहाँ कोई नहीं रहेगा।" दृढ आवाज में कुल्सुम बोली, "तुम लोग अधिवेशन में हो आओ जाकर। इसी अधिवेशन के लिए तो तुम लोग जबलपुर आए हो। मैंने कहा न कि अभी डाक्टर की जरूरत नहीं है, कल सुबह मेरा बुखार खुद उतर जाएगा।'

जगतप्रकाश ने न जाने क्या यह अनुभव किया कि कुल्सुम की आवाज की दृढता की पीछे कहीं किसी प्रकार का कम्पन है।

मालती कमलाकान्त और जगतप्रकाश—तीनों ही खुले अधिवेशन के लिए चल पड़े। इस समय तक जगतप्रकाश भूल-सा गया था कि उसने दिन में खाना नहीं खाया है और उसकी जेब कट गई है। पण्डाल के पास

पहुँचकर जगतप्रकाश ने कमलाकान्त से कहा, "कमलाकान्त, दूसरे के पास और बैज की सहायता से पण्डाल मे डेलीगेटो मे शामिल होना, यह तो अनैतिक काम होगा। मैं तो बाहर से ही स्पीचें सुनूगा।" वह पण्डाल के बाहर रुक गया। कमलाकान्त और मालती के जाने के बाद जगतप्रकाश अपने टेण्ट की ओर लौट पडा।

कुलसुम आखे बन्द किये हुए लेटी थी, जगतप्रकाश के पैरो की आहट सुनकर उसने पूछा, "कौन है ?"

"मैं हूँ जगतप्रकाश।" जगतप्रकाश ने कुल्सुम के पास आकर कहा, "तुम्हे बुखार मे अकेले छोडकर अधिवेशन मे भाग लेने का मन नही लौट आया। कैसी तबीयत है ?"

ऐसा मालूम होता था कि कुलसुम के अन्दर वाली बेचैनी बहुत बढ गई है। उसने अपनी आख मूदते हुए कमजोर स्वर मे कहा, "अच्छा हुआ जो लौट आए। अन्दर से बडी बेचैनी है, मालूम होता है बुखार बहुत बढ गया है। सारे बदन मे दर्द हो रहा है, सर फटा जा रहा है।"

"अगर कहो तो सर दाब दू ?" जगतप्रकाश ने कुल्सुम के सिरहाने कुरसी पर बैठते हुए पूछा।

कुल्सुम ने जगतप्रकाश की बात का कोई उत्तर नही दिया। कुल्सुम के मौन को सम्मति समझकर अब उसके सिरहाने पलग पर बैठकर वह उसका सर दबाने लगा। कुल्सुम का शरीर जल रहा था तेज बुखार मे।

एक घण्टा—पूरा एक घण्टा हो गया जगतप्रकाश को कुलसुम का सर दबाते हुए। सर दबाए जाने से शायद कुलसुम की बेचैनी कम हो गई थी और उसे नीद आ गई थी। इस समय जगतप्रकाश अपने अन्दर बडी कमजोरी अनुभव कर रहा था। सुबह से उसने कुछ भी न खाया था। कुल्सुम की बीमारी के कारण वह कमलाकान्त से रुपये मांगना भी भूल गया था। उसकी तबीयत हो रही थी कि वह अपने टेण्ट मे जाकर सो जाए, बडी थकावट अनुभव हो रही थी उसे। एक घण्टे बाद कुल्सुम ने आँखें खोली, "बडी प्यास लगी है, एक गिलास पानी।"

जगतप्रकाश ने पानी का गिलास कुल्सुम को दिया। दो गिलास पानी पीकर उसने गिलास वापस कर दिया, "तुमने बडा अच्छा किया जो वहाँ से

वापस चले आय। यह इन्फ्लुएजा का बुखार मालूम होता है, बहुद कमजोरी है उठने की हिम्मत नही होती।"

जगतप्रकाश को याद हो आया कि उसके गाव मे जब कभी उस इन्फ्लुएजा होता था उसके पिता उसे अदरक-कालीमिच का काढा पिलाते थे और कभी-कभी चौबीस घण्टे के अन्दर उसका बुखार उतर जाया करता था। उसने कहा, 'मैं अभी अदरक और कालीमिच का काढा बनाकर पिलाता हूँ तुम्हे। स्टोव तो यहा पर है ही मैं यहा बाजार मे ढूढकर अदरक और कालीमिच लिये आता हूँ।" वह उठा लेकिन उसी समय उसे ख्याल आ गया कि उसके पास पैसे नही हैं, वह खरीदेगा कैसे ? वह ठिठककर खडा हो गया। उसी हालत म वह चुपचाप खडा रहा उसकी समझ मे न आ रहा था कि क्या किया जाए।

पता नही कैसे, कुल्सुम को कुछ आभास हो गया कि जगतप्रकाश वहीं खडा है, अभी गया नही है। उसने आख खोली, अरे, अभी तक तुम गये नही ? क्या बात है ?"

जगतप्रकाश को कहना पडा 'मुझे खयाल ही न रहा था कि मेरी जेब मे एक पैसा नही है। आज दोपहर के समय किसी ने मेरी जेब काट ली। कमलाकान्त से रुपये लेने वाला था, लेकिन तुम्हारी बीमारी की चिन्ता म मैं भूल ही गया।

एक क्षीण मुसकान कुल्सुम के मुख पर आई "बस इतनी-सी बात ?" फिर गौर से जगतप्रकाश को देखा, 'मालूम होता है तुमने आज दिन मे खाना नही खाया है, तुम भी बीमार-से दीख रहे हो।' कुल्सुम ने तकिया के नीचे से अपना पर्स निकाला। पर्स उसने जगतप्रकाश की ओर बढाते हुए कहा इसमे से दस दस के पाच नोट निकाल लो।'

जगतप्रकाश लज्जा म मानो गड गया, उसने कहा 'नही, आपको बहुत बहुत धन्यवाद ! कमलाकान्त से मैं रुपये ले लूगा, तुम मुझे सिर्फ एक रुपया दे दो ताकि मैं तुम्हारी दवा ले आऊँ।'

"मैं या तो पचास रुपये दूगी या फिर कुछ नही दूगी, बिना किसी दवा के रहूँगी।' कुछ उत्तेजित स्वर म कुल्सुम बोली, मुझसे इतना भेद भाव, मुझसे इतना अलगाव ! जाओ यहा से मुझे तुम्हारी सहायता की, तुम्हारी

सहानुभूति की कोई जरूरत नही है। नही तो ये पचास रुपए तुम निकाल लो।"

अपराधी की भांति सर झुकाकर जगतप्रकाश ने रुपये ले लिये। कुलसुम ने पस तकिए के नीचे वापस रखते हुए कहा, "जाओ, पहले कुछ खा लो, फिर जो कुछ लाना हो ले आओ। इस बीच मैं सोने की कोशिश करूँगी।"

जगतप्रकाश जिस समय वापस लौटा, कुलसुम जाग रही थी। उसने अदरक-कालीमिर्च की चाय बनाई और कुल्सुम को चाय पिलाकर उसने उसे अच्छी तरह उढाकर लिटा दिया। तभी कुल्सुम ने कहा, "अगर तुम्हे किसी तरह की असुविधा न हो तो तुम रात मे यही सो जाओ, बहुत मुमकिन है रात मे बुखार और बढ जाए।"

जगतप्रकाश अपना बिस्तर कुल्सुम के टेण्ट मे ले आया।

चाय पीकर कुल्सुम सो गई। जगतप्रकाश अपने साथ पूडियाँ ले आया था। उसने खाना खाया। खाना खाकर उसने घडी देखी, नौ बज गए थे। अब उसे बाहर से अधिवेशन समाप्त होने पर लौटने वाली भीड के शोर का पता चला। वह टेण्ट के बाहर आ खडा हो गया, खुले अधिवेशन मे जो कुछ हुआ, लोग उस पर टीका टिप्पणी कर रहे थे। मालती, मनुभाई और कमलाकान्त साथ-साथ लौटे। जगतप्रकाश को टेण्ट के बाहर खडा देखकर कमलाकान्त ने पूछा, "क्या तुम अभी-अभी वापस लौटे हो?"

"नही, मैं उसी समय लौट आया था। कुल्सुम बेन को बहुत तेज बुखार है—शायद एक सौ चार डिग्री हो।" जगतप्रकाश बोला।

मालती कुल्सुम के भाग की ओर बढी और जगतप्रकाश ने कहा, "अभी-अभी सोई हैं, इसके माने है कि अब बुखार का उतरना आरम्भ हो गया है। मेरा खयाल है कल सुबह तक बुखार उतर जाएगा। कुल्सुम बेन ने कहा था तो मैंने अपना बिस्तर यही डाल लिया है उनकी देख भाल करने के लिए।"

"अच्छा किया," मालती बोली, "बेचारी कुल्सुम! यहा आकर बीमार पड गई, कितने उत्साह और उमग के साथ वह आई थी!" फिर कुछ सोच-कर वह बोली, "परवेज झाबवाला को खबर कर देनी चाहिए, उसके यहा

"म इस वात को स्वीकार करता हूँ।" जसवन्त बोला, "लेकिन हमने अपना वोट पट्टाभि सीतारमैया के खिलाफ दिया था, महात्मा गाधी के खिलाफ नही दिया था। काग्रेस की वर्किंग कमेटी हमेशा से महात्मा गाधी की सलाह से बनती आई है, क्योकि देश का नेतृत्व महात्मा गाधी के हाथ मे है और इस बार भी वह महात्मा गाधी की सलाह से बनेगी।"

कुलसुम तिलमिला उठी, "कब तक देश का नेतृत्व महात्मा गाधी के हाथ मे रहेगा? हम लोगो ने महात्मा गाधी के नेतृत्व को उखाड फेंकने का सकल्प किया था, और आज जब मौका आया तब हम हट रहे हैं कायरो की भाति।"

जसवन्त ने गम्भीर होकर कहा, "देखो कुल्सुम, महात्मा गाधी का नेतृत्व हमने हिला तो दिया है, क्योकि उसकी नीव सुभाष के चुनाव से धमक गई है, लेकिन यह हमारी मजबूरी है कि उनके स्थान पर कौन आदमी आ सकता है, हम इसका निर्णय नही कर पा रहे। सुभाष के सम्बन्ध मे हमने सोचा था कि वे देश का नेतृत्व सँभाल लेंगे, लेकिन सुभाष ने राजनीतिक बुद्धिमत्ता का परिचय नहीं दिया। इस स्वतन्त्रता-सग्राम मे हम लोग गहरी आपसी फूट तो नही डाल सकते—सुभाष ने इस सत्य की उपेक्षा की। पता नही इस सबमे सुभाष का कितना हाथ है, लेकिन बगालियो ने इस मामले मे जो रुख अपनाया है वह ठीक नहीं है।"

कुलसुम ने एक ठडी सास ली, "हम सब कायर है, हम सब अपने को धोखा देने वाले है।"

"शायद तुम ठीक कहती हो।" जसवन्त बोला, "यह अहिंसा हमारी नस-नस मे भर गई है। और यह अहिंसा एक बहुत बडे ढोग मे लिपटी हुई कायरता के सिवा और कुछ भी नही है। हमारा हिन्दू धर्म त्याग, मुक्ति और तपस्या के आवरण मे आत्महत्या को स्वीकार करता है, जिसे हम भारतीय सभ्यता और सस्कृति कहते है, वह इस पराजय की भावना की प्रतीक है। इस पराजय की भावना को स्वीकार करने के लिए हम अपने सस्कारो से विवश हैं।" जसवन्त एक झटके के साथ उठ पडा।

कुल्सुम चुपचाप बठी बाहर की ओर सूनी नजर से देख रही थी। त्रिभुवन मेहता और जसवन्त कपूर चले गए। कमलाकान्त ने जगतप्रकाश

से कहा 'चलो, हम लोग भी थोडा-सा घूम आएँ चलकर। इस सघप म
सुभाष इतने निवल सावित होग, यह मुझे नही मालूम था।"
जगतप्रकाश न कुल्सुम की ओर देखा और कुल्सुम ने कहा, 'हाँ,
तुम लोग घूम आओ जाकर, मालती तो मेरे साथ है।'
टण्ट के वाहर निकलकर कमलाकान्त ने जगतप्रकाश से कहा, "गल्तियाँ
ही-गल्तियाँ दिख रही है मुझे अपने चारो तरफ। जो कुछ भी हो रहा है वह
गल्त हो रहा है। कमलाकान्त मुसकरा रहा था।
मैं समझा नही। जगतप्रकाश बोला।
समझाता हूँ। गाधी पर विश्वास का प्रस्ताव गल्त है, क्योकि वह
वास्तव में सुभाष पर अविश्वास का प्रस्ताव है। ब्रिटिश गवनमट को छ
महीने का अल्टीमेटम देने वाले प्रस्ताव का रद्द हो जाना गल्त है, क्योकि वह
इस बात की स्वीकारोक्ति है कि कांग्रेस ब्रिटिश सरकार की गुलामी को
गौण रूप से स्वीकार करती है। मालती का मेरे पीछे पड जाना गलत है
क्योकि त्रिभुवन से मालती की मँगनी हो चुकी है और मालती मेरे साथ
केवल खिलवाड ही कर सकती है। जगतप्रकाश तुम्हारा कुल्सुम की
तीमारदारी में इस तरह लग जाना गलत है, क्योकि अगर तुम कुल्सुम को
पाने की आशा करते हो तो वह सितारा को तोड लेने की आशा करना
है।"

जगतप्रकाश मुसकराया पहली तीन वातो के सम्बन्ध में मैं कुछ नही
कहूँगा क्योकि उनके सम्बन्ध में मेरा व्यक्तिगत ज्ञान बिलकुल नहीं है लेकिन
जहा तक मेरा सवाल है कुलसुम के प्रति मेरी मानवीय सवेदना भर है—
इससे अधिक कुछ नही और मानवीय सवेदना को मैं गल्त नही समझता।'
कमलाकान्त हँस पडा नही, मैं तुमसे सफाई नही मागता लेकिन
तुमने जबलपुर नही देखा तुमने मावल राक्स नही देखा, तुमने धुआधार
नही देखा तुमने कांग्रेस का अधिवेशन नही देखा तुमने एकमात्र कुल्सुम को
देखा है।

जगतप्रकाश को कमलाकान्त की यह वात अच्छी नही लगी "मैंने सब-
कुछ देखा है अपने अन्दर वाली दृष्टि से। और शायद मैंने इन चीजो को
तुम्हारी अपेक्षा अधिक स्पष्ट देखा है। अगर मैं किसी को अच्छी तरह नही

देख पाया हूँ तो वह कुलसुम है। इस लडकी को मैं नही समझ पा रहा हूँ।"

"तुम इसे समझना चाहते हो। इसीलिए मैं कहता हूँ कि मेरा अनुमान गलत नही है। अच्छा, इन बातो को छोडो, चलो धुआधार का एक चक्कर लगा आएँ, सुबह के समय वहा का दृश्य बडा सुहावना रहता है।"

जिस समय ये दोनो लौटे, कुलसुम का बुखार बढकर एक सौ एक डिग्री हो गया था। जसवत कपूर ने जाते जाते कुलसुम को देखने के लिए एक डॉक्टर भिजवा दिया था, उसने कुलसुम के लिए दवा लिख दी थी और बता दिया था कि बुखार उस दिन बढेगा लेकिन अधिक नही। शाम के समय जब सब लोग अधिवेशन के लिए चलने लगे तो कुलसुम ने कहा, "बुखार तो ज्यादा नही है लेकिन कमजोरी काफी ज्यादा है। तुम सब लोग हो आओ, मैं यही लेटी रहूँगी, मेरे कारण यहाँ किसी का नही रुकना है।"

आज के अधिवेशन मे बेतहाशा सरगर्मी थी, विशेष रूप से बगाल कम्प म एक युद्ध का-सा दृश्य दिख रहा था। लेकिन जैसे जगतप्रकाश को इस सब मे दिलचस्पी नही थी, उसका मन कुलसुम की बीमारी की ओर लगा हुआ था। कितना उत्साह और उमग लेकर वह आई थी यह सब देखने, लेकिन वह बीमार पड गई। अब उसकी क्या हालत होगी? अकेली शायद वह घबरा रही हो। अपने इन्ही विचारो म खोया हुआ वह उस अधिवेशन को देख रहा था, तभी उसे उठता हुआ शोर सुनाई पडा। उसने देखा कि चारो तरफ लोग उठ खडे हुए ह और जोर-जोर से चिल्ला रह ह। उसकी अगल-बगल बैठे लोग भी चिल्लाने लग थे। जगतप्रकाश की समझ म कुछ आ नहीं रहा था। जगतप्रकाश वहाँ से चल दिया। उसे कमलाकान्त की आवाज सुनाई दी, "कहाँ जा रहे हो जगतप्रकाश?" लेकिन उसने कमलाकान्त की ओर घूमकर भी नही देखा, मानो कोई अज्ञात प्रेरणा उसके पैरो को घसीट रही हो।

कुलसुम के टण्ट म पहुँचकर उसने देखा कि कुलसुम उठने का प्रयत्न कर रही है, लेकिन उसस उठा नहीं जा रहा है।

जगतप्रकाश ने बढकर कुलसुम को सहारा दिया। वह उठकर चारपाई पर बठ गई। कमजोर आवाज मे उसने कहा, "उफ! कितनी बचैनी है। एक गिलास पानी पीना चाहती थी।"

म ' ह

जगतप्रकाश ने कुलसुम को पानी पिलाकर लिटा दिया। आँखें किये हुए कुलसुम कुछ देर लेटी रही, फिर उसने कहा, 'मुझे इस बात पूरा यकीन था कि तुम अधिवेशन के बीच से उठ जाओगे। तुम कित अच्छे हो।"

जगतप्रकाश ने कहा "ज्यादा न बोलो। तबीयत कैसी है ?"

'बुखार तो ज्यादा नही मालूम होता लेकिन कमजोरी बहुत ज है।" फिर कुछ रुककर उसने कहा, 'अगर तकलीफ न हो तो मेरी बीम की खबर परवेज को कर दो। मैं कल बम्बई लौट जाना चाहती हूँ, मेरा यहा नही लग रहा है।"

जगतप्रकाश उसी समय जबलपुर के लिए रवाना हो गया। एक घ के अन्दर ही वह परवेज़ को लेकर वापस आ गया। परवेज़ आते ही बोला, 'मैं अपनी कार लाया हूँ मेरे साथ घर चलो। तुमने मुझे पहले क्या नहीं खबर करवाई ? यहा तुम्हारी देखभाल कैसे होती भला ?

बुखार कल दोपहर को तो आया ही है। मैं समझती थी कि आज दोपहर तक उतर जाएगा।' कुल्सुम बोली फिर उसने जगतप्रकाश से कहा, सब लोगो से कह देना कि मैं अपने मामा के यहाँ चली गई हूँ, वहाँ से मैं सीधी बम्बई चली जाऊँगी। वह अपना सारा सामान लेकर परवेज़ के साथ चली गई।

कुल्सुम को परवेज़ के साथ भेजकर जगतप्रकाश फिर अधिवेशन देखने के लिए चल दिया। लेकिन जब वह वहा पहुँचा अधिवेशन समाप्त हो चुका था, और लोगो की भीड़ पण्डाल के बाहर चल रही थी। लोगो की उत्तेजना बहुत कम हो गई थी और जगतप्रकाश को अनुभव हो रहा था कि सुभाष का दल पूरी तौर से पराजित हो चुका है। जिन लोगो ने सुभाष को आगे बढाया था उनमे से अधिकाश सुभाष का साथ छोड चुके हैं। अधिवेशन पण्डाल के आसपास वह काफी देर तक चक्कर लगाता रहा फिर भारी मन वह वापस लौटा।

उस समय तक उसके सब साथी वापस आ चुके थे और उन लोगो में एक हलचल-सी मची थी। त्रिभुवन मेहता चिल्ला रहा था, 'पता नहीं यह कुल्सुम कहाँ गई। और जगतप्रकाश उसे उसके मामा के यहा ले गया है

ो उसे हम लोगो को वतलाकर जाना चाहिए था।"

कमलाकान्त ने कहा, "लेकिन यह कैसे कहा जा सकता है कि जगतप्रकाश कुलसुम का ले गया है ? लो जगतप्रकाश खुद आ गया है। क्या जगतप्रकाश ! तुम्हे पता है कि कुलसुम कहाँ गई है ?"

जगतप्रकाश न कहा, "उसका बुखार बढ गया था, तो उसन मुनसे परवेज को बुलवाया। आधा घण्टा पहले वह परवेज के साथ चली गई ह, वहाँ से सीधी वह बम्बई चली जाएगी। मुनसे कह गई है कि मैं तुम लोगो को वतला दू। मैं तुम लोगा को ढूढन चला गया था।"

इस वात को सुनकर जसवन्त कपूर चौक उठा, वह बोला, "सुवह उमन मुझसे पूछा था कि वह अगर दिनशा वाववाला के यहा चली जाए तो कैसा रहे ? मैंने उसे चले जाने की सलाह भी दी थी, लेकिन जैसे वह चाहती थी कि उसमे मै दिनशा झाववाला के यहा जाने का आग्रह करूँ और उसने उसी समय दिनशा झाववाला के यहाँ जाने का विचार वदल दिया था। मैं नही जानता था कि उसकी हालत इतनी खराव है, नही तो मै उससे आग्रह जरूर करता।" वह चुप होकर अपने विचारा म डूव गया। वह बहुत थका हुआ दीख रहा था और उसका चेहरा बेतरह उतरा हुआ था।

जगतप्रकाश ने जसवन्त कपूर से कहा, "आप बहुत अधिक सुस्त है, क्या वात है ?"

उदास भाव स जसवन्त कपूर ने उत्तर दिया, "पराजित होने के वाद प्रसन्न कौन रह सकता है ? गाधी की विजय हुई, अहिंसा की विजय हुई, पुरानी पीढी की विजय हुई। यह सव होना ही था। लेकिन जवाहरलाल स हम लोगा ने यह आशा नही की थी कि वह हमारा साथ छोडकर गाधी और पिछली पीढी का साथ दग। वह अहिसा का नारा लगाएँगे, जबकि उन्ह अहिसा पर जरा भी विश्वास नही है।"

कमलाकान्त को जसवन्त कपूर की वात जरा भी अच्छी नही लगी, "आप जवाहरलाल पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं।" वह उत्तेजित होकर बोला, "जवाहरलाल ने वही किया जो काग्रेस और देश के हित म था।"

लेकिन जसवन्त कपूर उत्तेजित नही हुआ। "अकेले आप ही नही, हमारे देश के अधिकाश युवक ऐसा ही कहेंगे। जवाहरलाल के पास त्याग है,

बलिदान है, जवाहरलाल के पास विद्या है, व्यक्तित्व है। बहुत ज्ञा
बुद्धिमान है यह जवाहरलाल, और उसके अन्दर वाला बुद्धि का तत्
उसकी भावना के तत्त्व से अधिक सबल है, उसकी भावना उसकी
द्वारा अनुशासित है। जवाहरलाल बौद्धिक रूप से हर तरह का सम
कर सकते हैं और फिर जवाहरलाल के पास प्रदर्शन है। यह प्रदर्शन—
इस मैं अभिनय कहूँ तो गलत नहीं होगा। उनका यह अभिनय ही उन
सबसे बडी सफलता है। भविष्य जवाहरलाल का है।

और जैसे जगतप्रकाश अपनी बात को आगे बढाने के मूड में न
हो या फिर उसके अन्दर वाली दो समान भाव में प्रखर भावनाओं में द्व
भावना एकाएक उभर आई हो। उसने कहा "इस समय छोडो भी इन
को। आज हम हारे कल हम बहुत सम्भव है जीत जाएँ। मुझे इस सम
कुल्सुम की चिन्ता हो रही है। उसकी देखभाल ठीक तौर से नहीं हो सकी
कल सेशन का आखिरी दिन है। कल गांधी पर विश्वास का प्रस्ताव
रहा है जो वास्तव में सुभाष पर अविश्वास का प्रस्ताव होगा, क्योंकि
प्रस्ताव के अनुसार सुभाष को अपनी वर्किंग कमेटी गांधी के आदेश
बनानी पड़ेगी। यह प्रस्ताव बहुत बडे बहुमत से पास हो जाएगा आज
कार्यवाही से यह स्पष्ट हो गया है लेकिन इस प्रस्ताव के खिलाफ आव
तो उठानी ही है हम लोगों को। मैं चाहता था कि कल सुबह मैं कुल्सुम
देख आता, लेकिन मेरे लिए यह सम्भव न हो सकेगा।" वह जगतप्रकाश
ओर मुडा, "शायद कल सुबह आप कुल्सुम को देखने जाएँ?"

"नहीं, मेरा तो ऐसा कार्यक्रम नहीं है कुल्सुम ने मुझे बुलाया भी न
है।" जगतप्रकाश बोला।

"तो मेरी ओर से आप कल सुबह कुल्सुम को देख आइए। उससे क
दीजिएगा कि कल रात सेशन के बाद मैं उसे देखने आऊँगा।"

जगतप्रकाश ने कमलाकान्त की ओर देखा "तुम चलोगे मेरे साथ?"
उत्तर मालती मनुभाई ने दिया "मैं भी चलूँगी कमलाकान्त भी
चलेंगे। भला वह क्या सोचेगी हम लोगों के न जाने पर। और तु
त्रिभुवन—तुम्हें तो कल दिन भर राजनीति के मायाजाल से छुटकार
मिलेगा नहीं।

"बात तो ठीक है, मैं जसवन्त कपूर के साथ कल रात को। लेकिन तुम ग अधिवेशन के पहले लौट आना।"

सुबह जब जगतप्रकाश, कमलाकान्त और मालती मनुभाई—परवेज़ यहा पहुँचे, तब डाक्टर डिसोज़ा कुल्सुम को देख रहे थे। कुलसुम बुखार नॉर्मल हो गया था। डाक्टर डिसोज़ा ने दवा लिखकर ा, "बस, अब इन्हें बुखार नही आएगा, लेकिन इन्हें आराम करना हिए।"

डॉक्टर डिसोज़ा के जाने के बाद कुलसुम इन लोगों से बोली, "बुखार ार गया, अच्छा हुआ। लेकिन जसवन्त और त्रिभुवन नही आए। क्या ा हुआ कल?"

मालती हँस पडी, "सुभाष का अल्टीमेटम वाला प्रस्ताव गिर गया— ह हार गए और आज उनकी दूसरी और सबसे बडी हार होगी। जसवन्त ा मुँह उतर गया है। बडी दौड धूप कर रहा है वह। त्रिभुवन उसे सहारा दय हुए है।"

अब जगतप्रकाश को कहना पडा, "जसवन्त तुम्हारे लिए बडे चिंतित । उन्होंने मुझे तुम्हारे यहा भेजा है।"

सब लोगों को परवेज़ ने चाय पिलाई। प्राय एक घण्टा बाद मालती उठी, "मुझे शहर में कुछ खरीदारी करनी है। हम लोग चलें। खुले अधिवेशन के पहले हम लोगों को वहा पहुँच जाना है।"

कुलसुम बोली, "परवेज़ के साथ तुम कार पर मार्केट चली जाओ, यह परवेज़ जबलपुर मार्केट का कोना-कोना जानता है।" फिर उसने जगतप्रकाश से कहा "तुम थोडी देर बैठो, तुमसे कुछ बात करनी है। शापिंग के बाद परवेज़ यहा लौटकर, तुम्हें कार पर लेकर, सब लोगों को त्रिपुरी पहुँचा देगा।"

परवेज़ के साथ मालती और कमलाकान्त को भेजकर कुल्सुम कुछ देर तक मौन बैठी रही, फिर उसने जरा अटकते हुए शब्दों में कहा "जगत-प्रकाश, मैं आज शाम की डाक से बम्बई लौट जाना चाहती हूँ।"

जगतप्रकाश कुछ चिंतित स्वर में बोला, 'यह तो ठीक नही होगा। डॉक्टर कह गया है कि तुम्हें आराम करना चाहिए।"

"हा, मुझे दोनो तरह का आराम चाहिए—शारीरिक और मा
तो फस्ट क्लास के कम्पाटमेण्ट मे मुझे जितना शारीरिक आराम
उससे ज्यादा तो यहाँ मिलेगा नही। अठारह बीस घण्टे सिफ लेटे रह
न चलना फिरना, न किसी तरह की चिन्ता। और मानसिक आराम
मिल सकना गैर-मुमकिन है। मेरे मामा आधे पागल हैं, दिन रात वह
साथ रहगे और मेरी हालत बुरी हो जाएगी। नही मैं हर हालत म
शाम की गाडी से बम्बई जाना चाहती हूँ।"

"लेकिन तुम बडी कमजोर हो, तुम अकेले कैसे सफर कर सकोग
जगतप्रकाश न पूछा।

कुल्सुम मुसकराई यही सवाल तो मेरे सामने है। परवेज मेरे
जा सकता है लेकिन परवेज को मामा ने मना कर दिया है कि यहा
ज्यादा काम है। वे चाहते है कि मैं यहा कम-से-कम तीन-चार दिन रु
लेकिन मैं यहा एक मिनट नही रुकना चाहती हूँ।

"तो फिर क्या होगा?" जगतप्रकाश न पूछा।

कुछ चुप रहकर कुल्सुम बोली जसवन्त नही आया मैं सोचती
कि जसवन्त के साथ चली जाऊँगी लेकिन यह राजनीति और पार्टी—
सब उसके लिए मुझसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। कुलसुम के स्वर म एक
की शिकायत थी मैं न मामा का इन्तजार कर सकती हूँ, न जसवन्
का। मुझे हर हालत म आज ही जाना है, चाहे मुझे अकेले जाना
पडे।

मैं तो तुम्हे अकेले जाने की सलाह नही दूगा।' जगतप्रकाश बोल
'तो फिर तुम्हे मेरे साथ चलना होगा। चल सकोगे? है तुम्हारे पा
समय? तुम तो राजनीति या पार्टी से बहुत दूर हो।' कुल्सुम के स्वर
आग्रह था।

लडखडाते स्वर म जगतप्रकाश बोला 'मैं तुम्हारे साथ चलू? वैसे
मुझे कोई काम है, न मेरे पास समय का अभाव है लेकिन मुझे तुम्हारा
प्रस्ताव बडा अजीब-सा लगता है। लोग क्या कहेगे?"

कुलसुम के मुख पर सन्तोष की एक रेखा आई, "लोग कुछ नही कहा
किसी को दूसरो म कोई दिलचस्पी नही है। परवेज मेरे साथ तुम्हारे जान

ुरा नही मानेगा। और लोग अगर कुछ कह-सुने भी तो उससे कुछ ना बिगडता नही। तुम पाच बजे शाम को अपना सामान लेकर यहा आ ना।"

यह सब क्या हो रहा है, क्या हो रहा है, कसे हो रहा है ? जगतप्रकाश ास इन सब पर सोचने-विचारने का समय नही था। शाम के समय वह कत्ता-बम्बई मेल के फस्ट क्लास कम्पाटमेण्ट म कुलसुम को विठाकर ाई के लिए रवाना हो गया।

8

वम्बई पहुँचते ही जैसे कुल्सुम म नय प्राण आ गए हो। वाडेन
पर, एक छोटी-सी पहाडी की ढाल पर, उसके पिता का बहुत वडा
था जिसम कुल तीन प्राणी रहते थे—उसके पिता जमशेद कावसजी,
माता जैनब कावसजी और कुल्सुम कावसजी। वारह कमरा म केवल
कमरे व्यवहार म आते थे वाकी आठ कमरे बन्द पडे रहते थे। हरेक
मे कीमती फर्नीचर विक्टोरियन युग की अच्छी-से-अच्छी सजावट।
वभव को देखकर जगतप्रकाश को अलिफलला की याद हो आई और
मन-ही-मन मुसकराया। सामने सडक के पार समुद्र लहरा रहा था। नि
अनोखा सौन्दय था उस समस्त वातावरण मे वैभव की किस दुनिया मे
आ पडा था।

कुल्सुम की माता जैनब को गठिया का रोग था। वह अपने क
पडी थी। एक दजन से ऊपर नौकर चाकर उस घर की देख भाल कर
और गृहस्वामिनी अर्थात् कुल्सुम की माता को हरेक नौकर की गति
का पता था यद्यपि वह विना सहारे के अपने पलग से नही उठ सकती थ
कुल्सुम ने जगतप्रकाश को अपनी माता के कमरे मे ले जाकर उससे परि
कराया। एक वुझी हुई-सी उदास दृष्टि से जनब ने जगतप्रकाश को द
फिर टूटी हुई हिन्दी म उसने कहा 'तुम्हारा कैसे शुक्रिया अदा करू
तुमने कुल्सुम की देख भाल की और इसे यहा तक पहुँचाने आए। शा
वक्त डैडी आएँगे तव वातचीत होगी।'

जमशेद कावसजी पाच वजे शाम को घर वापस लौटे, और सारे घर
चहल पहल भर गई। उनकी कार के जाते ही सव नौकर चाकर एकत्रि

ए। कुलसुम को देखकर वह वोले, "अरे, तू आ गई—इतनी जल्दी! समझा था कि अप्रैल के अन्त तक आएगी। यह कौन है?" जगत-
ा की ओर जमशेद ने इशारा किया।

कुल्सुम दौडकर अपने पिता से लिपट गई, "मेरे प्यारे डैडी! मुझे ापुर मे बुखार आ गया था तो मुझे घर की याद आई। मामा और ज़ मुझे वहा रोक रहे थे, लेकिन मैं तो डैडी के पास वम्बई आने की पकड गई। परवेज़ को वहा कई काम थे, तो मैं इनको साथ लेकर चली आई हूँ। इनका नाम जगतप्रकाश है, इलाहावाद यूनिवर्सिटी मे ामिक्स मे रिसर्च कर रहे है। बडे अच्छे आदमी है।"

जमशेद ने जगतप्रकाश को सर से पैर तक गौर से देखा, फिर वह ज़ोर ंस पडा, "तो तुम इसे मार्क्स का अर्थशास्त्र पढाने वाली हो। क्यो इसकी दगी वरवाद करना चाहती हो?" फिर वह जगतप्रकाश से वोला, री वात मानो तो तुम इस कुलसुम की वातो मे न पडना। इसे राजनीति ौक है, क्योकि इसके वाप की दो मिले है और यह एक-से एक कीमती क कर सकती है। लेकिन शायद अभी तुम्हे ज़िन्दगी मे सघर्ष करना है, लिए राजनीति से दूर ही रहने मे भलाई है।"

कुलसुम ने विगडकर कहा, "फिर तुम अनाप-शनाप वाते करने लगे ी।" और उसने जगतप्रकाश से कहा, "डैडी की वात पर ध्यान न ा। दिन भर तो यह मज़दूरो से, क्लर्को से और न जाने किन-किन लोगो सर मारते रहते हैं, और शाम को जव यह घर लौटते है तव जैसे इनकी भीरता एकदम गायव हो जाती है। ममी परेशान है इनसे।"

तभी दो नौकरानियो के सहारे चलती हुई जैनव वरामदे मे आ गई। व लोगो ने वरामदे मे वैठकर ही चाय पी। जमशेद कावसजी वीच-वीच मे ज़ाक करते जाते थे।

दो दिन तक कुलसुम जगतप्रकाश को वम्वई घुमाती रही, और इन दो दनो मे जगतप्रकाश ने पूरा वम्वई नगर देख डाला। लेकिन उसे वम्वई के ुगोल का ज्ञान विलकुल नही हुआ, क्योकि कुलसुम की कार मे वह वम्वई ुमा। तीसरे दिन शाम के समय ट्रेड यूनियन काग्रेस की मीटिंग थी और ुलसुम को उसमे जाना था। कुल्सुम ने जगतप्रकाश से कहा, "आज ट्रेड

यूनियन कांग्रेस की मीटिंग है, मजदूरा का जा शोपण हो रहा है उस
के लिए यह महत्त्वपूर्ण समस्या है। लेकिन शायद तुम्हारा वहाँ चलना ठीक
होगा।"

उस दिन रविवार था। जगतप्रकाश न यह तय कर लिया था कि
रविवार के दिन रात की गाडी स इलाहाबाद क लिए रवाना हो जाएगा
इस ऐश्वय से भरे जीवन से वह दो दिनो म ही ऊब गया था। उसन
"मेरी वहाँ जाने की इच्छा भी नहीं है। म आज रात की गाडी स इलाहाबा
वापस जाना चाहता हूँ।"

"रात की गाडी मिल जाएगी, लेकिन तुमने मुझस पहले नही
था।" कुल्सुम बोली। फिर कुछ सोचकर उसन कहा, "मैं पूछती हू
इतनी जल्दी क्या मचा रहे हो आखिर तुम्ह वहाँ काम ही क्या है
तुमने बम्बई देखी ही कहा है? जो कुछ तुमन अभी देखा है वह वस्त्राभूषण
से लदा बम्बई का शरीर भर है। इन वस्त्राभूषणो के नीचे छिपा
हजारो फोडो से भरा बदबूदार और जजर शरीर, उसे तुमने नहीं देखा
यह सब तुम कार पर बैठकर नही देख सकोगे, वह बम्बई तुम मेरे
नही देख सकोगे, उस बम्बई को तुम्ह अकेले घूम-फिरकर देखना होगा।"

जगतप्रकाश मुसकराया, 'लेकिन क्या बम्बई की इस कुरूपता का
जरूरी है?"

जगतप्रकाश की आखो से अपनी आखे मिलाकर कुलसुम बोली,
तो शायद कुछ भी नही है। यह कुरूपता जो हमारे इद गिद फैली हुई
मैं कभी-कभी सोचने लगती हूँ कि शायद यही असलियत है। और फिर
सोचने लगती हूँ कि यह खूबसूरती जो हमारे सामन है इसमे कितनी
है और कितनी बनावटी है, और जो बनावटी है उसकी क्या कोई खास
रत भी है? दिमाग चक्कर खाने लगता है। खूबसूरती-बदसूरती दोनो
साथ है, बिना एक के दूसरे के कोई मानी नही होते। लेकिन हम
के पीछे दौडते हैं, कुरूपता से दूर भागते हैं।"

जगतप्रकाश हँस पडा, मैं अथशास्त्री हूँ, दाशनिक नही हूँ।
का आधार है काय-कारण।"

कुल्सुम ने जगतप्रकाश की बात काटी, "और दशन शास्त्र का आधा

-ो तो काय-कारण है। सच पूछो तो हरेक शास्त्र एक-दूसरे से मिला-जुला । हमने ज्ञान के खण्ड-खण्ड करके उन्हें अनगिनती मे विभक्त कर दिया है, लेकिन हरेक शास्त्र दूसरे पर आश्रित है। मार्क्स ने प्रथम वार इसका सवेत या है।"

जगतप्रकाश ने इस वात का कोई उत्तर नही दिया, उसके मुख पर आन ली हँसी अव गायव हो गई थी और वह एकटक कुलसुम को देख रहा । थोडी देर तक दोना मौन रहे, फिर कुलसुम ने अपनी वात आगे वढाई, यह मार्क्सवाद है क्या? मार्क्स समाजशास्त्री है, मार्क्स का अपना निजी र्थशास्त्र है। मार्क्स के पास एक नया दर्शन है, मार्क्स ने एक नवीन राज-तिक शास्त्र दिया है। ज्ञान का कौन-सा क्षेत्र छूटा है उससे? उसने ज्ञान ण्ड-खण्ड करके एक खण्ड पर ही सीमित हो जाना स्वीकार नही किया, ज्ञान को अखण्ड और अक्षुण्ण मानकर ही वह आगे बढा है।" कुलसुम काएक खिलखिलाकर हँस पडी, "मैं भी कितनी बेवकूफ हूँ जो वाते करते-रते वहक जाया करती हूँ। तो तुम आज नही जा रहे हो, मैं कह रही ी। तुम आज पैदल निकल पडो घूमने के लिए—ट्राम है, बस है—जब क जाओ, इन पर बठो। तीन चार दिन बम्बई मे रहकर जन-जीवन को खो। इद गिर्द फैली हुई सुन्दरता के परदे म कितनी कुरूपता भरी है, इसका म्हे पता चलेगा और तुम्हारा ज्ञान बढेगा।"

जगतप्रकाश ने जसे उसी समय अपने अन्दर सब-कुछ तय कर लिया, "अच्छी वात है। आज मैं पैदल ही निकलूगा—अकेला। तुम अपनी मीटिंग मे हो आओ।"

कुलसुम ने घडी देखी, "अभी चार बजे हैं, तुम साढे आठ बजे तक वापस आ जाना। तुम तो जान ही गए हो कि डैडी समय के बडे पाबन्द ह, खासतौर से डिनर के मामले मे।"

जगतप्रकाश घर से पदल निकल पडा। उसने दाहिने हाथ वाले रास्ते को पकडा जो उत्तर की तरफ वढता था। सडक एक तरह से सुनसान पडी थी, कुछ मोटरें, इक्का-दुक्का बस। दाहिनी ओर पहाडी पर वने हुए बँगले थे, वाईं ओर समुद्र लहरा रहा था। समुद्र और सडक के बीच कहीं-कहीं मकान वने थे। थोडी दूर चलते रहने के वाद उसे भीड-सी दिखने लगी।

इस भीड म अधिकतर स्त्रियाँ थी, आर वे स्त्रियाँ मध्यवग की थी। हाथ म पूजा का सामान भी था और व मुख्य सडक क वाइ ओर कम्पाउण्ड से आ रही थी, या उसम जा रही थी। भीड के साथ वह वाइ ओर मुड गया। कुछ दूर चलन पर उसन दखा कि समुद्र के एक वहुत वडा मन्दिर है। उसने अव यह भी दखा कि उस कम्पाउण्ड अन्दर अनेक मोटर आ रही है और उन मोटरा स सम्पन्न स्त्री पुरुष का सामान लिय उतर रहे है। एकाएक एक विचार उसके मस्तिष्क कौंध गया—क्या यही वम्बई का प्रसिद्ध महालक्ष्मी का मन्दिर है?

घण्टे वज रहे थे, पूजा हो रही थी चढावा चढ रहा था। सम्पन्नता देवी लक्ष्मी के परा पर वम्बई म एकत्रित जनसमूह लोट रहा था, बनने के लिए। जगतप्रकाश कौतूहल के साथ उस दृश्य को देख रहा था। मन्दिर के पिछवाडे क्षितिज तक फैला हुआ सागर, जसे लक्ष्मी के इस तक ही मनुष्य की पहुँच हो उसके वाद कुछ नही। सागर-मन्थन के लक्ष्मी प्रकट हुइ, और यही समुद्र तट पर वैभव बाटने के लिए वठ गइ।

जगतप्रकाश का अपनी इस कल्पना पर मजा आ रहा था। उसे अनु- हो रहा था कि उसने कुलसुम की वात मानकर अच्छा ही किया। उसे अनु- हो रहा था कि उसके अन्दर अचानक ही कवि की आत्मा जाग उठी है। हीरा जवाहरात के आभूषण पहने रग विरग सुन्दर वस्त्रा म लिपटी हुई, लिप्सा और तृष्णा के ऊपर भक्ति-भाव की शान्ति का आवरण चढाए हुए स्त्रियाँ का यह समूह उसे कितना सुन्दर दिख रहा था। असीम सुन्दरी थी यह लक्ष्मी तभी तो सागर से उसक निकलत ही लक्ष्मी को विष्णु न हथिया लिया। विना इस वात पर सोच कि और दवता क्या सोचगे, और विष्णु क हाथ सुदर्शन-चक्र भी तो था। यह विष्णु भयानक रूप म स्वार्थी थे। जगत- प्रकाश को हँसी आ गई। अपने स्वार्थ मे विष्णु सव-कुछ कर सकते थे। अपने पुराणा की यह कथा क्या मानवीय स्वार्थ और वल प्रयोग को प्रतिविम्बित नही करती? सवल हमशा से समय रहा है सवल न हमशा से नियला पर शासन किया है।

मन्दिर म पूजा हो रही थी। हरेक व्यक्ति क मुख पर एक प्रकार की अभिलाषा थी। इस भक्तिभाव की शान्ति क नीच मनुष्य क अन्दर वाली

कामना और अभिलाषा की झलक दीखी जगतप्रकाश को। और एकाएक उसकी विचारधारा ने पलटा खाया। यह विष्णु—यह भरण-पोषण का देवता है। ब्रह्मा का काम है जन्म देना, शिव का काम है संहार करना। विष्णु ही भरण पोषण करते हैं, इस सृष्टि को चलाते हैं। और इस भरण-पोषण में लक्ष्मी का तत्त्व प्रमुख है। लक्ष्मी विष्णु का पूरक भाग है, बिना लक्ष्मी के विष्णु भरण पोषण कर ही नहीं सकते।

और प्रथम बार जगतप्रकाश ने पौराणिक गाथा में आर्थिक पहलू देखा। हिन्दू धर्मशास्त्र का आर्थिक पक्ष इस लक्ष्मी में है, यह लक्ष्मी जो समुद्र-तट पर स्थापित है, यह लक्ष्मी जो बम्बई नगर में धन, वैभव और सम्पन्नता बटोर रही है।

कितनी देर तक जगतप्रकाश महालक्ष्मी के पीछे वाले समुद्र-तट पर बैठा सोचता रहा, इसका उसे पता ही नहीं चला। एकाएक वह एक परिचित-सी आवाज़ सुनकर चौंक उठा, "अरे जगतप्रकाश भइया, तुम बम्बई में!"

जगतप्रकाश ने घूमकर देखा कि उसके पास गिरधारी खड़ा है। उसके गाँव में उसके घर से करीब सौ कदम पर रहने वाला यह गिरधारी जमींदार ... हाथों अपना सब-कुछ बेचकर बंबई चला आया है, पाँच-छः साल पहले उसने यह खबर सुनी थी। गिरधारी कसरती बदन हृष्ट-पुष्ट युवा था, जगतप्रकाश से करीब पाँच छः साल बड़ा और उसे किसी हद तक उद्दण्ड कहा जा सकता था। उसके गाँव के प्रायः सभी लोग उससे डरते थे, यहाँ तक कि जमींदार बिरजू मिसिर भी उसके सामने उसका विरोध नहीं करते थे। थानेदार शंकरलाल का वह घनिष्ठ मित्र था, पुलिस वाले उसकी मुट्ठी में थे। लेकिन एकाएक न जाने किस बात पर थानेदार शंकरलाल से उसकी खटक गई थी। इस झगड़े में दोष गिरधारी का नहीं था। लेकिन थानेदार से खटकने के साथ ही गाँव वालों ने, जो अभी तक उससे त्रस्त थे, उसका विरोध करना आरम्भ कर दिया। इसके बाद गिरधारी का महोना में रहना असम्भव हो गया।

जगतप्रकाश को भी गिरधारी कभी पसन्द नहीं आया, लेकिन उस दिन गिरधारी को अपने सामने खड़ा देखकर उसने अपने अन्दर एक प्रकार का हर्ष अनुभव किया। उसने उठकर कहा, 'अरे गिरधारी तुम! सुना तो था

कि तुम बम्बई में ही हो, लेकिन तुम मुझे मिल जाओगे, यह मैंने सा
नहीं था। कहो, अच्छी तरह तो हो?"

गिरधारी के मुख पर उसकी वही पुरानी कुटिल मुसकान थी, '
रामजी की किरपा है, वरना इस बम्बई का पानी बड़ा खराब है। आखि
परदेस तो परदेस। हाँ, यहाँ सिर्फ एक चीज़ है—पैसा। तो महालक्ष्मी
कृपा से पैसा मिलता जा रहा है। कुरला में अपना तबेला है, आठ भैंसें औ
बारह गाएँ हो गई हैं अपनी निजी। चार साल तक दूने जानवर हो जाएँगे।
चालीस-पचास रुपये रोज़ की आमदनी समझो।'

जगतप्रकाश ने आश्चर्य से गिरधारी को देखा इसके माने हैं हज़
बारह सौ रुपया महीना।"

गिरधारी हँस पड़ा, 'सब महालक्ष्मी का परताप है। विष्णु भगवान
क्षीर सागर में रहते हैं और महालक्ष्मी रहती हैं इस समुद्र के किनारे। म
महालक्ष्मी इस पानी का भी दूध बना देती है। कुछ आई समझ में। तुम
बड़े विद्वान हो गए होगे।'

जगतप्रकाश की अन्दर वाली सारी प्रसन्नता जाती रही। आदमी व
का वही रहता है बदलता बिल्कुल नहीं है। और जगतप्रकाश ने अनु
किया कि उसके चारों ओर घना अंधकार घिरता चला आ रहा है। म
बिजली के प्रकाश से जगमगाने लगा। उसने उठते हुए कहा, 'अरे, रात
गई।" और उसने घड़ी देखी, 'साढ़े सात बजे हैं, और मुझे पता नहीं चला
कहाँ रहते हो?'

"कुरला में रहते हैं—बताया नहीं वहाँ अपना तबेला है वैसे यहाँ परे
में एक खोली ले रखी है। वहाँ तबेले में दो नौकर हैं जो काम-काज सँभाल
हैं। लेकिन नौकर ठहरे नौकर हम न रहें तो सारा काम-काज ही चौपट
जाए। रात बारह बजे तक कुरला पहुँच जाना होता है। हाँ तो जगत भइ
तुमने हमारे बारे में तो सब-कुछ सुन लिया, अपने बारे में कुछ नहीं बत
लाया। यहाँ बम्बई में कब आए? कहाँ ठहरे हो?"

"चार दिन हुए बम्बई में आए—घूमने घामने चला आया था, औ
यहाँ वाडन रोड पर जमशेद कावसजी के यहाँ ठहरा हूँ।"

गिरधारी ने गौर से जगतप्रकाश को देखा वह करोड़पती सेठ

यहा ठहरे हो।" और जैसे कोई विचार कौंध गया हो उसके अन्दर, हा, जमील काका बतलाते थे कि उसकी लौंडिया—कुछ भला-सा है उसका यह क्या कुसुम "
जगतप्रकाश बोला, "कुसुम नही, कुलसुम तो जमील काका यहीं है? रहते है?"
"परेल मे वह भी रहत ह, लेकिन उन्हे पाना आसान काम नही है। रात घूमते रहते है या अपने कारखाने मे रहते हे। मजदूरा के नेता बन है। उनका उद्धार करते ह और उनकी बीबी परेशान, फटे हाल। पगार कभी घर आती ही नही, इधर-उधर खच कर डालते ह, और मे फाका की नौबत। वह तो मुहल्ले-पडोस के लोग उनकी बीबी बच्चो मदद कर दिया करते है। हाँ ता हम कह रहे थे कि जमील काका ने लाया था कि सेठ जमशेद कावसजी की लौंडिया यह कुलसुम बडी तज मजदूरा के लिए लडती है, उनकी मदद करती है। लेकिन अकसर ली-कलकत्ता घूमती रहती है। ता कही उस लौंडिया के चक्कर म तो आ गए हो!"
जगतप्रकाश के अन्दर गिरधारी के प्रति वितृष्णा का भाव अब घृणा रूप मे बदल रहा था। लेकिन उसने अपने को भरसक दबाया, "जमील का को छ सात साल से नही देखा ह, उनसे मिल लेता तो अच्छा था। वक्त ता बडी देर हो रही है, कल तुम जिस वक्त कहो और जिस जगह हो, मैं आ जाऊँ, तुम मुझे उनस मिला देना।"
'कोशिश करेंगे उन्ह ढूढने की। फिर तुम जहा ठहरे हो वह पता तो म मालूम ही हे, हमारा मकान तुम न ढूढ पाओगे। हो सका तो कल सुबह आठ-नौ बजे तब उन्हे साथ लेकर हम तुम्हारे यहा आ जाएँगे।"
गिरधारी का यह प्रस्ताव जगतप्रकाश को अच्छा नही लगा, लेकिन ना गिरधारी की सहायता के वह जमील का ढूढ नही सकता था, और मील से मिलने की एक प्रबल अभिलाषा उनके अन्दर जाग उठी थी।
यह जमील, सिर्फ उसका पडोसी ही नही था, वह जगतप्रकाश के पिता त्यप्रकाश का प्रिय पात्र था। सत्यप्रकाश की मृत्यु के समय इस जमील ने ज़ि से बीमार सत्यप्रकाश की भरपूर सेवा की थी। जब सत्यप्रकाश के पास

काई आना नही था, तब यह जमील दिन रात सत्यप्रकाश के पास
और सत्यप्रकाश की मृत्यु के साथ जमील का लिखना-पढना भी
गया। अपनी पढाई लिखाई छोडकर उसने अपना पुराना पुश्तैनी
सँभाला वह जुलाहा था न। लेकिन हाथ की बुनाई-कताई का
चुका था। गाधी के खद्दर के आन्दोलन मे जुलाहा की हालत कुछ
अवश्य थी लेकिन मिलो की प्रतियोगिता के आगे चरखा और करघा
फिर स जम सकना असम्भव था। जमील के पिता की मृत्यु बहुत
गइ थी घर म उसकी माता थी और जम ही उसने अपना करघा
बने ही उसका विवाह हो गया। अपनी गरीबी और विवशता
एक दिन बिना किसी को कुछ बताए जमील गाँव छोडकर चल दिया।
महीने तक वह लापता रहा। उसकी मा और उसकी पत्नी परेशान
दो महीने बाद वह एक दिन महोना वापस लौटा। उसने बतलाया
बम्बई म उस नौकरी मिल गई है अपनी पत्नी और माता का
है। जमील की मा न बम्बई जाने से इनकार कर दिया। उसका मकान
उसकी कुछ जमीन थी। पत्नी उसके साथ चली गई।

जमील की उम्र बहुत अधिक नही थी जगतप्रकाश से वह करीब
छ साल बडा था। लेकिन जमील शान्त गम्भीर तथा दार्शनिक प्रवृत्ति
आदमी था। बाल्यकाल म ही वह बुजुर्गों की तरह बात करता था,
चीज का वह गम्भीरतापूर्वक समझना चाहता था। परिपक्व बुद्धि
लिये लोगो के साथ रहने की वह कोशिश करता था और इसीलिए
गाव के लडको ने जमील को अपना काका बना लिया था।

गिरधारी से जमील का नाम सुनकर जगतप्रकाश म उसके बचपन
स्मृतिया जाग पडी। वह हर हालत म जमील अहमद से मिलने का उत्सु
था। उसने गिरधारी से कहा 'अच्छी बात है कल सुबह मैं तुम्हारी प्रतीक्षा
करूँगा।'

जिस समय जगतप्रकाश कुलसुम के मकान म पहुँचा, आठ बजने वाले
थे। कुलसुम अभी वापस नही लौटी थी लेकिन जमशेद कावसजी बरामदे
म अकेले बैठे थे और उनके सामने शराब का गिलास था। जमशेद कावसजी
का नित्य का यह नियम था कि रोज शाम का खाना खाने के पहले वह

त ह्विस्की के, पीते थे और खाना खाने के बाद सो जाते थे। जमशेद ने इशारे से जगतप्रकाश को अपने पास बुलाकर बिठाया फिर, उन्होंने बेयरा से एक गिलास लाने को कहा। जगतप्रकाश समझ गया कि वह गिलास उसके लिए मँगवाया जा रहा है, और उसने बेयरा को रोकते हुए जमशेद से कहा, "मैं शराब नहीं पीता, मेरे लिए आप गिलास न मँगवाइये।"

"अच्छा करते हो जो नहीं पीते, यह शराब कोई अच्छी चीज तो नहीं है। मैं भी इसे दवा के तौर पर पीता हूँ। बम्बई का पानी बहुत खराब है, यहाँ की आबहवा के लिए थोड़ी-सी दारू ले लेना जरूरी है।" जमशेदजी ने गम्भीर भाव से कहा और फिर जैसे वह अपने विचारों में खो गया।

जगतप्रकाश को लगा कि जमशेद कावसजी कुछ चिन्तित हैं, क्योंकि आज न तो वह हँस ही रहे हैं, और न मजाक ही कर रहे हैं। बेयरा ने मुसम्बी के रस का एक गिलास जगतप्रकाश के सामने रख दिया।

गिलास मुँह से लगाते हुए जगतप्रकाश ने कहा, "आज आप बड़े चिन्तित दिखाई देते हैं।"

जमशेदजी ने अपनी आँखें जगतप्रकाश पर टिका दीं, लेकिन जैसे वह जगतप्रकाश को देख न रहे हों। इस मुद्रा में वह कुछ क्षण बैठे रहे, फिर एक ठंडी साँस भरते हुए बोले, "फिक्र! यह तो जिंदगी में अपने साथ लेकर आए हैं हम लोग। लेकिन इस फिक्र के साथ जब किसी तरह की उलझन लग जाती है तब वह हमें अखरने लगती है। जो फिक्र मेरे साथ उतनी नहीं है जितनी उलझन है।" और जमशेद कावसजी के मुख पर अब एक हलकी-सी मुसकान आई जिससे यह लगता था कि उनके अन्दर वाला तनाव अब ढीला पड़ने लगा है। उन्होंने अपने गिलास को मुँह से लगाया, दो घूँट पीकर गिलास अपने सामने रखते हुए वह बोले, "तुम्हीं समझो! हम अगर कोई कारोबार करते हैं तो मुनाफे के लिए करते हैं, घाटा उठाने के लिए तो नहीं करते। अब अगर उस कारोबार में घाटा होने लगे तो या तो उस कारोबार को बन्द करना होगा या फिर उसकी घाटे की मदों को काटना होगा। मैं इसमें कुछ गलत तो नहीं कहता!"

जगतप्रकाश को कहना पड़ा, "जी, आप ठीक कहते हैं।"

'ता अब हालत यह पैदा हा गई है कि मर रपरे की मिल न घाग(
लगा है। तयार माल गादामा म भरा पडा है और उा उठान वाला न
दिम्वता नही। व्यापारी महत हैं कि हमारी मिल या माल बाजार म म
पडता है, और व्यापारी गलन हा वहत। जा नई-नई मिलें गुल ह
उनका माल हमारी मिल य माल क मुकाबिले म सस्ता बिक रहा है।'
तो आप भी अपन मिला क माल क दाम घटाइय।" जगतप्र
बोला।

"यही तो हम नही कर सकत। दाम घटाने क मान हैं कि हम अ
मिल का माल घाट म बचना पडगा। बात यह है कि हमार मिल की म
पुराने ज़माने की हैं मजदूर ज्यादा और पदावार कम। तो हम अपने मि
म मजदूरो की तादाद कम करनी पडेगी, इस छँटनी कहत हैं। जिस तरह
हो, कम मजदूरा से पदावार का ठीक रखना हागा। नई मशीना का आ
हमने वहुत पहले द दिया है व विलायत से चल भी चुकी हैं। तीन-चा
दिन म वे बम्बई पहुँच जाएँगी। एक महीना हम उन मशीना का बठान
लगेगा। विना छँटनी के काम नही चलेगा।'

तो फिर उसमे उलझन की क्या बात है ?

जमशेदजी अब हँस पडे, "तुम अथशास्त्र म रिसच कर रहे हो, आ
इतना भी नही समझत। छँटनी करने म मजदूरा को एक महीने का नोटि
देना पडता है। मजदूरा की यूनियन ने हम नोटिस दिया है कि
हमारी मिल म छँटनी हुई तो हमारे मिल के सब मजदूर हडताल करेंगे।
तुम्ही समझो, जो लाग मेरे लिए बेकार है उन्ह मैं मुफ्त की तनख्वाह तो
दे सकता—इसके मान ह घाटा उठाते जाना।"

जगतप्रकाश के सामन अब एकाएक गाधी के मशीना के विरोध
महत्ता आ गई। उसने कहा, "आप ठीक कहत है। मुफ्त मे किसी
तनख्वाह नही दी जा सकती। महात्मा गाधी का कहना ठीक है कि
यान्त्रिक युग मे लाखो आदमी बेकार हो जाएँगे। इसीलिए महात्मा गाधी
खादी पर जोर दिया है।'

जमशेदजी का स्वाभाविक उल्लास अब लौट आया था। उसन अप
गिलास की शराब खत्म करते हुए कहा, 'यह खादी का नारा मह

वास है। कम आदमियो से अधिक उत्पादन का युग है आजकल। कौन
ोदेगा इस महँगी खद्दर का ? कौन खरीदेगा मेरे मिल मे बने हुए महँगे
डे को ? यह खद्दर शौक की चीज है। कुछ इने-गिने आदमी, जिनके पास
ा है या जिन्हे काग्रेस की राजनीति मे भाग लेना है, इस खद्दर को पहन
कते हैं। खर छोडो भी इस बात का। छँटनी तो करनी ही पडेगी, चाहे
ड़ताल हो या न हो। इस छँटनी का प्लान बन रहा है, दो-तीन दिन मे वह
ा हो जाएगा। जो गलत है उसके सामने भला कैसे झुका जा सकता है ?"

तभी जगतप्रकाश को बँगले के अन्दर आती हुई एक कार की हेडलाइट
खाई दी। जमशेदजी बोले, "मालूम होता है कुलसुम वापस आ गई।"

कार से उतरते हुए कुलसुम ने वही से कहा, "हलो डैडी, मै जमील
हमद को अपने साथ लेती आई हूँ, यह शायद हम लोगो के मामले को
लझाने मे कुछ मदद कर सके।"

जगतप्रकाश एकाएक चौंक उठा। कुलसुम के पीछे-पीछे एक पुरानी
हचानी हुई आकृति थी। वही उदास और भावनाहीन चेहरा, वही बुझी-बुझी-
ी अधखुली आख। जगतप्रकाश उठकर खडा हो गया था। कुल्सुम ने
गतप्रकाश से कहा, "तो तुम वक्त से ही लौट आए।" और उसने जमील
हमद से कहा, "बैठिए जमील अहमद साहब। मै आपसे अपने मेहमान
ा परिचय करा दू—इनका नाम है जगतप्रकाश।"

कुलसुम ने अपनी बात पूरी भी न की थी कि जगतप्रकाश बोल उठा,
'अरे जमील काका! खूब मिले!"

जमील अहमद ने कुल्सुम से कहा, "मै इन्हे अच्छी तरह से जानता
। सिवा इनकी बहन के इनको पूरी तरह मेरे मुकाबिले कोई नही
ानता।" इस बार जमील अहमद जगतप्रकाश की ओर घूमा, "तुम
हा मिलो। बरखुरदार इसकी उम्मीद मैने नही की थी। इतना तो मै
ानता था कि तुम बहुत आगे बढोगे, लेकिन करोडपती सेठो की मेहमान-
ारी तुम्हे मिलेगी, यह मेरे कयास मे कभी नही आया था।" फिर
ठते हुए वह जमशेद कावसजी की ओर घूमा, "हा सेठ! क्या खिदमत कर
सकता हूँ आपकी ?"

जमशेद कावसजी ने बेयरा को बुलाया, "एक गिलास। क्या कुलसुम,

तू भी कुछ लेगी, बडी थकी हुई है। दो गिलास और शेरी की व
एक सोडा।' फिर उन्होंने जमील अहमद से कहा, "थोडी-सी
बातचीत म गरमी आ जाएगी।'

"अच्छी बात है सेठ। गोकि शरीअत के मुताबिक मुझे पीन
नहीं चाहिए लेकिन स्काच ह्विस्की के सामने मैं अपने को रोक नहीं प
जगतप्रकाश को लगा कि जमील कुछ उदास हुआ-सा है। गाव स
आने वाले इस व्यक्ति को शहर अपने ढग से ढाल रहा है।

जमील ने जगतप्रकाश की ओर घूमकर कहा 'तुम शायद इलाहा
से त्रिपुरी और त्रिपुरी से बम्बई आए होगे। दिखता है कि इस रानन
की लपेट म तुम भी आ रहे हो। बुरा नहीं है मेरा मुबारकबाद। कल सुब
यहा आऊँगा सिर्फ तुम्हारी खातिर तब अच्छी तरह बातचीत होगी।"

यह जमील इतना बुद्धिमान कैसे हो गया जो स्थिति को एक ही नज
म सही-सही समझ गया? जगतप्रकाश को अब इस व्यक्ति म दिलचस्
होन लगी थी। वह चुपचाप अब जमील का ध्यान से अध्ययन करने लगा।

जमील के सामने स्काच का पेग आ गया था कुल्सुम के सामने शेरी
का गिलास था और जमशेद कावसजी कह रहे थे हा जमील साहब
तो इतना तो तुम समझ ही सकते हो कि हम घाटे म मिल नहीं चला
सकते।

"अगर आप घाटे म मिल चलाएँ तो मैं आपको पागल समझूगा।
बडे भोले भाव स जमील अहमद ने कहा।

तो फिर हडताल की यह धमकी यह गलत है। मेरे पास आकडे हैं
मैं आपको यह समझा सकता हूँ।'

जी, आप मुझे यह न समझा सकेंगे सेठ। लिखा पढ़ा अर्थशास्त्र तो
मैं नहीं जानता लेकिन जिन्दगी का अर्थशास्त्र मैंने अच्छी तरह पढ़ा है और
रोज पढ़ता रहता हूँ। हा, तो आप अपनी बात कहिये गोकि हम-आप दोनों
ही जानते हैं कि इस कहा-सुनी से हम बहुत आगे पहुँच चुके हैं।"

जमशेद कावसजी ने बडी उलझन के साथ कहा, इस साल हम अपने
शेयरहोल्डरों को कुछ डेढ परसेंट डिविडेंड दे सकेंगे, यानी हमारे दस
रुपये वाले आर्डीनरी शेयर की कीमत बाजार म अब आठ रुपये रह गई है।

-अगर हम कोई तरीका नही निकालते तो अगले साल हमे पन्द्रह-बीस लाख का घाटा होगा।"

"बडी नाजुक हाल्त है आपके मिल की। नई मशीनो के लग जाने पर आपको इतन मजदूरो की जरूरत नही रह जाएगी, इसीलिए तो नई मशीने मँगाई गई है। हा, एक बात और पूछना चाहूँगा, आपका मैनेजिंग एजेन्सी का कमीशन और आपके जूनियर पाटनर का सोल सेलिंग एजेंसी का कमीशन तो बरकरार है?" जमील ने बडे शान्त भाव मे पूछा।

"मैं तुम्हारा मतलब नही समझा।"

"जी, मेरा मतलब ता साफ है। आपका और आपके जूनियर पाटनर का जो मुनाफ़ा है वह अगर मिल के मुनाफे म शामिल कर दिया जाए तो मेरा खयाल है मिल का मुनाफा दस-बारह परसट हो जाएगा। सेठ, आपके जूनियर पाटनर बाहर के शेयरहोल्डरो से शेयर खरीद रहे है। मेरा ऐसा खयाल है कि आपके पास पतालीस परसेट शयर है तो आपके जूनियर पाटनर के पास भी पैंतीस परसट शेयर आ गए है। और अगर हालत यही बनी रही, यानी यह हडताल नही हुई, छँटनी हो गई, तो मेरा खयाल है साल भर के अन्दर ही आपके जूनियर पाटनर के पास इक्यावन परसट शेयर आ जाएँगे।"

जमशेद कावसजी की उलझन कुछ और बढ गई, "मुझे इस सबका पता नही है, वैसे शेयर तो बिका ही करते है। लेकिन डाइरेक्टरो की मीटिंग म असली हाल्त मालूम होगी। हा, चिमनलाल आते होगे, लेकिन उनसे बात करना ठीक न होगा। क्या कुलसुम, ऐसा लगता है कि हम लोगो को खतरा पैदा हो रहा है।"

कुलसुम ने सर को झटककर कहा, 'हम लोगो को किसी तरह का खतरा नही है। पैंतालीस परसट हमारे शेयर है, पन्द्रह परसट दिनशा आबवाला के शेयर हैं, बाहर तो कुल चालीस परसट शेयर है। चिमनलाल ने अगर पैंतीस परसट शेयर ले लिए हैं तो बाहर कुल पाँच परसट शेयर बाकी हैं।"

जमशेद कावसजी के मुख पर वाली चिन्ता की छाया निकल गई, 'अरे हाँ, दिनशा की बात तो मैं भूल ही गया था। तो जमील साहब, यह

वात तो गलत निकली, वाहर कुल पाच परसट शेयर है।" जम
के वास्ते दूसरा पेग ढाला।

जमील कुछ देर तक सोचता रहा तव तो वात और भी
गई। एक तरफ लम्बा मुनाफा, दूसरी तरफ थाडा-सा घाटा, ल
लोगा की आप छँटनी करगे उन्ह ता घाटा-ही घाटा है।" इस
कुल्सुम की ओर मुडा 'क्या कुल्सुम वन! जो मजदूर अपना खू
वहाकर आप लोगा की दौलत वढा रहे हैं क्या उन्हे जिन्दा रहन
हक नही है? वम्वइ की ज्यादातर मिलें पुरान जमाने की हैं, आप ल
लम्बे कमीशन देन के वाद वह मुनाफा नही द पा रही हैं। तो आप
अपना कमीशन कम कर दे लेकिन मजदूरा की रोजी न ल।
कम्युनिज्म का नजरिया न मानकर इसानियत का नजरिया मानना
वैसे मैंने इस हडताल का विरोध किया है आपकी जा दलील हैं उन्ह
नही जा सकता इसानियत का आधार तक नही है भावना है।
आपकी तरफ है।"

ऐसा मालूम हाता था कि जमील की वात का प्रभाव जमशेद कावसज
पर पडा है उन्हाने जमील की वात का कोई उत्तर नही दिया, चुपचाप
सोचने लगे। इसी समय एक और कार कम्पाउण्ड मे आई। जमश
कावसजी वाले लो सेठ चिमन भाई भी आ गए है। म भी समझता हूँ कि
इसका काई हल निकाला जा सकता है। आओ चिमन सेठ, इन जमान
अहमद को मैंने वात करन का बुलाया है।'

चिमन सेठ लम्बा-सा और वतरह दुवला-सा आदमी था रग पील
और मुख पर तीखापन। महीन खादी की धोती कलफ किया हुआ खादी
का दूध की तरह सफेद लम्बा कोट सर पर गाधी टापी। उसन उठते हुए
कहा 'इनसे वात करने से काई फायदा नही हागा। असली नता ता गाविन्द
है और वह किसी हालत म झुकने को तयार नहा है—लडन पर तुला हुआ
है। मैंने पुलिस कमिश्नर से वात कर ली है।

जमशेद कावसजी ने हँसते हुए कहा खूव चिमन सेठ! देखो जमील
अहमद, हमारे चिमन सेठ वडे वडे आदमी हैं, इनसे लडकर कोई पार नहा
पा सका। महात्मा गाधी के असली चेले हैं।"

जमील मुस्कराया, "जी हाँ, जी हा, लेकिन इतने उतावलेपन मे नही चलेगा कावसजी सेठ ! चिमन सेठ को भी एक पेग दीजिए, तव बातचीत आगे वढे।"

चिमनलाल ने बिगडकर कहा, "जरा तमीज़ से वात करो। सब लोग जानते है कि मैं शराव नही पीता।"

जमील ने वडे इत्मीनान के साथ अपनी आख वन्द करते हुए कहा, "इसान के लहू मे शराव से ज्यादा नशा होता है। मैं गलत तो नहीं कहता चिमन सेठ ! हा, तो वढाइये अपनी वात कावसजी सेठ !"

जमशेद कावसजी फिर कुछ उलझन म पड गए, जमील के इस व्यग्य से, लेकिन जैसे चिमन सेठ या तो इस व्यग्य को समझे ही नही या फिर इस व्यग्य को पी गए। उन्होने कहा, "कुछ लोगो की छँटनी, या फिर पूरी मिल वन्द कर देना, इन दो वातो मे से एक को चुनना पडेगा तुम लोगो को। घाटा उठाकर मिल नही चलाई जा सकती, इतना तय है। हडताल के मान होंगे पूरी मिल वन्द कर देना। मिल वन्द करने के माने हैं करीव दो हज़ार आदमियो की वेकारी। तो डेढ-दो सौ आदमियो की वेकारी स्वीकार न करके तुम लोगो को दो हज़ार आदमियो की वेकारी स्वीकार करनी पडेगी।"

"और कोई दूसरा रास्ता नही निकाला जा सकता ?" जमील अहमद ने पूछा।

"मुझे तो नही दिखता, अगर तुम्हे दिखता हो तो तुम बतलाओ।" चिमनलाल ने कहा।

"मैं वह रास्ता कावसजी सेठ को वतला चुका हूँ। आप अपना सेलिंग एजेंसी का कमीशन कम कर दीजिए, कावसजी सेठ अपना मनेजिंग एजेंसी का कमीशन कम कर दें। कावसजी सेठ करीव-करीव राजी हैं।"

प्रश्नसूचक ढग से चिमनलाल ने कावसजी को देखा, कावसजी ने हकलाते हुए कहा, "इस पर ग़ौर किया जा सकता है।"

उसी समय चिमनलाल की आवाज दृढ हो गई, "इस पर किसी हालत म नही सोचा जा सकता। धधा किया जाता है मुनाफे के लिए, खैरात करने के लिए नही।"

जमील ने कहा, 'आप तो बड़े दानी आदमी हैं चिमन सेठ, का
आप हजारों रुपया दान देते रहते हैं। महात्मा गांधी के आप शिष्य हैं
राजकोट में महात्मा गांधी उपवास कर रहे थे, आप यहां से अपना
काम-काज छोड़कर राजकोट गए थे उनकी सेवा करने के लिए। तो
ही सोचिए कि अगर छँटनी हुई तो ये मजदूर बेकार हो जाएँगे। इधर
लिए कहीं काम-काज भी नहीं है इनके भूखों मरने की नौबत आ जाएगी
'तो फिर मैं क्या करूँ? ये लोग कहीं और काम ढूँढ जाकर। जहां
दान और खैरात की बात है वह धंधे से बिल्कुल अलग की चीज़ है
चीज़ का अपना एक अलग कानून होता है। अगर इन प्रकार होने वाले
के लिए खैरात का कोई फण्ड खोला जाए तो मैं उसमें हज़ार-पांच सौ रु
अपने पास से देने को तैयार हूँ क्योंकि दान करना व्यक्ति का धर्म है। लेकिन
इस सोल सेलिंग एजेंसी का कमीशन मैं जरा भी कम करने को तैयार न
हूँ क्योंकि यह कमीशन लेना मेरे धंधे का धर्म है।"
एकाएक जमील अहमद उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'चिमन सेठ,
ठीक कहते हैं और आपके धरम के खिलाफ कुछ कहना मेरे लिए
होगा। तो असली नेता गोविन्द है उसी से आप लोग सब-कुछ तय कीजिए
माफ करना कावसजी सेठ, मुझे इन चिमन सेठ के धरम ने इस हैसियत
नहीं रखा कि मैं आप लोगों की किसी तरह की मदद कर सकूँ। फिर
जगतप्रकाश की ओर मुड़कर कहा, 'तो बरखुरदार कल सुबह आठ बजे
आऊँगा, तैयार रहना।'
जमशेद कावसजी ने जमील को रोकने की कोशिश की, 'खाना खा
जाना जमील अहमद।'
'खाना घर में तैयार है, बीवी इन्तज़ार कर रही होगी।' जमील
तनकर कहा, "अब मेरा यहाँ बैठना गैरमुमकिन हो गया है। ज़्यादा पी ग
हूँ और मुझे आपके जूनियर पार्टनर की शक्ल देखकर उबकाई आ रही है।
यह कहकर जमील वहाँ से चल दिया।
जमील के जाते ही वहां का वातावरण बड़ा विक्षुब्ध हो गया, जगत
प्रकाश ने अनुभव किया। सेठ चिमनलाल बम्बई का प्रमुख कांग्रेसी नेता था,
हजारों रुपये उसने पार्टी को चन्दे में दिए थे। वैसे वह कांग्रेस में सक्रिय रू

ग नही लेता था, लेकिन महात्मा गाधी के प्रमुख अनुयायियो मे उमकी
ा होती थी। इस चिमनलाल का दूसरा रूप जगतप्रकाश ने देखा और
क्कर मे पड गया।
इस चिमनलाल म एक तक था, भयानक भौतिकवादी तक! यह अम-
ण आदमी जो शराब नही पीता, जो गोश्त नही खाता, जिसके पास
दुर्व्यसन नही है, इतना भौतिकवादी, इतना भावना से शून्य कसे बन
? और एकाएक जगतप्रकाश की विचारधारा टूटी जमशेद कावसजी की
ाज से, "चिमन सेठ! इस जमील अहमद की बात कुछ ऐसी बेजा भी नही
में तो मैनेजिंग एजेसी के मनाफे का एक भाग छोडने को तैयार हूँ।"
"लेकिन मैं सोल सेलिंग एजेसी के कमीशन का कोई भी भाग छोडने
तैयार नही हूँ। तुम बेकार डरते हो कावसजी सेठ, यह हडताल नही
ी, और अगर हुई भी तो इसे एक हफ्ते म हम कुचलकर रख देगे। फिर
ट और त्रिपाठी, इन दो मजदूर नेताओ को मैंने मिला लिया है अपने
।"
अब इस बातचीत मे जगतप्रकाश की दिलचस्पी जाती रही थी, उसने
सुम की ओर देखा। कुलसुम भी मानो अब इस बातचीत को खत्म
ना चाहती हो, उसने उठते हुए कहा, "खाने का वक्त बीत गया है डैडी,
कर इत्मीनान से इस पर सोचिए विचारिएगा।"
सेठ चिमनलाल भी उठ खडे हुए, 'हा अब खाना खा लो कावसजी
, देर हो गई है। मैंने भी अभी तक खाना नही खाया है। तो मैं चलू।
केन आप इस मामले म चुप ही रहिए, मैं निपट लूगा इन लोगो से। ये
मन सेठ को जानते नही।" और चिमनलाल चला गया।
दूसरे दिन सुबह आठ बजे जमील अहमद जगतप्रकाश को लेने आया।
लसुम उस समय जगतप्रकाश के साथ नाश्ता कर रही थी। जमील को भी
लसुम ने नाश्ता करने के लिए बिठा लिया, "कामरेड जमील अहमद, इन
गतप्रकाश ने बम्बई की तडक भडक तो देखी है, लेकिन यहाँ की असली
ज़िदगी यानी मजदूरो की ज़िदगी नही देखी है। आप इन्हे बम्बई का
सली रूप दिखला दीजिए।"
"जी यही करने आया हूँ। आपकी शागिर्दी तो महज दिमागी होगी।"

जमील मुसकराया, "असल चीज़ है खुद अपन अन्दर वाली तडप। तो इत्मीनान रखिए, यह तडप इनके अन्दर पैदा हो जाएगी।"

कुलसुम बोली, 'मेरी कार है, आप इसे ले जाइए। म ड्राइवर न देती हूँ, डडी को मैं उनसे मिल म छोड आऊँगी जाकर।"

"आपकी कार पर तो यह बम्बई न देख सकेंगे, असली बम्बई होगा इन्ह पैदल, ट्राम पर या लोकल ट्रेनो के ठसाठस भरे थड क्लास डब्बा मे। आप इनके दोपहर के खाने का इतज़ार न कीजिएगा, आज मेरे महमान हैं। शाम को पाच-छ बजे तक मैं इनको वापस कर जाऊँ। आज आठ बजे वाली शिफ्ट पर मैं हूँ।'

जगतप्रकाश का साथ लेकर जमील जमशद कावसजी के बँगले से बाहर आया कि उसे गिरधारी उधर आता हुआ दिखा। गिरधारी ने दाना को आवाज़ दी, और य दोनो रुक गए। जमील और गिरधारी एक ही उम्र के थे लेकिन जहा जमील के मुख पर एक प्रकार की बुज़ुर्गियत आ गई थी वही गिरधारी जगतप्रकाश का समवयस्क दिखता था। गिरधारी ने कहा 'लो, मैं जमील को कल रात इतना ढूढता रहा, लेकिन तुम खुद-ब-खुद तुम्हारे यहा पहुँच गए। और यह स्पष्ट दिखता था कि गिरधारी के मुख पर एक तरह की खिसियाहट है। 'सोचा था कि सेठ के घर म एक प्याला चाय का पिएँग अपने जगतप्रकाश के साथ, लेकिन तुम लोग तो यहा फाटक के बाहर आ गए हो। वसे प्यास भी लगी है, न हो तो एक गिलास पानी ही पिल्वा दो।'

जमील बोला, उस मोड पर ईरानी के यहा चाय, पानी सभी मिल्ता है।"

गिरधारी ने आख मारते हुए कहा, 'यार असल बात तो यह है कि हम दस कुल्सुम कावसजी को दखना चाहते थ जिसके पीछे जगत खिंच हुए चले आए हैं।

एकाएक जगतप्रकाश ने कडे स्वर म कहा "तमीज़ से बात करो। एक भली ल्डकी का अपमान कर रह हो।'

गिरधारी को यह आशा नही थी कि जगतप्रकाश इस तरह भड़क उठेगा। उसने कहा अरे भल्ग मैं उसका अपमान कर सकता हूँ, बड़

वडा को वह चराती घूमती है। अपने जमील काका भी तो उसके मुरीद है। अच्छा हम तो चले अपने धधे से, अब तुम दोनो रकीब एक-दूसरे का दुखडा कहो-सुनो!" और गिरधारी घूमकर चल दिया।

जगतप्रकाश के मन मे आया कि वह गिरधारी के मुँह पर एक तमाचा जड दे, लेकिन जैसे जमील ने उसके मन की वात समझ ली। उसने कहा,"अरे छोडो भी इसे, किसी तरह की सजा इसे नही सुधार सकेगी। इस आदमी की तो परछाईं से दूर रहना चाहिए।"

गवालिया टैंक तक दोना आदमी पैदल आए। फिर वहा उन्हाने ट्राम पकडी। ट्राम वेतरह भरी हुई थी, ऑफिस का समय हो गया था। जमील बोला, "वडी भीड है इस शहर मे, तुम शायद घवरा रहे होगे। शुरू-शुरू मे मुझे भी इस भीड से घबराहट होती थी, लेकिन अव इस भीड मे मजा आने लगा है मुझे। इसान सामाजिक प्राणी होन के नाते गिरोहा मे रहता है और ये गिरोह वढते-वढते भीड वन जाया करते हैं। बडे-बडे मेले जहा लाखो आदमी इकट्ठा होते है, इसान की इस भीड के प्रति मोह को ही तो प्रदर्शित करते हैं।"

ट्राम चल रही थी, लोग चढते थे और उतरते थे, भीड वैसी-की-वैसी ही बनी थी। जमील कहता जा रहा था,"इस भीड से घबराने के माने हाते हैं जिन्दगी से घवराना। हमें अपने को इस भीड मे खो देना चाहिए, तभी हम असली जि दगी को पा सकेंगे। और इस हिसाब से मैं कभी-कभी सोचने लगता हूँ कि असली जिन्दगी के दर्शन हमे इस बम्बई शहर म ही होते है।"

मुहम्मदअली राड पर ट्राम से उतरकर उन दोना ने अब दादरवाली ट्राम पकडी। जगतप्रकाश ने पूछा, "अब हम लोग कहा चल रहे हैं?"

"मेरे घर। मैं परेल मे मजदूरा की एक चाल मे रहता हूँ। तुम्हारी भाभी वहा है। तुम्हारा एक भतीजा चार साल का है और एक भतीजी एक साल की है। ता तुम मेरा घर तो देख ही लो।"

जगतप्रकाश मुसकराया, "भाभी ता बुर्के मे रहती हागी?"

"अरे कहा का बुर्का और कहा का पर्दा? हम मजदूरो और मेहनतकशो म यह सब नही चलता। हा, मेरे यहा खाना खाने मे तो तुम्ह कोई एतराज नहीं हागा?"

"कुल्सुम के यहाँ इतने दिनों से खाना खा ही रहा हूँ।"

परेल के पीछे की तरफ एक गन्दे-से मुहल्ले में एक पचमंजिली इमार उस इमारत में अनगिनती कमरे—मटमैले और टूटे हुए। इन्हीं कमरों एक कमरा जमील अहमद का था।

जमील अहमद की पत्नी सईदा रसोई में उलझी हुई थी। चार ब का लड़का अनीस अपनी एक साल की छोटी बहन रशीदा को खिला र था। इन दोनों के आते ही सईदा ने कहा, 'लो, खाना तैयार है।"

जमील बोला, "इत्मीनान के साथ खाएँगे। इन जगतप्रकाश को पहचानती ही होगी?"

प्रश्न बेकार-सा था, क्योंकि सईदा ने कोई उत्तर नहीं दिया। जग प्रकाश ने देखा कि एक अधेड़-सी दिखनेवाली स्त्री उसके सामने खड़ी जिसके मुख पर झुर्रियाँ पड़ने लगी हैं। साँवले रंग वाली उस स्त्री की मु कृति कभी सुंदर रही होगी, लेकिन उसमें अब एक तरह की कठोरता गई थी। वह एक मोटी-सी साड़ी पहने थी। उसने जमील की बात का क उत्तर नहीं दिया, चुपचाप वह जगतप्रकाश को देख रही थी।

जमील मुसकराया, "यह सईदा गूँगी नहीं है, हाँ तुम इसे कमसखुन सकते हो। लेकिन यह अच्छा ही है, किसी से लड़ती-झगड़ती नहीं है, ठ तरीके से, ठीक वक्त पर यह हरेक काम करती है। एक दफा भी इसने म किसी बात की शिकायत नहीं की, जैसे इसकी कोई हस्ती न हो। कभी-क तो मुझे शक होने लगता है कि कहीं यह मशीन तो नहीं है? मेरी किस में ही मशीनों से उलझना बदा है।" और जमील खिलखिलाकर हँस पड़ा

सईदा के होंठ खुले, "आप भी कैसी बातें करते हैं! आप इन्हें बा घुमाना चाहते हैं तो खाना खा लीजिए।" फिर वह जगतप्रकाश की ओ घूमी, "आपको मैंने गाँव में देखा था, आपके घर भी मैं गई थी, लेकिन आप नन्हे मुन्ने बच्चे थे। इस सबको एक अरसा हुआ। अगर मियाँ ने बतलाया होता तो मैं आपको पहचान भी न पाती। कितने बदल गए आप। खुदा के फजल से आप तो हम लोगों की बराबरी के दिखने लगे हैं

जगतप्रकाश ने सईदा की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया, जो सईदा ने कहा था, वह प्रश्न तो था नहीं जो उसका उत्तर दिया जाता।

काए हुए वह चुपचाप खडा था। जमील ने जगतप्रकाश की घबराहट देखी, पने सईदा से कहा, "अच्छा खाना परोसा। तब तक मैं बरामदे से इन म्बई के इस हिस्से का नज़ारा दिखलाता हूँ।"

दोनो आदमी अब बरामदे मे खडे हो गए। सामने भी एक पचमज़िली मारत थी, और वह भी उतनी ही कुरूप, उतनी ही गन्दी और उतनी ही दबूदार थी जितनी वह थी जिसमे वे खडे थे। नीचे सडक पर नलो की तार थी जिन पर सकडो औरतें अपने-अपने घडे लेकर पानी भरने आई ी, या फिर नहाने के लिए आई थी। इन औरतो मे कुछ एक-दूसरे से पना रोना रो रही थी, कुछ एक-दूसरे को भद्दी गालिया देती हुई आपस लड रही थी। जगतप्रकाश ने अपने गाव की निम्नवर्ग की स्त्रियो को देखा ा, उनकी अपेक्षा ये स्त्रिया अधिक सम्पन्न दिखती थी, लेकिन ये अधिक उग्र भी थी। एकाएक जगतप्रकाश ने पूछ लिया, "जमील काका! इस डाध और गन्दगी मे रहने के लिए अपने वतन को छोडकर हज़ारो मील की री पर लोग खुशी-खुशी चले आते है, इस पर मुझे आश्चर्य होता है।"

जमील थोडी देर चुप रहा, फिर उसने कहा, "ठीक कहते हो बरखुरदार! ह सडाध और गन्दगी, जो तुम यहा देख रहे हो, अपने वतन मे नही है, लेकिन स सडाध और गन्दगी को तुम अहमियत क्यो देते हो? हमारे जिस्म के अन्दर या यह सडाध और गन्दगी नही है? सवाल गन्दगी और सडांध का इतना ही है जितना ज़िन्दगी और मौत का है। अपने वतन में मजबूरी से भरी ुलामी है अपने वतन मे फाकाकशी है। सफाई, नफासत, ऐशोआराम—ये सब जिन्दगी के ऐसे पहलू हैं जो इसान के पास इफरात के बाद आते है। फिर यहा की गन्दगी और सडाध तुम्हे इसलिए और अखरती है कि यहा बेहद सफाई और खूबसूरती भी है। इस बम्बई शहर मे इफरात है, इस इफरात की शक्ल तुमने कुलसुम कावसजी के बँगले मे, उसके महल्ले मे और बम्बई के अनगिनती मकानो और महल्लो मे तुमने देखी है। लेकिन बरखुरदार, यह सडाध और गन्दगी, जो तुम यहाँ देख रहे हो, अपने वतन मे भी मौजूद है। लेकिन उसे तुम देख नही पाते, क्योकि अपने वतन की सडाध और गन्दगी मे घुटन है, बेबसी है, मौत है, जबकि यहाँ की सडाध और गन्दगी मे हलचल है, सघर्ष है और ज़िन्दगी है।

"कुलसुम के यहा इतने दिनो से खाना खा ही रहा हूँ।"

परेल के पीछे की तरफ एक गन्दे-से मुहल्ले म एक पचमंजिली इमारत उस इमारत मे अनगिनती कमरे—मटमैले और टूटे हुए। इन्ही कमरा म एक कमरा जमील अहमद का था।

जमील अहमद की पत्नी सईदा रसोई म उलझी हुई थी। चार बरस का लडका अनीस अपनी एक साल की छोटी बहन रशीदा को खिला रहा था। इन दोनो के आते ही सईदा ने कहा, "लो, खाना तैयार है।"

जमील बोला, "इत्मीनान के साथ खाएँगे। इन जगतप्रकाश को तो पहचानती ही होगी ?"

प्रश्न बेकार-सा था, क्योकि सईदा ने कोई उत्तर नही दिया। जगतप्रकाश ने देखा कि एक अधेड-सी दिखनेवाली स्त्री उसके सामने खडी है जिसके मुख पर झुरिया पडने लगी हैं। सावले रग वाली उस स्त्री की मुखाकृति कभी सुन्दर रही होगी, लेकिन उसम अब एक तरह की कठोरता आ गई थी। वह एक मोटी-सी साडी पहने थी। उसने जमील की बात का कोई उत्तर नही दिया, चुपचाप वह जगतप्रकाश को देख रही थी।

जमील मुसकराया, 'यह सईदा गूगी नही है, हा तुम इसे कमसखुन कह सकते हो। लेकिन यह अच्छा ही है किसी से लडती झगडती नही है, ठीक तरीके से, ठीक वक्त पर यह हरेक काम करती है। एक दफा भी इसने मुझसे किसी बात की शिकायत नही की जैसे इसकी कोई हस्ती न हो। कभी-कभी तो मुझे शक होने लगता है कि कही यह मशीन ता नही है ? मेरी किस्मत म ही मशीनो से उलझना बदा है।" और जमील खिलखिलाकर हँस पडा।

सईदा के होठ खुले, "आप भी कैसी बाते करते हैं! आप इन्हे बम्बई घुमाना चाहते हैं तो खाना खा लीजिए। फिर वह जगतप्रकाश की ओर घूमी, "आपको मैने गाव मे देखा था आपके घर भी मैं गई थी, लेकिन तब आप नन्हे-मुन्ने बच्चे थे। दस बरस का एक अरसा हुआ। अगर मियाँ न न बतलाया होता तो मैं आपको पहचान भी न पाती। कितने बदल गए हैं आप। खुदा के फज़ल से आप तो हम लोगो की बराबरी के दिखने लगे हैं।"

जगतप्रकाश ने सईदा की इस बात का कोई उत्तर नही दिया, जो कुछ सईदा ने कहा था वह प्रश्न तो था नही जो उसका उत्तर दिया जाता। सर

[गाए हुए वह चुपचाप खडा था। जमील ने जगतप्रकाश की घबराहट देखी, [उ]सने सईदा से कहा, "अच्छा खाना परोसो। तब तक मैं बरामदे से इन्हे [ब]म्बई के इस हिस्से का नज़ारा दिखलाता हूँ।"

दोनो आदमी अब बरामदे मे खडे हो गए। सामने भी एक पचमंजिली [इ]मारत थी, और वह भी उतनी ही कुरूप, उतनी ही गन्दी और उतनी ही [ब]दबूदार थी जितनी वह थी जिसमे वे खडे थे। नीचे सडक पर नलो की [क]तार थी जिन पर सैकडा औरतें अपने-अपने घडे लेकर पानी भरने आई [थी], या फिर नहाने के लिए आई थी। इन औरतो म कुछ एक-दूसरे से [अ]पना गाना रो रही थी, कुछ एक-दूसरे को भद्दी गालियाँ देती हुई आपस [मे] लड रही थी। जगतप्रकाश ने अपने गाँव की निम्नवर्ग की स्त्रियो को देखा [थ]ा, उनकी अपेक्षा ये स्त्रियाँ अधिक सम्पन्न दिखती थी, लेकिन ये अधिक [उ]ग्र भी थी। एकाएक जगतप्रकाश ने पूछ लिया, "जमील काका ! इस [स]डाँध और गन्दगी मे रहने के लिए अपने वतन को छोडकर हज़ारो मील की [दू]री पर लोग खुशी-खुशी चले आते हैं, इस पर मुझे आश्चर्य होता है।"

जमील थोडी देर चुप रहा, फिर उसने कहा, 'ठीक कहते हो बरखुरदार ! [य]ह सडाँध और गन्दगी, जो तुम यहाँ देख रहे हो, अपने वतन म नही है, लेकिन [इ]स सडाँध और गन्दगी को तुम अहमियत क्यो देते हो ? हमारे जिस्म के अन्दर [क्]या यह सडाँध और गन्दगी नही है ? सवाल गन्दगी और सडाँध का इतना [न]ही है जितना ज़िन्दगी और मौत का है। अपने वतन में मजबूरी से भरी [गु]लामी है, अपने वतन म फाकाकशी है। सफाई, नफासत, ऐशोआराम— [य]े सब ज़िन्दगी के ऐसे पहलू हैं जो इसान के पास इफरात के बाद आते हैं। [औ]र यहाँ की गन्दगी और सडाँध तुम्हे इसलिए और अखरती है कि यहाँ [बे]हद सफाई और खूबसूरती भी है। इस बम्बई शहर मे इफरात है, इस [इ]फरात की नजर तुमने रुस्तम कावसजी के बँगले म, उनके महल्ले म और [ब]म्बई के अनगिनती मकानो और महल्लो म तुमने देखी है। लेकिन बरखुर-[द]ार, यह सडाँध और गन्दगी जो तुम यहाँ देख रहे हो, अपने वतन म भी [म]ौजूद है। लेकिन उसे तुम देख नही पाते, क्योकि अपने वतन की सडाँध और [ग]न्दगी म घुटन है, बेबसी है, मौत है, जबकि यहाँ की सडाँध और गन्दगी [म]े हलचल है, तपन है और ज़िन्दगी है।"

जगतप्रकाश ने जमील की बात का कोई उत्तर नही दिया, शायद उ
पास कोई उत्तर था भी नही। चुपचाप वह अपने सामने वाले दृश्य को
रहा था, और जमील कहता जा रहा था, "तुम कायस्थ हो बरखुरदार,
ऊँचे तबके के हो। लेकिन अपने वतन मे मेहतरो, पासियो और चमारो
बस्तिया तुमने नही देखी, वहाँ तो जाना भी तुम लोगो को मना है।
ऊँचे तबके के लोग इस सडाध और गन्दगी को देखना नही चाहते हो, उ
प्रति तुम लोग अपनी आखे बन्द कर लेते हो। उस सडाध और गन्द
अन्दर जो तुमने जीवित मृत्यु भर दी है वही सबसे ज्यादा भयानक है। स
और गन्दगी को तो बदाश्त कर लिया जा सकता है, लेकिन उस मौत
नही बदाश्त किया जा सकता। और उसी मौत से बचने के लिए ल
आदमी अपने वतन को छोडकर यहाँ इस पराए शहर बम्बई म आ गए
आते रहते हैं।"

तभी नर्मदा की आवाज़ सुनाई दी "खाना परोस दिया है, आप
खा लीजिए।"

ज्वार की रोटिया, मठा, कढी और आलू का साग—खाना मराठी
का था। जगतप्रकाश को उस खाने म स्वाद लगा। कितना भिन्न था
खाना कुलसुम के यहाँ के खाने से! लेकिन एक तरह की तृप्ति, एक
का [illegible] अनुभव कर रहा था जगतप्रकाश अपने अन्दर। खाना खा
दोनो घूमने के लिए निकल पडे।

दोनो दिन भर घूमते रहे अब जगतप्रकाश को बम्बई का नया
[illegible] रहा था। मुहम्मद अली रोड से जब ये लोग कालबादेवी रोड की
बढ़ रहे थे इन्होंने एक मकान के आगे मिठाई [illegible] एक बहुत बडी भीड
[illegible] मकान के सामने जुटी थी। जमील ने कहा, 'यह सेठ आबिद
की शादी है। आठ दिनो से इनके दरवाजे मिठाई बँट रही है, क्
[illegible] लडके का विवाह हुआ है। सेठ आबिदअली करोडपती हैं।
उनके लडके का विवाह जिस लडकी के साथ हुआ है वह अपने माँ-बाप
[illegible] है। सेठ [illegible] बम्बई के इन गिने पूँजीपतियो और
[illegible] है। [illegible] अधिक
[illegible] —ये बाँटे जा रहे हैं। [illegible]

अन्दाज लगा सकते हो।"

जगतप्रकाश आश्चय के साथ उस भीड को देख रहा था, चार-पाच सौ से कम तो न होंगे। लेकिन इस भीड म हिन्दू मुसलमान सभी हैं।

जमील मुसकराया, "भिखारियो की न कोई जाति होती ह, न कोई मजहब होता है। अपने यहा के ब्राह्मणो की वात छोडो, वे भिखमगे नहीं हैं, वे पीर हैं जिन्ह तुम लोग जबदस्ती चढावा चढाते हो। यह भीड उन लोगो की है जिन्ह हमारे वतन मे अपने मन से कोई भीख नही देता, क्योकि वे हमारे समाज के सडे-गले अग ह। तो अपन वतन म तयशुदा मौत स बचने के लिए ये लोग यहा इस बम्बई मे इकट्ठे हुए ह। वही जीवन का सघष यहा है।"

दोपहर बीतन लगी थी और जगतप्रकाश को लग रहा था कि वह बहुत अधिक थक गया है। यह जमील, जो उसके साथ चल रहा था, उससे कहीं अधिक ज्ञानी है। उसने जमील से पूछा, "जमील काका, अब घूमने की तबीयत नहीं होती, लौटना चाहिए।"

"हा वरखुरदार, साढे चार बज रहे हैं। मैं भी अब घर चलू। रात की शिफ्ट है आज से।"

जगतप्रकाश ने एक ठडी साँस ली, "और मैं सोच रहा हूँ कि आज रात की गाडी से ही मुझे बम्बई से लौटना चाहिए।"

'लेकिन तुम तो यहाँ दो एक दिन और रुकने वाले थे।" जमील ने कहा। "लेकिन जो कुछ म दिखला सकता था वह मैंने दिखला दिया।" फिर कुछ रुककर उसने कहा, "लेकिन तुम हमेशा के लिए न लौट पाओगे बरखुरदार! मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे अन्दर एक आग है, और तुम अचानक ही ऐसे रास्ते पर आ पडे हो जिससे लौटना गैरमुमकिन है। तुम्हे तुम्हारी कोठी तक पहुँचा दू या तुम खुद चले जाओगे ?"

"मैं खुद चला जाऊँगा जमील काका! आज तुम्हारे साथ जो देखा वह युग-युग तक मैं न देख पाता—यानी, तुमने मुझे देखने को आख दे दी, धन्यवाद! वैसे, जो कुछ मैंने देखा है, उसे भूलने का प्रयत्न करूँगा, लेकिन निश्चय ही भूल पाऊँगा—यह मैं नही कह सकता।"

जमील ने बडे प्यार से जगतप्रकाश के कन्धे पर हाथ रखा, "होगा वही

जो खुदा को मजूर है। लेकिन मैं इसान को थोडा-बहुत पहचानता हूँ और समझता भी हूँ कि तुम यह सब आसानी से न भूल पाओगे। बहरहाल इसे भूलने की कोशिश जरूर करना। कब जाने का इरादा है यहा से ?"

"अभी साढे चार बजे है साढे आठ बजे इलाहाबाद गाडी जाती है उसी से चला जाऊँगा।"

"खुदा हाफिज बरखुरदार! मुझे याद रखना। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा बम्बई आना-जाना होता रहेगा। जब यहा आना, मुझसे मिल लेना। मेरा घर तो देख ही लिया है।"

जिस समय जगतप्रकाश कुल्सुम के यहाँ पहुँचा, कुल्सुम घर पर ही थी। उसने जाते ही कहा 'मुझे आज ही इलाहाबाद जाना है।"

आश्चर्य से कुल्सुम ने जगतप्रकाश को देखा, "तुम तो दो एक दिन और रुकने का वायदा कर चुके हो।

'वायदा मैंने पूरा कर दिया, क्योकि मैं एक दिन और रुक गया। और इस एक दिन म मैंने बम्बई की आत्मा देख ली। मैं बडा भाग्यशाली था जो जमील अहमद से मेरी मुलाकात हो गई जो कुछ देखना बाकी था उन्होंने मुझे वह सब दिखा दिया। अब हर हाल्त म मुझे इलाहाबाद लौटना चाहिए।

कुलसुम ने ध्यान से जगतप्रकाश को देखती रही, फिर एक ठडी सास लेकर उसने कहा,' जब तुमने जाना तय कर लिया है तब म तुम्हे न रोकूगी। तुम अपनी तैयारी कर लो। हम दोनो आज ताजमहल होटल म डिनर खाएगे वहा से मैं तुम्हे ट्रेन म बिठा दूगी।'

एक सुदर और रगीन शाम ताजमहल होटल म कुलसुम के साथ, और फिर बाम्बे-कलकत्ता मेल मे सेकण्ड क्लास की लोअर बथ। टिकट कुलसुम ने ले दिया था। और फिर गार्ड ने सीटी दी। कुल्सुम ने जगतप्रकाश का हाथ अपने हाथ मे ले लिया। जगतप्रकाश ने देखा कि कुल्सुम की आखे कुछ तरल है और उसने सुना, तुम बडे भोले हो, तुम बहुत भले हो। तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो। हमारी यह आखिरी मुलाकात नही है, क्योकि तुम्हारा पता मेरे पास है और मेरा पता तुम जानते हो।"

गाडी अब चलने लगी थी। कुल्सुम प्लेटफार्म पर खडी रूमाल हिला रही थी और जगतप्रकाश बेसुध, खोया-सा एकटक कुल्सुम को देख रहा था

५

छोटी लाइन की पैसेंजर ट्रेन मे थर्ड क्लास का डब्बा, ठसाठस भरा हुआ। जगतप्रकाश चुप बैठा हुआ अपने चारों ओर देख रहा था, तरह-तरह के चेहरे, जैसे सभी थके-हारे हों। कम्पार्टमेण्ट में एक भयानक घुटन भरी थी, वातावरण की भावना की। और जगतप्रकाश सोच रहा था कि यह घुटन क्या? इस घुटन का स्रोत कहाँ है? उस कम्पार्टमेण्ट मे, जिसमे रेल के अधिकारियो ने इक्कीस आदमियों के बैठने की व्यवस्था की थी, चालीस आदमी एक-दूसरे पर लदे बैठे या खड़े थे।

मई का दूसरा सप्ताह था, गर्मी ज़ोर की पड़ रही थी। लू से बचने के लिए इस कम्पार्टमण्ट की खिड़कियां बन्द कर दी गई थीं। और एक बदबू भर गई थी उस कम्पार्टमेण्ट के अन्दर। जगतप्रकाश को लग रहा था कि उसका सर फटा जा रहा है। इसी घुटन और बदबू में हिन्दुस्तान के अधिकांश आदमी रहते है, यह घुटन और बदबू अकेले नगरों मे नहीं है, यह गांवों में भी मौजूद है। और एकाएक जगतप्रकाश को अपने अन्दर एक झुंझलाहट महसूस हुई। उसकी यह झुंझलाहट अपने ही प्रति थी। उसके अन्दर यह नई भावना और नई चेतना कैसे आ गई? वही वातावरण जिसमें वह पला था, वही परिस्थितियाँ और वही वह—लेकिन सब-कुछ बदल क्या और कैसे गया? उसने घड़ी देखी, चार बज रहे थे। लेकिन बाहर आसमान जल रहा था, धरती जल रही थी, हवा जल रही थी। आधे घण्टे बाद सिवाल का छोटा-सा स्टेशन आएगा, और उस स्टेशन पर उसे उतरना होगा। छः घण्टे हो गए उसे उस गाड़ी पर सफर करते हुए, और एक थकन-सी भर गई थी उसके अन्दर। चारों ओर एक उदासी, जैसे वह भी उन उदासी का एक भाग हो।

गाडी अब धीमी पडन लगी। जगतप्रकाश के पास कुल सामान एक ट्रक और एक बिस्तर। लेकिन दोनो ही काफी वजनी थे, क्योकि उ ठसाठम किताबे भरी थी। गरमी के इन दो महीना मे वह अपनी थीसि पूरी कर देगा, उसने यह सकल्प किया था। अपना असबाब उठाकर दरवाजे के पास रख दिया था सिखल म गाडी कुल दो मिनट ठहरती और दो मिनट म उस भीड से असबाब निकालना बडा कठिन था।

गाडी रुक गई और तभी उसे अपनी ओर दौडकर आता हुआ सुम दिखाई दिया। जगतप्रकाश गाडी स उतरा, सुमर न उसका असबाब उतार हुए बडी आत्मीयता के साथ कहा, आज तो ठीक वखत से गाडी आ भइया। मालकिन बाहर बरगद के पेड के नीचे बठी तुम्हार इन्तजार क रही है।"

"क्या दीदी आई हैं? इस लू-लपट म वह क्या आइ यहा, तुमने उन्ह रोका नही?'

'भला मालकिन को कौना राक सकत है?" खीस निपोरते हुए सुमेर बोला।

जगतप्रकाश न ट्रक सुमेर के सर पर लदवा दिया बिस्तर उसने खु उठाया। दोना स्टेशन के बाहर निकले।

अनुराधा न जगतप्रका'श का स्टेशन के बाहर निकलत देख लिया था। वह उठकर खडी हा गई थी। एक अजीब तरह का सतोष और पुलक वह अनुभव कर रही थी अपने अन्दर। पूरे एक साल बाद जगतप्रकाश घर आया था। उसने वही से तेज आवाज म आदेश दिया 'जगत, बिस्तर वही रख दो, सुमर ट्रक रखकर उठा लाएगा उसे।' और वह जगतप्रकाश की ओर बढ़ी।

जगतप्रका'श ने बिस्तर जमीन पर डाल दिया अनुराधा की आज्ञा से नही बल्कि इसलिए कि वह थका हुआ था और बिस्तर काफी वजनी था। उसन बढकर अपनी बहन के पैर छुए।

अनुराधा न उस सर स पर तक देखा, फिर वह बाली, 'बडे दुबले हो गए हो, तन्दुरुस्ती का कुछ खयाल रखा करो।' और जगतप्रकाश का हाथ पकडकर वह उसे वहाँ घसीट लाई जहाँ वह बठी थी। जगतप्रकाश न

मुसकराते हुए कहा, "दीदी, तुम तो मुझे इस तरह घसीट रही हो जैसे मैं तुम्हारा बच्चा होऊँ।"

जैसे बिजली का करेंट लगा गया हो अनुराधा को। जगतप्रकाश का हाथ छूट गया उससे, "नहीं, अब बच्चे नहीं रह गए हो तुम। बम्बई-कलकत्ता का दौरा करने लग हो, है न ऐसा!" और उसने सुमेर से कहा, "कुएँ से पानी भरकर शर्बत बना लो।" वह ज़मीन पर बिछी हुई दरी पर बैठ गई, उसने जगतप्रकाश से कहा, "बैठ जाओ, थोडी देर सुस्ता लो। शर्बत पीकर ताज़े हो जाओगे तब हम लोग चलेंगे, तब तक धूप भी ढल जाएगी। चेहरा कितना मुरझा गया है!"

जगतप्रकाश चुपचाप बैठ गया। उसने अपने जूते उतार दिए। उसके अन्दर वाली वितृष्णा और झुंझलाहट के भाव अब गायब हो गए थे, वह जाना-पहचाना, आत्मीयता से भरा हुआ वातावरण उसके इर्द-गिर्द लौट आया था। बैठते हुए उसने अनुराधा से शिकायत की, "दीदी, इतनी लू-धूप म तुम्हे यहा आने की क्या ज़रूरत थी?"

जगतप्रकाश के स्वर मे एक प्रकार का अधिकार आ गया था अचानक ही, जिसे जगतप्रकाश ने तो अनुभव नही किया, लेकिन अनुराधा न उसे तत्काल अनुभव कर लिया। उसने सफाई देने के स्वर म कहा, "घर मे कोई काम-काज तो था नही, इन दिनो यमुना आ गई है तो उसने एक तरह स घर का सारा काम-काज सँभाल लिया है। सुमेर ठीक तौर से तुम्हे ला सकेगा, इस पर मुझे भरोसा नही था।" लेकिन जैसे अनुराधा को लगा कि इन सब बहानो से जगतप्रकाश को सतोष नही हुआ, कुछ रुककर वह बोली, "अगर मैं आ ही गई तो कौन-सा गजब हो गया?"

जगतप्रकाश ने बात आगे नही बढाई, वह 'यमुना' नाम से उलझ गया था। उसने यमुना को देखा तो न था, लेकिन उसने यमुना के सम्बन्ध म सुना अवश्य था। अनुराधा के कोई ननदोई थे रामसहाय, जो बस्ती शहर म वकालत करते थ। यमुना उन्ही रामसहाय की भतीजी थी। लेकिन रामसहाय की पत्नी यानी अनुराधा की ननद से तो अनुराधा का सम्बन्ध उसी दिन टूट गया था जिस दिन अनुराधा को उसके ससुराल वालो ने अपने घर से निकाल दिया था। सत्यप्रकाश की मृत्यु के बाद जब गाँव वालो न

सत्यप्रकाश की जमीन को हडपने का प्रयत्न किया तब अनुराधा को
ननदोई की याद आई। अनुराधा की ननद बडी आत्मीयता के
मिली और रामसहाय ने अनुराधा की पूरी तौर से सहायता की।
अनुराधा से मेहनताने के रूप म पैसा लेने से इनकार कर दिया था।।
अनुराधा अपनी जमीन के मुकदमो के सिलसिले म जब कभी बस्ती जा
थी, अपनी ननद के यहा ही ठहरती थी।

रामसहाय की भतीजी यमुना का जिक्र अनुराधा ने जगतप्रकाश
एकाध बार किया था। यमुना बडी सुशील लडकी थी और कानपुर म कि
कालेज मे पढती थी। पार साल यमुना न इटरमीडिएट की परीक्षा पास क
थी। वह सुन्दर थी, बुद्धिमती थी।

इस समय तक सुमेर शबत बना लाया था। उसने इन लोगो को शब
देकर बलगाडी पर जगतप्रकाश का असबाब रख दिया। फिर वह अनुराधा
से बोला, "मालकिन अब धूप ढल गई है। ढाई घण्टा समय लागा महोना
पहुँचने म।"

"हा, अब हम लोगो का चल देना चाहिए।" अनुराधा ने उठते हुए
कहा। जगतप्रकाश भी उठ खडा हुआ। सुमेर न दरी लपटकर बलगाडी म
रख दी।

जिस समय बैलगाडी महोना पहुँचा, रात हो गई थी। घर के दरवाजे
पर एक युवती खडी हुई इन लोगो की प्रतीक्षा कर रही थी, बरामदे म गस क
लैम्प जल रहा था। उस गैस के नील प्रकाश मे वह युवती जगतप्रकाश को
सुन्दर दिखी। अनुराधा न बैलगाडी से उतरते हुए यमुना से कहा, "ले, आ
गया मेरा जगत। जल्दी से शबत बना ला।" और फिर वह जगतप्रका
की ओर मुडी, यही है यमुना ' देखा तून इसे!'

यमुना एकटक जगतप्रकाश को देख रही थी। उसन दूर से ही जगत
प्रकाश को हाथ जोड दिए बिना कुछ बोले हुए, फिर वह अनुराधा की आज्ञा
पालन करन के लिए तेजी के साथ घर के अन्दर चली गई।

जगतप्रकाश के मकान के सामन खुला हुआ सहन था, सुमेर ने एक खा
वहाँ बिछा दी थी। फिर वह जगतप्रकाश का असबाब उठाकर अन्द
चला गया था। जगतप्रकाश खाट पर बठ गया, उसने अनुराधा स कहा

हुत ज्यादा गरमी पडने लग गई है। पहले नहा लूं, फिर शरबत पिऊँगा।"
कपड़े उतारने लगा।

यमुना शरबत बनाकर ले आई थी। उसने दबी जबान में कहा, "नहाने के
ए पानी कुएँ की जगत पर रखा हुआ है, लेकिन पहले शरबत पीकर आप
ता लीजिए।"

यमुना की बात सुनकर जगतप्रकाश चौंक उठा। यह यमुना कौन है?
के पहले तो उसने इस यमुना को कभी देखा नहीं था, तो फिर इस यमुना
उसके प्रति इतनी आत्मीयता कैसे उपज आई? उसने इस बार ध्यान से
[illegible] को देखा जो शरबत का लोटा लिए खड़ी थी। अपने ऊपर जगतप्रकाश
दृष्टि पड़ते ही यमुना सिमट-सी गई और उसकी आँखें जमीन पर गड़
, लेकिन उसकी गहरी काली आँखों में कुछ चमक-सी है, जगतप्रकाश
लगा। इस चमक का स्रोत कहाँ है? यह चमक कैसी है? जगतप्रकाश
न ही-मन सोच रहा था और यमुना चुपचाप खड़ी थी, एक मूर्ति की
ति। अब उसने यमुना के रूप पर ध्यान दिया। कुछ [illegible] हुआ-सा
हरा रंग, जिसे उसने प्रथम बार गैस के तीव्र प्रकाश में गोरा समझा था,
किन भरा हुआ गोल मुख जो निश्चय ही सुन्दर कहा जा सकता था। एक
रलता, एक मीठापन—कहीं किसी सबल व्यक्तित्व का तीखापन नहीं।
स यमुना को देखने में एक प्रकार का सुख मिल रहा था। तभी उसे अपनी
ड़ी बहन की तीखी आवाज सुनाई दी, "शरबत क्या नहीं पी लेते? लड़की
ब [illegible] खड़ी है! ठीक तो कह रही है, पहले शरबत पीकर सुस्ता लो, फिर
हाना। इसमें सोचने की क्या बात है?"

[illegible]तप्रकाश ने शरबत का लोटा ले लिया, और उसने देखा कि यमुना
[illegible] मुस्करा गया है। शरबत पीकर उसने लोटा जमीन पर रख दिया, फिर
ह स्नान करने चला गया।

[illegible] ही स्नान करके जगतप्रकाश आया, अनुराधा ने उससे कहा, "अब
ाना खा लो, गरम-गरम। तुम्हारी चारपाई छत पर लगा दी है।"

जगतप्रकाश ने आश्चर्य से अपनी बहन को देखा, "तुम तो मेरे साथ ही
आई हो, खाना कैसे इतनी जल्दी बन गया?

अनुराधा मुस्कराई, 'आजकल मेरी जगह यमुना [illegible] रही है। पर [illegible]

काम-काज मे वडा अच्छा खाना बनाती है। इतनी सुन्दर और सुघर जिसके घर म आ जाए उसके तो भाग खुल गए।"

ऐसी बात नही कि जगतप्रकाश ने अनुराधा के इशारे को न समझा हो, अनुराधा की हरेक बात का, उसके हरेक काम को वह अच्छी तरह समझता था। उसने कहा लेकिन पराई लडकी से इतना काम-काज न कराना चाहिए। अच्छा, खाना खा ही लू वडी भूख लगी है। हाँ दीदी, क्या खाने के लिए चौके मे चलना पडेगा?'

'यह तुम्हारा किरिस्तानीपन इस घर म तो नही चलेगा।" अनुराधा ने कडे स्वर म कहा 'खाना तो चौके म ही खाना पडेगा।"

लेकिन अनुराधा के आश्चय का ठिकाना नही रहा जब उसने देखा कि रसोईघर के सामने आगन म एक छोटी-सी मेज पर परोसी हुई थाली रखी हुई है और उस मेज के आगे एक कुरसी रखी हुई है।

जगतप्रकाश हँस पडा लो दीदी! तुम भी जमाने के साथ आगे बढ रही हो। मेज-कुरसी पर खाना तो इस घर म यह भी सुविधा हो गई है। और जगतप्रकाश कुरसी पर बैठकर खाना खाने लगा।

यमुना खाना बनाती जाती थी और परोसती जाती थी, अनुराधा आगन मे पडी हुई चारपाई पर बैठ गई थी और जगतप्रकाश जस युगो के बाद अपनी रुचि का भोजन कर रहा था।

अनुराधा ने बडे प्रयत्न से अपने क्रोध को दबाया लेकिन यमुना जब रोटी परोसने आई तब उससे न रहा गया, उसने कहा, 'यहाँ चौके के बाहर मेज-कुरसी लगाने के पहले मुझसे पूछ तो लिया होता, कुछ धरम-करम का भी ध्यान रखना चाहिए।'

जगतप्रकाश प्रसन्न हो गया यमुना का उत्तर सुनकर 'भाभी' क्या धरम-करम इस सडी गरमी म चौके के अन्दर बैठकर खाने म हो गया है? आँगन म एक जगह लीप देने से पूरे आगन की गन्दगी तो दूर नहीं हो जाती नहा तो यहाँ आँगन म जमीन पर चौका लगाकर खाना परोस दिया होता। मेज-कुरसी अच्छी तरह गीले कपडे से पोछ दी है।"

इसके पहले कि अनुराधा कुछ कहती, जगतप्रकाश बोल उठा, इतनी समझदार हो, यह मैं सोच ही नहीं सकता था। तुमने ठीक वही कि

मे मैं पसन्द करता, जैसे तुमने मेरे दिल मे घुसकर अन्दर की वात निकाल ली।"

तभी जगतप्रकाश ने देखा कि यमुना के मुख पर एक हलकी मुसकान आई, और उसी समय वह तेज़ी से रसोई के अन्दर भाग गई। थोडी देर बाद उसकी आवाज रसोई के अन्दर से आई, 'भाभी! रोटी ले जाओ आकर।"

अनुराधा उठ खडी हुई, "लजा गई है बेचारी।" अब अनुराधा खाना परोसने लगी।

सुबह पाच बजे ही जगतप्रकाश की आख खुल गई, सूर्य का प्रकाश पूरब की मुडेर से कुछ हटकर लगे हुए नीम के पेड की पत्तियो मे छनने लगा था। बिस्तर से उठकर वह खडा हो गया, फिर उसने अपने चारो ओर देखा। अजीब तरह से उजडा हुआ वातावरण, एक सूनापन, एक उदासी! आस-पास टूटे हुए कच्चे मकान, जिन पर फूस के या खपडे के छप्पर पडे थे। इन मकानो के बीच-बीच कुछ फासले पर एकाध कच्चा-पक्का मकान दिख जाता था। दक्षिण की ओर जगतप्रकाश का मकान खुलता था—उसके सामने एक ऊबड-खाबड कच्चा रास्ता और उसके बाद दूर तक नगी धरती। यह धरती दो-तीन घण्टो बाद जलनी शुरू होगी और फिर दिन भर जलती रहेगी। वह कुछ अनमना-सा यह देख रहा था तभी उसने अपने पीछे कुछ आहट-सी सुनी। मुडकर उसने देखा, यमुना उसका बिस्तर लपेट चुकी थी और चारपाई खडी कर रही थी। जगतप्रकाश ने कहा, "मैं अपना बिस्तर खुद नीचे ले जाऊँगा, तुम क्या कर रही हो यह सब?"

"इस दफा मैं आपके दिल मे घुसकर अन्दर की वात नही निकाल पाई।" और बिस्तर उठाकर वह जल्दी-जल्दी नीचे चली गई।

जगतप्रकाश को अब नीचे उतरना पडा। आँगन मे कुएँ के पास बैठी हुई अनुराधा बरतन मल रही थी और रसोई के अन्दर यमुना चूल्हा जला रही थी। जगतप्रकाश के परो की आहट पाकर यमुना बाहर निकल आई, "क्या चाय पीजियेगा पहले?"

"तुम्हे कैसे मालूम कि मैं सोकर उठने ही पहले चाय पीता हूँ? यहाँ तो यह क़ायदा नही है।"

"इस बार फिर आपके दिल म घुसकर मैंन अन्दर की बात। ली।" इस बार यमुना की हँसी मे जगतप्रकाश को एक तरह क मौ की झलक मिली। "पानी उबल गया है, चाय मैंन कल ही मगा मेरे पिताजी लखनऊ म एक विलायती कम्पनी मे बडे बाबू हैं। उनके मेहमान सुबह पहले-पहल चाय पीते हैं। आप सहन मे बैठिय चल चाय बनाकर लाती हूँ।"

जगतप्रकाश ने यमुना की बात का कोई उत्तर न दिया, वह अपन के बाहर वाले सहन मे चला गया। पश्चिम की ओर एक बहुत बडा था जिसमे एक पेड आम का लगा था और एक पेड महुए का लगा था। सहन के अन्त मे चार-पाच कच्ची दालाने थी जिनम दो मे गाएँ और बँधते थे, एक मे हल, बलगाडी तथा खेती का अन्य सामान रखा था एक मे सुमेर रहता था। एक मे भूसा भरा था। एक कोने म एक था और सुमेर उस कुएँ स पानी खीच रहा था। गाय बैल कुएँ के वाले आम के पड से बँधे थे। घर से निकल्ते ही महुए का पेड पडता और उस महुए के पड के नीचे दा चारपाइया पडी थी। जगतप्रका चारपाई पर बैठकर मवशियो और सुमेर को देख रहा था।

सुमेर ने मवेशियो के सामने चारा डाल दिया, फिर वह पास आकर जमीन पर बैठ गया, "कहो भया, रात नीद तो अच्छी आई। अब की दफा बहुत दिनन के बाद आए हो।"

'हा, पढाई लिखाई म फुरसत ही नही। गाव की तो शक्ल ही गई है। क्या हाल है यहा के ?"

"हाल क्या बतलाएँ भइया, गाव तो ऐस समझो उजडता ही जा है, लगान बेतहासा बढाय दीन्हिन है जमीदार साहब और खुद बस सहर मा जायके। उनकेर कारिंदा ऊधम जाने हैं बेदखली कुर्की। अँगनू साह जब से काग्रेस के नता बने है तब से भले आदमिया का चलना फिरना बन्द समझो। कुरव जवार के बीस-पचीस गुण्डा उनके माथ है ल के बल पर चन्दा वसूल कर रह हैं और सब लोग मिल के खाय जात हैं फिर ऊपर म सूद बियाज का धन्धा उनके बाप का, कारी-जुलाहा सब प सान। और अँगनू साह जमीदार बिरजू मिसिर से साठ-गाठ कर लीन्हिन है

े-परदे दाम दैं के सूत कतवावत है, बेतहासा मुनाफा उधरौ। उनके कहे न चले तो चरखा-करघा से हाथ धोवैं का परे।"

जगतप्रकाश थोडी देर तक सोचता रहा, "और पुलिस इस जुल्म को कती नही ?"

एक करुण मुसकराहट सुमेर के भद्दे और दुबले चेहरे पर आई, "अरे इया, पुलिस तो उसके साथ है जिसके पास रुपया है। सारा गाव उजड ा है। जुलाहा-कारी भाग भाग के दूसरी जगह बस रहे है, लेकिन वहा झख मार के फिर यहाँ लौट आवत है। गरीब के लिए भगवानौ आखे द कर लीन्हिन है।"

अनायास ही जगतप्रकाश बुदबुदा उठा, "जमीदार, महाजन, गुण्डे, लिस, पटवारी, कानूनगो, सरकारी अफसर।"

सुमेर की समझ मे नही आया कि जगतप्रकाश क्या कह रहा है, "क्या हा भइया, ? समझ म नही आया।"

और जैसे जगतप्रकाश की खोई हुई चेतना लौट आई, "कुछ नही मेर, तुम नही समझोगे यह सब, और अगर समझ भी गए तो तुम कुछ कर ही सकोगे।"

इसी समय यमुना चाय का प्याला लिए हुए घर के अन्दर से आई, 'एक चम्मच चीनी डाली है, और चाहिए तो कह दीजिए। चाय पीकर हा लीजिए, म कलेवा बनाने जा रही हूँ।"

जगतप्रकाश ने चाय का प्याला यमुना के हाथ से ले लिया, और उसे लगा कि उसके अन्दर वाला धुधलापन अनायास ही फट गया है। चाय पीते हुए उसने यमुना से कहा, "क्या बना रही हो तुम कलेवा के लिए ? अपने हास्टल म तो मैं पावरोटी, मक्खन और अण्डे का नाश्ता करता था।"

"हाय अम्मा! आप अण्डा खाते है। भाभी जानती हैं यह ?"

"अभी तो नही जानती, लेकिन जान ही जाएँगी। मैं अपना कोई ऐब छिपाता नही हू उनसे, उनस क्या, किसी से।"

"तो आप भी अण्डा खाना ऐब समझते हैं ?" यमुना के मुख पर एक हल्की-सी मुसकान आ गई।

शब्दो की खीचतान मे जगतप्रकाश को हमेशा एक तरह की चुलबुलाहट

होती रही थी, लेकिन इस बार वह झुंझलाया नही, उसने भी ु
कहा, "मैं अगर उसे ऐब समझता तो उसे छिपाता। लेकिन दीदी इस ५
बनी है, तुम भी शायद उसे ऐब समझो, इसलिए मैंने इसे एब कह।
था।" फिर कुछ रुककर पूछा, "क्या तुम अण्डा खाना बुरा समझती हो
"अभी तक तो समझती थी, क्योकि मेरे बाबूजी अण्डा नही खाते।
पन से ही मुझ पर यह प्रभाव डाला गया है कि अण्डा खाना बुरा है।
अब नही समझूगी। पडोस मे जमील की फूफी रहती हैं, उनके यहा
पली ह। अगर कहिए तो उनके यहा से अण्डा मँगवा लू, आप बतला
येगा किस तरह बनाया जाता है।"

"नही-नही, मैंने वैसे ही हँसी की थी। दीदी को न बतलाना कि
अण्डा खाता हूँ, नही तो उन्हे दुख होगा। जो कुछ तबीयत हो बना लो

स्नानादि से निवृत्त होकर जगतप्रकाश ने वही बाहर नाश्ता किया,
वह गाव का एक चक्कर लगाने के लिए निकल पडा। सुमेर ने ठीक
था कि गाव उजडता जा रहा है। उसे लग रहा था जसे वह खडहरो
बीच म चल रहा हो। हर तरफ टूटे और उजडे हुए मकान नजर आते थे
मिटटी के ढूह-से दिखते थे। उसके जान-पहचान वाले न जाने कितने
गाव छोडकर चले गये थे, जहा पहले पचासो करघे काम करते रहे हो,
अब दस पन्द्रह करघे ही चलते हुए दिखलाई पडे उसे। वह लोगो से
था, उनकी कुशल-क्षेम पूछता था, लेकिन उसे लगा कि लोगो मे एक
की विवशता से लदी निराशा भर गई है। वे अपने को नितान्त निरीह
निराश्रित अनुभव कर रहे है, उन्हे बात करने मे भी डर लग रहा था।
आत्मीयता जो उसे इन लोगो मे दिखती थी, जैसे वह मर-सी गइ हो।
अविश्वास एक शका, एक दुर्भावना। समस्त गाव आक्रान्त-सा दिख रहा था

सारे गाव का चक्कर लगाकर जब वह वापस लौटा तब वह
अधिक थक गया था, तन से उतना नही जितना मन से।

पछवा हवा म अब एक तरह की तपन आ गई थी, यद्यपि उसकी घड
दस भी नहा बजे थे। पर समेटकर वह चारपाई पर बैठ गया और
ला। तभी मास्टर रामसहाय की आवाज़ उसे सुनाई पडी "अरे ज
बेटा! सुना था कि तुम कल रात आए हो, तो सोचा कि तुमसे मिल आ

ही बहुत दिनो बाद इधर का चक्कर लगा है।"

मास्टर रामलखन पास मे पडे दूसरे खटोले पर बैठ गए। एक फटी-सी धोती और उसके ऊपर गबरून की मलखोरा बण्डीनुमा कमीज या जनुमा बण्डी। नगे पैर और नगे सिर। मास्टर रामलखन की उम्र भग चालीस वर्ष थी, यद्यपि वह दिखते पचास वर्ष के थे, खिचडी बाल खिचडी मूछ। उन्होंने बैठते ही बण्डी की जेब से खैनी का बटुवा निकाला र वे खैनी बनाने में व्यस्त हो गए। जगतप्रकाश ने बात आरम्भ की, हिए मास्टर साहब, स्कूल के क्या हाल है ?"

"हाल क्या बतलाएँ बेटा, सब भगवान् की माया है। स्कूल चलता जा है गोकि विद्यार्थियो की सख्या इस साल घटकर चालीस रह गई है। डिप्टी इसपेक्टर कह रहे थे कि अगर इसी रफ्तार से विद्यार्थियो की ख्या दो-तीन साल और घटती रही तो सरकार को स्कूल बद कर देना गा।"

'तो फिर विद्यार्थियो की सख्या बढाइए," जगतप्रकाश ने कहा।

"बढाएँ कहा से ? इस गाव की आबादी घटती जा रही है। जब आबादी टेगी, तब विद्यार्थियो की सख्या भी घटेगी।'

"तो इस गाव की आबादी बढाइए।" जगतप्रकाश ने झुझलाकर कहा। गतप्रकाश के झुझलाने का कारण यह था कि वह रामलखन पाण्डे को झूठा और पाखण्डी आदमी समझता था। यह रामलखन पाण्डे जमींदार विरजू प्रसिर के पुरोहित का लडका था और सर्वथा अयोग्य होते हुए भी जमीदार के प्रभाव के कारण महोना के मिडिल स्कूल मे अध्यापक बन गया था। बडे गो की खुशामद करना इसका पेशा था और पिछले साल ही वह स्कूल का हेडमास्टर बन गया था। यह आदमी हद दर्जे का कजूस और अर्थलोलुप भी था।

"हा जगत बेटा, इस गाव की आबादी तो बढनी ही चाहिए। आज शाम का अँगनू साह ने एक सभा बुलाई है। तुम्हे मालूम है कि अँगनू साह काग्रेस के नेता बन गए है। तो आज वाली सभा मे तुम भी आना। बडी महत्त्वपूर्ण बातें होंगी। उस सभा के लिए चन्दा इकट्ठा करना है। एक रुपया तुम्हारा भी लगाया है मैंने।"

कुछ वितृष्णा के साथ एक रुपया रामलखन पाण्डे को देते हुए ज
प्रकाश ने कहा 'सभा में तो मैं नहीं आऊँगा, यह रुपया आप लेते जाइए।'
रुपया अपनी टेंट म खासते हुए रामलखन ने कहा, 'नहीं जाते म
शाम को छ वजे सभा है। तुम तयार रहना में खुद आकर तुम्हें
साथ ले चलूँगा। हमारे भाग से तुम आ गए हो।' रामलखन पाण्डे एका
ठिठक गए अनुराधा को देखकर जो खेत की तरफ से लौट रही थी।
अनुराधा ने तीखे स्वर में पूछा क्या पाडेजी कितना वसूल किया
भइया को ठग कर? निकालो तो।

'मुझे जल्दी है फिर बात करूँगा।' रामलखन पाण्डे ने च
के लिए अपना कदम बढाया। लेकिन अनुराधा की कड़क भरी आवाज़
रामलखन का पर वहीं रुक गया खबरदार जो कदम बढाया, पर तो
रख दूँगी। क्या भइया इसने तुमसे कितना वसूल किया है? बोलो।"

जगतप्रकाश ने कमज़ोर आवाज़ में कहा शायद आज शाम को कां
की कोई सभा हो रही है। उसके चन्दे के लिए एक रुपया लिया है मास्टर
साहब ने।'

निकालो वह रुपिया। अनुराधा ने आदेश दिया।

अपनी टट से रुपया निकालकर रामलखन पाण्डे ने चुपचाप अनुराधा
के हाथ म दे दिया। अनुराधा ने रुपया जगतप्रकाश को वापस करते हुए
रामलखन से कहा, कांग्रेस की साल भर की मेम्बरी का चन्दा चार आने
होता है। अँगनू साह पन्द्रह दिन हुए मुझसे चवन्नी ले गए है और रसीद
भी दे गए है। जगत भइया की मेम्बरी की यह चवन्नी, इसकी रसीद
शाम तक भिजवा देना। अपने आँचल से गाँठ खोलकर एक चवन्नी
अनुराधा ने रामलखन के हाथ में रख दी।

रामलखन के जाने के बाद अनुराधा ने जगतप्रकाश से कहा, 'इन
लोगों की वजह से गाँव की यह दशा हो गई है। अच्छा, अब धूप चढ़ रही
है अपने कमरे में चलो। मैंने और यमुना ने मिलकर तुम्हारा कमरा ठीक
कर लिया है वहीं पढ़ो लिखो। बाहर निकलने की कोई ज़रूरत नहीं है।'

अनुराधा के साथ जगतप्रकाश अपने कमरे में पहुँचा। नया बना हुआ ता
ल का पक्का कमरा, सीमेण्ट का फर्श सफ़ेद कलई से पुती हुई दीवार। कमरे

का मुख पश्चिम की ओर था और दोपहर की धूप को रोकने के लिए कमरे के सामने आठ फुट चौडा बरामदा भी था। जगतप्रकाश ने देखा कि यमुना सुमेर के साथ उस बरामदे मे टाट के परदे टाग रही है। जगतप्रकाश ने पहुँचते ही यमुना से कहा, "बस हो चुका। परदा टाँगने में मैं सुमेर की सहायता कर दूगा।"

"बस एक ही परदा बाकी रह गया है। अभी हुआ जाता है। आप थक गए हैं, कपडे बदलकर कमरे म आराम कीजिए।" यमुना बोली और अपना काम करती रही।

अनुराधा ने भावनाहीन स्वर म यमुना का समर्थन किया, "ठीक कहती है, कौन ऐसा बडा काम है!" उसने यमुना स पूछा, "रसोई का सब सामान ठीक है न?"

वहीं सीढी से यमुना ने कहा, "हा, दाल चढा दी है, चावल बटलोई में रखा है। लेकिन तरकारी कोई घर म नही है, बाज़ार तो कल लगेगा।"

"जानती हूँ, इसकी चिन्ता न करो। मै अभी खेत से लौकी और कुम्हडा तुडवा लाई हूँ, दशरथ लाता होगा। तुम सब कुछ करके नहा धो लेना, फिर रसोई मे आ जाना, मैं वहा जा रही हू।"

जगतप्रकाश अपने कमरे मे चला गया। उसने देखा कि उसका ट्रक खुला हुआ है और मेज़ पर उसकी किताबे और कापिया सजी हुई रखी है। मेज के सामने एक कुरसी पडी हुई है। उत्तर की तरफ दीवार से लगी उसकी चारपाई पडी है, जिस पर उसका बिस्तर बिछा हुआ है। उसके मैले कपडे फ़र्श पर एक गठरी म बँधे एक तरफ रखे है। दीवारो पर देवी-देवताओ के चित्र लगे हुए है।

जगतप्रकाश आश्चर्य चकित-सा अपने कमरे को देखता रहा। यह कमरा उसके होस्टल के कमरे से अधिक बडा, अधिक साफ और अधिक सुविधाजनक था। लेकिन उसका ट्रक किसने खोला? अनुराधा तो सुबह के समय खेत की तरफ निकल गई थी, फिर अनुराधा को कमरा सजाने की आदत भी नही थी। तभी यमुना कमरे के अन्दर आई, "परदे टाग दिए है, दोपहर के समय उन्हे गिरा लीजिएगा।" जगतप्रकाश के मैले कपडे लेकर वह कमरे के बाहर निकलने लगी। जगतप्रकाश ने उसे रोका, "मेरा

ट्रंक किसने खोला ?"

"भाभी ने कहा था कि आपके ट्रंक से आपकी किताब और निकाल लूँ। उन्होंने मुझे आपके ट्रंक की चाभी दे दी थी।" यमुना ने लड़खड़ाते स्वर में कहा। उसे आभास हो गया था कि यह गलत बात है।

जगतप्रकाश कुछ देर तक यमुना को देखता रहा, "तुम कहाँ तक पढ़ी हो ?"

"इस साल मैंने इंटरमीडिएट की परीक्षा दी है। क्या, क्या मुझसे कुछ अनुचित हो गया ?"

"तुम शिक्षित और समझदार हो। तुमसे यह आशा की जा सकती है कि तुम उचित और अनुचित के भेद को समझो।"

यमुना की आँखें झुक गई, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। जगतप्रकाश ने यह नहीं देखा कि यमुना की आँखें तरल हो गई हैं। उसने कुछ रुककर फिर कहा "हरेक आदमी के जीवन में कुछ गोपनीय भाग हुआ करता है जो ताले-कुंजी के अन्दर रखा जाता है। उस गोपनीय भाग का प्रकट होना किसी को अच्छा नहीं लगता।"

"मुझसे गल्ती हो गई, मुझे माफ कीजिए। यमुना ने करुण स्वर में कहा, और उसकी आँखों से दो आँसू टपक पड़े। कपड़ों की गठरी लिये वह चुपचाप कमरे के बाहर चली गई।

इलाहाबाद में बने उसके स्टील ट्रंक के ढक्कन में एक बन्द खाना था जिसमें उसने कुलसुम के दो पत्रों को बन्द कर रखा था। वह खाना वैसा का वैसा बन्द था। जगतप्रकाश ने अपना ट्रंक बन्द किया, कुरता उतारकर उसने खूँटी पर टाँग दिया और वह अपनी चारपाई पर लेट गया। उसे अपने अन्दर परिताप हुआ यमुना से बड़ी बात कह देने पर। यमुना ने जो कुछ किया वह अनुराधा के कहने से किया था। उसने उचित अनुचित पर सोचा भी न था, शायद उसके जीवन में कुछ गोपनीय अभी तक न था जो वह सोचती। लेकिन यमुना को उसकी इतनी सेवा की आवश्यकता क्या थी ? फिर उसके अन्दर वाले परिताप का स्थान एक झुंझलाहट ने ले लिया—यह सब-कुछ ढोंग है, यह सब-कुछ बनावट है, यह सब-कुछ षड्यन्त्र

ी बहन का, उसकी बहन के ननदोई का और यमुना का। उसकी सेवा
। की इस लडकी म इतनी आतुरता क्यो है ? यह लडकी फँसाना चाहती
स विवाह के ब धन म।

जगतप्रकाश की विचारधारा एकाएक पलट गई, "लेकिन यह लडकी
ना ! यह मुझे क्या फँसाना चाहती है ? इसन मुझे पहले कभी देखा
, यह मेरे सम्बन्ध म कुछ जानती नही, इसके अन्दर मेरे प्रति किसी
ह का लगाव नही। इसकी अपनी कोई निजी इच्छा भी ता नही है, यह
अपन चाचा और अपनी भाभी की इच्छा से यहा आई है। यह जो कुछ
रही है उसम किसी तरह का सकल्प नही हो सकता, किसी प्रकार की
ई याजना नही हो सकती। स्वाभाविक ढग से हरेक काम यह करती है, जैसे
का हरेक काम इसकी आन्तरिक प्रेरणा का परिणाम हो। यह सेवा करती
क्याकि सेवा करने की इसम प्रवृत्ति है। इसी क साथ उसके अन्दर
ली चुलबुलाहट का स्थान फिर उसके अन्दर वाले परिताप न ले लिया।
उठकर बैठ गया, जब वह अपन अन्दर एक तरह की बेचैनी अनुभव कर
रा था। थोडी देर तक वह चुपचाप बैठ रहा, फिर वह कमरे के बाहर
कला।

धीमी धीमी लू चलनी आरम्भ हो गई थी, आगन म एकदम सन्नाटा
या हुआ था। रसोईघर के दरवाजे पर पहुँचकर उसने कहा, "दीदी, प्यास
गी है, पानी द दो।"

यमुना रसोईघर म निकली, "अरे, मुझसे बडी गल्ती हो गई। आपके
मरे क कोने म घडा भरा रखा है—गिलास और लोटा भी वहाँ है, मैं
ापको बतलाना ही भूल गई। खाना बन गया है, आप यहा बैठिए, मैं पानी
ाए देती हूँ।'

जगतप्रकाश को अब अनुभव हो रहा था कि उसे भूख लगी है, प्यास
ही है। रसोईघर के अन्दर वाले चौके म बैठते हुए उसने कहा, "अच्छी
ात है, खाना ही खा लू।"

खाना खाते समय वह यमुना की मुख-मुद्रा को गौर से देखता रहा, कही
विषाद की कोई छाया नही। वह अपनी स्वाभाविक ममता के साथ जगतप्रकाश
को खाना परोस रही थी, आग्रह के साथ उसे खाना खिला रही थी और

अनुराधा के साथ जगतप्रकाश की बातचीत म योग दे रही थी।
जगतप्रकाश की डाट का बुरा नही माना। जगतप्रकाश के अन्दर वाल
धीरे धीरे दूर हो गई। हल्के मन खाना खाकर वह अपने कमरे म
गया।

शाम को पाच बजे जगतप्रकाश अपने कमरे के बाहर निकला। धू
समय भी काफी तेज थी और लू चल रही थी। उसे उस समय चाय
आवश्यकता थी। शाम की चाय का वह आदी हो गया था। उस समय
राधा अपने कमरे म सो रही थी और यमुना आगन म बठी बतन माज
थी। जगतप्रकाश को देखते ही उसने कहा, 'आप सोकर उठ गए। मैं
शबत लाती हूँ।'

"नही शबत मुझे नही चाहिए लेकिन इस धूप-लू म बतन क्या
रही हो?'

इसलिए कि कहारिन आज शाम को भी नही आएगी। सोचा
सब लोगो के जगने से पहले ही बतन माज लू।'

कुछ हिचकिचाते हुए जगतप्रकाश ने पूछा चूल्हे म आच होगी क्या
अभी जलाती हूँ चूल्हा बस आनन फानन जला जाता है। क्या नाश्ता
कीजिएगा?"

'नाश्ता नही करना है चाय पीनी है चाय के लिए पानी उबाल
होगा।"

'हाय अम्मा! इतनी गरमी म शाम के समय चाय। अच्छा कमरे
बैठिए चलकर, मैं अभी चाय बनाकर लाती हूँ।' अधमजे बतनो को छो
कर यमुना उठ खडी हुई। जगतप्रकाश अपने कमरे म लौट गया।

करीब आधे घण्टे बाद यमुना ने चाय के प्याले के साथ कमरे म प्रवे
किया। चाय का प्याला उसने जगतप्रकाश की मेज पर रख दिया, 'आपको
किस समय किस चीज की आवश्यकता होती है मुझे बतला दीजिए। ठी
उसी समय वह चीज आपके पास पहुँच जाएगी।'

जगतप्रकाश मुसकराया अच्छा, तो बठ जाओ।' उसने दूसरी कुर
की ओर सकेत किया। यमुना कुरसी पर न बठ फश पर ही बठ गई।
जानप्रकाश वाला, 'नहा-नहीं कुरसी पर बठो।"

"मैं ठीक जगह पर बैठी हूँ, आपके बराबर मुझसे न बैठा जाएगा। हा,
हेए।"

जगतप्रकाश कुछ देर चुप रहा, फिर उसने कहा, "सुबह मैं तुमसे कुछ
डी बाते कह गया था। तुम्हे मेरी बात पर बुरा लगा होगा, मुझे अफसोस
।"

यमुना बोली, "इसमे अफसोस की क्या बात है? मैंने गलत काम किया
ा, गल्ती पर डाट मिलनी ही चाहिए, नही तो गलती सुधरेगी कैसे!"

जगतप्रकाश बोला, "नहा, तुमने गल्ती नही की, तुमने तो वही किया
ो दीदी ने तुमसे करने को कहा था। मै जानता हूँ कि मेरी डाट पर तुम्हे
ुरा लगा होगा और इसमे मेरी गलती थी।"

यमुना बोली, "नही, आपकी कोई गलती नही थी। भाभी आपकी
ाडी बहन हैं, वह आप पर अपना अधिकार समझती है, लेकिन मुझे तो
पनी सीमा समझ लेना चाहिए था। मुझे सिर्फ अपनी निर्बुद्धता पर दुख
ुआ था।" एकाएक यमुना खिलखिलाकर हँस पडी। उसने उठते हुए कहा,
"आप मुझसे बडे है, आपका मुझ पर अधिकार है। आप मुझे जितना चाहे
डाट, मुझे आपकी डाट पर जरा भी बुरा न लगेगा। अच्छा, बतन धो लू
चलकर।" यमुना बिना जगतप्रकाश की बात सुनने की प्रतीक्षा किए चली
गई।

जून का पहला सप्ताह बीत रहा था और गरमी अब अपनी चरम सीमा
पर पहुँच रही थी। उस दिन जब जगतप्रकाश सुबह सोकर उठा, उसका मन
कुछ भारी था। एक ऊब-सी वह अनुभव कर रहा था उस सोए हुए और
खोए हुए गाव से। उसका मुह कुछ उतरा हुआ था, उसके अन्दर वाली
भावना उभरकर उसके मुख पर आ गई थी। यमुना ने उसे नाश्ता कराते
हुए पूछा, "आपकी तबीयत तो ठीक है कुछ उदास-से दिख रहे है आज?
चेहरा कितना उतर गया है!"

कुछ उदासी के स्वर म जगतप्रकाश बोला, 'इस गाव म आए करीब-
करीब एक महीना हो गया है, अब यहाँ जी नही लगता।" फिर जैसे
वह अपनी बात कहने को लालायित हो उठा हो, "यहा इस गाव म मैं पैदा
हुआ हूँ, यहाँ खेला-कूदा हूँ, पढा लिखा हूँ। एक तरह से मेरी जड इस गाँव

म है और आज इस गाव म रहन को मन नही करता। समझ मे नह
कि यह क्या ? मै सच कहता हूँ कि तुम्हारी वजह से इतन दिन। उस
मन यहा नही ऊबा, नही तो चार-छ दिन म ही मैं यहाँ से चला
सब-कुछ अनजाना-सा, पराया-सा लग रहा है यहाँ पर।"

यमुना मुसकराई, "आपकी दीदी तो यहाँ है, वह तो पराई नही है।"

अपनी वात कहकर जस जगतप्रकाश का मन हल्का हो गया हो,
दीदी पराई नही लगती, शायद सुमेर भी पराया नही लगता, और
यहा आन-जाने वाले लोग भी पराए नही लगते। मैं ही
लगता हूँ।" जगतप्रकाश हँस पडा, 'एक वात कहूँ, बुरा न मानना।
अपना-पराया मैं हूँ, इसके नज़दीक जानती हो कौन है यहाँ पर?
नज़दीक तुम हो, जिसे मैंने पहले कभी देखा नही था, जाना नही था।
अनदेखे और अनजाने लोग अपन वन जाया करते है, जवकि जाने
लोग पराए वन जाया करते है।'

यमुना का चेहरा लाल पड गया लाज से। कुछ सयत होकर
जगतप्रकाश की आखो म अपनी आख गडाते हुए कहा, "जिसे ज
लिया जाता है, वही आगे चलकर पराया बन जाया करता है।
अजीव-सी वात है, आपकी बात सुनकर मुझे आपसे डर लगना चाहिए।"

"मेरा तो ऐसा खयाल ह कि मेरी इस वात को सुनने के पहले से
मुझसे डरती हो। दीदी मुझसे बेतरह डरती है जवकि दीदी स सारा गा
डरता है। लेकिन मेरी समझ म नही आता कि मुझस यह डर क्या ?"

यमुना ने हँसते हुए कहा रामायण मे लिखा है—भय विनु होय
प्रीति। जैसे अपनी वात सुनकर ही यमुना को बिजली का एक धक्का
लगा हो। वह उठकर कमरे से भाग गई।

धूप अव चढने लगी थी। सोमवार का दिन था और उस दिन
का वाजार लगता था। जगतप्रकाश जव से गाव आया था, वह महीना के
किसी वाज़ार मे न गया था। उसन कपड पहने और वह घर क बाहर
निकला। अनुराधा बाहरी सहन मे मवेशियों के लिए चारा कटवा रही थी,
यमुना कुएँ से पानी खींच रही थी। जगतप्रकाश न अनुराधा से कहा, दादी
आज सोमवार का वाज़ार है न, इस वक्त तक लग गया होगा। वहा ज़रा

ने जा रहा हू, कुछ मँगाना है ?"
"घर म सब-कुछ तो है।" अनुराधा बोली, "घूमकर जल्दी चले आना, : न करना।"
यमुना उस समय तक कुएँ से हटकर उसके पास आ गई थी। जगत-ाश यमुना की ओर घूमा, "तुम्हे कुछ मँगाना है ?"
मुसकराते हुए उसने उत्तर दिया, "मागना और मँगवाना तो परायो का म होता है। है न ?"
"और अपना का क्या काम होता है ?" जगतप्रकाश ने पूछा।
"यह तो आप जानें, आप इतने बुद्धिमान है।" यमुना फिर कुएँ की ओर ल दी।
बाज़ार गाव के दूसरे सिरे पर लगता था। पचासा बलगाडिया खडी था ाज़ार के स्थल पर। कपडे की, बिसातखाने की, अनाज की, तरकारियो ी, मिठाइया की और अन्य आवश्यक चीज़ो की न जाने कितनी दूकान ग्गी थी एक पात म! अभी कुल आठ बजे थे, लेकिन बाज़ार मे पूरी चहल हल थी। जगतप्रकाश ने बाज़ार का एक चक्कर लगाया, दूकानो पर भीड ग्गी थी। आस-पास के छोटे छोटे पुरवा स गावो से और कस्बा से स्त्री-ुरुष आए थे उस बाज़ार म क्रय विक्रय करने। जगतप्रकाश मे पुरानी स्मृतियाँ जाग उठी। वही परिचित दृश्य, वही परिचित वातावरण। चिथडा मे लिपटे हुए किसान और अन्य ग्रामवासी, इस क्रय विक्रय के क्रम मे व्यस्त, चेहरा पर थकान और निराशा। इस समस्त चहल पहल मे उल्लास का कोई चिह्न न था। वह साच रहा था कि बचपन मे जब वह उस बाज़ार मे आता था तब उसके अन्दर एक प्रकार का हर्ष रहता था, कौतूहल रहता था, लेकिन आज वह सब क्यों नहा है ? उसे लगा कि यह बाज़ार नही बदला है, बदल गया है स्वय वह। यह समस्त आह्लाद और अवसाद, जिसे हम सब बाहर देखत हैं, वह अपन अन्दर बा है। तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "कहो बरखुरदार! खूब मिले!"
जगतप्रकाश चौंक उठा। मुडकर उसने देखा, सामने जमील काका खडे मुसकरा रह थे।
वही उदास और दार्शनिक निस्पृहता से भरा चेहरा, वही अधमुदी आख

बुधी-बुधी आख। जमील कहे जा रहा था, "यह न सोचा था कि तुमसे मिलना हो जाएगा, बेवकूफी थी मेरी। मुझे समय लेना चाहिए था कि गरमिया म ता कालेज-वालेज बन्द हो जाते हैं, तो तुम गाँव म ही मिलाग।"

जगनप्रकाश ने आत्मीयता के साथ जमील का हाथ पकड लिया, 'कब आए जमील काका ? मैं तो इस गाव की जिन्दगी से बुरी तरह ऊब गया था।'

"आया तो करीब चार दिन पहले था, लेकिन मसटा म फँसा रहा, इतनी फुरसत ही नही मिली कि तुम्हारे घर जाकर दीदी की खाज-खबर लेता।"

अकेले आए हो या काकी भी साथ म हैं ?'

"अरे उस बचारी को कहा लाता ? आने की जिद तो कर रही थी लेकिन बम्बई से यहा आने जाने क लिए पसे भी तो चाहिए, फिर यहाँ मक दमेबाजी, फौजदारी यानी हैवानियत का माहाल। घर म सिवा फूफीजान के काई है नही और फूफीजान ममीबतजदा।

'आखिर बात क्या है ? कैसी मुकदमबाजी कैसी मुसीबत ?"

जमील न जगतप्रकाश का हाथ पकडकर चलते हुए कहा, 'चलो तुम्हारे घर चलता हूँ दीदी स भी मिल लूगा, और रास्ते म बतलाता चलूँ सब-कुछ।

रास्ता चलते-चलते जमील कह रहा था "तुम अँगनू साह को तो जानत ही हागे कांग्रेस का बहुत बडा नेता बन गया है वह। जब फूफा जान की मौत हुई तो इसन बडी हमदर्दी दिखाई फूफीजान के साथ। फूफा का जो कच्चा पक्का मकान है उसे अँगनू साह न कांग्रेस के दफ्तर के लिए किराए पर ले लिया, पाच रुपय महीने पर। फूफी मेरे मकान म आ गइ। फूफी पढी लिखी तो है नही ना उनस अगूठा का निशान लगवाकर हर महीने पाच रुपय की रसीद लेता रहा। अब वह कहता है कि फूफीजान ने अपना मकान कांग्रेस को दे दिया है, जिन्दगी भर उन्हे तीन रुपये महीने मिलते रहे। इधर फूफी का अपनी लडकी का निकाह पढवाना है वह अपना मकान बचना चाहती है। अँगनू साह मकान खाली नही करता, और उस मकान म कांग्रेस का दफ्तर हाते हुए काई उस मकान को खरीदने को

यार नहीं। कौन झगड़ा मोल ले उससे ?"

"तो तुम अँगनू साहू से मिले थे ?"

'हाँ बरखुरदार, लेकिन अँगनू देश भक्ति की दुहाई देता है। नकद दो हज़ार रुपया मिल रहा है उस मकान का अगर वह खाली मिले, लेकिन अँगनू कहता है कि वह कांग्रेस का दफ्तर कहाँ ले जाए ? इस बात पर तैयार है कि अगर फूफी उसे मकान बेच दे तो वह हज़ार रुपये में मकान ले लेगा।"

"यह तो सरासर लूट है।" जगतप्रकाश बोला।

जमील मुसकराया, "यह लूट नहीं है, बरखुरदार, यह देशभक्ती है। अँगनू कांग्रेस के नाम मकान खरीद रहा है एक हज़ार रुपया अपने पास से देकर। यह अँगनू का त्याग नहीं तो और क्या है ? वह यह कहता है कि फूफीजान भी त्याग करें—यानी, एक हज़ार रुपये में वह मकान बेच दें।"

"फिर क्या होगा ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"खुदा जाने क्या होगा ! मैंने मुकदमा तो दायर करवा दिया है और फूफी मुकदमा जीत भी जाएँगी, लेकिन यह अँगनू सत्याग्रह करने और धरना देने की धमकी दे रहा है। फिर मुकदमेबाज़ी में वक्त भी बहुत लगेगा, दीवानी का मामला है, साला लग जाएँगे। सिवाय मेरे फूफीजान का यहाँ पर कोई है भी तो नहीं, और मैं यहाँ दो-चार रोज़ से ज्यादा रुक नहीं सकता। अजीब मुसीबत है।" कुछ रुककर जमील ने कहा, "तुम अगर किसी तरह अँगनू को राज़ी कर लो तो मुझ पर बड़ा एहसान होगा। अभी वह अपने दफ्तर में ही होगा।"

"चलो बात करने में कोई हर्ज नहीं।" जगतप्रकाश जमील के साथ कांग्रेस के दफ्तर में पहुँचा।

अँगनू मकान के दरवाज़े पर बैठा था। उसके साथ तीन-चार आदमी और थे जो कांग्रेस कार्यकर्ता दिखते थे, क्योंकि वे सिर से पैर तक खद्दर के कपड़े पहने थे। जगतप्रकाश को देखते ही अँगनू उठ खड़ा हुआ, "आओ भइया ! इतने दिनों में आए हो, लेकिन आज दर्शन मिले। मैं भी इधर बहुत व्यस्त रहा। अब इन जमील साहब ने मुकदमेबाज़ी की हालत खड़ी कर दी है। अरे, देश की समस्या कांग्रेस के पास इनकी फूफी का लेकिन उसे यह खाली करना चाहते हैं।"

जगतप्रकाश को अँगनू के चहरे पर कुछ एसा दिखा जो कुरूप था। कुरूपता कहा है जगतप्रकाश यह तो स्पष्ट नही कह सकता था। अँगनू का चेहरा भद्दा नही था उसका व्यवहार मीठा और सभ्यतापूर्ण था। साफ धुली हुई खादी के कपडे पहने था वह मुख पर मुसकान, बातचीत म पटुता और विनम्रता। फिर भी अँगनू जगतप्रकाश को भयानक रूप से कुरूप दिख रहा था। उसने अपने अन्दर वाली वितृष्णा को दबाते हुए कहा, 'मास्टर रामलखन पाण्डे न बतलाया था कि आप इन दिनों काग्रेस के काम म व्यस्त है।'

'क्या बताएँ जगत भइया सेवाव्रत उठा लिया है हमने अपने ऊपर घरवाले नाराज बप्पा न तो बोलचाल बन्द कर रखी है हमसे, तो घर जाना ही छोड दिया है हमने, यहा काग्रेस के दफ्तर म पडे रहते है। यह जमील मिया इस काग्रेस क दफ्तर को बन्द कराने आए है बम्बई स।

जमील अभियोगी नही है, अभियुक्त है। जगतप्रकाश को अगनू के रूप पर आश्चर्य हुआ। उसने कहा जमील काका की फूफी को लडकी की शादी करनी है और उनक पास सिवाय इस मकान के और कुछ भी नही। इनकी फूफी को रुपया की जरूरत है। वह अगर अपना मकान बचना चाहती हैं तो इसम जमील का क्या दोष ?

अँगनू ने मुसकराते हुए कहा, अरे म जमील मिया को कोई दोष थोडे ही दे रहा हूँ। बस इनकी फूफी न तो अपना मकान काग्रेस को दे दिया था, लेकिन यह लडकी क हाथ पीले करने का मामला है तो हमन कहा कि वह अपना मकान हजार रुपए म काग्रेस क हाथ बच द। देखो भइया, काग्रेस के पास तो कुल पाच सौ रुपया है बाकी माग जाचकर या अपने पास स लगा कर यह हजार रुपय की रकम पूरी कर देंगे। तुमसे छिपाना क्या है जगत भइया यह पाच सौ रुपया भी तो हमी ने दिया है काग्रेस को। बप्पा को अगर पता लग जाए तो वह हमारा मुह न देखगे लेकिन यह तो भारत माता का काम है तो यह सब जोखिम उठाने को हम तैयार हैं।

जगतप्रकाश न कहा, वह तो ठीक है लेकिन यह मकान तो दो हजार का है, तो भला दस इनकी फूफी हजार रुपये म कैसे बेच दें ?'

बीच म जमाल बाल उठा लडकी क निकाह म करीब पन्द्रह-सोलह

लग जाएँगे।"

"हम कहते हैं निकाह में इतना रुपया खर्च करने की जरूरत क्या है? एक बात और हम बतला दें, जब तक इन मकान में कांग्रेस कमेटी का दफ्तर है तब तक इसे कोई खरीदेगा नहीं। इन्होंने मुकदमा दायर किया है मकान खाली करवाने का, तो सैकड़ों रुपये लग जाएँगे इस मुकदमेबाजी में, इतना समझ लें यह। कांग्रेस के लिए तो वकील-पैरोकार सब मुफ्त, लेकिन इन्हें भरपूर खर्च करना पड़ेगा। फिर सालों लग जाएँगे इस मुकदमेबाजी में।"

जो कुछ अँगनू ने कहा था, वह जमील और जगतप्रकाश दोनों ही जानते थे। उस सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता था। जगतप्रकाश कुछ सोचकर बोला, "तो और कोई उपाय नहीं निकल सकता अँगनू साह? जमील काका बम्बई से दौड़े आए हैं, इनकी फूफी का काम अटका है।"

"हम तो हर तरह से सेवा करने को हाजिर हैं—ही! ही! जगत भइया, हमने तो सेवा-व्रत ही उठा रखा है। तो तुम ही कोई दूसरा उपाय निकालो। मकान तो देस-सेवा के काम में लग चुका है, सो वह तो खाली होगा नहीं। आखिर हमें भी तो कोई जगह चाहिए जहाँ बैठकर हम इस जालिम ब्रिटिश सरकार से लड़ सकें। हाँ, कांग्रेस कमेटी इसे जरूर खरीद सकती है, सो हजार रुपया हमने कह दिया है, वह हजार रुपया हम दे देंगे, हमने जबान दे दी है।"

एकाएक जमील बोल उठा, "अँगनू साह! न फूफी की बात रहे और न तुम्हारी जिद रहे।"

जगतप्रकाश बोल उठा, "पन्द्रह सौ रुपये में यह सौदा तय कर लो।"

अँगनू साह ने हिचकिचाते हुए पूछा, 'लेकिन पाँच सौ रुपया कहाँ से आएगा?"

"जहाँ से यह हजार रुपया आ रहा है—यानी चन्दा करके माँग-जाँच के। पचास रुपया मेरा चन्दा रहा।" जगतप्रकाश ने कहा।

"और बीस रुपये मेरा चन्दा!" जमील बोला।

कुछ सोचकर अँगनू साह ने कहा, "अच्छी बात है जगत भइया, तुम्हारी ही बात रही। तुम लोगों के चन्दे की जरूरत नहीं है, हम और जगह से चन्दा वसूल कर लेंगे।"

जमील ने राहत की साँस ली, 'तो दो-तीन दिन के अन्दर रजिस्ट्री हो जानी चाहिए, मुझे बम्बई लौटना है, अपना चन्दा याद में वसूल रहना। तुम पन्द्रह सौ क्या, बात कहने पन्द्रह हजार का इन्तजाम कर दूँ। महीना का आधा बाजार तो तुम्हारा है।"

"हमारा क्या, बप्पा का कहो! मैं तो सब माया छोड़कर घर से संन्यासी हो गया हूँ, लेकिन तुम्हारा काम हो जाएगा। परसों हमारे साथ चलो, वहीं रजिस्ट्री हो जाएगी और रुपया मिल जाएगा। अपनी पत्नी से कह देना कि वह तैयार रहे।" अँगनू साह के मुख पर भी सन्तोष था।

६

जमील अहमद और उसकी फूफी के साथ जगतप्रकाश को भी बस्ती
ाना पडा था, जमील की फूफी के मकान की रजिस्ट्री कराने के लिए।
मील की फूफी बस्ती म अपने एक नजदीकी रिश्तेदार के यहा रुक गई,
मील और जगतप्रकाश रात मे महोना वापस आ गए। उस दिन जमील
हुत उदास था। जगतप्रकाश ने कहा, "चलो जमील काका, मेरे यहा रुको
रुककर, अकेले क्या करोगे अपने मकान म ?"

एक ठडी सास लेकर जमील ने कहा, "चलो बरखुरदार, तुम्हारे यही
ो रहूँगा। लेकिन लेकिन यह तो सरासर लूट है। ढाई हजार रुपए
ा मकान था, दो हजार रुपये मिल रहे थे इनके, लेकिन हालात की मजबूरी
े डेढ हजार म बेचना पडा। इस अँगनू की देस-भक्ति और सेवा का रूप
ेखा तुमन ? कितने मजे मे गरीब बेवा की रकम हडप गया है।"

"यह मकान तो उसने काग्रेस कमटी के नाम खरीदा है।" जगतप्रकाश
बोला।

एक व्यग्यात्मक मुसकान जमील के मुख पर आई, "यह काग्रेस कमेटी!
बरखुरदार, यह काग्रेस कमटी है क्या ? यह इस अँगनू की ज़ाती मिल्कियत
है, इस काग्रेस कमटी के मेम्बरान इस अँगनू के दिमागी गुलाम हैं। इस
सारी काग्रेस के पीछे है पूजी, और पूजी हमेशा से एक शख्स के अधिकार मे
होती है। वह शख्स है अँगनू।"

जगतप्रकाश की समझ मे जमील की बात नहीं आ रही थी। उसन
पूछा, 'लेकिन जमील काका! यह काग्रेस तो ब्रिटिश साम्राज्यवाद को
मिटाने के लिए लड रही है, तुम इसे पूजीवाद की सस्था कैसे कह सकते हो ?"

"हा वरखुरदार, यह कांग्रेस ब्रिटिश साम्राज्यवाद को ^ cा1क।
लड रही है, लेकिन ब्रिटिश साम्राज्यवाद को मिटाने म दिलचस्पी ि
देस के इस पूजीवाद को ही तो है जा विदेशी पूजीवाद के मातहत है।
जो कहते ह कि कांग्रेस पूजीवादियो की सस्था है, वह गल्त नही ५८
खुदा न खास्ता अगर हमारा दस स्वतन्त्र हो गया तो दखना कि यहा
वाद का इतना नगा नाच होगा कि लोग त्राहि त्राहि कहने लगग,
का राज होगा इस देस म।"

जगतप्रकाश बोला, "मैं तो इससे सहमत नही हूँ जमील काका।
देश स्वतत्र हो गया तो देश का रुपया देश म ही तो रहगा। बस हरेक
मे बेईमान आदमी मौजूद हे। फिर हम यह क्या भूल जाते हैं
गाधी स्वय बनिया ह। हमारे धम-शास्त्रो म कही भी वश्य को नीची
से नही देखा गया हे, कही भी हमार धमशास्त्रो म पूजीवाद और
विकतियो का जिक्र नही मिलता। वैश्यो की धार्मिकता तो प्रसिद्ध रह
समाज की अथ-व्यवस्था को कायम रखन की सारी जिम्मेदारी उन पर
ह। वे दानी रह है, वे परोपकारी रह हैं।'

जमील अहमद कुछ देर तक सोचता रहा, 'हा, यह तो तुम ठीक क
हो वरखुरदार। लेकिन असलियत से मुह कम मोडा जा सकता है?
पूजीवाद आज दुनिया का सत्य है, क्या तुम इससे इनकार कर सकत हो

जमील क इस प्रश्न को सुनकर जगतप्रकाश अपने ही अन्दर
चौंक पडा। उसे लगा कि सारा रहस्य उसकी समझ म आ गया हो
बोला, आ गया समझ मे जमील काका सब कुछ समझ म आ गया
पूजीवाद मशीन-युग की उपज है, मशीन-युग के पहले यह पूजीवाद था
नही। प्राचीन काल म उत्पादको का एक वग था, वितरको का दूसरा
था उत्पादको के वग से सवथा भिन्न। किसान, जुलाहे, बढई, लुहा
कुम्हार—न जाने कितने वग तरह-तरह के उत्पादन करते थ। और
उत्पादनो का वितरण करने वाला दूसरा वग था—व्यापारीवग।
व्यापारीवग अपना पारिश्रमिक या मुनाफा लेकर वितरण करता था।
वितरण के काय म वह न जाने कितनी जोखिम उठाता था। जहाजो
समुद्र पार व्यापार करन के लिए वह तूफानो और जलदस्युओ द्वारा प्र

।वाने का खतरा उठाता था, माल के चोरी हो जाने या नष्ट हो जाने का ाह घाटा बर्दाश्त करता था। और इस प्रकार समाज को वह सुव्यवस्थित, म्पन्न और समृद्ध बनाता था। हमारे धर्मशास्त्र का वैश्य उस परम्परा ा प्रतीक है। लेकिन मशीन-युग आन के बाद सामाजिक व्यवस्था ही बदल ाई। अब उत्पादक मनुष्य नही रह गया, अब उत्पादक मशीन हो गई है। नुष्य इस मशीन का गुलाम बन गया है। जिसके पास पूजी थी उसने बडी-ाडी मिलें खडी की, उन मिलो की मशीनो को चलाने के लिए उसने मजदूर-ौकर रखे। और नतीजा यह हुआ कि उत्पादको का वर्ग मिटने लगा। इस मशीन-युग म उत्पादन स्वय पूजी का गुलाम बन गया। और इसके ारिणामस्वरूप पूजीवाद का जन्म हुआ। आज मिल्कियत व्यक्ति की नही है, पूजी की है।"

जमील गौर से जगतप्रकाश की बातें सुन रहा था, उसने कहा, "बात तो तुमने पते की कही। मैंने ही क्या ज्यादातर लोगो ने इस पहलू पर गौर नहीं किया था।" फिर कुछ चुप रहकर उसने कहा, मानो वह स्वय अपने से कह रहा हो, "लेकिन लेकिन यह पूजी! बिना उस आदमी के, जिसके पास पूजी है, पूजी का कोई मतलब नही है। जहा आदमी की मेहनत का मुनाफा न हो, मुनाफा पूजी का हो, वही पूजीवाद आ जाता है। बरखुरदार, तुम्हारी बात ऊपरी ढग से ठीक दिख सकती है, लेकिन यह पूजी, यह हमेशा से बनिये की बपौती रही है। व्यापार के लिए पूजी चाहिए, और यह पूजी खुद-ब-खुद सूद-दर-सूद में रुपया पैदा करती है, बिना इन्सान की मेहनत के।' जमील एकाएक हँस पड़ा, "बखुरदार, बुरा न मानना, यह तुम्हारा हिन्दू धर्म ही पूजीवाद का धर्म है जहाँ ब्याज धर्म और कानून की रु से जायज है। इस्लाम मे सूद हराम कहा गया है। हजारो साल की परम्परा लिये हुए यह हिन्दू धर्म पूजीवाद का सबसे बड़ा गढ है। यहाँ महाजनो और श्रेष्ठियो के हाथ मे ताकत रही है, वे लोग बडे-बडे राजाओ को कर्ज देते थे, ठीक उसी तरह जिस तरह यहूदी लोग मध्य-युग मे यूरोप के बादशाहो को कर्ज देते थे।"

बात ने अब दिलचस्प पलटा ले लिया था, 'लेकिन ये यहूदी और बनिये जनता और देश के भाग्यो का फैसला तो नही करते थे।" जगत-

प्रकाश ने कहा।

"हा, क्योंकि वह सामन्तवाद का युग था। ताकत उसके ।स ।
हाथ मे हथियार हो, जो लड सकता हो। जो जबदस्त था वही हुकूमत ग
था। लेकिन धीरे-धीरे आदमी विकसित होता गया, उसकी चत ग
गई। इन्सान का जोर-जुल्म दिखाई देता था, उसके खिलाफ बगावत
यह बादशाह और सरदार—अमीर-उमरा—ये खत्म कर दिए गए,
समूह ने व्यक्ति का मुकाबला किया और समूह जीता। इस तरह तुम
डिमाक्रेसी कहते हो वह आई। लेकिन डिमाक्रेसी की ताकत कहा
फौज मे, सरकारी नौकरो म, हथियारो म। है न ऐसा? और इस सबके
रुपया चाहिए। यही रुपया तो पूजी है। डिमाक्रेसी व्यक्ति नही है,
समूह है। वह व्यक्ति के आधिपत्य को स्वीकार नही करती, वह रुपए के
पत्य का स्वीकार करती है।'

जगतप्रकाश के ज्ञान मे वृद्धि हुई उसने अनुभव किया।

'तो तुम्हारा मतलब यह है कि राजा, बादशाह सामन्त—ये व
होने के नाते केवल व्यक्ति के ही आधिपत्य पर विश्वास करते थे, पद्म
आधिपत्य पर नही जबकि यह डिमाक्रेसी सामूहिक होने के नाते व्यक्ति
आधिपत्य को स्वीकार नहा करती वह रुपये के आधिपत्य को स्वीक
करती है।"

'ठीक समझे बरखुरदार, यही मेरा मतलब था। लेकिन इसके साथ
भी सच है कि पूजी व्यक्ति से हटकर है नही, वह तो व्यक्ति या व्यक्तियो
मिल्कियत है। पूजी की आड म कुछ व्यक्तियो का समूह ही राज कर
है। पुराने ज़माने मे यह मुमकिन नहा था, क्योकि आदमी का बौद्धि
विकास इतना अधिक नही हुआ था, आदमी जरा-जरा-सी बात पर हू
से लड जाया करता था। लेकिन आज तो बौद्धिक विकास बहुत ज्यादा
गया है। कुछ लोग आपस म समझौता करके एक गुट बना सकते हैं, ओ
यह गुट मुल्क पर हुकूमत कर सकता है। यह गुट बढता जाता है
डिमाक्रेसी की यही सबसे बडी कमजोरी है। और जब लूटने वाला बे
बेतरह बढ जाता है तब लूट भी बेतरह बढ जाती है।"

दोनो अब महोना पहुँच चुके थे। उस समय रात काफी चढ चुकी थ

ाधा और यमुना दोना ही जगतप्रकाश की प्रतीक्षा कर रही थी।
-प्रकाश जमील को बाहर सहन मे बैठाकर घर के अन्दर गया। अनुराधा
हा, "वडी देर लगा दी।"
"हाँ, करीव चार बजे कचहरी से फुरसत मिली, फिर एक घण्टा बस
इन्तजार करना पडा। और पक्की सडक स यहाँ की दूरी तीन मील
ो। जमील काका के साथ मे तो रास्ता मजे म कट गया उन्ह अपने साथ
आया हूँ। उनकी फूफी तो बस्ती मे ही रुक गई, ता मन जमील से कह
कि मेरे यहा रुक जाना।"
"अच्छा किया जो जमील को यहा ले आए। तुम खाना खा लो, मैं
खाना दिए आती हूँ।"
अनुराधा पत्तल मे खाना परोसकर जमील के लिए ले गई, यमुना ने
ी जगतप्रकाश के सामने मेज पर रखते हुए कहा, "आज आपकी एक
ठी आई है, आपकी मेज पर रख दी है।"
जगतप्रकाश ने अनायास ही कहा, "कुल्सुम की होगी।" और यह
ते समय उसके मुख पर आतुरता स भरा एक उल्लास था।
अनायास ही यमुना भी पूछ बैठी, 'यह कुल्सुम आपका कोई दोस्त
ा?"
"मेरा दोस्त नही, मेरी दोस्त! पूरा नाम है कुलसुम कावसजी, पारसी
की है, वम्बई म रहती है।"
"कसी है? वडी सुन्दर होगी!" रोटी परोसते हुए यमुना ने कहा,
डी पढी लिखी भी होगी, तभी तो आपस उसकी दोस्ती है, आपके साथ
ा विलायत है।"
जगतप्रकाश मुसकराया, 'पढी लिखी—शायद काफी पढी लिखी है,
केन उसके साथ मेरी कोई खास दोस्ती नही है। दोस्ती हो भी नहा सकती
। वह करोडपती वाप की इकलौती बेटी है, दूसरी जाति, दूसरा धर्म,
रा समाज! काग्रेस मे उससे मुलाकात हुई थी।" लेकिन जगतप्रकाश
आश्चय हो रहा था कि वह अपनी कफियत क्या दे रहा है।
यमुना ने एक ठडी सास भरकर कहा, "मेरा मन भी करता है कि मैं
कत्ता वम्बई देखू घूमू फिरूँ। लेकिन शायद मेरे भाग्य मे यह सब नही

है।" और वह चुप हो गई।

जगतप्रकाश को यमुना के अन्दर वाली पीडा का कुछ ु
उसने कहा, "कोई अपना भाग्य देखकर नही आया है। कौन जान
दुनिया देखो, तुम भी देश विदेश घूमो।"

यमुना के मुख पर उल्लास की एक चमक आ गई, "सच ! अ
झते ह कि मुझे भी दुनिया देखने और वडे-वडे शहरो म ू
योग मिलेगा ? आप ज्योतिषी तो है नही, आपने यह सब कसे जान लि

"मैं वहुत-कुछ जान सकता हूँ उसक मम्ब ध म जो मेरे वहुत
निकट हो।" जगतप्रकाश ज़ोर स हँस पडा।

यमुना लज्जा से गड गई, उसने अपना सर झुका लिया।
ने उससे बात करने की वहुत कोशिश की, लेकिन उसके कण्ठ से स्व
निकला। खाना खाकर जगतप्रकाश अपने कमरे मे गया। वास्तव मे प
कुल्सुम का था और वम्वई से न आकर वह दिल्ली से आया था। प
मई के दूसरे सप्ताह म लिखा गया था पचीस दिना म वह घूमता
महोना पहुँचा था उसके पास। उम पत्र म कुलसुम ने उन ब
पर प्रकाश डाला था जा काग्रेस म हुई थी। उसने लिखा था कि प
हफ्ते वाद जसवन्त कपूर के साथ मसूरी जाएगी और वहा जून के
ठहरेगी। उसन ममूरी वाला अपना पता लिख दिया था और वहा
यदि अधिक असुविधाजनक न हा तो जगतप्रकाश कुछ दिना के लिए
चला जाए। एक कॉटेज कुलसुम ने ले ली है, वहा ठहरने की
व्यवस्था है।

पत्र को आदि से अन्त तक पढकर वह कमरे के वाहर निकला।
घर म अनुराधा और यमुना भाजन कर रही थी। जगतप्रकाश का
ही अनुराधा ने कहा "जमील मिया के लिए बाहर वाले सहन म मैंने
पाई डलवा दी है। सव इन्तज़ाम ठीक है अव तुम सोओ जाकर।"

विस्तर पर लेटकर जगतप्रकाश सोचने लगा। महोना आए उस
समय हो गया है। दुनिया के एक अनात कोने म वह पडा है। दश म
तरह की हलचल मच रही है, और वह कम-क्षेत्र स दूर—वहुत दूर
पत्र आन म भी करीव एक महीना लग जाता है—पडा हुआ निष्क्रिय

न व्यतीत कर रहा है। इस अंधकूप से अब उसे निकलना चाहिए। ...न आखिर इस अंधकूप में उसे बाँधे हुए कौन है? उसका अध्ययन, ...का काम—वह तो करीब-करीब पूरा हो चुका है। फिर यह सब तो ...हाबाद में भी हो सकता था। यह अध्ययन और काम एक निमित्त है ...उसकी बहन अनुराधा ने ढूँढ निकाला है। उसे वास्तव में बाँधे हुए ...अनुराधा की ममता। फिर जगतप्रकाश के मन में प्रश्न उठा—यह ...राधा की ममता तो उसके साथ हमेशा रही है। पिछले दो वर्षों में वह ...ना नहीं के बराबर आया है, दस पाँच दिन से अधिक वह महीनों में ...र ही नहीं सका। बहन की ममता तो उसके प्राणों में भरी है। नहीं यह ...न की ममता नहीं है जो उसे प्राय एक महीने से यहाँ में बाँधे रही है। ...एक जगतप्रकाश का सारा शरीर पुलक उठा—यह यमुना की ...मता है!

... कितना अपनत्व, कितना लगाव! और इस सबके साथ कितना ...कर्षण! अनुराधा ने चुना है यमुना को उसके लिए, और अनुराधा कभी ...लत चुनाव नहीं करती। यमुना के प्रति जगतप्रकाश में भी एक स्पष्ट ...गाव पैदा हो गया है, जगतप्रकाश अनुभव कर रहा था। यमुना उसके ...ीवन में बिना उसके जाने हुए आ गई है, और जगतप्रकाश को इसका ...ताप था। यह सब सोचते-सोचते जगतप्रकाश को नींद आ गई।

सुबह जब जगतप्रकाश सोकर उठा, वह अपने अन्दर एक नई स्फूर्ति अनुभव कर रहा था। जमील के साथ नाश्ता करते हुए उसने कहा, "जमील भाई! कुल्सुम की एक चिट्ठी आई है। ११ मई का दिल्ली से चला हुआ वह पत्र मुझे कल रात मिला। आज ८ जून हो गई है।"

जमील बोला, "चिट्ठी मिल तो गई बरखुरदार—यही क्या कम है? यह गाँव—कितना सोया हुआ, कितना उदास, तुमने कभी इस पर सोचा है? यही नहीं, हमारा यह देस—यह भी तो उतना ही सोया हुआ, उतना ही उदास है। रेगिस्तान में जिस तरह कुछ नखलिस्तान है, उसी तरह इस देस में कुछ शहर हैं जहाँ जिंदगी की ताजगी दिख जाया करती है। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली, और इसके बाद कुछ इने गिने छोटे शहर। खैर, छोड़ो भी इस बात को। अप्रैल के आखिरी हफ्ते में यह लड़की कुल्सुम

कलकत्ता गई थी, तब से यह लगातार बाहर घूम रही है। मैं
इसे हो क्या गया है ? हम लोगों के मूवमेण्ट को इससे बड़ी ताक़त कि
उम्मीद है, लेकिन यह भी मृगतृष्णा ही साबित हो रही है।"

और अभी शायद जून भर यह बम्बई नहीं लौट रही है, क्योंकि
तो मसूरी का बन चुका है। इन दिनों वहीं होगी। शायद जून के आ
हफ्ते में यह बम्बई वापस लौटे।" जगतप्रकाश बोला।

जमील बोला, "अजी कौन ठिकाना, जैसी इसकी मर्ज़ी या बहर।
हम लोगों को इन सरमाएदारों से कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।
फ़ैशन बदलते रहते हैं उनके मूड बदलते रहते हैं। इस रुपये में जो है
जादू है उससे कोई रुपयेवाला नहीं बच सकता। हां, तो यह लड़की
बाबू से मिलकर महात्मा गांधी का तख्ता उलटना चाहती थी, लेकिन
यह कि सुद सुभाष बाबू का तख्ता उलट गया। अब यह क्या करेगा'
लिखा है इसने ?'

"लिखा तो उसने बहुत कुछ है ब्यौरे के साथ। यानी यह कि
बाबू महात्मा गांधी की बात मानने को तयार नहीं थे, इसलिए
इस्तीफ़ा दे दिया और राजेन्द्र बाबू कांग्रेस के सभापति चुन लिये ग
कांग्रेस वालों का कहना था कि एक सुभाष की ज़िद से तो कांग्रे
कमज़ोर नहीं बनाया जा सकता था। सुभाष बाबू ने कांग्रेस से अलग हो
अपनी एक निजी पार्टी बनाई है—फारवर्ड ब्लाक। अभी बहुत थोड़े
उस पार्टी में शामिल हुए हैं।'

जमील ने जगतप्रकाश की बात काटी "वह सब तो मैं जानता
लेकिन सवाल यह है कि क्या यह लौटिया भी फारवर्ड ब्लाक में श
हुई है ?'

जगतप्रकाश ने हिचकिचाते हुए कहा, 'यह तो नहीं लिखा है, म
शायद वह शामिल नहीं हुई, क्योंकि उसने बम्बई में जो आली ए० इं
सी० सी० की मीटिंग हो रही है उसमें आने के लिए मुझसे आग्रह किया
अभी उस मीटिंग की तारीख़ नहीं तय हुई है।'

जमील बोला, तारीख़ तय हो चुकी है, जब उसने चिट्ठी लिखी
तब तय न हुई थी। वह मीटिंग २४ जून को बम्बई में हो रही है।

ने यह है कि वह जून के तीसरे हफ्ते तक बम्बई वापस आ जाएगी, यानी ठ-दस दिनो के अदर ही।"

"तब तो मेरा मसूरी जाना बेकार होगा।" जगतप्रकाश ने अपने से कहा। लेकिन बात इतनी जोर से कही गई थी कि जमील ने सुन ली। सने पूछा, "क्या, क्या मसूरी बुलाया ह तुम्हे इस लडकी न ? अजीब डकी है। तो क्या यह समझ लू कि जसवन्त कपूर से उसका मन उखड या ?"

जगतप्रकाश का समस्त उल्लास जैसे जमील की इस बात से ठडा पड या। कुल्सुम के सम्बन्ध मे सोचते हुए वह जसवन्त कपूर का भूल क्या या ? इस जसवन्त कपूर के साथ कुलसुम कलकत्ता गई होगी, इस जसवन्त पूर के साथ वह इतने दिना दिल्ली रही, इस जसवन्त कपूर के साथ वह सूरी गई है। बडे प्रयत्न के साथ जगतप्रकाश ने अपने को सयत किया। उसने कुछ हिचकिचाते हुए कहा, "जमील काका, तुमने अभी-अभी [illegible] था कि पसेवालो के मूड बदलते रहते ह, फैशन बदलते रहते हैं। [illegible] सवाल यह भी है कि क्या वह जसवन्त कपूर से प्रेम भी करती है ? [illegible] कपूर से उसकी दोस्ती है। जहा तक मुझे पता है उसके पिता [illegible] अपने साले के लडके के साथ करना चाहते हैं, और कुलसुम [illegible] से कोई एतराज नही है। नही, मैं जानता हूँ कि जसवन्त [illegible] नही करता।"

जगतप्रकाश न यह सब जो कहा वह जमील [illegible] कहा। जगतप्रकाश ने इस सत्य को नही देखा, [illegible]। जगतप्रकाश पर अपनी आखे गडाते हुए उसने [illegible] सवाल मैं तुमसे करना चाहता हूँ। तुम तो [illegible] प्रेम नहीं करने लगे हो ?"

जगतप्रकाश ने सिर हिलाया, '[illegible] कुल्सुम के प्रति, लेकिन यह प्रेम [illegible]" फिर बहुत धीमे स्वर में उसने [illegible]। [illegible] प्रेम करने लगा हूँ, [illegible]"

जमील के मुह [illegible]

आवरण आ गया। यमुना इन दोनो को नाश्ता करा रही थी। जब यह
चीत हो रही थी तब वह घर के अन्दर चली गई थी। इस बार वह
शीशे के गिलासो मे दूध लेकर घर के अन्दर से निकल रही थी।
आँखें यमुना पर गड गइ, कुछ पलो तक उसकी आँखें यमुना
फिर हटकर जगतप्रकाश पर आ गइ, 'तुम बडे खुशक़िस्मत हो
दार! तुम्हारी पसन्द की मैं दाद देता हूँ। मुबारकबाद!"

यमुना के जाने के बाद जमील बोला "अब मैं समझा कि तुम
इस उजाड गाव मे रह कैसे गए। तो शादी कब होगी?"

"अभी मैंने दीदी को स्वीकृति नही दी है लेकिन मैंने
कि आज ही किसी समय स्वीकृति दे दूगा। शादी या तो इस
या पारसाल गरमियो मे होगी। यह तो लडकीवालो पर है।"

जमील ने मुसकराते हुए कहा, 'तुम्हारी शादी के मौके पर
और, शायद आखिरी दफा इस गाव मे आऊँगा—मैं तुम्हे अपनी
देता हूँ।'

तभी अनुराधा घर से बाहर निकली। उसने इन दोनो के
आकर जमील से कहा, "कहो जमील मियाँ नाश्ता कर लिया? कब
गाव म रुकने का इरादा है? बाहर वाला बँगला खाली है, यहा रुक
आकर।"

जमील न बडे शान्त भाव से कहा, 'तुम्हारी बडी किरपा है दीदी
वैसे मैं आज ही जा रहा हूँ, मेरा यहा का काम पूरा हो गया है। जगत भैरू
के ब्याह म मुझे बुलाना न भूलियेगा।

जगतप्रकाश की ओर देखते हुए अनुराधा न जमील से पूछा, "तो
ब्याह करन के लिए राज़ी हो गया है।" और फिर उसने जगतप्रकाश से
कहा, 'क्या, तुमने मुझे खुद बतलाने की जगह जमील से क्या कहलाना?"

जगतप्रकाश न आख नीची करते हुए कहा, "तुमने मुझसे पूछा भी था?
फिर तय तो अभी-अभी किया है।"

यमुना इन दोनो के लिए पान लेकर घर के बाहर निकल रही थी
लेकिन यह बात सुनकर वहीं दरवाज़े पर ठिठक गई थी। उसका हृदय तेज़ी
के साथ धडकने लगा था। एक बार उसने सकल्प किया कि वह बढकर इन

को पान दे दे, लेकिन वैसे ही उनकी हिम्मत जवाब दे गई। वह दबे-घर के अन्दर चली गई।

कुछ क्षणा वाद ही अनुराधा ने घर के अन्दर प्रवेश किया। यमुना उस य रसोई म बठ गई थी। अनुराधा सीधे अपन कमरे के अन्दर गयी। ने ट्रंक खोलकर अपनी माता के गहनो का वक्स खोला, उससे सोने का न निकालकर उसने ट्रंक बन्द किया। फिर उसन तेज़ आवाज़ मे पुकारा, मुना!"

यमुना अनुराधा क कमरे म आई, "कहो भाभी तुमने मुझे बुलाया था?"

"हा, तुम्हे बुलाया था।" तेज़ी से आगे बढकर अनुराधा न यमुना अपनी बाहुओ म भर लिया, "आज स मैं तुम्हारी भाभी नही, तुम्हारी दी हो गई।" अनुराधा ने कगन यमुना के हाथ म पहना दिए।

और तभी यमुना अनुराधा के पैरा पर झुक गई।

दोपहर के समय जगतप्रकाश का खाना अनुराधा ने परोसा, यमुना ोईघर के अन्दर ही रही। अनुराधा ने जगतप्रकाश से कहा, "यमुना को ज शाम की गाडी से उसके चाचा के यहा वस्ती भेजना है। मैं उस र आज वस्ती जा रही हूँ, कल दोपहर तक वस से वापस आ जाऊँगी।'

जगतप्रकाश ने उलझन के साथ पूछा, "क्या, एकाएक यह वस्ती जान कायक्रम कसे वन गया? क्या कोई चिट्ठी आई है इनके घर से?"

"नहा, चिट्ठी नही आई है, लेकिन यमुना अब इस घर म नही रह सती। अब यह इस घर की मालकिन वनकर ही यहाँ आएगी। मैं इसके चा के साथ इसक ब्याह की वात पक्की करके लौटूगी। जमील का दा क दिन और रोक लेना, शायद कल या परसा वरिच्छा हो जाए।"

उस दिन खाना खान के वाद भी यमुना उसके सामने नही आई। शाम ो सात बजे बस्ती क लिए गाडी जाती थी। चार बजे शाम को सुमेर वैल-ाडी निकाल लाया। जगतप्रकाश न अनुराधा स कहा, "चला दीदी, मैं तुम ोगो को स्टेशन भेज आऊँ चलकर। वहाँ टिकट खरीदकर आराम से गाडी र विठा दूगा।"

कडे स्वर मे अनुराधा वाली, "नही, मैं सव-कुछ कर लूगी, तुम्हे चलन ी कोई जरूरत नही है।"

दूसरे दिन दोपहर की बस से अनुराधा लौट आई।
कहा, "यमुना के चाचा आज सुबह ही कानपुर चले गए यमुना के
खबर देने के लिए। कल या परसों वह बरिच्छा लेकर सीधे यहां आ
इस साल गरमियों में तो ब्याह नहीं कर सकते वे लोग, साइत के पन्द्र
ही दिन तो रह गए हैं। जाड़ों में ही कोई साइत बनेगी।"
जगतप्रकाश ने उत्तर दिया, "आज बृहस्पतिवार है दीदी, इत
मैं जमील काका के साथ इलाहाबाद जाना चाहता हूँ। यहां आए हुए
दिन हो गए।"
अनुराधा मुसकराई 'हां-हां अब तुम्हारा मन क्यों लगेगा यहां
वार का या सोमवार को चले जाना।'
दूसरे ही दिन यमुना के पिता बरिच्छा लेकर आ गए। शाम
बरिच्छा हो गई।
जमील के साथ जगतप्रकाश जब इलाहाबाद पहुंचा, यूनिवर्सि
में सन्नाटा छाया हुआ था। गरमी अब भयानक रूप से बढ़
ऑफिस में उसके नाम एक पत्र पड़ा था जो शायद दो दिन पहले आ
और जो महीना नहीं भेजा गया था। यह पत्र भी कुल्सुम का था और
से लिखा गया था। उस पत्र में कुलसुम ने जगतप्रकाश से मसूरी न
शिकायत की थी। कुल्सुम मसूरी में जगतप्रकाश की बड़ी प्रतीक्षा
रही। जसवन्त कपूर जून के पहले सप्ताह में ही कलकत्ता चला गया
सुभाषचन्द्र बोस ने उसे बुलाया था। मसूरी में उसे अकेलापन
अखरा और वह बम्बई वापस जा रही है। २४ जून को बम्बई में
इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक है उस अवसर पर जगतप्रकाश को
हर हालत में आना चाहिए। अगर जगतप्रकाश बम्बई नहीं आ
उससे नाराज हो जाएगी, और फिर कभी उससे न मिलेगी, न
बोलेगी।
यह पत्र पढ़कर जगतप्रकाश के मन में एक तरह का उल्लास हुआ।
अपने ऊपर कुछ गर्व भी हुआ। जमील से उसने पूछा, "जमील काका
में बम्बई का मौसम कैसा रहता है?"
जमील ने गौर से जगतप्रकाश को देखा, क्यों बरखुरदार, यहां

तयद कुल्सुम बावमजी की है। मालूम होता है उसने तुम्हे बम्बई बुलाया है।"

"हां, २८ जून को आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हो रही है। सुभाषचन्द्र बोस ने जो नया फारवार्ड ब्लाक बनाया है उससे अजीब-सी स्थिति पैदा हो गई है देश में, कांग्रेस के अन्दर ही बगावत के बीज पड़ रहे हैं। यह अधिवेशन महत्त्वपूर्ण होगा। सोच रहा हूँ इस तमाशे को ही देखा जाए चलकर।"

जमील ने गम्भीरतापूर्वक सर हिलाया, "तमाशा नहीं है बरखुरदार, जिन्दगी मौत का खेल है। तमाशा भर होता तो मैं तुम्हें वहां जाने की सलाह नहीं देता, यह तमाशबीनी तो अमीरों की हरामजदगी-भर होती है और तुम अमीर नहीं हो। तुम उस तमाशे को तमाशे के तौर से नहीं देख सकोगे, क्योंकि तुम अपने अंदर महसूस करने लगोगे कि तुम खुद उस तमाशे के एक भाग हो।"

जगतप्रकाश जमील की बात को कुछ समझा और कुछ नहीं समझा। उसने हिचकिचाते हुए पूछा, "जमील काका! यह कुलसुम—क्या यह भी इस सबको एक तमाशबीन की ही हैसियत से देख रही है?"

'कुछ कहा नहीं जा सकता बरखुरदार! मैं इतना जानता हूँ कि यह लड़की नेक है, इस लड़की में भावना है। इसके मानी यह हुए कि इन लड़की में लीडरशिप के गुण नहीं है।"

जगतप्रकाश ने जमील अहमद की बात काटी, 'क्या नेक और भावनामय प्राणी लीडर नहीं बन सकता?"

जमील थोड़ी देर तक चुपचाप सोचता रहा, फिर कमजोर आवाज में बोला, "बड़ा टेढ़ा सवाल है बरखुरदार! मेरे अन्दरवाला तक कहता है कि वह कामयाब लीडर नहीं बन सकता, लेकिन वास्तविकता कहती है कि वह कामयाब लीडर बन सकता है। महात्मा गांधी को लो—देखना है, नेकी और ईमानदारी में, त्याग और बलिदान में। सारा हिन्दुस्तान उनके कदमों पर है।" जमील चुप हो गया और थोड़ी देर चुपचाप आंखें बन्द किये हुए वह सोचता रहा, फिर एक ठंडी सांस लेकर वह बोला, 'त्याग, बलिदान, सत्य और देश का दर्द, इन सबको अपने में समेटे हुए बहुत बड़ी हस्ती है यह

गाधी। और यहाँ मर अ दरवाला तक हार जाता है।"

जमील उठ खडा हुआ, 'यह जिंदगी भी वडी उल्झाव की चीज है। सुल्झान की कोशिश करना बकार। लेकिन हम इन सुलझान की कोशि करत रहते हैं और करत रहग। आनन्द भवन चलकर पण्डित जवाह नहरू से बात करनी है मुझे। अगर पण्डितजी हमारे मिल क पा सुल्झा सक तो बडा अच्छा हो। आज अठारह तारीख है, कल भा वह बम्बई के लिए रवाना हो जाएँगे। ए० आई० सी० सी० की उ पहले वर्किंग कमटी की भी तो मीटिंग है। उनस मिल्कर कल मैं बम्ब लिए रवाना हो जाऊँगा।'

'मैं भी कल तुम्हारे साथ बम्बई चलूँगा जमील काका! पिछली बम्बई पूरी तौर से नही देख सका इस दफा तुम शुरू से मेरे साथ रहो, बम्बई देखन म सहूलियत होगी।'

शाम के समय जब आनन्द भवन स जमील वापस लौटा, वह ग उदास था। जमील क आत ही जगतप्रकाश ने शबत बनाया, फिर पू क्या जमील काका! चेहरा बहुत उतरा हुआ है। बडी भयानक गरम कही ताव तो नही लग गया?

जमील ने शवत पीत हुए कहा नहीं तन को ताप नही लगा है, लगा है मन को। पण्डितजी न हमारे मामले म पडन से इनकार कर। है, उनके सामन देश के न जान कितन अहम सवालात हैं। वह ठीक ही हैं सबसे अहम सवाल है देश की आजादी का। इस गुलाम देश म अनगि छोटे मोटे मसले हैं। इन मसलों को हल करन म अगर वह व ।०। तो बडा मसला पडा रह जाएगा और इस बडे मसले के हल म ही इन ६ मोटे मसलों का हल है। समझ म आया बरखुरदार!'

शबत पीकर जस जमील के अ दर एक ठडक पहुँची, उसके चेहरे तनाव जाता रहा। उसने कहा, 'जवाहर भाई न जो कुछ कहा वह गल नही है। मुझे ताज्जुब हो रहा है कि मुझे उनकी बात पर बुरा पा बडे ध्यान स उन्होने मेरी बातें सुनी, उन पर उन्हान गौर भी किया, अ समझता हूँ कि उन्होने अपनी मजबूरी भी अनुभव की गोकि उसे उ जाहिर नही किया। बम्बई सरदार वल्लभभाई की जागीर है और

मनलाल को—सेठ चिमनलाल को ही नहीं हिंदुस्तान के सभी सेठों को महात्मा गाधी की सरपरस्ती हासिल है। महात्मा गाधी सरमाएदारों को अपने साथ लेकर ही तो अंग्रेजों से लड रहे है, और अंग्रेजों से जो मे इस कदर उलझे हुए है कि इन छोटे-छोटे सवालो पर गौर करने की उन्हे फुर्सत ही नही है।"

एकाएक जगतप्रकाश पूछ बैठा, "जमील चाचा! सुबह तो आपने महात्मा गाधी की इतनी तारीफ की थी और इस समय आप उन्हे हिंदुस्तान के सेठो का सरपरस्त कहते है।"

"दोनो ही बात ठीक है बरखुरदार! हिन्दुस्तान के ये जितने सेठ है, यह सब ब्रिटिश सरकार के दुश्मन है। इन लोगो से महात्मा गाधी को मदद मिलती है। इस मदद से इनकार करना, यह राजनीतिक गलती होगी।" जमील के मुख पर एक मुसकराहट आई, "राजनीति मे समझौते करने पडते है, तुम उन समझौतो को जुबानी स्वीकार करो या न करो। फर्क वहा पडता है कि वह समझौता व्यक्तियो से किया जाता है या सिद्धातो से किया जाता है। सिद्धात के साथ समझौता करना, यह सबसे बडी अनैतिकता है। महात्मा गाधी सिद्धात से समझौता नही करते। सिद्धात ही वह शक्ति और प्रेरणा है जो मनुष्य के व्यक्तित्व को बल प्रदान करती है। गाधी की अहिसा उसकी नीव का वह पत्थर है जो हिल नही सकता। गाधी व्यक्ति के साथ समझौता कर सकता है, व्यक्ति से समझौता कर सकना राजनीति मे सफलता का सबसे बडा गुण है। वहा हम व्यक्ति को स्वीकार करते है, अनुयायी के रूप मे क्योकि नेतृत्व तो हमेशा सिद्धात के हाथ मे होता है।"

जगतप्रकाश मुग्ध-सा जमील की बात सुन रहा था। यह बेपढा लिखा आदमी, इसके अदर इतना ज्ञान कहा से आ गया? जो बात वह कह रहा था वह सार-युक्त थी, इस सार को उसने पहले कभी न देखा था। एकाएक वह पूछ बैठा, 'लेकिन गाधी के अनुयायी नेता जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, खान अब्दुलगफ्फार खाँ, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आजाद और इन सबके बाद सुभाषचन्द्र बोस, इनकी स्थिति क्या है?"

जमील मुसकराया, "तुमने मुझे समझ क्या रखा है बरखुरदार

इतना पढा लिखा हूँ, न मेरे पास इतनी फुसत है कि मैं इन सब बात साचू। ये जो नाम तुमने गिनाए है, इनमे सिवा दो आदमिया क और के पास सबल व्यक्तित्व नही है। ये दो नाम है जवाहरलाल और सुभाष वोस। इनमे सुभापचन्द्र वोस सिद्धाता के साथ समझौता नहा करता और व्यक्ति के साथ समझौता कर सकने का सवाल तब तक नहा आता तक उसके पास पूरी ताकत न हो। इसीलिए सुभापचन्द्र वास को काग्रेस अलग हो जाना पडा। इन सब नामो म मुझे एक ही नाम ... जिसम सबल व्यक्तित्व होन के साथ साथ व्यक्तिया से समझौता करने प्रवत्ति है और इसलिए आग चलकर अगर गाधी का स्थान कोई ले है तो वह जवाहरलाल है। बस सिफ एक खतरा दिखता है इस आदमी मुझे।"

जगतप्रकाश ने आश्चय स जमील को देखा, "यह कौन-सा खतरा जमील काका ? मुझे तो जवाहरलाल का व्यक्तित्व कभी-कभी गाधी व्यक्तित्व से भी ऊँचा दिखने लगता है।"

इस बार जमील जोर स हस पडा "तुमने अनजान ही उस खतरे सकेत कर दिया जिस में देख रहा हूँ। यह जवाहरलाल सिद्धाता के भी बडी खूबी के साथ समझौता कर सकता है। व्यक्ति से समझौता करते समय, जैसे इसके पास इसका कोई सिद्धान्त ही न हो। गाधी के पास ... नगी से भरा एक सबल और प्रखर व्यक्तित्व है जो दूसरा को विवश देता है कि वे उसके सिद्धाता को स्वीकार कर। सुभाष के पास इतना और सबल व्यक्तित्व नही है फिर भी वह अपने अन्दर वाले सिद्धाता पर सकता है। उसे अपने सिद्धातो को ढूढ निकालकर उन्हे रूप देने का ही नही मिला। उसे तो अपने को आरोपित करने के लिए पग पग पर ल पडा है, जूझना पडा है। लेकिन यह जवाहरलाल, जिसे जिन्दगी म नहीं करने पडे है, जिसके भाग्य ने उसे देश पर आरोपित कर दिया है, सद्धातिक दृष्टि से सोचने का मौका मिला है। इसने अध्ययन किया है, न कितावा से अपना ज्ञान अर्जित किया है। वह समाजवादी है, क्योकि इसने समाजवाद का अध्ययन किया है। और बरखुरदार, इस जवाहरलाल का समस्त ज्ञान और दशन दूसरा से मिला हुआ दशन है उसके अनुभवा ...

ार्पो का दशन नही है। और इसीलिए इसके सिद्धात और दशन परिवतनशील हैं, इसीलिए यह आदमी बड़ा आसानी से सद्धातिक समझौता कर सकता है।'

उसी समय जगतप्रकाश न अपने अन्दर एक तरह की युनलाहट अनुभव की। जमील न जवाहरलाल के विरुद्ध जो कुछ कहा वह एकदम गलत ह। आखिर जमील जवाहरलाल के खिलाफ यह झूठा प्रचार क्या कर रहा हे? जवाहरलाल देश के युवको का प्रतीक, इसी जवाहरलाल मे देश को श्रद्धा ह। उसने कडवे स्वर म जमील से कहा, "जमील काका, तुम जवाहरलाल के साथ अन्याय कर रहे हो। जवाहरलाल ही देश के सघर्पो का, देश के यौवन का प्रतीक है, मैं जवाहरलाल के खिलाफ कुछ नही सुनना चाहता।"

"बुरा मान गए वरखुरदार! तो मैं अपन शब्द वापस लेता हूँ। मुझे खुद ताज्जुब हो रहा है कि मैं उनके खिलाफ इतनी ऊलजलूल बातें कसे कह गया? आखिर मैं बिना पढा लिखा आदमी ठहरा! अच्छा, अब रात हो रही ह, और इस बन्द कमरे मे दम घुट रहा हे, चलो कही घूम आया जाए।"

जगतप्रकाश अब वास्तविकता की दुनिया म लौट आया। उसने देखा कि उसके चारो ओर घुटन ही घुटन है—अन्दर की घुटन, बाहर की घुटन। गला सी गरमी, और बन्द कमरे म बठा हुआ वह जमील के साथ इतनी देर तक बातें करता रहा। और बात भी किसी हद तक अप्रिय। जिन देवताओ की मूर्तिया को उसने अपने अन्दर अनजाने ही स्थापित किया था, जमील ने उन मूर्तिया पर ही प्रहार किया था। लेकिन जमील उन मूर्तियो को तोडने म सफल नही हुआ। उसने उठते हुए कहा, "जमील काका! यह देश का सौभाग्य है कि हम महात्मा गाधी और जवाहरलाल नेहरू का नतृत्व प्राप्त हुआ है। आज सारा देश इन दो देवताओ की पूजा कर रहा है। लेकिन तुम्हे इन देवताओ पर विश्वास नही।" यह कहत हुए जगतप्रकाश ने अपने कमरे मे ताला लगाया।

जगतप्रकाश के साथ चलते हुए जमील बोला, "बरखुरदार! मुझे माफ करना। मैं मजबूर हूँ, शायद इसलिए कि मैं मुसलमान हूँ। यह मुसलमान बुतपरस्त नही होता, यह बुतशिकन होता है। हम मुसलमानो ने हमेशा

मूर्तिया तोडी ह और हम अपनी आदत से मजबूर है। और वहा तुम लोग हमेशा से बुतपरस्त रहे हो, बिना देवताओ के तुम्हारा काम नही सकता। खुदा जाने तुम्हारी यह बुतपरस्ती तुम्ह कहा ले जाएगी।

जगतप्रकाश ने जमील की बात का कोई उत्तर नही दिया, उसने इतना पूछा, "शहर की तरफ चला जाए या यही कटरा और ... एक चक्कर लगा लिया जाए ?"

"न शहर और न कटरा-कनलगज, इस गरमी मे इन घनी बस्ती नाम से मन कापने लगता है। चलो दारागज की तरफ, वहा गगा मे लेंगे, बदन मे ताजगी आ जाएगी।" और दोनो चल पडे।

कनलगज पार करके जिस समय य दोनो आनन्द भवन के पास प जमील बोला, "अरे बरखुरदार ! मैं तुम्ह एक बात बताना तो भूल ह था। आज दोपहर को मुझे यहा जसवन्त कपूर साहब दिखे थे। उनके कम्युनिस्ट साथी यहा ए० आई० सी० सी० के दफ्तर म जवाहरलाल परस्ती म काम कर रह हैं, उन्ही के साथ। उनसे मेरे कोई ... हैं नही, तो सिर्फ दुआ-सलाम हुआ। खुदा जाने उन्होने मुझे पहचाना नही।"

"जसवन्त कपूर यहा इलाहाबाद म !" जगतप्रकाश ने अपन से ... "कुलसुम न लिखा है कि वह मसूरी से कलकत्ता चला गया है सुभाष मिलन। मालूम होता है ए० आई० सी० सी० की मीटिंग क सिलसिले बम्बई जात हुए यहाँ उतर पडा, शायद सुभाष न जवाहरलाल के नाम सन्देशा भेजा हो।" फिर वह जमील की ओर घूमा "क्या जमील ... तुम्ह पता है वह यहाँ ठहरे हैं ? सोच रहा हूँ कि उनसे मिल लिया जाए।"

"इतना उतावलापन क्या ?" जमील ने जगतप्रकाश का हाथ आगे बढते हुए कहा, "तुम भी तो कल मेरे साथ बम्बई चल रह हो, यहाँ रह कराेगे ही क्या ? और बम्बई म तुम कुलसुम के साथ ठहरोगे, तुम्ह वहाँ बुलाया है और बरखुरदार, जहाँ तक मेरा खयाल है यह जसवन्त कपूर भी कुलसुम के साथ ही ठहरेगा। ऐसी हालत म तुम दोनो अच्छा मिलोगे, जमकर बातें होगी।"

दूसरे दिन जमील के आग्रह पर जगतप्रकाश ने कुलसुम के नाम तार

ा कि वह अगले दिन मेल से बम्बई पहुँच रहा है। दोपहर के समय दोना
शन पहुँचे और थर्ड क्लास का टिकट लेकर वे उस थर्ड क्लास के डिब्बे
और बढे जो इलाहाबाद से बम्बई के लिए मेल म लगाया जाता था। उस
बे के एक कम्पाटमेण्ट म उन्हे जसवन्त कपूर बैठा हुआ दिखाई दिया।
कम्पाटमण्ट मे वह अकेला बैठा था और उस दिन के 'लीडर' का वह ग़ौर
पढ रहा था। जगतप्रकाश न उस कम्पाटमेण्ट मे प्रवेश करते हुए कहा,
रे, आप मिस्टर कपूर! जमील काका ने कल शाम मुझे बतलाया तो था
आपको इन्होने कल आनन्द-भवन मे देखा था, लेकिन उस समय मैं नही
सका। सोचा था कि बम्बई मे आपसे मिलना तो होगा ही। यहाँ इस
म्पाटमेण्ट म आपसे भेट हो जाएगी, यह मैंने न सोचा था।"

जसवन्त कपूर ने खडे होकर इन दोनो का स्वागत किया, फिर उसने
हा, "जमील अहमद साहब से साहब सलामत भी हुई थी, लेकिन बातचीत
ही हो सकी, अपने दोस्तो से बाते करने म मैं व्यस्त था, और यह सीधे
बाहर भाई के यहा चले गए।" एक किनारे वाली बर्थ पर जसवन्त कपूर
का बिस्तर लगा था, उसके सामने वाली बर्थ पर जगतप्रकाश ने अपना
स्तर लगा दिया। जमील ने ऊपर की बर्थ पर बिस्तर लगाते हुए कहा,
"लम्बे सफर म ऊपर की बर्थ पर आराम रहता है, मैं यहा अच्छा।"

ठीक समय से मेल बम्बई के लिए रवाना हो गया। गाडी चलने के बाद
जसवन्त कपूर ने जगतप्रकाश से कहा, "दिल्ली से कुलसुम ने शायद तुम्हे
कोई पत्र लिखा था मसूरी आने के लिए। वह तुम्हारा इन्तजार कर रही थी
मसूरी मे। बात यह है कि मुझे तो सुभाष बाबू ने कलकत्ता बुला लिया था,
उन्होने जो अपनी नई पार्टी बनाई है, उसके सिलसिले म।"

"हा, कुलसुम ने पत्र तो लिखा था, लेकिन मैं अपने गाव महोना चला
गया था, तो वहा छ-सात दिन पहले वह पत्र मिला था। वहा से मैं मसूरी
नही गया, यह सोचकर कि कुलसुम वहा होगी या न होगी। गाव से मै यहाँ
चला आया और कुलसुम का दूसरा पत्र यहा पर मेरा इन्तजार कर रहा था,
जिसमे उसने लिखा है कि वह बम्बई वापस जा रही है।"

"तो कुलसुम ने तुम्हे बम्बई बुलाया है।" जसवन्त कपूर के स्वर मे न
कटुता थी, न किसी तरह का व्यग्य था।

"हा, उसने आग्रह किया है कि मैं ए० आई० सी० मी० को समय वम्बई जाऊँ, वहा सब-कुछ देखू। जाने की कोई खास तबीयत थी, लेकिन इन जमील काका का साथ हो गया, तो चल रहा हूँ।"

जसवन्त कपूर ने बडे साधारण ढग से कहा, "यह कुल्सुम बडी लडकी है, लेकिन वडी नेक, वडी भोली और वडी कमठ। अच्छा। बवई चल रहे हो। बहुत कम लोग एसे ह जिन्हे कुलसुम के एक प्रकार का सुख और सन्तोष प्राप्त करने का आनन्द प्राप्त है।"

जगतप्रकाश ने प्रसग बदलते हुए पूछा, "आप कलकत्ता गये का क्या रग-ढग है? सुभाष बाबू से आपकी क्या बात हुई? यह ब्लॉक! क्या यह सफलतापूवक अपने पैरो पर खडा हो सकेगा?"

'कहा नही जा सकता, लेकिन जहा तक मैं समझता हूँ, यह धारे फिर काग्रेस मे घुल मिल जाएगा। खुल्लमखुल्ला हिंसा की दुहाई आज नही दे सकता, सुभाष भी नही। फिर फारवड ब्लाक का कोई नि कायक्रम, काग्रेस के कायक्रम से पृथक रह भी तो नही जाता। महात्मा गाधी और सुभाष बाबू के व्यक्तित्व मे था, वहा ज सुभाष को वडी निराशा हुई। देश का नेतृत्व अभी नौजवानो के हाथ म सौपा जा सकता—जवाहरलाल गाधी म अलग हटने पर देश का अपने हाथो मे लेने को तैयार नही है।'

'सुभाष स्वय देश का नतृत्व अपने हाथ मे लेने को उत्सुक हैं।" प्रकाश बोला।

"लेकिन देश गाधी को छोडकर सुभाष को अपना नेता बनाने को नही है। स्वय सुभाष बाबू अपने को इतना समथ नही समझते कि वह को चुनौती दे सके। देशव्यापी और अति शक्तिशाली सस्था काग्रेस का छत्र सम्राट है गाधी। शायद इसीलिए सुभाष ने अपनी नई पार्टी की कल्पना ब्लॉक के रूप म की है, फिर सुभाष के पास न उनका कोई दशन है, न एक हिंसा को छोडकर उनका कोई निजी सिद्धात है। एसी ह म सुभाष की सफलता पर मुझे सन्देह है।"

जमील ऊपर की वथ पर लेटा हुआ वडे ध्यान से इन दोनो की चीत सुन रहा था, उसने वही से कहा, 'कोई भी देश कही बिना हिं

हुआ है ?"

इतिहास तो कहता है कि नही हुआ है।" जसवन्त बोला, "और
ान भी बिना हिंसा के स्वतन्त्र नही होगा, मेरा यह विश्वास है।"

लेकिन गाधी अहिंसा से ही देश को स्वतन्त्र करने का वादा करता है।
के इतिहास मे उसका यह अहिंसा का प्रयोग अद्वितीय है। कहना यह
होगा कि गाधी विश्व मे एक नवीन इतिहास की सृष्टि करना चाहता
एक नये ढग से लिखना चाहता है।" जगतप्रकाश को जैसे एकाएक
मिल गई, "गाधी के इस अहिंसा के प्रयोग को दुनिया बडे ध्यान से
ही है। गाधी जो कुछ कहता है उसमे सार है, मानवता के जिस दृष्टि-
को वह प्रतिपादित कर रहा है, उससे इनकार नही किया जा सकता।
के पास ऊँची भावना के साथ प्रबल तर्क भी है।"

जमील ने आख मूद ली थी, जैसे उसने इस बातचीत मे भाग लेकर
गलती की हो। वह सोने का प्रयत्न करने लगा। जसवन्त कपूर ने बात
बोस के सम्बन्ध मे आरम्भ की थी, गाधी के सम्बन्ध मे नही। वह
हाल मे ही सुभाष बोस से मिलकर लौटा था, और वह उसके सम्बन्ध
त करके किसी प्रकार का निश्चित निर्णय लेने के पक्ष मे था। उसने
"गाधी का प्रयोग चल रहा है इस प्रयोग का परिणाम भविष्य के गर्त मे
र सदिग्ध है। लेकिन प्रयोगो के लिए हम अपने देश की गुलामी की
को तो नही बढा सकते। हम लोगो को हिंसा का ठोस कदम उठाना
। सुभाष इस हिंसा के कदम को उठाने के लिए व्यग्र तथा उत्सुक है।
मौत से खेलने की प्रवृत्ति है, उसमे बडो-बडो से टक्कर लेने का पौरुष
तुम जानते हो गाधी से टक्कर लेना आसान काम नही था। सुभाष
रूप से भावना प्रधान है। लेकिन मैं फिर सोचने लगता हूँ कि यह
ना बगाल की मिट्टी की उपज है, यह भावना नाटकीय है, यह भावना
और आतरिक निश्चय के अभाव मे निरर्थक है। हम जानते हैं कि
ल क्रातिकारियो के आतकवाद का प्रमुख केन्द्र रहा है, सुभाष उस
कवाद का अधिक विकसित और परिष्कृत रूप भर है। हम लोग देश
भविष्य अनिश्चय से भरी भावुकता के हाथ मे तो नही सौप सकते। हम
के सगठित रूप की आवश्यकता है, और मुझे दिखता है कि सुभाष मे

इस सगठन की क्षमता नही है, और इसीलिए हम गाधी का साथ न
सक्त। हिंसा पर विश्वास रखते हुए हम गाधी की अहिंसा की
अपना हिंसात्मक सगठन बढाना पडेगा।"

गाडी तेज़ी के साथ चली जा रही थी और गाडी के पहियों का
एक मधुर लोरी की भाति जगतप्रकाश के काना म गूज रही था।
कपूर की वात दिलचस्प थी, लेकिन नीद की एक शान्त स्निग्ध
जगतप्रकाश की आखो म भरती जा रही थी। कम्पाटमण्ट की
चढी हुई थी, वाहर सब कुछ जल रहा था। लेकिन कम्पाटमण्ट के
अपेक्षाकृत राहत थी। सब-कुछ सोया हुआ था, और जगतप्रका
रहा था कि जसवन्त कपूर की आवाज़ दूर पडती जा रही है, और
आवाज धीमी पडती हुई शून्य मे लोप होती जा रही है।

७

बम्बई के विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन पर कुलसुम खड़ी थी। जगत-दा का तार उस पिछले दिन ही शाम के समय मिल गया था। लेकिन सुम की नजर पहले जसवन्त कपूर पर पड़ी जो खिड़की से लगा बैठा। जसवन्त को देखते ही कुल्सुम कुहुक-सी उठी, "अरे जसवन्त, तुम भी गाड़ी से!" फिर उसने जगतप्रकाश को देखा, "बड़ा अच्छा किया जो इस जसवन्त को अपने साथ लेते आए हो।" उसने कुली को पुकार-कहा, "असबाब उतारो।"

तभी कुल्सुम को जमील की आवाज सुनाई दी, "कोई किसी को नहीं या है कुलसुम बेन, सब अपने-आप अपनी मर्जी से आए है—जसवन्त र साहब, जगतप्रकाश साहब और जमील अहमद साहब। यह इत्तिफाक बात है कि हम तीनों ने एक साथ एक डिब्बे में सफर किया है। वैसे तप्रकाश के साथ मैं इनके गाँव से चला हूँ, वहाँ से यहाँ तक इनका और साथ रहा है। अब इन जगतप्रकाश साहब का साथ जसवत कपूर साहब रहेगा।"

कुल्सुम ने हँसकर कहा, "आपने तो एक स्पीच दे डाली। आप भी इन गों के साथ थे तब तो सफर मजे में हुआ होगा।" वह जसवत की ओर ी, 'क्या जसवत, मेरे यहाँ ठहरोगे या और कहीं ठहरने का इरादा है? ल्ती कह रही थी तुम त्रिभुवन के साथ उसके यहाँ ठहरने वाले थे।"

"क्या त्रिभुवन अपने घर पर नहीं ठहरा?"

'त्रिभुवन का बाप अहमदाबाद गया हुआ है, तो वह मालती के यहाँ र गया है।"

कुलसुम के स्वर म एक उलाहना था, जसवत न तो नहा, ॥
न यह अनुभव किया। जसवन्त ने कहा, "त्रिभुवन न लिया तो प।
वार मैं उसके साथ ठहरूँ, लेकिन मैंन तो कुछ तय नही किया था।"

"अगर तय नही किया तो मेरे साथ चलो, भा०ती ता८ ९
आई है।" कुलसुम बोली।

जसवन्त न मुसकराते हुए कहा "तुम तो जगतप्रकाश को ए१
मैंने तो किसी का अपने आने की खबर नही दी थी। लेकिन जब
गई हा तब मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। त्रिभुवन कुछ बुरा ता
लेकिन अगर तुम बुरा मान गइ तो वह त्रिभुवन के बुरा मानने से
खराब होगा।'

'क्या अच्छा है और क्या खराब है—तुमने कभी इसकी परव
की है?" कुलसुम न चलते हुए कहा "सच तो यह है कि मैंने तुम्हारा
पर बुरा मानना ही छोड दिया है।"

कुलसुम जसवन्त कपूर के साथ चल रही थी, जगतप्रकाश और
कुछ पीछे थे। जमील ने जगतप्रकाश के कान म कहा, ' ९६
खुरदार! मुहब्बत का यह भी एक रूप है। कही किसी तरह की
नही, कही किसी तरह का मान मनौवा नही। दोनो ही बराबरी के
मिलते हैं लेकिन फिर भी दानो मे मुहब्बत है। वसे दिखता यह
मुहब्बत म पहल इस लडकी कुल्सुम की है लेकिन असलियत यह
पहल इम जसवन्त कपूर की है।"

एक ठडी सास लेकर जसवन्त कपूर ने कहा "शायद मैंने यहा
गल्ती की है जमील बाबा!"

"नही बरखुरदार, तुमने जरा भी गल्ती नही की, क्योंकि तुम
कुलसुम ने मुहब्बत नही करते, कर भी नही सक्ते। वैसे तुम कभी
कुल्सुम के लिए एक तरह की भावना का अनुभव करने लोगे जिस
कुछ क्षणा के लिए प्रेम समझ बठो, लेकिन उस भावना का रूप
उसी वक्त जाहिर हो जाएगा। दुनिया म प्रेम की जो गलत-सल्त
हो जाती हैं, वे महज इसलिए कि लोग भावना का सही रूप नही
पाते।"

सब लोग अब बाहर आ गए थे। जमील ने जगतप्रकाश से कहा,
ब कल शाम को मुलाकात होगी बरखुरदार, मैं करीब छ बजे शाम
ाबूमजी सेठ के यहाँ आऊँगा, घर पर ही रहना।" उसने कुलसुम
हा, "क्यों कुलसुम बेन, कल शाम का तो आपने कोई प्रोग्राम नही
या है?"

"जमील साहब, मैं प्रोग्राम बहुत कम बनाती हूँ, वे तो खुद-ब-खुद
जाया करते हैं। कल शाम जगतप्रकाश खाली रहेंगे, मैं आपको यकीन
ाती हूँ।" कुलसुम ने जसवन्त कपूर और जगतप्रकाश को अपनी
र की पीछे की सीटों पर बिठाया, फिर वह जमील से बोली, "चलिए,
पको आपके घर पर उतार दूं।" कुलसुम ने जमील को जबरदस्ती आगे
सीट पर अपनी बगल में बिठा लिया।

जगतप्रकाश को आश्चर्य हो रहा था। यह करोड़पती की लड़की,
नी शिक्षित, इतनी सुन्दर—इसे कहीं अभिमान छू तक नहीं गया है।
ो नहीं, यह किसी तरह का भेदभाव अनुभव नहीं करती। कहाँ वह और
हाँ जमील, और वह परेल की एक गंदी और घिनौनी चालों में रहने वाले
मील को पहुँचाने जा रही है। अपने रास्ते से हटकर करीब तीन चार
ल का चक्कर—कार के लिए वह चक्कर पन्द्रह-बीस मिनट का ही था,
किन यह दूरी वह तय कर रही है। जगतप्रकाश दूरी शब्द पर अटक
ा। दूरियाँ तरह-तरह की होती हैं, कुछ दूरियाँ हम तय कर लेते हैं, कुछ
रियाँ हम तय नहीं कर पाते। यह कुलसुम—क्या यह हरेक दूरी तय कर
सकती है? मकानों की दूरियाँ, संस्कृति और रुचि की दूरियाँ, जाति धर्म
ी दूरियाँ, आर्थिक दूरियाँ, उम्र की दूरियाँ, दृष्टिकोण की दूरियाँ और फिर
न की दूरियाँ। जगतप्रकाश अनुभव कर रहा था कि यह मन की दूरी
ी सबसे महत्वपूर्ण दूरी है, यही इन विभिन्न दूरियों को जन्म देती है।
गर यह मन की दूरी हट जाए तो दुनिया में और किसी तरह की दूरी
हीं रहती। कुलसुम में मन की दूरी नहीं है, और इसीलिए यह जमील को
सके घर तक पहुँचाने जा रही है, इसीलिए यह जगतप्रकाश का अपने
हाँ ठहरा रही थी। जाति-पाँति, सभ्यता-संस्कृति, वर्ग-श्रेणी—किसी
कार की दूरी कुलसुम में नहीं है।

जगतप्रकाश मत्र मुग्ध-सा कुलसुम की ओर देख रहा था। ई
तरह सफेद रेशमी साडी म लिपटी हुई यह कोमल लडकी कितने
विश्वास के साथ कार चला रही थी। भिण्डी बाजार की भीड भरी
को पार करके बायकला की ओर उसकी कार बढ रही थी और वह
से कह रही थी, "मैंने सब-कुछ ठीक कर दिया है जमील अहमद साहब,
हडताल की जरूरत नही होगी कम-से-कम मेरे मिल में। मैं सरदार
से खुद मिली थी, उन्होने चिमन सेठ को समझा दिया है। सरदार प
अच्छे आदमी है। कडे जरूर ह, लेकिन इतने बडे मूवमण्ट को च
लिए लडाई की जरूरत भी होती है। तीन दिन पहले यह फसला हुआ
वापट और त्रिपाठी इस फैसले स खुश नही ह, यह तो मैं समझ सकत
लेकिन गोविन्दे भी इस समझौते से खुश नही है, यह मेरी समझ न
आता। आप उससे बात कर लीजियेगा।"

जमील अहमद ने कुल्सुम की बात का क्या उत्तर दिया, ज
सुन नही पाया। उसे उस हडताल म और हडताल के समझौते में द
चस्पी नही थी। उसे तो दिलचस्पी उस समय कुलसुम म थी जिसे वह
तौर से समझ नही पा रहा था। आखिर वह कुलसुम के यहा क्या
इस कुल्सुम का उसके साथ कैसा लगाव है? तभी उसे जसवन्त कपूर
आवाज सुनाई पडी कुछ झुंझलाहट से भरी हुई, "अभी और कितनी ह
जमील अहमद का मकान? हम लोग तो तुम्हारे मकान से काफी दूर
गए है।"

यह बात कुलसुम से कही गई थी, लेकिन कुलसुम ने इस बात का
जवाब नही दिया। उसने केवल कार की रफ्तार तेज कर ली। गाड
लाल बाग के पास पहुँच रही थी। जमील भी चुप ही रहा।
जगतप्रकाश बोला, 'हम लोग इनके मकान क करीब पहुँच चुके हैं, प
पाच फर्लाग और होगा यहा से। लेकिन यहा से वार्डन रोड की दूरी कि
है, इसका अन्दाजा मुझे नही है।'

जसवन्त चुप रहा। एक चाल के सामने कुल्सुम की कार रुक
गाडी से उतरकर कुलसुम ने जमील का असबाब उतरवाया, और
उसने कार अपने मकान की ओर मोड दी। थोडी दूर चलने के बाद

न्त से कहा, "जमील को उसके घर पहुँचाने म इस तरह मिजाज ाडने की क्या जरूरत थी ?"

जसवन्त का उत्तर सुनकर जगतप्रकाश को आश्चय हुआ, "इसलिए तुम्हारे इस झूठे दिखावे से मुझे असुविधा होती है। जमील अहमद टा ी मे भेजा जा सकता था, लेकिन तुम्ह तो यह दिखाना था कि तुम भेद-व के ऊपर ही नही, हमदर्दी और सहानुभूति की प्रतिमा हो।"

इससे भी बढकर आश्चय जगतप्रकाश को तब हुआ जब कुलसुम ने गडन के स्थान पर मुसकराते हुए कहा, "जमील अहमद के सामने इस दान की मुझे जरूरत नही थी, इस दिखावा कहना मेरे साथ बेइन्साफी गा।"

जसवन्त कपूर ने उसी प्रकार कडे स्वर म कहा, "यह दिखावा जमील हमद के लिए नही था, मेरे लिए या जगतप्रकाश के लिए नही था, तुम्हारा ह दिखावा खुद तुम्हारे अपने लिए था। आदमी आम तौर से दूसरो को तना अधिक धोखा नही देता जितना वह खुद अपने को देता है। तुम पनी नज़र म महान् और उदार दिखना चाहती हो। यह प्रवृत्ति अपने न्दर कही किसी अभाव की सूचक है।"

"चुप रहो, तुम्ह शम नही आती इस प्रकार का ओछा प्रहार करते ए!" कुल्सुम अब चीख सी उठी। जगतप्रकाश को लगा कि कुल्सुम की ाख कुछ तरल-सी हो गई हैं।

रास्ते भर फिर इन लोगो मे कोई बातचीत नही हुई। घर पहुँचकर कुलसुम कार से उतरकर सीधे घर के अन्दर चली गई। नौकर ने इन दोनो का असबाब उतारकर इनके कमरे मे रख दिया। फिर उसने कहा, 'खाना तयार है, आप लोग तयार हो जाइय। अभी बेबी मेमसा'ब ने भी खाना नही खाया है।" वह बाहर चला गया।

जगतप्रकाश न देखा कि जसवन्त कपूर के मुख पर किसी तरह का भाव नहा था। जो कुछ हुआ था, जसे वह नित्य की बात रही हो। जसवन्त जगतप्रकाश से बोला, "जल्दी स नहा लो, मैं ट्रेन म नहा लिया हूँ। दो बज गए है। हम लोगो ने तो ट्रेन म कुछ खा भी लिया था, लेकिन कुलसुम भूखी होगी।"

जगतप्रकाश जब जसवन्त के साथ डाइनिंग रूम मे पहुचा, वह पर खाना लगा रहा था। कुल्सुम ने जसवन्त को देखकर कहा, जल्दी तैयार होकर आ गए हो, शायद तुमने नही नहाया।"

"देर बहुत हो गई है, शायद तुमने अभी तक खाना नही खाया शाम को नहा लूगा।"

कुलसुम बोली, "मेरी इतनी फिक्र करने की जरूरत नही है। इतनी देर खाना नही खाया है, वहा पन्द्रह मिनट और सही, तुम जाओ।"

जगतप्रकाश को लग रहा था जैसे वह उपेक्षित हो। वसे उसकी खातिरदारी हो रही थी लेकिन उसे बुरा इस बात पर लग रहा था उसकी खातिरदारी का भार जसवन्त कपूर ने अपने ऊपर ले लिया है जसवन्त कपूर कुलसुम के परिवार का ही एक भाग हो, और व एक नितान्त बाहरी आदमी। एक तरह का विरोध जाग रहा था अन्दर जसवन्त कपूर के प्रति। खाना खाते समय जगतप्रकाश एकाम रहा, कुलसुम और जसवन्त म ही बाते होती रही। जिन लोगो के म जिन विषयो पर बाते हो रही थी जगतप्रकाश को उनमे से अधि का ज्ञान नही था। उन बातो से उसे केवल इतना ही पता चल सक ऑल इण्डिया काग्रेस कमेटी का वह सेशन काफी महत्त्वपूर्ण होगा। सु के काग्रेस से अलग हो जाने के बाद वामपथी काग्रेस जनो की अजीब-सी हो गई थी। खाना समाप्त होने के बाद जसवन्त बोला, 'इ मालती के यहा फोन करके त्रिभुवन से बात कर लू।'

कुलसुम ने उठकर मालती के यहा फोन मिलाया। त्रिभुवन एक पहले ही आया था और वह बडी व्यग्रता के साथ जसवन्त का इन्तजार रहा था। कुलसुम ने फोन जसवन्त को दे दिया। थोडी देर तक उन की बात सुनकर जसवन्त बोला, 'कुल्सुम स्टेशन पर पहुँच गई थी, वह अपने साथ लेती आई—नही, अब यही ठहर गया हूँ। अच्छा—मैं आ रहा हूँ।"

जगतप्रकाश को पिछली रात ट्रेन म नीद अच्छी नही आई थी, मे गाडी म काफी मुसाफिर आ गए थ। खाना खाने के बाद वह सो

। जसवन्त कपूर के लौटने पर उसकी नींद खुली। आसमान पर हलके-हलके बादल घिर रहे थे, मानसून बम्बई में आ चुका था, लेकिन उस दिन दोपहर के समय जगतप्रकाश विक्टोरिया टर्मिनस पर उतरा था बड़ी तेज धूप थी और वह धूप दोपहर-भर रही। कुलसुम अपने कमरे से निकली, शायद वह जसवन्त का इंतजार कर रही हो। लेकिन इन दोनों के कमरे में आकर पहले बात जगतप्रकाश से की, "क्या जगत, बड़ी अच्छी नींद आई ? मालूम होता है रात में जागना पड़ा है !"

"हाँ, हम दोनों को ही थोड़ा-बहुत जागना पड़ा है। जसवन्त तो शायद बिलकुल नहीं सो पाए।"

कुलसुम बोली, "इस जसवन्त को तो बैठे-बैठे सोने की आदत है, यह हर जगह अपनी नींद पूरी कर लेता है।" फिर वह जसवन्त कपूर की ओर मुड़ी, "क्या, त्रिभुवन से मिल आए ? मालती घर पर ही थी या कहीं चली गई थी ?"

कुछ खीझ भरे स्वर में जसवन्त बोला, 'मैं मिलने तो त्रिभुवन से गया था, लेकिन बात मालती करती रही। यह मालती तो राजनीति के साथ खिलवाड़ कर रही है।"

जगतप्रकाश को लगा कि कुलसुम के मुख पर अस्पष्ट व्यंग्य से भरी एक हल्की-सी मुसकराहट है। बहुत सम्भव है यह उसका भ्रम रहा हो, क्योंकि वह हल्की-सी मुसकराहट तो समय-समय पर अकारण ही कुलसुम के मुख पर आ जाया करती है। व्यंग्य शायद कुलसुम की मुद्रा में उसके स्वर में, उसके शब्दों में निहित था, "खिलवाड़ ! जसवन्त, मैं तो समझती हूँ कि मालती की जिन्दगी खुद एक खिलवाड़ है।"

जगतप्रकाश के अन्दर एक प्रकार का कुतूहल जाग पड़ा, जब जसवन्त की दृष्टि कुलसुम पर गड़ सी गई। उस दृष्टि में एक प्रकार का तीखापन था—वह तीखापन कुलसुम पर उसके अधिकार का द्योतक था या फिर कुलसुम की बात के विरोध का द्योतक था। वह दृष्टि प्रायः दस-पन्द्रह सेकण्ड कुलसुम के चेहरे पर गड़ी रही, और उसने अनुभव किया कि उस दृष्टि से स्वयं कुलसुम घबरा गई है, क्योंकि कुलसुम बोली, "इस तरह मुझे क्या देख रहे हो ?"

अनायास ही जसवन्त की नज़र कुलसुम पर से हट गई और की कठोरता जाती रही। कठोर मुद्रा और कठोर दृष्टि वाले जसवन्त मुख पर एक बडी मीठी मुसकान आई, जिससे जसवन्त कपूर का अपूर्व सुन्दर पुरुष दिखा, जसवन्त बोला, "ठीक कहती हो, मालती की जिन्दगी एक खिल्वाड है, त्रिभुवन की जिन्दगी एक है। मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम्हारी जिन्दगी एक खिलवाड है जिन्दगी एक खिलवाड है। यह सारा खिलवाड उस पूंजी । है शक्ति है, जिसके बल पर हम लोग अपने को समाज पर आरोपित किए है।' इस बार वह जगतप्रकाश की ओर घूमा, "तुम कहा फस गए हम लोगों के बीच में जगतप्रकाश? यह राजनीति तुम्हारे लिए नही बन सकेगी, क्योकि तुम्हे जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पडे संघर्षरत आदमी खिल्वाड नही कर पाते, क्योकि ये खिलवाड उनके स्वत संघर्ष बन जाते है।"

जगतप्रकाश को जसवन्त की बात अच्छी नही लगी, लेकिन उसने संयत भाव से कहा, 'शायद आप ठीक कहते है। लेकिन मैं से खिल्वाड नही करने आया हूँ, मैं तो सिर्फ कुलसुम के बुलाने पर हूँ।"

जसवन्त कपूर के मुख पर की मुस्कान अब काफी कुरूप दिखी प्रकाश का, जब उसने कहा, 'इस कुलसुम की जिन्दगी भी उतनी ही खिलवाड है जितनी मालती की है—शायद उससे भी अधिक मैं कह नही सकता। और तुम कुल्सुम के हाथ मे एक खिलौना आए हो।

जगतप्रकाश का संयम जाता रहा, उसने कठोर स्वर में कहा, मेरा अपमान कर रहे हो, जसवन्त कपूर!"

जसवन्त कपूर एकाएक हँस पडा, "शाबाश! मेरी धारणा है—तुम खिलौना नहीं बनोगे।

कुल्सुम भी हँस पडी, 'नहीं जगत, यह जसवन्त किसी का नहीं कर रहा। यह तो सिर्फ अपने अन्दर वाली विकृतियों का प्र कर रहा था। यह अपने ऊपर इन रदर की दृष्टि है कि इन दूसरे का

रवाह नही।" फिर वह बोली, "अच्छा, अब बताओ तुमसे मालती ने क्या कहा ?"

"कांग्रेस के अंदर एका की बात कह रही थी। बिना कांग्रेस वर्किंग कमेटी की अनुमति के कांग्रेस का कोई सदस्य ब्रिटिश सरकार के खिलाफ किसी तरह का आंदोलन नही उठा सकता—सरदार वल्लभभाई का यह मत है। मालती कह रही थी कि इस तरह का एक प्रस्ताव ए० आई० सी० सी० के सामने आ रहा है, और हम सबको इस प्रस्ताव का समर्थन करना चाहिए। मालती की बात से त्रिभुवन भी सहमत है।"

"मुझसे भी मालती ने यही कहा था।" कुलसुम बोली, "लेकिन मन निर्णय तुम्हारे हाथ में छोड दिया था। बस मैं भी समझती हूँ कि मालती ठीक कहती है। कांग्रेस के अंदर अनुशासनहीनता होने से तो काम नही चलेगा। तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"ऊपरी दृष्टि से मालती या सरदार वल्लभभाई की बात ठीक है। सुभाषचन्द्र बोस की नई पार्टी बनने से कांग्रेस मे एक तरह की दरार तो पड़ ही गई है, गोकि वह दरार बहुत हल्की सी है, क्योंकि सुभाष के साथ बहुत कम आदमी शामिल हुए हैं। लेकिन हम वामपथी कांग्रेसजन इन दक्षिणपथी कांग्रेसजनो के अधीन होकर निष्क्रिय हो जाएँ, यह बात मेरी समझ में नहीं आती। मैं तो समझता हूँ कि व्यक्तियो को अपने ढंग से आन्दोलन चलाने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। विभिन्न स्थानों पर वहाँ के लोगों की अलग समस्याएँ हैं, अपने ढंग से लोग अपनी समस्याओं को सुलझाना चाहेंगे। इसमें बाधा क्या डाली जा रही है ?"

जगतप्रकाश इस बातचीत को बडे गौर से सुन रहा था, एकाएक वह बोल उठा, "लेकिन वह ढंग गलत होगा या सही, इसका निर्णय किसके हाथ में है ? सन १९३३ में युक्त प्रान्त में जवाहरलाल नेहरू ने एक आंदोलन चला दिया था। उस समय महात्मा गांधी राउण्ड टेबिल कांफ्रेंस में भाग लेने के लिए लंदन गए थे। वह आन्दोलन बिना महात्मा गांधी की सलाह के चलाया गया था, और हम सब जानते हैं कि वह आन्दोलन बुरी तरह कुचल दिया गया था। महात्मा गांधी को उस आन्दोलन को मजबूरन स्वीकार करना पडा था और उस आंदोलन की पराजय महात्मा गांधी की पराजय थी।

मानी गई थी। मेरा खयाल है कि सरदार वल्लभभाई पटेल सन् १९३३ की गल्ती की पुनरावृत्ति रोकने के लिए है, उस को देश का नेतृत्व करने में ताकत मिलेगी।"

जसवन्त कपूर ने आश्चर्य से जगतप्रकाश को देखा और कुलसुम उठी, 'यह जगत तो राजनीति में कुशल हो गया है। जसवन्त, वल्लभभाई के प्रस्ताव के इस पहलू पर मेरा ध्यान नहीं गया था।'

जसवन्त ने कुलसुम की बात का कोई उत्तर नहीं दिया, थोड़ा एकटक जगतप्रकाश को देखता रहा। फिर उसने जगतप्रकाश का हाथ हाथ में ले लिया, "तुम्हारी बुद्धि सुलझी हुई है ठंडे दिमाग हो। चलो, अब चाय पी जाए, इसके बाद हम लोग कोई पिक्चर चलकर। तुम्हारी बात सुनकर मेरे मन की थकावट जाती रही। हम सकते हैं अलग-अलग ढंग से, लेकिन करना हमें एकमत होकर चाहिए।"

तीनों कमरे के बाहर निकलकर डाइनिंग रूम की ओर बढ़े, और जमशेद कावसजी की कार ने कम्पाउण्ड में प्रवेश किया। कुलसुम "अरे साढ़े पांच बज गए, क्योंकि डैडी आ गए। इस बदली से हम वक्त का पता ही नहीं चला।"

जमशेद कावसजी काफी प्रसन्न दिख रहे थे, उन्होंने कार से उतरते आवाज़ लगाई, 'अरी कुल्सुम अपने डैडी के लिए भी चाय लगवा देना तो तेरे दोस्त लोग आ गए। अरे जसवन्त! तुम्हारे जाने की तो कोई खबर नहीं थी।"

जसवन्त का उत्तर सुनने के लिए जमशेद कावसजी ने अपनी बात कही थी, इसलिए जसवन्त कपूर ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

जब सब लोग चाय पीकर उठे, हल्की हल्की बूंदें पड़ना आरम्भ गई थी। बम्बई में मानसून का पहला दौर था वह और मौसम बहुत था। कुलसुम ने घड़ी देखी, सवा छै बजे थे। उसने कहा, "रीगल पहुंचने बीस मिनट से कम नहीं लगेंगे। हम लोग असली पिक्चर देख सकते अगर अभी चल दिया जाए।"

पिक्चर समाप्त होने के बाद जब ये लोग हाल के बाहर निकले, जाने वालों की भीड़ में इन लोगों का साथ छूट गया। जगतप्रकाश जब उ

पर पहुँचा जहाँ कुलसुम ने अपनी कार खडी की थी, उसने देखा कि
म वहा खडी हुई इन लोगो का इतजार कर रही है। जगतप्रकाश को
ही उसने पूछा, "जसवन्त कहाँ है ?"
'मैं क्या जानू ? मैं ता समझता था कि वह आपके साथ होगा, यानी
ोगा से मेरा साथ छूट गया।"
कुल्सुम न गम्भीरतापूवक सर हिलाया, "नही, उसकी वजह से हम
का साथ छूट गया था। उस भीड मे मैं समझती हूँ कि वह हम
का साथ छोडना ही चाहता था। अगर वह चार-पाँच मिनट के अन्दर
आया तो समझ लो वह नही आएगा, और हम लोगो को चल देना
ए।'
"मैं जाकर उसे ढूढता हूँ।" जगतप्रकाश ने घूमते हुए कहा।
'नही, तुम्हारा जाकर उसे ढूढना बेकार होगा।" कुलसुम के मुख
एक तरह की उदासी आ गई, 'ढूढा नही जा सकता। वह अनायास
जाया करता है और फिर अनायास खो जाया करता है। उसके नाते-
दार, उसके दोस्त-अहबाब, सब उससे परेशान ह। यही नही, वह खुद
से परेशान है।" कुल्सुम कार मे बैठ गई, "चलो बैठो, आज वह वापस
आएगा। वह आज किसी के साथ भटक गया है। भगवान् जाने वह
भी वापस आए। उसके बारे म कुछ नही कहा जा सकता।"
जगतप्रकाश कुल्सुम की बगल म बैठ गया, और कुलसुम ने कार स्टार्ट
'तुम इस जसवन्त को बहुत कम जानते हो। तुम्हारा वह दोस्त, जिसके
तुम पहली दफा हम लोगो के साथ मिले थे—क्या नाम है उसका ?"
'कमलाकान्त।" जगतप्रकाश ने कहा।
"हाँ, कमलाकान्त। शायद वह थोडा-बहुत जसवन्त को जानता है।
के बाप और जसवन्त के बाप म भाईचारा है। यह जसवन्त का बाप
तसर का बहुत बडा व्यापारी है। बहुत पैसे वाला—सीधा बिलायत के
व्यापार करता है। डैडी के मिल का आधा माल यह जसवन्त का बाप
लेता है, शायद इस जसवन्त का बाप मेरे डैडी से ज्यादा अमीर है। इस
वन्त का एक छोटा भाई है, एक बडी बहन है। लेकिन जसवन्त अपने
को छोड आया है, दिल्ली के एक कालेज मे डेढ सौ रुपये महीने की

नौकरी कर रहा है। चाँदनीचौक के एक टूटे और पुराने मकान म… इसका भाई और इसकी यनी बहन अगर इसके बाप स छिपाकर इ… मदद करना चाहते ह तो यह इनकार कर देता है। इस थोडी-सी मे पचास-साठ रुपये बचाकर अपने सभी साथियों का बाट … अगर कोई इसकी मदद करना चाहे तो बुरा मान जाता है।"

कुल्सुम का स्वर भारी था। रात के अन्धकार म … रोशनी म जब कभी जगतप्रकाश को कुल्सुम का मुख दीख जाता उसे लगता था कि कुल्सुम के चेहरे पर असीम उदासी छाई हुई है। … के अन्दर की व्यथा उसके शब्दों म छलक पडी थी, वह कहती जा… "इस जसवन्त की किसी हरकत का उसकी किसी बात का बुरा न… जगतप्रकाश! यह जसवन्त बडा प्यारा आदमी है। इसकी जि… खूबसूरत है। इसके मन म किसी के लिए मल नही है, यह अपने… है।"

कुलसुम की कार की गति बडी धीमी थी। मरिन ड्राइव… नितान्त सूनी पडी थी, घण्टे भर पहले ही तेज बौछार पडी थी, और भी बीच-बीच म कुछ छीटे पड जाया करते थे। बाइ ओर समुद्र लह… था और दाइ ओर छै मंजिले ऊँचे ऊँचे महलों की कतार खडी थी। … जैसे कुल्सुम को अपने इद गिद वाले वातावरण का कोइ पता ही न ह… उस समय जसवन्त मय हो रही थी, "यह जसवन्त बडा ही ईमान… बडा प्रतिभावान है बडा नेक है। यह दुनिया का बहुत बडा आ… सकता है अगर इसे किसी का सहारा मिल जाए। लेकिन यह सहारा … इनकार करता है सहारा देने वाले से बुरा मान जाता है। कभी-कभी लगता है कि इसके पास बहुत बडा अहम है। लेकिन यह बात भी … नही है। बडी जल्दी पिघल जाता है दूसरा क दुख दद से। अपनी इसने परवाह ही नही की। मैं इसे समझ नही पाती।"

जगतप्रकाश के मुख मे अनायास निकल पडा, "क्या यह … तुम इस आदमी को समझ ही लो।" और यह बात कहने के साथ ही अनुभव हुआ कि उसने जो कुछ कहा है उससे कुलसुम को बुरा लगा है, क्योकि कुल्सुम ने अपनी बात सहानुभूति पाने के लिए कही थी, …

ने के लिए नही कही थी। लेकिन उसे आश्चय इस बात पर हुआ कि कुलसुम ने जगतप्रकाश की बात का बुरा नही माना, मानो यह उलाहना य कुलसुम का रहा हो अपने प्रति। कुलसुम ने कुछ चुप रहकर कहा, तुम शायद ठीक कहते हो। मेरे लिए यह कतई जरूरी नहीं है कि मैं इस आदमी को समझ ही लू। इस तरह के उलझाव से भरे चरित्र दुनिया म बिखरे पडे हैं। मेरा विषय मनोविज्ञान तो नही है जो मैं इन चरित्रा को समझने मे अपनी जिन्दगी बरबाद कर दू।" कार अब चौपाटी से मुड रही थी और कुलसुम की करुणा का स्थान अब उसका क्रोध लेता जा रहा था, "इस आदमी के लिए दूसरा की भावना का कोई महत्त्व ही न हो जैसे, खास तौर से उन लोगो की भावना का जो इसे अपना समझते और मानते है। मुझे मसूरी मे अकेला छाडकर कलकत्ता चला गया था और इसने यहा आने की खबर तक नही दी मुझको। पिक्चर से निकलकर गायब हो गया, बिना इस बात का परवाह किये हुए कि हम लोग उसे ढूढगे। घर मे खाना तैयार है, डैडी खास तौर से हम लोगो का इतजार कर रहे होंगे। और यह आदमी गायब हो गया।" कुलसुम ने कार की गति अब तेज कर दी थी।

जमशेद कावसजी बरामदे मे बैठे ह्विस्की पी रहे थे, कुलसुम को देखते ही बोले, "जसवन्त नही आया तुम लोगा के साथ?" एक घण्टा पहले त्रिभुवन आया था जसवन्त को ढूढता हुआ, तो मैंने उससे कह दिया था कि तुम लोग रीगल गए हो पिक्चर देखने के लिए, और वह बिना रुके चला गया। क्या बात है?"

कुलसुम बोली, "मैं क्या जानू? हम लोग पिक्चर से निकले तो भीड मे जसवन्त वहीं गायब हो गया।"

तभी एक दूसरी कार ने कम्पाउण्ड मे प्रवेश किया। उससे त्रिभुवन मेहता के साथ जसवन्त कपूर उतरा। त्रिभुवन कह रहा था, 'तुम बडे जिद्दी हो जसवन्त! उन लोगा से मिल लेने मे भी क्या कोई हर्ज है? वे लोग डिनर के लिए तुम्हारा इन्तजार कर रहे ह।"

बरामदे म प्रवेश करते हुए जसवन्त ने कहा, "मेरा डिनर कुलसुम के यहाँ ह। मैं कहता हूँ कि उन लोगा से मिलना बेकार। तुम उन लोगा से कह दो कि मैं अभी बम्बई नही पहुँचा, या यहाँ आकर फिर कही

चला गया।"

"भला यह मैं कैसे कह दू जबकि मैं उनसे कह चुका हूँ कि तुम ·· का मेरे साथ थे।"

कुलसुम ने आश्चय मे इन दानो वा दखत हुए कहा, "क्या बात है कौन हैं वे लोग ?"

त्रिभुवन बोला, "अमृतसर से इस जसवन्त का भाई रजीत उसके साथ लाहौर के सबसे बडे रईस और जमीदार लाला देवराज आए हुए ह जो काग्रेस क प्रमुख नेता है। उन लोगा ने जसवन्त वा पर बुलाया है। यहा नेपियन सी रोड पर जगजीत हाउस मे ठहरे हुए हैं।

कुलसुम ने जसवन्त की ओर देखा, "तो फिर चले क्या नही जाते'

"इसलिए कि लाला देवराज की लडकी ने इस साल एम० ए० किया है, और वह उस लडकी की शादी मुझसे करना चाहते हैं।"

जगतप्रकाश ने देखा कि एक तरह का धुधलापन कुलसुम के मुख आकर चला गया और एक कृत्रिम उल्लास के साथ कुलसुम ने कहा, तो बडा अच्छा है। लाला देवराज पजाव के सबसे अधिक प्रभावशाली हैं। उनकी लडकी की फोटो परसो वे ही 'इलस्ट्रेटेड वीकली' मे थी। बधाई!"

जसवन्त कुरसी पर बैठ गया, मैं कह चुका हूँ कि मैं नही जाऊँगा मिलने। तुम जो भी चाहे बहाना बना देना। मै तुमसे साफ-साफ देता हूँ कि मैं लाला देवराज की लडकी से विवाह नही करूँगा किसी ह म। यह तुम रजीत से कह देना चुपके से। वह यहाँ सुबह मुझसे मिल मैं उससे साफ-साफ बाते कर लूगा। अब तुम जाओ, वे लोग तुम्हारे पर ही खाना खाएँगे, और मुझे भी बहुत जोर की भूख लगी है। कुलसुम, खाना लगवा रही हो न ?'

त्रिभुवन ने कहा, 'जसवन्त, तुम बहुत बडी गलती कर रहे हो। ल देवराज की लडकी की सुन्दरता को देखकर म तो चकित रह गया। फिर वह है भी कितनी तेज और पढी लिखी।"

जसवन्त मुसकराया, 'मैंने उस लडकी को देखा है, उसका नाम शर्मि है। लाला देवराज की कोठी दिल्ली मे है, कर्जन रोड पर। और इस शर्मि

आतक से लाला देवराज के नौकर-चाकर, नाते रिश्तेदार और यहाँ तक खुद लालाजी और उनकी पत्नी तक कापते है। भाई-बहन का सवाल ही उठता, क्योकि वह अपने मा-बाप की इकलौती लडकी है।"

सुवह जब जगतप्रकाश सोकर उठा, घर के सब लोग सो रहे थे, यद्यपि सूर्योदय हो चुका था। वह बरामदे मे बैठ गया और उस दिन का अखबार पढ़ने लगा। नौकर ने उसके सामने चाय की ट्रे रख दी थी। वह अखबार आधा भी न पढ पाया था कि एक कार ने कम्पाउण्ड म प्रवेश किया, और उस कार से एक युवक उतरा, रेशमी सूट पहने हुए। जगतप्रकाश के पास आकर कहा, "मै जसवन्त कपूर से मिलने आया हूँ, यही है न ?"

जगतप्रकाश न देखा कि उस युवक की आकृति जसवन्त से बहुत-कुछ मिलती-जुलती है। वह भरे हुए बदन का हृष्ट-पुष्ट युवक था, मुख पर व्यवहारिकता स भरा आत्मविश्वास। जगतप्रकाश ने उठकर पूछा, "क्या आपके छोटे भाई रजीत कपूर है ?"

"आपने ठीक पहचाना मुझे, मेरी शक्ल भाई साहब की शक्ल से बहुत मिलती है। मैं उनसे मिलने आया हूँ। आपका परिचय ?"

"मेरा नाम जगतप्रकाश है और मैं जसवन्त का मित्र हूँ। कल ही हम लोग इलाहाबाद से साथ आए है। बैठो, जसवन्त तो अभी सो रहे हैं, मै जगाता हूँ उन्हे।"

"नही, मैं जागा हुआ हूँ।" जसवन्त कपूर ने बरामदे मे आकर कहा, फिर वह रजीत की ओर मुडा, "क्यो रजीत, मैंने त्रिभुवन से यह तो कहा था कि तुम मुझसे सुबह मिल लो, लेकिन इतनी सुबह नही कि तुम मुझे सोकर जगाओ। माल्म होता है चाय-नाश्ता यही करोगे ?"

"जी नही।" रजीत मुसकराया। बडी मोहक मुसकान थी उसकी, "चाय-नाश्ता आपको लाला देवराज के यहाँ करना है बल्कि। असल बात यह है कि मैं आपके कहने स नही, लाला देवराज के कहने से यहा आया हूँ।"

"लाला देवराज न तुम्हे क्यो भेजा ?"

"जी, वही बतला रहा था। आप तो जानते ही है कि मैं आपस देर तक सोता हूँ। लेकिन लाला देवराज सुबह ठीक चार बजे जाग

इसके बाद हवन, सध्या, प्राणायाम—न जाने क्या-क्या कर
यह सब काम समाप्त करके उन्होंने मुझे जगाया, बोले कि
ठिकाना नही, न जाने किस वक्त कहाँ निकल जाएँ। तो इसी व
और पकड लाओ जसवन्त को !"

एक कुरसी खीचकर जसवन्त बैठ गया, "तुमको कल रात
बतलाया होगा कि मैं लाला देवराज की शर्मिष्ठा से शादी किसी
नही कर सकता।"

"जी, त्रिभुवन ने तो नही बतलाया, लेकिन मैं इस बात को
वह आपकी टाइप है ही नही, भले ही उसने एम० ए० पास कर।
लेकिन बनाव-सिंगार, कपडे-गहने, शान शौकत मे उससे
लडकी तो मैंने अभी तक देखी नही है। लेकिन क्या बतलाऊँ, लाला
अपनी लडकी की शादी हमारे खानदान म करने पर तुले हुए हैं,
लाए हैं अपने साथ आपसे यह रिश्ता तय कराने के लिए। वैसे
को यह रिश्ता कोई खास पसन्द नही है, क्योंकि वह
व आवारा आदमी ऐलान कर चुके हैं।"

जसवन्त ने रजीत को बीच म टोका, 'बस-बस, यह सब कह
जरूरत नही है। अब सवाल यह है कि लाला देवराज से किस तरह
छुडाया जाए!'

रजीत थोडी देर तक कुछ सोचता रहा, "मेरी समझ मे कुछ नहीं
रहा है। वैसे मेरी व्यक्तिगत राय तो यह है कि यह रिश्ता आपके
बडा अच्छा रहेगा। लाला देवराज की इतनी बडी जमीदारी और
लाहौर मे ही उनके पचीस-तीस बँगले व मकान है। फिर लेन-देन
फैला हुआ है, कौन-सा रईस है जो उनका कर्जदार नही है! पजाब
राजनीति मे उनका इतना बडा हाथ है। और यह शर्मिष्ठा उनकी
लडकी। फिर शर्मिष्ठा के मुकाबले की खूबसूरत लडकी आपको ढूँढ
मिलेगी भाई साहब, आप बडे खुशकिस्मत आदमी हैं। आप मेरे
चलिए तो!"

मैं नही चलूँगा तुम्हारे साथ। जाओ लाला देवराज से कह देना
मैं नहीं आऊँगा। यह कहकर जसवन्त उठ खडा हुआ।

एकाएक रजीत का दूसरा ही रूप जगतप्रकाश के सामने प्रकट हुआ। जीत ने उठकर जसवन्त का हाथ पकड लिया, "आप भाग कहाँ रहे है? पको मेरे साथ चलना ही पडेगा।" रजीत का स्वर तेज़ हो गया था।

जसवन्त को रजीत के इस व्यवहार से क्रोध आ गया, उसने घूमकर क तमाचा रजीत के मारा, "जाते हो कि नही! मुझे तुम लोगो से कोई रोकार नही।"

रजीत ने जसवन्त का हाथ नही छोडा, वह चिल्लाकर बोला, "आप झे जितना भी चाहिए मारिए, लेकिन मैं तो आपको साथ लेकर ही चलूगा। आपने समझ क्या रखा है! लाला देवराज ने मुझे कुछ सोच-समझकर ही भेजा है यहाँ। तो समझ लीजिए, आपको मेरे साथ चलना है।"

जसवन्त लाख कोशिश करके भी रजीत से अपना हाथ नही छुडा पाया। रजीत ताकत मे जसवन्त से सवाया पडता था। बाहर के शोरगुल से घर के नौकर-चाकर इकट्ठा हो गए थे। इतने मे जमशेद कावसजी और कुलसुम कावसजी भी बाहर आ गए। जमशेद कावसजी ने बाहर आते ही रजीत को डाँटा, "यह क्या हगामा मचा रखा है तुमने? ए रजीत, तुम कब आए? तुम मुझसे क्यो नही मिले? क्या जसवन्त, क्या बात है?"

रजीत ने जसवन्त को जबरदस्ती कुरसी पर बठाकर उसका हाथ छोड दिया, "कावसजी सेठ, जसवन्त को समझाइए, लाला देवराज ने इन्हे चाय-नाश्ते के लिए बुलाया है, और यह जाते नही। ऊपर से इन्होंने मुझे मारा है। लेकिन मैं बिना इन्हे साथ लिए जाने वाला नही, चाहे जितना मारें यह मुझे।"

अब कुलसुम जसवन्त की ओर घूमी, तेज़ स्वर मे उसने कहा, "तुम्हे शर्म नही आती इस रजीत पर हाथ उठाते हुए! यह रजीत इतना भला है और तुम्हारी इतनी इज्जत करता है कि इसने चुपचाप तुम्हारी मार सह ली। अगर यह तुम पर हाथ उठा दे तो तुम्हारी सब इज्जत धूल मे मिल जाएगी।"

जसवन्त ने मुह बनाकर कहा, "मुझे इज्जत विज्जत कुछ नही चाहिए। मैं नही जाना चाहता लाला देवराज के यहाँ, मुझे यह जबरदस्ती कैसे ले जा सकता है? यह जगतप्रकाश है, इनसे पूछो, इसने मेरा हाथ पहले पकडा था या नही?"

कुल्सुम ने जगतप्रकाश की ओर देखा और ज॰ ।।१।१८ॊ
"सगा छोटा भाई है रजीत जसवन्त का। अगर रजीत न जसवन्त ११
पकड लिया तो इसमे मुझे कोई बहुत अनुचित बात तो नही
कुछ रुककर उसने कहा, "मेरी समझ मे नही आता कि जसवन्त
देवराज के यहाँ क्यो नही जाते। इनकी मर्जी के खिलाफ तो ॰ ११
नही किया जा सकता।"

जसवन्त को जैसे जगतप्रकाश से यह सुनने की आशा नही थी,
कुछ हकलाते हुए कहा, "तुम भी॰ तुम भी बिलकुल गलत बात कह
हो। क्या कुलसुम ?"

कुलसुम ने बडे भोल भाव से कहा, "इतनी जिद अच्छी नही
जसवन्त, यह जिद तुम्हारा बचपन जाहिर करती है। उनके यहाँ मुर
चाय-नाश्ता कर आने मे क्या हर्ज है ? आखिर तुम त्रिभुवन भाई से
मालती के यहा जाते हो कि नही ? और वहा घण्टो बठते हो,
भी करते हो। इस सबमे गलती रजीत की नही, तुम्हारी है।"

जमशेद कावसजी हँस पडे, "चले जाओ अपने भाई के साथ जसवन्त
और रजीत, आज किसी वक्त मिल म मुझसे मिल लेना। बिल्कुल
डिजाइन की छीट बनाई है। कुल पाच हजार गाठें हैं, जितना चाहो
का आर्डर दे देना।" जमशेद कावसजी अन्दर चले गए।

जमशेद कावसजी के जाने के बाद कुलसुम जसवन्त से बोली,'
तयार होकर कपडे बदल लो, जरा अच्छी तरह सज-सँवर के जाना।
रजीत, बडी शानदार कार खरीदी है।'

रजीत ने एक ठडी सास लेकर कहा, "यह कार मेरी नही है,
देवराज ने परसो शर्मिष्ठा के लिए खरीद दी है। मेरे भाग्य म तो
खटारा मारिस कार बदी है जो सन् तेंतीस म लालाजी ने जसवन्त
साहब के लिए खरीद दी थी। सोच रहा हूँ कि अगर इस बार इगलड जा
तो वहा से एक शानदार बुइक कार लेता आऊँ। लालाजी के बकने-झक
की परवाह मैं नही करने का। यह भी कोई बात है कि दिन रात, सुबह
लालाजी मेरे सर पर सवार !"

जसवन्त उसी तरह कुरसी पर बठा था। कुलसुम ने कहा,

न्त कपडे बदलने नही गये ?"

इस बार जसवन्त का स्वर दयनीय हो उठा, "क्या करूँ, मुझे लाला राज के सामने जाने मे डर लगता है।"

"तुम जगतप्रकाश को अपने साथ लेते जाओ, मेरा तो तुम्हारे साथ ना ठीक नही होगा, नहीं तो मैं ही चली चलती तुम्हारे साथ। क्यो ति।"

"आपका साथ चलना ठीक नही होगा कुलसुम बेन, हा यह मिस्टर तप्रकाश चल सकते है। अजनबी आदमी के आगे थोडा सयत रहगे लाला राज। वैसे मुझे भी बहुत डर लगता है उनसे, आदमी क्या पूरा दानव नो। लहीम शहीम बोलते हैं तो डर लगता है कि कही छत न टूट पडे पर। नेता बनन के सब गुण हैं उनमे।" रजीत के मुख पर एक शरारत-री मुसकराहट आई, "भाई साहब की जि दगी सुधर जाएगी लालाजी के गए हुए रास्ते पर चलकर।"

हारे और थके स्वर मे जसवन्त बोला, "अच्छी बात है, मैं चलता हूँ म्हारे साथ रजीत, लेकिन मेरे साथ जगतप्रकाश भी चलेंगे। क्यो जगत-काश, तुम्ह मेरे साथ चलने मे कोई आपत्ति तो नही होगी ?"

जगतप्रकाश के कुछ कहन से पहले कुलसुम बोल उठी, "नही, इन्ह ई आपत्ति नही हो सकती, अगर तुम्हारे लाला देवराज को कोई आपत्ति हो।"

जगतप्रकाश को जसवन्त और रजीत के साथ लाला देवराज के मकान जाना पडा। शायद कार की आवाज सुनकर लाला देवराज कमरे के हर बरामदे म निकल आए थे। गोरा-सा और लम्बा-सा आदमी, दोहरे न का, लाला देवराज की उम्र साठ-पसठ वष की रही होगी। बडी-बडी नी मूछें, सन की तरह सफेद, चेहरे पर एक तरह का रोब। खादी का डीदार पायजामा, उस पर सिल्क की शेरवानी, सर पर सिल्क की ही धी टोपी। हम लोगो को देखते ही उन्होने आवाज लगाई, 'शर्मिष्ठा बेटी, य लगवाओ। रजीत जसवन्त को साथ ले आया है।" फिर इन लोगो स लि, 'बडी देर लगा दी तुम लोगो ने। मुझे सरदार पटेल के यहाँ ठीक ढे नौ बजे पहुँच जाना है।"

कार से उतरकर तीनो बरामदे म आए। जसवन्त ने बडे साथ लाला देवराज को नमस्ते की। जगतप्रकाश की ओर इशारा लाला देवराज बोले, "यह तुम्हारे दोस्त मालूम होते हैं, शायद तुम साथ ही ठहरे हो। अच्छा किया जो इन्हे साथ लेते आए। क्या ए० आई० सी० सी० की मीटिंग मे भाग लेने आए हैं? क्या इनका? अभी तो लडके ही मालूम होते हैं।" लाला राज और डाइनिंग रूम की तरफ बढते जाते थे। डाइनिंग-रूम में लाला की पत्नी गायत्रीदेवी और लडकी शर्मिष्ठादेवी इन लोगो की रही थी। लाला देवराज बिना जसवन्त का उत्तर सुने ही कुरसी पर हुए बोले, "बात यह है कि सरदार पटेल ने मुझे खास तौर से बुला परसो से सेशन शुरू हो रहा है और ये लेफ्टिस्ट लोग, इनसे सरदार तरह की चिढ है। इन वामपथियो का जमाव बगाल और पंजा हैं। बगाल की हाल्त तो हम लोग देख ही रहे हैं, पजाब सरदार सुपुर्द कर दिया है। बेटी शर्मिष्ठा, तुमने जसवन्त को नमस्ते नहा का यह जसवन्त के दोस्त—क्या नाम है इनका, तुमने बताया

जसवन्त ने शर्मिष्ठा की नमस्ते का जवाब 'नमस्ते' से देते हुए "लालाजी, आपने मुझे कुछ बतलाने का मौका ही कब दिया! यह जगतप्रकाश है, हमेशा फस्ट क्लास फस्ट रहे हैं, वह भी विद्यालय से। आजकल अपनी यूनीवर्सिटी मे रिसर्च स्कालर हैं, मे। यह काग्रेस मे कुछ नही है वसे विचारो से वामपथी, यानी यानी कम्यूनिस्ट है।"

अब शर्मिष्ठा की आवाज़ सुनाई दी जगतप्रकाश का, तो यह कम्यूनिस्ट नही दिखते, न बिखरे बाल और न हवन्नका चेहरा, जैसा आप बनाए रहते है। मैं इन्हे कम्यूनिस्ट किसी हालत समझ सकती।" और वह हँस पडी।

शर्मिष्ठा के स्वर म उन्मुक्त परिहास था, या कही किसी प्रकार की छाया भी थी, जगतप्रकाश इसका निणय नही कर सका, लेकिन देवराज न जगतप्रकाश से कहा, "तुमसे मिलकर मुझे खुशी हुई, गाकि गल्त रास्ता अपना रह हो।" फिर लाला देवराज जसवन्त का

, "मै तुम्ह सरदार पटेल से मिलाना चाहता हूँ। मुझे तुमसे यह भी
ुना है कि तुम अपने पिताजी से मेल क्या नही कर लेते ?"

"लालाजी से मेरा बिगाड ही कब हुआ है ?" जसवन्त न कहा।

"मैं यही सुनना चाहता था तुमसे। क्यो रजीत, मैंने क्या कहा था—
: जसवन्त बडा समझदार और प्रतिभावान लडका है। देखो जसवन्त,
ब की दफा तुम अमृतसर से चुनाव मे खडे हो जाना, तुम जीत जाओग
ह ज़िम्मेदारी मेरी। अपन लालाजी की परवाह न करना, तुम्हारा
ेक्शन का खच मेरे ऊपर। हाँ, तुम रोज़ मन्ध्या-वन्दन किया करत हा
ा नही ? यह धम-कम मनुष्य म आन्तरिक बल पैदा करता है।"

एक हलकी-सी खिलखिलाहट सुनकर जगतप्रकाश चौंक उठा और
सने शर्मिष्ठा की ओर देखा। वह हँसे जा रही थी, लगातार हँसे जा रही
ी। देवराज ने शर्मिष्ठा को डाँटा, "इसमे हँमन की क्या बात है ? क्या मैं
लत कहता हूँ ? तुम अपनी ही लो। रोज सुबह तुम सन्ध्या वन्दन करती
ो कि नही ?"

"करती हूँ जब आप घर पर होते है, और जब आप घर पर नही होते
ो अलसा भी जाती हूँ। वैसे स्त्रियो को सन्ध्या-वन्दन नही करना चाहिए
द-पाठ नही करना चाहिए, याज्ञवल्क्य स्मृति का यह विधान है। लेकिन
ह जसवन्त ! भला यह मन्ध्या-वन्दन क्या करते होंगे, यह तो वामपथी हैं।
यो जसवन्तजी, आपको ईश्वर पर विश्वास है ?"

मालूम हाता था इस समय तक जसवन्त कपूर ने अपने अन्दर अपना
ाहस पूरी तौर से बटोर लिया था। उसन तडपकर कहा, "मुझे न वदो
र विश्वास है, न ईश्वर पर विश्वास है, न धम पर विश्वास है, न महर्षि
र विश्वास है। अच्छा किया यह सब जान लिया। मै नास्तिक हूँ।"
जसवन्त न लाला देवराज की ओर घूमकर देखा, उन पर अपने इस
कथन की प्रतिक्रिया देखने के लिए। लेकिन लाला देवराज के मुख पर कही
क्रोध का लेशमात्र चिह्न नही था। उनके मुख पर मुसकराहट आ गई,
"शाबाश ! तुम बडे सत्यवादी हा, बडे निर्भीक हा। जिस आदमी मे सत्य
हो, निर्भयता हो, वह आदमी नास्तिक और अधार्मिक बन ही नही सकता।
तुम महात्मा गाधी न बन सको, लेकिन तुम जवाहरलाल तो बन ही सकत

हो। यह जवाहरलाल भी तो वामपथी है—यानी समाजवादी है।
अर्थों मे महात्मा गाधी का जवाहरलाल के नास्तिक और ११
हाने म अगर कोई दाप नही दिख सकता तो मुझे कैसे दिख सकता है'

जसवन्त का यह वार बेकार गया। उसने बडी करुण मुद्रा म
प्रकाश को दखा, मानो वह जगतप्रकाश की सहायता माग रहा हो।
प्रकाश जसवन्त की इस स्थिति से द्रवित भी था, लेकिन उसकी
नही आ रहा था कि वह किस प्रकार जसवन्त की सहायता करे।
दूसरी ओर उसे अब लाला दवराज की बातो म दिलचस्पी
लगी थी।

लाला देवराज के यहा का नाश्ता स्वादिष्ट था। सेब का मुरब्बा,
का हलुवा, मठरी, दालमोठ, अचार, फल और दूध। जगतप्रकाश
लग रहा था कि अच्छे और स्वादिष्ट भोजन मे भी एक प्रकार का मृ
वहाँ का सारा वातावरण अब उसे मोहक लग रहा था। एक पहाड़ी
वह आलीशान कोठी, और सामने समुद्र लहरा रहा था। ज्वार उठ
और ज्वार के साथ चलने वाली ठडी हवा उसके शरीर मे एक पुलक
कर रही थी। जगतप्रकाश को आश्चर्य हो रहा था कि शर्मिष्ठा
सुदरी, पढी लिखी और सुसम्पन्न कुल की लडकी से जसवन्त
नही करना चाहता। एकाएक जसवन्त कपूर उठ खडा हुआ, 'अरे,
भूल ही गया था! आज दस बजे सुबह लालबाग म मजदूरो की एक रेल
मुझे भाषण देना है। लालाजी, सरदार से आप ही मिल लीजिए,
उनसे कह दीजिएगा कि हमलोग उनका साथ देगे। यह रजीत, इससे
लीजिए, मैंने इससे चलत समय ही कह दिया था कि मैं आज
व्यस्त हूँ।"

लाला देवराज ने रजीत की ओर देखा। रजीत बोला, "नही ता भा
साहब ने कुछ इस तरह की बात जरूर थी लेकिन मजदूरो की रेला
इन्होने कोई जिक्र नही किया था।"

और तभी शर्मिष्ठा हँसती हुई बोली, "आज तो वर्किंग डे है,
डे म दस बजे सुबह मजदूरो की रेली! कुछ और अच्छा बहाना
जसवन्तजी, आज के टाइम्स' म मजदूरो की किसी रेली का जिक्र नही है।

लाला देवराज ने जसवन्त का हाथ पकडकर कहा, "तुम सत्य का मार्ग छोड बैठे ? सरदार के यहाँ चलने मे तुम्हे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए। वह तुम्हारे लिए बडे काम के आदमी साबित होगे। चलो, अब देर हो रही है।" उन्होने रजीत से कहा, "हम लोगो को सरदार के यहाँ छोडकर इन जगतप्रकाश को कावसजी के यहाँ उतार देना। फिर यहाँ आकर ड्राइवर से कार सरदार के यहा पहुँचा देना।"

८

जिस समय जगतप्रकाश वार्डेन रोड पहुँचा, पानी बरसने लगा। कुछ देर पहले सुनहरी धूप चमक रही थी, और अब सारा आसमान बादलों से ढक गया था। जमशेद कावसजी अपने मिल चले गए थे, कुल्सुम बरामदे में बैठी हुई इस बरसात को और अपने सामने उफनते हुए समुद्र को देख रही थी। जगतप्रकाश के आने पर वह कुरसी से नहीं उठी, जगतप्रकाश को अपने पास बिठलाते हुए उसने रजीत से, जो कार से नहीं उतरा था, कहा, 'क्यों रजीत, एक प्याला चाय पिए जाओ!"

रजीत बोला "चाय पीने का मैं बहुत आदी नहीं। फिर यह बम्बई की बरसात, इसका क्या ठिकाना! न जाने कब आसमान फट पड़े। मुझे यह कार सरदार वल्लभभाई पटेल के यहां भेजनी है, लाला देवराज और सेठ भाई साहब वहां गये हैं।" बिना कुलसुम की बात का इन्तज़ार किए हुए रजीत ने कार स्टार्ट कर दी।

एक ठंडी सांस लेकर कुल्सुम बोली, 'बेचारा रजीत! बड़ा भला लड़का है, बड़ा सीधा। इससे कभी कोई नाखुश हो ही नहीं सकता। इसने दुनिया को प्रसन्न रखने के लिए ही जन्म लिया है।" कुछ रुककर उसने जगतप्रकाश की ओर देखा, तो तुम लोग देवराज और उनकी बेटी शर्मिष्ठा से मिले? कैसे लगे वे लोग?'

मुझे तो वे लोग अच्छे लगे। लाला देवराज कुछ सनकी आदमी हैं, लेकिन उनकी लड़की शर्मिष्ठा बड़ी बुद्धिमती और तेज है।'

और बेहद खूबसूरत भी है!' कुल्सुम मुसकराई।

जगतप्रकाश ने कुछ सोचते हुए कहा, 'हां, वह सुन्दर है, इसमें

या जा सकता। उस सौंदय म सुकुमारता है, शायद भार बन जाने क निष्क्रियता भी है। इतना ही अनुभव कर पाया, और इमीलिए दरता मुझे प्रभावित नही कर सकी।"

ुलसुम बडे ध्यान से जगतप्रकाश की बात सुन रही थी, एकाएक वह ठी, "क्या वह मुझसे भी अधिक सुन्दर है? सच कहना, मुझे जरा भी ही लगेगा।"

जगतप्रकाश न अपनी आखे कुलसुम से हटा ली और वह सर झुकाकर या। उसने कुलसुम के प्रश्न का कोई उत्तर नही दिया। उसके सामने क यमुना की मूर्ति आ गई थी। उस भोली और उस पर अपना सवस्व ावर कर देन वाली यमुना की मूर्ति, जो एक छाटे-से शहर या कस्ब मे हुई उसकी याद कर रही होगी जिसन अपने सौन्दय की दूसरा के य से तुलना करन की कभी कोई कल्पना नहा की होगी। एका- उसे लगा कि वह यमुना इस कुलसुम से बहुत अधिक सुन्दर है, उस ठा से बहुत अधिक सु दर है। यमुना की सु दरता मे वह थोडी देर के अपन अनजान ही विभोर हो गया।

कुलसुम ने थोडी देर जगतप्रकाश के उत्तर की प्रतीक्षा की, फिर उसने बुझे हुए स्वर मे कहा, "मैं समझ गई, यह शर्मिष्ठा मुझसे अधिक सु दर यह कठोर सत्य तुम मुझस कहना नही चाहते। मुझे खुद लगता है कि मुझसे ज्यादा सु दर है।"

कुलसुम के स्वर मे उदासी से जगतप्रकाश द्रवित हो गया, उसके मौन गल्त मतलब लगाकर कुलसुम उदास हुई है, उसे ऐसा लगा, और अब ल्कर उसन उत्तर दिया, "कुलसुम, मै सु दरता का पारखी नही हूँ, द मेरी सु दरता की परिभाषा ही अलग है। वसे मैं अगर ईमानदारी के र कहूँ तो मैं तुम्हे शर्मिष्ठा से अधिक सुन्दर समझता हूँ। जहा तक अपने समझने के कारण का प्रश्न है, उसका स्पष्ट उत्तर मैं नही दे पाऊँगा।"

कुलसुम के चेहरे की उदासी तत्काल गायब हो गई। जगतप्रकाश को ा लगा कि कुलसुम का चेहरा लाल हो गया है, उल्लास से भरी एक क आ गई है उसके मुख पर। उसने जगतप्रकाश पर से अपनी आँखे ा ली, और वह भाव विभोर सी सामने उफनत हुए समुद्र की ओर देख

रही थी। थोडी देर बाद मानो उसने अपने से ही कहा, "यह यह शर्मिष्ठा से शादी क्यो नही कर लेता ? वह समझता है कि करती हूँ। और वह गलत समझता है। यह सच है कि मैं उसे करती हूँ। उसके साथ रहने मे, उससे बातें करने मे, उसकी भरी हरकतो म मुझे सुख मिलता है, लेकिन मैं उससे प्रेम नही," फिर उसने जगतप्रकाश को देखा, "यह प्रेम ! सिर्फ भुलावा है। मैं पागलपन भी कह सकती हूँ। हरेक इसान अपने को सबसे ज्यादा है। अगर वह किसी चीज को अपने से भी ज्यादा चाहने लगे तो मैं कि उसका मानसिक सतुलन कही बिगड गया है। नही, मैं जसवन्त नही करती। और यह जसवन्त, क्या खयाल है तुम्हारा, क्या यह मझ करता है ?"

जगतप्रकाश ने कहा, 'उसने मुझसे तो यह नही कहा है कि वह प्रेम करता है। फिर उसकी हरकतो और उसके व्यवहार से भी यह नही चलता कि वह तुमसे प्रेम करता है।"

"ठीक कहते हो, यह जसवन्त, यह सबसे ज्यादा खुद अपने को है।" कुलसुम लगातार समुद्र की ओर देखे जा रही थी, "लेकिन शर्मिष्ठा से शादी करने को क्यो नही राजी होता ? इसका बाप कि यह मेरे चगुल मे है, यही नही शायद शर्मिष्ठा भी समझती हो कि मेरे चगुल मे है। शर्मिष्ठा के बाप से तो मेरा मिलना नही हुआ, लेकिन शर्मिष्ठा से मैं मिली हूँ, दिल्ली म। उसे बडा गरूर है अपनी अपनी दौलत का। वैसे बडी मीठी जबान की है, हरेक का अपने वश मे लेती है लेकिन कही बहुत अधिक कठोरता है उसके अन्दर जो छोटे के साथ गाली बन जाया करती है, बराबरी वाला के साथ व्यग्य बन जाया करती है। अपने से ऊँचा तो वह किसी का समझ ही नही सकता। पता तुम मेरी बात समझे या नही।"

जगतप्रकाश मुसकराया, "बहुत अच्छी तरह समझ रहा हूँ। स्त्री मे कठोरता एक अवगुण है, यही कहना चाहती हो तुम।"

'हाँ, यही कहना चाहती हूँ। करुणा और समर्पण—यही स्त्री के हैं। यदि स्त्री से उसकी करुणा और उसका समर्पण ले लिया जाए तो

न ही रुक जाएगा।"

'तुम्हारी बात मै कुछ-कुछ समझ रहा हूँ।" जगतप्रकाश ने धीमे से
। कहा, और फिर वह अपने से ही उलझ गया। कितने सीधे-सादे ढग
उसुम ने एक महत्त्वपूण सत्य कह दिया था। लेकिन क्या वह वास्तव
प था? स्वय यह कुलसुम, क्या वास्तव मे इसका जीवन समपण
?

सामन मानो एकाएक बादल फट पडा था। तेज बौछार अब बरामदे म
लगी थी। मानसून का दूसरा दौर अब शुरू हो रहा था, बम्बई म मान-
के दूसरे दौर के इस उग्र रूप को जगतप्रकाश पहली बार देख रहा
एक तरह का आतक था उसमे। फिर मानसून के उस दश्य से
कर उसकी दृष्टि अपन अन्दर वाले मथन से ही उलझ गई। उस
उसे लग रहा था कि कुलसुम—एक नितान्त अनजानी सज्ञा, अनायास
सके बहुत अधिक निकट आ गई ह। कुलसुम न उसके सामने अपना हृदय
कर रख दिया है। वह पूछ बैठा, 'एक बात मे मैं बहुत उलझा हुआ
या तुम वास्तव मे जसवन्त से प्रेम नही करती?" और यह प्रश्न करके
वय अपने अन्दर भयभीत हो गया। इस प्रकार के प्रश्न करने का वह
कारी नही था। कही कुलसुम उसकी इस बात का बुरा न मान जाए।
लेकिन उसका भय जाता रहा जब कुलसुम खिलखिलाकर हँस पडी,
मवाल मैं भी अक्सर अपने से कर लिया करती हूँ। जसवन्त मुझे
ज्यादा पसन्द है, हरेक आदमी यह जानता है। मेरे डैडी इसे जानते हैं,
वन्त का बाप इसे जानता है, इसका भाई रजीत इसे जानता है, यहाँ तक
शर्मिष्ठा तक इसे जानती है। जसवन्त को मैं इतना पसन्द करती हूँ, इस
को लेकर कुछ लोग मेरी और जसवन्त की बदनामी भी करते हैं।
न मैं सच कहती हूँ कि जसवन्त मेरी जिन्दगी का अनिवाय भाग नही
ऐसी बात नही कि मैं बिना जसवन्त के रह ही न सकू। और फिर सोचने
ती हूँ कि यह प्यार या मुहब्बत, दुनिया जिस शक्ल म इसे देखती या
नती है, सिवा पागलपन के और कुछ है ही नही। मेरे डैडी मुझे बहुत
न्द है मेरी ममी मुझे बहुत पसन्द है, तुम मुझे बहुत पसन्द हो।"

जगतप्रकाश की हिम्मत जसे अब पूरी तौर से खुल गई थी, उसन इस

वार पूछा, "अगर जसवन्त की शर्मिष्ठा के साथ शादी हो जाए तो बुरा लगेगा ?"

"नही, मुझे बुरा क्यो लगेगा ?" कुलसुम ने कहा, और फिर कुछ बोली, "शायद मैं गलत कह रही हूँ। मुझे बुरा लगेगा, क्योकि मैं कि इस लडकी के हाथ मे पडकर जसवन्त की जिन्दगी बरबाद यह जसवन्त जैसा तुम देख रह हो, वैसा न रहगा। कितना कितना भोला ! ठीक बच्चा की तरह जिद्दी और गैर-जिम्मेदार ! सबके साथ नेकी पर यकीन करने वाला।" कुलसुम बखान करते-करते विभोर सी हो गई थी।

अब जगतप्रकाश को लगा कि जसवन्त के सम्बन्ध म बातचीत खुद असह्य हो रही है। उसने उठते हुए कहा, "बहुत तेज बारिश हो मैं सोच रहा था कि शहर का एक चक्कर ही लगा लेता, और न सही काल्बा देवी और फोर्ट एरिया की तरफ ही घूम आता खाना लेकिन इस तेज वर्षा मे तो न निकला जाएगा।"

कुलसुम ने भी उठते हुए कहा, तुम नहा लो। बरसात, ऐसा शाम से पहले न रुकेगी। वैसे मैंने डैडी से कह दिया था कि वह मिल कर अपनी कार भेज दें, क्योकि मैं अपनी कार खुद ड्राइव करती हूँ मुझे लच के बाद स्वयसेविका दल की एक मीटिंग मे जाना है।"

'मैं कार पर बम्बई नही घूमना चाहता।" जगतप्रकाश यह कह अपने कमरे मे चला गया।

जगतप्रकाश की समझ मे न आ रहा था कि वह क्या करे। स्नान वह पलग पर लेट गया, और तभी उसकी दृष्टि उस कमरे मे रखी किताब भरी एक रैक पर पडी। उठकर उसने उन किताबो को देखा, उनमे अधि अग्रेज़ी के उपन्यास थे। उस उपन्यासो म कोई रुचि नही थी। उसकी नज़र मार्क्स के 'कैपिटल' पर पडी। उसने सतोष की एक गहरी ली और फिर वह उस किताब को निकालकर बठ गया।

विश्वविद्यालय म अर्थशास्त्र के मार्क्सवादी पहलू की उपेक्षा होती उसने 'कैपिटल' पहले पढा था, लेकिन एक सरसरी दृष्टि से, उस तो देश के अर्थशास्त्रियो के साहित्य का अम्बार पढना पडा था। इस बार

ा। उसे 'कैपिटल' पढने मे एक तरह का आनन्द मिल रहा था।
ह बजे कुलसुम उसके कमरे म आई। वह जाने के लिए तैयार
ा कहा, "खाना तैयार है गोकि लच का समय अभी नही हुआ है।
ो खाना खाने जा रही हूँ, एक बजे से मेरी मीटिग है। तुम्ह जब
तब घण्टी बजा देना। जसवत बाहर ही लच करेगा, उसका फोन
। मैं बेयरा से कह देती हूँ कि वह तुम्ह खाना खिला दे।"
भी तुम्हारे साथ ही खाना खाए लेता हूँ," जगतप्रकाश बोला,
वजे, वैसे बारह बजे। सुबह गहरा नाश्ता कर लिया है, इसलिए
ब है और न तब लगेगी।"
ा खाने के बाद कुलसुम बोली, "बरसात अब कम हो गई है,
ण्टे-भर के अन्दर बिल्कुल रुक जाए। अगर चाहो तो मेरे साथ
ल तक चल चलो लेमिंगटन रोड पर, वहा से तुम शहर घूमने
ाना। लौटते वक्त टैक्सी ले लेना।"
तप्रकाश ने कुछ सोचते हुए कहा, "नही, मैं घर पर ही रहूँगा। शाम
ल ने आने को कहा है, उन्ही के साथ आज घूमने का कार्यक्रम बनाया
।

ीक है, मैं चार पाच बजे तक वापस आ जाऊँगी, जसवन्त भी शाम
लौटेगा। अगर मुझे कुछ देर हो जाए तो तुम दोनो शाम की चाय पी
कुलसुम चली गई।
पहर भर रुक रुककर पानी बरसता रहा। 'कैपिटल' पढते-पढते जगत-
को नीद आ गई और सोते ही सोते उसने सुना, "सा'ब, चाय लग
बेबी मेम सा'ब आपको बुला रही है।" आवाज सुनकर जगतप्रकाश
ा खोली, उसके सामने बैरा खडा था। जगतप्रकाश ने उठते हुए कहा,
, मैं आता हूँ।"
ाथरूम से हाथ-मुह धोकर वह बरामदे मे आया और उसने देखा कि
म अकेली नही है। जसवन्त कपूर, शर्मिष्ठा और रजीत कपूर भी वहा
। वर्षा अब बन्द हो गई थी, और बरस हुए सफेद बादल तजी के साथ
ान पर उड रहे थे। जगतप्रकाश को देखकर कुलसुम बोली, "तुम
गए। देखो, मैं जसवन्त को साथ लेती आई हूँ।"

तभी उसे शर्मिष्ठा की आवाज सुनाई दी, "नही, जगत ही रह ये, कुलसुम वेन मुझे अपन साय ले आई हैं, क्या रजीत ! म नही कहती ?"

जगतप्रकाश वैठ गया। कुलसुम ने हँसते हुए कहा, 'ग़ल्ती ह हा, म शर्मिष्ठा को अपने साथ ले आई हूँ। दोपहर का जसवन्त के साथ साठे होटल म खाना खाया, मराठी ढग का, रजीत को खाना खाना पटा। मुझे य लोग ऑपेरा हाउस के सामने मिल गए शर्मिष्ठा को अपने साथ स्वयसेविकाओ की मीटिंग म ले गई ए० आई० सी० सी० की वैठक देखना चाहती है, तो मैंने इनसे कह यह वैठक इन्हे दिखला दूगी। इनकी ड्यूटी मैंने डाएस पर वकिंग सदस्या की देखभाल करने को लगा दी है। हा जसवन्त ! तुम सुबह से मिले थे, क्या बातचीत हुई उनसे ?"

जसवन्त मुसकराया, "बात ? उन्होंने मुझे वडे ग़ौर से ह लालाजी से वोले कि मैं वडे काम का आदमी हूँ। मैं बडा हिम्मत बडा होनहार हूँ मेरे जसे नौजवानो की देश को आवश्यकता है। प अच्छे नेताओ और ईमानदार कायकर्ताओ का अभाव है। मुझसे उस की थोडी-बहुत पूर्ति हागी।"

कुलसुम मुसकराई, 'तुम वडे भाग्यशाली हो जो तुम्हारे सरदार ने इतनी अच्छी राय बना ली। तुमसे भी तो उन्होंने कु होगा ?'

"मुझसे उन्होंने सिफ इतना कहा कि काग्रेस म अनुशासन महात्मा गाधी के नेतत्व म अडिग विश्वास। लोग कहते हैं कि सरदार बहुत कम हैं, लेकिन आज सुवह तो वे ही बोलते रह। मैं अपने अपने विश्वासो के सम्बन्ध म उन्ह विस्तार के साथ बतलाना चाहता यह भी कोशिश की कि उनसे कुछ बातो का स्पष्टीकरण ले लू, र बोले कि उन्ह सब मालूम है, मैं क्या हूँ, मरे विश्वास क्या हैं उ बात का पता है। वे जानते हैं कि मैं जमशेद कावसजी के यहाँ ठहरा उनकी लडकी कुल्सुम लेफ्टिस्ट है। और वह समझते हैं कि यह लेफ्टि वालो का आजकल फैशन बन रहा है। जहाँ तक अनुशासन का

मुझसे आशा प्रकट की कि मेरे सब साथी उनका साथ देंगे। अपने
यया को ठीक कर लेने की ज़िम्मेदारी उन्होंने मेरे ऊपर सौंपी है।"
।र समझती हूँ कि उन्होंने ठीक ही किया है।" कुलसुम बोली।
गतप्रकाश को आश्चर्य हुआ शर्मिष्ठा की आवाज सुनकर, "लेकिन
ती हूँ कि सरदार जो प्रस्ताव लाना चाहते हैं वह गलत प्रस्ताव है।
गत्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धान्त को सही समझती हूँ न उनके
को सही समझती हूँ। जो आदमी देश की वास्तविक समस्या का कोई
नहीं पा सका वह देश का सही नेतृत्व किस तरह कर सकेगा ?"
नवन्त कपूर ने कुछ गम्भीरता के साथ शर्मिष्ठा को देखा। यह लडकी,
-सँवर कर रहती है, जो ऐश्वर्य से भरा हुआ सामाजिक जीवन व्यतीत
है, यह लडकी इस तरह की बात कैसे कह रही है ? उसने शर्मिष्ठा
, "बडी मजेदार बात कह डाली है तुमने ! हा, यह बात तुमने लाला
से सुनी है, या तुम खुद इस बात को अनुभव करती हो ?"
ह बनाते हुए शर्मिष्ठा बोली, "लालाजी को सोचने-समझने की फुरसत
ी मुझसे इस तरह की बात कहते ! इतनी साफ बात, और दुर्भाग्य यह
नी साफ बात कोई देख नहीं पाता है। देश की सबसे महत्त्वपूर्ण और
वक समस्या है देश में हिन्दू-मुस्लिम समस्या। देश इतना जाग चुका
कोई उसे अब परतन्त्र बनाए नहीं रह सकता। केवल एक बाधा है,
ान देश की स्वतन्त्रता का विरोधी है।"
ुलसुम ने तेज आवाज़ में कहा, "मैं इस बात को मानने से इन्कार
हूँ। हिन्दू मुस्लिम समस्या सिर्फ एक बनावटी समस्या है।"
शर्मिष्ठा को कुलसुम का तेज स्वर अच्छा नहीं लगा, उसने भी तेज़ स्वर
ा, "तुम्हारे लिए यह बनावटी समस्या हो सकती है, क्योंकि तुम न
हो, न मुसल्मान हो। लेकिन मैं हिन्दू हूँ, मैं पंजाब की रहने वाली हूँ
यह हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष पग-पग पर दिखाई देता है।"
एक व्यंग्य बनकर निकली जसवन्त की बात, 'और इसलिए भी कि
देवराज आर्यसमाजी हैं, तुम आर्यसमाजी हो।"
तनकर शर्मिष्ठा बोली, "आर्यसमाज ने ही हिन्दू धर्म को नया जीवन
नहीं तो यह धर्म तेजी के साथ मिटता जा रहा था। मुझे इस बात पर

गर्व है कि मैं आयसमाजी हूँ। लेकिन इन व्यग्या और भुलावा नही चलेगा। जव तक हिंदू-मुस्लिम समस्या का कोई हल नहीं तव तक किसी समस्या का कोई हल नही निकल सकता, मैं इस हूँ। हम जव तव मुसलमाना से दवते रहग तव तक यह देश का हमे स्वतन्त्र नही होने देगा। हमे, हम हिंदुओ को दृढता से उठाना चाहिए। यह देश हिंदुओ का है, मुसलमान भावना उसे इस देश से कोई लगाव नही है। मुसलमान तव तक हमारा देगा जवतक वह शहज़ोर है। तुलसीदास ने कहा है, 'विनु प्रीति'।"

"लेकिन देश के न जाने कितन मुसलमान महात्मा गाधी क कुलसुम वोली।

'वहुत थोडे-से, यद्यपि महात्मा गाधी मुसलमाना की अल और अलग भाषा मानकर हिंदुस्तानी के रूप म इस भाषा और विल्यन का प्रयत्न कर रहे हैं, लेकिन यह होगा नही। मुसलमान के पक्ष मे है ही नही। वह न उर्दू को छोड सकता है, न अपना सस्कृति को छोड सकता है।"

जगतप्रकाश अव इस वातचीत से ऊव रहा था। शाम हो गई शाम के समय ही तो जमील न आने का वायदा किया था। तभी उस फाटक के अन्दर प्रवश करते हुए जमील पर पडी। जो वातचीत हा वह जमील को अप्रिय हो सकती है और इसलिए जमील की ओर अ का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसने आवाज़ दी, 'आओ जमील मैं तो तुम्हारी राह देख रहा था।"

अव इन लोगा की वात वन्द हो गइ थी। जमील न इन लोगों क आकर कहा, 'वडी जवरदस्त वारिश हुई है आज, परेल की तरफ त पर पानी भर गया था। खरियत है कि इस वक्त खुल गई है। ऐसा ल कि मेरे आने से आप लोगा की वातचीत म कुछ खलल हुआ। अपनी वातचीत जारी रखिय। हा, आप लोगा की तारीफ?" जम शर्मिष्ठा और रजीत की तरफ देखते हुए कहा।

उत्तर रजीत ने दिया, मैं जसवन्त का छोटा भाई हूँ रज

जमील काका ?"

"तुम किधर चलना चाहोगे ? वम्वई की खूबसूरता ग्याते सूरती ? वैसे वम्वई की खूवसूरती तुम कुल्सुम वन के नायर हो। वम्वई की खूवसूरती का ही एक हिस्सा है यह वाम्न मलावार हिल, यह हैगिंग गाडन, यह मैरीन डाइव, यह पा कोलावा, चौपाटी। वम्वई के इन खूवसूरत हिस्सा म नाच हाड होती है। इस खूवसूरती के इद-गिद वम्वई के दफ्तर है वाजार है होटल है सिनेमाघर है और कुछ वडे घने महल्ले जहा वम्वई ना है, जहा से देश को लूटा जाता है। ये महल्ले—भिण्डी वाजार, भूलेश्वर—य इतने साफ-सुथरे तो नही है, लेकिन ... मन की उपज है। यह हमारा नजरिया भर है। मोरी के कीडे का कोई ग दगी नही दिखती। ये घुटन से भरे वाजार, जो तग गलियाँ ह, इनम ही दौलत सास लेती है।"

जगतप्रकाश जमील की वाता से ऊव रहा था। उसने कहा काका ! इस समय न मै वम्बई की खूबसूरती देखना चाहता हूँ सूरती। दिन भर घर म वन्द वैठा रहा हूँ तो जरा घूम फिरकर थकान मिटाना चाहता हूँ। यहा कही पास म ही चला जाए।'

"ठीक कहते हो जगतप्रकाश का हाथ पकडते हुए जमील "तुम्हारे पास मन की थकान है, मेरे पास तन की थकान है। दिन भर करता रहा हूँ। चले ऑपेरा हाउस म किसी ईरानी के यहा चाय पिएँगे, वही वाते भी होगी।'

दोनो पैदल ही चल दिए। सडका पर भीड वढ गई थी और जगतप्रकाश को अच्छी लग रही थी। रास्ते भर इन दोना म वाई नही हुइ, दोनो ही अपन-अपन विचारा म खोए हुए थे। ऑपेरा हा पास एक ईरानी की दूकान पर दाना वैठ गए। जमील न चाय का दिया फिर सयत होकर वोला, 'अच्छा वरखुरदार ! कसी कट रही है लोगा के साथ ? मुझे यह पता नही था कि जसवन्त कपूर साहब का हो चुकी है। लोगो का ख्याल था कि जसवन्त की शादी कुलसुम से होगी, गोकि मुझे शक था। तो मेरा शक ही ठीक निकला।'

ागतप्रकाश के मन मे एक तरह का कुतूहल जागा, "क्यो, आपका शक
ा ?"
"इसलिए कि कुल्सुम पारसी है, और पारसी गैर-पारसी से शादी नही
। जिन्ना साहब से एक पारसी लडकी ने शादी की थी, जानते हो
ा हगामा मचा था उस शादी को लेकर। जमशेद कावसजी अपनी
ी की शादी किसी हिन्दू से नही होने देगे, और वह हिन्दू भी गुजराती
ठेठ पजाबी।"
"क्या जमशेद कावसजी कुलसुम को जसवन्त से शादी करने से रोक
ा थे ?" जगतप्रकाश ने पूछा।
"जमशेद कावसजी को रोकने की जरूरत ही नही पडती, यह लडकी
शेद कावसजी के मन के खिलाफ कभी कोई काम करेगी ही नही। कुलसुम
ासजी सेठ की औलाद है और औलाद से नजदीकी कोई दूसरा रिश्ता
ा होता। एक खून, एक खानदान, एक खयाल!"

"और एक ही सस्कार!" जगतप्रकाश मुसकराया, जैसे सारी बात
की समझ मे आ गई हो, "फिर कुलसुम लडकी है। लडका तो बाप से
द्रोह कर भी सकता है, लेकिन लडकी अपने बाप से विद्रोह नही करती।"
छ रुककर जगतप्रकाश ने कहा, "लेकिन जमील काका, मेरी समझ मे कुछ
ा नही रहा है।"

"क्यो बरखुरदार, आखिर बात क्या है ?" जमील ने पूछा।

जमील काका, कल रात और आज शाम के बीच मैंने जो कुछ देखा,
ह वास्तविकता नही लगती, वह तो एक नाटक सा लगता है, उस पर
श्वास करने का मन नही होता। जहा तक मुझे पता है, आज सुबह तक
स लडकी की मँगनी जसवन्त के साथ नही हुई थी। कुछ घण्टो मे यह सब
ो गया, क्योकि जसवन्त के भाई ने यह बात कही, और जसवन्त ने या इस
डकी शर्मिष्ठा ने इन्कार नही किया।" जगतप्रकाश ने जमील को सब बाते
ताते हुए कहा, "यह लडकी आर्यसमाजी है। जसवन्त कपूर जैसा प्रगतिशील
आदमी शर्मिष्ठा के साथ कैसे रह सकेगा ? क्या यह विवाह सफल हो सकता
है ?"

जमील थोडी देर तक सोचता रहा, फिर उसने कहा, 'अच्छा

बरखुरदार ! एक बात बताओ । इस आयसमाज म तुम्हें कौन-सी
दिखलाई देती है ?"

इस प्रश्न से जगतप्रकाश कुछ सकपका गया, फिर ...
"खराबी तो मुझे कोई खास नही दिखलाई देती, लेकिन मैं यह पूछ
इस आयसमाज की जरूरत क्या है ? यह तो आउटडेटेड हो चुका है।

जमील मुसकराया, "इसे आउटडेटेड बनाया किसने ? महात्मा
ने—यह साफ है । महात्मा गाधी ने आयसमाज के सब प्रोग्राम
हैं, जाति पाति को तोडना, अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा और स्वतन्त्रता,
विवाह, छुआछूत को हटाना वगैरह । स्वामी दयानन्द गुजराती थे
गाधी भी गुजराती है । आज इस आयसमाज का नाम बदल गया है
जमाने मे इसका नाम हो गया है गाधीवाद । आज हरेक हिन्दू ...
सही, विश्वासो मे आयसमाजी बन गया है, विना अपने को आयसमाजी
हुए ।"

'महात्मा गाधी के साथ मुसलमानो का बहुत बडा दल है जबकि
समाज मुसलमाना का विरोध करता है । यह भी कभी तुमने सोचा
काका !' जगतप्रकाश बोला ।

अब जमील हँस पडा, "महात्मा गाधी के साथ देश का ...
नही है, महात्मा गाधी इस बात को अच्छी तरह जानते हैं । वे मुस...
की खुशामद करते है, जिन्ना को उन्होंने कायदेआजम तक कह डाला है
मुसलमाना को अपने साथ लेना जरूर चाहते है । यह राम रहीम ...
यह हिन्दुस्तानी, यह सब है, लेकिन वे अपने मजहब से, अपनी संस्कृ...
मजबूर है । वह मुसल्मानो का सहयोग चाहते है, मुसलमाना को हिन्दु...
का गुलाम बनाकर ।"

जगतप्रकाश को जमील की बात अच्छी नही लग रही थी, उसके
म एक प्रकार का रूखापन आ गया, 'जमील काका, यह तुम्हारे अन्दर ...
मजहबी कट्टरता है जो तुमसे यह सब कहला रही है ।"

जमील के मुख पर फिर उसकी उदासी का भाव आ गया, नाराज
गए बरखुरदार ! तुम नही जानते, मैं मजहब से कितनी दूर हूँ । मैं ...
नहीं पढ़ता, मैं रोजा नही रखता । यह इत्तिफाक की बात है कि ...

मान खानदान मे मैं पैदा हुआ हूँ और मुये इस्लामी सस्कृति मे पलना है। लेकिन मैं आज तुमसे साफ-साफ कहता हूँ कि मैं कम्यूनिस्ट हूँ, मैं पर यकीन नही करता, मैं दोजख और बहिश्त पर यकीन नही करता।"
जमील के स्वर मे एक व्यथा है, जगतप्रकाश ने यह अनुभव किया। कहा, "मैं जानता हूँ, लेकिन महात्मा गाधी के खिलाफ तुम्हारे इन पो का कारण क्या है ?"
'क्या तुम ठडे दिमाग से यह सब सुन सकोगे ?"
"तुम कहो, मैं तुम्हे टोकूगा नहा। अगर मुझे कहीं कोई गल्ती दिखेगी तो बतला भर दूगा।"
जमील कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने कहा, "वरखुरदार! तुम तो मानोगे कि गाधी के पास उसका एक फ्लसफा है। लेकिन यह फल- । उसका निजी नही है, वह तो हिन्दू धम से विरासत के रूप मे उस ा है। गाधी का जन्म एक हिन्दु वनिया के खानदान मे हुआ है, और यह या अहिसा पर विश्वास करने वाला होता है। गाधी की यह अहिसा वीर या बुद्ध से भी कुछ पहले की अहिसा है। अपने को तकलीफ , मौके-बेमौके कई-कई दिनो के फाके कर डालना—यह भी हिन्दू का ही एक भाग है।"
"लेकिन इस सबम तो मुझे कोई बुराई नही दिखती।' जगतप्रकाश ा।
"मैं इस सबकी अच्छाई-बुराई की बात नही कहता, मै दूसरी ही बात रहा हूँ। हाँ, तो गाधी का पूरा नजरिया हिन्दू का नजरिया है, वह लमान का नजरिया हो ही नही सक्ता। हमारा मजहब कुरवानियो का हब है, हम न इस अहिसा को समझ सकते है, न अपना सक्ते हैं। ात्मा गाधी यह अच्छी तरह जानते है और महसूस करते है। इसीलिए न्दू मुसलमान के बनिस्वत उनका ज्यादा नजदीकी है। आखिर मिस्टर न्ना को जलन किस बात की है ? इसीलिए न कि महात्मा गाधी मिस्टर न्ना को अपने बाद दूसरा दर्जा नही दे सके। महात्मा गाधी अपने स जबूर है।"
जगतप्रकाश के सामने एक नई बात आई, लेकिन वह इस बात को सत्य

के रूप मे स्वीकार नही कर सका। उसने पूछा, "क्या यह [illegible]
समस्या गाधी के वश के वाहर की वात है ? महात्मा गाधी के
इतने मुसलमान है, यह क्या ?"

दोना चाय पी चुके थे। चाय का प्याला एक तरफ रखते हुए
ने कहा "जजबात—भावना, यहा हरेक इसान एक है। मज्हब
की उपज है। हिदुस्तान का हरेक आदमी गुलाम है, चाहे वह [illegible]
वह मुसल्मान हो। हिदुस्तान का हरेक आदमी इस गुलामी से
चाहता है। गाधी का दावा है कि वह इस देस को गुलामी से
दिलाएँगे, और भावना से भरे लोग गाधी के इद गिद इक्ट्ठा
और होते रहेंगे। लेकिन यह स्वतन्त्रता की भावना ही तो सबकुछ
इसके साथ हमारे खाने-पीने का मसला है, हमारा सामाजिक
शादी विवाह, नौकरी चाकरी अनगिनती मसले हमारे पास हैं। य
के दीवाने इन मसलो से भी टकराते है और वे जहा इन मसलो
सव छूट गए, छिटककर अलग जा पडे। अली ब्रदस, जिन्ना साहब—
कितने मुसलमान काग्रेस का साथ छोड गए है।"

जमील अहमद उठ खडा हुआ वह अव बहुत धीमे स्वर म
था, वरखुरदार! यह देस की गुलामी वाला नारा बडा
असली नारा होना चाहिए इसान की गुलामी का। इस इन्सान
को हम देस की गुलामी तव कहने लगते हैं जव गुलाम वनाने वाले
हो। लेकिन इतना याद रखना इस देसवाले की गुलामी परदेसी
से कही ज्यादा खतरनाक है। यह इतने हिन्दू जो मुसलमान वन गए
वजह यह थी कि इस देस पर हमला करने वाला मुसलमान इसी
गया। उसने अपनी बिरादरी वढानी शुरू कर दी। यह हिदू धम
निहायत सडा-गला धम वन चुका था जात पात और छुआछूत
इस हिन्दू धम म हर तरफ गुलामी-ही गुलामी थी इसलिए मुसल
कामयावी मिली। अगर वीच म यह अग्रेज न आ गया होता तो
तक आधा हिदुस्तान मुसलमान वन गया होता।'

'शायद तुम ठीक कहत हो।' जगतप्रकाश ने सर झुकाए हुए
'लेकिन यह अग्रेज परदेसी था, यह हिदुस्तान म नही बसा।

ज़ ने हिन्दुस्तानियों को एक नया नज़रिया दिया, यह अपने साथ नई
मि लाया। राजा राममोहनराय, स्वामी दयानन्द सरस्वती और न जाने
न लोग। इन लोगों ने हिन्दू धर्म में न जाने कितने सुधार किए, हिन्दू
का वह खोखलापन, जो इसे खाए जा रहा था, इन्होंने दूर किया। ब्रह्म-
ाज ने ईसाइयत से मोरचा लिया, आर्यसमाज ने इसलाम से मोरचा
ा। इन अंग्रेज़ों के मुल्क में इन्सान की गुलामी से बाहर निकलने के न जाने
ने प्रयोग हो चुके थे, हिन्दू उन प्रयोगों से वाकिफ हुए। अब इस देश के
लमानों को खतरा पैदा हो गया है। यह ज़माना डिमाक्रैसी का है,
दुस्तान की आज़ादी के माने हैं इस देश में डिमाक्रैसी का कायम होना।
डिमाक्रैसी में अस्सी की सदी हिन्दू बीस फी सदी मुसलमानों पर हुकूमत
गे, उनको गुलाम बनाकर रखेंगे।"

'मैं पूछना हूँ यह खयाल ही क्यों ? हिन्दू मुसलमानों को गुलाम
एँगे ?" आश्चर्य में जगतप्रकाश ने पूछा, "क्या हम लोग मज़हब से ऊपर
कर मनुष्यता को नहीं अपना सकते ?"

जमील ने जगतप्रकाश का हाथ पकड़कर दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए
ा, "कहना आसान होता है लेकिन करना बड़ा मुश्किल होता है। फिर
क्या भूल जाते हो कि मुसलमानों ने करीब आठ सौ साल हिंदुओं पर
मत की है, उन्होंने हिंदुओं से गुलामी करवाई है। उनकी करनी ही अब
म यह खौफ पैदा कर रही है। इस खौफ की कोई ठोस बुनियाद है या
ी, इस पर कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन यह खौफ एक हकीकत है और
ेगा।" काउण्टर के पास आकर जमील ने चाय के दाम अदा किये, फिर
हर निकलते हुए वह बोला, "जहां मज़हब है, वहां मज़हब की कट्टरता भी
। एक मज़हब दूसरे मज़हब को खा जाने की कोशिश करेगा। मज़हब से
मारा मतलब उन अकीदों और पाक खयालों से नहीं है जिनकी बुनियाद
र मज़हब कायम होते हैं, मज़हब से हमारा मतलब उन सामाजिक इकाइयों
हैं जिनमें हम पैदा होते हैं, जिनमें हम पलते हैं, जिनके मुताबिक हम सोचते-
मझते हैं। गांधी इसी सामाजिक इकाई का नेता है। गांधी के पास दयानन्द
सब परोगराम हैं, और उन परोगराम के साथ भी गांधी के पास न जाने
कितने परोगराम हैं। एक खुल्लमखुल्ला मुस्लिम विरोध को छोड़कर।

इसलिए मुसलमानो के लिए गाधी दयानन्द से ज्यादा खतरनाक है।

इस समय रात हो रही थी और ओपेरा हाउस का सारा क्षेत्र मे जगमगा रहा था। दोनो अब लैमिंग्टन रोड पर चल रहे थे, और निरुद्देश्य-से। जगतप्रकाश एक अजीब उलझन मे पडा हुआ था। ने जो बात कही थी उनमे कही कुछ सत्य है, और वह सत्य भयानक से भरा है, यह स्पष्ट था। एक ठडी सास लेकर उसने कहा, "समझा जाए कि हिन्दुस्तान तब तक स्वतन्त्र नही होगा जब तक मुस्लिम समस्या यहा मौजूद है। हिन्दू-मुस्लिम समस्या का हल है, इसलिए हिन्दुस्तान कभी स्वतन्त्र होगा ही नही।"

जमील के मुख पर एक धुधलापन आ गया, "नही—यह गुलामी, इसके कयाम से ही दिल काप उठता है—नही, नही है। लेकिन यह हिन्दू मुस्लिम समस्या बेतरह उलझी हुई है। हालात मे यह सुलझ भी नही सकती। जिन्ना का पाकिस्तान वाला एक हल सामने रखता है लेकिन यह मुल्क का बँटवारा। साथ करोडो हिन्दू-मुसलमान एक जगह से उखडकर दूसरी जगह मुमकिन नही दिखाई देता। दूसरा रास्ता भी था, देश के सब हिन्दू हो जाएँ, या मुसलमान हो जाएँ। अकबर ने कोशिश की इलाही की शक्ल मे एक नया मजहब चलाने की, लेकिन अकबर नही रहा। और हिन्दू धर्म मे अब यह ताकत नही रही कि वह दूसरे के लोगो को अपने अन्दर ले सके। इस्लाम के पास सिवा उसकी और कुर्बानियो से भरी हिंसा के और कोई ताकत नही हिन्दुस्तान को मलाया या हिन्देशिया की तरह मुस्लिम देश बना और यह युग कट्टरता-हिंसा का रहा नही। इस सबका नतीजा यह गुलामी हमारी छाती पर चढ बैठी है। कोई रोशनी नही दिखती, रूस की तरफ से जहा मजहब को निकाल बाहर किया गया है। जहा है वहाँ मजहबी भेदभाव होगा ही, मजहबी भेदभाव के साथ कट्टरता का होना लाजिमी है, और मजहबी कट्टरता के मानी हैं खून-खराबे हमे इस मजहब को ही नेस्त-नाबूद करना होगा।"

थोडा-सा रुककर जमील ने मानो फिर अपने से ही कहना शुरू

ाह मज़हब वजात खुद एक गुलामी है, लेकिन सवाल यह ह कि इसे ंकैसे जा सकता ह ? फिर सवाल यह है कि इन्सान गुलामी को छोड ाकता है ! यह गुलामी तो वह लिखाकर लाया है। हम सबको किसी-ानी की गुलामी करनी ही पडती है। यह जा ए० आई० सी० सी० का ाही रहा है, इसमे गाधीजी की तरफ से सरदार वल्लभभाई काग्रेस-ज़ो, यानी आजादी की लडाई लडने वाला को गुलामी का तौक पहना ा। हम लोगो को गुलामी का तौक पहनना पडेगा, क्योकि हमे देस की ादी हासिल करनी है। और मै समझता हूँ कि देस को आज़ाद होना ाए। इस आज़ादी के बाद, बहुत मुमकिन है कि इस आजादी के बाद एक वडा खून-खराबा हो, लेकिन हम मौका ता मिलेगा कि हम खुद-ार हाकर मदानगी के साथ अपने मसलो को खुद हल कर ले। ाए मैं महात्मा गाधी वाली गुलामी के तौक के हक मे हूँ। वसे म गाधी ाथ नही हूँ, कदम-कदम पर मेरा गाधी के उसूला से मतभेद है, लेकिन ाधी के इस मूवमेण्ट के साथ हूँ, क्याकि यह मूवमेण्ट ब्रिटिश साम्राज्य-ा के खिलाफ है। जग के वक्त यह आपसी फूट और भेदभाव घातक ा। हर फौज का एक जनरल होता है, उस जनरल के खिलाफ जाने के ा है वगावत। नही, सरदार पटेल की वात हम सबको माननी ही ाी।"

ा दोना अब ग्राण्ट रोड पर आ गए थे, और जगतप्रकाश ने देखा कि ा कार उनकी बगल मे आकर रुकी। उस कार पर कुलसुम थी, बिल्कुल ाली। कुलसुम न जगतप्रकाश और जमील को कार पर बिठाया, फिर वह ार चलाती हुई बोली, 'मेरा मन नही लगा वहा पर। कितना बनावटी-ा था वहा लोगा मे—शक्ल-सूरत म बनावटीपन, बातचीत मे बनावटीपन!" ार वह जमील से बोली, "आप मेरे घर चलेगे या आपको आपके घर ाार दू ?"

'मेरे घर तक पहुँचा देने मे आपको तकलीफ होगी, मैं यहाँ से वस या ाम ले लूगा। सुवह से निकला हूँ, बहुत थक गया हूँ। अब अपने घर पर ही ाकर आराम करूँगा।"

कुल्सुम ने कार वाम्ब-सट्रल की ओर मोड दी, "आपको आपके घर

उतारे देती हूँ चलकर, इसमें तकलीफ की क्या बात !"

जमील को उसकी चाल के पास उतारकर कुलसुम ने अपनी दादर की तरफ बढ़ाई। जगतप्रकाश ने कुलसुम से पूछा, "क्या नहीं वापस चल रही हो ?"

"नहीं, मैं इन घरों से आजिज आ गई हूँ। आलीशान इमारतें और घुटन से भरे हुए कमरे उन कमरों में शराब के दौर, ... भरी बातचीत, या फिर जिन्दगी को तल्ख बना देने वाला फ़िक्र। घबराकर ही भागी हूँ। मैं शान्ति चाहती हूँ, मैं एकान्त चाहती हूँ।

कार अब तेज़ी के साथ दौड़ रही थी। दादर के बाद माटुंगा, बाद महीम, फिर बान्द्रा, और फिर आगे एक छुटपुट बस्ती जो खार थी। और अब सान्ताक्रुज़। सान्ताक्रुज़ पार करके कार बाईं ओर ... अब जगतप्रकाश की दाईं ओर एक बहुत बड़ा मैदान था। तभी एक ... सा हवाई जहाज़ सर्चलाइट के सहारे उस मैदान पर उतरा। कुलसुम के ... पर एक मुसकराहट आई, "यह बम्बई का एयरोड्रोम है ... एयरोड्रोम। यहाँ हवाई जहाज़ का एक क्लब है। एक दफा एक ... जहाज़ पर उड़ी भी हूँ यहाँ—बड़ा डर लगता है। रात के वक्त ... हवाई जहाज़ चलाने लगे हैं।' कार चली जा रही थी और कुलसुम ... रही थी, 'सामने जुहू का समुद्र-तट है। क्षितिज तक फैला हुआ अथाह ... और समुद्र की लहरों का शोर बरसात में कभी-कभी बेतरह बढ़ जाता है।' कार अब दाहिनी ओर घूम पड़ी। बाईं ओर कुछ छोटे-छोटे कॉटेज ... दाहिनी ओर एयरोड्रोम का मैदान। उन कॉटेजों के पीछे समुद्र ... जो रात के अन्धकार में नहीं दिख रहा था। और अब कार एक ... पर रुकी जहाँ से समुद्र का किनारा साफ दिखाई देता था। कुलसुम ने ... से उतरते हुए कहा, 'आज भीड़ बहुत कम है। अच्छा ही है, भीड़ से ... के लिए ही तो यहाँ आई हूँ।' कुलसुम के मुख पर एक फीकी मुस्कान आई, 'लेकिन ये भीड़ से बचने वाले खुद अपनी एक भीड़ बना लेते ... शायद इन्सान अकेला रह ही नहीं सकता। मैं अकेलापन चाहती थी ... मैं तुम्हें अपने साथ लेती आई। यह अकेलापन भी हमलोग अकेले ... भोगना चाहते।"

लसुम की बगल म जगतप्रकाश चल रहा था, और उसने अनुभव कि कुलसुम के हाथ म उसका हाथ आ गया ह, और उसने भी कुलसुम थ पकड लिया है। उसे एमा लगा कि कुल्सुम को चलने मे कुछ धा हो रही है, यानी कुलसुम उसका सहारा चाहती है। वह कुल्सुम हारा दकर चलने लगा। रेत पर थोडी दूर चल्ने पर कुलसुम रुकी, से करीव पन्द्रह गज की दूरी पर दोना रत पर बैठ गए। अब प्रकाश ने कुल्सुम को गौर से देखा, दूर सडक के किनारे लैम्पपास्ट क प्रकाश मे उस कुल्सुम बेतरह थकी हुई और उदास दिखी। कुल्सुम ाप सागर के वक्ष पर फैले हुए अधकार को देख रही थी, मानो वह अधकार के अन्दर छिपी हुई किसी प्रकाश की किरण को खोज रही। थोडी देर तक दोना चुपचाप वैठे रहे, फिर उस मौन को जगतप्रकाश डा, "क्या सोच रही हो ? बडी उदास हो ! '

। वडे शान्त भाव से कुलसुम ने कहा, "हा, उदास हूँ, बहुत ज्यादा उदास यह सामने जो समुद्र देख रहे हो, कुछ सुनाई पडता है कि कितनी बुरी कराह रहा है, कितनी उथल-पुथल है इसकी छाती मे ! कितना दद हुए है यह अपने दिल म ! और इस रात के अँधियारे मे लहरो के फेन ह चमक देख रहे हो जो उठने के साथ ही गायब हो जाती है। और मैं रही हूँ कि आखिर यह सब कैसा तमाशा है और यह तमाशा क्या है ?"

जो कुछ कुलसुम देख रही थी या अनुभव कर रही थी, जगतप्रकाश के र वह सब नितान्त अनजाना था। उसने कहा, "शायद तुम्हारे अन्दर की उदासी इस प्रकृति मे अपने लिए हमदर्दी और सवदना ढूढ रही है। हारे अन्दर वाली यह उदासी समुद्र पर छा गई है।"

कुल्सुम न जगतप्रकाश के मुख की आर देखा, शायद जगतप्रकाश के के भावा को पढने के लिए, लेकिन उस अधकार मे उसे कुछ ी मिला, एक ठडी साम लेकर कहा, "मेरे अन्दर वाली उदासी इस द्र पर छा जाती, लेकिन उस उदासी का कोई असर इसान पर नही ता। इसीलिए तो मैं यहाँ, इस एकान्त म आई हूँ। लेकिन जैसे मेरी यह ासी मुझ खा जाएगी। यह अकेलापन जैसे मुझे खा जाएगा। इसीलिए मैं ह अपने साथ लेती आई हूँ। तुम मेरे अन्दर वाले दद के खामोश गवाह

हा, मुझे इस बात की तसल्ली है।"

जगतप्रकाश को कुलसुम की बातो मे आश्चर्य हो रहा था, उलझन भी हो रही थी। उसने कुछ चुप रहकर पूछा, "लेकिन समझ म कुछ नही आ रहा है। आखिर बात क्या है जो तुम रहना हो ?"

कुलसुम ने जगतप्रकाश की बात का कोई उत्तर नहा दिया जगतप्रकाश के हाथ पर अपना हाथ रख दिया। कुलसुम का ह ठडा था जसे उसम प्राण ही न हो। चुपचाप बैठी हुई वह सनु देखती रही फिर उसने बहुत धीमे स्वर मे कहा, "तुम बहुत भा तुम्हारी समझ म मेरी बात नही आ रही, तुम्हारी समझ म आ रहा।" कुल्सुम ने अब अपना सर जगतप्रकाश के कधे पर रख "मैं भी कितनी बेवकूफ हूँ जो अपने-आपको खो बैठी। कुछ भी हुआ है मुझे, मैं वैसी-की वसी हूँ। इसमे उसका कोई कसूर नहा उसे रोकने की कोशिश भी तो नही की, शायद मैंने उसे रो नही। वह इस वक्त पिक्चर देख रहा होगा, हँस रहा होगा, रगीनी मे डूबा हुआ, एक तरह के नशे की हालत मे।"

कुलसुम न जगतप्रकाश के कधे से अपना सर हटा लिया, एक साथ वह उठ खडी हुई, 'कितना सुहाना मौसम है, सपना से भरा हुआ समुद्र का किनारा! यहा कितनी शाति से भरी हलचल है।" वह दौडने लगी। काफी दूर तक वह दौडती हुई चली गई और दौडती हुई भी आई। जब वह हँस रही थी, 'जिन्दगी उलझाव नही है, यह उल ही जिन्दगी को तल्ख बनाता है। बेचारा जसवन्त! वह उलझाव मे रहा है और उसे उस उलझाव म फँसने से कोइ बचा नही सकता।" अब जगतप्रकाश की बगल मे खडी हो गई, उसके बहुत निकट, तुम तक किसी उलझाव मे नहीं फँसे, सच कहना ?"

उस पागलपन से भरे वातावरण मे मानो जगतप्रकाश सब कुछ गया हो वह यह भूल गया कि यमुना के साथ उसकी वरिच्छा हो यमुना को उसने खुद पसन्द किया है। उसके मुख से निकला, 'नही।"

'तुम किस्मत वाले हो। मैं तुमसे कहती हूँ कि तुम किसी उल

जाना। तुम मुझे बहुत पसन्द हो, अगर मैं तुमसे कहूँ कि तुम उतने
नज़दीक हो जितना जसवन्त है, तो गलत न होगा।" कुलसुम ने
र जगतप्रकाश के माथे को चूम लिया।
न चुम्बन मे कितनी शीतलता थी, कितना पुलक था, जगतप्रकाश
ा के लिए जैसे सब-कुछ भूल गया। फिर उसने अपने को सँभाला।
हा, "काफी देर हो गई है, बादल भी घिरने लगे है। अब चला
,

लसुम ने कहा, "हा, अब चला जाए। मन मे जो एक बोझ सा था
र गया। मुझे जसवन्त से जरा भी शिकायत नही है, मैं जसवन्त से
न नही करती थी। वह एक अच्छे साथी की तरह मेरी ज़िन्दगी मे
ता नही वह अब इस शक्ल मे रह सकेगा। मुझे ऐसा लगता है कि
सका साथ छूट रहा है—नही, छूट गया है और मैं अकेली रह गई
स अकेलेपन ने मुझे आज झकझोर-सा दिया था। तभी तुम मिल
' कुलसुम चलती जाती थी और कहती जाती थी, "पता नही, कब
रा साथ निभा पाओगे! कौन किसका साथ निभा पाया है? इस
। म हरेक की अलग-अलग ज़िन्दगी है, अलग-अलग रास्ता है। और
ी का यह रास्ता, कितना अनजाना, कितना अँधियारा! फिर भी
स्ते पर चलते जाना है। कही कोई सराय नही, कही कोई आरामगाह
स रास्ते पर, लगातार चलते रहना।" दोनो अब कार के पास पहुँच
। कुलसुम की बगल मे जगतप्रकाश बैठ गया और कुलसुम ने कार
की। उसकी बातचीत बन्द हो गई थी, वह नितान्त शान्त थी।
जिस समय जगतप्रकाश कुलसुम के साथ घर पहुँचा, दस बज रहे थे।
म ने जगतप्रकाश को कार से उतारते हुए कहा, "अरे, मैं तो भूल ही
ो। कार मैं लेती आई हूँ, डैडी और ममी वहाँ मेरा इन्तजार कर रहे
तुम खाना खाकर सो जाना, जसवन्त शायद ही आए। हम लोगो के
। मे देर हो सकती है।" कुलसुम चली गई।
बेयरा जगतप्रकाश की प्रतीक्षा कर रहा था, उसने कहा, "वह जसवन्त
, अभी दस मिनट हुए वापस लौटे हैं, खाना खाकर आए हैं। आप
खा लें, वह साहब सोने चले गए है।"

खाना खा कर जगतप्रकाश कमरे मे पहुँचा। कमरे म अ
लेकिन विजली का पखा चल रहा था। जगतप्रकाश ने कपडे ब
लाइट जलाई, तभी उसे जसवन्त की आवाज़ सुनाई दी, "
बडी देर लगा दी तुमने। शाम कैसी वीती ?" जसवन्त उठकर
"सोने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन नीद नही आ रही है।
गये तुम ?"

जगतप्रकाश ने आधी ही बात बतलाई, "जमील के साथ ३
निरुद्देश्य-सा। लेकिन तुम बहुत जल्दी लौट आए।"

"हा, पिक्चर के बाद गुजरात होटल मे डिनर, फिर मुझ
छोड गया। लेकिन इतना कह सकता हूँ कि शाम बडी अ
शर्मिष्ठा इतनी बुरी नही है जितना मैने उसे समझ रखा था।
मान लडकी है।"

जगतप्रकाश के मुख पर मुसकराहट आई, "कुल्सुम के
बुद्धिमान ?"

जसवन्त कपूर कुछ सोचता रहा, फिर वह भी मुसकराया,
उससे कुछ कम, या फिर उससे कुछ अधिक। स्त्री तो भावनामय
लेकिन आज की वौद्धिक दुनिया मे हरेक पढी लिखी लडकी यह
प्रयत्न करती है कि उसकी बुद्धि उसकी भावना पर हावी हो,
कुल्सुम हो, चाह वह शर्मिष्ठा हो। हरेक स्त्री को हम भावनामय
रूप म स्वीकार करना होगा। हरेक स्त्री की बुद्धि उसकी भावना
है। हम स्त्री से बुद्धि की अपेक्षा नही करनी चाहिए। और सब
वौद्धिक स्त्री है उससे अधिक खतरनाक प्राणी तुम्हे नही मिलता।
स्त्री से दूर रहना ही ठीक होगा।"

जगतप्रकाश के सामने अनायास ही उसकी बहन का चित्र
और उसके बाद ही यमुना का चित्र आ गया। दोनो ही नितान्त
मयी, और दोनो म कितनी ममता, कितना आत्म-बलिदान
सयम !

जगतप्रकाश ने लाइट बुझाई और वह बिस्तर पर लेट गया।
ने करवट बदल ली। जगतप्रकाश की आँखो के आगे

ाँ आ गया जो उसने जूहू के तट पर देखा था। यह कुलसुम—क्या
द्रक है? क्या यह भावनामयी है? जो कुछ भी हो, कुलसुम नेक है,
, भोली है। कुलसुम उसके जीवन मे एक पुलक बनकर आई है,
ि और कहा तक वह इसी पुलक के रूप म उसके जीवन म रहेगी?
रे एक नशा-सा नीद का, थकान और शान्ति का उस पर छान

९

जिस समय जगतप्रकाश लाइब्रेरी से निकला, उसका
था। अपने दिन-भर के काम से वह उस दिन बहुत सन्तुष्ट था, उ
थीसिज का अन्तिम परिच्छेद लिखना आरम्भ कर दिया था।
अधिक एक महीना लगेगा उसे अपनी थीसिज पूरी करने में।
तीसरा सप्ताह तो अभी चल ही रहा था, नवम्बर के अन्त तक
थीसिज टाइप हो जाएगी। उसके उस समय तक के काम से उसक
बहुत सन्तुष्ट थे, यही नही उन्होंने उससे वादा कर लिया था कि व
थीसिज स्वीकार करके जनवरी मे परीक्षको के पास भेज देंगे।
जनवरी से उसके विभाग के डॉक्टर सघी एक साल की छुट्टी पर
रहे है, उनके स्थान पर जगतप्रकाश को स्थानापन्न लेक्चरर
भी उसके प्रोफेसर ने कर दिया था।

जगतप्रकाश जब सडक की ओर बढा, उसे कमलाकान्त
सुनाई दी, "तो तुम अपना काम खत्म कर चुके, चलो मैं भी साथ
हूँ। डाकगाडी से जसवन्त कपूर आ रहा है दिल्ली से, उसने लिख
इस बार वह मेरे साथ ही ठहरेगा। उसे रिसीव करने स्टेशन जाना।
अगर तुम्हे कोई काम न हो तो मेरे साथ चलो, सिविल लाइन्स मे हो
चाय पिएँगे। गाडी आने मे तो अभी ढाई-तीन घण्टे की देर है।"

जगतप्रकाश के हाथ मे किताब और कापियो का गड्ड
कमलाकान्त से कहा, "इन किताबो को तो अपने कमरे मे रखना
इन्हें लादकर कैसे चलूँ। सच बात तो यह है कि अच्छे-से-अच्छे
चाय भी मुझे अपनी बनाई हुई चाय के मुकाबले बस्वाद लगती है

ामरे मे पीकर चला जाए तो अच्छा हो।"
ामलाकान्त मुसकराया, "बात तो ठीक कहते हो, चलो चाय तुम्ही ा चलकर। लेकिन होटल का एक अपना मजा होता है।"
ापने कमरे मे आकर जगतप्रकाश ने चाय बनाई, कमलाकान्त चुपचाप हुआ सिगरेट पीता रहा और कुछ सोचता रहा। चाय का प्याला ाकान्त के हाथ मे देते हुए जगतप्रकाश ने कहा, "बडे गम्भीर होकर ोच रहे हो, क्या बात है?"
"बात तो कोई खास नही है। मैं सिर्फ इतना सोच रहा था कि यह न्त कपूर, इस दफा यह अपने सगे चचा के यहाँ न ठहरकर मेरे साथ ठहर रहा है? उसने मुझे खास तौर से ताकीद कर दी है कि उसके या उसके किसी रिश्तेदार को उसके इलाहाबाद आने की खबर न पाए। आखिर रहस्य क्या है?"
"लेकिन तुम दूसरो का रहस्य जानने को उत्सुक क्यो हो?" जगत-ा ने पूछा, "जहाँ तक मेरा अनुमान है, मैं समझता हूँ कि जसवन्त कपूर म कोई रहस्य है ही नही, न हो सकता है। फिर दो-तीन घण्टो के बाद ुम्हे सब-कुछ मालूम ही हो जाएगा।"
चाय पीकर दोनो स्टेशन पहुँचे। गाडी आधा घण्टा लेट थी, और य ा गाडी आने के समय से आधा घण्टा पहले पहुँच गए थे। एक घण्टा— एक घण्टा या उससे भी कुछ अधिक समय बिताना था इन दोनो । जगतप्रकाश ने कहा, "चलो चौक तक हो आएँ चलकर, यहाँ एक ा हम लोग क्या करेंगे?"
'नही, वहाँ से लौटने मे अगर कुछ देर हो गई तो? फिर यह मल ट्रेन ाह कुछ मेकअप भी कर सकती है। चलें, वटिंग रूम मे बैठते हैं चलकर, ाफ्रेशमेण्ट रूम मे चाय का आर्डर देते हुए चलते हैं। एक-एक प्याला चाय और हो जाए।"
वेटिंग रूम के बीच मे मेज के सामने पडी हुई दो कुरसियो पर ोनो बैठ गए। कमलाकान्त ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "आज की ार पर तुमने ध्यान दिया? चेकोस्लोवाकिया ने जर्मनी के आगे आत्म-ाण कर दिया। ब्रिटेन और फ्रांस चुपचाप बैठे हुए यह सब देखते रहे

और एक और स्वतन्त्र देश यूरोप के नक्शे से गायब हो गया।"

जगतप्रकाश ने एक ठडी सास भरी, "पहले आस्ट्रिया स्लोवाकिया। प्रसार और विस्तार का यह क्रम ! जमनी दानव की भाति और अब इसके आगे ?

"और उसके आगे पोलैण्ड ! पोलैण्ड के एक भाग को घोपित कर चुका है—पिछले महायुद्ध के पहले वह भाग भी। उस पर जमनी का ज़बदस्त दावा है।

"यह इतने दावे एकाएक एक ही समय मे कसे उठ खडे हुए का अथ होता है युद्ध। एबीसीनिया और स्पेन—इन दो स्थाना म ब्रिटेन ने कोई हस्तक्षेप नही किया, लेकिन यह जमनी के प्रसार ही दूसरा है। जमनी के प्रसार और विस्तार से फ्रास बडा खतरा है।" जगतप्रकाश के स्वर मे एक हलकी-सी उलझन थी।

तभी जगतप्रकाश ने अनुभव किया कि उससे कुछ फासले पर बैठा हुआ एक यूरोपियन अपनी जगह से उठकर उनकी मेज के एक खाली कुरसी पर आकर बैठ गया। कमलाकान्त ने शायद इस ध्यान नही दिया। वह बोला, "खतरे तो राष्ट्रो के दृष्टिकोण पर हैं। अगर जमनी से किसी बडे राष्ट्र का वास्तविक खतरा हो वह है सोवियत रूस। ब्रिटेन और फ्रास यह जानते है कि जमनी वाद रूस के समाजवाद यानी कम्यूनिज्म का सबसे बडा शत्रु है। साम्राज्यवादी देशा को अगर किसी से कोई खतरा हो सकता है समाजवादी रूस से। इस रूस के खिलाफ एक नया शक्तिशाली वादी राष्ट्र खडा हो रहा है। फ्रास और ब्रिटन के और मुख्य अनुदार नेताआ म यह भावना है कि वे जमनी को बढावा दें। ब्रिटेन और फ्राम का अहित नही करेगा। अगर सच पूछा जाए तो का अभ्युदय भारतीय हितो का सहायक नही है।"

उस श्वेत आदमी ने शुद्ध हिन्दी म पूछा, "क्या आप विश्व के विद्यार्थी हैं ?"

कमलाकान्त उस व्यक्ति की ओर घूमा, "हाँ, हम लोग इस यूनि मे रिसच कर रहे हैं।" उसने अग्रेजी म कहा है, "आप कौन हैं ?"

ने फिर हिन्दी मे कहा, "मेरा अग्रेजी का ज्ञान उतना ही है जितना ा है। मेरा नाम शाइनर है और मैं जमन हूँ। मैं कलकत्ता विश्व- य मे दशनशास्त्र का प्राध्यापक हूँ। यहाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय मीटिंग मे आया था। हाँ, तो आप लोगा का जो यह मत है कि ब्रिटेन और फ्रास का मित्र है, वह गल्त है।"

मलाकान्त ने सम्हलकर कहा, "इधर हाल की घटनाओ से तो ऐसा गता। आप इस बात को कैसे साबित कर सकते हैं कि जमनी ब्रिटेन ास का शत्रु है?"

ाइनर ने इस बार ध्यान से इन दोनो को देखा, शायद वह सोच रहा कहाँ तक इन दोनो से खुला जाए। फिर जैसे उसने मन-ही-मन ले लिया हो, उसने कहा, "जमन राष्ट्र सबसे महान् राष्ट्र है, जमनी ासी विशुद्ध आय हैं। शौय और प्रतिभा मे आय जाति हमेशा अग्रणी , वह हमेशा अग्रणी रहेगी। पिछले महायुद्ध मे उस जमनी के विरुद्ध फ्रासीसी और रूसी—ये सब मिलकर लडे थे। इन देशा के पास बडे- ाम्राज्य थे। अपने साम्राज्यो के गुलामा को भेड-बकरिया की भाति र इन देशा न जमनी को पराजित किया था। और फिर इन्होंने ा के खण्ड-खण्ड करके उसे अपमानित किया, उसकी शक्ति कम की, विकास को रोकन का प्रयत्न किया। वास्तविकता यह है कि जमनी मुख शत्रु ब्रिटेन है, अपन विशाल साम्राज्य के बल पर मदमस्त। वह अपमानित और पराजित जमनी फिर से सुसगठित हुआ है, एक ा स्फूर्ति को लेकर वह जागा है।"

कुछ रुककर उसने फिर कहा, "रूस—बबर और असभ्य रूस—वह जमन विचारक काल मार्क्स का ही तो मानसिक गुलाम है। मार्क्स- जमना के दशन और विचारो की ही एक कडी है जिसके बहुत आग ा-दशन बढ गया है। रूस ने साम्यवाद को एक अन्तराष्ट्रीय नारे के रूप ीकार किया ह। अन्तर्राष्ट्रीयता का नारा स्वय मे एक ढाग है, एक व्यहारिकता है। युग का सत्य है राष्ट्रीयता और नेशनल सोशलिज्म के म जमनी की विचारधारा मार्क्स की विचारधारा को बहुत पीछे छोड ा है। रूस अपनी ही राष्ट्रीय विकृतियों का शिकार बन रहा है। उतना

विशाल देश—उसे क्षणो मे ही परास्त किया जा सकता है। राष्ट्रीय भावना के अभाव के कारण उसमे स्वाभिमान और है—अपनी इन विकृतियो के कारण वह ह्रासोन्मुख है। रूस से नही है, पिछले महायुद्ध म हमने रूस को कुछ दिनों म कर दिया था। हम हारे थे ब्रिटेन, फ्रास और अमेरिका की से। और एक सशक्त जमन राष्ट्र से अगर किसी को खतरा तो वह फ्रास और ब्रिटेन को जो अपने बडे-बडे साम्राज्य देशा और राष्ट्रा को गुलामी मे जकड चुके हैं, और उनका रहे हैं।"

शाइनर की वाता से कमलाकान्त प्रभावित हुआ, लेकिन नही। कुछ महीन पहले ही जगतप्रकाश ने हिटलर का पढा था। उसने कहा 'लेकिन हिटलर का यह दावा कि जाति ही सबसे अधिक श्रेष्ठ और उन्नत जाति है, वह जाति ही सभ्य और सुसस्कृत बनाएगी, इस पर आपको क्या कहना है?"

वह शाइनर, जो वडी शिष्टतापूवक और वडी शान्ति क वात कह रहा था, एकाएक तनकर खडा हो गया। उसके स्वर म की तेजी आ गई, "हिटलर का दावा गलत नही है। जिस जाति है, आत्मसम्मान है, वीरता है उस जाति का ही आधिपत्य होगा। हम दूसरो पर गुलामी नही आरोपित करना चाहते, हमारे हाथ वल है कि हम अपने ही श्रम से सुसम्पन्न रहे। हम दूसरा को सुसस्कृत बनाना चाहते ह हम इन वडे साम्राज्यवादी देशों क रके शोषण और उत्पीडन बन्द करना चाहते है। जमनी अमर है। वहुत जल्दी तुम जमनी की शक्ति दखोगे। लेकिन मैं तुम यह विश्वास दिलाता हूँ कि जमनी की विजय से भारतवष का होगा, अहित नही होगा।' शाइनर जहा वह पहले वैठा था, को मुडा।

कमलाकान्त ने शाइनर को रोका, 'क्षमा कीजिएगा, हमम आपके राष्ट्र का अपमान करने की भावना तनिक भी नही थी। हम यह सोचते हैं कि क्या दूसरा युद्ध, जो सम्भवत भयानक रूप से

ावश्यक है ? आप जानते ही हैं कि हमारा राष्ट्र ही अहिंसा का एक
ा प्रयोग कर रहा है।"
तुम्हारी यह अहिंसा कायरता से भरा एक ढोंग है, लेकिन मैं न तो
नेताओ को कोई दोष देता हूँ और न तुम्हारे देशवासियो को। एक
त्व से गुलामी करने वाले राष्ट्र मे कही तो कोई आधारमूल दोष
गा, और वह आधारमूल दोष तुम्हारी अहिंसा वाली कायरता है।
ी यह आधारमूल कायरता ही इस युग मे अहिंसा का एक नया बौद्धिक
पहनकर आगे आ रही है।"
जगतप्रकाश को शाइनर की यह बात अखर गई, "आप हमारे धर्म
हमारे सबसे पूज्य नेता का अपमान कर रहे है।"
एक व्यग्यात्मक मुसकराहट शाइनर के मुख पर आई। अपमान!
न तो शक्तिशाली, स्वाभिमानी और वीर पुरुषो का हुआ करता है।
न स्वाभिमान है, न वीरता है, तुम लोग किसी स्वाभिमानी और
पुरुष का आदर करना तो दूर रहा, उसे बर्दाश्त तक नही कर सकते,
केवल गुलामी कर सकते हो, नही तो सुभाष इतना लाछित करके
स से निकाल न दिया गया होता। तुम ढोंग और आडम्बर की ही पूजा
सकते हो, और इसीलिए यह मक्कार और ढोंगी अंग्रेज जाति अपने
ढाई लाख आदमियो द्वारा इस पैंतीस करोड की आबादी वाले देश पर
सन कर रही है।"
जैसे कोडे पड रहे हो जगतप्रकाश पर, वह तिलमिला उठा। लेकिन
की सारी तिलमिलाहट एक घुटन के रूप मे ही रह गई, क्योकि सत्य
इनर के पास था। इस समय तक बेयरा चाय रख गया था इन लोगो के
मने। कमलाकान्त ने शाइनर से कहा, "आप भी हम लोगो के साथ चाय
जिए!"
"नही, मै अभी कुछ देर पहले कॉफी पी चुका हूँ।" शाइनर अब शात
गया था, "मुझे क्षमा करना मित्रो, जो मैं इतनी अप्रिय और कटु बात
ह गया। तुम लोग ईमानदार और भावनात्मक आदमी दिखाई देते हो,
म लोग अंग्रेजो की गुलामी से मुक्ति पाना चाहते होगे, वह मुक्ति आ रही
। न जाने किस दिन और किस समय यूरोप मे विश्व-युद्ध का श्रीगणेश

विशाल देश—उसे क्षणा म ही परास्त किया जा सकता है, अपने अन्त राष्ट्रीय भावना के अभाव के कारण उसम स्वाभिमान और गौरव का अभाव है—अपनी इन विकृतिया के कारण वह ह्रासो मुख है। हमारा शत्रु रूस से नही है, पिछले महायुद्ध मे हमने रूस को कुछ दिनों म ही समाप्त कर दिया था। हम हारे थे ब्रिटेन, फास और अमेरिका की असीमित शक्ति से। और एक सशक्त जमन राष्ट्र से अगर किसी को खतरा हो सकता है तो वह फ्रास और ब्रिटेन का जो अपने बडे-बडे साम्राज्य बनाकर अन्य देशा और राष्ट्रा को गुलामी मे जकड चुके हैं, और उनका शोषण कर रहे हैं।"

शाइनर की बाता से कमलाकान्त प्रभावित हुआ, लेकिन जगतप्रकाश नही। कुछ महीने पहले ही जगतप्रकाश न हिटलर का 'मीन काफ' पढा था। उसने कहा, "लेकिन हिटलर का यह दावा कि विश्व मे आर्य जाति ही सबसे अधिक श्रेष्ठ और उन्नत जाति है, वह जाति ही विश्व को सभ्य और सुसस्कृत बनाएगी, इस पर आपका क्या कहना है?"

वह शाइनर, जो बडी शिष्टतापूवक और बडी शान्ति के साथ अपनी बात कह रहा था, एकाएक तनकर खडा हो गया। उसके स्वर मे एक तरह की तेजी आ गई, हिटलर का दावा गलत नही है। जिस जाति म पौरुष है आत्मसम्मान है, वीरता है, उस जाति का ही आधिपत्य होगा विश्व मे। हम दूसरो पर गुलामी नही आरोपित करना चाहते, हमारे हाथो मे इतना बल है कि हम अपने ही श्रम से सुसम्पन्न रह। हम दूसरो को सभ्य और सुसस्कृत बनाना चाहते ह, हम इन बडे साम्राज्यवादी देशा को नष्ट करके शोषण और उत्पीडन बन्द करना चाहते है। जमनी अमर है, अजय है। बहुत जल्दी तुम जमनी की शक्ति देखोगे। लेकिन मैं तुम लोगो को यह विश्वास दिलाता हूँ कि जमनी की विजय से भारतवष का हित ही होगा, अहित नही होगा।" शाइनर जहा वह पहले बैठा था, उधर जाने को मुडा।

कमलाकान्त ने शाइनर को रोका, "क्षमा कीजिएगा हमम आपका न आपके राष्ट्र का अपमान करने की भावना तनिक भी नही थी। हम लोग यह सोचते हैं कि क्या दूसरा युद्ध, जो सम्भवत भयानक रूप से विध्वसक

गा, आवश्यक है ? आप जानते ही हैं कि हमारा राष्ट्र ही अहिंसा का एक हुत बडा प्रयोग कर रहा है।"

"तुम्हारी यह अहिंसा कायरता से भरा एक ढोग है, लेकिन मैं न तो तुम्हारे नेताओ को कोई दोष देता हूँ और न तुम्हारे देशवासियो को। एक हजार वष से गुलामी करने वाले राष्ट्र मे कही तो कोई आधारमूल दोष रहा होगा, और वह आधारमूल दोष तुम्हारी अहिंसा वाली कायरता है। तुम्हारी यह आधारमूल कायरता ही इस युग म अहिंसा का एक नया बौद्धिक जामा पहनकर आगे आ रही है।"

जगतप्रकाश को शाइनर की यह वात अखर गई, "आप हमार धम और हमारे सबसे पूज्य नेता का अपमान कर रहे है।"

एक व्यग्यात्मक मुसकराहट शाइनर के मुख पर आई। अपमान ! अपमान तो शक्तिशाली, स्वाभिमानी और वीर पुरुषा का हुआ करता है। तुममे न स्वाभिमान है, न वीरता है, तुम लोग किसी स्वाभिमानी और वीर पुरुष का आदर करना तो दूर रहा, उस बर्दाश्त तक नही कर सकते, तुम केवल गुलामी कर सकते हो, नही तो सुभाष इतना लाछित करके काग्रेस से निकाल न दिया गया होता। तुम ढोग और आडम्बर की ही पूजा कर सकत हो, और इसीलिए यह मक्कार और ढोगी अग्रेज जाति अपन दो-ढाई लाख आदमियो द्वारा इस पैंतीस करोड की आवादी वाले देश पर शासन कर रही है।"

जसे कोडे पड रह हो जगतप्रकाश पर, वह तिलमिला उठा। लेकिन उसकी सारी तिलमिलाहट एक घुटन के रूप मे ही रह गई, क्योकि सत्य शाइनर क पास था। इस समय तक वेयरा चाय रख गया था इन लोगा के सामने। कमलाकान्त ने शाइनर से कहा, "आप भी हम लोगो के साथ चाय पीजिए।"

"नही, मै अभी कुछ देर पहले कॉफी पी चुका हूँ।" शाइनर अव शात हो गया था, "मुझे क्षमा करना मित्रो, जो मैं इतनी अप्रिय और कटु वाते कह गया। तुम लोग इमानदार और भावनात्मक आदमी दिखाई देते हो, तुम लोग अग्रेजा की गुलामी से मुक्ति पाना चाहते होगे, वह मुक्ति आ रही है। न जान किस दिन और किस समय यूरोप म विश्व-युद्ध का श्रीगणेश

हो जाए। मैं जर्मनी के लिए जहाज से अपना पैसेज बुक करा चुका हूँ, अगस्त को मुझे बम्बई से जर्मनी के लिए सेल कर देना है। यही मना हूँ कि तीस अगस्त तक यह युद्ध न आरम्भ हो, इंगलैण्ड अब अधिक तक रुका नहीं रहेगा, वह जर्मनी के साथ युद्ध की घोषणा अवश्य करेगा।

इसी समय बाहर प्लेटफार्म पर घण्टी बजी, यह सूचना देते हुए कि गाडी आने ही वाली है। शाइनर ने कहा, "अच्छा, अब मैं चलूं। याद रखना मेरे मित्रो! मेरी बात याद रखना। बहुत सम्भव है हम लोग फिर मिलें।" वह घूमकर चला गया उसका कुली उसका असबाब उठाने गया था।

जगतप्रकाश और कमलाकान्त ने जल्दी जल्दी चाय पी। चाय का बिल अदा करके जब ये प्लेटफार्म पर आए, गाडी प्लेटफार्म पर प्रवेश कर रही थी। दोनों गाडी के पिछली ओर पडने वाले प्लेटफार्म के भाग की ओर बढने लगे, गाडी को ध्यान से देखते हुए। कमलाकान्त ने जगतप्रकाश को रोका, 'यह देखो सेकण्ड क्लास कम्पार्टमेण्ट में जसवन्त है। मैं तो समझता था कि यह इंटर क्लास या थर्ड क्लास में आएगा। अब तो यह सेकण्ड क्लास में सफर करने लगा है।"

जहाँ ये लोग रुके थे उससे पन्द्रह-बीस कदम आगे बढकर वह सेकण्ड क्लास कम्पार्टमेण्ट रुक गया। दोनों उस ओर बढे। जसवन्त अपना सूटकेस लिये हुए प्लेटफार्म पर आ गया था। उसने कमलाकान्त से मुसकराते हुए कहा, "तो तुम जगतप्रकाश को भी अपने साथ लेते आए हो।"

जगतप्रकाश की नजर उस समय शाइनर पर गडी थी जो ट्रेन में अपने लिए सीट ढूँढ रहा था। जगतप्रकाश ने उसे आवाज दी, 'मिस्टर शाइनर, यहाँ सेकण्ड क्लास की एक बर्थ खाली है आप शायद सेकण्ड क्लास में सफर करेंगे।"

'थैंक्यू!" कहता हुआ शाइनर इन लोगों की ओर बढा और तभी उसकी नजर जसवन्त कपूर पर पडी। जसवन्त कपूर का चेहरा उसे कुछ पहचाना हुआ लगा। कुली से कम्पार्टमेण्ट में अपना असबाब रखने को कह कर वह जसवन्त कपूर से बोला, 'मैंने आपको पहले कभी देखा है, याद नहीं पडता है कहाँ।

जसवन्त कपूर शाइनर को पहचान गया था, उसने कहा, "कलकत्ता मे ...ष बाबू के घर पर। वहा मैं बरामदे मे बैठा था, तब आपसे मेरी बातें ...थी।"

"ओह! याद आ गया। तो ये दोना नौजवान तुम्हारे साथी है। इन ...ा से वेटिंग रूम मे मेरा परिचय हुआ। हा, तुम्हारा नाम शायद ...सवन्त कपूर है।"

"आपको मेरा नाम अब तक याद है।" जसवन्त मुसकराया।

'हा, मेरी याददाश्त कमज़ोर नही है। और हा, इन दोना मित्रा से मेरी ...ी महत्त्वपूण बात हुइ। लेकिन इनका नाम पूछना तो मैं भूल ही गया। ...ो लोगा न भी अपना नाम मुझे नही बतलाया।"

जसवन्त बोला, "यह श्री कमलाकान्त है और यह श्री जगतप्रकाश हैं। ...ना ही इलाहाबाद यूनिवर्सिटी म रिसच स्कालर है।"

शाइनर अब अपने कम्पाटमेण्ट के दरवाज़े की ओर मुडा, "अच्छा, अब ...आप लोगा को रोकूगा नही, ट्रेन छूटने का समय भी हो रहा है।"

स्टेशन क बाहर निकलकर इन लोगा ने तागा लिया। तागे पर बैठ-...र जसवन्त ने पूछा, "यह आदमी शाइनर! क्या तुम लोगो को इस ...आदमी की बात से किसी महत्त्वपूण चीज का पता लगा?"

कमलाकान्त बोला, "पहली बातचीत मे भला यह क्या खुलता! लेकिन ...बडा उद्विग्न था। जमनी वापस लौटने की जल्दी मे है, कहता था कि युद्ध न जान कब आरम्भ हो जाए।"

जसवन्त के मुख पर एक तरह का धुधलापन आ गया, "तो फिर मेरा अनुमान गलत नही है, युद्ध बहुत जल्दी ही आरम्भ होने वाला है। रूस और जमनी म समझौता हो गया है। पोलैण्ड न रूस पर विश्वास न करके अच्छा नही किया, वह फ्रास और ब्रिटेन की सहायता पर पूरी तौर से निभर है, लेकिन फ्रास और ब्रिटन उसे सहायता नही दे सकते—उसकी सीमाआ से बहुत दूर होन के कारण।"

तागा चल रहा था और जसवन्त अग्रेजी म बोल रहा था, शायद इस-लिए कि उसकी बातें तागेवाला न समझ सके। क्या सुभाष का रास्ता ठीक था? यह आदमी शाइनर—यह बहुत बडा विद्वान है, कलकत्ता विश्वविद्यालय

म दर्शनशास्त्र का प्रोफेसर है । लेकिन यह जर्मन है, और सुभाष से इसका काफी अधिक मेलजोल है। सुभाष का छ महीने का अल्टी ब्रिटिश सरकार को। यही प्रस्ताव तो त्रिपुरी काग्रेस म सुभाष बाबू और स आया था । मार्च से अगस्त—छ महीने पूरे हो रहे हैं, और इन महीनों म अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र म न जाने क्या-क्या हो गया है। एक बहुत बड़ी और सुस्पष्ट योजना—इसके साथ जर्मनी बढ रहा है, उसका हरेक क़दम और उसका समय निर्धारित ।"

कमलाकान्त ने पूछा, 'लेकिन हम लोग कहाँ आते हैं उसकी योजना म ?"

"हम कहा आते हैं ? मेरी समझ म यह नही आ रहा, शायद सुभाष की भी समझ मे नही आ रहा होगा। लेकिन हमे दूसरो की योजना से क्या मतलब ? हम तो खुद अपनी योजना बनानी पडेगी। अगर ब्रिटेन और जर्मनी के बीच युद्ध छिडता है तो काग्रेस का वामपथी भाग खतरे म पड़ जाएगा, क्योकि जर्मनी के साथ रूस का समझौता हो चुका है। विश्वयुद्ध में उलझा हुआ ब्रिटेन, अगर उस समय हिन्दुस्तान म क्रान्ति हो जाए तो वह ब्रिटेन के दबाए नही दबेगी।'

ज्ञानप्रकाश ने पूछा, 'लेकिन सवाल यह है कि क्या हिन्दुस्तान की जनता क्रान्ति कर सकती है ? ब्रिटिश सरकार को हिन्दुस्तान की जनता पर पूरा भरोसा है इस हिन्दुस्तान के बल पर ही तो वह इतने बड़े ब्रिटिश साम्राज्य को सम्हाले है।"

जसवन्त ने एक ठडी साँस भरी 'शायद तुम ठीक कहते हो, यहाँ की जनता क्रान्ति नही कर सकती। ब्रिटेन इस ओर से आश्वस्त है। फिर गाधी और गाधी की अहिंसा—ये भी तो इस क्रान्ति के विरोधी तत्त्व हैं। लेकिन इस सबसे हमारी—यानी हमारे दल की स्थिति म कोई फर्क नही पडना चाहिए। हम तो साम्यवाद के समर्थक है और साम्राज्यवाद के शत्रु हैं। हम अपने पथ प्रदर्शन के लिए रूस की ओर देखते हैं। हम अपने लिए एक योजना बनानी पडेगी ब्रिटेन पर प्रहार करने की नही ब्रिटेन के प्रहार से अपनी रक्षा करने की। ब्रिटेन के इस भय म कोई सार नही है कि हम समाजवादियों का अपने देश की जनता पर कोई खास प्रभाव है, लेकिन भय तो है और

भय मे प्रेरित होकर ब्रिटिश सरकार देश के समाजवादियो पर प्रहार गी।"

कमलाकान्त का चेहरा कुछ उतर रहा है, जगतप्रकाश को अनुभव हो ा था और कमलाकान्त की आवाज उसे कुछ खाखली-सी लगी जब कमला-न्त ने कहा, "अच्छा होस्टल चलकर एकान्त मे बाते होगी।"

जसवन्त कपूर कमलाकान्त के साथ तीन दिन तक इलाहाबाद मे रुका। प्राय अकेला ही निकल जाया करता था, कमलाकान्त को तो वह केवल एक बार ही अपने साथ ले गया। जगतप्रकाश को लगा कि कमलाकान्त सवन्त के साथ जाने से कतराता है। तीसरे दिन शाम के समय जसवन्त पूर और कमलाकान्त ने जगतप्रकाश के कमरे मे ही चाय पी। जसवन्त पूर ने चाय पीते हुए कमलाकान्त से कहा, "आज मुझे यहा से जाना है। त की गाडी स चलकर सुवह पटना पहुँचूगा, वहा दो दिन रुकने के बाद लकत्ता। कलकत्ता मे एक हफ्ते का प्रोग्राम है। तो कलकत्ता से तुम्हारे स सूचना आएगी कि हमारा भावी कार्यक्रम क्या है।"

कमलाकान्त बोला, "जसवन्त, मेरे पास सूचना भेजने की कोई आव-श्यकता नही है। तुम तो जानते ही हो कि मैं अभी तक तुम्हारी पार्टी का सदस्य नही बना हूँ। और अब मैंने फिलहाल कुछ दिनो के लिए तुम्हारी पार्टी का सदस्य बनने का विचार छोड दिया है।"

एकाएक जसवन्त कपूर की मुद्रा बदल गई। व्यग्य और घृणा की एक छाया उसके मुख पर आई, "कुछ लोगो ने मुझसे कहा था कि तुम कायर हो, तुम पर भरोसा नही किया जा सकता और उन लोगो की ही धारणा ठीक थी, गलती मेरी थी।" फिर वह जगतप्रकाश की ओर घूमा, "तुमसे मुझे कोई शिकायत नही है, क्योकि मैं तुम्हे जानता नही, लेकिन तुम कायर नही हो इतना मैं कह सकता हूँ। अभी मैं तुमसे अलग रहने को ही कहूँगा, लेकिन शायद निकट भविष्य म तुम अपने को हम लोगो से अलग न रख सकोगे।"

चाय पीकर जसवन्त अपना असबाब लेकर नगर के किसी व्यक्ति के यहाँ चला गया। चलते हुए उसने कहा, 'मेरी गाडी रात के नौ बजे जाती है, वहाँ से अब वापस नहा लौटूगा, सीधे गाडी पकड लूगा।"

कमलाकान्त ने भी जसवन्त कपूर से रुकने का कोई आग्रह नही किया।

जसवन्त कपूर चला गया, लेकिन जगतप्रकाश के अन्दर वह एक हल
पैदा कर गया। क्या वास्तव म युद्ध के बादल सर पर घिर आए है
जमनी ने पोलण्ड का चुनौती दे दी है, वह पोलैंण्ड पर आक्रमण अव
करेगा, और इस आक्रमण के फलस्वरूप इगलैंण्ड और फ्रास को युद्ध
आना पडेगा। आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया—जमनी न इन देशो पर कब्ज
कर लिया, लेकिन जमनी के पास इन देशा पर प्रहार करन के बहान
और उन बहानो का ब्रिटेन तथा फ्रास ने मान लिया था। लेकिन पोलण्ड
कब्ज़ा करने के लिए तो जमनी के पास कोइ बहाना नही है, पोलण्ड प
हमला करन के अथ होग जमनी का इगलैंण्ड और फ्रास का चुनौती देना
इन दो महान् देशो को जमनी की चुनौती स्वीकार करनी होगी। पि
महायुद्ध का पराजित जमनी बदला लेने पर तुला हुआ है। इस बार
ब्रिटेन और फ्रास का साथ नहा देगा, उस अपनी कमजोरी का पता है
जमनी की शक्ति का भी पता है। युद्ध अनिवाय है।

और इस युद्ध के समय ब्रिटेन के प्रति हिन्दुस्तान का क्या रख होगा
क्या वह ब्रिटेन को भरपूर सहायता देगा, जसी सहायता उसन ब्रिटन
पिछले महायुद्ध के समय दी थी? ब्रिटिश सरकार की समस्त शक्ति
उसके इस बहुत बडे उपनिवेश हिन्दुस्तान मे है जहा वीरो और कायरो
एक अजीब सम्मिश्रण है। हिन्दुस्तान की जो वीर जातिया हैं और जिन
सेना के लिए भरती होती है, उनम स्वामिभक्ता की एक प्राचीन परम्
है। उनम किसी तरह की राजनीतिक चेतना नही है, अग्रेजा ने उन्ह सम
सुविधाएँ दे रखी हैं। और वे मध्यवग वाले, जिनम राजनीतिक चेतना
वे परम्परागत कायरता के शिकार है। हिन्दुस्तान निश्चय रूप स अग्र
का साथ देगा, देश म अन्दरूनी क्रान्ति असम्भव है।

यह कमलाकान्त—यह उच्च-मध्यवग का ही तो आदमी है, यह अग्र
का विराध नही करेगा। और यह जसवन्त कपूर—यह अभी आवेश म
लेकिन यह जसवन्त कपूर भी अग्रेजा का विराध नही करेगा। कोई न
करगा विरोध, किसी की जान फाल्तू नही है। जगतप्रकाश को एक झझट
हट-सी हो रही थी। आखिर उस ज़रूरत क्या थी कि वह इस सब पर सा
विचारे, इस सबसे अपन मन का वह कुण्ठित करे। लेकिन यह तो वि

का प्रश्न था उसे टाला कसे जा, सकता है ?

दिन बीत रहे थे, भारी, उदास, अनिश्चय से भरे दिन। अखवार खबरो भरे थे, आशा और निराशा के बीच एक तरह की रस्साकशी चल रही थी। हर तरफ भावी युद्ध की वातचीत सुनाई दे रही थी, और फिर पहली सितम्बर का अनिश्चय की अवस्था भी समाप्त हो गई। जमनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया।

उस दिन शाम के समय जगतप्रकाश चाय वनाकर कमलाकान्त की प्रतीक्षा कर रहा था, और तभी कमलाकान्त ने 'लीडर' का शाम वाला विशेषाक लिय हुए कमरे मे प्रवेश किया। उसने चिल्लाकर कहा, "आखिर आरम्भ हा गया।"

जगतप्रकाश चौक उठा, "क्या आरम्भ हो गया? क्या वात है जो इतने उत्तेजित हो?"

विशेपाक जगतप्रकाश के हाथ मे देते हुए कमलाकान्त वोला, "विश्व-युद्ध—वह आरम्भ हा गया। जमनी ने पोलैण्ड पर हमला कर ही दिया।"

जगतप्रकाश एक सास म एक पन्ने का विशेपाक पढ गया। उसके माथे पर बल पड गए थे, "कुछ भी नही कहा जा सकता। जमनी ने अपन पूर्व की आर हमला किया है, वह वढ रहा है रूस की तरफ। इगलैंड और फ्रास—इन्होने चुनौती तो दी है, लेकिन ये पोलैण्ड की सहायता नही कर सकते। फिर क्या ये दोनो देश जमनी से युद्ध करन को उत्सुक हैं? अभी तक तो इन्होने जमनी के प्रसारात्मक आक्रमणो का कोई सक्रिय विरोध नहीं किया है।"

कमलाकान्त ने कुछ सोचते हुए पूछा, "क्या तुम्हारा खयाल है कि फ्रास और ब्रिटन पोलण्ड पर दवाव डालकर उसका कुछ भाग जमनी को दिला देंगे?"

जगतप्रकाश ने नकारात्मक रूप से सर हिलाते हुए कहा, "नही, अब इस समय यह सम्भव नही है। इन दोनो देशा को अब युद्ध मे आना ही होगा। प्रश्न यह है कि पोलैण्ड कितने दिना तक अकेला जमनी से युद्ध कर सकता है। अगर वह साल-छ महीने जमनी को युद्ध म उलझाए रख सके तो सम्भव है सम्भव है "

"क्या सम्भव है ?" कमलाकान्त ने पूछा।

"नहीं, कुछ भी समझ में नहीं आता। लेकिन युद्ध आरम्भ हो गया है यह सत्य है। जर्मनी अकेला है, क्या वह ब्रिटेन और फ्रांस की सम्मिलित शक्तियों के सामने टिक सकेगा ? उधर रूस बैठा है, क्या रूस यह बर्दाश्त करेगा कि जर्मनी पोलैण्ड पर कब्जा करके इतना शक्तिशाली बन जाए कि वह भविष्य में उसका ही काल साबित हो ?"

"जर्मनी और पोलैण्ड में समझौता हो गया है। आपस में व एक दूसरे से युद्ध नहीं करेंगे।" कमलाकान्त बोला।

"यही तो मुसीबत है। पोलैण्ड को रूस से किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल सकती। ब्रिटेन और फ्रांस की सेनाएँ पोलैण्ड की सहायता करने के लिए वहाँ पहुँच नहीं सकतीं। इसके मानें हैं पोलैण्ड का सर्वनाश। अब एक ही तरीका है, ब्रिटेन और फ्रांस सीधे जर्मनी पर चढ़ाई कर दें।"

कमलाकान्त ने अपने लिए चाय बनाते हुए कहा, "इस बार ब्रिटेन व फ्रांस को युद्ध में आना ही पड़ेगा। मैं तुम्हारी बात मानता हूँ और इसमें से हमारे देश का थोड़ा-बहुत हित ही होगा, अगर ब्रिटेन पराजित होता है। लेकिन यह स्थिति भी पैदा हो सकती है कि हम विजयी जर्मनी की गुलामी करनी पड़ेगी। गुलामी से छुटकारा नहीं मिलने का।" कमलाकान्त चाय पीने लगा। चाय पीकर दोनों घूमने निकल पड़े।

सारे नगर में सनसनी थी। यद्यपि फ्रांस और ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की थी, पर इन दोनों देशों ने जर्मनी को अल्टीमेटम तो दे ही दिया था। काफी देर तक दोनों शहर में घूमते रहे, और जब जगतप्रकाश वापस लौटा, वह तन और मन से बुरी तरह थक गया था।

तीन सितम्बर को फ्रांस और ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। चार सितम्बर की सुबह अखबारों में यह खबर पढ़कर जगतप्रकाश ने एक सन्तोष की साँस ली। उधर दो-तीन दिनों में उसे पोलैण्ड के साथ हमदर्दी हो गई थी। जर्मन सेना ने जिस बर्बरता के साथ पोलैण्ड पर प्रहार किया था, उससे जगतप्रकाश को क्षोभ हुआ था और जर्मनी के प्रति उसमें एक घृणा की भावना जाग उठी थी। न्याय, अधिकार, सत्य—खुलेआम इन सबकी हत्या हो सकती है। क्या सबल राष्ट्र को यह अधिकार है?

एक निवल राष्ट्र का नेस्तनाबूद करके उसे अपना वुलाम वना ले ?
 याय-अ याय, स्वत नता और गुलामी का एक बडा सघप आरम्भ हो
 था दुनिया म । अभी तक अन्याय मनमाने ढग से काम करता रहा था,
न्याय न अन्याय को चुनौती दी थी । लेकिन सब व्यय । जमन मेनाएँ
ण्ड मे बढती जा रही थी और पोलैंण्ड की सैनिक शक्ति नष्ट होती जा
 थी। पोल्ण्ड भयानक रूप से कमज़ार था। आखिर क्या ? इमलिए
पोलण्ड की आन्तरिक अवस्था सडी गली थी । कुछ थोडे मे वडे सरदार
 जमीदार समस्त पोलण्ड की जनता का गुल्लाम बनाये हुए थ । जिम
 की जनता को कुछ थोडे स आदमियो की गुलामी करनी पडती हो उस
 म स्वत त्रता पर प्राण योछावर करने का किसी मे उ साह हो सकना
भव नहा है।

जगतप्रका न का मन अव अध्ययन मे नही लग रहा था । अनायास ही
के अन्दर एक विशेष प्रकार की चेतना जाग उठी थी । अथशास्त्र से
टक्कर वह अव राजनीतिशास्त्र की उल्झना म आ पडा था । फ्रास की
ाआ न जमनी पर आक्रमण कर दिया, ब्रिटेन की सेनाएँ फ्रासीसी सनाओ
 सहायता करने के लिए फ्रास मे पहुँच गई थी—अखबार म ये खबरे
इ, लेकिन ेकिन फ्रास और ब्रिटेन की सेनाआ की गति रुक गई—
मनी न सीगफ्रीड लाइन की मोर्चेबन्दी कर रखी है, उसको पार करना
तना ही कठिन है जितना फ्रास की मैजीनो ल्लाइन को पार करना । मित्र
ाष्ट्रा की सेनाओ का आगे बढना अपने को मृत्यु के मुख म झोकना हागा ।
सनाए फिर से अपन मोर्चों पर वापस आ गइ और जमन सेनाएँ पोलैण्ड
 घुसती जा रही है—घुसती जा रही हैं। सत्नह सितम्बर को खवर आई
 रूसी सनाओ ने पालण्ड मे प्रवेश कर दिया, पोलैण्ड की सहायता करने
 लिए नहा, वरन् पोलैण्ड के उस भाग पर अपना अधिकार करने के लिए
जस पर जमन सनाआ का अधिकार नही हुआ था । तेईस सितवर को पोलैंड
ा रूस और जमनी म बँटवारा हो गया । पोलण्ड की एक अस्थायी सरकार
पेस म सत्रह सितम्बर को ही स्थापित हो गई।

अक्तूबर का प्रथम सप्ताह आ गया था आर गरमी अव प्राय समाप्त हो
ई था । जगतप्रकाश का दशहरा की छुट्टियो म महोना जाने का कार्यक्रम

स्थगित हो गया था। यमुना के पिता बाबू माताप्रसाद ने नवरात्रि में जगत-प्रकाश का तिलक चढ़ाने को कहा था। अनायास ही सितम्बर के ... सप्ताह में उन्होंने नवरात्रि में तिलक चढ़ाने की असमर्थता प्रकट करते हुए अनुराधा को सन्देश भेज दिया था कि तिलक की व्यवस्था वे अगले वर्ष नवमी वाली नवरात्रि में कर सकेंगे, विवाह के कुछ दिन पहले। अनुराधा ने यह सन्देश पाते ही जगतप्रकाश को स्थिति की सूचना दे दी थी। ... दिन जब जगतप्रकाश सुबह के समय अपने कमरे में बैठा लिख रहा था, एक अधेड़ व्यक्ति ने उसके कमरे में प्रवेश किया। उसने कहा, 'तुम्हारी बहन ने मुझसे कहलाया था कि मैं तुमसे मिलकर बात कर लूँ, शायद तुम मेरी कुछ मदद कर सको।"

जगतप्रकाश ने उस व्यक्ति को पहले कभी न देखा था। उस व्यक्ति की अवस्था पैंतालीस और पचास वर्ष के बीच की रही होगी। वह टसर का एक सस्ता सा सूट पहने था, और जो टाई वह लगाए था, वह काफी पुरानी और मैली-सी थी। उसके हाथ में उसका सोला हैट था। अगर जगतप्रकाश को उसकी चोटी न दिखती तो वह उसे ईसाई समझता। हिटलर-कट काली मूँछ, आँखों पर चश्मा चढ़ा था। दुबला सा आदमी, बाल खिचड़ी। ... चेहरे पर चिन्ता की झलक स्पष्ट थी। जगतप्रकाश ने कुरसी की ओर इशारा किया, 'बैठिए—आपकी तारीफ ?"

वह आदमी बड़े गौर से जगतप्रकाश को देख रहा था। कुरसी पर बैठते हुए उसने कहा, 'मेरा नाम माताप्रसाद है कल रात मैं कानपुर से आया हूँ।"

जगतप्रकाश चौंक उठा। यमुना के पिता का नाम माताप्रसाद है और वह कानपुर में रहते हैं—जगतप्रकाश को इस बात का पता था। उसने माताप्रसाद को नमस्ते की, फिर उसने कहा, "दीदी ने मुझे लिखा तो था कि आपको कुछ चिन्ता है, लेकिन चिन्ता का कारण क्या है, इसका हाल उन्होंने मुझे नहीं दिया था। आप ठहरे कहाँ हैं ?"

'कल रात की गाड़ी से कानपुर से यहाँ आया तो चौक में एक होटल में ठहर गया। सुबह हुई तो तुम्हें तलाश करता हुआ यहाँ पहुँचा।

'अगर आपको वहाँ कोई तकलीफ हो तो यहाँ आ जाइए।'

गतप्रकाश को शिष्टाचार निभाना पडा।

"नही, होटल बुरा नहा है, वहाँ मुझे कोई तकलीफ नही है। दिन-भर तो दौडना धूपना है, सिर्फ रात म सो रहना है वहाँ पर। अजीब मुसीबत मे फंस गया हूँ, सरासर ज्यादती हो रही है।"

"आखिर बात क्या है?" जगतप्रकाश ने पूछा।

कुछ देर तक चुप रहन के बाद माताप्रसाद ने कहा, "शुरू से ही किस्सा सुना दू। कानपुर म जिस विदेशी फम मे मैं काम कर रहा हूँ—या यह कहना ठीक होगा—काम कर रहा था, वह जमन फम है। मेरे प्राविडेण्ट फण्ड का तीन हजार रुपया जमा है उसके पास। तुम्हारी शादी के लिए मैंने वह प्राविडेण्ट फण्ड के तीन हजार और कज के तौर पर दो हजार माँगे थे, हैड आफिस से मजूरी भी आ गई थी। पहली तारीख को वह रुपया मुझे मिलने वाला था। लेकिन मनेजर कलकत्ता चला गया था। वह दूसरी तारीख को आया। पोलण्ड पर जमनी के हमले की खबर आ गई थी। दिन-भर वह फम के मसला को तय करने मे लगा रहा। मैं ही सबसे बडा हिन्दुस्तानी था उस फम म, तीसरी तारीख को वह हिरासत मे ले लिया गया। दूसरी को तनख्वाह तो बँट गइ लेकिन उस दौड-धूप म मेरे चेक पर उसन दस्तखत नही किए। तीसरी को उसकी गिरफ्तारी हो गई। गिरफ्तार होने से पहले उसन मेरे चेक पर दस्तखत कर दिए और उसने फम का सब काम-काज मेरे सुपुर्द कर दिया। लेकिन जब मैंने चेक अपने एकाउण्ट म जमा किया तब वह कश नही हुआ। मैनेजर की गिरफ्तारी के बाद ही फम पर ताला पड गया है और मनेजर मिस्टर हौव्ज गिरफ्तार करके कही भेज दिया गया। सब मुलाजिम बेकार हो गए—मेरा रुपया खटाई मे पड गया। अब तुम समझ ही गए होगे कि तिलक की रस्म मैं क्यो नही अदा कर सका।"

'फिर क्या करना है आपको?" जगतप्रकाश ने इस समस्या पर गभीरतापूवक सोचते हुए पूछा।

माताप्रसाद ने रूमाल मे बँधे हुए कागजो को खोलते हुए कहा, "मिस्टर हाव्ज ने—वही जो फम के मैनेजर थे, गिरफ्तार होने के समय मुझे अपनी फम का इन्चाज बना दिया था। उनका यह पत्र और आडर मेरे

पास है। जिन पार्टियो पर फर्म का रुपया बाकी है उसे वसूल करने का अधिकार मुझे दे गए है, साथ ही यह हिदायत कर गए हैं कि एक साल तक मैं फर्म का काम-काज चलाता रहूँ। पचीस हज़ार का चेक वह मुझे दे गए है, साथ ही सेफ की चाबिया भी मुझे दे गए हैं।" माताप्रसाद के मुख पर एक चमक आ गई। "यह तो तकदीर का खेल है। [या तो मैं फ़ाक़ामस्त या फिर बहुत बडी फर्म का मालिक। दोस्तों ने सलाह दी है कि मैं इलाहाबाद हाईकोर्ट मे दरख्वास्त दू, शायद काम बन जाए।"

"बहुत ठीक किया आपने। मैं समझता हूँ कि आप यहाँ कामयाब होगे। बतलाइए मैं इस मामले मे क्या करूँ?"

"बात यह है कि मैं तो इलाहाबाद के लोगो से वाकिफ हूँ नही। मैंने अपने भाई से सलाह ली, उन्होने तुम्हारी बहन के कहने के मुताबिक सलाह दी कि अगर कोई अडचन पडे तो बेखटके तुम्हारी मदद लू। मुझे अजीब-सा तो लगा, लेकिन मरता क्या न करता! तो यहा आया हूँ।"

"जो कुछ हो सकता है, वह मैं करने को तैयार हूँ। यहा दो चार हाई कोर्ट के वकीलो से मेरा परिचय अवश्य है, लेकिन वे सब नौजवान, उठते हुए आदमी है। आपका मामला तो काफी उलझा हुआ है, इस मामले के लिए कोई योग्य और अनुभवी वकील चाहिए। आपने किसी वकील का नाम सोचा है?"

"यहा कोई मिस्टर बसगोपाल बार एट लॉ हैं, उनका नाम बतलाया था मेरे भाई ने। कानपुर म अपनी बिरादरी के बाबू परमेश्वरीलाल उनके वह अजीज होते हैं। बाबू परमेश्वरीलाल का भतीजा रूपलाल इस साल सब इन्स्पेक्टर पुलिस नियुक्त हुआ है, बडा भला व नेक लडका है, वह भी मेरे साथ आया है मेरी पैरवी म। मिस्टर बसगोपाल स मिलना है।"

जगतप्रकाश ने कुछ सोचकर कहा, 'मिस्टर बसगोपाल! नाम तो एकाध बार सुना है उनका, किस सिलसिले म, याद नही पडता, उनसे कभी मिलना जुलना नही हुआ। सिविल लाइन्स म उनका बँगला है शायद।'

'हा-हा, सिविल लाइन्स मे ही उनका बँगला है। क्या खयाल है तुम्हारा?'

"उनसे मिलकर बात कर लीजिए। क्या वह आपके साथी रूपलाल अच्छी तरह जानते है ?"

माताप्रसाद मुसकराए, "अरे, अगर वह बाबू परमेश्वरीलाल के अजीज तो वह रूपलाल के भी अजीज हैं। रूपलाल का कहना है कि बहुत कम में मेरा काम उनके यहाँ हो जाएगा। असल में मेरा हाथ इन दिना तंग है, एकाएक यह कहर मुझ पर नाज़िल हुआ है, कोई तैयारी नही सका मैं। दिमाग चक्कर में है, कुछ समझ में नही आ रहा कि मैं क्या । यह मिस्टर वसगोपाल कितने काबिल है, इनसे मेरा काम बन सकेगा या , इसका फसला भी तो मैं नही कर पा रहा। अगर तुम्हे कोई काम न तो मेरे साथ चले चलो, एक से दो भले। जहा तक रूपलाल का सवाल वह पुलिस का आदमी बन चुका है, उस पर पूरी तौर से भरोसा नही या जा सकता। वैसे आदमी वह नेक व खुश इख्लाक है।"

जगतप्रकाश ने उठकर कपडे बदले, फिर वह माताप्रसाद के साथ वस-पाल के यहा के लिए रवाना हो गया।

वसगोपाल के बँगले के फाटक पर रूपलाल इन लोगो की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने माताप्रसाद से कहा, "मैंने बैरिस्टर साहब से बात कर ली । वह आपका काम कर देंगे। बडे मशगूल आदमी है दम मारने की फुर-सत नही। इस वक्त वह एक केस की स्टडी कर रहे है तो मैं बाहर चला आया। चलिए, उनसे बातें कर लीजिए।"

जानप्रकाश उस समय रूपलाल को देख रहा था। कसरती बदन का नवयुवक, मझोले कद का, रंग कुछ सावला-सा। छोटी छोटी चमकदार और तेज आखे, मुख पर एक तरह की कुटिलता। माताप्रसाद ने कहा, "मैं न जानप्रकाश को भी साथ ले आया हूँ। चले, उन्हे अपना केस पूरी तौर समझा दे।" रूपलाल के साथ वे दोनो बँगले के अन्दर पहुँचे।

बरामदे में दो-तीन आदमी बैठे थे, नौकर दरवाजे के पास खडा था। रूपलाल ने नौकर से कहा, "बैरिस्टर साहब से कह देना कि रूपलाल और उनके साथी आ गए है खाली हो तो बुला लें।"

उसी समय वसगोपाल के आफिस से एक आदमी निकला। वे दोना आदमी जो बाहर बैठे थे, कमरे के अन्दर चले गए। इस समय तक बाबू

माताप्रसाद के चेहरे का तनाव कम हो गया था, उन्होंने जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला और बीडी सुलगाई। बण्डल उन्होंने रूपलाल की ओर बढ़ाया लेकिन रूपलाल ने कहा, "शुक्रिया, मैं बीडी नही पीता।" उसने सिगरेट की डिबिया जेब से निकालकर एक सिगरेट सुलगाई, फिर उसने माताप्रसाद से कहा, 'मेरी सलाह मानिए तो आप बीडी पीना छोड़ दीजिए।"

जगतप्रकाश को ऐसा लगा कि रूपलाल का व्यवहार बाबू माताप्रसाद को पसन्द नही आया। एक अजीब कडवा मुह बनाते हुए उन्होंने कहा, "रूपलाल ! अच्छी से-अच्छी सिगरेट पीने का मौका मिला है मुझे। मेरे साहब मिस्टर होंगर—बड़ी शौकीन तबीअत के आदमी हैं वह—बढ़िया शराबें, चुनी हुई सिगरेटें और खैर छोटो भी, तुम लोग अभी बच्चे हो। मेरा मतलब यह था कि अच्छी से-अच्छी शराब पी है मैंने, अच्छी-से-अच्छी सिगरेट पी है। लेकिन इस सुराज और सुदेसी के दौर में लोगों को देसी शराब पीनी चाहिए, देसी बीडी पीनी चाहिए। तो बेटा रूपलाल, देसी शराब मुजिर होती है महात्मा गांधी अच्छी तरह जानते हैं, इसलिए उन्होंने शराब-बन्दी कर दी है। लेकिन देसी बीडी पर उन्होंने कोई रोक नहीं लगाई है।" जगतप्रकाश यह निर्णय नही कर सका कि बाबू माताप्रसाद ने यह बात व्यंग्य में कही है या गम्भीरतापूर्वक कही है।

भीतर वाले आदमी जल्दी ही कमरे के बाहर निकल आए, नौकर ने इन लोगों को भीतर जाने का इशारा किया। रूपलाल के साथ बाबू माताप्रसाद और जगतप्रकाश ने कमरे में प्रवेश किया।

मिस्टर वसगोपाल बाकायदा सूट पहने बैठे थे, जैसे सोकर उठते ही उनका पहला काम होता था मुह-हाथ धो और शेव करके सूट पहन लेना। अधेड-से और दुबले-से आदमी, गोरा रंग, मूछों के नाम पर ऊपर के होंठों पर एक पतली-सी काली लकीर, आंखों पर चश्मा। बैठे हुए ही उन्होंने रूपलाल को देखा और रूपलाल ने माताप्रसाद का परिचय दिया। वसगोपाल ने अब जगतप्रकाश की ओर देखा, 'आपकी तारीफ ?"

मैं इनका दूर का रिश्तेदार हूँ। मैं यहा यूनीवर्सिटी में हूँ। मेरा नाम जगतप्रकाश है। यह मुझे अपने साथ लाए हैं।"

जसे मिस्टर बसगोपाल के मस्तिष्क मे एक विचार सा कौंध गया हो, "म यहाँ यूनीवर्सिटी मे अर्थशास्त्र मे रिसर्च तो नही कर रहे हो ? तुमने र साल फ़र्स्ट क्लास इकनामिक्स मे एम० ए० किया था, तुम बी० ए० फ़र्स्ट क्लास फर्स्ट थे। बस्ती जिला के रहने वाले हो ?"

उनके सम्बन्ध मे मिस्टर बसगोपाल को इतनी जानकारी है, जगत-प्रकाश को इस पर आश्चर्य हुआ। उसने दबी जबान म कहा, "जी, आपने कहा वह ठीक है।"

बसगोपाल उठ खडे हुए, "तुमसे मिलकर बडी खुशी हुई।" फिर माताप्रसाद स उन्होने कहा, "चलिए ड्राइग रूम म बैठा जाए चलकर। बह उठते ही यहा आकर बैठ गया, मुवक्किलो से फुरसत ही नही मिलती। इतमीनान स बात होगी।"

आफिस से मिला हुआ ड्राइग रूम था। इन लोगो को बैठाकर बस-गोपाल बोले, "मैं दस पन्द्रह मिनट म आता हूँ नहा धोकर, कोट का टाइम हो रहा है। तब तक आप लोग आराम कीजिए।"

बसगोपाल के अन्दर जाते ही रूपलाल ने गर्व के साथ छाती फुलाकर माताप्रसाद से कहा, "देखा आपने, कितना मानते ह यह मुझे! बस आप समझ लीजिए कि आपका काम हो गया। और यह भी देख लिया कि कितना मशगूल रहते हैं, करीब दस हजार रुपये महीने की प्रक्टिस है इनकी। इलाहाबाद के इने गिने वकीलो म है।"

गद्देदार कुरसी पर बैठकर बाबू माताप्रसाद ने इतमीनान के साथ अपनी टाँगें फैलाइ, उनके मुख पर एक प्रकार का सतोष था, "भाई मान गया तुम्हे मैं रूपलाल! सही जगह ले आए हो मुझे। मेरा काम यहाँ बनिया बन जाएगा।" यह कहकर उन्होने बीडी का बण्डल निकाला। फिर न जाने क्या सोचकर उन्होने बीडी का बण्डल अपनी जेब मे रख लिया।

जगतप्रकाश चुपचाप बैठा हुआ उस ड्राइग रूम को देख रहा था। वैसे ड्राइग रूम का सामान कीमती था, लेकिन उसकी सजावट म सुरुचि की कमी दिख रही थी उसे। यही सुरुचि की कमी उसे रूपलाल मे भी दिखी। माता-प्रसाद के प्रति उसम दया को छोडकर और किसी प्रकार की भावना नही थी। तभी नौकर ने अन्दर से ड्राइग रूम म प्रवेश किया। उसके हाथ म चाय और

नाश्ते की एक ट्रे थी। चाय की ट्रे उसने बीच वाली मेज़ पर सजा दी। ...
आने के कुछ क्षणो बाद ही मिस्टर बसंगोपाल अन्दर से निकले। ...
उन्होने कहा, "मैं अब तैयार हो गया हूँ हाईकोर्ट जाने के लिए। मैं ...
हलका-सा नाश्ता करके कोर्ट जाता हूँ, दोपहर को लंच टाइम में मैं ...
आकर लंच करता हूँ। आप लोग आ गए हैं तो सोचा साथ बैठकर ही ...
पी जाए।"

"जी, नाश्ता तो हम लोग करके ही आए है, और चाय भी पी ... आपकी बडी मेहरबानी है।' माताप्रसाद ने कहा, "आपने इतनी तकलीफ क्या उठाई ?"

'अजी, इसमें तकलीफ की क्या बात है ? हम लोग एक-दूसरे के ... है—एक जात एक बिरादरी। हाँ, तो हम लोग चाय पीते जाए, और आप अपना केस समझाते जाइए।"

नौकर चाय बनाने लगा और बाबू माताप्रसाद ने रूमाल खो... अपने कागज निकाले। तभी एक इक्कीस-बाईस साल की लडकी ने ड्राइ... रूम में आकर कहा, "पापा ! मैं आपकी कार लिये जा रही हूँ।"

'हाँ हाँ यूनीवर्सिटी पहुँचकर कार भेज देना, उसे रोकना मत।" बस... गोपाल ने कहा। लडकी घूमकर चली गई।

बसंगोपाल ने जगतप्रकाश से कहा, 'यह मेरी लडकी सुषमा है—सुष... सिन्हा यूनीवर्सिटी में पढ रही है एम० ए० प्रीवियस है इसका, और फि... उन्होंने जोर से आवाज़ दी 'अरे सुनना सुषमा !" और नौकर से उन्हों... कहा, 'देखो, सुषमा को बुला लाओ, कहना साहब ने बुलाया है।"

लेकिन शायद सुषमा ने बसंगोपाल की आवाज सुन ली थी, उसने ड्राइंग रूम में आकर कहा "आपने मुझे बुलाया था पापा—जल्दी कहिए नहीं तो आपको देर होजाएगी। वह खिलखिलाकर हँस पडी।

इन्हे जानती हो ?' जगतप्रकाश की ओर इशारा करते हुए उन्होंने पूछा, "यह मिस्टर जगतप्रकाश है, यहाँ इकनामिक्स में रिसर्च कर रहे हैं।"

उस लडकी ने जगतप्रकाश को, जब पहली बार कमरे में आई था, नहीं देखा था, इस बार उसने जगतप्रकाश को देखा और कह उठी, 'आपको कौन नहीं जानता हमारे डिपार्टमेण्ट में ! इनसे तो बात करने में डर लगता

लोगों का।" सुषमा की हँसी अब मुसकराहट में बदल गई थी।
वसगोपाल ने भी मुसकराते हुए कहा, 'शक्ल तो इनकी इतनी डरावनी है कि किसी को डर लगे। क्या मिस्टर जगतप्रकाश, यह सुषमा बड़ी और लडकी है। वस बडी तेज़ और ज़हीन है, लेकिन पढने में इसका मन ही लगता। बडी मुश्किल से सेकण्ड क्लास मिला है इसे बी० ए० में।"
"पापा, इतिहास में मुझे अच्छे नम्बर नही मिले, वहा तो रटना पडता है। अर्थशास्त्र में तो मुझे हाई सेकण्ड क्लास मार्क्स मिले थे।"
"सुन लिया—सब सुन लिया। तो मिस्टर जगतप्रकाश, अगर सुषमा किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता पडे तो दे दीजिएगा। एम० ए० यह इकनामिक्स में ही कर रही है। एम० ए० में तो इसे फर्स्ट क्लास मिल जाए।"
सुषमा बोली, "लेकिन पापा! यह तो डिपार्टमेण्ट में आते ही नही, मैं इन्हें कहाँ-कहाँ ढूढती फिरूँगी?"
"अरे, यह हमारे घर पर आया-जाया करेंगे—अपने अज़ीज ही हैं, इन्हें अपने घर का आदमी समझना। क्या मिस्टर जगतप्रकाश, आपका हम लोगों पर बडा एहसान होगा।"
जगतप्रकाश को कहना पडा, "जी आया करूँगा। यद्यपि एम० ए० के विद्यार्थियों को खुद बहुत मेहनत करनी पड़ती है।"
सुषमा ने तीखी नज़रों से जगतप्रकाश को देखा, "जी, जानती हूँ। आप बोले तो, यही क्या कम है! अब आप जब फिर आइएगा तब आप मुझे यह सब समझा दीजिएगा।" सुषमा घूमकर चली गई।
सुषमा देखने में काफी सुन्दर थी, गहरा मेकअप किये हुए। इकहरे बदन की लम्बी-सी युवती, आँखें बडी-बडी। सुषमा को जगतप्रकाश ने पहले भी देखा था—मुक्त, हिम्मती, गर्वीली। हरेक आदमी सुषमा की ओर आकृष्ट हो जाता था, दबी ज़बान कुछ लोग उसके चरित्र पर लाछन भी लगाते थे। लेकिन जगतप्रकाश समझता था कि यह सब ईर्ष्यावश है।
सुषमा के जाने के बाद मिस्टर वसगोपाल ने बाबू माताप्रसाद से बात-चीत शुरू कर दी। करीब आधा घण्टा तक वह बाबू माताप्रसाद से उनका केस समझते रहे, फिर उन्होंने कहा, "ठीक है, केस आप जीत जाएँगे, आप

। दस बज गए थे। फर्श पर दो पत्र पड़े थे। उसने उन दोनों पत्रों को
या। एक पत्र बम्बई से आया था कुलसुम का, लेकिन दूसरे पत्र पर पते
लिखावट वह नहीं पहचान सका। उसने दूसरा पत्र पहले खोला।
वह पत्र कलकत्ता से आया था और उसे जसवन्त कपूर ने लिखा था।
रे दिन मेल से वह कलकत्ता से इलाहाबाद होते हुए दिल्ली वापस आ
ा था। उसने लिखा था कि जगतप्रकाश उससे स्टेशन आकर ट्रेन में मिले
कुछ बहुत जरूरी काम है। जसवन्त का पत्र उसे पहली बार मिला था,
दर लिखावट, लिखने का ढंग स्पष्ट। जगतप्रकाश को आश्चर्य हो रहा
कि जसवन्त को उससे कौन सा जरूरी काम हो सकता है। कुछ देर तक
सोचता रहा और अनुमान लगाता रहा, लेकिन उसकी समझ में कुछ
ही आया। हारकर उसने कुलसुम का पत्र खोला। बम्बई से लौटकर आने
बाद यह कुलसुम का पहला पत्र था उसके नाम।
एक सांस में आदि से अन्त तक वह कुलसुम का पत्र पढ़ गया, कुछ
जीब व्यथा से भरा हुआ था वह पत्र। जसवन्त का विवाह शर्मिष्ठा के
ाथ तय हो गया है। कुलसुम को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी। उसकी दृष्टि
र यह ठीक ही हुआ था, लेकिन जसवन्त ने अपने जीवन से कुलसुम को
कदम अलग कर दिया है, इसकी शिकायत थी उसे। उसने जसवन्त को
अब तक तीन पत्र लिखे थे, लेकिन उसे किसी पत्र का उत्तर नहीं मिला था।
दूसरे के साथ वैवाहिक सम्बन्ध तय हो जाने का यह अर्थ तो नहीं होता कि
सारा स्नेह, सारी ममता सदा के लिए समाप्त हो जाए। वह पत्र कुलसुम के
भावनात्मक उद्गारों से भरा हुआ था। अन्त में कुलसुम ने लिखा था—
"घुटन—घुटन—घुटन! किससे अपनी बात कहकर अपना जी हलका करूँ?
तभी मुझे तुम्हारी याद आ गई। अब तुम्हीं तो हो जिससे मैं अपने जी की
बात कह सकूँ, जिस पर मैं भरोसा रख सकूँ। तुमने मुझे कोई चिट्ठी नहीं
लिखी, मैं भी अपने मामले में इस कदर उलझी रही कि लाख चाहती हुई
भी मैं तुम्हें कोई पत्र नहीं लिख सकी। अगर हो सके तो तुम जसवन्त का
पता लगाकर मुझे उसकी खबर देना। अगर उसकी खबर तुम्हें न भी मिले
तो मुझे चिट्ठी जरूर लिखना। अगर हो सके तो दीवाली की छुट्टियों में
तुम दो चार दिन के लिए बम्बई चले आओ—तुमसे मिले एक अरसा हो

गया है। सच की परवाह न करना।"

कुलसुम का पत्र मेज पर रखकर जगतप्रकाश अवसन्न-सा बैठा यह जसवन्त—यह सब—यह कुलसुम—यह सब क्या है ? एक घुटन, अवसाद, और इन दोनों का मिश्रित परिणाम—एक उलझन। इस से निकलना उसे असम्भव-सा लग रहा था। जसवन्त कुलसुम के से हट गया था वह कुलसुम के जीवन में आ रहा था। जसवन्त के जीवन कोई शर्मिष्ठा आ गई है, उसके जीवन में भी यमुना आ गई है। कुल्सुम—नितान्त एकाकी !

लेकिन, क्या कुल्सुम नितान्त एकाकी है ? परवेज—वह कुलसुम कितना प्यार करता है। लेकिन कुलसुम परवेज से खुल नहीं सकती कुल्सुम परवेज से खुलना नहीं चाहती। यह कुलसुम—यह हरेक से खुल सकती है उसके अन्दर छल कपट नहीं है, उसके अन्दर कुण्ठाएं नहीं उन्मुक्त, निर्भीक—यह कुल्सुम बहुत ऊँची है, बहुत नेक है। अगर बन्द है तो वह जसवन्त है अगर कोई बन्द है तो वह खुद जगतप्रकाश

जगतप्रकाश के अन्दर वाली समस्त ग्लानि जाती रही। उन पत्रों को अपने ट्रंक में रखकर वह खाना खाने चला गया अपने मेस में।

शाम को चार बजे जगतप्रकाश लाइब्रेरी से वापस लौटा। उसने देखा कि माताप्रसाद और रूपलाल उसके बरामदे में टहल रहे हैं। जगतप्रकाश ने आते ही कहा "अरे आप लोग बड़ी जल्दी आ गए ! कितनी देर हुई आपको आए हुए ?'

बस दो-तीन मिनट समझो ! ' माताप्रसाद ने उत्तर दिया, 'मेरा काम तो एक बजे ही खत्म हो गया था, इसके बाद हम दोनों ने होटल में खाना खाया। सोच रहा हूँ कि सात बजे वाली गाड़ी से कानपुर निकल जाऊँ, एक्सप्रेस है। रात के ग्यारह बजे तक कानपुर पहुँच जाएँगे। रात में इतमीनान के साथ अपने घर में नींद आएगी।'

जगतप्रकाश ने कमरा खोला दोनों को बिठाते हुए उसने स्टोव पर पानी चढ़ाया, अच्छा तो चाय पी लीजिए। बड़ी खुशी हुई कि इतनी आसानी से काम हो गया। मेरा ऐसा खयाल है कि महीने दो महीने में फर्म आपके हाथ आ जाएगी।"

इस पर रूपलाल बोला, "अदालत का काम है, इसमे देर भी लग सकती है। असल म आफिस मे मुहरबन्दी हो गई है। चाचाजी का कहना है कि स म कम्पनी का जो सेफ है उसमे करीब तीन हजार रुपया नकद है। आफिस की मुहरबन्दी तोडकर सेफ स वह रुपया निकाला जा सके, फिर स मुहर लगा दी जाए तो काम वन सकता हे। चार पाच सौ दने पडेंगे कोतवाल साहब को। किसी को खबर नही होगी और रातो-काम हो जाएगा। अगर चाचाजी कह तो मैं कोशिश करूँ, कोतवाल मुझे बहुत मानते ह।"

जगतप्रकाश चौंक उठा, उसने ध्यान मे रूपलाल को देखा—छोटी-तेज आँखो मे शैतानियत की चमक दिखी उसे। यह आदमी वहुत-कर सकता है। उसने केवल इतना कहा, "यह काम गल्त होगा, इसमे रा भी हो सकता है।"

रूपलाल मुसकराया, "काम सही या गल्त नही हुआ करता, करने और उसका तरीका सही या गलत होता है। फिर मेरा यह सुझाव तो हालत मे है जब और कोई चारा न दिखे। और म समझता हूँ चाचाजी मुकदमा मजबूत है।"

जगतप्रकाश ने माताप्रसाद की ओर देखा, उनके मुख पर थकावट र चिन्ता के भाव स्पष्ट थे। उन्होने कहा, "मैं भी समझता हूँ कि यह म गल्त होगा। भगवान् पर ही भरोसा किया जाए।" उन्होने जगत-श को अकेले म ले जाकर कहा, "तुम समझ ही गए होगे कि मैं दशहरा तिल्क क्या नही चढा सका। अपनी बहन को लिख देना, मुझे तो लिखते र्म आती है। गरमी म तिल्क और शादी, दोनो साथ-साथ हो जाएँगे। मिस्टर वमगोपाल से कुछ दिना वाद मिलकर मेरे काम की याद दिला ा कि काम मे ढील न पडे, वैसे बडे शरीफ आदमी ह वह। अच्छा, अब चलूगा।"

"चाय तो पी लीजिए, मैं आपके साथ स्टेशन चलता हूँ।" जगतप्रकाश ला।

"नही, मैं चाय नही पिऊँगा, रूपलाल को पिला दो। स्टेशन चलने ो कोई जरूरत नही है। रूपलाल तो साथ म है न, मैं बडे आराम से चला

जाऊगा।"

दूसरे दिन जब जगतप्रकाश सोकर उठा, उसे याद हो आया कि ज
बने सुबह की डाकगाडी पर सफर करते हुए जसवन्त कपूर से मिल
यह जसवन्त कमलाकान्त का पुराना मित्र था, उससे तो उसका
कुछ महीने पहले हुआ था। एक बार उसके मन मे आया कि
को जसवन्त के आने की सूचना दे दे। फिर उसने अपना विचार
दिया। कुलसुम के पत्र के बाद उसे स्थिति कुछ स्पष्ट होने लगी थी।

सेकण्ड क्लास कम्पार्टमण्ट मे जसवन्त कपूर खडा खिडकी से
देख रहा था, उसकी आखे उसी को ढूढ रही थी। जगतप्रकाश को
जसवन्त कपूर ने हाथ हिलाया और जगतप्रकाश जसवन्त के कम्पार्टमेण्ट
साथ चलने लगा। गाडी रुक गई और जसवन्त कम्पार्टमेण्ट से उतर
'मेरा पत्र तुम्हे समय से मिल गया था। मैं सोच रहा था कि कही मेरा
तुम्हे न मिला हो और तुम मुझे यहा न मिलो।"

जगतप्रकाश को जसवन्त कपूर कुछ बदला-सा दिख रहा
जसवन्त कपूर शानदार सूट पहने था, उसके लहजे मे कुछ ऐसा था
जगतप्रकाश को अपरिचित सा लग रहा था। उसने कहा, 'हा, आपका
मुझे कल मिल गया था और आपके पत्र के साथ कुलसुम का भी पत्र
था—यह सयोग की बात थी। वह आपके सम्बन्ध मे काफी चिन्तित
उन्होने शायद आपको कई पत्र लिखे, लेकिन आपका कोई उत्तर उन्हे
मिला।"

जसवन्त कपूर के चेहरे पर एक धुधलापन आ गया, "मुझे कुलसुम
पत्र मिले, यह ठीक है और मैने उसके पत्रो का उत्तर नही दिया, यह
ठीक है। इसी सम्बन्ध मे मैं तुमसे मिलना चाहता था। तुम समझ रहे
हो कि हम दोनो एक-दूसरे से बहुत दूर हट गए हैं, और अब हम नज
नही आ सकते, नजदीक आने की कोशिश के अर्थ होगे उसका मेरी जि
से हट जाना जो मेरी जिन्दगी मे आ गया है। तुम शायद मेरी बात
ही गए होगे।"

'तो क्या शर्मिष्ठादेवी से आपका विवाह हो गया? मुझे इसकी
खबर नही मिली।"

जसवन्त मुसकराया, "मेरे विवाह का निमत्रण तुम्हे अवश्य मिलेगा, ...म्बर म हमारा विवाह होगा। लेकिन मैं दूसरी बात कह रहा था। तुम ...द स्त्रिया की प्रकृति को नही जानते, उनमे भयानक ईर्ष्या और जलन ...ी है। यह ईर्ष्या और जलन कभी-कभी वैवाहिक जीवन का नष्ट भी कर ... है।"

जगतप्रकाश की समझ मे जसे सारी बात आ गई, उसने कहा, "आप ...को पत्र लिखकर या उसस मिलकर सारी स्थिति स्पष्ट क्या नही ...देते, कुलसुम समभदार लडकी है।"

'तुम कुलसुम को अच्छी तरह जानते नही, नही तो यह बात तुम मुझसे ...कहत। ऊपर से शान्त और सयत दिखने वाली इस लडकी म अन्दर कही ...ानक विस्फोट की प्रवत्ति है। फिर मुझमे भी तो कही कोई कमजोरी है, ...से कुलसुम के सामन पडने म सकोच होता है। और पत्र-व्यवहार मैं जारी ...हीं रखना चाहता।" जगतप्रकाश ने अनुभव किया कि जसवन्त के स्वर मे ...क प्रकार का कम्प है। "मुझे अपनी कमजोरी से लडना है। तुम शायद ...न्वई जाओ, कुलसुम मे तुम्हारे लिए भी एक भावना है, मैं यह जानता हूँ। ...म मेरी स्थिति कुलसुम से स्पष्ट कर देना, और मेरी ओर से क्षमा माग ...ना।" जगतप्रकाश को लगा कि जसवन्त की आखे कुछ तरल हो गई ..., क्योंकि उसने अपनी दृष्टि जगतप्रकाश से हटा ली थी।

जसवन्त जगतप्रकाश का हाथ पकडकर कम्पाटमण्ट के अन्दर चला ...या। उसने अपने सूटकेस से पत्रो का एक बण्डल निकाला जो रेशमी ...रुमाल म बधा था। उस बण्डल को जगतप्रकाश के हाथ म देत हुए उसने ...हा, 'य कुलसुम के पत्र हैं जो उसने मुझे लिखे थे। इन पत्रा का मैं नष्ट ...हीं कर सका, यही कोई कमजोरी मरे अन्दर अवश्य थी और इन पत्रो को ...नष्ट करता, यह मेरी सामर्थ्य मे नही है। मैं इन पत्रा को डाक से कुलसुम को ...भेज सकता, लेकिन डाक का कोई ठिकाना नही। तुम इन पत्रो को कुलसुम ...को दे देना।"

जगतप्रकाश एकटक जसवन्त को देख रहा था, उसने उस बण्डल को ...नहीं लिया।

'मैं कहता हूँ इस बण्डल को ले लो और इसे कुलसुम को वापस कर

देना।" जसवन्त ने जगतप्रकाश के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "मुझे तुम पर विश्वास है। यह कुल्सुम बड़ी भली लड़की है, बड़ी उदार। मैं जानता हूँ तुम इन पत्रों को पढ़ोगे नहीं, और लो तो कोई हर्ज नहीं। लेकिन अगर मैं मनुष्य को पहचानता हूँ तो तुम विश्वासघात कर सकते हो, न धोखा दे सकते हो, न नीचता पर उतर सकते हो। तुम्हें अपना मित्र बनाकर मुझे गर्व होगा।"

जगतप्रकाश ने चुपचाप पत्रों का वह बण्डल ले लिया। गाड़ी अब दे रहा था। जगतप्रकाश के साथ प्लेटफार्म पर उतरते हुए जसवन्त ने कहा, "जगतप्रकाश! यह कुल्सुम बड़ी भली लड़की है, शरीफ, उदार, समझदार। तुम शायद उससे प्रेम करने लगो। लेकिन वह प्रेम नहीं सकती, यह उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है। तुम्हें मैं अपना घनिष्ठ मानने लगा हूँ इसलिए यह सब कह रहा हूँ।" इस समय इंजन ने दी। कम्पार्टमेण्ट में चढ़ता हुआ जसवन्त बोला, "मेरे विवाह में आना, मैं तुम्हें पत्र लिखूँगा। हमारा-तुम्हारा साथ छूटेगा नहीं, आगे चलकर हम दोनों को कुछ अधिक काम करना पड़ेगा। बोलो, मेरा साथ निबाहोगे?"

जगतप्रकाश अब एक तरह की भावना के प्रवाह में अपने को बहता हुआ अनुभव करने लगा, उसने कहा, "मैं आऊँगा तुम्हारे विवाह में, तुम्हारा साथ दूँगा।" गाड़ी अब प्लेटफार्म से खिसकने लगी थी।

१०

चौक म काग्रेस की एक मीटिंग थी, उस मीटिंग म जाने के लिए जगत-प्रकाश अपने कमरे के बाहर निकला। उम समय वह अकेला था, कमला-कान्त से उसका साथ करीब-करीब छूट गया था। रात म सरदी काफी बढ गयी थी, क्योकि नवम्बर का दूसरा सप्ताह चल रहा था। जगतप्रकाश ऊनी जवाहर-बण्डी पहने था। उसने तय किया था कि चौक के खादी भण्डार म जाकर वह पट्टू का एक कोट सिल्न को दे देगा, फिर वह मीटिंग म जाएगा। बाहर के बडे-बडे नेता लोग उस मीटिंग म भाषण देने वाले थे।

हास्टल के फाटक से वह थोडा ही आगे बढा था कि एक कार उसकी बगल म आकर रुकी और एक अत्यन्त परिचित आवाज उसे सुनाई दी, 'अरे जगतप्रकाश! मैं तो तुम्हारे ही यहाँ जा रही थी।"

जगतप्रकाश चौक उठा, "अरे तुम कुल्सुम बेन, तुम इलाहाबाद मे! मुझे तुम्हारे आने की कोई खबर ही नही मिली।"

स्टियरिंग ह्वील पर परवेज बैठा था, कुलसुम उसकी बगल मे बैठी थी। दिना झाबवाला की बडी बुइक कार थी जिस पर वह जबलपुर मे कई बार बैठा था। कुल्सुम ने अपनी बगल का दरवाजा खोल्ते हुए कहा, "साथ बैठ जाओ। आज दोपहर को ही परवेज के साथ कार पर जबल्पुर से इलाहाबाद आई हू। रास्ते भर हम लोग पिकनिक मनाते हुए आ रहे हैं। विन्ध्याचल के पहाड! कितने खूबसूरत दृश्य ह, उन पहाडो मे छिपे हुए!"

जगतप्रकाश आग की ही सीट पर कुलसुम की बगल मे बैठ गया। "तुम जबल्पुर कब आई?" उसने पूछा।

"करीब पन्द्रह दिन हुए। मामा ने बहुत जोर देकर बुलाया था, डैडी ने

कहा कि मुझे जबलपुर जाना ही चाहिए। फिर इस परवेज ने भूख हड़ताल की धमकी दी थी।" कुलसुम खिलखिलाकर हँस पडी, "मामा और ... बात टाली जा सकती थी, लेकिन यह परवेज, इसे बहुत दिना से ... था, तो एकदम चल पडी। दस दिन जबलपुर म रही, फिर सोचा ... बाद होते हुए दिल्ली चली जाऊँ। परवेज मेरे साथ लग गया, इस ... का मन नहा भरा था।" कुलसुम न परवेज की ओर देखा, 'क्या परवेज ठीक कह रही हूँ न ?"

परवेज के भावनाहीन चेहरे पर एक चमक आ गई, 'हाँ, मेरा मन तुमसे कभी नही भरता, कभी भरेगा भी नही। मिस्टर जगतप्रकाश ... दिन से इस कार पर मैं अकेला इस कुल्सुम के साथ सफर कर रहा हूँ इतना सुख कभी नही मिला जिन्दगी म। यह कुलसुम हमेशा हमेशा साथ रहे, यही मन करता है।"

'लेकिन तुम मुझे कभी-कभी बेहद बोर करते हो परवेज !" कुल्सुम मुसकराते हुए कहा।

"बिलकुल गलत ! तुमने कभी भी अपनी नाखुशी या नाराजगी जाहिर की। अच्छा कहा चलू ?' कार स्टार्ट करते हुए परवेज ने पूछा।

कुलसुम जगतप्रकाश की ओर घूमी, "तुम कही जा रहे थे। कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं तो चौक जा रहा था, खादी भण्डार। जाडा आ गया है, कपडे बनवाने हैं। फिर वही चौक म कांग्रेस की एक मीटिंग है, राजेन्द्र और सरदार पटेल बोलने वाले हैं वहा।'

"चलो परवेज, चौक की ही तरफ चले। मैं भी इन दोनो के भाषण को सुनूगी। फिर खादी भण्डार से पश्मीने का एक शाल भी ले लू, यहा इतनी सरदी है तब दिल्ली मे तो मौसम बहुत ठडा मिलेगा।'

खादी भण्डार पहुँचकर कुल्सुम पश्मीना-काउंटर की ओर बढी। बीच जगतप्रकाश ने अपने लिए पट्टू का एक थान लेकर वहीं दर्जी को कोट का नाप दे दिया। इसके बाद वह कुल्सुम के पास पश्मीना-काउंटर पहुँचा। वहा पश्मीने के शाल बिखरे पडे थे और कुलसुम उनमे से अपने शाल चुन रही थी। शाल का एक जोडा पसन्द करके कुल्सुम ने सेल्समैन

ा, "इसे बाध दो।"

"जी, इसका दाम दो सौ वीस रुपये है।" सेल्समैन ने कहा।

कडे स्वर म कुलसुम बोली, "सुन लिया।" फिर वह परवेज़ की आर
ी, "परवेज़, विलायती सज के सूट तो तुम पहनते ही हो, मेरी तरफ से
 सूट पश्मीन का बनवा लो!"

घबराए हुए स्वर म परवेज़ ने कहा, "कुलसुम, तुम तो जानती हो कि
तर को देसी कपडो से कितनी नफरत है। इस पश्मीने के सूट को देखकर
मुझ पर बेहद नाराज़ होंगे।"

कुलसुम न बडे प्यार से परवेज़ के क धे पर हाथ रखते हुए कहा, 'तुम
ने कह देना कि यह सूट मैंने तुम्हे प्रेजेंट किया है, फिर वह जरा भी
राज़ न होंगे। देखो, तुम्हे कौन सा डिज़ाइन पसन्द है? जगतप्रकाश,
ड़ा पसन्द करने मे जरा तुम भी मदद करो!"

परवेज़ की हिम्मत नही पड रही थी कि वह अपने लिए कपडा पसन्द
े। जगतप्रकाश ने एक डिज़ाइन पसन्द किया, कुल्सुम न परवेज़ की
र देखा, "बडा अच्छा डिज़ाइन है, तुम्हे कैसा लगता है, बोलो परवेज़?"

कुछ शर्माते हुए परवेज़ न कहा, "बहुत अच्छा है, बडा प्यारा डिज़ाइन
।"

कुल्सुम ने भी अपनी पसन्द का एक डिज़ाइन चुना। उसने सेल्समैन
दोनो डिज़ाइनो का एक-एक सूट का कपडा काट देने को कहा।

जिस समय चौक वाली कांग्रेस की सभा समाप्त हुई, आठ बज रहे थे।
नो कार पर बैठ गए। कुल्सुम ने जगतप्रकाश से कहा, "हम लोग सिविल-
ाइन्स म रासेटा होटल म ठहरे है। खाना तुम हम लोगो के साथ ही खाओगे
होटल म चलकर। अभी तो तुमसे बाते भी नही हुई हैं, होटल मे चलकर
ातें होगी।'

सिविल लाइन्स म मार्टीनस नाम की दर्जी की एक दूकान पर कुल्सुम
 गाडी रुकवा दी। मार्टीनस इलाहाबाद की सबसे अच्छी दर्जी की दूकान
समझी जाती थी। जैसे ही ये लोग दूकान म घुसे, मैनेजर ने इनका स्वागत
किया। कुल्सुम ने पश्मीन के दोनो टुकडे निकालते हुए कहा, "परसो शाम
तक दो सूट सिलाने है, अर्जेन्ट काम है, इसकी मुनासिब सिलाई मिलेगी।"

... मिय ता टलरमास्टर यासीन भी आ गया था। वह ... और अनुभवी आदमी था। बड़े आदर से साथ सिर झुकाते हुए ...
"हो जाएगा हुजूर! किसका सूट बनना है?"
कुल्सुम ने उस टुकड़े को जिसे जगतप्रकाश ने पसन्द किया था, ... देकर कहा, 'इस कपड़े का सूट इन परवेज का बनेगा, नाप ले लो।'
परवेज ने नाप ... बाद कुल्सुम ने जो कपड़ा ... पसन्द किया ... उसे यासीन को देते हुए कहा ... इस कपड़े का सूट इन जगतप्रकाश ... बनेगा।'
जगतप्रकाश बोल उठा ... नहीं मुझे इस सूट की आवश्यकता ... मैंने तो परवेज के लिए ही यह दूसरा कपड़ा भी चुना था।'
कुल्सुम मुसकराई ... लेकिन मैंने तो यह कपड़ा तुम्हारे लिए ... किया था। क्या परवेज? जगतप्रकाश के लिए यह कैसा रहेगा?"
बड़ी मोहक मुसकान के साथ परवेज बोला, 'बिलकुल शानदार! मेरे लिए तो गवर्नर से एक सूट छिपाना ही मुश्किल हो जाएगा। दूसरे ... से मैं बाज आया।' यासीन ने जगतप्रकाश का नाप ले लिया।
... रासटी इलाहाबाद का सबसे शानदार होटल था। कुल्सुम और जगत... प्रकाश होटल के पोर्टिको में उतर पड़े परवेज कार पार्क करने के लिए ... पीछे की ओर चला गया। कुल्सुम ने कहा ... मैं चौबीस नम्बर कमरे ... ठहरी हूँ। परवेज पचीस नम्बर कमरे में है। हाँ, तो तुम्हें जसवन्त का कुछ ... पता चला?"
सिर झुकाकर जगतप्रकाश बोला ... कलकत्ता से दिल्ली जाते समय ... दिन पहले जसवन्त मुझसे मिला था। जिस दिन तुम्हारा पत्र मुझे मिला था उसी दिन जसवन्त का पत्र भी मुझे मिला था कि दूसरे दिन मैं स्टेशन आ जाऊँ। बड़ा उदास था वह।
... मेरी बाबत कुछ बातचीत हुई उससे?' कुल्सुम के मुख पर उत्सुकता के भाव आ गये थे।
... हाँ तुम्हारे सम्बन्ध में बात करने को ही उसने मुझे स्टेशन बुलाया था। मैंने कहा न कि बहुत उदास था, जैसे उसके हृदय पर कोई बहुत बड़ा बोझ हो मुझे तो उसके ऊपर दया आ रही थी।'

एक तरह के सतोष की छाप आ गई थी कुलसुम के मुख पर। जगत-प्रकाश ने अब अपनी आँखें ऊपर उठा ली थी। कुलसुम को सतोष था कि ... कारण जसवन्त के हृदय पर एक बोझ-सा था। कुलसुम रात के ...रे को देख रही थी, और फिर एक नि श्वास फूट पडा उससे, 'बेचारा जसवन्त! मैं समझ सकती हूँ कि उसने मुझे कोई पत्र क्या नहीं लिखा। लेकिन वह बेकार ही अपने को अपराधी समझ रहा है। मैंने भी तो उसे ...म्ठा स विवाह करने से रोकने की कोशिश नहीं की।" कुलसुम अपनी बात कहते-कहते रुक गई। परवेज कार को पीछे के गैराज मे रखकर आ गया था।

खाना खाने के बाद तीनों लाउज मे आकर बैठ गए। परवेज बहुत थका-सा लग रहा था। उसने कहा, "मैं तो सोने जा रहा हूँ, माफ कीजिएगा मिस्टर जगतप्रकाश! दिन भर कार चलाई, इस वक्त बहुत थक गया हूँ। आप कुल्सुम से बात कीजिए, कल मुलाकात होगी आपसे।"

कुलसुम बोली, "वाह परवेज, जगतप्रकाश को पहुँचाना भी तो है!"

जगतप्रकाश बोला, "नहीं मिस्टर परवेज, आप सोइए जाकर मैं यहाँ से तागा ले लूगा। आप बहुत थके हुए हैं।" वह उठ खडा हुआ, "अब मैं भी चलूगा, कल सुबह मिलूगा आकर। तुम भी तो थकी होगी कुलसुम, अब सोओ जाकर।"

'नहीं, अभी नहीं, मैं जरा भी नहीं थकी हूँ। अच्छा परवेज, तुम सोओ जाकर, मैं जगतप्रकाश से बातें करूँगी।"

परवेज के जाने के बाद थोडी देर तक कुलसुम और जगतप्रकाश चुप-चाप बैठे रहे। फिर कुलसुम ने बात आरम्भ की, 'तुम्हारी जसवन्त से क्या-क्या बात हुई तुमने मुझे कुछ लिखा नहीं?"

'बहुत-सी बातें ऐसी है जो लिखी नहीं जा सकती थीं। फिर भी मैंने एक हफ्ता पहले एक पत्र तुम्हे लिखा था, शायद वह तुम्हे मिला नहीं।"

'हाँ, पद्रह-बीस दिन से तो मैं बाहर ही हूँ। अच्छा, तो जसवन्त से तुम्हारी जो बातें हुईं, अगर वे लिखी नहीं जा सकती थी तो वे मुझे बतलाई तो जा सकती है। उसका विवाह कब हो रहा है, कुछ बतलाया उसने? मुझे तो पत्र न लिखने की जैसे कसम खा ली है उसने।"

कुछ दब स्वर म जगतप्रकाश बोला, "शायद दिसम्बर क दूसरे म मे उसका विवाह हो। तारीख अभी तय नही हुई है। उमन मुझ स लिया है कि मैं उसके विवाह म अवश्य सम्मिलित होऊँ। लेकिन अभी मुझे उसके विवाह का कोई निमन्त्रण पत्र नहीं मिला है। दूसरा बात यह इस विवाह से वह असन्तुष्ट नही है।"

"मैं जानती हूँ कि वह असन्तुष्ट नहीं है, असन्तुष्ट होन की वाइ व भी ता नही है। अमीर ससुराल, और वह अपने ससुर का एकमात्र उ धिकारी! फिर राजनीतिक और सामाजिक जीवन म उसका ससुर आगे है। इसका भी फायदा जसवन्त का मिलेगा। इस विवाह स मन खुशी हुई है। शर्मिष्ठा सुन्दर है पढी लिखी है।" अपनी बात कहते वक्त कुलसुम जगतप्रकाश की ओर नही देख रही थी। उसकी आख बन्द थी जैसे वह यह बात स्वय अपने से कह रही हो। उस समय कुल्सुम के मुख का रग चढ उतर रहा था मानो एक बहुत बडा अन्तर्द्वन्द्व चल रहा उसके अन्दर।

तभी जगतप्रकाश अचानक कह बैठा 'जसवन्त का खयाल है कि शर्मिष्ठा म ईर्ष्या है।"

कुल्सुम मुसकराई 'औरता म ईर्ष्या होती ही है, अगर उनम विवाह प्रति प्रेम हा। क्यो, यह बात जसवन्त ने तुमसे किस सिलसिले म कही'

वह तुम्हारे पत्रा का एक बण्डल मुझे दे गया है कि मैं तुम्हे वापस कर दू। तुम्हारे पत्रो को उसने कभी नष्ट नही किया, एक निधि की भाति उन्हे उन्ह सँजोकर रखा है अपन पास। अपन हाथो से वह उन पत्रा का नष्ट नहीं करना चाहता था, और पास वह रख नही सकता था शर्मिष्ठा की ईर्ष्या के कारण।'

"कहा हैं वे पत्र ? तुमने डाक से उन्ह मेरे पते पर तो नही भेज दिया' आतुरता के साथ कुल्सुम ने पूछा।

'नही, वे मेरे पास सुरक्षित है, मेरे कमरे म।" जगतप्रकाश बोला कल सुबह मैं उन्हें लेता आऊँगा।"

कुल्सुम ने एक ठडी सास ली 'मुझे यह नही मालूम था कि जसवन्त इतना भावुक है कि वह मेरे पत्र सँजोए हुए है, जबकि उनम कुछ भी नहीं

उसन जो पत्र मुझे लिखे, वे सब कहा गए, मुझे इसका पता तक नही शायद मैंने उन्हें नष्ट कर दिया, उनमे कोई ऐसी बात तो नही थी जो उन्हें संजोकर रखती।" फिर कुछ उदास भाव से उसने कहा, "शायद मेरी ही कहा काई गलती थी। मुझे यह नही मालूम था कि जसवन्त मुझे ...ना चाहता है।"

कुलसुम उठ खडी हुइ एक झटके के साथ, "चलो तुम्हें पहुंचा दू तुम्हारे ... तक। मुझे अपनी अमानत भी तो वापस लेनी है।" एकाएक कुलसुम जोर स हँस पड़ी, "शायद मैं भी उसे बेहद चाहती थी। लेकिन इससे ...? हम दोनो ही एक-दूसरे का बहुत बहुत चाहत थे। अब सोचती कि इसान का चाहा होता कहा है? इसान की चाह के अलावा भी बहुत-सी ऐसी चीजें है जिनके आगे इसान को अपनी मर्जी के खिलाफ झुकना पडता है। झुकना—झुकना—इस झुकने मे कभी-कभी इसान टूट भी जाता है।"

कुलसुम की हँसी के पीछे कितनी भयानक व्यथा और पीडा है, जगत-प्रकाश का इसका पता तब लगा जब कुलसुम उसके साथ बाहर चलने के स्थान पर सोफ़े पर बैठ गई। उसने अपने हाथा स अपना मुह ढाप लिया, चुपचाप उसी मुद्रा मे वह बैठी रही दो-तीन मिनट तक, फिर वह उठी, "मैं भी कितनी पागल हूँ! चलो तुम्हे पहुँचा दू चलकर।" कुलसुम की स्वाभाविक मुद्रा फिर लौट आई, "इतना भावुक हाने से तो काम नही चलेगा। जो कुछ सामने आता है, उसे सहन करना होगा।"

हास्टल पहुँचकर जगतप्रकाश ने पत्रा का बण्डल कुलसुम को दे दिया। कार पर बठत हुए कुलसुम ने कहा "सुना है यह इलाहाबाद त्रिवेणी कह-लाता है। यहा गगा है, यमुना है। अगर नीद न आ रही हो तो चलो थाडा-सा घूम ही आएँ, चादनी रात और मौसम बडा सुहाना है।"

'अब होटल म जाकर साओ, काफी अधिक रात हो गई है।" जगत प्रकाश बोला।

'जहाँ इतनी हुई है वहाँ घण्टे-आधे-घटे मे कोई फक नही पडता।" कुलसुम न जगतप्रकाश का हाथ पकडकर उसे अपनी बगल म बैठा लिया। कुलसुम कार चला रही थी और कह रही थी, "मैं यहाँ से दिल्ली जाना चाहती

थी, जसवन्त का पता लगाने के लिए, लेकिन अब सोचती हूँ कि क्या
जाना बेकार होगा। मुझे यह खबर मिल ही गई कि वह जल्दी लौट
अब तो जैसे सब-कुछ टूट ही गया है। इस टूटन में मुझे एक तरह
राहत मिली है। अब मैं इलाहाबाद में दो दिन की जगह एक दिन
सकती हूँ, परवेज को जबरदस्ती रोकूँगी। उसके बाद परवेज के साथ
पुर कार पर, और जबलपुर से ट्रेन पर बम्बई के लिए। यही प्रोग्राम
रहा। लेकिन यह प्रोग्राम एक या दो दिन कायम रह सका, इस
गया है। बड़ी मुश्किल से परवेज को मामा ने यहाँ आने की इजाजत
बेचारा बहुत थक गया है। डैडी चाहते हैं कि परवेज इस शराब के
निकलकर हमारी मिलों का काम-काज सम्हाले, डैडी की तन्दुरुस्ती
नहीं रहती। कोई अपना आदमी तो उन्हें चाहिए। लेकिन डियर मामा
अजीब दिमाग पाया है उन्होंने अजीब दिमाग पाया है। कहते हैं परवेज
जमाई नहीं बनेगा, जैसे उन्होंने यह समझ लिया हो कि परवेज से मेरी
हो ही गई है। मामा के भी तो शेयर हैं हमारी मिल में। और परवेज
मिलों का काम सम्हालता है तो अपने निजी हक से। मैंने डियर मामा को
समझाया, कभी समझते हैं, कभी समझने से इनकार कर देते हैं। तुम
जानते, मामा आधे पागल हैं मामा ही क्या, मैं कहती हूँ मेरे आधे से ज्यादा
रिश्तेदार पागल हैं। डैडी पागल हैं, ममी पागल हैं, मैं खुद पागल हूँ।
पारसी—हममें अधिकांश लोग पागल हैं। जानते हो इसकी वजह क्या है?
यहाँ तक कहकर कुल्सुम एकाएक रुक गई।

कार अब फाफामऊ के पुल पर चली जा रही थी। कुलसुम ने कार
गति धीमी कर दी। अभी तक वह बातें करती रही थी, बिना रुके हुए, बिना
इस बात की परवाह किए कि जगतप्रकाश उसकी बात में योगदान दे
है या नहीं, जैसे उसकी बात ही दुनिया में सब-कुछ है। कुछ रुककर उसने
कहा, "मैं न जाने क्या-क्या कह गई कितना सुहाना मौसम है!" कुल्सुम
ने पुल के बीचोबीच कार रोक दी। कार से उतरते हुए उसने कहा, "
खूबसूरती के आलम में मैं जिन्दगी की कुरूपता देख रही हूँ—देखो, चारों
तरफ कितनी खूबसूरती है! गंगा की लहरें कितनी शान्त हैं, जैसे पानी
न रहा हो, रुक गया हो।"

जगतप्रकाश भी कार से उतर पडा—एक मूक श्रोता और अनुयायी
भाति। जगतप्रकाश की नजरा से अपनी नजरें मिलाते हुए कुलसुम
ने, "सुना है तुम हिन्दुओं मे अपने दवी देवताओ की पूजा करने के बाद
हे गगा म बहा देने की रस्म है।"

"हा, दवी देवताओ को ही नही, कभी-कभी मुर्दो को भी गगा मे प्रवा-
ह किया जाता है।" जगतप्रकाश बोला, और तभी जगतप्रकाश ने देखा
कि कुलसुम के हाथ म जसवन्त द्वारा वापस की गई चिट्ठियो का बण्डल है।
उसने यह भी देखा कि कुलसुम बाएँ हाथ से पुल की रेलिंग पकडे हुए नीचे
गगा के शान्त जल प्रवाह को बडे ध्यान से देख रही है। फिर कुलसुम का
दाहिना हाथ पत्रो के उस बण्डल को पकडे हुए उठा, और ज़ोर लगाकर
कुलसुम ने उस बण्डल को गगा की धारा मे फेंक दिया। जगतप्रकाश की
ओर मुडकर उसने कहा, "ये पत्र मेरी उस क्षणिक भावना के शव हैं जिसका
अन्त हो चुका है।" उसके मुख पर एक मुसकराहट आई, "कोई भी
चीज तो स्थायी नही है। जहाँ आदि है, वहा अन्त जरूर होगा। चलो, अब
चला जाए।"

दूसरे दिन जब जगतप्रकाश सोकर उठा, उसके मन म एक प्रकार का
पुलक था, उल्लास था। पिछली रात कुलसुम न उससे कह दिया था कि
वह करीब साढे दस बजे उससे मिलने आएगी। उसने कार से बनारस जाने
का कार्यक्रम बनाया था। दोपहर मे लच बनारस मे होगा, फिर वहा के
मंदिरा, घाटो और विश्वविद्यालय म घूमकर करीब सात बजे शाम तक
बनारस स चल देना होगा, और डिनर इलाहाबाद लौटकर होटल मे खाया
जाएगा। उसे दस बजे तक तैयार हो जाना था।

कपडे पहनकर उसने घडी देखी, अभी दस बजे थे। वह बरामदे मे बैठ
गया, तभी होस्टल का चपरासी उस दिन की डाक उसे दे गया। एक
लिफ़ाफ़ा था और एक निमत्रण पत्र था। दोना पर पते एक ही हाथ के
लिखे हुए थे। जगतप्रकाश न लिफाफा खोला, जसवन्त कपूर का पत्र था,
छोटा-सा। कुल चार पक्तियाँ उसम थी—"प्रिय जगतप्रकाश! तुमने मुझस
वायदा किया था कि तुम मेरे विवाह मे शामिल होगे, अपने उस वायदे को
तुम्हें निभाना है। न जाने क्यो तुम्हारे प्रति मुझम एक आत्मीयता आ गई है,

उस आत्मीयता की रक्षा करना ।—जसवन्त ।"

निमन्त्रण-पत्र भी जसवत के विवाह का था । पत्र और निमन्त्रण दोनो ही जगतप्रकाश ने अलमारी म रख दिए । उसे याद आ गया कि जसवत कपूर से उसके विवाह म सम्मिलित होने का वायदा कर लिया था । आठ दिसम्बर का यह विवाह था, बरात अमृतसर से लाहौर जाएगी, देवराज के यहाँ । उसने भावना के अतिरेक म बरात म सम्मिलित होने का वायदा तो कर लिया था, लेकिन जाने के बारे म गम्भीरतापूर्वक कभी सोचा न था । अब उसके सामने यह प्रश्न उठ खडा हुआ कि क्या वास्तव में उसे विवाह मे जाना चाहिए ? वह वहा जाकर क्या करेगा ? वह उनके समाज का प्राणी नही है । तर्क वितर्क से घिरा वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि उसे क्या करना चाहिए । तभी परवेज उसको दरवाजे पर दिखाई दिया । परवेज बोला "हम लोग आ गए, अब चल देना है, नहीं तो देर हो जाएगी ।"

जगतप्रकाश उठ खडा हुआ "मैं तैयार हूँ ।" कमरे म ताला लगाकर वह तत्काल परवेज के साथ निकला । कुलसुम कार म बैठी इन लोगों का इतजार कर रही थी । जगतप्रकाश को देखते ही वह बोली, "अरे, तुम इतनी जल्दी आ गए ! मालूम होता है तुम तैयार ही बैठे थे ।" कुलसुम ने अपनी बगल वाला कार का दरवाजा खोल दिया ।

परवेज स्टियरिंग ह्वील पर बैठ गया । कार बनारस की ओर रवाना हो गई ।

दिन भर जगतप्रकाश को एकान्त म कुलसुम से बात करने का मौका नही मिला । रात म इलाहाबाद लौटकर जगतप्रकाश को उसके हास्टल तक पहुँचाने के लिए कुलसुम ही गई । रास्ते म जगतप्रकाश ने कुलसुम से कहा 'आज सुबह मुझे जसवत कपूर के विवाह का निमन्त्रण-पत्र मिला है, आठ दिसम्बर को उसकी शादी है । मुझे उसने बहुत आग्रह के साथ बुलाया है ।'

रात के अँधेरे मे वह कुलसुम के मुख के भावो को नहा देख पाया, लेकिन उसने अनुभव किया कि कुलसुम की आवाज शात और सयत है, "शायद मेरे यहाँ भी यह निमन्त्रण-पत्र गया हो, बम्बई म । जसवत का व्यक्तिगत पत्र भी आया होगा, शायद न भी आया हो, कौन कह सकता है ?

क्या तय किया है, जाओगे ?"

"जाने की तबीयत नहीं होती, हम दोनों विभिन्न समाजों के हैं, विभिन्न क है।"

"मैं समझती हूँ। लेकिन जगत, क्या मेरी एक बात मानोगे ? उस दफा मत कर देना।"

"मानूगा—बोलो!"

"तुम जसवन्त के विवाह में चले जाओ, अपनी तरफ से न भी सही तो री तरफ से। यह समाज और वर्ग वाली कुण्ठा तुम अपने अन्दर से काल दो। क्या तुम मेरे ऊपर अपना कुछ अधिकार समझ सकोगे ? क्या अपने ऊपर मेरा कुछ अधिकार स्वीकार कर सकोगे ?"

जैसे सिर से पैर तक झनझना उठा जगतप्रकाश के अन्दर। वह कुछ कहना हता था, लेकिन शब्द उसके होठों तक आकर रुक गए। कुलसुम ने कुछ क कर कहा, "मैं चाहती हूँ कि तुम उसके विवाह में सम्मिलित हो, मैं सकी बीवी के लिए कुछ उपहार दूँगी, तुम मेरी तरफ से उसे दे देना। लो, जाओगे ?"

कमजोर आवाज में जगतप्रकाश ने कहा, "जाऊँगा। अपने को तुम्हारे नुरूप ढालने की कोशिश करूँगा।"

कुलसुम का दाया हाथ स्टियरिंग ह्वील पर था, जगतप्रकाश ने अनुभव या कि कुलसुम का बाया हाथ उसकी गरदन में लिपटकर उसके मुख को पने मुख की ओर खींच रहा है, और फिर एक स्निग्ध और भावना से भरा म्बन उसने अपने होठों पर अनुभव किया। एक क्षण के लिए कार लहराई और फिर कुलसुम का बाया हाथ उसके दाहिने हाथ की सहायता करने के लिए स्टियरिंग ह्वील पर पहुँच गया।

उस रात जगतप्रकाश को ठीक तरह से नींद नहीं आई। यह सब क्या हो रहा है ? उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अपनी इच्छा के विरुद्ध वह एक अजनबी दुनिया में खिंचता जा रहा था। वह कुलसुम उससे प्रेम क्या करने लगी ? जसवन्त के अभाव की पूर्ति के लिए ? नहीं, जगतप्रकाश ने कुलसुम के जीवन में तब प्रवेश किया था जब जसवन्त कुलसुम के जीवन में था। जसवन्त के अभाव की पूर्ति के लिए परवेज तो है। नहीं, जगतप्रकाश

पूरक तत्त्व नही है, उसकी एक निजी अलग से स्वतन्त्र सत्ता है।
उसे यमुना की याद आ गई।

वह अबोध, निरीह और आत्म-समर्पण की प्रतिमूर्ति यमुना!
नही वह कहा होगी, कानपुर म या बस्ती म। यह यमुना उसकी प्रतीक्षा
रही है उसन यमुना को वचन दे दिया है। कुलसुम का उसके जीवन
गल्त है—आखिर अन्त क्या होगा ? क्या जिस तरह जसवन्त कु
जीवन से निकल गया है, उसी तरह जगतप्रकाश को भी कुल्सुम
से निकलना पडेगा ? क्या जगतप्रकाश के लिए यह उचित न होगा
अभी से अपनी स्थिति स्पष्ट कर दे ? फिर एक प्रश्न और उ
हुआ जगतप्रकाश क सामने—क्या कुलसुम से यह स्थिति स्पष्ट कर
कोई आवश्यकता है ? प्रेम किया जाता है बिना विवाह क भी।
कुलसुम के प्रेम म विवाह का कोई विधान है भी नही। लेकिन इस
क्या यमुना बाधक होगी ? यमुना बाधक न भी हो तो क्या उसके
यह उचित होगा कि यमुना के रहत हुए वह किसी दूसरी स्त्री से प्रेम
नही, अभी समय है अभी सब कुछ रोका जा सकता है। सुबह वह
स्थिति कुल्सुम से स्पष्ट कर दगा। जिस तरह जसवन्त कुल्सुम के जी
निकल गया है, उसी तरह वह भी कुल्सुम के जीवन से निकल जा
कुल्सुम के साथ उसका परवेज है, सीधा, सरल, शिशु की भाति
कुल्सुम के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना के साथ। इस परवेज को
प्रकाश पसन्द करने लगा था, उसके प्रति एक हार्दिक सवेदना उत्पन्न
थी जगतप्रकाश मे। कुलसुम से अपना सम्बन्ध तोडकर अपने साथ उ
करेगा, कुल्सुम के साथ उपकार करेगा और सबसे बढकर उपकार
परवेज के साथ।

सुबह जगतप्रकाश देर से सोकर उठा। उस समय उसका मन भा
और उसके सिर मे हल्का हल्का दर्द हो रहा था। उसने कुलसुम से
कर लिया था कि वह नौ बजे कुल्सुम के होटल म पहुच जाएगा।
साढे आठ बजे तो उसकी नीद खुली थी और उसका मन नही हो रहा
वह बिस्तर स उठे। भरपूर प्रयत्न करना पडा उसे बिस्तर स उठकर
हान म। स्नान करने के बाद उसके सिर का दर्द जाता रहा और

नहते उसके मन का भारीपन भी दूर हो गया। उसने घडी देखी, नौ बज गए थे। कमरे में वह ताला लगा ही रहा था कि एक चपरासी सलाम किया, "साहब! बैरिस्टर साहब ने कहा है कि आप उनसे आज मिल ले। आज सनीचर है, कल इतवार है—दोनो दिन उन्हे है और वह घर पर ही रहेगे। बहुत जरूरी काम है आपसे। अगर आज सकें तो अच्छा हो।"

"कौन बरिस्टर साहब ?" जगतप्रकाश ने पूछा, और एकाएक उसे याद या, "अरे बरिस्टर वसगोपाल साहब तो नही ?"

"हा, उन्होने ही भेजा है। तो हुजूर, उनसे मिल जरूर ले। अगर अभी त हो तो अच्छा है।"

'अभी तो मुझे कुछ काम है, लेकिन घण्टे दो घण्टे बाद उनके यहा आ गा, कह देना।" जगतप्रकाश ने चलते हुए कहा। कुल्सुम उसका ार कर रही होगी अगर उसे ज्यादा देर हो गई तो शायद वह खुद उसे हुई उसके यहा आए। लेकिन मिस्टर वसगोपाल के यहा जाना भी लिए आवश्यक था। बाबू माताप्रसाद के मुकदमे मे उसे उतनी ही चस्पी थी यमुना के कारण, जितनी बाबू माताप्रसाद को थी।

जिस समय वह रोसेटी होटल पहुँचा, कुल्सुम होटल के बरामदे में खडी व्यग्रता के साथ होटल के फाटक की ओर देख रही थी। जगत- श को देखते ही वह बोली, "बडी देर लगा दी तुमने। नौ बजे का वायदा या था, इस वक्त दस बज रहे है। मुझे बडी फिक्र हो रही थी कि तुम्ह हो गया है। अगर दस मिनट तुम और न आते तो मैं खुद तुम्हारे होस्टल नी तुम्हें ढूढने के लिए।"

कुल्सुम के मुख पर एक तरह के उल्लास की चमक आ गई थी यह हते-हसते। उसके मुख की मुसकराहट कितनी सुन्दर लग रही थी! हर सुबह की धूप चमक रही थी, सारे वातावरण में एक प्रकार का पुलक , स्निग्धता थी। जगतप्रकाश के अन्दर भी कुल्सुम के अन्दर वाला उल्लास भर गया। उसने कहा, "आज सुबह मैं देर से सोकर उठा, रात अच्छी रह से नींद नही आई, इसीलिए देर हो गई।"

'कल काफी घूमे फिरे है हम लोग, मैं भी बुरी तरह थक गई थी।"

कुल्सुम जगतप्रकाश के साथ अपने कमरे की ओर बढ़ती हुई बोली, का प्रोग्राम मैंने रद्द कर दिया है। सुना है चुनार का जान वाला स नहीं है। फिर परवेज़ भी बहुत थका हुआ है, वह अपने कमरे से ही नहीं चाहता।"

"मुझे भी इस समय एक बहुत जरूरी काम पर गया है, एक अन्दर ही मुझे चले जाना है।" जगतप्रकाश बोला, "शाम क वक्त रहूँगा—चार पाच बजे तक आ जाऊँगा।"

जिस समय जगतप्रकाश बरिस्टर बसंतगोपाल के यहा पहुँचा, चुके थे। शनिवार होने के कारण उस दिन हाईकोर्ट बन्द था। मिस्टर गोपाल अपने ऑफिस में बैठे थे लेकिन वह अकेले न थे। रूपलाल सामने बैठा था और बसंगोपाल बड़े मनोयोग के साथ एक किताब थ। जगतप्रकाश को देखते ही रूपलाल बोला, "चाचाजी, जगतप्रक गए ह।" बसंगोपाल ने किताब बन्द करके रख दी।

"आइए, मैं आप ही का इन्तजार कर रहा था।" फिर बस के स्वर मे एक शिकायत का लहजा आ गया, आप तो उस दिन क बा आए ही नही, आखिर मुझ ही आपको बुलवाना पडा। बाबू मातापरस कोई खबर मिली आपको?"

"नहीं तो अभी एक महीना भी तो नही हुआ जब वह आए थ। खास बात है क्या?'

इस बार रूपलाल बोला "नहीं, कोई खास बात नहीं है, लेकिन से जाते ही वह बीमार पड गए थे। उनकी फर्म म जो ताला पड ग उसका बडा सदमा लगा है उन्हे। अब तो तबीअत ठीक ह, लेकिन बड जोर हो गए हैं। उन्होने मुझे भेजा है यह पता लगाने के लिए कि कब उनका काम हो जाएगा?"

"काम जितने उलझाव का मैंने समझा था उससे ज्यादा उल का है। बसंगोपाल बोले, इस काम मे तीन-चार महीने लग सकते उससे भी ज्यादा लग सकते है। हा, एक रास्ता निकल सकता है। कानपुर का कोई बहुत बडा व्यापारी जमानत दे सके तो शायद काम ज हो जाए।'

"लेकिन कानपुर का कोई बडा व्यापारी मिलेगा कैसे ?" जगतप्रकाश
छा।

"आपके कोई मुलाकाती कानपुर मे है, त्रिभुवन मेहता उनका नाम है। पती फम है, विलायती मशीनो की एजसी है उसका वम्बई म हेड फ्स है!" रूपलाल वोला।

जगतप्रकाश चौक उठा, "त्रिभुवन मेहता को म थोडा-बहुत जानता हूँ, एक दफा मुलाकात हुई है, उनसे। लेकिन आपका कसे पता चला कि मैं भुवन मेहता को जानता हूँ।"

रूपलाल के मुख पर एक कुटिल मुसकान आ गई, 'मैं असल मे खुफिया स म ट्रेनिंग ले रहा हूँ, वहा काफी पता रखना पडता है लोगो का। हम ा को यह भी पता है कि उनसे आपकी सिफ मुलाकात-भर है। लेकिन र आप उन्हे जमानत देने पर राजी कर ले तो काम वन मकता है।"

किसी का मुसकान इतनी कुरूप हो सकती है, किसी की आखो की चमक इतनी मक्कारी हो सकती है, जगतप्रकाश ने पहले कभी इसका अनुभव ी किया था। उसने रूखे स्वर म कहा, "त्रिभुवन मेहता से मेरा इतना रिचय नही है कि मैं उनसे कोई काम करा सकू। कानपुर म उनकी क्या ख है, उनकी दूकान कहाँ है या वह रहते कहाँ है, मैं यह भी तो नही नता ?"

वसगोपाल ने कहा, "अभी यह भी तो तय नही है कि जमानत देने से म वन ही जाएगा। रूपलाल! माताप्रसाद का सब्र से काम लेना चाहिए। भरसक कोशिश करूँगा कि महीने दो महीने म उनका केस लग जाए।" फर वह जगतप्रकाश की ओर मुडे, "तुमसे मुझे वडी शिकायत है कि तुम ायदा करके भी नही आए, सुषमा ने मुझसे दो एक दफा पूछा भी। अगर म हफ्ते या पन्द्रह दिन मे एक दफा भी आ जाओ तो सुषमा बेचारी की सावत दूर हो जाएगी।" उन्होने आवाज दी, 'अरे, सुषमा बेटी, जरा बाहर जाकर देखो तो! कौन आया है!"

सुषमा शायद उस समय बाहर आने को तैयार नही थी। जगतप्रकाश को इतना मालूम था कि लडकिया बिना सजे-सँवरे बाहर नही निकलती। वसगोपाल भी यह जानते थे। समय काटने के लिए उन्होने रूपलाल से कहा,

'पिछली दफा तुमने सुझाव दिया था कि दफ्तर की सील टूटकर हि... सकती है। यह सुझाव मुझे उस वक्त तो पसन्द नहीं आया था, ... सोचता हूँ कि इस पर गौर किया जा सकता है। तुमने बाबू माताप्र... फिर कभी बात की इस बार में?"

"जी हाँ, की थी, लेकिन वे बड़े बुजदिल आदमी हैं। मैंने ... तक कहा कि पाँच सौ रुपया का इन्तजाम मैं कर दूँगा रिश्वत देने के ... जब सेफ से रुपया मिल जाए तब मुझे वापस कर दें, लेकिन उनकी ... ही नहीं पड़ती।"

"अगर वह यहाँ आते तो मैं राजी कर लेता उन्हें इस बात के ... उनको इस झंझट में पड़ने की जरूरत नहीं है, सेफ की चाबी तुम ले... जिम्मेदारी तुम्हारी रहेगी।' उसी समय बसगोपाल अपनी बात कहते-... रुक गए, उनके मुख पर एक व्यंग्यात्मक मुसकराहट आ गई, 'लेकिन' ... वे तुम पर यकीन नहीं करेंगे—करना भी नहीं चाहिए। जो आदमी ... को बेईमानी का रास्ता दिखला सकता है, वह अगर खुद ही बेईमान ... जाए तो इसमें किसी को कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। क्या ज... प्रकाश, क्या खयाल है तुम्हारा?"

जगतप्रकाश ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोकी, 'यह तो पुलि... आदमी हैं, न्याय और सत्य इनका ध्येय है। उस ध्येय को प्राप्त क... लिए यह अन्याय और बेईमानी का सहारा ले सकते हैं। मेरा खयाल है ... बाबू माताप्रसाद का पूरा भरोसा पैदा कर लिया है इन्होंने अपने ... कितनी लगन के साथ यह उनकी पैरवी कर रहे हैं! असल में धर्मभी... बाबू माताप्रसाद, कानून के बाहर जाने की हिम्मत नहीं है उनमें।"

रूपलाल जगतप्रकाश के व्यंग्य को नहीं समझा। असल में वह बसगो... की बात से बुरी तरह तिलमिला गया था। उसने कृतज्ञता की दृष्टि... जगतप्रकाश की ओर देखते हुए कमजोर आवाज में कहा, 'आपने बिल... ठीक कहा, बाबू माताप्रसाद को मुझ पर पूरा भरोसा है।' उसने बसगो... से कहा 'चाचाजी, हम सब अपने-अपने तरीके से बेईमान हैं जो ईमान... है, वह तरक्की कर ही नहीं सकता। लेकिन हम सबको कहीं-न-कहीं ... के लिए लिहाज है। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि बाबू माताप्रसा...

खा देने की नीयत मुझमे हो ही नही सकती। अच्छा, तो अब मुझे इजाजत
दीजिए।" वह उठ खडा हुआ।

वनगोपाल ने हाथ पकडकर रूपलाल को बैठाया, "अरे, तुम तो हल्के-
से मजाक का ही बुरा मान गए। तुम्हारे लिए खाना बना है और यह
जगतप्रकाश भी आ गए हैं।" फिर उन्होने आवाज दी, "बेटी सुषमा, क्या
कर रही हो ?"

मिस्टर वनगोपाल को आवाज़ देने की कोई जरूरत नही थी।
साडी बदलकर और हल्का-सा मेक-अप करके सुषमा इस समय तक कमरे मे
आ गई थी। जगतप्रकाश और रूपलाल को नमस्ते करके वह अपने पिता की
बगल मे बैठ गई। आज सुषमा उतनी सुन्दर नही दिख रही थी जितनी वह
पहल दिन दिखी थी। उसने जगतप्रकाश से कहा, "आप इतने दिन बाद आए
और वह भी पापा के बुलाने पर। मुझे तो आप बिलकुल भूल ही गए।"

वनगोपाल मुसकराए, "सुन रहे हो, मैंने गलत तो नही कहा था कि
सुषमा को तुमसे शिकायत है। अगर हर्ज न हो इतवार को दोपहर के वक्त
यही आ जाया करो, मैं कार भेज दिया करूँगा। यह सुषमा गाती बहुत
अच्छा है, म्यूज़िक कॉन्फ्रेन्स मे इसे प्राइज भी मिला है। तुम तो अपने
अज़ीज़ हो। इसका बडा भाई कृष्णगोपाल इगलैण्ड गया है बॉर-एट-लॉ की
तयारी करने और इसकी छोटी बहन अभी सात-आठ साल की बच्ची है।
घर मे यह बडा अकेलापन महसूस करती है। तुम आ जाओगे तो इसका मन
बहल जाएगा।"

अचानक ही जगतप्रकाश की नजर रूपलाल पर पडी, एक कुटिल
मुसकराहट थी उसके मुख पर। उसने जल्दी से आँखें हटा ली रूपलाल
पर से। इस बार जगतप्रकाश ने गौर से सुषमा को देखा, वह हल्का-हल्का
मुसकरा रही थी। उसकी मुसकराहट मे कुछ ऐसा था जो जगतप्रकाश को
प्रिय लग रहा था। उसने कहा, "आगे से मैं गलती नही करूँगा, हर
इतवार को आ जाया करूँगा। आपको कार भेजने की कोई जरूरत नही
है।" जगतप्रकाश को लगा कि सुषमा के मुख पर की मुसकराहट उसके मुख
पर भी आ गई है। इस सुषमा मे एक आकर्षण है, और वह आकर्षण जगत-
प्रकाश की धमनियो मे दौड रहा है।

सुषमा बोली, "प्लाज़ा मे 'हरीकेन' नाम की एक पिक्चर लगी है
तारीफ है उसकी। पापा को तो अपने मुवक्किलो से या अपने क्लब मे फुर्स
ही नही मिल्ती, पापा मुझे जाने नही देते, गोकि अकेले जाने मे हर्ज ह
है ? मैं सोच रही थी कि रूपलाल भाई के साथ आज शाम को वह पि
देख लू। रूपलाल भाई को कानपुर वापस लौटने की काई जल्दी नही है
क्योकि कल इतवार है। लेकिन अब सोचती हूँ क्यो इन्हे तकलीफ दू ?
आप आज शाम को खाली हो तो आपके साथ ही वह पिक्चर देख ल
आपने तो शायद अभी देखी न हो।"

"नही, देखी तो नही गोकि उसकी तारीफ मैने भी सुनी है।
इधर तीन-चार दिन मैं बहुत व्यस्त हूँ, अगले रविवार को प्रोग्राम बनेगा

बसगोपाल ने उठते हुए कहा, "फिर हर इतवार को मेरे यहाँ
करोगे, यह तय रहा। अच्छा अब खाना खा लिया जाए चलकर, खाने
वक्त हो गया है।"

बसगोपाल के यहाँ भोजन बडा स्वादिष्ट बना था और उसे आग्र
साथ भोजन कराया भी गया था। जिस समय जगतप्रकाश होस्टल प
उसे बडा आलस लग रहा था। कमरे मे आते ही वह बिस्तर पर लेट
और उसे नीद आ गई। जिस समय उसकी आख खुली, पाच बज रहे थे

जल्दी-जल्दी तैयार होकर जगतप्रकाश कुलसुम के होटल पर पहु
कुल्सुम और परवेज लाउज मे बैठे हुए उसका इन्तजार कर रहे थे। कु
बोली, 'फिर देर हो गई तुम्हे—खैर, ठीक वक्त से ही आ गए। यह प
कह रहा था कि आज कोई पिक्चर देखी जाए, फिर मार्टीनस के य
सूट भी तो लेने हैं।"

जगतप्रकाश यह भूल ही गया कि दोपहर के समय सुषमा न
पिक्चर चलने का आग्रह किया था और उसने इनकार कर दिया था। पि
देखकर जब जगतप्रकाश कुलसुम और परवेज के साथ बालकनी से
उतरा उसे लगा जैसे पीछे से उसे किसी ने पुकारा आप भी इस पि
मे आए थे।'

जगतप्रकाश ने घूमकर पीछे देखा, रूपलाल सुषमा के साथ
मुसकरा रहा था और सुषमा बडे गौर से कुलसुम को देख रही थी। ज

।श को रूपलाल का इस प्रकार टोकना अच्छा नही लगा, फिर भी टाचारवश उसने कहा, "बम्बई से मेरे ये दोस्त आये हुए हैं, ये लोग मुझे इ लाए।"

रूपलाल न आँख मारते हुए कहा, "बडे खुशनुमा हैं आपके ये दोस्त ! न हैं ?"

जगतप्रकाश के स्वर म एक तरह की कडवाहट आ गई, "मेरे दोस्तो जानकर क्या करोगे ? बस, इतना काफी है कि ये मेरे दोस्त है। अब ना काम देखो।"

शायद रूपलाल कुछ कटु उत्तर देता, लेकिन सुषमा बोल उठी, "ठीक कहते हैं, इनके दोस्तो से तुम्हें क्या करना-धरना ! चलो, पापा खाने के ए इन्तजार कर रहे होंगे।" फिर उसन जगतप्रकाश से कहा, "जब पको अपने दोस्तो स फुरसत मिल जाए तब मेरे यहाँ आना न भूलिएगा, प वायदा कर चुके हैं। हो सके तो कल ही आइएगा, कल इतवार है।"

लेकिन रूपलाल कटु बात कहने पर तुला हुआ था, "बडी पटाखा इकी है ! वडे भाग्यशाली हो मेरे यार !"

जगतप्रकाश के मन म आया कि वह रूपलाल को कसकर एक तमाचा रे, बडे प्रयत्न से उसने अपने को रोका। क्रोध और अपमान से इ क्षुब्ध हो उठा। कुलसुम और परवेज कुछ दूर खडे हुए उसकी प्रतीक्षा र रहे थे, शायद उन्होंने यह बातचीत नही सुनी थी। सुषमा बोल उठी, रूपलाल ! क्या अनाप-शनाप बक रहे हो ?" जगतप्रकाश से उसने कहा, यह इतने असभ्य हैं, यह मुझे नही मालूम था, नही तो मैं इनके साथ आती । नहीं। देखिए आप अगर कल न हो सके तो अगले रविवार को जरूर ाइएगा, मैं आपका इन्तजार करूँगी।"

जगतप्रकाश ने न रूपलाल की बात का कोई उत्तर दिया, न सुषमा की ात का। वह घूमकर परवेज और कुल्सुम की ओर चल दिया।

मार्टीनस की दूकान पर पहुँचकर कुलसुम ने जगतप्रकाश और परवेज के सूट लिये, फिर होटल पहुँचकर इन तीनो न खाना खाया। खाना खाकर कुलसुम ने परवेज से कहा, "तुम्हारे सोने का वक्त हो गया है, तो तुम सोआ जाकर। सवेरे जल्दी उठना भी तो है। मैं जगतप्रकाश को इनके होस्टल

छोड़ आती हूँ।"

उस रात ठंड कुछ बढ़ गई थी। कुल्सुम ने कार चलाते हुए कहा, "हम लोगों ने कल सुबह यहाँ से जाना तय कर लिया है। मैंने चाहा था कि दिल्ली का प्रोग्राम रद्द करके यहाँ पाँच दिन रुका जाए, लेकिन परवेज़ जाने की ज़िद कर रहा है।"

"कल सुबह किस समय जाना तय किया है ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"सुबह सात-आठ बजे तक हम लोग चल देंगे, शाम तक जबलपुर पहुँच जाएँगे। वहाँ शायद एक हफ्ता और रुकना पड़े, इसके बाद मैं सीधी बम्बई। चाहती थी कि यहाँ इलाहाबाद में और अधिक रुकती—परवेज़ के साथ में न सही, अकेली। लेकिन अजीब ऊबा देने वाला शहर है यह इलाहाबाद। यहाँ कांग्रेस कमेटी का दफ्तर है, कुछ राजनीतिक चहल-पहल होगी यहाँ पर। लेकिन यहाँ सब-कुछ सोया-सा, सब-कुछ डूबा-सा। दुनिया में विश्व-युद्ध हो रहा है, यहाँ उस विश्व-युद्ध की छाया तक नहीं दिखती। हिंदुस्तान की सारी राजनीति जैसे एक आदमी के इर्द गिर्द सिमट गई हो—वह आदमी है महात्मा गांधी।"

जगतप्रकाश ने कुल्सुम की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। कार अब अल्फ्रेड पार्क के पास आ गई थी। कुल्सुम कार बहुत धीमी गति से चला रही थी, जैसे वह कार पर घूमने निकली हो। कुछ रुककर उसने फिर कहा, "मैं कभी-कभी सोचने लगती हूँ कि मैं इस राजनीति की मृगतृष्णा के पीछे दीवानी क्यों हूँ ? जिंदगी में अकेली राजनीति ही तो नहीं है, राजनीति के अलावा और भी तो बहुत सी चीज़ें हैं। मैं गलत तो नहीं कहती ?"

जगतप्रकाश ने एक ठंडी साँस भरी, "हाँ राजनीति के अलावा भी बहुत सी चीज़ें हैं, लेकिन आज के युग में वे सब चीज़ें राजनीति में सिमट आई हैं। उस दिन जब मैं पहली दफा तुम लोगों के साथ त्रिपुरी गया था, उस दिन तक मैं यही समझता था कि राजनीति के अलावा और भी कई चीज़ें हैं जो राजनीति से अधिक महत्वपूर्ण हैं, उपयोगी हैं। लेकिन इन कुछ महीनों में मेरे दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन हो गया है। यह खाना-कपड़ा—यह राजनीति है, यह अमीरी-गरीबी—यह राजनीति है। सब-कुछ सिमटा हुआ है इस राजनीति में, हमारी सारी जिंदगी इस राजनीति के मुताबिक ढलती

। हम हिंदुस्तानी गुलाम है। हमारी सारी सभ्यता, हमारी सारी संस्कृति, हमारा सारा दृष्टिकोण इस गुलामी से अनुशासित है। यह विश्व-युद्ध भी तो राजनीति की ही उपज है, इस राजनीति से वचा कैसे जा सकता है?"

कुलसुम ने कार अल्फ्रेड पार्क के अन्दर मोड दी, वह कह रही थी, "शायद तुम ठीक कहते हो, इस राजनीति में सब-कुछ सिमट गया है, और इस राजनीति में सब-कुछ समेट दिया है हमारी चेतना ने, हमारी बुद्धि ने। कभी-कभी सोचने लगती हूँ कि यह बुद्धि हमें अभिशाप के रूप में मिली है, अगर इस बुद्धि से अलग हटकर हम एक-दूसरे के हृदय को देख सकते, हम एक-दूसरे को प्यार कर सकते, जिन्दगी जिस तरह है, हम उसी रूप में उसे भोग सकते तो कितना अच्छा होता!" एक सुनसान जगह कुलसुम ने कार रोक दी, स्टियरिंग ह्वील छोडकर वह जगतप्रकाश के निकट खिसक आई—बहुत पास। जबदस्ती उसने जगतप्रकाश के दाहिने हाथ को अपने शरीर के चारों ओर लपेट लिया, "जगत! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, बेहद प्यार करती हूँ, मुझे अपने से चिपका लो, मुझे छोडो मत!" जगतप्रकाश को लग रहा था कि कुलसुम और वह—दोनों प्रगाढ आलिंगन-पाश में बँधते जा रहे हैं। फिर एक दूसरे की साँसें जैसे एक हो गई हों। चुपचाप एक-दूसरे में दोनों खो गए थे। दोनों मौन थे, दोनों शान्त थे, दोनों इस दुनिया से अलग हटकर एक अनजानी दुनिया में जा पडे थे। करीब दो मिनट दोनों इसी तरह बैठे रहे, और फिर कुलसुम जैसे चौंक पडी। उसने अपने हाथ ढील कर दिए, धीरे से वह जगतप्रकाश के आलिंगन पाश से निकलकर स्टियरिंग ह्वील पर आ गई और उसने कार स्टार्ट कर दी। कुलसुम कह रही थी, "कितना सुख, कितनी शान्ति! जगत! मुझे छोडना मत, मैं तुमसे बेहद प्यार करती हूँ, तुम भी मुझसे प्यार करते रहना। बोलो, मुझे प्यार करते रहोगे?"

कितनी आसानी से कुलसुम हट गई थी, लेकिन जगतप्रकाश का सारा शरीर सनसना उठा था। उसे खीझ हो रही थी, अपने ऊपर, कुलसुम के ऊपर। लेकिन उसके अन्दर एक प्रकार का संतोष भी था। उसने दबे हुए स्वर में कहा, "तुम्हारा प्यार मेरे लिए वरदान के रूप में है, कुलसुम, मैं हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हारा हूँ, तुम्हारा रहूँगा।"

कुलसुम ने कार की गति बढा दी, जगतप्रकाश के होस्टल के फाटक पर

उसने कार रोकी। "कल सुबह तुम्हे मेरे यहाँ आने की कोई जरूरत नहीं हो सका तो हम लोग पाँच छ बजे सुबह ही यहाँ से चल देंगे, जिससे बजे तक हम जबलपुर पहुँच जाएँ। और हाँ, जसवन्त की शादी में जाना, मैं तुम्हारे हाथ शर्मिष्ठा के लिए कुछ उपहार भेजना चाहती हूँ। अगर जसवन्त की शादी के एक हफ्ते पहले तुम बम्बई आ जाओ तो अच्छा हो। आ सकोगे?"

"कह नहीं सकता। क्या मेरा बम्बई आना बहुत जरूरी है?"

"जरूरी तो दुनिया में कुछ नहीं है, लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम आओ। अभी हम दोनों एक-दूसरे के हो चुके हैं, मेरी इच्छा तुम्हारी इच्छा हो चुकी है।" कुलसुम ने अपने हैण्डबैग से एक लिफाफा निकालकर जगतप्रकाश के हाथ में पकड़ा दिया, "इसे लेने से तुम इनकार नहीं कर सकते, मैं तुम्हें बम्बई बुला रही हूँ, मैं तुम्हें अमृतसर भेज रही हूँ। इस सबमें खर्च तो होगा ही है। मेरा जो कुछ है वह तुम्हारा है, इसमें सकोच न करना। इसमें कहीं अपने को छोटा न समझ बैठना। अच्छा, अलविदा!"

जगतप्रकाश अपना सूट और वह लिफाफा लेकर कार से उतर पड़ा। कापते हुए स्वर में उसने कहा, "आऊँगा—जहाँ कहोगी वहाँ आऊँगा। अच्छा अलविदा!" कुलसुम ने कार स्टार्ट कर दी।

सौ-सौ के दस नोट—उस लिफाफ़े में एक हजार रुपया था। जगतप्रकाश को लग रहा था जैसे वह सपना देख रहा है, एक रंगीन और सुन्दर सपना। इस सपने का अन्त कहाँ होगा, उसे इसका पता न था। जगतप्रकाश—पूर्वी युक्त प्रान्त के बस्ती जिले के एक पिछड़े हुए गाँव महाना के निम्न मध्यवर्ग के परिवार का जगतप्रकाश—वह कहाँ जा रहा है? किस विधा के अन्तर्गत उसका जीवन नया मोड़ ले रहा है?

सुबह जब वह सोकर उठा, एक अजीब-सी भावना उसके अन्दर थी। वह भावना न उल्लास की थी, न अवसाद की, एक मात्र कुतूहल की थी। क्या वास्तव में कुलसुम उससे प्रेम करती है? इस प्रश्न के पहले और प्रश्न—क्या वह कुलसुम से प्रेम करता है? अचानक उसके सामने यमुना का चित्र आ गया। आत्मसमर्पण की प्रतिमूर्ति, अस्तित्व विहीनता की सात्विकता! यह यमुना उसके वर्ग की है, उसके समाज की है। सब

ा जाना-पहचाना, सब-कुछ परम्परागत ! लेकिन—लेकिन—यह जाना-
चाना, यह परम्परागत—क्या जीवन इससे कुछ हटी हुई सज्ञा नही है ?
। वह यमुना के प्रति झूठा तो नही बन रहा है ?

जगतप्रकाश की समझ मे कुछ नही आ रहा था। सामने सुनहरी धूप
नी हुई थी। रविवार की छुट्टी होने के कारण होस्टल के विद्यार्थी बाहर
ने को अपने-अपने कमरो से निकल रहे थे। धीरे धीरे उसके कुतूहल ने
ल्लास का रूप धारण कर लिया। उसके सामने जो कुछ था वह नवीनता
भरा था, वह रहस्य से भरा था। दुनिया रहस्यो से भरी है, इन रहस्यो
जानना ही जीवन की उपलब्धि है। वह उठ खडा हुआ।

जगतप्रकाश ने चाय पीकर अपनी किताबें निकाली, दो दिन तक उसने
पना कोई काम नही किया था। उन दिनो वह अपनी थीसिस का अन्तिम
रिच्छेद लिख रहा था। शाम तक वह पढता रहा और लिखता रहा।
ाम के समय उसने अनुभव किया कि वह बहुत थक गया है। उसने चाय
ी और घूमने के लिए निकल पडा।

लक्ष्यहीन-सा सिविल लाइंस मे वह तेज कदमो से चला जा रहा था,
पने मे बन्द। मौसम बडा सुहाना था, एक तरह की उत्फुल्लता थी उसके
न्दर। तभी उसे एक स्त्री-कण्ठ सुनाई दिया, "आप अपने वायदे के पक्के
, मैं मान गई।"

जगतप्रकाश चौंककर ठिठक गया और उसने देखा कि वह बैरिस्टर
बसगोपाल के बँगले के सामने खडा है। बँगले के फाटक पर सुषमा अपनी
दो सहेलियो को पहुँचाने आई थी, वहीं वह उनसे बात कर रही थी। जगत-
प्रकाश को आश्चर्य हुआ कि वहाँ वह कैसे आ गया, वहाँ के लिए तो वह
चला ही नही था। स्टनली रोड पर ही तो बसगोपाल का बँगला है, इस पर
उसने ध्यान ही नही दिया था। परिस्थिति को स्वीकार करके उसने कहा,
हाँ, अब मैं अपने मेहमानो से खाली हो गया हूँ।"

सुषमा मुसकरा रही थी, "दोपहर को यह रमा और विमला आ गई
थी, तो आज दोपहर गपबाजी मे बीती।" फिर उसने उन दोनो से कहा,
'अच्छा, तुम लोगो को काफी देर हो गई है, इसलिए अब नही रोकूँगी।"

जगतप्रकाश को साथ लेकर सुषमा ड्राइग रूम मे बैठ गई, घर मे

सन्नाटा छाया था। सुषमा बोली, "पापा अभी आधा घण्टा ह
गए। शाम के समय वह क्लब जरूर जाते है, और इतवार के दिन त
आधी रात को लौटते है। ममी इतवार को कीर्तन सुनने चली ग
है। आज माथुर साहब के यहा गई है—दो-तीन घण्टे के लिए। मैं अ
बोर हो रही थी—आप अच्छे आ गए!" सुषमा ज़ोर से हस पड़ी।

'इसमे हँसने की क्या बात है?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"हँसने की बात तो है ही। आज इतवार का दिन है, छुट्टी का, तरह
तरह के मनोरजन का। लोगो के मनोरजन कितने भिन्न होते हैं
पापा क्लब मे शराब पीकर और जुआ खेलकर प्रसन्न होते हैं, ममी
जगदीश हरे' गाकर प्रसन्न होती हैं। सामाजिक दृष्टि से एक सुकर्म
दूसरा कुकर्म है। लेकिन है दोनो मनोरजन के ही अलग-अलग रूप!"

जगतप्रकाश को अनुभव हुआ कि सुषमा ने बडी मजेदार बात कह
सुषमा मे भी एक तरह की बौद्धिकता है। जगतप्रकाश बोला, 'लेकिन अ
हम कहे कि हमारी जिन्दगी का एक मात्र ध्येय मनोरजन है तो क्या
गलत कहेगे?' और तत्काल जगतप्रकाश को अनुभव हुआ कि उसने
बडी गैर जिम्मेदार बात कह दी है मजाक-मजाक मे।

सुषमा ने जगतप्रकाश की आखो मे अपनी आख गडा दी। सुषमा
मुख पर छाई मुसकान वैसी-की-वैसी थी, लेकिन उस मुसकान मे कही
तनाव आ गया है। उसे लगा कि उसकी आखे एकाएक चमकने लगी
'क्या आप भी ऐसा ही समझते है?" फिर जैसे बल लगाकर सुषमा ने अ
तनाव को दूर किया, अरे मै तो भूल ही गई थी। हम लोगो ने अभी-अ
चाय पी है, आप भी चाय पिएँगे?" सुषमा उठ खडी हुई, 'बात य
कि नौकर मेरी छोटी बहन का साथ लेकर ममी को देने चला गया
माथुर साहब के यहा, घर मे मैं बिल्कुल अकेली हूँ। अभी चाय बना
लाती हूँ।"

नही, चाय मैं अपने हास्टल से पीकर चला हूँ। कल की पिक्चर कै
लगी?"

'उतनी अच्छी नही लगी जितनी लगनी चाहिए थी। मेरा साथी
था।' सुषमा अब सोफे पर जगतप्रकाश के साथ बैठ गई।

जगतप्रकाश के अन्दर अब एक तरह का भय जाग उठा। भय सुषमा से भय अपने से। अपने भय को दबाते हुए उसने कहा, "यह रूपलाल म्हारा दूर का रिश्तेदार होता है शायद ?"

सुषमा खिलखिलाकर हँस पड़ी, "हाँ, और वह मेरा सबसे नजदीकी दार बनना चाहता है। बेवकूफ कहीं का ! बेपढ़ा और असभ्य, उस बात तक की तमीज नहीं है। पापा ने उसे जबरदस्ती मुँह चढ़ा रखा है। के पास वह मुकदमे भिजवाया करता है। पापा को अगर यह पता-लग जाए कि यह हजरत उनका दामाद बनना चाहते हैं, तो इस घर में ा घुसना बन्द हो जाए।" फिर कुछ रुककर उसने कहा, "वह आपकी त ? बड़ी अमीर मालूम होती है। कौन थी वह ?"

"उसका नाम कुलसुम कावसजी है, पारसी है। उसके पिता बम्बई के -मालिक है। साथ में जो नवयुवक था, परवेज—उससे उसकी मँगनी चुकी है।" जगतप्रकाश के अन्दर वाला भय अब दूर होता जा रहा था।

"लेकिन उसकी नजर से, उसके हाव भाव से तो यह लगता था कि वह पसे प्रेम करती है।" सुषमा ने एक ठंडी सांस ली, "वह मुझसे ज्यादा दर और फैशनबल भी तो है।"

'किसने कह दिया कि वह तुमसे ज्यादा सुन्दर या फैशनेबल है ?" गतप्रकाश मसकराया।

'सच ! आप मुझे उससे ज्यादा सुन्दर समझते हैं !" सुषमा अब खिसककर जैसे जगतप्रकाश से चिपकी जा रही हो।

जगतप्रकाश के अन्दर एकाएक उथल-पुथल-सी मच गई। अकेला र और सुषमा उससे बिलकुल चिपकी हुई। वह एकाएक उठ खड़ा हुआ। दीवार पर लगे हुए एक चित्र को वह देखने लगा। सुषमा ने पूछा, "क्यों, क्या बात है जो आप उठ गए ?"

जगतप्रकाश बोला, "बात यह है कि इस मकान में हम दोनों एकदम अकेले हैं, और मुझे डर लग रहा है।" सुषमा मुसकराई, "अपनों से किसी तरह का डर नहीं लगा करता।" सुषमा उठकर जगतप्रकाश की बगल में आ गई "पापा चाहते हैं कि वह आपके साथ मेरा विवाह कर दें, उन्हें डर मेरी तरफ से था। लेकिन उनका डर गलत था। आप कितने अच्छे हैं—

आप मुझे अपनी समझकर मेरे साथ जो चाहे कर सकते हैं।" जगतप्र
को लगा कि सुषमा अपनी दोना बाह जगतप्रकाश के गले म डालकर
रही है।

एक भयानक ग्लानि, एक भयानक वितृष्णा! जगतप्रकाश ने
लगाकर सुषमा को अपने से अलग किया, और एक तरह से साफ पर
ढकेलकर वह तेजी से कमरे के बाहर निकला। वह भाग रहा था,
रहा था और फाटक के बाहर आकर भी वह भागता रहा।

११

"क्या जमनी अकेला ब्रिटन और फ्रास की सम्मिलित शक्तियो का [illegible]जित कर सकेगा ?" जगतप्रकाश ने पूछा, "इस प्रश्न के पहले एक प्रश्न [illegible]र है। ब्रिटेन और फ्रास—दुनिया के दो सबसे शक्तिशाली साम्राज्य ! [illegible]दाना अभी तक जमनी पर प्रहार क्यो नही कर पाए ? पोलैण्ड खत्म हो [illegible]ा, जमनी अब और छोटे-छोटे दशो को हडपता जा रहा है। ब्रिटन और [illegible]स युद्ध की घोषणा करके भी चुप बठे है। कुछ समझ मे नही आता। ऐसा [illegible]गता है कि इन दोना देशा म कोई कमजोरी है, लेकिन यह कमजोरी क्या और कहाँ है ?"

कमलाकान्त मुसकराया, "ब्रिटेन और फ्रास की काई कमजोरी नही है [illegible]हा। यह इन दो साम्राज्यवादी देशो की बेईमानी है कि वे जमनी को [illegible]छपे छिपे बढावा दे रह हैं। नाज़ी जमनी का सबसे बडा शत्रु समाजवादी [illegible]रूस है, और यह समाजवादी रूस साम्राज्यवादी ब्रिटन और फ्रास का सबसे बडा शत्रु है। ब्रिटेन और फ्रास यह चाहते है कि जमनी और रूस एक-दूसरे से लडकर अपने को समाप्त कर दें। इससे ब्रिटन और फ्रास को बिना युद्ध किय हुए ही विजय मिल जाएगी।"

जगतप्रकाश के मुख पर एक तरह की उलझन का भाव आ गया, 'लेकिन रूस और जमनी की सधि जो हो गई है, उससे ब्रिटेन और फ्रास को निराशा हागी। अकेला जमनी ही नही, यह समाजवादी रूस—इसने भी ता अपन पडोसी छोटे छोटे देशो को हडप लिया है। समाजवादी देश साम्राज्यवाद के माग पर चल रहा है, उसकी परम्पराएँ अपना रहा है।"

'सच पूछो तो इस बात ने मुझे भी उलझन मे डाल दिया है।" कमला-

कान्त ने चाय का प्याला जमीन पर रखते हुए कहा, 'यह युद्ध ना... खिचता नजर आता है। सैनिक दृष्टि से ब्रिटेन और फ्रांस ... मैंने यह कभी सोचा न था। हाँ, तो तुमने तय कर लिया है कि तुम ... के विवाह में जबलपुर जाओगे ?"

"क्या, क्या तुम नहीं चल रहे हो ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

'मेरे चलने का सवाल ही नहीं उठता।" कमलाकान्त ने मुस्क... हुए कहा, "केवल एक औपचारिक छपा हुआ निमन्त्रण-पत्र आया है ... नाम। मेरा ऐसा खयाल है कि हजारों की संख्या में ये निमन्त्रण-पत्र ... होंगे। पंजाब के सम्पन्न और ऊँचे समाज में एक महत्त्वपूर्ण विवाह है ... दो करोड़पती परिवार एक सूत्र में बँध रहे हैं। मेरे आने के लिए उनके ... का कोई आग्रह नहीं है, जबकि उसने तुम्हें व्यक्तिगत रूप से पत्र लिख... आने का आग्रह किया है।"

कमलाकान्त को जसवन्त कपूर की अन्तरंग बातों का पता नहीं ... जगतप्रकाश यह जानता था। मन ही-मन वह यह भी अनुभव करता था ... उसे और जसवन्त को निकट लाने वाली कड़ी कुलसुम है। वैसे उसमें और ... जसवन्त कपूर में न कोई सामाजिक साम्य है, और न वैचारिक साम्य है ... जगतप्रकाश उठ खड़ा हुआ, 'मैंने पंजाब नहीं देखा है, सुना है बड़ा सम... प्रदेश है वह। सोचता हूँ जसवन्त कपूर के विवाह के बहाने पंजाब भी ... लूँ। बरात अमृतसर से लाहौर जाएगी तो मैं लाहौर से दिल्ली लौ... और दिल्ली से इलाहाबाद। आज उनतीस तारीख है, कल या परसों ... चल दूँगा।"

कमलाकान्त बोला, "कल या परसों ? क्या, विवाह तो आठ दिन ... को है।"

जगतप्रकाश को झूठ बोलना पड़ा, 'हाँ, सोचता हूँ, अमृतसर जा... पहले अपने गाँव हो आऊँ।" वह कमलाकान्त को यह नहीं बतलाना चा... था कि कुलसुम के आग्रह से उसे बम्बई होते हुए अमृतसर जाना है।" ... कुछ चुप रहकर कहा, "सोच रहा हूँ एक चमड़े का सूटकेस ले लूँ और होल्डाल ले लूँ, मेरे पास तो यह सब कुछ है ही नहीं।"

एक कुटिल मुसकान कमलाकान्त के मुख पर दिखी। जगतप्रका...

कमलाकान्त ने कहा, "अमीरो की दोस्ती बडी महँगी पड सकती है। न्त की गादी म शामिल होने के लिए कीमती सूटकेस चाहिए, उस स में रखने के लिए कीमती सूट चाहिए, कीमती होल्डाल चाहिए और होल्डाल के लिए कीमती बिस्तरा चाहिए।"

जगतप्रकाश न कमलाकान्त के व्यग्य की उपेक्षा करते हुए कहा, मती कपडा की समस्या तो महात्मा गाधी की खादी ने दूर कर दी है, बात कीमती बिस्तरे पर भी लागू होती है। सूटकेस और होल्डाल र चाहिए, जो चौक जाकर खरीदना है। चलते हो, मुझे तो इन चीजो परख और पहचान है नही।"

"नहा, मुझे एक जगह जाना है। फिर परख और पहचान की एक मात्र टी इन चीजो की कीमत है। जो चीज महँगी होगी वही चीज अच्छी ी।" कमलाकान्त ने उठते हुए दूसरा व्यग्य किया।

जगतप्रकाश को कमलाकान्त का यह व्यग्य अच्छा नही लगा, लेकिन बोला कुछ नही। वह अकेला ही बाजार गया और सूटकेस और होल्डाल रीद लाया। लेकिन रात को देर तक वह कमलाकान्त की बातो पर चता रहा। उसके पास अब कीमती सामान था, पशमीने का सूट, रेशमी ई, महीन खादी की कमीजे। अच्छा सूटकेस, अच्छा होल्डाल। अब वह ना किसी हिचक के ऊँचे-से ऊँचे वर्ग मे लोगो से बराबरी से मिल सकता ा। लेकिन—लेकिन वह वही उलझकर रह जाता था। दूसरे दिन उसे म्बई के लिए रवाना हो जाना था। कुलसुम का आग्रह था न कि वह बबई ते हुए अमृतसर जाए। बम्बई वह पहली दिसम्बर का पहुँच जाएगा। ात तारीख को अमृतसर पहुँचने के लिए उसे पाँच तारीख को बम्बई से लना होगा। इसके माने हैं उसे पाच दिन बम्बई मे रुकना होगा और दूसरे दिन वह दोपहर को मेल से बम्बई के लिए रवाना हो गया।

जिस समय ट्रेन विक्टोरिया टर्मीनस पहुँची, कुलसुम प्लेटफार्म पर खडी थी। कुलसुम के साथ जमील भी था। जमील को देखतेही उसका मुख खिल गया। जमील का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए उसने कहा, 'अरे जमील काका, तुम्हें भी मेरे आने की खबर लग गई।"

जमील मुसकराया, 'कुलसुम बेन ने बतलाया कि तुम आज बम्बई आ

रहे हो तो मैं चला आया। तुमसे मिले हुए एक अरसा हो गया बरखुरदार
—जी तड़प रहा था तुमसे मिलने को।"

इतनी आत्मीयता, इतना स्नेह उसके प्रति जमील में। जगतप्रकाश
आश्चर्य से जमील की ओर देखा, और फिर उस उसके मन में
प्रगाढ़ भावना जाग पड़ी जमील के प्रति, "बम्बई आकर अच्छा ही किया
तुमसे मिलना हो गया जमील काका! वरना हम दोनों के बीच
एक लम्बी दूरी है।"

जमील मुसकराया, 'लेकिन मन की दूरी नहीं है बरखुरदार!
की दूरी नापी जा सकती है, तय की जा सकती है, लेकिन मन की दूरी
कोई नाप नहीं है न इसे तय करने का कोई तरीका है।' कुछ देर तक
से जगतप्रकाश को देखकर वह बोला 'बहुत बदल गए हो! तुम महोना
रहने वाले नहीं दिखते, तुम किसी बहुत बड़े शहर के किसी बड़े
खानदान के आदमी दिखते हो।"

कुली से असबाब उठवाकर तीनों स्टेशन से बाहर निकले। कुलसुम
जमील से कहा, 'रात को आप खाना मेरे यहाँ ही खाइएगा कामरेड ज
अहमद! उसी वक्त फिर जगतप्रकाश से बातें होंगी। इतने लम्बे सफ़र के
बाद इस वक्त यह बहुत थके हुए होंगे।'

"रात को तो मैं नहीं आ सकूँगा कुलसुम बेन! आप तो जानती हैं
कि इन दिनों मैं रात की शिफ्ट में हूँ। कल सुबह हाज़िरी दूँगा आपके यहाँ
तब जगतप्रकाश से बातें होंगी। इस वक्त यह आपकी अमानत हैं। अच्छा
अब मैं चलूँगा।"

इस बार कुलसुम ने जमीलअहमद को उसके घर पहुँचाने का आग्रह
नहीं किया, इस पर जगतप्रकाश को आश्चर्य हुआ।

शाम के समय जगतप्रकाश के साथ चाय पीते हुए कुलसुम ने कहा,
तुम आ ही गए। मुझे शक हो रहा था कि तुम आओगे या नहीं। ज़िन्दगी में
एक तरह की मनहूसी भरती जा रही थी। मैं कितनी खुश हूँ तुम्हारे आने
से!'

एकाएक जगतप्रकाश ने कुलसुम का हाथ कसकर पकड़ लिया। उसका
मुख बहुत अधिक गम्भीर हो गया था। कुलसुम की आँखों में अपनी आँखें

र उसने कडे स्वर म पूछा, "तो क्या तुम मुझे अपनी ज़िन्दगी की नी दूर करने का साधन भर समझती हो ? मुझे इसका पता नही था, ो में नही आता।"

कुलसुम ने जगतप्रकाश के हाथ से अपना हाथ छुडाने का कोई प्रयत्न या, एक ठण्डी साँस भरकर उसन कहा, "मैं किसी को क्या समझती हूँ मैं खुद ही नही जानती, लेकिन इतना तो महसूस करती ही हूँ कि नी निष्क्रियता म होती है, कम मे नही होती। जीवन का नियम है—हलचल। सच बताना, क्या तुम अपनी ज़िन्दगी मे मनाटनी का अनुभव करत ?"

जगतप्रकाश ने अपनी पकड ढीली कर दी। उसने अनुभव किया कि सुम क स्वर म एक अजीब तरह की करुणा है, और कुलसुम बिना प्रकाश क उत्तर के लिए रुके, कहे जा रही थी, "यह प्यार करना—भी तो कम है, यह किसी को चाहना, उसे देखकर खुश होना, यह भी कर्म है।" एकाएक कुलसुम अपनी बात कहती-कहती रुक गई। कुछ रहकर वह फिर बोली, "शायद मैं गलत कह रही हूँ। इस कम के साथ ी की भी तो एक अहमियत है। तबीअत होती है तुम्हारे साथ बैठी रहूँ चुपचाप और तुम्ह देखा करूँ। कहाँ से चली थी मै और कहाँ आ पहुँची मुझे खुद ताज्जुब हाता है। लेकिन—समझ मे नही आता कि मैं यह क्यों कर रही हूँ। मैं तुमसे मुहब्बत नही करती, कर भी नही सकती, मैं अपने को धोखा दे रही हूँ। मैं तुमसे सच कहती हूँ कि मैं तुम्हे धोखा दना चाहती। तुम बडे प्यारे और मासूम हो। शायद मैं अपने अन्दर किसी छलावे क वातावरण मे रहना चाहती हूँ। जसवन्त उसी छलाव एक रूप था, तुम उसी छलावे के एक रूप हो। चाहती हूँ कि यह छलावा लगा या सत्य बन सकता है, लेकिन है ता यह छलावा ही, भला यह सत्य बन सकता है ?" कुलसुम उठ खडी हुई, "यह छलावा जब टूटने लगता तभी मेरी जिन्दगी म मनाटनी आन लगती है।" कुलसुम जार से हँस ा, "मैं भी कसी बहकी-बहकी बातें कर रही हूँ, तुम भी कुछ ऐसा ही रहे होग। अच्छा, यह बतला सकते हो कि मैं यह सब क्या करती हूँ ?"

जगतप्रकाश के अन्दर वाली सारी गम्भीरता जाती रही। उसने

मुसकराते हुए कहा, "शायद इसलिए कि तुम्हारे पास करने को कुछ नही।"

कुल्सुम एकाएक तनकर खडी हो गई, "तुम ठीक कहते हो, मेरे करने को कुछ है ही नही। मेरी यह दौलत, मेरी यह सक्षमता—मेरे लिए अभिशाप बन रहे हैं। मेरी समझ मे नही आता कि मैं क्या करूँ। तन मे कभी थकावट आ ही नही पाती। इस तन की थकावट की जगह ली है मन की थकावट ने। मेरे मन के आगे शायद कोई उद्देश्य नहीं। कम मे श्रम है कम के अभाव के कारण मेरे मन म मनाटनी घर कर गई। इस मनाटनी को कम की अनुपस्थिति मे विचारा से दूर किया जा सकता है। कम से रिक्त विचार को ही कल्पना कहते हैं। जानते हो, मैं कल्पना की एक परी हूँ, मुझे कभी-कभी ऐसा लगने लगता है।" कुल्सुम हँस पडी।

चाय समाप्त होने पर कुलसुम ने कहा, 'चलो, आज कोई पिक्चर देख ली जाए। आज पहली तारीख है, तुम शायद पाच तारीख को चले जाओगे। सात तारीख को सुबह अमतसर पहुँचागे—आठ को जनजन की शादी है। कुल चार दिन कुल चार दिन। अच्छा, अब मुह हाथ धोकर कपडे बदल डालो मुझे तैयार हाने म आधा घण्टा लगगा।"

कपडे बदलकर जब जगतप्रकाश बरामदे म निकला, कुल्सुम अपने कमरे म ही थी। बरामदे म एक व्यक्ति बैठा था जिसकी आँखें बन्द थीं और जो बडी सुरीली आवाज़ म कुछ गुनगुना रहा था। खादी का कुर्ता, खादी का पायजामा और परो म चप्पल। जगतप्रकाश के परो की आहट सुनकर उसने अपनी आख खाली और जगतप्रकाश को देखा, "लोग मुझे सैलाब कहते हैं। कुल्सुम बन ने आज इस वक्त आने को कहा था तो आया हूँ। आप कौन है, पहले कभी आपको नहीं देखा?"

जगतप्रकाश ने इस बार ध्यान से उस व्यक्ति को देखा, उसकी अवस्था तीस और पैंतीस वष के बीच म रही होगी। स्थूलता की ओर अग्रसर इकहरा बदन, मँझोला कद हल्का सावला रग, बडी-बडी आँखें, चेहरे पर एक तरह का भालापन। जगतप्रकाश न उसके पास वाली कुरसी पर बैठते हुए कहा, 'आप शायद शायर हैं।"

"जी, शायरी क्या करता हूँ झख मारता हूँ।" वह हँस पड़ा, "भला आजकल भी शायरी का कोई ज़माना है। मैंने जाननी चाही थी आपकी तारीफ। कहा न कि कभी पहले आपको नहीं देखा।"

'मैं आज दोपहर को ही इलाहाबाद से यहाँ आया हूँ, बम्बई में मैं नहीं रहता। मेरा नाम जगतप्रकाश है।"

"यही तो सोच रहा था कि आप बम्बई के रहने वाले हैं नहीं, शक्ल-सूरत से और लिबास व वज़ से आप हिन्दुस्तान के रहने वाले हो सकते हैं, वह भी पूरब के। तो आप कहाँ ठहरे हैं?"

जगतप्रकाश को अब अपने साथ बैठे हुए व्यक्ति में दिलचस्पी होने लगी थी, "ठहरा तो मैं इसी मकान में हूँ।'

'जी, इस मकान में ठहरे हैं तब तो आप कुलसुम बेन के मेहमान होंगे, और चूँकि आप पारसी नहीं हैं इसलिए कुलसुम बेन के रिश्तेदार न होकर दोस्त ही हो सकते हैं। खैर छोड़िये भी इस बात को।" सैलाब ने अपनी आँखें मूँद लीं, जैसे वह कुछ सोचने लगा हो।

सैलाब और आगे क्या कहता या क्या कहना चाहता था, जगतप्रकाश इस पर सोचने लगा। सैलाब का व्यक्तित्व उसे बुरा नहीं लगा, यद्यपि उसकी बातचीत का ढंग उसे कुछ अजीब-सा लगा। वह असभ्यता की सीमा तक पहुँचने वाला कहा जा सकता था। जगतप्रकाश ने कहा, 'लेकिन आपने अपनी बाबत कुछ नहीं बतलाया।"

'आपने पूछा कब था?" सैलाब ने जगतप्रकाश की ओर देखा, "फिर बतलाने को है ही क्या? वैसे सैलाब का नाम सारी बम्बई में जाहिर है। मैं मेहनतकशों का शायर हूँ, यानी तरक्कीपसन्द यानी प्रोग्रेसिव अदीब हूँ। और इस प्रोग्रेसिव राइटिंग के सिलसिले में मेरी जसवन्त कपूर साहब से मुलाकात है। वह भी पंजाबी, मैं भी पंजाबी। बेहद मेहरबान हैं वे मुझ पर। तो जसवन्त कपूर साहब जब बम्बई आते हैं तब मैं उनसे मिलने के लिए यहाँ आ जाया करता हूँ। उनकी वजह से कुलसुम बेन की मेहरबानी भी हासिल हो गई मुझे।"

इसी समय कुलसुम अपने कमरे के बाहर निकली। सैलाब को देखते ही वह बोली "अरे आप सैलाब साहब, इस वक्त!"

सलाव ने उठकर कुलसुम के सामन झुकते हुए मीठी मसखरी से... "आदाव वजा लाता हूँ। आपने ही तो हुक्म दिया था कि मैं आज... के वक्त आपसे मिलू।"

कुल्सुम न वैठते हुए कहा, "अरे हा, मैं ता भूल ही गई थी। ता... अमृतसर कव जा रहे हैं ? जसवन्त की शादी तो आठ तारीख को है।

"जी, जब आप हुक्म दे। मुझे क्या, खानाबदोशी पेशा बना रखा है... लेकिन वतन का मामला है, दो चार दिन पहले पहुँच जाऊ तो ठीक। ला... छोडिए भी, शादी म तो लाहौर जाना ही है, तो बाद म रुका जा सक... है। आप भी चल रही होगी, तो आपके साथ ही चला चलूगा।"

"नही, मैं नही जा रही हूँ, यहा मुझे कुछ जरूरी काम है। यह ज... प्रकाश जा रहे है, इनको जानते हैं आप ?"

"जी, आज ही इनसे मिलना हुआ है और हम दोनो एक दूसरे से ... चुके है। तो कव जाने का इरादा है ?' सलाव ने जगतप्रकाश से पूछा।

' जव मैं इन्हे हुक्म दू। हँसते हुए कुलसुम ने कहा, "आपने तो ... हुक्म की वेगम का खिताव दे दिया है।"

"जी, तो मेरी तरह यह भी हुक्म के गुलाम हैं क्या ?" सलाव भा... पडा, "नही शक्ल सूरत स ता यह हुक्म के बादशाह दिखते है। तो ... आप भी मुझे अपना गुलाम समझिए।'

'इनके साथ मैं आपका भी रिजर्वेशन कराए देती हू, यह पाच तारी... को जाएँगे।"

"आप मेरा रिजर्वेशन फिजर्वेशन मत कराइए, मैं तीसरे दर्जे म सफ... करने का आदी हूँ, सिर्फ़ दूसरे दर्जे का किराया भर द दीजिएगा जो ... वचेगा उससे ह्विस्की खरीदूगा, लम्वा सफर है।' वह जगतप्रकाश ... ओर घूमा, ' मेरी बात मानिये ता आप भी तीसरे दर्जे म सफर कीजिए... ज्यादा-से-ज्यादा इटर क्लास म। यह पहला दूसरा दर्जा अमीरो के बा... हैं।"

नही, यह जगतप्रकाश सेकण्डक्लास म जाएँगे, और आप भी ... क्लास म जाएँगे, ह्विस्की की वोतल मैं आपका अलग से दे दूगी।' कुल्सु... न कडे स्वर म कहा, ' तो सब तय हो गया, आप पांच तारीख का ...

ाव लेकर शाम को छै बजे वाम्बे सेण्ट्रल स्टेशन पहुँच जाइएगा।"
"जैसी आपकी मर्ज़ी, गोकि मैं अपनी आदत नहीं विगाड़ना चाहता था। मालूम होता है आप सिनेमा जा रही हैं अपने मेहमान के साथ। मैंने भी एक अरसे से कोई पिक्चर नहीं देखी है। लेकिन जाने भी दीजिए। लोग कोई अंग्रेज़ी पिक्चर देखेंगे शायद, और अंग्रेज़ी पिक्चर मेरी समझ आती नहीं।"
"लेकिन आप पिक्चर देखने किस तरह जा सकते हैं, आपको तो आज प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन में अपनी कोई नज़्म पढ़नी है, आज के अखबार में यह खबर छपी है।"
"अरे तौबा! मैं तो भूल ही गया था, वैसे आपका साथ छोड़कर उस जगह में जाने की तबीयत नहीं होती। लेकिन उन मरदूदों ने जब अखबार में छपा दिया है तब मुझे जाना ही पड़ेगा।" सैलाब उठ खड़ा हुआ, "तो फिर पांच तारीख की शाम को बम्बई सेण्ट्रल पर पहुँच जाऊँगा। मैं फाटक पर ही आपका इंतज़ार करूँगा। अच्छा खुदा हाफ़िज़।" सैलाब चला गया।
सैलाब के जाने के बाद कुलसुम मुसकराई, "बड़ा प्यारा आदमी है यह सैलाब, किस कदर भोला और मासूम! लेकिन अपनी धुन का पक्का है। इसके बाप लाहौर के अच्छे-खासे ज़मींदार हैं, लेकिन यह सिनेमा के चक्कर में यहां आ गया है। गीत लिखने की धुन सवार है। तो हर जगह की ठोकर खाई इसने, लेकिन कहीं काम नहीं मिला है इसे। इस नाकामयाबी के बावजूद यह आदमी बम्बई से जाने का नाम नहीं लेता। इनका बाप यहाँ आया था, उसने इसे बहुत समझाया-बुझाया, नाराज़ होकर वापस चला गया, पैसे देना बन्द कर दिए हैं उसने। लेकिन यह आदमी भी अपनी धुन का पक्का है, भूखा मरना मंजूर है, लेकिन बम्बई से वापस नहीं जाएगा। टस-से-मस होता नहीं है।" कुछ चुप रहकर कुलसुम ने पूछा, "क्या शायर सभी पागल होते हैं?"
इतनी गम्भीरतापूर्वक कुलसुम ने यह बात पूछी थी कि जगतप्रकाश को हँसी आ गई। बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी दबाते हुए उसने कहा, "शायद हम सभी कहीं-न-कहीं अपना पागलपन लिये हुए हैं, शायद यही पागलपन

रिन् जमील ! आपकी आवाज़ मे तो बला की ताकत है, लोग आपसे है।" कुल्सुम के मुख पर एक मुसकराहट थी।

जमील क मुख पर भी एक फीकी-सी मुसकराहट आई, "आप गल्ती है हैं। न मेरी आवाज़ म कोई ताकत है, न मुझस कोई डरता हे। म ता भीड की जागती हुई, या यो कहिए, जगाई जाती हुई चेतना का प्रति- (नर हूँ। डर चेतना स है, शख्स से नही।" जमील ने जगतप्रकाश ओर देखा, "कुछ समझ मे आया बरखुरदार ?"

जगतप्रकाश ने नकारात्मक ढग से सिर हिलाया "नही, मेरी समझ मे नही आया। बात किसी लघाट से चली थी जा शायद एक मजदूर है, के साथ काम करता है, और जिसके हाथ मशीन मे कट गए हैं और जिसके आप अस्पताल म गए थे। इसके बाद मेरी समझ म कुछ नही आया।"

'इसके आग सब-कुछ अल्फ़ाज के साथ खिल्वाड, सिवा खिलवाड के र कुछ नही। लाग पैदा होते है, लोग मर जात ह, लाग आवाज़ करते है, । खामोश हो जाते है, और दुनिया का सब काम बाकायदा चल्ता रहता यह लघाट क्या पदा हुआ काई नही जानता। इसकी बीवी है इसके दो चे हैं। और मैं सोच रहा हूँ कि सिवा इसके कि इसन दो गुलाम और । किये, इसन दुनिया मे काई काम नही किया।"

कुल्सुम को शायद जमील की बातें अच्छी नही ल्ग रही थी, "कामरेड ील ! तुम तो फिलासफर बन रहे हो, और बदकिस्मती से फिलासफी स े उल्झन होती है।"

"जी, मैं अपनी बात बन्द करता हूँ, उल्झना के लिए हमी क्या कम ।" जमील न अपने मुख पर मुसकराहट लाने का प्रयत्न करते हुए कहा। किन जमील क मुख पर आई मुसकान कितनी फीकी थी, कितनी करुण । जगतप्रकाश न बात बदलन की काशिश की, 'जमील काका ! विश्व द्ध ता छिड गया, लेकिन यहाँ हिन्दुस्तान की जिन्दगी म कोई परिवतन नही ज़र आता। सब काम बदस्तूर चल रहा है, किसी तरह की हलचल नही, ाइ आन्दोलन नही।"

'हलचल हाती ह जिन्दा लागा मे। मुझे तो कभी-कभी यह एहसास ान ल्गता है कि हिन्दुस्तान मुरदा का देश हे। यहा किसी तरह की हलचल

जिन्दगी है।"

कुलसुम ने एक ठडी सास ली, "ठीक कहते हो, ... है। अच्छा अब चला जाए।"

सुबह जब जगतप्रकाश कुलसुम के साथ नाश्ता करने जा र... जमील आ गया। जमील उस समय बहुत उदास दीख रहा था। ... बोली, "लो यह कामरेड जमील अहमद भी आ गए हैं, तुम्हारा ... जाएगा यहाँ। चलिए आप भी नाश्ता कर लीजिए। आपका चेहरा ... उतरा हुआ है। क्या बात है ? लगता है आप अपने काम से घर वापस ... गए।"

थके हुए स्वर मे जमील बोला, "अस्पताल से आ रहा हू। ... दोनो हाथ जाते रहे, मशीन के नीचे आ गए थे। सोच रहा हू उसका ... उसके बाबी-बच्चा का क्या होगा ?"

डाइनिंग रूम मे मेज के सामने बैठते हुए कुल्सुम ने पूछा, "यह ... कौन है ?"

"आप नही जानती, कोई नही जानता उसे। वह इस अनजाना ... का एक बदकिस्मत इन्सान है जो कीडो की जिन्दगी बसर कर रहा ... जिसके पास दु ख दर्द तो है, लेकिन उस दु ख-दर्द को बँटाने वाला कोई ... है।"

"आप तो है।" कुल्सुम बोली और वह नाश्ता करने लगी। ... प्रकाश ने कुल्सुम के इस छोटे-से वाक्य मे एक क्रूरता से भरा व्यग्य ... किया। लेकिन उसे आश्चर्य हो रहा था जमील पर, जो कहता जा रहा ... "जी हा, क्योकि मैं भी तो उस भीड का ही एक इसान हूं। लेकिन मैं ... शख्स की बात नही कह रहा था, मैं तो भीड की बात कह रहा था। ... भीड के हरेक इसान क पास दिल है, खून है, गोश्त है, जज़बात हैं, ... हरेक वह चीज़ है जा इस भीड से जुदा उन इसाना मे है जो इस भीड ... गुलाम बनाए हुए है, जो इस भीड से ज़ाती फायदा उठाते हैं। लेकिन ... भीड के हरेक इसान की आवाज़ भुनभुनाहट है जो दूसरा को सुनाई ... नही पडती।"

कुल्सुम पर जगत जमील की इस बात की कोई प्रतिक्रिया ही नहीं ...

रेड जमील ! आपकी आवाज मे तो वला की ताकत है, लोग आपसे
है।" कुलसुम के मुख पर एक मुसकराहट थी ।

जमाल के मुख पर भी एक फीकी-सी मुसकराहट आई, "आप गलती
ो है। न मेरी आवाज म कोई ताकत है, न मुझसे कोई डरता ह । मै तो
भीड की जागती हुई, या यो कहिए, जगाई जाती हुई चेतना का प्रति-
र भर हूँ । डर चेतना से है, शख्स से नही।" जमील ने जगतप्रकाश
ार देखा, "कुछ समझ मे आया वरखुरदार ?"

जगतप्रकाश ने नकारात्मक ढग से सिर हिलाया, "नही, मेरी समझ मे
नही आया। बात किसी लघाटे मे चली थी जा शायद एक मजदूर है,
के साथ काम करता है, और जिसके हाथ मशीन से कट गए हैं और जिसके
आप अस्पताल म गए थे । इसके बाद मेरी समझ मे कुछ नही आया।"

'इसके आगे सब-कुछ अल्फाज के साथ खिलवाड, सिवा खिलवाड के
कुछ नहा। लोग पैदा होते है, लाग मर जाते है, लोग आवाज करते है,
खामोश हो जाते है, और दुनिया का सब काम बाकायदा चल्ता रहता
यह लघाटे क्या पदा हुआ कोई नही जानता । इसकी बीवी है, इसके दो
चे हैं। और मैं सोच रहा हूँ कि सिवा इसके कि इसने दो गुलाम और
ा किये, इसने दुनिया मे काई काम नही किया।"

कुलसुम को शायद जमील की बात अच्छी नही लग रही थी, "कामरेड
मील ! तुम तो फिलासफर बन रहे हो, और बदकिस्मती से फिलासफी स
मे उलझन हाती है।"

"जी, मैं अपनी बात बन्द करता हूँ, उलझनो के लिए हमी क्या कम
।' जमाल न अपन मुख पर मुसकराहट लाने का प्रयत्न करते हुए कहा।
किन जमाल के मुख पर आई मुसकान कितनी फीकी थी, कितनी करुण
! जगतप्रकाश न बात बदलने की कोशिश की, जमील काका ! विश्व-
द ता छिड गया, लेकिन यहाँ हिन्दुस्तान की जिन्दगी मे काई परिवतन नही
जर आता। सब काम बदस्तूर चल रहा ह किसी तरह की हल्चल नही,
ोई आन्दोलन नही।"

"हल्चल हाती है जिन्दा लोगो मे। मुझे तो कभी-कभी यह एहसास
ोने लगता है कि हिन्दुस्तान मुरदा का देश है। यहा किसी तरह की हलचल

एगा। अगर आप न भी आ सके तो जगतप्रकाश को तो भेज दीजिएगा।"

जमील के साथ जगतप्रकाश बँगले से बाहर निकला। उस सोई हुई न रोड पर अब जिन्दगी की हलचल आरम्भ हो गई थी। जगतप्रकाश ल को पकड़कर एक टैक्सी पर बैठ गया। टैक्सी अस्पताल की ओर चल जमील ने कहा, 'सुना है तुम जसवंत कपूर की शादी में अमृतसर जा हा! जसवंत कपूर से तुम्हारी दोस्ती इतनी ज्यादा है, इसका मुझे पता था।"

"नहीं, हमारी दोस्ती इतनी ज्यादा नहीं है कि मैं उसकी शादी में ऊँ। यह आग्रह कुल्सुम का है कि मैं वहाँ जाऊँ, बम्बई होता हुआ।"

जमील कुछ सोचता रहा, फिर एक ठंडी साँस लेकर वह बोला, "यह रत! इस समय पाना बड़ा मुश्किल है। खुद नहीं जा रही है, तुम्हें रही है। क्या जसवंत को यह दिखलाने के लिए कि जसवंत को खोकर सुम का कोई नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि उसने तुम्हें पा लिया है। अच्छा, बताना बरखुरदार, क्या वाकई कुलसुम ने तुम्हें पा लिया है?"

अगर किसी और ने जगतप्रकाश से यह प्रश्न किया होता तो शायद तप्रकाश झूठ बोल जाता, लेकिन जमील से वह झूठ नहीं बोल सका, शायद—बाकि मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकता।"

एकाएक जमील के स्वर में एक प्रकार की उत्तेजना आ गई, "तुम लत समझ रहे हो, कुलसुम ने तुम्हें नहीं पाया, क्योंकि तुम कुलसुम को नहीं सके हो। इस कुलसुम का कोई नहीं पा सकता, यह कुल्सुम अपने को देने ही आई है, यह सिर्फ दूसरों को पाने के लिए निकली है। इसके पास दौलत , और यह अपनी दौलत से दूसरों को खरीदना जानती है। इसकी दौलत के थ इसका अस्तित्व इस बुरी तरह घुल मिल गया है कि दूसरे इसके अस्तित्व प्रेरक तत्त्व इसकी दौलत की अहमियत का देख नहीं पाते। यह बड़ी उदार , बड़ी मदद करने वाली है, बम्बई के समाज में इसकी बड़ी इज्जत है, सका बड़ा मान है। लेकिन यह सब इज्जत इसकी दौलत की है, इसकी रहा है।"

जगतप्रकाश को जमील की बात बड़ी अप्रिय लगी, लेकिन उसने इसका

कोई उत्तर नही दिया। अपनी इच्छा के विरुद्ध वह जमील का -
सोचने लगा। यह आदमी जो कुछ कह रहा है, क्या वह सच है? कल्प
उसे भी तो रुपया दिया है। लेकिन लेकिन आज के युग की
हरेक भावना की अभिव्यक्ति रुपये मे नही सिमट आई है? और
'लेकिन-लेकिन' की मौन आवाज ने दूसरा रुख ले लिया। इस कुल्फ
उसे अपना माना है, अपना समझा है—इसका कौन-सा ठोस नहीं
उसने जगतप्रकाश से अपने को अपना मनवा लिया है, केवल इतना सा

जगतप्रकाश के इस मौन से जमील को आभास हुआ कि उसका
जगतप्रकाश को अप्रिय लगी है। उसने कुछ रुककर कहा, "मैं यह दावा
करता कि मैंने जो कुछ कहा वह सच ही है। इंसान होने के नाते इस क
मे भी दुख-दर्द है, प्यार-नफरत है, सभी भावनाएँ हैं। माफ़ करना अब
कुलसुम की यह नेकी और दानशीलता अखरने लगी है, इस दान-खैर
मुझे नफरत होने लगी है।"

जगतप्रकाश अब अपने अन्दर से निकलकर बाहर आ गया, "क्या ज
काका, हम हिन्दुओ मे दान को तो धर्म का सर्वश्रेष्ठ अंग समझा गया है

'वह शायद इसलिए कि तुम्हारे मजहब मे इन्सान की बेबसी, ग़
और शोषण को एक सामाजिक सत्य के रूप मे मंजूर कर लिया गया
गरीबी और बेबसी वही होती है जहा शोषण है जुल्म है। जुल्म और
खसोट ये वैयक्तिक कमजोरियां है, समाज इनको रोकने के लिए बन
समाज का फर्ज है कि वह जुल्म और लूट-खसोट को रोके, लेकिन तु
समाज ने इस जुल्म और शोषण को मंजूर करके ऐसे कानून बनाए हैं
इस जुल्म और शोषण को खुली छूट है। और इस लूट को ढँकने के
समाज ने दान दया को अहमियत दी है। मैं कहता हूँ कि अगर यह
और शोषण बन्द कर दिया जाए तो इस दान दया की जरूरत ही नहीं र
समाज की नींव न्याय और अधिकार पर होनी चाहिए इस दान-दय
वह टिक ही नहीं सकती।"

'लेकिन जमील काका! यह समाज तो व्यक्तियों का समूह है,' ज
प्रकाश बोला, मनुष्य मे स्वाभाविक रूप से दया और त्याग भी हैं,
बर्बरता और लूट-खसोट है। धर्म का काम है मनुष्य मे सद्भावना जगा

माज के लिए नही होता, वह तो व्यक्ति के लिए होता है।"

"आ गया समय म, आ गया!" जमील मानो चिल्ला उठा, "तुमने ने की वात कही जिसमे कई वाते साफ हो गइ।"

टैक्सी अब अस्पताल पहुँच गई थी। जमील ने टैक्सी से उतरते हुए "वरखुरदार, इस बार मे फिर कभी और वातचीत होगी, अभी तो घाटे की खबर लेनी है।"

दोनो कैजुअलटी वाड म पहुँचे। जमील न एक नस स पूछा। गम्भीर वाली उस नस ने एक छोटा सा भावनाहीन उत्तर दिया, "खलास हो गया, अरी वाड म पडा है।"

जमील न हाथ पकडकर जगतप्रकाश को खीचा, "देर से पहुँचा यहा। जल्दी ही पहुँचता तो मैं क्या कर लेता? चल मार्चुअरी वाड मे, की वीवी शायद वही होगी।"

स्ट्रेचर पर एक शव पडा था चादर से ढका हुआ और उसके पास एक औरत दो बच्चो के साथ वैठी सिसक रही थी। जमील को देखते ही धाड मारकर रो पडी। दौडकर वह जमील के पैरो पर लेट गई। बच्चे जार जार स बिलखने लगे थे।

जमील न जोर लगाकर उस औरत को जमीन से उठाया। एक बच्चे उसने गोद म उठाया और दूसरे का हाथ पकडकर उसने उस औरत से , "यही वदा था तरी किस्मत मे, इसको रोक कौन सकता था। तेरे ने स वह लौट तो नही आएगा, वह तो हमेशा के लिए गया। अब अपने च्चो की तरफ देख, अपने घर जा और इन बच्चो को सम्हाल।"

'इनकी मिट्टी का क्या होगा?" रोते हुए उस औरत ने कहा।

'मिट्टी मिट्टी म मिला दी जाएगी, अस्पताल वाले इसका इन्तजाम खुद र लेगे। तरे पास कुछ रुपया है?"

सिर हिलाते हुए उसने कहा, "पगार तो सात तारीख को मिलेगी। मेरे न कुल दो रुपए हैं। अब तो कोई उधार भी नही देगा।"

जमाल न अपनी जेब से पाच रुपए का एक नोट निकाला, "पाच रुपए हे ल, शाम तक दस रुपया का इन्तजाम और कर दूगा। अब तू अपने घर जा और अपने बच्चो की देख भाल कर। बाकी इन्तजाम बाद मे होता रहेगा,

वह यूनियन पर छोड दे।"

इस बार फिर वह स्त्री ज़ोर से रो पडी, "हाय र, मैं इतनी गि
भी इन्तजाम नही कर सकती।"

जमील ने कडे स्वर म कहा, "मैं कहता हूँ अपने घर जा, इन बच्चे
देख—इनका इन्तज़ाम करना होगा तुझे, मिट्टी की फिक्र न कर। ग
वक्त आऊँगा तब देखूगा क्या-क्या करना ह तेरे लिए। घर चली जाए
तुझे पहुँचान चलना पडेगा?"

बुझी हुई आवाज़ मे उस औरत ने कहा, 'चली जाऊगी।" ज
की गोद से उसन बच्चा अपनी गोद म ले लिया। दूसरे बच्चे का हाथ पक
कर उसने कहा, "चलो अभागो।"

उस स्त्री और उसके बच्चो का ट्राम पर बैठाकर जमील ने एक
साम ली, 'बडी थकान लग रही है। रात भर जागा हूँ और सुबह बार
से इस मामले म फँस गया। चलो किसी इरानी की दूकान पर एक
प्याला चाय पी जाए।"

दानो पास वाले ईरानी रेस्तरा म बठ गए, जमील के मख प
तनाव अब जाता रहा था। उसन चाय पीते हुए कहा, "मौत पर किस
वश नही चलता, लेकिन इस मौत के नतीजे की शक्ल से कुछ मसल ख
होते हैं। काश! उन मसलो को ठीक तौर से सुलझाया जा सकता!
तुमने सद्भावना और धरम की बात कही थी। जानते हो बरखुरदार, ह
मिल मालिक बडा स्वार्थी खसीस और कमीना आदमी है। इस लधा
मौत मिल का काम करने मे हुई लेकिन इसकी मौत का मुआवज़ा इ
बीवी को बिना अदालत जाए नही देने का। हमारी यूनियन को नाको
चबाने पडेंगे इससे मुआवजा दिलवाने म। अगर इन्सान को लोगो
सद्भावना और दान-दया पर सौंप दिया जाए तो बडी मुसीबत हागी।

जगतप्रकाश मुसकराया, 'लेकिन जमील काका, तुमने अभी अपने
से पाच रुपए उस औरत को दिए, यह दान दया की भावना तुममे तो है

जमील ने सिर हिलाया, 'नही बरखुरदार मैंने कोई दान नही दि
मैंने कोई दया दिखलाई। दान दिया जाता है बहिश्त पाने के लिए
बहिश्त व दोज़ख पर मेरा विश्वास नही। मैंने सिर्फ उस औरत की सह

ो, क्योंकि ल्घाटे मेरा साथी था। जिसे तुम दया कहते हो, वह मेरा था।" वह चाय पीने लगा। थोडी देर मे जसे उसे कोई बात याद ई हो, 'अभी कुछ देर पहले तुमने कहा था कि धर्म समाज के लिए नही वह व्यक्ति के लिए होता है। इस नजरिये पर मैंने पहले कभी गौर किया था। लेकिन बरखुरदार, क्या यह सच नहीं है कि हरेक व्यक्ति के अपने निजी कुदरती जजबात है, इन कुदरती जजबात को बदला नहीं जा सकता, मेरा जाती तजर्बा तो यह कहता है।"

जगतप्रकाश ने अनुभव किया कि वह कुछ उलझन मे पड गया है, बडे मन उसने अपने को इस उलझन से निकाला, हिचकिचाते हुए उसने, "लेकिन जमील काका मनुष्य की स्वाभाविक भावना कल्याणकारी है। हर मनुष्य मे प्रेम है, दया है, सत्य है, सहानुभूति है। मनुष्य अपने गुणो पर कायम रहे, धर्म इसमे सहायक है, और इसलिए मैं धर्म को वैयक्तिक मानता हूँ।"

जमील चाय समाप्त कर चुका था। उसने कहा, "समझा, लेकिन आदमी इसान होने के पहले हैवान है। इन्सानियत के गुणो ने उसे हैवानियत के ऊपर उठाकर सामाजिक प्राणी बनाया। हैवानियत ही समाज की सबसे बडी दुश्मन है इसलिए समाज का फर्ज है हैवानियत से लडना। मजहब समाज मे एक सामाजिक इकाई है। मजहब का मकसद है समाज को कायम रखना, समाज को ताकतवर बनाना, क्योकि यह समाज ही इन्सानियत का रूप है। मजहब सामाजिक है, वह वैयक्तिक है ही नही। मन्दिर बनवाना, धर्मशालाएँ खोलना, सदावर्त बाटना, ताकि चोरबाजारी मे, धोखाधडी मे, मक्कर और फरेब मे भगवान् हमारी मदद करे यह इस वैयक्तिक मजहब की कुरूपता है। हिन्दू धर्म की सबसे बडी कमजोरी यह है कि उसने धर्म को सामाजिक नही माना, उसने उसे वैयक्तिक माना है।'

बहुत कडा प्रहार किया था जमील ने उसके धर्म पर, जगतप्रकाश तिलमिला उठा। जमील ने जगतप्रकाश के मुख के भाव जसे पढ लिए। उसने फिर कहा, 'मैंने मुसलमान की हैसियत से यह बात नहीं कही है, गलत मत समझ जाना। इस्लाम मे भी अपनी निजी कमजोरियाँ है। वहाँ भी बुराइयाँ है, दोजख है। उसमे सामाजिकता तो है, लेकिन इतनी सकुचित

सामाजिकता है कि वह व्यक्तिवाद से भी ज्यादा बदशक्ल और है। यह संकुचित सामाजिकता हैवानियत का जामा पहनकर बन और भयानक खून-खराबे का रूप धारण कर सकती है, बड़े-बड़े द कारण बन सकती है जिनमें बेशुमार बेगुनाह लोग मौत के घाट उत जाएँ।" जमील उठ खड़ा हुआ, "नहीं समझ में आता, कुछ नहीं नहीं आता। हम कहाँ बढ़ रहे हैं, भविष्य के गर्त में क्या छिपा है। बड़ा धुंधला-धुंधला लग रहा है। ये मजहब, यकीनात और अकीदे हुए—ये इंसान के सबसे बड़े दुश्मन हैं। इस मजहब को मिटा दुनिया की काफी मुसीबतें हल हो जाएँगी। अच्छा, अब मैं घर चल सा सा लूँ।"

जमील के जाने के बाद जगतप्रकाश लक्ष्यहीन-सा सड़कों पर भ लगाता रहा। जमील ने जो बातें कही थीं, कहीं उनमें कोई सत्य है। सम्भव है वह अर्ध सत्य ही हो लेकिन वह ऐसा नहीं है जिसकी उ जा सके। दान-दया-उपकार—ये सब समाज के आर्थिक पहलू हैं। और अर्थ—क्या यह जीवन का अविच्छिन्न अंग नहीं है? वह अर्थशास्त्र पंडित था और उसे लग रहा था कि यह अर्थ मानव-जीवन के विकास आधारभूत सत्य है। विष्णु की पत्नी लक्ष्मी है, लक्ष्मी अर्थ की प्रतीक है।

यह अर्थ साध्य नहीं है यह साधन भर है। जीवन का आरम्भ सृ है जिसका प्रतीक ब्रह्मा है जीवन का अन्त मृत्यु में है जिसका प्रतीक है। और जीवन का पूर्ण सत्य अस्तित्व में है जिसका अस्तित्व विष्णु है विष्णु यह भरण-पोषण अपनी अर्धांगिनी लक्ष्मी की सहायता से ह सकते है। और इसलिए यह लक्ष्मी, यह अर्थ, यही मानव-जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसी अर्थ में समाजशास्त्र है, इसी अर्थ में शास्त्र है, इसी अर्थ में धर्मशास्त्र है। इस अर्थ का एक अपना शास्त्र नहीं अर्थशास्त्र, जिसका वह विद्यार्थी है और अभी तक अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों का उसने अध्ययन किया है वे मूल सिद्धान्त नहीं हैं।

अपने इन्हीं विचारों में उलझा हुआ वह जब एक बजे कुलसुम के वापस लौटा, तब वह अनुभव कर रहा था कि उसका समस्त ज्ञान ज्ञान है, जो एकदम खोखला है। एक तीव्र असन्तोष जाग उठा था उ

। अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए उसे हिन्दू धर्म के विकास के ... का अध्ययन करना पड़ेगा।

कुलसुम अभी तक अपनी मीटिंग से नहीं लौटी थी। जगतप्रकाश बरामदे ... गया। उसकी विचार धारा टूटी सैलाब की आवाज से, जो उसके सामने ... हुआ कह रहा था, "आदाब अर्ज है! कुलसुम बेन क्या घर में नहीं हैं, ... आप अकेले बैठे हैं?"

सैलाब के आ जाने से जगतप्रकाश को एक तरह की राहत मिली, क्योंकि ... की विचार धारा अब उसके लिए असह्य हो रही थी, "बैठिये, कुलसुम बेन ... गई हैं, लेकिन अब वापस आती ही होंगी।"

"शुक्रिया!" सैलाब ने बैठते हुए कहा, "असल में मैं जिस मकसद से ... आया था, आपका भी उससे ताल्लुक है। बात यह है कि मैं पाँच तारीख की ... है कल ही बम्बई से जाना चाहता हूँ, यानी तीसरी तारीख को। चार ... तारीख की शाम को दिल्ली पहुँचकर वहां दो दिन कयाम करूँगा। फिर छः ... तारीख की रात को दिल्ली से रवाना होकर सात तारीख की सुबह अमृतसर, ... और आठ तारीख की शादी!"

जगतप्रकाश ने कुछ सोचकर कहा, "दिल्ली रुकना चाहते हैं आप दो ... दिन, आखिर क्या?"

सैलाब के मुख पर उसकी भोली मुसकराहट आ गई, "जी, यह एक ... राज है जो मैं इस वक्त आप पर जाहिर नहीं कर सकता। आप भी अगर ... मेरे साथ दो दिन दिल्ली रुकने की तकलीफ गवारा करें तो आपको मालूम ... हो जाएगा।"

"मैं कल ही चल सकता हूँ। बम्बई में मेरे लिए कोई खास काम तो है ... नहीं। लो, वह कुलसुम बेन आ गई हैं, उनसे बात कर ली जाए।"

कुलसुम अकेली न थी, उसके साथ एक और स्त्री थी, अधेड़-सी। कुलसुम उस स्त्री से कह रही थी, "ग़ैरमुमकिन! पांच तारीख के पहले मैं यहाँ से जा नहीं सकती, अपने मेहमान को यहाँ अकेला छोड़कर कैसे चल दूँ, देखो वह बैठे हैं।"

"मैं तुम्हारी तरफ से उनसे माफी माँग लेती हूँ। बिना तुम्हारे काम नहीं बनेगा, नहीं तो हम लोग तुम पर इतना जोर न डालतीं।" उस स्त्री ने कहा।

दोनों अब बरामदे में आ गई थीं। कुलसुम ने जगतप्रकाश से
अकेले ही आए, जमील अहमद नहीं आए तुम्हारे साथ।"

"जी, उनकी जगह मैं आ गया हूँ, आपका खादिम सलाव,
बिल्कुल अलग से आया हूँ, अभी चार-पांच मिनट पहले, अपना
लिये हुए।" सलाव ने खड़े होकर कहा।

कुल्सुम ने जैसे सलाव की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया,
पर बैठते हुए उसने साथ वाली स्त्री से कहा, "बैठो भी राधा, यह
है जिनका ज़िक्र मैंने किया था, और यह राधा देसाई हैं, यहां फ़िल्मों
बड़े फ़ाइनेंसियर सेठ पोपटलाल देसाई की पत्नी। इन्होंने वार
मदद करने के लिए परसों पूना में एक बहुत बड़ा और शानदार
प्रोग्राम आर्गेनाइज़ किया है, मेरे पीछे पड़ गई हैं कि मैं उसका इंत
कर लूं चलकर।"

सलाव की आखें फैल गईं। उसने राधा की ओर मुड़कर कहा,
बजा लाता हूँ हुज़ूर! इस नाचीज़ का नाम सलाव है। सेठ पोपटला
नई फ़िल्म 'जाने जहां' में गाने लिखने की बात चल रही है मेरी।
उस फ़क्शन में मैं भी चलूंगा। एक निहायत प्यारी-सी नज़्म मेरी
आप ज़रूर चलिए कुल्सुम बेन! जर्मनी के खिलाफ़ इस जंग में बरत
की मदद करना हम लोगों का फ़र्ज़ है।"

विस्फारित नयनों से जगतप्रकाश ने सलाव को देखा। यह आदमी
अपने को प्रोग्रेसिव राइटर कहता है, जो कम्युनिज़्म पर विश्वास कर
वह इस साम्राज्यवादी ब्रिटेन के वार-एफ़र्ट्स में सहायता देने के लिए
को स्वयं प्रस्तुत कर रहा है। एकाएक उसके मन में एक दूसरा
आया। इस सैलाब के सामने सेठ पोपटलाल देसाई की पत्नी राधा
बैठी है। पोपटलाल के हाथ में इस सलाव की आर्थिक कुंजी है। यह
वार एफ़र्ट्स में मदद नहीं कर रहा है, यह प्रकारान्तर में अपने आर्थिक
के प्रति जागरूक है। उसके मुख पर एक मुस्कराहट आ गई
सैलाव से कहा, आप तो कल दिल्ली चलना चाहते हैं।'

राधा तत्काल बोली, आपने प्रोग्रेसिव राइटर्स की मीटिंग में कल
कविता पढ़ी थी—अगर— खाक़ में मिल जाएगी अंग्रेज़ तेरी सल्तनत

के अखबारो में कल की मीटिंग की रिपोर्ट निकली है। गवर्नर साहब उस फंक्शन में आ रहे हैं। क्या आपका उनके सामने पड़ना ठीक ?"

कुलसुम हँस पड़ी, "या सेठ पोपटलाल का आपसे अपनी फिल्म के लिखाना ठीक होगा ?"

सलाब का मुंह उतर गया, "बुरा हो इन मरदूद प्रोग्रेसिव राइटर का। मैं कल नहीं जाना चाहता था, लेकिन उन्होंने अखबारों में मेरा छपवा दिया तो जाना पड़ गया।" उसने राधा से कहा, "आप सेठ लाल से मेरी बाबत कुछ कहिएगा नहीं। अभी पिक्चर के मुहूरत महीने की देर है, तब तक मैं पंजाब का एक चक्कर लगाए आता इस बीच लोग-बाग इस वाकए को भूल जाएँगे और मैं इस बीच बार-स पर दो-चार नज्में लिख लूंगा।"

राधा ने सलाब की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, कुलसुम से वह गिड़ा रही थी, "कुलसुम बन, हमारी इज्जत अब तुम्हारे हाथ में है। किसी-न किसी तरह चलना ही होगा।"

तभी जगतप्रकाश बोल उठा, "मेरी वजह से तुम्हें बम्बई रुकने की जरूरत नहीं है कुलसुम ! यह सलाब यहाँ से कल ही चलना चाहते हैं, ये जिद कर रहे थे कि मैं भी कल चलूं। सोचता हूँ कि रास्ते में दो दिल्ली में ही ठहर जाऊँगा। इस वर्ल्ड वार की हिन्दुस्तान की राजधानी की में क्या प्रतिक्रिया है, यह भी देखने को मिल जाएगा।"

कुलसुम के कोई जवाब देने के पहले राधा ने ताली बजाते हुए कहा, आपने मेरा काम बना दिया—धन्यवाद ! कुलसुम बन, अब कोई बहाना चलेगा, आपको चलना ही होगा।"

विवशता के भाव से कुलसुम बोली, "जैसी तुम लोगों की मर्जी ! मैंने दोनों के लिए रिज़र्वेशन के वास्ते इंटरनेशनल ट्रेवल एजेंसी से कह था।"

राधा ने तत्काल इंटरनेशनल ट्रेवल एजेन्सी को फोन मिलाया। च तारीख का रिज़र्वेशन कैंसिल करके तीन तारीख का रिज़र्वेशन करा या कुलसुम ने।

दूसरे दिन नाश्ता करके जगतप्रकाश अकेला ही निकल पड़ा।
घर पर ही था और सो रहा था। आखें मलते हुए उसने जगतप्रकाश
"इस वक्त कैसे भूल पड़े ? ग्यारह बजे तक मैं खुद ही आ जाता।
भर म नही सो पाया। वह लघाटे की औरत, दिन भर उसका
उलझा रहा। बैठो, मैं अभी फारिग होकर आता हूं।"
कहा, "जल्दी से चाय बना दे हम लोगो के लिए—नाश्ता बनाने
न करना, सिर्फ चाय।"

जगतप्रकाश उस दिन का अखबार उठाकर पढने लगा,
खबरो से अखबार भरा था। फ्रांस और ब्रिटेन। जर्मनी बढ़ता जा
रूस भी अपने सीमावर्ती छोटे-छोटे देशो को हड़पता जा रहा था
प्रकाश सोचने लगा। इतने म जमील मुह-हाथ धोकर आ गया।
ने अखबार रखते हुए कहा, 'जमील काका, एक बात मेरी समझ म
रही। यह रूस जो समाजवाद का प्रवर्त्तक है और जिसकी तरफ हम
लगी हैं, यह भी साम्राज्यवादी बनता जा रहा है। अजीब बात है।'

"यह तुमसे किसने कह दिया कि रूस साम्राज्यवादी बन र
जमील ने बठते हुए पूछा।

"अखबारो म छपी खबरो से तो यही लगता है।"

"हिंदुस्तान के इन अखबारो को खबरें मिलती हैं अंग्रेज
एजेंसियो से। ये अंग्रेज रूस के सबसे बड़े दुश्मन हैं। बढ़ा-चढ़ा
खबर दी जाती है जो रूस के खिलाफ हो, जर्मनी के खिलाफ हो।'

"तो रूस ने अपने सीमावर्ती देशो पर कब्जा नही किया है,
कहना चाहते हो जमील काका।" जगतप्रकाश के स्वर म मुस्कराहट

जमील मुस्कराया, "जरूर कब्जा किया है, इससे इनकार
सकता है। लेकिन मान लो रूस इन पर कब्जा न करता, तो यह क
था कि जर्मनी इन पर कब्जा न कर लेता ? जर्मनी अपनी पूरी दानवी
के साथ पूरब की तरफ बढता जा रहा है, वह इन छोटे-छोटे देशो पर
करके रूस की छाती पर सवार हो जाता। रूस का यह कदम खुद अप
की हिफाजत के लिए है। इन देशो म सरदारो और सरमायादारो का
हुकूमत है। इन देशो की जनता म आजादी के लिए कोई दिलचस्पी न

की तहत म वह जनता तो जागेगी।"

जमील की पत्नी चाय ले आई थी। जगतप्रकाश ने चाय पीते हुए एक सास भरी, "शायद तुम्हारी ही बात सही हो जमील काका, कुछ समझ ही आता। हा, तो मैं तुमसे यह कहने आया था कि मैं आज शाम को ही ई से जा रहा हू। मेरे साथ एक और आदमी लग गया है, तुम तो उसे ी तरह जानते होगे, सैलाव नाम का शायर।"

"अच्छी तरह जानता हूँ उसे, कुलसुम वेन के यहाँ आजकल हाज़िरी । करता है। लेकिन वह आदमी मुझे पसन्द नही आया। अपन का क्रीपसन्द, यानी प्रोग्रेसिव कहता है, लेकिन यह सारा कम्युनिज्म उसके र एक दिमागी ऐयाशी-भर है। वहरहाल वडा दिलचस्प आदमी है, ता अच्छी तरह कट जाएगा। लेकिन तुम तो परसो जाने वाले थे।"

"कुलसुम कल सुबह पूना जा रही है, वहाँ वार एफर्ट्स के लिए कोई इटी प्रोग्राम हो रहा है, उसका उद्घाटन करना है उसे। मेरी वजह से नही जा रही थी, तो मैंने आज ही जाना तय कर लिया। यहाँ वम्बई में ा कोई काम भी तो नही है। हाँ, एक बात और कहनी है, मान लेना—कार मत करना।"

'वोलो।"

जगतप्रकाश ने अपने पस से सौ-सौ रुपये के दो नोट निकाले, "यह या तुम ल्घाटे की पत्नी को दे देना। यह रुपया मेरा नही है, कभी कुलसुम मुझे यह रुपया दिया था। मुझसे वह वापस नही लेगी और मुझे इसकी रूरत नही है। वैसे मैं तुमसे सहमत हूँ कि गरीवो और मुसीवतज़दो को पया नही वाँटा जा सकता, लेकिन अगर लघाटे की पत्नी को इससे कुछ हायता हो जाए तो अच्छा ही होगा।"

जमील कुछ देर तक जगतप्रकाश को चुपचाप देखता रहा, फिर उसने ोनोट ले लिए, "ज़रूरत तो उसे रुपयो की बहुत है, और ज़रूरत किसे ही है? अच्छा तो यह होता कि यह रुपया तुम अपने पास रखते, वक्त-ज़रूरत काम आता। इस औरत की ज़रूरतो को पूरा करने की हम लोग कोशिश तो कर ही रहे हैं, इसमे देर भले ही लग जाए।"

जगतप्रकाश के मुख पर सतोष की चमक आ गई, उसने कहा, "वक्त-

जरूरत के लिए अभी काफी रुपया है मेरे पास। मुझे ... है, जनवरी म मुझे यूनीवर्सिटी म नौकरी भी मिल जाने का ... अच्छा, अब मैं चलूगा। कुल्सुम ने लच के पहले आ जाने का कहा है ... से में बाजार जाऊँगा, कुछ जरूरी चीज़ खरीदनी है मुझे।"

शाम के समय जब जगतप्रकाश कुलसुम के साथ चाय पी चुका, ... बोली, 'हा, तो मैं शर्मिष्ठा को एक उपहार देना चाहती था, ... तुम उसे दे देना।" उसने अपने हाथ वाली अगूठी उतारी। ... सा माणिक, करीब आठ-दस रत्ती का, रक्त की तरह लाल, और ... चारो ओर नीली आभा वाले हीरो के बारह टुकडे। प्लेटिनम की वह ... कितनी सुन्दर थी! एक बार उदास नजरो से कुलसुम ने उस अंगू... देखा, "जसवन्त ने यह अँगूठी पसन्द की थी, मैं तो इसे नही खरीदना ... थी—जानते हो, इसका दाम पाच हज़ार रुपया है। एक यहूदी जौहरी ... थी डेडी के यहा, जसवन्त भी उस समय वहा था। तो जसवन्त के ... करने पर मैंने इसे खरीद लिया था। अपनी पसन्द की हुई चीज़ ... बराबर देखता रहे, मैं सिर्फ इतना चाहती हूँ। शर्मिष्ठा की उगली ... अँगूठी रहेगी तो वह इसे रोज देखेगा।" फिर कुछ रुककर उसने ... "और जब-जब देखेगा तब-तब शायद वह मुझे भी याद कर लेगा।"

दूसरे दिन जब वह सलाब के साथ दिल्ली जकशन पर उतरा, ... रही थी। दोनो स्टेशन के बाहर निकले। सैलाब ने कहा, "यहाँ ... फतहपुरी म एक बहुत अच्छा होटल खुला है—आराम महल। वहीं ... चाहिए।"

स्टेशन के बाहर होटल के प्रतिनिधियो की भीड थी, आराममहल ... के प्रतिनिधि के साथ वे वहा पहुँचे। सलाब ने जगतप्रकाश का हाथ ... हुए मनजर से कहा, 'एक मित्र कमरा चाहिए, मिस्टर जगतप्र... नाम।' रजिस्टर पर लिखा पढी हो जाने के बाद दोनो उस ... पहुँचे जो जगतप्रकाश को मिला था। असबाब रखवाकर जब हो... बेयरा चला ग... जगतप्रकाश ने सलाब से कहा, 'इस कमरे म तो ... पलग है, हम दो आदमी कसे सोएँगे यहा?'

सलाब बोला, "जी, मेरा असबाब भर इस कमरे म ठहरेगा

नी महबूबा शबनम के यहा जा रहा हूँ। दो राते वितानी हैं इस दिल्ली र म, तो वही बीतेंगी। दिन मे मैं यहाँ आ जाया करूँगा।"

"यह शबनम कौन है और कहाँ रहती है ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

मलाव हँस पडा, "आप अभी बच्चे मालूम पडते है जगतप्रकाश ए! यह शबनम, जिसके यहा मैं रात विताने जा रहा हूँ, सिवाय तवायफ और कौन हो सकती है ? और चूकि वह सैलाव की महबूबा है, लिहाजा सा ऊँचे तबके की तवायफ हो सकती है। लिहाजा वह सिवा चावडी के र कहा रह सकती है!"

जगतप्रकाश के मन म एक तरह की ग्लानि-सी जाग उठी उस सलाव प्रति। वह मौन हो गया। लेकिन शायद सैलाव के मन मे एक उत्साह-सा मड पडा था। वह बोला, "तुम नही जानते यह शबनम कितनी खूबसूरत है, च्छी-स-अच्छी फिल्म की हीरोइन उसके आगे मात। बला का हुस्न पाया उसने। साथ ही बडी नेक और तहजीबदार है। मुझसे बडी मुहब्बत करती। जानते है, वह मुझसे निकाह पढाने को राजी है, लेकिन मैं हूँ फाकेमस्त ादमी, तो उसकी वालिदा राजी नही होती। मैं कहता हूँ इस शबनम को फ़िल्मो म आना चाहिए। मैंने तय कर लिया है कि बम्बई म मुझे कोई काम मल जाए तो मैं उसे फिल्मो म हिरोइन के तौर से बुला लू। इसकी वालिदा बम्बई चलने को कहा भी, तो वह टाल गई। वह किसी रईसजादे, राजा ा नवाब की ताक मे बैठी है, जिससे एक लम्बी रकम लेकर वह शबनम को चि द।"

मलाव ने कपडे वदले। अब वह खुद एक अच्छा खासा रईस दिख रहा था। विलायती सज की शेरवानी, चूडीदार पैजामा। जगतप्रकाश को कुलसुम का कहना याद हो आया—'इस सैलाव का बाप लाहौर का अच्छा-खासा जमीदार है।' जगतप्रकाश एकाएक बोल उठा, शायद आप भी तो रईसजादे हैं, शक्ल-सूरत से भी आप रईसजादे दिखते है। आदते भी आपकी रईसजादो की हैं।"

अपनी प्रशसा पर सैलाव खिल उठा, "शायद नही जगतप्रकाश साहेब, वाक़या यह है कि मेरे वालिद लाहौर के बडे जमीदार है। उनके पास इतनी दौलत है कि वह एक शबनम को नही, दजनो शबनमो को खरीद

सकते हैं। लेकिन वह वडे दकियानूस किस्म के और खसीस आदमी हैं। और मैं ठहरा शायर आदमी, मुझे दौलत से कोई लगाव नही, सिवा इसके कि खुलकर खर्च की जाए। मैं तो मुहब्बत का मुरीद हूँ। अच्छा जगतप्रकाश साहेब, अभी कुल सात वजे हैं, खाना आप नौ बजे के पहले क्या खाइएगा। तो आप भी मेरे साथ चले, उस शबनम को देखकर आपकी तबीयत खुश हो जाएगी। आठ साढे आठ वजे तक आप वापस आ जाइएगा।"

जगतप्रकाश ने यह आशा नही की थी कि इस तरह का प्रस्ताव उसके सामने आएगा। शबनम के सम्बन्ध में सैलाब से इतना सब सुनकर उसके अन्दर एक तरह का कौतूहल जाग उठा था। फिर अकेला वह उस समय होटल मे क्या करेगा, उसकी समझ मे नही आ रहा था। उसने कमजोर आवाज मे कहा, "मैं क्या करूँगा वहाँ चलकर ? मैं ऐसी जगह कभी गया भी नहीं हूँ।"

सैलाब हँस पडा, "जिन्दगी तजर्बों से ही बनती है, आज यह तजर्बा भी साथ कर लीजिए। इसान को खतरा सिर्फ अपने से होता है, तो आप सिर्फ अपने पर काबू रखिएगा।"

कमरे मे ताला लगाकर जगतप्रकाश सैलाब के साथ निकल पडा।

शबनम की माँ ने सैलाब को देखते ही कहा, "अरे आप सलाब मियाँ! कब आना हुआ बम्बई से ? इस वक्त तो आपके आने की क़तई उम्मीद नही की थी हम लोगो ने।"

सलाब बोला, "मैंने शबनम के नाम एक चिट्ठी तो लिख दी थी कि मैं आज शाम दिल्ली पहुँचूगा और सीधा यहाँ आऊँगा।"

"शायद कोई चिट्ठी तो आई थी कल, लेकिन भला यह भी कोई बात है कि चिट्ठी लिख दी और चले आए। परसा नवाब सादुल्ला खाँ साहब ने आज यहाँ आने को कहला दिया था, वह करीब नौ बजे आएँगे। आपने तो बम्बई पहुँचकर शबनम की कोई खोज-खबर ही नही ली। यहाँ से बडे-बडे वायदे करके, बडे सब्ज बाग़ दिखाकर गये थे, लेकिन छ महीने हो गए, आपकी कोई खबर नही मिली। इस वक्त तो माफ़ी बख्शिये, कल दोपहर को किसी वक्त तशरीफ़ लाइएगा।"

सैलाब कुछ देर तक चुप रहा, फिर बोला, "पता नही कल इन्हें फुरसत

लेगी या नही।" उसने जगतप्रकाश की ओर इशारा किया, "यह हमारी फ़िल्म कम्पनी के मालिक के भतीजे हैं, मेरे साथ आए है, कल इन्हे मिनिस्टर साहब स कुछ काम है। अगली पिक्चर महीने बाद शुरू करने वाले है, इन्हे ई हीरोइन की तलाश थी, मैं इन्हे अपने साथ यहाँ लेता आया। शबनम के बारे म मैं इन्हे सब-कुछ बता चुका हूँ, यह शबनम को देखने आए है।"

सलाव की इस बात से शबनम की माँ मे जो परिवतन हुआ उससे जगतप्रकाश चकित रह गया। "ऐहै सैलाब मियाँ, तुमने अपनी चिट्ठी मे यह क्या नही लिख दिया था ?" वह जगतप्रकाश से बोली, "आइये हुज़ूर! यह सलाव मिया शायर आदमी ठहर। अगर आते ही आपका तआरुफ करा देते तो क्या हर्ज था ? चिट्ठी मे भी इन्होने आपके बारे मे कुछ नही लिखा था, वरना साज़िन्दो का इन्तज़ाम करवा रखती। क्या मीठा गला पाया है मेरी बच्ची ने! फिर ऊँची तालीम भी पाई है।"

एक झूठ, और उस झूठ से इतना अधिक परिवतन हो गया उस डायन-सी दिखने वाली अधेड औरत मे, जिसके मुख पर स्वाथ, क्रूरता, मक्कर और फरेब के भाव जगतप्रकाश को स्पष्ट दिख रहे थे। जगतप्रकाश ने उसकी बात का कोई जवाब नही दिया। शबनम की माँ ने जगतप्रकाश और सैलाब के साथ कमरे म प्रवेश किया।

पूरी तौर से सिंगार किए शबनम तकिये के सहारे बैठी हुई थी। बिजली के जगमगाते प्रकाश मे वह परी-सी दिख रही थी। शबनम की माँ ने दरवाज़े से ही कहा, "मेरी बच्ची, देख तो सैलाब मिया आए है अपने साथ फिल्म कम्पनी के मालिक को लेकर।"

अपनी माँ की आवाज सुनते ही शबनम सतक होकर उठ खडी हुई। उसने सलाब की ओर देखा या नही, जगतप्रकाश को इस पर शक हो सकता था, लेकिन जगतप्रकाश को उसन झुककर सलाम किया, "आइए हुज़ूर! मेरी किस्मत कि आप मेरे गरीबखाने मे तशरीफ लाए।" फिर उसने सलाब से कहा, "वडे वेवफा निकले आप! छ महीने बाद वापस लौटे हैं वम्बई से, मैं इस बीच आपके इन्तज़ार म तडपती रही।"

इस झूठ और फरेब की अनजानी दुनिया मे वह क्यो आ पडा ? जगतप्रकाश सोच रहा था। यह सैलाब—यह इस दुनिया को अच्छी तरह

। "बिस्तर लगा दू ? खाना डाइनिंग हॉल मे खाइएगा या अपने कमरे
"

सरदी अब काफी बढ गइ थी। जगतप्रकाश बोला, "अगर कमरे म ला
ो तो बडा अच्छा हो। पहले बिस्तर लगा दो, तब तक मैं कपडे बदल
।"

खाना खाकर जब वह उठा, उसे बडी थकावट अनुभव हो रही थी
र नींद आ रही थी। बेयरा जूठे बतन ले गया और जगतप्रकाश न कमरा
द किया। वह कमरे की लाइट बुझाना ही चाहता था कि उसे किवाडो पर
तक सुनाई दी। उसने दरवाजा खोला, सामने सैलाब खडा था।

सलाब के कपडे गुडमुडाए हुए थे और उसका पायजामा दो एक जगह
फट गया था। उसके माथे पर खून बह रहा था, हाथ पैरो पर भी चोट के
शान थे। कमरे म आकर वह एक कुरसी पर बैठ गया। जगतप्रकाश बोल
ठा, 'अरे क्या हुआ है तुम्हे ?"

'हुआ क्या, उस हरामजादे सादुल्ला खाँ से मेरी मारपीट हो गई।"
लाब ने कहा, "उसके साथ दो आदमी और थे। वह पीकर आया था।
हले तो बडी तकल्लुफाना बातचीत हुई, फिर बात बात म उससे कहा-सुनी
ो गइ, और कहा-सुनी के बाद मार-पीट। वह तीन और मैं अकेला, बुरी तरह
ारा उन सालो न।"

"शबनम ने तुम्हे बचाया नही ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

'अर, वह हरामजादी कुतिया, मुझे क्या पता था कि वह उसके रुपया
पर बिक गइ है। उससे मेरी शिकायत करने लगी कि म उसे फिल्मो के लिए
बरगलाने आया हूँ, मेरे साथ मेरी कम्पनी का सेठ भी आया हुआ है। अच्छा
हुआ जो तुम चले आए, वरना वे लोग तुम्हारे साथ भी बुरी तरह पेश
आते। अच्छा जरा मुह हाथ धो लू और कपडे बदल लू, ज्यादा चोट नही
आई है। रास्ते स टिंक्चर आयोडीन लेता आया हूँ, वह लगाए लेता हूँ।"

जगतप्रकाश को हँसी आ रही थी सैलाब की हालत पर, कुछ दुख भी
हो रहा था। उसने कहा, "यह तो बुरा हुआ, मुझे अफसोस है।"

'अरे म्याँ, अफसोस की क्या बात ! यह तो होता ही रहता है। हम
लोग मर्द बच्चे हैं, लडते हैं, झगडते है, मार-पीट करते हैं और फिर ठीक हो

जाते हैं। मैंने भी उस साले नवाबज़ादे की नाक पर जो एक घूसा म
तो ज़मीन पर औंधा गया। खुदा जाने उसकी क्या हालत होगी ! मैं म
से तीर की तरह भागा कि किसी बवाल में न फँस जाऊँ।"

एक नई तरह की मर्दानगी, एक नए तरह का साहस। उसे म
के आपस में लड़ने के दृश्य याद आए, किस तरह दो साँड लड़ते हैं कि
तरह दो कुत्ते लड़ते हैं। लेकिन उसने कोई टिप्पणी नहीं की, उसने ि
इतना कहा, "खाना तो खाओगे, भूख लगी होगी ?" और उसने घंटी बजा

बेयरा कमरे में आ गया। जगतप्रकाश ने पूछा, "कोई और क
खाली है ? साहब भी यहाँ ठहरेंगे।"

"जी हाँ, एक सिंगल बेड का कमरा अभी घंटे भर पहले
हुआ है।"

"साहब का सामान उस कमरे में पहुँचा दो, और इनके लिए
कमरे में खाना भी ले आना।" जगतप्रकाश को अब ज़ोर की नींद आ
रही थी।

१२

दिल्ली से अमृतसर जाते हुए जिस सेकण्ड क्लास कम्पाटमेण्ट म
तप्रकाश और सैलाव की बर्थें रिजव हुई थी वह चार बर्थों वाला छोटा-
कम्पाटमेण्ट था। इन दोना को एक ऊपर वाली और एक नीचे वाली
र्थ मिली थी। जगतप्रकाश ने अपना बिस्तर ऊपर वाली बथ पर
छा लिया था, सलाब के लाख मना करने पर भी। सैलाव के घुटनो मे
फी चोट आई थी, ऊपर की बथ पर चढने मे उसे तकलीफ होती। नीचे
ली दूसरी बथ किन्ही लाला सेवाराम के लिए रिजव थी, ऊपर वाली
थ खाली थी।

जब गाडी छूटने मे पाँच मिनट रह गए, सैलाब ने कहा, "हम लोग खुश-
किस्मत मालूम होते है। मेरा खयाल है नीचे वाली बथ खाली ही रहेगी,
तुम अपना बिस्तर इसी बथ पर बिछा लो। गाडी छूटने के पाँच मिनट पहले
तक सब मुसाफिरा को अपनी-अपनी सीटें ले लेनी चाहिएँ, इसके बाद जो
उन पर कब्जा कर ले, वे सीटें उनकी।"

"ठीक कहते हो।" जगतप्रकाश बोला और वह ऊपर की बथ से अपना
बिस्तर उठाने के लिए उठ खडा हुआ। गाड सीटी दे रहा था। तभी उसके
कम्पाटमण्ट का दरवाजा खुला, हाफते हुए लाला सेवाराम ने कम्पाटमेण्ट म
प्रवेश किया। उनके साथ काफी सामान था, कुछ कुली के सिर पर और कुछ
नौकर के हाथ मे। कुली से सामान रखवाकर उन्होने उसका भाडा चुकाया।
गाडी अब प्लेटफाम से रेंगने लगी थी। कुली चलती गाडी से उतर गया,
नौकर कम्पार्टमेण्ट मे रह गया।

नौकर ने उनका होल्डाल खोलकर बथ पर उनका बिस्तर बिछाया,

फिर सब सामान उसने करीने से लगा दिया। लाला सेवाराम न
के साथ अपने बिस्तर पर बैठते हुए नौकर से कहा, 'गाज़ियाबाद म
क्लास म चले जाना इसी डिब्ब म पीछे की तरफ है।' फिर वह ह
की ओर घूमे "आप लोग कहा तक चल रह ह ?"

'जी हम लो। अमृतसर जा रहे हैं कितने बजे पहुँचती है
गाडी ?" जगतप्रकाश बोला।

'सात बज सुबह। जाडे के दिना म कुछ थोडी-सी तकलीफ ता
है वहा उतरन म लेकिन बडे ठीक वक्त पर पहुँचती है। मैं भी अ
चल रहा हूँ। मेरी नींद जल्दी खुलती है, मैं आप लोगो को जगा दूँ।

तभी सल्लाव बोल उठा 'जी, शुक्रिया। और मैं आपको बतला
हूँ कि आप कहाँ जा रह हैं—लाला रामलाल कपूर क यहाँ। उनके
जसवन्त कपूर की शादी म शिरकत करन। आपका नाम लाला
मेहरा है। गलत ता नहीं कह रहा हू मैं ?'

आश्चय से लाला सेवाराम न सल्लाव को देखा। उनका उत्तर
एक छिपे हुए भय की भावना जगतप्रकाश को दिखी, 'आपको क
कि मैं कौन हूँ और कहा जा रहा हू ? आप लोग सी०आई०डी० वा
नहीं है ?'

जी हो भी सकते है नहीं भी हो सकते है, यह तो हम लोगो
अपना राज है।' बडे भोलेपन के साथ सल्लाव बोला।

जगतप्रकाश को हँसी आ गई, जी नहीं बात यह है कि हम
लाला रामलाल कपूर क लडके जसवन्त कपूर की शादी म जा रहे हैं।
आपका नाम बाहर रिजर्वेशन कार्ड पर लिखा हुआ है। चूँकि लाला राम
कपूर अमृतसर के सबसे बडे व्यापारी है और शक्ल से आप भी लख
व्यापारी ही दिखते है इसलिए हम लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि आप
उनके यहा ही जा रहे होंगे। फिर काफ़ी सामान भी तो है आपके साथ।
इतना ज्यादा सामान तो जब कोई नजदीकी रिश्तेदार के यहाँ शादी-ब्याह
जाता है तभी ले जाता है।

लाला सेवाराम कुछ देर तक उन दोनो को आश्चय से देखते रहे, फि
जोर से हँस पडे अरे वाह! तुम लोग ता पूरे एयार निकले। तुम्हारे अ

नौजवानों को तो सी० आई० डी० में होना चाहिए। अभी कल म होम के डिप्टी सेक्रेटरी से मेरी बातचीत हो रही थी, उन्हें कुछ ़, ज़हीन और पढे लिखे लोगों की जरूरत है सेंट्रल इण्टलिजेंस सर्विस ह जो चल रही है, मुमकिन ह हिन्दुस्तान म कुछ गडबडी हो, तो म्लिजेंस डिपाटमट को वढाना होगा। क्या समझे ?'
'जा समझा यह कि दिल्ली के डिप्टी होम सेक्रेटरी से आपकी दोस्ती है।"
ने अपने मुख पर कडुआहट लाते हुए कहा, "और लाला, म अंग्रेज़ों ल्खा हूँ नहीं, मैं तो कौमी शायर हूँ। अगर आप मुझे वह क्या कहते शा, याद आ गया जी, तो अगर आप मुझे कम्युनिस्ट कह दें तो आप ा ज्ती नहीं करेंगे। अगर आप भी उतने ज़हीन होते जितने हम लोग । आप महज इस बात से कि हम लोग जसवन्त कपूर के दोस्त है सब- समझ गए होते।"
लाला सेवाराम को सलाब की इस बात पर बुरा मान जाना चाहिए था वे ज़हीन नहीं ह लेकिन उसकी बात पर बुरा मानने के बजाय वे परेशानी ह गए। कुछ सोचकर उन्होंने पूछा, "जसवन्त जसवन्त तो क्या तुम लोगों का मतलब यह है कि वह कम्युनिस्ट है!"
इसके पहले कि सैलाब कुछ ऊट-पटांग जवाब दे, जगतप्रकाश बोल ा, 'लालाजी, यह आपसे मज़ाक कर रहे ह। हम लोग कम्युनिस्ट-वम्यु- स्ट कुछ भी नहीं हैं। यह उर्दू के शायर है सलाउद्दीन सलाब और इनके ालिद मियाँ जियाउद्दीन लाहौर के अच्छे खासे ज़मींदार ह, और मैं कांग्रेस- ा हूँ लाला देवराज मुझे अच्छी तरह जानते है।"
लाला मयाराम ने कुछ सोचकर कहा, 'तुम लोगों की बात पर भरोसा हो होना। मैं इतनी उम्र का आदमी—तुम लोगों के वालदैन की उम्र का, । मुझसे यह मज़ाक क्या करें। ? मैं जानता हूँ कि जसवन्त निहायत आवारा ल्म के लोगों की सोहबत म था। मैं उसका सगा मामा हूँ—लाला सेवा- राम मेहरा। मेहरा एण्ड कम्पनी दिल्ली की मशहूर फर्म है, कपडे का काम, ोपर का काम, बिसातखाने का काम, स्टेशनरी का काम—कौन-सा काम है जो हमारी कम्पनी से छूटा हुआ है ? क्या समझे ? रामलाल नराताल ल्म न आर हमारी हैसियत ज्यादा नहीं है तो बहुत छोटी भी नहीं है। तो यह

जसवन्त दिल्ली मे रहता था दरीवे के एक गन्दे-से मकान म, और [illegible]
झाकने भी न आता था। कभी चलते-फिरते मुलाक़ात हो जाती था [illegible]
तौर से वात न करता था। भगवान् जाने क्या देखकर दवराज ने [illegible]
दामाद वनाना मजूर किया। तुम लोग उस जसवन्त क दोस्त हो, [illegible]
लोगा पर भरोसा किसी हालत म नही किया जा सकता। क्या [illegible]
लाला सेवाराम अपने नौकर की ओर घूमे, "खाना निकालो!"

फिर इन लोगो की ओर घूमकर वह बोले, "क्या वतलाऊ, [illegible]
मिल गई, यही क्या कम है! मैं सीधे अपने ऑफ्स से चला आ रहा [illegible]
जाने की फुरसत तक नही मिली। क्या समझे? बहुत बड [illegible]
मामला था। तुम लोगो ने तो शायद खाना खा लिया होगा!"

सैलाब ने उत्तर दिया, "खाना तो नही खाया, शाम के वक्त [illegible]
नाश्ता कर लिया था। सोचा था कि यहा स्टेशन पर खाना खा लेंगे, [illegible]
चूकि पेट भरा था इसलिए खाना मँगाने की फिक्र ही नही की।"

"तो फिर तुम लोग भी मेरे साथ खाना खा लो। ढेर खाना [illegible]
दिया है उस महाराज के बच्चे ने। तुम लोग जैसे जसवन्त के मेहमान [illegible]
मेरे मेहमान हो, तकल्लुफ करने की कोई ज़रूरत नही।"

नौकर ने टिफन-वॉक्स से तीन प्लेटे निकाली। तीन चार तरह [illegible]
सब्ज़ियाँ, पूडी, अचार। तभी सैलाव उठ खडा हुआ। उसने अपने [illegible]
से स्काच की वह बोतल निकाली जो कुलसुम ने उसको चलने के वक्त [illegible]
थी। आधी बोतल ही वह अभी तक खत्म कर सका था। "जी बडी सर [illegible]
आपको कोई एतराज़ न होगा लालाजी, अगर मैं थोडी-सी ल लूँ [illegible]
शायद पीते न होंगे? वैसे आपके लिए भी हाज़िर है।"

ह्विस्की की वोतल देखते ही लाला सेवाराम के मुख पर एक [illegible]
गई 'वैसे मैं पीने का आदी तो नही हूँ, लेकिन इस कारवार क सिलसि[illegible]
लोगो को पिलानी पडती है। य अंग्रेज़ लोग तो विना शराव पिए खान[illegible]
नही खाते। जव दूसरो को पिलाता हूँ तव मुझे भी उनके साथ पीनी [illegible]
है। वाक़ई वडी सरदी है," और नौकर से उन्होंने कहा, "तीन [illegible]
निकालो!"

जगतप्रकाश वोला, "दो गिलास काफी होंगे, मैं शराव नही पीता[illegible]

...बाद आ गया था। नौकर से उन्होंने सोडे की चार बोतलें ...र, फिर उन्होंने नौकर को आदेश दिया, "मेरठ आने पर आ जाना, ...म सर्वेण्ट्स कम्पाटमेट म जाकर बैठो।"

...राब के दौर चल रहे थे और लाला सेवाराम अब मौज मे आ रहे थे। ...कद के माटे-से आदमी। घनी मूछे, जो खिजाव से काली थी। सलवार, ...गले का कोट, सिर पर तुर्रेदार पगडी। उनकी अवस्था लगभग पचास ...की रही होगी। गोरा रग, गालो पर स्वास्थ्य की लालिमा। हँसते हुए ...बोले, "यह जग! हम व्यापारियो के लिए तो यह वरदान के तौर से ...करता है। पिछले चन्द महीनो मे भगवान् झूठ न बुलाए, करीब चार ... रुपयो का मुनाफा हुआ है। क्या समझे!"

..."चार लाख का मुनाफा!" सलाब ने आश्चर्य से पूछा, "इतने थोडे से ...म चार लाख का मुनाफा! ताज्जुब की बात है!"

..."इसम ताज्जुब की क्या बात है? विलायती का माल आना बन्द हो ...है। तिजारती जहाजो को जमनी डुबो रहा है—बडा ज़ालिम है। ...तर जहाज जगी सामान लाने मे जुटे हुए हैं।" फिर वह जगतप्रकाश ...ओर घूमे, "यह सलाब, भला यह क्या तिजारत करेंगे? एक तो शायर, ...मुसल्मान! हाँ, तुम शक्ल से समझदार आदमी मालूम होते हो। इस ...जितना भी विलायती माल कानर कर सकते हो, कर लो। तीन महीने ...रकम दूनी हो जाएगी। यही नही, यह मौका है जबकि बेतहाशा रुपया पैदा ...या जा सकता है। मिलिटरी कान्ट्रेक्ट्स हो रहे, रकम लगाने की भी ...रत नही है। मिलिटरी सप्लाइज के इन्चाज ब्रिगेडियर जेनकिंस से मेरी ...खा-खासी दोस्ती है। मेरे साथ दिल्ली लौटना, उनसे तुम्हारी मुलाकात ...रवा दूगा। कुल पाँच परसेण्ट उसे देना होगा, पचीस परसेण्ट का मुनाफा ...समझो। क्या समझे? पेमेट पेशगी हो जाएगा। अभी उसीसे बात करने म ...इतना वक्त लग गया। पचास हज़ार एम्यूनिशन बूटो का कान्ट्रेक्ट साइन ...ना है छ लाख रुपये मे। इसको दे दिवाकर और अपना खर्चा निकालकर ...रीब एक लाख रुपया साफ बच जाएगा। डेढ लाख रुपया पेशगी मिल ...या है मुझे—एक पैसा पास से नही लगाना पडेगा। क्या समझे?"

जगतप्रकाश ने रूखे स्वर मे कहा, "सब-कुछ समझ गया, लेकिन मैं

व्यापारी नही हूँ, और व्यापारी बनना भी नही चाहता। मैं
वाला आदमी हूँ।" जगतप्रकाश अपने विचारो मे डूब गया।

युद्ध हो रहा है, लाखो आदमी मर रहे हैं। विधवाए, अनाथ, दुख
रो रहे है, बिलख रहे हैं। समाज का एक वर्ग इस अमानवीय न
हत्या-काण्ड पर प्रसन्न है। इस पर पनप रहा है, जश्न मना रहा है।
फिर एक बार गौर से लाला सेवाराम को देखा, कितना खूंखार
दिख रहा था उसका चेहरा! घनी काली मूछें, बडी बडी आखें
कारण दहकने लगी थी और मुख पर एक तरह की कठोरता।
याद हो आई सेवाराम की आखो मे भय की वह झलक, जो उसने
देखी थी। उसके मुख पर एक मुसकराहट आ गई। यह खूंखार
आदमी डरता भी है यह हँसने और मौज करने वाला आदमी, इसके
एक चालाकी है जो रक्षात्मक कही जा सकती है, जो उसके
दुर्बलताओ की द्योतक है।

और तब सैलाब ने कहा, खाना खा लिया जाए, रात काफी हो
अमृतसर स्टेशन पर जसवन्त स्वय जगतप्रकाश को लेने आ
जसवन्त ने लाला सेवाराम से कहा, "वाह मामाजी, हम लोग तो
रास्ता देखते-देखते थक गए। मामीजी आपसे बेतरह नाराज हैं, जरा
कर जाइएगा उनके सामने!"

कुछ मुसकराते हुए लाला सेवाराम बोले, "उस उल्लू की पट्ठी
बेकार बिगडने की आदत है। कल शाम को एक लाख रुपया
सौदा पक्का किया है। क्या समझे!"

'सब-कुछ समझ लिया है। अब घर चलिए तो आटा-दाल
मालूम होगा।' जसवन्त ने भी मुसकराते हुए कहा, फिर वह सैलाब
घूमा, तुम्हारे आने की उम्मीद तो मैंने छोड दी थी सैलाब साहब।
राम को लिखा था कि तुम्हारा टिकट कटाकर भेज दें, लेकिन
ही नही। आज ही उसकी चिट्ठी मिली है कि बम्बई का लाड
हो गए हो। क्या बिना टिकट सफर किया है तुमने?"

बिना टिकट सफर करने वाले पर लानत! देख रहे हैं आप
क्लास मे बम्बई से अमृतसर आ रहा हूँ ठाट के साथ। कुछ

। दिया था। अब अमृतसर के बाद आपका जिम्मा।" सैलाव ने बडी
रतापूवक उत्तर दिया।

जसवन्त ने अव जगतप्रकाश का हाथ अपने हाथ मे ले लिया, "तुम्हारे
स मुझे कितनी खुशी हुई है, मै कह नही सकता। अपने दोस्तो के ठहरने
तजाम मैंने अपने सिविल लाइन्स के बँगले पर किया है।" फिर लाला
राम से वह बोला, "मामाजी, आप तो हवेली चलिए, मोटर बाहर
है। मैं इन लोगो को सिविल लाइन्स के बँगले मे ठहराकर वापस
ता हू।"

सिविल लाइन्स के बँगले म जो लोग ठहरे थे उनमे से अधिकाश को
प्रकाश न त्रिपुरी काग्रेस के अधिवेशन मे जसवत के साथ देखा
व अध्यापक थ, डॉक्टर थे, वकील थे। एक छोटे-से कमरे म प्रवेश
हुए जसवन्त ने कहा, 'त्रिभुवन मेहता आज दोपहर के वक्त कानपुर
आएँग। तुम्हारे और त्रिभुवन के लिए मैंने यह कमरा ठीक कर दिया
सलाव साहब, आप तो मेरे साथ हवेली म चलकर ठहरिए।"

"जी नही, मैं यही ठहरूँगा। मुझे आपके छोटे भाई रजीत से वडा डर
लगता है। एक चारपाई और इस कमरे के एक कोने मे डल्वा दीजिए।"

त्रिभुवन मेहता दोपहर मे नही आया, उसका तार मिल गया था कि
दिल्ली म रुक गया है और रात की गाडी से आएगा। दिन मे खाना
कर जगतप्रकाश अमृतसर नगर मे घूमने निकल गया। जलियावाला बाग,
जहाँ जनरल डायर ने भयानक हत्याकाड किया था, चारो ओर मकानो से
घिरा हुआ था। उन मकानो की दीवारो मे गोलियो के दाग अभी तक
मौजूद थ। फिर वह अमृतसर के स्वण मन्दिर म गया। सिक्खो का यह पवित्र
तीर्थ-स्थान और वहा उतना वैभव! इन सिक्खो ने मुगल साम्राज्य को मिटा
दिया था, इन सिक्खो ने कश्मीर, अफगानिस्तान जीता था। इसके बाद
वैभव क फेर म य पड गए। सोने से अपना मन्दिर बनवाया, और धीरे धीरे
अंग्रेजो के गुलाम बन गए।

जिस समय जगतप्रकाश घूमकर वापस लौटा शाम हो रही थी। बँगले
के फाटक पर ही उसे जसवन्त मिल गया जो अपने अतिथियो के साथ चाय
पीने आया था। उसने जगतप्रकाश का परिचय अन्य अतिथियो से कराया।

ये सब अतिथि अपने को बौद्धिक कहते या समझते थे। उनके अपने निजी राजनीतिक विचार थे, अपना राजनीतिक दर्शन था। वे तर्क करते थे ऊँची आवाज में, और विदेशी विचारकों का हवाला देते थे। जगतप्रकाश ने अनुभव किया कि उनमें से हरेक में कहीं-न-कहीं उलझन है। उन्होंने अध्ययन किया था, और अध्ययन के फलस्वरूप सारा ज्ञान अर्जित या उधार का ज्ञान था। उनमें अधिकांश सम्पन्न लोग थे, त्याग और सेवा का जामा पहने हुए। वे गरीबों का उपकार निकले थे, उपकार करने के लिए, और अपनी उदार भावना का प्रदर्शन था। वे सम्पन्न थे, समर्थ थे, साहसी थे, उन्हें भगवान् को प्रसन्न करना था, अपने अहम् को तुष्ट करना था। वे बड़े आत्मविश्वास से बातें करते

जगतप्रकाश को अनुभव हो रहा था कि वे उससे दूर, बहुत दूर दुनिया के आदमी हैं। जगतप्रकाश के अन्दर कहीं एक तरह की हीनता की भावना थी। वैसे उनमें शायद किसी को जगतप्रकाश की वास्तविक आर्थिक परिस्थिति की जानकारी नहीं थी, सम्भवतः जसवन्त कपूर तक को नहीं। जगतप्रकाश के वस्त्रों में, उसके रहन-सहन में कुलसुम के साथ समय के कारण कोई भी ऐसी कमी न थी जिससे वे जगतप्रकाश को अपने से हीन समझते। लेकिन दो-तीन आदमी वहाँ ऐसे भी थे जिनके प्रति लापरवाही की उपेक्षा-सी थी। यह उपेक्षा सामाजिक व्यवहार में विनय से भरे शिष्टाचार और सहानुभूति का रूप धारण कर लेती थी। यह सहानुभूति और शिष्टाचार कितने अपमानजनक होते हैं जगतप्रकाश को इसका बोध तक न होता यदि जमील से उसने पहले कभी बातें न की होतीं।

त्रिभुवन रात के समय आ गया लेकिन वह कुछ उखड़ा-उखड़ा-सा दिख रहा था। सम्भवतः वह काफी थका हुआ है, जगतप्रकाश ने सोचा। थोड़ी-सी औपचारिक बातचीत, और फिर दूसरे दिन सुबह से ही बारात चलने की तैयारी होने लगी। यह बारात ट्रेन से न जाकर मोटरकारों से चली, प्रायः सौ मोटरों का समूह। जगतप्रकाश इस वैभव के प्रदर्शन से आश्चर्यचकित-सा रह गया। सड़कों पर खड़ा जनसमूह इस बारात को विस्फारित नयनों से देख रहा था। जिस कार में जगतप्रकाश था उसमें त्रिभुवन मेहता और सैलाब भी थे। पीछे की सीट पर त्रिभुवन मेहता और

काश थे, आगे ड्राइवर के बगल वाली सीट पर सैलाब था। एक सिग-
रगाते हुए त्रिभुवन ने जगतप्रकाश से पूछा, "क्या कानपुर मे माता-
नाम के कोई तुम्हारे रिश्तेदार है?"
"क्या, क्या बात है?" जगतप्रकाश ने पूछा। उसके मन मे एक तरह
की उत्सुकता हो गई थी, "तुम कैसे जानते हो उन्हे?"
सिगरेट का एक लम्बा कश लेते हुए त्रिभुवन मेहता बोला, "मै तो
कभी नही मिला, रूपलाल नाम का एक आदमी आया था मेरे पास।
पलाल को तो तुम जानते ही हो, पुलिस का सब इसपेक्टर है, शायद
आइ० डी० का आदमी है। वह कहता था कि माताप्रसाद तुम्हारे बडे
के रिश्तेदार है, मैं उनकी जमानत कर दू गैरिक एण्ड ब्रदर्स फर्म के
में। वह जमन फ़र्म है—पश्चात का मामला। तो मैंने उसे कहा कि
ना पिता से पूछे कुछ नही कर सकता। तुम तो समझते होगे कि हमारी
पिताजी की है, वही मनेजिंग डाइरेक्टर है। मैं बिना उनसे पूछे कोई
नही करता।"
जगतप्रकाश बोला, "तुमने ठीक ही किया। रूपलाल ने मुझसे कहा
लेकिन मैंने उसे मना कर दिया था कि वह तुमसे या किसी से इस तरह
अपमानन न कराए। मामला कोर्ट में है, वह खुद-ब-खुद सुलझ जाएगा।"
त्रिभुवन कुछ सोचता रहा, फिर उसने धीमे स्वर मे कहा, "शायद
इधर हाल की घटनाओ की खबर नही है।"
जगतप्रकाश के अन्दर वाली आशंका ने एकाएक भय का रूप धारण
लिया, फिर भी उसने बडे प्रयत्न से सुव्यवस्थित रहते हुए कहा, 'मैं तो
करीब दस दिन से बाहर हूँ। क्या, क्या बात है, क्या हुआ?"
'चार-पाँच दिन हुए 'गैरिक एण्ड ब्रदर्स' फर्म के ऑफ़िस की सील टूट
और शायद आफ़िस के अन्दर रखा हुआ कुछ रुपया गायब हो गया।
उसके एक दिन पहले वह माताप्रसाद गिरफ्तार हो गए। परसो मैंने
ऑफ़िस में यह खबर सुनी थी। मुझे बडा अफसोस है कि मैं उनकी
मदद नहीं कर सका।' यह कहकर त्रिभुवन मेहता अपनी तरफ वाली
खिडकी से बाहर देखने लगा।
जगतप्रकाश को लगा कि वह त्रिभुवन मेहता की नजर में बहुत नीचे

गिर गया है। जगतप्रकाश सिर झुकाकर बैठ गया। माताप्रसा
अब उसकी आखो के सामने आ गया—निरीह, विवश, सघपरत,
माताप्रसाद का वह चित्र जिसे उसने कुछ दिन पहले देखा था।
नाम का एक शैतान उस माताप्रसाद को पतन की ओर प्रेरित कर
और इस पतन की प्रेरणा तभी यमुना की तसवीर उसकी आँखों
आ गई। त्याग, बलिदान, आत्मोसर्ग की प्रतिमा यमुना, जिसे
परम्पराओ ने उसके उच्च पद से ढकेलकर माताप्रसाद के पतन का
बना दिया है। यह समाज! क्या वह स्वय उस समाज का
जिसने यह सब किया है? जगतप्रकाश के साथ यमुना का विवाह
लिए ही तो माताप्रसाद को रुपयो की आवश्यकता थी। इस हिसाब
सबसे मूल अपराधी वह स्वय है। जगतप्रकाश के अन्दर एक
जाग उठी थी। माताप्रसाद की सारी दुश्चिन्ता का कारण वह था,
प्रसाद के पतन का कारण वह है।

बरात किस समय लाहौर पहुँची, कहा ठहराई गई,
को जैसे इस सबका कोई पता न था। उसका शरीर तो काम कर
यन्त्र के समान लेकिन उसकी चेतना केवल माताप्रसाद और
केन्द्रित हो गई थी।

जनवासे मे एक बडे-से हॉल मे करीब बारह पलग बिछे थे
पलगो मे एक पलग जगतप्रकाश का था। जगतप्रकाश को केवल
का पता था। यन्त्र की भाँति उसने जनवासे मे स्नान किया, भोजन
और यन्त्र की भाति वह अपने पलग पर आकर बैठ गया।

करीब तीन बजे जसवन्त कपूर अपने सगी-साथियो की खोज-खबर
आया। जगतप्रकाश चुपचाप गुम-सुम बैठा था। जसवन्त ने जगत
मुद्रा देखकर पूछा, अरे क्या बात है? तबीअत तो ठीक है?
लेकिन जैसे जगतप्रकाश ने जसवन्त कपूर की बात सुनी हा
उसी तरह चुप बैठा रहा।

त्रिभुवन महता का पलग जगतप्रकाश के पलग के पास ही
उसने कहा, 'सुबह इन्होंने शायद कोई अप्रिय खबर सुनी है।'
त्रिभुवन महता की यह बात जगतप्रकाश के अन्दर तीर-सी

एक उसकी चेतना वापस लौट आई। उसने मुसकराने का प्रयत्न करते कहा, "मुसीबतों का ही समूह है यह दुनिया। मेरी तबीअत बिलकुल है, मन थोड़ा-सा जरूर भारी है।" उसने पलग से उठते हुए जसवन्त से , "जब इस कमरे म सबसे मिल लो, तब मैं अकेले मे तुमसे पाच मिनट त करना चाहता हू।"

कुछ उलझन मे जसवन्त ने कहा, "यहा मैं सब लोगो से मिल चुका हूँ, ओ मेरे साथ मेरे कमरे म।"

जगतप्रकाश ने अपने सूटकेस से वह अँगूठी निकाली जो उसे कुलसुम ने मिष्ठा का उपहार म देने को दी थी। जसवन्त के साथ उसके कमरे मे हुचकर उसने कहा, "मुझे बहुत ज़रूरी काम से आज रात को ही यहा से चल ना है। रात दस बजे जो मेल जाता है वह मुझे मिल जाएगा। मुझे क्षमा रना कि मैं कल के कायक्रमो म सम्मिलित नही हो सकूगा।"

'मैं जानता हूँ, त्रिभुवन ने कल रात स्टेशन पर ही मुझे बतलाया था कि सके पेट म बात पचती नही। लेकिन इस सबमे तुम क्या कर सकते हो? स तरह की बाते तो होती ही रहती है। यह माताप्रसाद क्या तुम्हारे कोई हुत नज़दीकी रिश्तेदार है? कल रात की गाडी से चले जाना।"

तो त्रिभुवन ने यह बात जसवन्त से भी कह दी, कितना नीच आदमी है यह! उसने जगतप्रकाश को जसवन्त कपूर की नज़र म भी गिराने का यत्न किया है। कटुता भरे स्वर मे जगतप्रकाश बोला, "हा, यह माताप्रसाद मेरे होने वाले ससुर है। त्रिभुवन की नज़र मे हम लोग बहुत गिरे हुए आदमी हैं।'

जसवन्त मुसकराया, 'इसलिए कि तुम्हारे होने वाले ससुर पकड गए? वह पकडे इसलिए गए कि उनमे इतनी बुद्धि और इतना साहस नही है कि वह सफल अपराधी बन सकें। बस इतनी-सी बात! इसमे इतना दुखी होने की कोई जरूरत नही। तुम जानते हो, इस त्रिभुवन के काका ने न जाने कितनो को धोखा दिया, न जाने उसने कितनो को तबाह किया। उनके साथ कारबार करने म लोग घबराते है। फिर भी वह बडा इज्ज़त वाला है।"

'लेकिन लेकिन यह गिरफ्तार होना, यह सजा भुगतना!" जगत-प्रकाश कराह-सा उठा।

"जाओ और कोशिश करो। तुम्हारे ससुर निरपराध हैं, मुझे ... लगता है कि वह बच जाएँगे। लेकिन अगर वह न भी बचे तो इसमें ... छोटा करने वाली कोई बात नहीं है। यह दण्ड पाना, यह जेल जाना अपराध का नहीं, गरीबी का अभिशाप है। मैं अब तुम्हें नहीं ... तुम्हारी मन स्थिति मैं समझता हूँ। अगर तुम्हारा मन यहाँ न लगे तो आज रात को ही चले जाओ।"

जगतप्रकाश को अपने मन के ऊपर से एक भार-सा हटता हुआ ... हुआ। उसने कुछ रुककर कहा, हाँ, मुझे एक बात कहनी थी। कुल्सुम ... तुम्हारी पत्नी के लिए एक उपहार भेजा है। मुझसे उसने कहा था कि ... ओर से मैं वह उपहार शर्मिष्ठा को दे दूँ। मुझे तो आज रात ... जाना पड़ रहा है इसे तुम दे देना।' जगतप्रकाश ने वह अँगूठी ... को दे दी।

जसवन्त उस अँगूठी को देखते ही चौंक उठा। अपने हाथ में वह अँ... लेकर थोड़ी देर तक देखता रहा, उसके मुख पर असीम व्यथा जैसे ... आई हो, फिर उसने बहुत धीमे और लड़खड़ाते स्वर में कहा, 'तो यह अँ... यह अँगूठी और फिर उसके मुख से कोई शब्द नहीं निकला। उसने ... अँगूठी अपने सूटकेस में रख दी। उदास स्वर में उसने जगतप्रकाश से ... 'मैं यह अँगूठी शर्मिष्ठा को दे दूँगा कुल्सुम की ओर से। कुछ अजीब-सा ... ज़रूर लगेगा, लेकिन मैं दे दूँगा। तुम कुलसुम को लिख देना।"

दूसरे दिन करीब साढ़े चार बजे शाम को जगतप्रकाश कानपुर स्टे... पर उतरा। उसे माताप्रसाद के मकान का पता मालूम था, यद्यपि उ... उनका मकान पहले कभी नहीं देखा था। ग्वाल टोली में एक गली के अ... एक छोटा-सा मकान, शाम के धुँधले प्रकाश में उसने देखा कि उस मका... के दरवाज़े पर माताप्रसाद के नाम की एक पट्टी लगी है। घर का दरवाज़ा अन्दर से बन्द था, जिसका अर्थ था कि घर खाली नहीं है। उसने कुण्डा ख... खटाइ। थोड़ी देर में दरवाज़ा खुला और उसे एक आवाज़ सुनाई पड़ी, 'कौन? अरे आप।'

सामने यमुना खड़ी थी, उदास, हतप्रभ। उसकी आँखों में असीम ... थी। जगतप्रकाश बोला, 'हाँ लाहौर से आ रहा हूँ, शाम की गाड़ी से ...

वहा मैं अपने एक दोस्त के विवाह म गया था। तो वही तुम्हारे बाबूजी खबर सुनी। खबर सुनते ही मैं चल दिया वहाँ से। कहाँ हैं वे ?"

इस बीच बुढिया-सी दिखने वाली एक प्रौढा स्त्री यमुना के बगल मे र खडी हो गई थी। उसने सहमी आवाज मे जगतप्रकाश से पूछा, "तुम ा हो ? क्या काम है उनमे ?"

उस स्त्री को जगतप्रकाश ने पहले कभी न देखा था, पर वह समझ गया वह यमुना की माता है। उसने उस स्त्री को हाथ जोडकर नमस्ते करते कहा, "मैं जगतप्रकाश हूँ। बाबूजी की खबर सुनकर दौडता हुआ चला या हूँ। कहाँ हैं वे ?"

बुझी हुई आवाज म यमुना की मा ने कहा, "है तो वे घर म ही। कल मानत हो गई, लेकिन बीमार हैं। अन्दर आओ!"

कमरे म माताप्रसाद अपने घुटनो पर सिर रखे बैठे थे। यमुना की माँ ने हा, 'देखो तो! यह जगतप्रकाश तुम्हे देखने आए है।"

मानो माताप्रसाद ने अपनी पत्नी की बात सुनी ही नही, वह उसी प्रकार चाहीन-से बैठे रहे। तभी यमुना की आँखो से दो आँसू टपक पडे, देख रहे हैं आप। कल से इसी तरह बाबूजी चुपचाप बैठे है। खाया पिया छ नही, रात भर जागते रहे है। आप इन्हे पुकारिये, शायद आपकी बात नें।'

जगतप्रकाश ने कहा, "बाबूजी, म जगतप्रकाश आया हूँ। जरा इधर खिए।"

जगतप्रकाश की आवाज सुनकर माताप्रसाद ने सिर उठाया, थोडी देर क वे पथराई आँखो से जगतप्रकाश को देखते रहे, फिर उन्होने कमजोर वर म कहा, 'तुम्हे भी यह खबर मिल गई। पाप छिपाए नही छिपता।"

आपने कोई पाप नही किया, आप पाप कर ही नही सकते।" जगत-काश बोला, 'ज्यादा-से-ज्यादा यही कहा जा सकता है कि आपसे ग़लती हो गई।"

माताप्रसाद ने फिर अपनी आँखें झुका ली, "नहीं, सच को नजरअन्दाज कैसे किया जा सकता है ? और सच यह है कि मैं गिरफ्तार हुआ, मैं दो दिन हवालात म रहा, कल दोपहर को मैं जमानत पर छूटकर आया हूँ।

मुझ पर मुकदमा चलेगा, मुझे सजा होगी, और दुनिया मुझसे, मेरे बच्चों से नफरत करेगी।" जगतप्रकाश ने देखा कि माताप्रसाद की आंखों मे आंसू भरे हैं।

यमुना ने उस कमरे में एक कुरसी डाल दी। जगतप्रकाश उस कुरसी पर बैठ गया। उसने कहा "इस तरह निराश होने और जी छोटा करने से काम नही चलेगा। यही क्या तय है कि मुकदमे में जुर्म आप पर साबित होगा और आपको सजा हो जाएगी। मेरा मन कहता है कि आप बरी हो जाएंगे। मुझे असली हालत का पता नही है।"

जब यमुना की मां बोली, 'यह छूट जाएंगे। बस्ती में लाए गए है वह और रूपलाल दोनों ही वह रहे थे। इन्हें दफ्तर का ताला किसी ने नही देखा, सिर्फ शक भर है क्योंकि दफ्तर की तिजोरी में से बीस हजार रुपए गायब हैं। उस तिजौरी की एक चाभी सरकार के पास और दूसरी चाभी इनके पास है। लेकिन घर की तलाशी होने पर वह घर में नही मिला।"

बड़ी करुण दृष्टि से माताप्रसाद ने जगतप्रकाश को देखा, "यह कहती है। रुपया मैंने रूपलाल के पास रखवा दिया था, या यह कहूं कि रूपलाल ने रुपया खुद ले लिया था यह कहकर कि शायद मेरे घर की तलाशी हो। लेकिन इससे क्या ? जुर्म तो मैंने किया है। मैं चोर हूं, मैं पापी हूं।" एकाएक माताप्रसाद फूट फूटकर रोने लगे।

'आपने चोरी नही की आपने पाप नही किया। यह सब आपसे करवाया गया है—मैं इस बात का साक्षी हूं। आप निरपराध हैं।" जगत बोला।

तुम ऐसा समझते हो, वाकई तुम ऐसा समझते हो या मुझे दिलासा दे रहे हो ? रूपलाल ने मुझे सलाह भर दी थी, उसने मुझे यह सब करने को मजबूर नहीं किया था। मैं कैसे तुम्हारी बात मान लूं ?"

यमुना अपने पिता की चारपाई पर बैठ गई, उसने अपने पिता का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'यह ठीक कहते हैं बाबूजी। आपने कोई अपराध नही किया। चाचाजी का कहना है कि आप छूट जाएंगे।" यमुना जगतप्रकाश की ओर घूमी, 'चाचाजी परसों बस्ती में आए थे।

ने ही तो बाबूजी की जमानत करवाई है। अभी वह यहाँ के सबसे बड़े [illegible]दारी के वकील मिस्टर शर्मा के यहाँ गये हैं। शर्मा साहब ने विश्वास [illegible]या है कि बाबूजी साफ छूट जाएँगे।"

माताप्रसाद ने एक ठंडी सांस ली, "इस जेल से तो छूट जाऊँगा, लेकिन [illegible]दुनिया ही जो जेल है, उससे कैसे छूटूंगा? जिन्दगी हथकड़ियों और [illegible]यों से जकड़ी हुई है। कहीं भी आजादी नहीं है, इन्सान की हरेक हरकत [illegible] जकड़न में कसी है। तो इस दुनिया की जेल से छुटकारा कब मिलेगा?" [illegible] कुछ चुप रहकर उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखा, "यह आए [illegible]नके खाने पीने का भी तो कुछ इन्तजाम करो जाकर। मदद के लिए [illegible]ना को साथ लेती जाओ।"

माताप्रसाद अकेले में जगतप्रकाश से कुछ बातें करना चाहते थे। यमुना [illegible]र यमुना की मां के जाने के बाद उन्होंने कहा, "सच बतलाना। मौजूदा [illegible]लात में तुम्हें मेरी बेटी से शादी करने में कोई एतराज तो नहीं होगा?"

'बिलकुल नहीं। आप इस चिन्ता को अपने मन से निकाल दीजिए।"

माताप्रसाद के मुख पर संतोष की एक भावना आ गई, उन्होंने बहुत [illegible]ीमे स्वर में कहा, "मैं जल्दी-से-जल्दी यमुना के हाथ पीले करना चाहता [illegible]ा। तुम्हारी बहन को मैंने जबान दे दी थी। देर करने में नुकसान हो [illegible]कता है। रूपलाल ने मुझे बतलाया था कि बैरिस्टर बसगोपाल अपनी लड़की [illegible]की शादी तुम्हारे साथ करने की सोच रहे हैं, शायद वह इसीलिए मेरा मामला उलझाये हुए हैं। है न यह बात ठीक?"

"आधी बात सच है और आधी बात झूठ है।" जगतप्रकाश बोला, '[illegible]बसगोपाल जरूर चाहते हैं, लेकिन मैं नहीं चाहता। बिना मेरे चाहे वे कैसे [illegible]ादी कर सकते हैं। आपका मुझ पर भरोसा होना चाहिए था।"

'यही तो मुसीबत है। दुनिया में किसी का भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि दुनिया का कोई इन्सान अपने ऊपर भरोसा नहीं कर सकता।" माताप्रसाद ने कुछ चुप रहकर कहा, "अच्छा मान लो इस मुकदमे में मुझे सजा हो जाती है, तब भी क्या तुम मेरी बेटी के साथ शादी कर लोगे? याद रखना कि उस हालत में तुम्हारी बहन इस शादी की मुखालिफत करेंगी। तुम्हारे दूसरे नाते-रिश्तेदार इस शादी की मुखाल्फित करेंगे, तुम्हारे

दोस्त अहबाब इस शादी की मुखालिफत करेंगे। ज़रा सोच-समझकर जवाब देना।"

जगतप्रकाश ने दृढ़ता से भरे स्वर में कहा, "मैं आपको वचन देता हूँ कि उस हालत में भी मैं आपकी बेटी से शादी करूँगा। अच्छा आप लेट जाइए और आराम कीजिए।"

प्रसन्नता की एक लहर दौड़ गई माताप्रसाद के सारे शरीर में, वह उठकर खड़े हो गए। फिर जगतप्रकाश के चरणों पर झुककर उन्होंने कहा, "तुमने मुझे उबार लिया, मुझे उबार लिया! अब मेरे अन्दर किसी तरह की कमजोरी नहीं रह गई, और मैं अब यकीनन कह सकता हूँ कि मैं छूट जाऊँगा, मैं छूट जाऊँगा।"

जगतप्रकाश ने माताप्रसाद को अपने चरणों से उठाया, "यह आप क्या कर रहे हैं? आप यमुना के पिता हैं और इस रिश्ते से आप मेरे पिता हुए। अब आप आराम कीजिए।" यह कहकर उसने माताप्रसाद को उनके बिस्तर पर लिटा दिया। लेटते ही माताप्रसाद बोल उठे, "नहीं, मुझसे लेटा नहीं जाएगा, मेरे सीने में दर्द हो रहा है।" यह कहकर वह बल लगाकर फिर बैठ गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने कमज़ोर स्वर में कहा, "यह दर्द बढ़ता ही जा रहा है, बड़ी उलझन हो रही है मुझे। लगता है मैं बेहोश हो जाऊँगा।"

उस जाड़े की शाम के समय माताप्रसाद के माथे पर पसीने की बूँदें आ गई थीं। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और एक कँपकँपी-सी उनके सारे शरीर में दौड़ गई थी। जगतप्रकाश घबरा गया, उसने आवाज़ दी, "यमुना! अपने बाबूजी को सँभालो आकर। इनकी तबीयत बहुत खराब हो गई है।"

उसकी आवाज़ के साथ यमुना और उसकी माता के साथ रामसहाय और रूपलाल ने भी कमरे में प्रवेश किया। ये दोनों उस समय तक मिसेज़ शर्मा के यहाँ से लौट आए थे। रामसहाय ने अपने भाई की हालत देखकर कहा, 'रूपलाल! जल्दी से किसी डाक्टर को बुलाओ। भइया की...' उन्होंने अपनी बात पूरी नहीं की, एक अशुभ की आशंका ने उनकी ज़बान जैसे रोक दी हो।

-रूपलाल बोला, "यहा पडोस मे डॉक्टर गुप्त रहते है, बडे मशहूर हैं व। मैं उन्हे अभी लाता हूँ।" यह कहकर वह तेजी के साथ कमरे [illegible]र चला गया।

रूपलाल के जाते ही कराहते स्वर म माताप्रसाद न रामसहाय से कहा, [illegible]प्रकाश न मुझे उवार लिया यमुना से शादी करन का इन्होन वचन [illegible]ा है हाय राम! बडा दद हो रहा है।"

जगनप्रकाश और रामसहाय ने सहारा देकर माताप्रसाद को बिस्तर पर [illegible] दिया। माताप्रसाद के सारे शरीर से पसीना छूट रहा था और व [illegible]े तडप रहे थ।

दस मिनट के अन्दर ही रूपलाल डॉक्टर गुप्त को लेकर आ गया। [illegible]ने माताप्रसाद की परीक्षा की और फिर माताप्रसाद को एक इजेक्शन [illegible]। इजेक्शन दकर उन्होन कहा, "दो घण्टे के बाद मै एक इजेक्शन और [illegible]। आप सब लाग इस कमरे के बाहर बैठिए, सिफ एक आदमी इनकी [illegible]भाल करन क लिए यहा रहे, इन्हे आराम की सख्त जरूरत है।"

माताप्रसाद की पत्नी उस कमरे मे रह गई। बाकी सब लोग डॉक्टर गुप्त [illegible]ाथ बाहर आ गए। बाहर के कमरे मे आकर डॉक्टर गुप्त ने रामसहाय [illegible]हा, "इन्हे हाट अटक हुआ है, इनको इसी वक्त अस्पताल ले जाइए [illegible] पर इनका इलाज नही हो सकेगा। यह हाट स्पेशलिस्ट का केस है, मैं [illegible]म्मेदारी नही ले सकता।" डाक्टर गुप्त अपनी फीस लेकर चले गए।

रामसहाय न असहाय और निरीह भाव से रूपलाल की ओर देखा, [illegible]र रूपलाल ने कहा, "मै अभी सिविल अस्पताल म इन्तजाम करता हूँ [illegible]कर। एम्बुलेंस कार लेकर अभी आता हूँ।" रूपलाल चला गया।

दो घण्टे के अन्दर ही रूपलाल एम्बुलेंस कार लेकर आ गया और माता-प्रसाद को सिविल अस्पताल मे दाखिल करा दिया गया। यमुना की माता [illegible]र और बच्चा की देख भाल यमुना पर छोडकर अस्पताल मे ही रह गई। [illegible]मसहाय क साथ जब जगतप्रकाश माताप्रसाद के घर वापस लौटा, एक [illegible]री उदासी का वातावरण था वहा पर। यमुना अपनी छोटी बहन और [illegible]पने दो छोटे भाइयो के साथ बाहर वाले कमर म बैठी थी। उसन जगत-[illegible]काश को करुण दृष्टि से देखा, "आपका असबाब कहाँ है?"

"स्टेशन के वेटिंग रूम में रखा है। सोचा था रात की इलाहाबाद चला जाऊँगा, लेकिन " कहते-कहते जगतप्रकाश रुक

"कल तक नहीं ठहर सकते आप ?" यमुना ने पूछा।

"ठहर जाऊँगा। अभी मैं स्टेशन जा रहा हूँ, वहां सो जाऊंगा वहाँ से अस्पताल पहुँचूंगा। कल तक तुम्हारे बाबूजी की हालत जाएगी।"

"यहां होते हुए जाइए आप अस्पताल, मैं भी आपके साथ च यमुना ने जगतप्रकाश को विदा करते हुए कहा।

सुबह करीब नौ बजे जगतप्रकाश माताप्रसाद के घर पहुँचा। अन्दर कुहराम मचा था, चार-पाँच आदमी बाहर बैठे थे और बा रहे थे। जगतप्रकाश का दिल धक-सा रह गया। रूपलाल बाहर उसने जगतप्रकाश के पास आकर कहा, "चार बजे सुबह चाचाजी चल रात को दो बजे दिल का दूसरा दौरा पड़ा था।"

जगतप्रकाश स्तब्ध-सा खड़ा था। यह क्या हो गया? इतनी जल्दी कुछ खत्म हो गया। तब तक रामसहाय घर के बाहर निकले। जगत को देखते ही वह फूट पड़े, "हाय भइया! हम पापियों को छोड़कर चल दिए!"

श्मशान से जगतप्रकाश माताप्रसाद के घर वापस लौटा। की माता बेहोश सी पड़ी थी और यमुना बच्चों को सँभाल रही थी। प्रकाश को देखते ही यमुना फूट पड़ी और उसके पैरों पर झुक गई। को उठाते हुए जगतप्रकाश ने कहा 'धीरज धरो, विधि के विधान को नहीं जा सकता। यही विधि का विधान था।"

यमुना कराह उठी मेरी वजह से मेरी वजह से बाबूजी प्राण गए। मैं बड़ी अभागी हूँ।"

तब तक यमुना की माता उठकर जगतप्रकाश के पास आ गईं। उन्होंने रोते हुए कहा, 'भइया, वह तो गए। अब क्या होगा? तुम तो साथ न छोड़ोगे?"

'भगवान् भला करेगा, आप धीरज रखिए और इस मुसीबत का सामना कीजिए। इन बच्चों को पालना है, इन्हें पढ़ाना लिखाना है।

की फिक्र आप छाडिए और मेरी तरफ से आप निश्चिन्त रहिए। मैंने को वचन दे दिया है, वह वचन मैं निवाहूँगा, हर हालत म।"
काश घूमकर चल दिया।

अब जगतप्रकाश के लिए वही शाम वाली डाकगाडी थी जिसस वह दिन आया था। माताप्रसाद के घर से वह पैदल ही स्टेशन की ओर दया। भयानक रूप से उदास दोपहर, चौबीस घण्ट म क्या-से-क्या हो वह माताप्रसाद—मानो वह उसका इन्तजार ही कर रह थ मरने के । जो कुछ उनसे हो गया था, उनका परिणाम जेल था, जगतप्रकाश जानता था। एक गल्ती, वह भी किसी दूसरे के बरगलाने म आकर, उन गल्ती की इतनी वडी कीमत चुकाना। अपनी मृत्यु से उन्होंने अपने अपने परिवार का कलंक स बचा लिया। उनके अन्तिम शब्द उसे हो आए, 'मैं यकीनन कह सकता हूँ कि मै जेल नही जाऊँगा, म छूट गा।' उनका यकीन सच निकला। वे छूट गए, इस दुनिया के न म ही छूट गए। माताप्रसाद ने अपने वचनो का पालन किया, न वचनो का पालन करने के लिए उन्ह मृत्यु की शरण लेनी पडी। जगतप्रकाश को अपने वचनो का पालन करना था। क्या वह अपने नो का पालन कर सकेगा?

लेकिन अपने वचनो का पालन कर सकना क्या किसी के हाथ मे है? उसने यमुना को कभी वचन दिया था, स्पष्ट रूप से नही। शायद स्पष्ट रूप यमुना ने उससे वचन माँगा भी तो नही था। इस तरह का वचन स्पष्ट रूप न माँगा भी जा सकता। यह वचन तो स्वत जगतप्रकाश ने यमुना को दिया था। तभी उनके सामने एक दूसरा चित्र उभर आया, कुलसुम का।

इस कुलसुम न स्पष्ट रूप स उसका वचन माँगा था और उसने अपना वचन दे दिया था। लेकिन कुलसुम को दिये गए वचन का कोई मूल्य नही, वह वचन जिन्दगी की गम्भीरता का वचन नही था, वह वचन जिन्दगी के खिलवाड का वचन था। जिन्दगी खिलवाड नहा है, वह एक भयानक रूप मे गम्भीर समस्या है। उस गम्भीर समस्या के ममातक रूप को देखकर वह रो रहा था। यही ममातक रूप सत्य है और नित्य है। जगतप्रकाश

ने मन-ही मन निश्चित कर लिया कि कुलसुम का उसके जावन
तरह निकल जाना होगा जिस तरह वह जसवन्त के जावन स निकल
फिर कुलसुम उस वग की भी तो नही है जिस वग का वह है।
वग वही हे जो माताप्रसाद का वग है, जो रूपलाल का वग है, और
अधिक जो वसगापाल का वग हो सकता है। यह जाति—इसका
के आधार पर ही तो हुआ है। अपने वग स उस असतोष क्या हो
वग के आर्थिक और सामाजिक सघर्षो मे ही उसे जूझना हागा।

जगतप्रकाश जव इलाहावाद पहुँचा, उसका मन हल्का हो
उसने निणय ले लिया था उन सपनो से निकलन का, जिनम वह
भरम रहा था। उसन अपनी वहन को विस्तार के साथ पत्र लिखा,
प्रसाद की मृत्यु की विवरणसहित सूचना देते हुए। उसन अनु
यह भी लिख दिया कि उसे किसी तरह के दहेज की माग नही
रामसहाय से मिलकर वह विवाह की तिथि ठीक कर ले, मई या जून म
हो जाना चाहिए।

उसके पत्र के उत्तर म उसे जो अनुराधा का पत्र मिला उसस
प्रकाश को लगा कि मनुष्य का सोचा नही होता। माताप्रसाद की मृ
एक वष के अन्दर यमुना का विवाह नही हो सकेगा, शास्त्रो का यह
है, एक वष तक प्रतीक्षा करनी पडेगी उस। एक दूसरी लडकी
अनुराधा के सामने आई है, इलाहाबाद मे। उस लडकी के पिता
है, लम्बा दहेज देंगे। लडकी को जगतप्रकाश ने देखा भी है। वह सु
पढी लिखी है, ऊँचे खानदान की है। अनुराधा को यह रिश्ता पसन्द है

माताप्रसाद का भय निमूल नही था। जिसे अपना रक्षक मा
माताप्रसाद उसक पास गये थे वही उनका भक्षक बन गया था।
ने माताप्रसाद के मुकदमे मे ढील डाली थी, रुपया के अभाव म मात
अपनी लडकी का विवाह जगतप्रकाश से जल्दी न कर पाए और
वह अपनी लडकी का विवाह जगतप्रकाश के साथ कर द। दूसर का वि
और असमथता का लाभ उठाना। लेकिन हरेक आदमी तो यहा कर
है। अनादि काल स यह हाना रहा है, अनन्त काल तक यह हाना
समय असमथ का सा जाता है। लेकिन लेकिन यह नियम तो

प्यता की मान्यता तो यह नहीं है। यह ठीक है कि मनुष्य आधारभूत पशु है, लेकिन मनुष्य के पास बुद्धि है जो भावना को सन्तुलित करती है भावना को सन्तुलित करने वाली बुद्धि ही तो विवेक है। विवेकहीन और पशु में बहुत कम अन्तर रह जाता है। आखिर पशु में बुद्धि तो कमी है। जहां तक भावना का प्रश्न है, वह पशु में भी है, लेकिन के रूप में। इस बुद्धि के योग से यह पशुता की प्रवृत्ति मनुष्य में बन जाती है।

अनुराधा का पत्र उसे शाम के समय मिला था जब वह लाइब्रेरी से था। आदत के अनुसार वह उसी रात उस पत्र का उत्तर न लिख। सारी रात वह अपने विचारों में उलझा रहा, सुबह के समय ही उसने राधा के पत्र का उत्तर लिख दिया। बड़े स्पष्ट शब्दों में उसने अनुराधा लिख दिया था कि वह यमुना से ही विवाह करेगा, एक साल की प्रतीक्षा कर लेगा। उसने इस विवाह के लिए अपना वचन दे दिया था। गोपाल की लड़की से विवाह करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

सम्भवतः अनुराधा ने अपने भाई को पत्र लिखने के साथ-साथ गोपाल को भी पत्र दिया था, क्योंकि उसी दिन शाम को वसगोपाल स्वयं प्रकाश के कमरे में आए। वसगोपाल के साथ उनका चपरासी था के हाथ में एक गठरी थी। जगतप्रकाश ने सम्पूर्ण शिष्टाचार के साथ गोपाल का स्वागत किया, "कहिए, कैसे कष्ट किया आपने?" जगत-श ने उनके सामने कुरसी रख दी।

कुरसी पर बैठते हुए वसगोपाल ने कहा, "कल शाम मुझे तुम्हारी बहन परवाना मिला, तुम्हें भी उनकी चिट्ठी मिली होगी।" चपरासी ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "सामान इस मेज पर सजा दो।" फिर जगतप्रकाश से बोले, "मेरी बड़ी किस्मत, अपनी बेटी के लिए तुम्हारे-जैसा व काबिल वर पाकर। वरिच्छा लेकर आया हूं।"

चपरासी ने चांदी की एक थाली मेज पर रख दी और उसने एक चार चांदी के सिक्के उस थाली में सजा दिए। नारियल का एक गोला, और मिठाई उसने एक ट्रे में सजाकर ट्रे भी थाली की बगल में रख दी।

जगतप्रकाश ने यह सामान देखा, फिर बोला, "लेकिन म
बाबू माताप्रसाद की लडकी के साथ तय हो चुकी है और बात
चुकी है। कल शाम को दीदी का चिट्ठी मुझे मिली थी, आज मुझे
चिट्ठी का जवाब भी दे दिया है। आपको पहले मुझसे मिलकर वि
लेनी चाहिए थी। मुझे अफसोस है कि आपको बेकार तकलीफ
पडी।"

'मैं जानता हूँ कि मातप्रसाद की लडकी के साथ तुम्हारा
हुई थी। लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, वह लडकी न बहुत खूबसू
न बहुत पढी लिखी है।"

'जी, घर मे मैं काफी पढा लिखा हूँ। दो पढे लिखे लोगों
हराम हो सकती है। और रही खूबसूरती की बात, तो एक घर-गृ
मे जितनी सुन्दरता चाहिए वह उसम है।" जगतप्रकाश ने बड
से कहा।

मिस्टर बसंतपाल मुसकराए, लेकिन उनकी मुसकराहट कितन
थी, कितनी खिसियाहट से भरी थी! "तुम बडे हाज़िर जवाब हो, तु
बहुत अच्छे वकील बन सकते हो मैं मान गया। लेकिन मातप्र
कुछ किया जिस तरह उनकी मौत हुई, वह तो दुनिया को मालूम है।
खानदान के साथ तुम्हारा रिश्ता तुम्हे दुनिया की नजर म बहुत न
देगा। इन्सान अपने रिश्तदारो और अपने सगे सम्बन्धियो से हा इज़्ज
है, रुतवा हासिल करता है। तुम्हारी बहन ने पहल ही मातप्र
लडकी के साथ तुम्हारी शादी तय करके गलती की थी, भला वह
दहेज दे सकते थ ' मैं दस हजार रुपया नक़द दहेज म दूगा, अ
डॉक्टरेट के लिए विलायत जाना चाहो तो तुम्हारा सारा खर्चा
करूँगा। मैंने तुम्हारी बहन को सब बाते लिख दी हैं।'

एकाएक जगतप्रकाश का मुह तमतमा उठा, ' मेरी बहन मुझ
सकती और मैं बिकने को तयार नहीं हूँ। अब आप मुझे छोडिए,
जहा हूँ वही रहने दीजिए। जो लोग अपनी जडें छोडकर उखड चुके
उखडना चाहते हैं उनके लिए मेरे दिल म सिवा नफरत के और
है।"

'वसगोपाल उठकर खडे हो गए। कडे स्वर मे उन्होने अपने चपरासी
हा, "उठाओ यह सब सामान।" उन्होंने जगतप्रकाश से कहा, "तुम्हारी
जहाँ हैं वही रहे, और तुम्हे मुबारक हो।" सुषमा का कयास ठीक ही था,
ी मेरी थी। लेकिन जाते-जात इतना कहे जाता हूँ कि तुमने जो मेरी
की है उसके लिए तुम्हे जिन्दगी-भर पछताना पडेगा।" यह कहकर
ोपाल कमरे के बाहर चले गए।

वसगोपाल के जाने के वाद जगतप्रकाश ने अपना स्टोव जलाया। वसे
की चाय वह एक घण्टा पहले ही पी चुका था, लेकिन इस प्रमग के
वह इतना उत्तेजित हो गया था कि उसकी समझ मे नही आ रहा था
वह क्या करे। स्टोव पर चाय का पानी चढाकर वह चुपचाप बैठ गया
र सोचने लगा।

उसे अब दुख हो रहा था कि वह वसगोपाल से इतनी कडी बात कह
ा। साधारणत जगतप्रकाश शान्त प्रकृति का आदमी था, उसे एक तरह से
ध आता ही नही था। लेकिन उस दिन क्रोध मे आकर उसन घर आए
तिथि का अपमान कर दिया था। यह ठीक है कि उसने यमुना से विवाह
रने का निश्चय कर लिया, था और यह भी ठीक है कि अगर उसने यमुना
विवाह करन का निश्चय न भी किया हाता तो वह सुषमा के साथ विवाह
रन की स्वीकृति किसी हालत म न देता। लेकिन यह अस्वीकृति किसी दूसरे
ग स भी प्रकट की जा सकती थी। उसने असभ्यता का वरताव किया,
उसका मन उसस कह रहा था और अब अपने ही प्रति एक तरह की ग्लानि उमे
ो रही थी। तभी एक दूसरी तरह की आवाज उसने अपने अन्दर से सुनी,
तुमन जो कुछ किया वह ठीक किया। यह आदमी मनुष्य नहीं है, दानव है,
राक्षस है। यह आदमी दूसरे आदमी को खरीदने मे विश्वास करता है, यह
आदमी दूसरे आदमी की असमथता और असहायावस्था का फायदा उठाता
है।'

जगतप्रकाश का दिमाग़ चक्कर मे था। यह दुनिया खरीदने वालो से
भरी है, जहाँ देखो खरीदने वाला मौजूद है। लेकिन खरीदा उसे जाता है
जो बिकने के लिए है। एकाएक उसे लगा कि यह दुनिया बिकने वालो से
भरी है। हर जगह आदमी बिकता है। यह मजदूर—क्या यह पसा के लिए

काम नही करता ? यह क्लर्क, क्या यह पैसो के लिए नौकरी नही
यह व्यापारी, क्या यह पैसा के लिए अपना धर्म और ईमान नही
खरीदार वही है जहा बिकने वाला हो।

माना कि मज़दूर अपनी मेहनत बेचता है, अपने अन्दर वाले मानव
नही बेचता। लेकिन क्या वह अपनी मेहनत का उचित मूल्य पाता है
सकता है ? क्या यह मज़दूर मालिक के सामने नाक नही रगडता,
खुशामद नही करता कि उसे ज्यादा मज़दूरी मिले ? क्या उसने
वैयक्तिक स्वाभिमान को नही बेच दिया है ? यही स्वाभिमान तो
अन्दर वाला मानव है। यह क्लर्क—क्या वह अपने अफसरों की
नही करता, ताकि उसकी पदोन्नति हो ? नही, मेहनत नही बिकती,
बिक रहा है खुले आम, हर तरफ। जो खरीदता है वह भी तो बिक
है। अर्थ ! क्या जीवन का समस्त अर्थ इस अर्थ मे है ? क्या जीवन के
कर्म की माप इस अर्थ म है ? यह अर्थ मानव-समाज के समस्त
और सभ्यता की उपलब्धि है, इस अर्थ को स्वीकार करना पडेगा,
कार्य के रूप मे, कारण के रूप म नही। लेकिन आज यह कार्य ही
बन गया है। वास्तविक कारण है भावना, अर्थ इस भावना का
पहलू है।

जगतप्रकाश सोच रहा था, बेसुध अपने विचारो म खोया हुआ
स्टोव पर पानी खौल रहा था। एकाएक स्टोव से एक तरह की आवाज़
और जगतप्रकाश ने चौंककर उस ओर देखा। स्टाव बुझ गया था।
प्रकाश उठ खडा हुआ, पानी जलकर आधा रह गया था, स्टोव इसलिए
था कि उसका तेल समाप्त हो गया था। एक प्याला चाय के लिए
अब भी था केटली मे, उसने चाय बनाई। चाय पीकर उसकी चेतना
वापस लौटी। अब कमरे मे अँधेरा हो गया था, उसने लाइट जलाई।
मे प्रकाश होने के साथ जैसे उसे एक दु स्वप्न से छुटकारा मिला।

उसने अपने कपडे पहने। उसे अपने प्रोफेसर डॉक्टर शर्मा के
जाना था। सुबह उन्होंने जगतप्रकाश से कहा था कि वह रात को आठ
बजे उनसे मिल ले। पहली जनवरी से उसकी नियुक्ति अस्थायी
विश्वविद्यालय मे होने वाली थी। उस दिन सत्ताईस दिसम्बर का

बड़े दिन की छुट्टियाँ चल रही थी।

डाक्टर शर्मा अपने कमरे मे अकेले बैठे थे और उनके सामने ह्विस्की गिलास था। वे बड़े ध्यान से एक किताब पढ रहे थे। जगतप्रकाश को ने हुए उन्होंने कहा, "चार्वाक के दर्शन पर यह नई किताब आई है, दिलचस्प है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र को समझने म तुम्ह इस पुस्तक से सहायता मिलेगी। तुम्हारी थीसिस तो पूरी हो गई या अभी कुछ और है?"

धीमे स्वर मे जगतप्रकाश ने कहा, "जी, पूरी हो गई, मैं उसे टाइप रहा हूँ। एक हफ्ते बाद में आपको दे दूगा।"

'बहुत अच्छा! हा, मैंने तुम्ह यह कहने को बुलाया था कि पहली री स मैं तुम्हारी नियुक्ति नही करा सका। आज दोपहर को मैंने चासलर से बात की। उनका कहना है कि मिस्टर कठवाला ने छुट्टी ली, उन्होंने अपना इस्तीफा दिया ह। इसलिए उनके स्थान पर स्थायी क्ति होनी चाहिए। अच्छा ही हुआ, लेकिन इसम तुम्हारी नियुक्ति मे चार महीने की देर हो जाएगी।"

बड़ी आशा लेकर जगतप्रकाश डॉक्टर शर्मा के यहाँ गया था। बुझे हुए म उसने कहा, "जी, समझ गया। ठीक है।"

"इसम उदास होने की कोई बात नही। तुम्ह डेढ सौ रुपये महीने का रशिप मिल रहा है, लेक्चरर का ग्रेड ढाई सौ रुपए का है। सौ रुपय ने का ही तो नुकसान है तीन महीने के लिए, लेकिन फिर स्थायी नियुक्ति जाएगी। नियुक्ति तो मेरे हाथ मे है।"

एक ठंडी साँस लेकर जगतप्रकाश ने कहा, "कल क्या होगा सर, कोई जानता। आपको मेरे सम्बन्ध म जो कष्ट उठाना पडा उसके लिए मैं का बड़ा आभारी हूँ।" जगतप्रकाश वहाँ स चलने को उठ खडा हुआ। लेकिन जगतप्रकाश के स्वर मे कुछ ऐसा था कि डॉक्टर शर्मा ने उसका पकड़ लिया। "बैठो, अभी तो आए ही हो। बड़े उदास हो, क्या बात

जगतप्रकाश डॉक्टर शर्मा का प्रिय पात्र था और वह डाक्टर शर्मा को न पिता के तुल्य मानता था। वह चुपचाप बैठ गया और उसकी आँख

लन खो बठे।"

जगतप्रकाश को अपन काना पर विश्वास नही हा रहा था। वह एकटक चय से डॉक्टर शर्मा को देख रहा था। कुछ चुप रहकर डॉक्टर शर्मा न कहा "तुम जिस भावना समझ रह हो वह केवल भावुक्ता थी। तुमने प्रसाद को जो वचन दिया था वह केवल भावुकता के आवेग मे दिया। मातात्रसाद न जो कुछ किया, वह निश्चय ही कलक की वात थी।"

"लेकिन सर, अगर मैं अपने वचन से हट जाता तो यमुना का क्या ? उसका जीवन नष्ट हो जाता कि नही ?"

'शायद हो जाता, शायद नही भी होता। फिर तुम किस-किसके न को नष्ट होने से रोक सकोगे ?" डॉक्टर शर्मा न पूछा, "दुनिया मे डा मनुष्य ह जिन्ह तुम नही जानते। मनुष्य के सामन सबसे मुख्य उनका जीवन है जिसे उमको सँभालना है। फिर मनुष्य की सारी भावना अथ नहित है, इस अय के सही या ग़लत रूप पर हम टीका टिप्पणी भले ही लें, इस अय की उपक्षा तो नही की जा सकती। मनुष्य का जीवन सारभूत रूप म दुनिया के साथ समझौते का जीवन है और यह समझौता रूप मे आर्थिक हुआ करता है।"

लेकिन सर, यह अथ तो क्रय विक्रय का साधन है। आपने जो कुछ हा उससे तो ऐसा लगता ह कि जीवन का आधार ही अथ है।

"दोनो ही बातें ठीक हैं।" डॉक्टर शर्मा ने कहा, "यह जिन्दगी स्वय क्रय विक्रय है, इस क्रय विक्रय का शब्दा मे एक सात्त्विक नाम दे दिया गया है, आदान प्रदान'। आदान प्रदान को आध्यात्मिक माना जाता है, क्रय-विक्रय का भौतिक माना जाता है। आध्यात्मिकता सशयात्मक हो सकती है, भौतिकता नि सशय सत्य है। चार्वाक नास्तिक है, क्योकि वह शुद्ध रूप से भौतिक है, उसकी कुरूपता नग्न और कुरूप प्रकृति को ही सत्य मानती है, वह आरोपित सात्त्विकता का उपहास करती है। समाज आरोपित और कृत्रिम सात्विकता के आधार पर स्थित ह, इसलिए चार्वाक को मान्यता नही मिलती। कौटिल्य भी भौतिक है, यद्यपि उसने नास्तिकता का प्रतिपादन नही किया है, क्योकि इस भौतिक समाज की स्थापना मे नास्तिकता बाधक होती है। इस-लिए प्रकृति को ही सत्य मानते हुए उसने प्रकृति की नग्नता और कुरूपता

१३

सत्वान कमटी के सामने इटरव्यू देकर जब जगतप्रकाश कमरे के बाहर ग्रा, वह सतुष्ट था। सेलेक्शन कमेटी तो नाम मात्र की थी, सब-कुछ क्टर शर्मा के हाथ म था और डॉक्टर शर्मा न उनस कह दिया था कि ली अप्रैल म उसकी नियुक्ति हो गई है और उसी दिन उस यूनीवर्सिटी ाइन करनी है। जगतप्रकाश के मन म एक उत्साह था, एक उमग थी। ह बीस दिन वाकी थे उसकी नियुक्ति म।

सरदी बीत चुकी थी और मौसम सुहाना हो गया था। उसकी बहन ा बहुत अधिक आग्रह था कि वह होली म महोना आए और वह अपनी हन का आग्रह रखना चाहता था। नौ मार्च का उसका इटरव्यू था। टरव्यू से वापस आने के बाद उसके मन म आया कि वह पद्रह दिन के लए अपने गाँव हो आए। बहन से मिले उसे काफी समय हो गया था।

यूनीवर्सिटी स वह सीधा अपने होस्टल वापस गया, लेकिन अपने कमरे म जाने क स्थान पर वह कमलाकान्त के कमरे मे जा पहुँचा। कमलाकान्त कुछ दर पहले यूनीवर्सिटी म लौटा था। जगतप्रकाश की प्रसन्न मुद्रा देखकर उसन कहा, 'तो तुम्हे औपचारिक बधाई दे दू। कब से तुम्हारी नियुक्ति हुई है ?"

पहली अप्रैल से। डाक्टर शर्मा ने तो मुझसे चलते समय यही कहा था। वसे तीन महीने की दर हो गई। उन्होने वादा कर लिया था कि पहली जनवरी म मेरी नियुक्ति हो जाएगी।"

कमलाकान्त हँस पडा, "सतोष किसी को नही होता। यह क्यो नही कहते कि अस्थायी नियुक्ति के बदले स्थायी नियुक्ति हो गई। अच्छा तो

फिर आज शाम के शो म तुम मुझे पिक्चर दिखाओगे और रात म किसी अच्छे होटल म डिनर रहेगा।"

"मजूर ! लेकिन चलो, पहले मैं तुम्हे चाय पिलाऊ अपने कमरे मे"
जगतप्रकाश ने कमलाकान्त को उठाते हुए कहा।

कमरा खोलने के बाद जगतप्रकाश की नजर जमीन पर पडे हुए एक पत्र पर पडी। उसने वह पत्र उठाया। उस पर जगतप्रकाश का पता उर्दू और अग्रेज़ी म लिखा था। किसका यह पत्र हो सकता है ? जगतप्रकाश ने लिफाफे पर पडी मुहर देखी, पत्र बम्बई से आया था। एकाएक जगतप्रकाश के मन म आया कि वह पत्र जमील का होगा। उसने स्टोव जलाकर चाय के लिए पानी चढाया, फिर उसने वह पत्र खोला। कमलाकान्त ने कुरसी पर बैठकर सिगरेट सुलगाई।

वह पत्र जमील का ही था और छ मार्च का लिखा था। जमील ने सूचना दी थी कि वह अपने परिवार के साथ कानपुर-लखनऊ होते हुए सहारनपुर जा रहा है, और परिवार को गाव म छोडकर वह बारह मार्च को इलाहाबाद पहुचेगा और उसके साथ ही ठहरेगा। जगतप्रकाश के माथे पर बल पड गए, अपने-आप ही वह कह उठा, 'अजीब मुसीबत है।"

कमलाकान्त ने पूछा, क्या खरियत तो है ?"

खैरियत के खिलाफ तो कोई बात नही, लेकिन मै परसो, यानी ग्यारह तारीख को गाव जाने की सोच रहा था, होली के अवसर पर मेरी बहन ने मुझे बुलाया भी है। और आज यह जमील काका की चिट्ठी कि बारह तारीख को वह गाव से यहा पहुँच रहे है और मेरे साथ ठहरेगे।"

'तो इसम मुसीबत की क्या बात है ? ग्यारह तारीख को मकान छोडने की जरूरत क्या है होली तो बाईस मार्च को है। तुमने जमील अहमद के बाबत जो कुछ मुझे बतलाया है उससे उस व्यक्ति म मेरी भी दिलचस्पी हो गई है। अगर तीन चार दिन और रुक जाओ यहा तो हर्ज क्या है। और—अरे हाँ याद आ गया। रामगढ म काग्रेस हो रही है, वहाँ भी तो चलना है। उन्नीस और बीस मार्च को काग्रेस का खुला अधिवेशन होगा। सत्रह-अठारह मार्च को ए० आई० सी० सी० की मीटिंग होगी, तुम उन्नीस या बीस मार्च को रामगढ से अपने गाव चले जाना—होली के दिन वहाँ

न जाओगे। एक हफ्ता वहां रहकर पहली तक इलाहाबाद आ जाना।"
' पिछले दो महीने जगतप्रकाश के लिए एक दुःस्वप्न की भांति ही बीते जब उसके जीवन में एक उदासी से भरी निष्क्रियता का एकछत्र शासन था। उसे एकाएक अनुभव हुआ कि उसके अन्दर एक नवीन स्फूर्ति आ रही है, वह चौंक-सा उठा, "अरे हां, मुझे रामगढ़ कांग्रेस का खयाल ही नहीं था। ठीक कहते हो, वहां जाना ही चाहिए। एक साल में क्या का क्या हो गया है।"

कमलाकान्त मुस्कराया, "बहुत कुछ हो गया और उससे भी अधिक कुछ होगा आगे चलकर। आज की नींव बीते हुए कल पर पड़ेगी और आने वाले कल की नींव आज पर पड़ेगी। हां, तुम्हें जसवन्त कपूर की कोई खबर मिली?"

"नहीं, अपने विवाह के बाद जैसे वह बदल ही गया है। बहुत सम्भव है वह रामगढ़ कांग्रेस में जाए। लाला देवराज कांग्रेस के प्रमुख लोगों में हैं।"

कमलाकान्त अब हँस पड़ा, "लाला देवराज दक्षिणपंथी कांग्रेसमैन हैं, जसवन्त वामपंथी है। पता नहीं दामाद और ससुर में कैसी बन रही होगी। लेकिन जसवन्त से हम लोगों का सम्बन्ध टूट गया यह अच्छा ही हुआ।" कुछ रुककर कमलाकान्त ने फिर पूछा, "और कुलसुम कावसजी! उनका पत्र तो आया होगा तुम्हारे पास?"

"इधर हाल में कोई पत्र नहीं आया। उसके पिछले पत्र का उत्तर मैं नहीं दे सका था।" जगतप्रकाश ने सहज भाव से कहा।

चाय पीकर दोनों निकलने ही वाले थे कि जगतप्रकाश को एक तार मिला। धड़कते हुए दिल से उसने तार खोला, और तभी वह हँस पड़ा। वह तार कुलसुम का था। मालती मनुभाई के साथ वह इलाहाबाद होते हुए कलकत्ता जा रही है चौदह मार्च की रात को वह बम्बई मेल से इलाहाबाद पहुंचेगी। इलाहाबाद से त्रिभुवन मेहता और जगतप्रकाश को उनके साथ चलना है, त्रिभुवन कानपुर से आ जाएगा। जगतप्रकाश ने वह तार कमलाकान्त के हाथ में दे दिया।

जगतप्रकाश को लगा कि कमलाकान्त के मुख पर एक तरह की खिसियाहट आ गई है, और उसके स्वर में एक कटुता भी है। तब उसने कहा,

"पिछली बार छ आदमी साथ गये, इस बार चार आदमी साथ जा रहे।
जसवन्त हट गया है इस खिलवाड से और मुझे भी अब कोई रुचि न र
गई इस खिलवाड म। अब तो तुम्हारा जाना तय हो गया।"

"जाना तो इस तार के पहले ही तय कर लिया था तुम्हारे सा
उन लोगो के साथ नही जाऊँगा, तुम्हारे साथ चलूगा।"

लेकिन कमलाकान्त के अन्दर वाली कटुता अब हिंसात्मक बन रही
"मैंने तय कर लिया है कि मै नही जाऊँगा। तुम्ही जाओ उनके
साथ।" वह उठ खडा हुआ, "अच्छा अब मैं चलूगा, मुझे शहर जाना है।"

जगतप्रकाश बोला "अभी तो तुमने कहा था कि हम लोग सिनेमा
देखेगे और उसके बाद किसी होटल मे खाना खाएँगे।"

कमलाकान्त को लगा कि वह अपने अन्दर वाली ईर्ष्या म काफी बह
गया है, उसने अपने को सम्हाला, 'अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया था। अच्छा
मैं अपने कमरे से तयार होकर आता हूँ।"

बारह तारीख को सुवह के समय जब जगतप्रकाश चाय पी रहा था
जमील आ गया। जगतप्रकाश ने जमील का स्वागत करते हुए कहा, "
वक्त मे पहुँचे जमील काका। चाय तैयार है।" और उसने जमील का
असवाब कमरे मे रखवाया।

"हा बरखुरदार चाय की तलब तो है। गाडी कुछ लेट आई वरना
बजे सुबह ही आ गया होता। कहो क्या हाल हैं तुम्हारे?"

'विश्वविद्यालय म मुझे नौकरी मिल गई है पहली अप्रैल से। कल मैं
आने वाला था, लेकिन तुम्हारी चिट्ठी मिली तो मैं रुक गया। फिर
भी खयाल आया कि इस दफा रामगढ काग्रेस चलना चाहिए। दादी ने
आग्रह किया है मैं होली म गाव आऊँ, और होली तेईस मार्च को है। मैं
नही कर पा रहा था कि क्या करूँ कि कुलसुम का तार भी मिला। वह और
मालती परसो यहाँ होती हुई कलकत्ता जा रही है, मुझसे कहा है कि मैं
उन लोगो के साथ चलूँ।"

'यह तो अच्छा है, गालिब मुझे यहाँ पन्द्रह तारीख की शाम तक रुकना
होगा। पन्द्रह की शाम को यहाँ से एक बोगी सीधी रामगढ़ के लिए छूटती
उसीमे म जाऊँगा।'

जगतप्रकाश बोला, "तो तुम भी चल रहे हो रामगढ—यह तो बडा ... है। मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगा जमील काका।"

जमील ने गौर से जगतप्रकाश की ओर देखा, "तुम्हे कुलसुम के साथ ही ... चाहिए, उसने तुम्हे तार दिया है।"

जगतप्रकाश ने सिर हिलाया, "नही। जमील काका, अब मुझे अपना ... अलग बनाना है। तुम्हारे साथ चलने पर तरह-तरह के लोगो से ... ना होगा, मेरे अनुभव बढेंगे। कुलसुम के साथ मालती और त्रिभुवन तो ... ही। फिर इस जन-जागरण और जन क्रान्ति को जन-सम्पर्क से ही ... जा सकता है।" कुछ रुककर उसने कहा, "अरे हा जमील काका! ... महोना कब गये थे? वहा सब-कुछ ठीक है न?"

"ठीक ही समझो बरखुरदार! तुम्हारी मामी व बच्चा को कुछ दिन के ... महोना ले आया हूँ, वहीं रहेंगे। मै तो पूरी तौर से ट्रेड यूनियन मे ... मल हो गया हूँ। और ट्रेड यूनियन मे आने के बाद फिर अपना कोई ... ना नही, कभी बाहर, कभी जेल मे। तो सईदा और बच्चा की देख भाल ... करेगा बम्बई मे? अजीब हैवानियत की दुनिया है वह।"

जगतप्रकाश ने जमील के लिए चाय बनाई और तभी कमलाकान्त ... र मे आ गया। जगतप्रकाश ने जमील से कमलाकान्त का परिचय ... या, फिर वह कमलाकान्त से बोला, "यह जमील काका अब पूरी तौर ... ड यूनियन के लीडर बन गए है। इनका कहना है कि यहा से रामगढ के ... ए एक बोगी लगेगी परसो रात के वक्त। मैं इनके साथ जाऊँगा, तुम भी ... म चलो।"

"यह तो बडा अच्छा है, तुम दोनो उसी बोगी से जाओ। मैं तो नही ... ऊँगा, होली के सिलसिले मे दद्दुआ ने मुझे घर बुलाया है।"

"होली तो तेईस मार्च की है तब तक तो तुम रामगढ से वापस भी आ ... ओगे। मुझे भी गाव पहुँचना है।"

कमलाकान्त बोला, "मुझे अब राजनीति मे कोई दिलचस्पी नही रह ... ई, क्योकि देश की राजनीति महात्मा गाधी के हाथ मे है और महात्मा ... धी का विश्वास अहिंसा पर है। अहिंसा के सिद्धान्त पर मुझे कुछ नही ... हना, लेकिन इतना मै जानता हूँ कि हमारे स्वतन्त्रता-सग्राम मे यह अहिंसा

, ये लोग नमकहरामी सबसे बडा पाप मानते है। बाकी लोगों म
. हर भेद भाव है। हिन्दू-मुसलमान, मिलमालिक मजदूर, जमीदार-
ान—हर जगह फूट है। हिसा के माने है इन सरकारों म आपसी सघर्ष
कर देना। हिंसा के माने ब्रिटिश सरकार के साथ युद्ध नही होगे, उसके
हाँगे गृह-युद्ध।"

एक सन्नाटा छा गया जमील की इस बात के बाद, और फिर जमील
ो इस सन्नाटे को तोडा, "जहा तक मेरी जाती राय है, मैं इस गृह-युद्ध
क्ष म हूँ। अग्रेजो की फौजें अपने सबसे जबदस्त दुश्मन जर्मनी के साथ
म फँसी रहगी, ब्रिटेन इस गृह-युद्ध म दस्तन्दाजी नही कर सकेगा। और
तरह हम अपने देश के मुख्तलिफ मसले को हमेशा के लिए हल कर
ग। लेकिन इस सबम भयानक खून-खराबा होगा। मेहनतकश और
ार जनता एकबारगी ही पीसकर रख दी जाएगी और और
ध म नहा जाता। इस सबकी कल्पना करते ही दिमाग चकराने लगता
इसलिए जो कुछ हो रहा है वही ठीक है, क्योकि हम उस सबके आदी
चुके हैं।"

चौदह तारीख को शाम के समय जगतप्रकाश ने जमील के साथ चाय
ते हुए कहा, "यह त्रिभुवन मेहता अभी तक नही आया, पता नही वह कहा
ेगा। बम्बई से मेल नौ बजे आता है, पाच बज रहे है। समझ म नहा
ता क्या करूँ?"

जमील बोला, "इसम तुम्हे कुछ नहीं करना है। यह त्रिभुवन तुम्हारे
ही क्या आए? फिर बम्बई मेल के आने के घण्टा-डेढ घण्टा पहले कानपुर
हावडा मेल आता है, गालिबन वह उसीसे आएगा और स्टेशन पर ही
लेगा।"

जमील के साथ जगतप्रकाश स्टेशन पहुँचा, त्रिभुवन बम्बई से आने
के मेल का इन्तजार करता हुआ प्लेटफार्म पर ही घूम रहा था। जगत-
काश को देखकर उसने कहा, 'तुम्हारा असबाब कहा है? गाडी पन्द्रह
मिनट लेट है। फिर पता नही गाडी म जगह मिलेगी या नहीं।"

मैं आप लोगों के साथ नही चल रहा।" जगतप्रकाश बोला, 'कल
शाम यहाँ से रामगढ के लिए एक बोगी लग रही है जो परसो शाम तक

रामगढ पहुँचा देगी, मैं उसी से जाऊँगा। यह मेरे साथी जमील अहमद हैं, मेरे साथ यह भी चल रहे हैं।"

'जमील अहमद !'—यह नाम तो मैंने पहले कहीं सुना है, पर याद नहीं पडता। शायद बम्बई में।" त्रिभुवन कुछ सोचकर बोला।

"जी हाँ।" जमील ने कहा "माल्ती बन और कुल्सुम बन मुझे जानती हैं, वसे मैं ईस्टर्न कॉटन मिल में फोरमैन था। अभी हाल में ही मैंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया है। नौकरी करते हुए राजनीति चलती नहीं।"

गाडी आने वाली है, इसकी सूचना की घण्टी बज रही थी, और कुली वेटिंग रूम से उसका असबाब उठाकर उसके पास आ गया। त्रिभुवन बोला, "तब तो ज्यादा मुसीबत नहीं होगी, सेकण्ड क्लास या इण्टर में एक-न-एक बर्थ मिल ही जाएगी गोकि इस युद्ध-काल में फर्स्ट या सेकण्ड क्लास में कोई बर्थ नहीं मिलती, कानपुर से मैं बैठे-बैठे आया हूँ।"

बम्बई हावडा मेल प्लेटफार्म पर आकर रुक गया, प्लेटफार्म पर भीड थी और उस भीड में अधिकांश सैनिक अफसर या सिपाही थे। कुलसुम और मालती एक फर्स्टक्लास कम्पार्टमेण्ट में थीं। गाडी रुकते ही लोग उस कम्पार्टमेण्ट के पास पहुँच गए। वह चार बर्थों वाला एक फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेण्ट था, नीचे दो बर्थों पर कुल्सुम और मालती थीं, ऊपर की दोनों बर्थें खाली थीं। कुलसुम ने जगतप्रकाश को देखते ही कहा, "तुमने अभी कलकत्ता का टिकट तो नहीं लिया है? अगर लिया हो तो उसे वापस कर दो गाडी शायद यहाँ आधा घण्टा ठहरेगी। मेरी बर्थ तुम ले लो, मुझे यहाँ उतरना है।"

आश्चर्य से त्रिभुवन ने पूछा, "तुम तो कुल्सुम बन कलकत्ता जा रही थीं।" फिर उसके मुख पर एक मुसकराहट आई, 'यह जगतप्रकाश कलकत्ता नहीं जा रहे हैं, क्या बात है?"

जब कुल्सुम त्रिभुवन की ओर घूमी, तो मालती ने पास उठकर कहा, 'अच्छा हुआ जो यह नहीं जा रहे हैं, नहीं तो मुझे अकेले इलाहाबाद में तकलीफ उठानी पडती। मेरा टिकट तुम ले लो। अगर तुमने कलकत्ता का टिकट ले लिया है तो मुझे दे दो, मैं उसे वापस कर दूँगी।'

"नहीं, मैंने इसलिए टिकट नहीं लिया कि तुम लोग न जाने किस

गी, टिकट तो मैं गाडी मे ही वनवा लूगा। तुम्हारे यहा रुकने से यह
स्या भी हल हो गई।"

अब मालती बोली, "वात यह है कि जवल्पुर म कुल्सुम के मामा स्टेशन
मिल थे, इनने परवेज़ को तार दिया था न! परवज़ काफी बीमार है,
फाइड का शक है। तो कुल्सुम घवरा गई। यह जवल्पुर म ही उतरना
ती थी, फिर कुछ सोचकर यहा चली आई, कल की गाडी से इस जवलपुर
ना है।"

जगतप्रकाश न देखा कि कुल्सुम के मुख पर चिन्ता की भावना झलक
है। माल्ती ने कुल्सुम से उसका टिकट ले लिया, फिर दस दस के सात
निकालकर वह कुलसुम से वोली, 'लो अपने टिकट के दाम, यह त्रिभु-
तो दगा नही, कजूस कही का। मैं इसम वसूल कर लूगी।' कल्सुम ने
ये ले लिये।

प्लेटफाम पर चलते हुए कुलसुम जमील की ओर घूमी, "कामरेड जमील
मद, मैंने सुना है कि तुमने ईस्टन कॉटन मिल से इस्तीफा दे दिया है।
तुम्ह वम्वई मे बहुत ढुढवाया, लेकिन तुम मिले ही नही। डैडी चाहते थे
तुम हमारी मिल म आ जाओ, लेकिन पता चला कि तुम अपने वीवी-
च्चा के साथ अपन गाँव चले गए हो।"

"जी हा, मैंने अपन वीवी-बच्चा को अपने गाव म छोड दिया है, नल
जार मे मैंने अपने लिए एक खाली ले ली है। अब मैं अपना पूरा वक्त
टी के काम म लगाना चाहता हूँ।"

"यह अच्छा किया, लेकिन अगर तुम विना काम-काज के बम्बई मे
होगे ता पुलिस को तुम पर शक हो सकता है। तुम मेरी मिल मे क्यो नही
जात? डडी की तबीयत ठीक नही रहती, आजकल मिल का काम-काज
देख रही हूँ। तुम्हारा नाम मिल के रजिस्टर पर चढा रहगा, तुम्ह मिल
आने की कोई जरूरत नही है। रामगढ से लौटकर मुझसे मिल लेना—
यदि तुम वहाँ जाजाग।"

'जी आपका कयाम ठीक है, मैं रामगढ जा रहा हूँ, अप्रैल के पहले हफ्ते
क वम्बई वापस लौटूगा।"

ये लाग जब स्टशन के बाहर निकल आए थे। जमील ने जगतप्रकाश

से कहा, "मुझे तुम कमरे की चाभी दे दो, मैं आराम करूंगी जाकर।
कुलसुम बन को होटल में ठहराकर और सब इंतजाम करके तुम
साथ आना।"

"हां, यह ठीक है, इनको आने में घण्टा-डेढ़ घण्टा लग जाएगा।
जाइए।"

रोसेटी होटल में कमरा खाली था। कमरे में अपना असबाब रख
कुल्सुम जगतप्रकाश के साथ लाउंज में बैठ गई। उसके मुख पर थकान
भाव थे। बेयरा से उसने कहा कि आधा घण्टा बाद वह उसका लिए
कमरे में ही ले आए। इसके बाद उसने जगतप्रकाश से कहा, 'या
बैठो, बहुत थक गई हूं। वस थकन की कोई बात नहीं थी। शायद प
की बीमारी से मन खराब हो गया। मुझे जबलपुर में ही उतर जाना चा
था, लेकिन मालती अकेली रह जाती। वह मुझे जिद करके यहां ले आ

"मालती तो काफी साहसी स्त्री है।" जगतप्रकाश बोला।

"हां, वह मुझसे ज्यादा साहसी है। नहीं, मैंने शायद तुमसे गल
कही, शायद मैं तुम्हारी वजह से चली आई, तुम्हें मैंने तार जो दे दिया
तुमसे मिले हुए बहुत दिन हो गए थे न! लेकिन मैं सोचती हूं मुझे जब
उतर जाना चाहिए था। मामा को तो इन सब बातों की परवाह नहीं
परवेज को जरूर दुःख हुआ होगा कि मैं जबलपुर होती हुई गुजरी
उसकी बीमारी की खबर सुनकर मैं वहां रुकी नहीं। मने अच्छा नहीं कि
मुझे बड़ा अफसोस है। कल मेल के पहले तो जबलपुर के लिए कोई
नहीं है।'

जगतप्रकाश ने कुछ नहीं कहा, उसके पास कुछ कहने को था भी
नहीं। कुल्सुम चुपचाप बैठी थी अपने में खोई हुई और जगतप्रकाश अनु
कर रहा था कि उस लाउंज में उदासी का एक वातावरण छा गया है।
देर बाद कुल्सुम ने एक ठंडी सांस ली अब जो हो गया वह हो गया।
शाम तक तो मैं पहुंच ही जाऊंगी जबलपुर। मामा ने परवेज की बीमारी
कोई खबर भी तो नहीं दी थी हम लोगों को। वह तो मैंने परवेज को एक
भेज दिया कि मैं चौदह की शाम को जबलपुर से गुजरूंगी। बेचारा परवेज
फिर जबरदस्ती अपने मुख पर मुस्कराहट लाने का प्रयत्न करते हुए

'मैं भी कभी हूँ जो अपना पचडा लेकर बैठ गई। तुम कैसे रह, तुमने छले खत का जवाब ही नही दिया। तुम्हारा एपाइटमेण्ट हो गया कि "

'इटरव्यू तो नौ माच को हो गया और प्रोफेसर शमा ने मुझसे व्यक्तिप मे वह दिया है कि मेरा एपॉइटमेण्ट पहली अप्रैल मे हो गया है अभी औपचारिक आज्ञापत्र नही मिला। सोच रहा था कि इस बीच गढ काग्रेस ही हो आता। लेकिन अब वहा जाने की तबीअत नहीं हो '

कुल्सुम ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया "तुम्हे रामगढ काग्रेस मे चाहिए, तुम्हे राजनीति म रुचि लेनी चाहिए। यूनिवर्सिटी म साधा-क्चररशिप की नौकरी। उसमे क्या रखा है? दूसरो के सिद्धान्तो को किन्ही और दूसरो तक पहुँचाना, यही तो काम होगा तुम्हारा। नही, ने जगत को एक साधारण अध्यापक के रूप मे नही देखना चाहती, मैं ी हू कि मेरा जगत लोगो के भाग्य का निणय करे, उसकी गणना ा के विशिष्ट व्यक्तियो मे हो। तुमम सब-कुछ है, विद्या है, बुद्धि है, है, प्रतिभा है और सबसे बडी बात यह है कि तुममे चरित्र है इमान-है।

कुलसुम यह सब क्या कह रही है? जगतप्रकाश के मन मे एक तरह का जाग उठा। कितना विश्वास, कितनी आस्था! जगतप्रकाश के मुख से ल पडा, "पता नही मैं क्या हूँ, लेकिन मैं वह सब बनने की कोशिश र करूँगा जिसकी परिकल्पना तुम मुझमे कर रही हो। मैं रामगढ आ, जमील के साथ मै यहा से जाने वाली बोगी मे कल चल दूगा। अफसोस केवल इतना ही है कि तुम नही चल सकोगी, तुम्हारे बिना कुछ सूना-सूना लगेगा वहा पर।'

कुल्सुम के मुख पर आई उदासी अब जाती रही थी, उसके मुख पर ी मुसकराहट आ गई, "नही, तुम अपने को मुझमे खो मत दो, मैं ारी कमजोरी नही बनना चाहती, मैं तुम्हारी ताक़त के रूप मे रहना ती हूँ। मेरे लिए इतना काफी है कि तुम मुझे अपना समझो, इसने दा कुछ नही। मैं तुम्हें अपना समझती हूँ, हमेशा-हमेशा, जब तक मैं

जिन्दा हूँ मैं तुम्हें अपना समझती रहूँगी। मेरे जगत, मैं हमेशा
हूँ, शरीर मे नही, भावना से।" कुलसुम उठ खड़ी हुई, "अब
होस्टल जाओ, मैं भी खाना खाकर सोऊँगी। कल सुबह तुम आ जाना
हम दोनों साथ करेंगे।"

जगतप्रकाश जब वहां से चला उसके पैर मानो एक तरह
डगमगा रहे थे। यह कुल्सुम उसे कितना चाहती है। लेकिन
इस कुलसुम को समझ नहीं पा रहा था। यह कुलसुम परवेज़ के लिए
चिन्तित है कितनी दुखी है। एकाएक उसके मन में प्रश्न उठा—यह
किससे प्रेम करती है? परवेज़ से या उससे? उसे इस प्रश्न का उ
मिल रहा था। अपना समस्त कार्यक्रम रद्द करके यह कुलसुम जा
रही है टाइफाइड में पड़े परवेज़ के पास। शायद वह जबलपुर में
रुकेगी जब तक परवेज पूरी तरह से अच्छा न हो जाए, सारी बहल
दूर, जबलपुर के एक एकान्त बँगले में।

परवेज़ की इस बीमारी की खबर सुनकर भी वह इलाहाबाद न
थी, सिर्फ उससे मिलने के लिए। अजीब बात थी।

होस्टल पहुँचकर उसने देखा कि उसके कमरे का दरवाजा खु
है और जमील जाग रहा है। जमील बोला, "होटल में जगह ता
कुल्सुमबहन का। कल दोपहर को ही बम्बई मेल मिल सकेगा है।"

"हाँ, बम्बई मेल से ही वह जबलपुर जाएगी। कल सुबह मुन
उनके होटल में।"

'उन्हें पहुँचाने के लिए तुम्हें जबलपुर तो नहीं जाना पड़ेगा?'

"नहीं, मैं कल रात के समय तुम्हारे साथ रामगढ चल रहा हूँ।
कुलसुम को ट्रेन पर बिठाकर वापस आ जाऊँगा। इस दफा तुम्हारे स
में कांग्रेस को पूरी तौर से देखने और समझने का मौका मिलेगा।'

सुबह जब जगतप्रकाश कुल्सुम के यहां पहुँचा वह उसका इ
कर रही थी। नाश्ता कुल्सुम ने अपने कमरे में ही मँगवा लिया।
प्रकाश से उसने कहा, 'कल तो तुमसे बातें हो ही नहीं सकीं। लन्द
लौटकर, तुमने मुझे जो पत्र लिखा था वह बहुत छोटा-सा था। जनन्द
शादी की बाबत मैं तुमसे पूरी जानकारी चाहती थी। पर शायद स

र से बम्बई वापस लौटा ही नही, सुना है उसे भारत सरकार म वार-
म के महकमे म अच्छी-खासी नौकरी मिल गई ह।"
जस जगतप्रकाश को अपने कानो पर विश्वास नही हुआ, "सैलाब वार-
म के महकमे म चला गया। ताज्जुब की बात है। वह तो अपन को
नेस्ट कहता था।"
कुल्सुम हँस पडी, "कम्युनिज्म उसका शौक था और वह शौक पूरा हो
। उसके शौक के साथ उसका विश्वास नही था और जहा तक उसके
। का सवाल था वह उसने अपने शौक के लिए खुद अपने ऊपर लादा
कम पढा लिखा, शायर किस्म का आदमी, उसमे सोचने-समझने की
। हा नहा है, फिर भला विश्वास कहा से होता! महज शौक के लिए
छ किया जाता है उसका एक-न एक दिन खात्मा होना ही है। यह कम्यु-
। माल्ती के लिए एक शौक है, त्रिभुवन के लिए एक शौक है, शायद
लिए भी यह एक शौक है। जसवन्त हमेशा यह कहता था, मैं उसकी
का विरोध करती थी, लेकिन शायद वह ठीक ही कहता था।"
"वाक़ई—यह कम्युनिज्म तुम्हारे लिए भी सिर्फ शौक है—मुझे यकीन
होता।"
कुलसुम ने गम्भीर होकर कहा, "मैंने 'शायद' शब्द कहा है, क्योंकि मैं
ही तय नही कर पाई हूँ कि यह महज़ शौक है या शौक से ऊपर वाली चीज
पास भी है मेरे पास। कम-से-कम अभाव और अभाव से पैदा होने वाली
। तो नही है मेरे पास। वैसे कम्युनिज्म को आगे बढाने मे अभाव वाली
। का बहुत बडा हाथ रहा है।"
जगतप्रकाश कुछ बोला नही, वह कुलसुम को एकटक देख रहा था।
"मैं अपनी बात तुम्हे पूरी तरह से समझा नही सकी शायद। अभाव के
गरीबी और भुखमरी ही नही है अभाव के माने उसका न होना है जिसे
चाहते हैं। जहाँ आदमी की कीमत रुपया म नापी जाती है वहा पाच
इपतियो की मौजूदगी म सैकडा लखपतियो मे अभाव की भावना जाग
ती है। क्योकि वे करोडपति नही बन सकते। यह अभाव जब कुण्ठा
रूप धारण करता है तब वह घृणा बन जाती है और घृणा पैसे से
कि सबसे प्रेरक तत्त्व है।"

जगतप्रकाश के मुख पर अब एक मुसकराहट आई, '...
कम्युनिज्म के प्रवर्तन में छोटे पूँजीपतियों का हाथ रहा है।"

"तुम सब जानते हो।" कुलसुम हँस पड़ी, 'खैर तो मैं अभाव...
कह रही थी और पहुँच गई कम्युनिज्म की व्याख्या पर। तो मैं...
वापस लौटा। जसवन्त की शादी की बाबत मैं इतना जानना चाहती...

"शादी बड़ी धूम धाम के साथ हुई, जसवन्त के करावन...
दोस्त शामिल हुए थे त्रिभुवन भी गया था। लेकिन ...
उसी रात को मुझे एक जरूरी काम से कानपुर के लिए चल देना पड़ा...
पूरी शादी मैं देख नहीं पाया।"

"मैंने तुम्हें शर्मिष्ठा को उपहार देने के लिए एक अंगूठी दी थी।"

"हाँ मैंने वह अँगूठी जसवन्त को दे दी थी, उसने वचन दिया...
वह तुम्हारी तरफ से वह अँगूठी शर्मिष्ठा को दे देगा।"

कुछ सोचकर कुल्सुम बोली, "जसवन्त अपने कौल का पक्का है...
उसने तुम्हें वचन दिया है तो वह जरूर उस वचन का पालन करेगा।
जसवन्त तुम्हें रामगढ में मिले, बहुत मुमकिन है उसके साथ शर्मि...
लाला देवराज हों—इसीलिए तो मैं रामगढ जाना चाहती थी। लेकि...
मजबूरी। तो यह जसवन्त—कम्युनिज्म इसका शौक नहीं है इसका...
भी नहीं है। वह शुद्ध रूप से उसका विश्वास है। भगवान् जाने उसका...
हश्र होगा!"

कुलसुम नाश्ता कर चुकी थी, वह उठ खड़ी हुई, 'किसका...
होता है, इसकी फिक्र ही क्यों की जाए? चलो, जरा शहर चलकर...
के लिए कुछ फल खरीद लूँ जबल्पुर में अच्छे फल मिलते नहीं।"

कुलसुम को बम्बई मेल पर छोड़कर जगतप्रकाश होस्टल लौटा...
उस समय कमरे में अकेला नहीं था, उसके साथ एक और आदमी...
जगतप्रकाश ने कभी न देखा था। इकहरे बदन का लम्बा-सा आदमी...
अवस्था लगभग तीस वर्ष की रही होगी। खादी की धोती और...
कुरता, कसा हुआ शरीर रंग कुछ खुलता हुआ। जमील ने उस आ...
जगतप्रकाश से परिचय कराया 'यह है कामरेड बाबूराम मिश्र ...
ट्रेड यूनियन के सेक्रेटरी। यह भी आज रात यहाँ से जाने वाला

कुल चौबीस आदमी उस समय तक आए थे। बाबूराम ने जमाल और जगत प्रकाश का स्वागत किया, "बहुत लोग शायद नही जा रहे हैं इस बार। लोग आराम से सोते हुए चल सकेंगे। मेरे कम्पाटमेण्ट म चार आदमी हैं, बशीर अहमद, सुखलाल चौधरी, शिवदुलारी देवी और मैं, आप दो हुए, इस तरह कुल मिलाकर छ आदमी हुए। बर्थें भी छ हैं, चार नीचे और दो ऊपर।"

कम्पाटमण्ट म अधकार था। बाबूराम ने नीचे की बर्थ से अपना बिस्तर ऊपर की बर्थ पर बिछाते हुए जगतप्रकाश से कहा, "आप अपना बिस्तर इस नीचे की बर्थ पर लगा लीजिए, जमील भाई ऊपर की बर्थ पर जम जाएँगे।"

कम्पाटमेण्ट म अभी तक कोई नहीं था, वे तीनों प्लेटफार्म पर आ गए। बाबूराम कह रहा था, 'मेरे तीनों साथी खाना खाने गए हैं, स्टेशन के बाहर, मुझे यहीं छोड गए हैं। मैं शाम को ही खा लिया करता हूँ। शिवदुलारी देवी कानपुर की प्रमुख काग्रेस कार्यकर्त्री हैं, वहीं बच्चे ... हैं। बडी दिलचस्प औरत हैं बला की हिम्मत वाली। देखने म सुन्दर लेकिन जैसे आग भरी है उनम। और यह सुखलाल चौधरी, ... बुलसा हुआ। इसका बाप बहुत बडा चमडे का व्यापारी है, एक छोटी टैनरी है उसकी। अपने बाप का सबसे छोटा लडका, लाड म पला हुआ। वकालत शुरू की है इसने दो साल पहले। लेकिन वकालत क्या करेगा, ... बन रहा है।"

काफी देर वे लोग प्लेटफार्म पर टहलते रहे, तरह-तरह की बातें हुए। ग्यारह बज रहे थे, तीनों अब कम्पाटमण्ट म आ गए। जगतप्रकाश को अब नीद आ रही थी, वह अपने बिस्तर पर लेट गया। लेटते ही नींद आ गई।

जिस समय जगतप्रकाश की चेतना फिर वापस लौटी, कम्पाटमेण्ट म शोर बढ गया हो। गाडी चलने की आवाज जब उसके कानों म आ रही थी, उसने आँखें खोलीं, उसने देखा कि कम्पाटमण्ट म प्रकाश फैला है। उसकी बर्थ के सामने वाली बर्थ पर एक चालीस-बयालीस वर्ष का आदमी बैठा हुआ कह रहा है, 'म कहता हूँ जब भी मौका है। जिला ...

नौता कर लेना चाहिए। बिना मुसलमानों का साथ लिये यह कांग्रेस हालत में कामयाब नहीं होगी।"

जगतप्रकाश उठकर बैठ गया। तो यही बशीरअहमद साहब एडवोकेट पुर के। कुर्ता और तंग मोहरी का अलीगढ़ी पायजामा पहने हुए गोरा छोटी-सी दाढ़ी, बातचीत में एक तरह का जोश। जमील जगतप्रकाश न बैठा था और बाबूराम बशीरअहमद की बगल में। जमील जगत की ओर घूमा, "तो एक नींद ले चुके बरखुरदार! बड़ी गहरी नींद थी, कब गाडी आई, कब यह डिब्बा उसमें लगा और कब गाड़ी चली पता ही नहीं चला तुम्हें। यह बशीरअहमद साहब हैं और यह जगत-साहब हैं, इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में प्रोफेसर!"

बशीरअहमद ने जगतप्रकाश को देखा, "बड़ी जल्दी प्रोफेसर बन गए, आपकी उम्र ही क्या है! मैं कह रहा था कि बिना जिन्ना साहब समझौता किए यह कांग्रेस कामयाब नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान के तमाम मान मुसलिम लीग के साथ हैं।'

उसी समय एक स्त्री-कण्ठ जगतप्रकाश को सुनाई पड़ा, 'लेकिन स्तान के सब हिन्दू तो हिन्दू महासभा के साथ नहीं हैं।"

जगतप्रकाश चौंक उठा, उसने घूमकर पीछे देखा जहाँ से यह आवाज़ थी। एक गोरी-सी स्त्री, स्वस्थ और सुडौल, आवाज़ में तेजी और मुख एक तरह की कठोरता—यही शिवदुलारी देवी है, जिनके सम्बन्ध में राम रह रहा था।

'मैं तो इस कांग्रेस को ही हिन्दू महासभा कहता हूँ। हिन्दू महासभा वाली जमात तो महज़ मखौल है।" बशीरअहमद बोला।

'वकील साहब! आपकी मुसलिम लीग में कौन सा हिन्दू मेम्बर—ज़रा इए तो! हिन्दू महासभा में कौन सा मुसल्मान मेम्बर है? कांग्रेस प हैं यह जमीलअहमद साहब है, खान अब्दुलगफ्फार खां हैं, मौलाना द हैं—और न जाने कितने बड़े-बड़े मुसलमान हैं।"

बशीरअहमद ने कुछ चुप रहकर कहा, 'आप बुरा तो न मानेंगी अगर सलियत पेश करूँ आपके सामने?"

'हाँ, हाँ, इसमें बुरा मानने की क्या बात है? यह तो साफ-साफ बात-

चीत है।"

वशीरअहमद ने कहा, "यह हिन्दू महासभा हिन्दुओं की कु... है, यह मुसलिम लीग मुसलमानों की कुदरती जमात है। लेकिन ... उन लोगों की जमात है जो गलतफहमियों में रहना चाहते हैं। आप... जिन लोगों के नाम गिनाए, वे सब गलतफहमियों के शिकार हैं। ... फहमियों में फायदा उन लोगों का होता है जिनकी तादाद ज्यादा है ... कुदरती जज़बात हिन्दुओं के एक है, मुसलमानों के बिलकुल अलग ... हैं। असल में कांग्रेस में उन्ही लोगों की बात चलेगी जिनका ना... है, यानी हिन्दुओं की और इसलिए मुसलमान अवाम कांग्रेस के सा... नहीं है। हो भी नहीं सकता। जिन लोगों के नाम आपने गिनाए हैं ... अवाम हैं ये अवाम के नेता नहीं हैं। पिछले आम चुनावों में ... साबित हो चुकी है, एक भी कांग्रेसी मुसल्मान चुनाव नहीं जीत सका..."

एकाएक शिवदुलारी भड़क उठी, "इस गरीब और अपढ़ मु... जनता को वे लोग जो नौकरियों और ओहदों के गुलाम हैं, भड़का... हैं। इसीलिए यह सब हाल्त है। महात्मा गांधी अगर आज जिन्ना ... जवाहरलाल नेहरू से बढ़कर मान लें तो जिन्ना साहब मुंह के बल ... आ जाएँ, और यह मुसलिम लीग धरी-की धरी रह जाए।"

वैसे ही जगतप्रकाश को जमील की बात याद हो आई—'जि... जलन किस बात की है? यही न कि महात्मा गांधी जिन्ना को अप... दूसरा दर्जा नहीं दे सकते।' यही बात शिवदुलारी ने बड़े मोटे ढंग ... थी, क्योंकि शिवदुलारी हिन्दू है, वह उस बहुमत की एक सज्ञा है ... जिन्ना त्रस्त है, जिससे वशीरअहमद डरता है।

अब वशीरअहमद के भड़कने की बारी थी, 'जिन्ना को गांधी ... दूसरा दर्जा नहीं चाहिए, उन्हें गांधी के मुकाबले बराबरी का दर्जा च... गांधी हिन्दू है, जिन्ना मुसलमान है। कोई एक दूसरे से बड़ा छोटा न... मैं कहता हूँ कि कांग्रेस के इस अड़न से और गांधी की इस ज़िद में ... बँटवारा होकर रहेगा। जिन्ना गांधी से कम किसी हालत में नहीं हैं।'

बातचीत अप्रिय रूप धारण कर रही है जगतप्रकाश को यह ... हुआ और तभी जमील बोला, 'वशीर साहब, आप यह तो मानिए ...

॥ गाधी की शख्सियत जिन्ना साहब की शख्सियत से ऊँची है, क्योंकि
ो इतना त्याग किया है और वह फकीरा की जिन्दगी बसर करते है,
ि जिन्ना साहब महलो मे रहते हैं, राजसी ठाट-बाट है उनके।"
- बशीरअहमद ने मुह बनाते हुए कहा, "जी, यह राजनीति फकीरा और
ग्या को शोभा नही देती, राजनीति तो राजसी ठाट-बाट वाला की चीज
।यह जो गाधी का त्याग फाग है यह सब निहायत धोखाधडी की चीज
र यह हिदुस्तान की तहज़ीब का मबसे बडा अज़ाब है क्योंकि यह
और मक्र की नीव पर कायम है।"
'अन्दर से मुसलिम लीगी बनना, ऊपर से कम्युनिस्टा की पैरवी करना
दिखाने के लिए काग्रेस का मेम्बर बनना—यह जाल-फरेब नही तो
है? सूप बोले तो बोले, चलनी क्या बोले, जिसमे बहत्तर छेद!"
दुलारी की हँसी कितनी विद्रूप और व्यग्यात्मक थी!
बशीरअहमद ने तमककर जवाब दिया, अपनी तरफ तो देखा,
ीजी का त्याग और सयम और साथ साथ यह छिनाला यह क्या है?"
शिवदुलारी उठ खडी हुई और उसने अपनी चप्पल उठाई, "वकील
हब, तुम मार खाओगे, ऐसा लगता है।"
तभी शिवदुलारी की बर्थ के सामने वाली बर्थ पर लेटे हुए चौधरी
लाल ने शिवदुलारी का हाथ पकडकर चप्पल छीन ली, "यही महात्मा
धी की अहिंसा का पालन कर रही है आप! दूसरा की बात तो बर्दाश्त
ी नही, फिर अग्रेजो की गोलिया की वर्षा को कैसे बर्दाश्त करगी?"
जमील ने बशीरअहमद से कहा, "कसी नासमझी की बात कह दी
पने, औरता के मुह लगना आपको शोभा नही देता।"
जगतप्रकाश सोच रहा था—सत्य, हर तरफ सत्य कहा जा रहा है,
रूप और निर्विवाद सत्य—ऐसा सत्य जो हरेक को बुरा लगता था, ऐसा
त्य जो दूसरो मे क्षम्य था लेकिन अपने अन्दर क्षम्य था। गाडी तेज़ी के
ाथ चली जा रही थी एक के बाद एक स्टेशन छोडते हुए और गाडी के
ाथ-साथ समय भी तेज़ी के साथ बीत रहा था। जगतप्रकाश ने घडी देखी,
ह बज गया था। गाडी धीमी पडने लगी थी, शायद कोई स्टेशन आ रहा
ा जहाँ तूफान एक्सप्रेस रुकती है। जगतप्रकाश लेट गया था, उसे फिर नीद

आने लगी थी। उसने देखा कि बशीरअहमद अपना बिस्तर ...
फिर उसने जमीलअहमद की आवाज सुनी, "अरे बशीर साहब, ...
कर रहे हो?"

"मैं किसी दूसरे कम्पाटमेण्ट मे जा रहा हूँ, इस बदतमीज औरत ...
साथ मैं इस कम्पाटमेण्ट म सफर नही कर सकता।"

शिवदुलारी चिल्ला उठी, "खरियत इसीमे है तुम और वाह ...
मेण्ट अपवित्र करो जाकर, नही तो तुम्हारी चाद हागी और मेरी चप्पल ..."

गाडी रुक गई थी, बाबूराम न बशीरअहमद को उनके सामान के ...
बगल वाले कम्पाटमेण्ट म पहुँचा दिया। जमील न अब अपना बिस्तर ...
वाली बथ पर बिछा दिया। गाडी चलने पर शिवदुलारी ने कहा, ...
हरामजादा कही का। बडा पाक-साफ बनता है, कानपुर से चलते ही ...
डोरे डालने लगा था तो मैंने डाट दिया था। कुत्ता कही का।"

जगतप्रकाश ने इस बार गौर से शिवदुलारी को देखा, और उसने ...
कि उस स्त्री म कही कोई जबदस्त आकषण है। कसा हुआ मुन्दर ...
लिये हुए गोरा बदन, कठोर दिखन वाले सुदर मुख पर कही किसी तरह ...
दृढता, बडी-बडी आखे जो अनायास ही चमक से भर जाती थी। वह एक ...
शिवदुलारी को देख रहा था। एक प्रौढ स्त्री, उसकी अवस्था तीस के ...
ऊपर रही होगी। उसके स्वर मे कठोरता थी, उसके स्वभाव म भी कठो...
थी, तभी शिवदुलारी बोल उठी, इस तरह क्या देख रहे हो मुन्ने!
मैंने कोई गलत काम कर डाला?"

"शायद नही, लेकिन मैं साच रहा था कि इतनी कडवी बातें करने की
क्या जरूरत थी? वस आदमी वह मुझे भी अच्छा नही लगा।"

शिवदुलारी के मुख पर आया तनाव एकबारगी ही जाता रहा ...
वहा मुसकराहट आ गई, और उस मुसकराहट के साथ शिवदुलारी का ...
ही बदल गया। उस मुसकान क पीछे कितनी कोमलता है! अब शिवदु...
बडी रूपवती दिख रही थी। "तुम अभी बच्चे हो, नक और अनुभव...
तुम पढ़े लिखे और सभ्य आदमी दिखते हो। जानते हो, हमारे समा...
सभ्यता के मान हात ह ढाग और छलावा। इसी सभ्यता के कारण हम ...
मानिया और बेईमानिया को बर्दाश्त कर लेते हैं, क्योंकि सभ्यता के ...

छपाव।" शिवदुलारी न अपना सिर हिलाया, "नही, इस सभ्यता नहा चलेगा। तुम जा कुछ हा, साफ-साफ अपन को जाहिर कर दा, जा कुछ ह, साफ-साफ उनस कह दा। सारी गुत्थिया खुल जाएँगी, त दूर हा जाएगी।" शिवदुलारी लेट गई।

भी सो गए थे, एक जगतप्रकाश जग रहा था। यह शिवदुलारी कौन ह सब क्या है? उसकी समझ मे नही आ रहा था। बाबूराम ने शिव-का जो परिचय दिया था वह उस औरत को समझ सकन क लिए काफी। और शिवदुलारी म भटककर उसका ध्यान कुल्सुम पर चला गया। ल्सुम के मुख पर भी तो कही कोई कठोरता है, लेकिन वह कुल्सुम पर आई कठोरता अधिकार की है, सयम की है। कुलसुम इस समय के पास हागी, उसकी देख भाल कर रही होगी। कुल्सुम के अन्दर भावना है, वह सहारा चाहती है वह सहारा बन सकती ह। यह सब -सोचत जगतप्रकाश को कब नीद आ गई, इसका उस पता ही नहीं चला।

जिस समय जगतप्रकाश की नीद खुली दिन काफी चढ आया था। एक छाटे-से स्टेशन पर खडी थी, एक पहाडी इलाका, उजाड और ला। जमील और बाबूराम गाडी के बाहर प्लेटफाम पर खडे बात कर। कम्पाटमेण्ट के फश पर एक स्टोव जल रहा था और स्टोव पर पानी रहा था। शिवदुलारी की आवाज़ जगतप्रकाश को सुनाई पडी, "क्या रा नाम क्या है? चाय पियाग?"

"चाय!" जगतप्रकाश बोला, "क्या आप चाय बना रही है?"

'हा, बाबूराम और उसका वह साथी—क्या नाम है उसका—वे ता खडे हैं, दोना चाय पी चुके और यह सुखलाल, यह मुर्दा-सा पडा सो है। इसे जगाती हूँ, और तुम हो। एक प्याला मैं पी चुकी हूँ, एक प्याला और पिऊँगी। हा, तो क्या नाम है तुम्हारा? तुम तो बच्चे दिखते इतनी कम उम्र मे तुम प्राफेसर बन गए, बडे विद्वान् दिखत हा!"

मेरा नाम जगतप्रकाश है।" जगतप्रकाश बाला, 'मैं जरा मुह हाथ लू, तब तक आप चाय बनाइए।"

जगतप्रकाश जब बाथरूम से बाहर निकला शिवदुलारी न सुखलाल जगा दिया था जा बैठा हुआ कह रहा था, "आप बडी अच्छी ह देवीजी,

मुवह उठते-उठते चाय तैयार। अव अगर अपने हाथों मुस
मैं घय हो जाऊँ।" सुखलाल के भद्दे-से मुख पर उस
मुसकराहट थी। शिवदुलारी के एक हाथ म चाय का प्याला था;
से उमने सुखलाल के गाल पर हल्की-सी चपत मारते हुए कहा,
वनते हो लो सीधी तरह चाय पियो।" शिवदुलारी ने चाय का
सुखलाल के हाथ म पकडा दिया। "यह जगत बाबू हैं, जानते हो,
यूनीवर्सिटी म प्राफेसर हैं, गोकि अभी विल्कुल बच्चे दिखते हैं।
बाबू, तुम्हारे लिए चाय बनाती हूँ।"

उस छोटे-से स्टेशन पर गाडी जो इतनी देर तक रुकी
गाडी के आने के लिए। दूसरी गाडी आकर बगल वाली लाइन
गई और शिवदुलारी ने चाय का प्याला जगतप्रकाश के हाथ में
फिर खुद अपने लिए चाय का प्याला बनाकर उसने चाय का
टोकरी म रख दिया। सुखलाल चाय पीकर बाथरूम म चला
दुलारी अपना चाय का प्याला लिये हुए जगतप्रकाश की बात में

तुम बडे नेक और भोले दिखते हो। यह सुखलाल, इस
छटा हुआ पाजी और आवारा है, लेकिन बडा भाग्यवान और
भी है। बाप ने दिन रात मेहनत करके लाखों रुपए पैदा किए, और
मर रहा है। न जाने कैसे वकील बन गया और तिकडम से इतना
भी चलने लगी है। इस नेता बनने की धुन सवार है हरिजनों म
लिखा आदमी है यह किसी-न किसी दिन कौंसिल का मेम्बर बन
जाएगा और फिर शायद यह मिनिस्टर भी बन जाए।' शिवदु
कराई, फिर उसके कान के नजदीक अपना मुँह लाकर उसने कहा, "
मुझसे शादी करना चाहता है, मुझे बेहद प्यार करता है।'

आश्चर्य से जगतप्रकाश ने शिवदुलारी को देखा, कितनी स्पष्ट
कितनी मुक्त! शिवदुलारी के मुख पर आई हल्की मुसकान
और मोहक लग रही थी। उसने पूछा, तो फिर इसमें बजा क्या है?

शिवदुलारी गम्भीर हो गई, कुछ चुप रहकर उसने कहा,
तो कुछ नहीं है लेकिन शादी विवाह कुछ अजीब-सा लगता है। मुझे
पता नहीं है, म कुछ थोडी-सी बदनाम भी हूँ। शादी करके

ो स तो छुटकारा मिल जाएगा। लेकिन " अपनी बात कहते-कहते
ः गई।
लेनिन क्या ?" जगनप्रकाश को शिवदुलारी की बात म दिलचस्पी
गी थी।
"समय म नही आता। मेरी जो जिन्दगी है, उससे मुझे असन्ताप नही
ी किसी तरह का बन्धन नही, कही किसी तरह की कुण्ठा नही। विवाह
क बाद या तो बन्धनो और कुण्ठाओ मे अपन को नष्ट कर देना होगा
र जाल, फरब, झूठ का सहारा लेना पडेगा।" फिर उसकी स्वाभाविक
राहट उसक मुख पर आ गई, "सच पूछो ता म इस आदमी मे प्रेम नी
रती।"
"तो क्या आप किमी दूसर स प्रेम करती है ?" जगतप्रकाश भी बात-
के जाल म फँस रहा था।
शिवदुलारी हँस पडी, "हा, मैं किसी दूसरे से प्रेम करती हूँ, और वह
दूसरा नही खुद मैं हूँ। मै सिफ अपन मे प्रेम करती हूँ। मेरी समझ म
आता कि लाग दूसरा से प्रेम कसे कर लेत है ? दूसरा को हम पसन्द
सकत हैं या नापसन्द कर सकते हैं। तुम तो प्रोफेसर हो, तुम्ही बतलाओ
अरे हा, तुम ता अभी बच्च हो, तुम्हारी शादी हा चुकी है ?"
जगतप्रकाश न सिर हिलाया, "अभी नही, लेकिन हाने वाली है।"
तब तुम क्या जवाब दाेगे मेरी बात का !" शिवदुलारी उठ खडी हुई।
लाल बाथरूम स बाहर आ गया था।
जो गाडी आई थी, वह चली गई, गाड न अब इस गाडी के चलन की
दी दा। जमील और बाबूराम भी अब कम्पाटमेण्ट मे आ गए।
गाडी शाम के समय रामगढ पहुँची। बाबूराम, जमील, मुखलाल और
तप्रकाश एक ही टण्ट म ठहरे। इनके टेण्ट की बगल मे एक छोटा-सा
ट था। शिवदुलारी उसमे ठहर गई।
एक साल पहले जगतप्रकाश त्रिपुरी के काग्रेस-अधिवेशन म गया था,
र जिन लागा के साथ वह गया था और ठहरा था, उनम और इन लोगो म,
निक साथ वह इस बार गया था और ठहरा था, कितना अन्तर था। जगत-
काश का पिछली बार केवल कौतूहल हुआ था, इस बार जीवन की एक

सुबह उठते-उठते चाय तैयार। अब अगर अपने हाथों मुझ
मैं मग्न हो जाऊँ।" सुखलाल के भद्दे से मुख पर उस समय
मुसकराहट थी। शिवदुलारी के एक हाथ में चाय का प्याला था,
से उसने सुखलाल के गाल पर हल्की-सी चपत मारते हुए कहा,
बनते हो, लो सीधी तरह चाय पियो।" शिवदुलारी ने चाय
सुखलाल के हाथ में पकड़ा दिया। "यह जगत बाबू हैं, जानते हो,
यूनीवर्सिटी में प्रोफेसर है, गोकि अभी बिल्कुल बच्चे दिखते हैं।
बाबू, तुम्हारे लिए चाय बनाती हूँ।"

उस छोटे से स्टेशन पर गाड़ी जो इतनी देर तक रुकी थी
गाड़ी के आने के लिए। दूसरी गाड़ी आकर बगल वाला लाइन पर
गई और शिवदुलारी ने चाय का प्याला जगतप्रकाश के हाथ में
फिर खुद अपने लिए चाय का प्याला बनाकर उसने चाय का सामान
टोकरी में रख दिया। सुखलाल चाय पीकर बाथरूम में चला गया।
दुलारी अपना चाय का प्याला लिए हुए जगतप्रकाश की बगल में

'तुम बड़े नेक और भोले दिखते हो। यह सुखलाल इस तुम
छटा हुआ पाजी और आवारा है, लेकिन बड़ा भागवान और
भी है। बाप ने दिन रात मेहनत करके लाखों रुपए पैदा किए, और
कर रहा है। न जाने कैसे वकील बन गया और तिकड़म से इसकी
भी चलने लगी है। इसे नेता बनने की धुन सवार है, हरिजनों में
लिखा आदमी है, यह किसी-न-किसी दिन कौंसिल का मेम्बर
जाएगा और फिर शायद यह मिनिस्टर भी बन जाए।" शिवदुलारी
कराई, फिर उसके कान के नज़दीक अपना मुँह लाकर उसने
मुझसे शादी करना चाहता है, मुझे बेहद प्यार करता है।"

आश्चर्य से जगतप्रकाश ने शिवदुलारी को देखा, कितना स्पष्ट
कितनी मुक्त। शिवदुलारी के मुख पर आई हल्की मुसकान
और मोहक लग रही थी। उसने पूछा, तो फिर इसमें बुरा क्या है'

शिवदुलारी गम्भीर हो गई, कुछ चुप रहकर उसने कहा,
तो कुछ नहीं है लेकिन शादी विवाह कुछ अजीब-सा लगता है।
पता नहीं है, मैं कुछ थोड़ी-सी बदनाम भी हूँ। शादी कर

ो स तो छुटकारा मिल जाएगा। लेकिन " अपनी बात कहते-कहते
ो गई।

लेकिन क्या ?" जगनप्रकाश को शिवदुलारी की बात मे दिलचस्पी
ी थी।

"समझ म नही आता। मेरी जो जि दगी है, उससे मुझे असन्तोष नही
ो किसी तरह का ब धन नही, कही किसी तरह की कुण्ठा नहा। विवाह
के बाद या तो ब धनो और कुण्ठाओ मे अपने को नष्ट कर देना होगा
र जाल, फरेब, झूठ का सहारा लेना पडेगा।" फिर उसकी स्वाभाविक
राहट उसके मुख पर आ गई, "सच पूछो ता मैं इस आदमी स प्रेम भी
रती।"

"तो क्या आप किसी दूसर मे प्रेम करती है ?" जगतप्रकाश भी बात-
के जाल म फँस रहा था।

शिवदुलारी हँस पडी, "हा, मैं किसी दूसरे से प्रेम करती हूँ, और वह
दूसरा नही, खुद मैं हूँ। मैं सिफ अपने स प्रेम करती हूँ। मेरी समझ म
आता कि लाग दूसरो मे प्रेम कस कर लते है ? दूसरा को हम पस द
सकते हैं या नापस द कर सकते है। तुम तो प्राफेसर हो, तुम्ही बतलाओ
अरे हा, तुम ता अभी बच्चे हो, तुम्हारी शादी हा चुकी है ?'

जगतप्रकाश न सिर हिलाया, "अभी नही, लकिन हाने वाली है।"

"तब तुम क्या जवाब दागे मेरी बात का !" शिवदुलारी उठ खडी हुई।
लाल बाथरूम स बाहर आ गया था।

जो गाडी आई थी, वह चली गई, गाड न अब इस गाडी के चलने की
ी दी। जमील और बाबूराम भी अब कम्पार्टमेण्ट म आ गए।

गाडी शाम के समय रामगढ पहुँची। बाबूराम, जमील, सुखलाल और
तप्रकाश एक ही टण्ट मे ठहरे। इनके टेण्ट की बगल म एक छाटा-सा
ट था। शिवदुलारी उसम ठहर गई।

एक साल पहले जगतप्रकाश त्रिपुरी के काग्रस-अधिवेशन म गया था,
र जिन लागा के साथ वह गया था और ठहरा था, उनम और इन लोगो मे,
नके साथ वह इस बार गया था और ठहरा था, कितना अन्तर था। जगत-
काश को पिछली बार केवल कौतूहल हुआ था, इस बार जीवन की एक

बदनामी से तो छुटकारा मिल जाएगा। लेकिन " अपनी बात कहते-कहते वह रुक गई।

"लेकिन क्या ?" जगनप्रकाश को शिवदुलारी की बात मे दिलचस्पी होने लगी थी।

"समझ म नहा आता। मेरी जो जिन्दगी ह, उसमे मुझे असन्ताप नही है, यहा किसी तरह का ब धन नही, वही किसी तरह की कुण्ठा नहीं। विवाह करने क बाद या ता ब धना और कुण्ठाओ म अपने को नष्ट कर दना होगा या फिर जाल, फरेब, झूठ का सहारा लेना पडेगा।" फिर उसकी स्वाभाविक मुसकराहट उसके मुख पर आ गई, "सच पूछो ता मै दस आदमी मे प्रेम भी नहा करना।"

"तो क्या आप किसी दूसर से प्रेम करती ह ?" जगतप्रकाश भी बात-चीत क जाल म फस रहा था।

शिवदुलारी हँस पडी, हा, मैं किसी दूसरे म प्रेम करती हूँ, और वह कोई दूसरा नही, खुद मैं हूँ। मै सिफ अपने म प्रेम करती हूँ। मेरी समझ म नहीं आता कि लाग दूसरो म प्रेम कसे कर लेते है ? दूसरा को हम पस द कर सकत हैं या नापस द कर सकते है। तुम तो प्रोफेसर हो, तुम्ही बतलाओ न। अरे हाँ, तुम ता अभी बच्चे हा, तुम्हारी शादी हो चुकी है ?"

जगतप्रकाश न सिर हिलाया, "अभी नही, लेकिन हान वाली है।"

"तब तुम क्या जवाब दोग मेरी बात का !" शिवदुलारी उठ खडी हुई। मुखलाल बाथरूम से बाहर आ गया था।

जो गाडी आई थी, वह चली गई, गाड ने अब इस गाडी के चलन की सीटी दी। जमील और बाबूराम भी अब कम्पार्टमेण्ट मे आ गए।

गाडी शाम के समय रामगढ पहुँची। बाबूराम, जमील, मुखलाल और जगतप्रकाश एक ही टण्ट म ठहरे। इनके टेण्ट की बगल मे एक छोटा-सा टण्ट था। शिवदुलारी उसमे ठहर गई।

एक साल पहल जगतप्रकाश त्रिपुरी के कांग्रेस-अधिवेशन म गया था, और जिन लोगो के साथ वह गया था और ठहरा था, उनमे और इन लोगा मे, जिनके साथ वह इस बार गया था और ठहरा था, कितना अन्तर था। जगतप्रकाश को पिछली बार केवल कौतूहल हुआ था, इस बार जीवन की एक

ताजगी अनुभव हुई। इस बार वह अपने वर्ग के लोगों के बीच था, अपनों के बीच म था, जबकि पिछली बार वह नितान्त परायों के बीच म था। दूसरे दिन सुबह के समय वह जमील के साथ घूमने निकल पड़ा। यह स्थान त्रिपुरी से अधिक सुन्दर लग रहा था उसे। चारों ओर पवनमालाएँ, और बडी सुरुचि के साथ सजा हुआ वह विशाल नगर जो कुछ दिन पहले खड़ा किया गया था और फिर कुछ दिनों बाद मिट जाना था।

लेकिन रामगढ़ के अधिवेशन म वह एक घुटन सी अनुभव कर रहा था। हिंसा पर विश्वास करने वाला दल सुभाषचन्द्र बोस की अध्यक्षता म कांग्रेस से अलग हो गया था। इस बार की कांग्रेस म वही लोग भाग ले रहे थे जो गांधी के समर्थक थे जिनके लिए गांधी का वाक्य वेद-वाक्य था, ब्रह्म था। गांधी का व्यक्तित्व और गांधी का नेतृत्व उस उस समस्त वातावरण पर छाया हुआ था।

रास्ता चलते हुए जगतप्रकाश की दृष्टि जसवन्त कपूर पर पड़ी जो शर्मिष्ठा के साथ एक टैण्ट के बाहर निकल रहा था। जगतप्रकाश को देखते ही जसवन्त चिल्ला पड़ा, 'अरे तुम! मैं तो तुम लोगों को ढूँढने के लिए निकलने की सोच रहा था। कुलसुम कहा है?"

"कुलसुम नहीं आई। वह इलाहाबाद तक तो आई थी, लेकिन वहाँ से वह जबलपुर वापस चली गई। परवेज बीमार है। त्रिभुवन महता और मालती कलकत्ता चले गए वहा होते हुए आने का कार्यक्रम था उनका। वे तो आ गए होंगे या आज शाम को आएँगे। कमलाकान्त ने अपने को राजनीति से अलग कर लिया है।'

जसवन्त मुसकराया, "अच्छा किया राजनीति के वर्तमान दौर का स्वरूप उसके जीवन का क्रम है भी नहीं। तुम इन जमीलअहमद के साथ ठहरे हो या और किसी के साथ?"

हम लोग पांच आदमी हैं। चले तो साथ में छ थे, लेकिन एक ने हमारा साथ छोड़ दिया। तुम्हारा टेण्ट देख लिया है फिर आऊँगा तुम्हारे यहां। तुम्हारी पत्नी तुम्हारा इन्तजार कर रही है।"

जसवन्त ने घूमकर शर्मिष्ठा को पुकारा, अरे शर्मिष्ठा! देखो तो, इन्हें पहचानती हो?"

र्मिष्ठा ने आगे बढ़कर जगतप्रकाश को नमस्ते की। वह बोली, "रहे
आ तो है, बहुत पहचाने हुए लगते हैं। यह याद नहीं आ रहा कि कहाँ
खा है।"

जगतप्रकाश ने शर्मिष्ठा की नमस्ते का जवाब देते हुए कहा, "बम्बई
देखा है। इन जसवन्त के साथ पहले दिन में ही गया था आपके यहाँ।"

अरे याद आ गया! आप कुलसुम कावसजी के यहाँ इनके साथ ठहरे
। वहीं शायद इन्हें भी देखा था।" जमील की ओर इशारा करते हुए उसने
हा, "आप हमारे विवाह में भी गये थे, जसवन्त ने मुझे बताया था यह
गूठी देते हुए जो कुलसुम बहन ने आपसे भिजवाई थी।" शर्मिष्ठा ने अपनी
गली वाली अँगूठी दिखाते हुए कहा, "बड़ी प्यारी अँगूठी है। मैं कुलसुम से
लना मिलना चाहती हूँ।"

'इस बार वह नहीं आईं।" जगतप्रकाश बोला "अच्छा अब हम लोग
लते हैं। आप लोग शायद घूमने-घामने जा रहे हैं। हम लोग तो यहाँ का
एक चक्कर लगाकर लौट रहे हैं।"

शर्मिष्ठा बोली, "आप लोग फिर कभी आइए, आज शाम को ही।
चाय हमारे साथ ही पीजिएगा, मैं खुद बनाऊँगी।"

जसवन्त के मुख पर एक मुसकराहट आई, जो मौन भाषा में जगत-
प्रकाश से कह रही थी—देखा तुमने! मैंने गलत चुनाव तो नहीं किया
शर्मिष्ठा से विवाह करके!' फिर उसने जगतप्रकाश से कहा, "आना
जरूर, नहीं तो इन्हें बड़ा दुःख होगा," और वह शर्मिष्ठा के साथ चला
गया।

शर्मिष्ठा कितनी बदल गई है! पिछली बार जब जगतप्रकाश ने उसे
देखा था, वह एक तेज-तर्रार मर्दानी औरत दिख रही थी, और अब वह
कोमल, विनयशील गुड़िया-सी दिख रही थी। उसके मुख पर, उसकी सारी
देह में सुकुमारता की छाप लग गई थी। जगतप्रकाश से न रहा गया,
उसने जमील से कहा, "जमील काका! यह शर्मिष्ठा इतनी अधिक कैसे
बदल गई? यह तो काफी तेज और उद्दण्ड थी।"

"बरखुरदार! यह औरत जसवन्त से प्रेम करती है। प्रेम के बराबर
कोमल चीज और नहीं होती है दुनिया में।"

एकाएक जगतप्रकाश के सामने शिवदुलारी की तसवीर उभर आ
शायद किशोरावस्था म उतनी ही सुन्दर रही होगी जितनी यह नमिता
लेकिन अब उसके सारे अस्तित्व म एक प्रकार की कठोरता भर गइ है। व
शिवदुलारी किसी स प्रेम नही करती, उसने जगतप्रकाश स स्वय कह
था। शिवदुलारी का कहना था कि वह प्रेम कर ही नही सकता।

कुछ दूर चलने के बाद जमील की मुलाकात बशीरअहमद से हो ग
जमील न कहा, 'अरे बशीर साहब, आपसे तो मिलना ही नही हुआ। कि
टेण्ट म ठहरे है आप ?"

'डॉक्टर हमीद का साथ हो गया था, तो उन्हीके साथ ठहर गया
डॉक्टर हमीद इलाहाबाद मे ए० आई० सी० सी० के एक जिम्मेदार सं
टरी ह, पडित जवाहरलाल नेहरू के खास आदमी। उनके साथ ठहरन
फायदा यह होगा कि पण्डित नेहरू से मुलाकात हो जाएगी। चलो मेरे सा
मै तुम्हे डाक्टर हमीद स मिला दू बडे काम के आदमी हैं।" उन्
जगतप्रकाश स कहा "माफ कीजिएगा जो मैं इन्हे आपके साथ से लिये
रहा हूँ, आप इनके खाने का इन्तजार न कीजिएगा।"

जमील ने जगतप्रकाश स कहा 'जाओ बरखुरदार, मैं एक घण्टे
वापस आ जाऊँगा, खाना मैं तुम लोगो को साथ ही खाऊँगा।"

जगतप्रकाश जब अपने टेण्ट म वापस लौटा, बाबूराम वहाँ मौजूद था
वह भी थोडी देर पहले वापस लौटा था। उसने जगतप्रकाश से पू
"जमील भाई नही आए तुम्हारे साथ ?"

"उन्हे रास्ते मे बशीरअहमद मिल गए, उन्होने रोक लिया, घण्टे
बाद लौटेंगे।"

बाबूराम मुसकराया, "यह बशीर अहमद! ऊपर से तो बडे ईमानदा
और धुन के पक्के आदमी दिखते है, लेकिन वसे बडे बने हुए मतलबी औ
खुदगर्ज हैं। फिर कट्टर मुसलमान भी हैं। शिवदुलारी जो उनसे उखड ग
तो उसका कोई कसूर नही था।"

जगतप्रकाश काफी थका हुआ था, दोपहर के बारह बजे थ। इतने
शिवदुलारी ने टेण्ट म प्रवेश किया, "क्यो बाबूराम! खाना बनाने जा र
हैं, तुम्हारे लिए भी बना लू ?" तभी उसकी नजर जगतप्रकाश पर पडी

रे, तुम भी आ गए! तुम्हारे लिए भी खाना बनाए लेती हूँ। वह मुसलाल
र वह तुम्हार साथी—क्या नाम है उनका—ये लोग कांग्रेस की भोजनशाला
खा लेंगे। तो तुम दोनो कहीं जाना नही।" और शिवदुलारी चली गई।

शिवदुलारी के जाने के बाद बाबूराम न कहा, "यह शिवदुलारी, इनके
य म रस है, बडा स्वादिष्ट खाना बनाती ह यह। तबीयत खुश हो जाएगी
तुम्हारी। बडी उदार हैं यह, बडी दयावान, बडी खातिरदार! लेकिन
का मिजाज बडा तज है।"

जगतप्रकाश के अन्दर शिवदुलारी के प्रति उत्सुकता जग रही थी,
ह तो दिखता है। कहीं कुछ बडी कठोरता ह इनके जीवन म।"

बाबूराम ने एक ठडी साँस ली, "परिस्थिति! कुरूप और कठोर
रिस्थिति! इनके पिता एक छोटे-से ताल्लुकेदार थे अवध के, ठाकुर
विक्रमसिंह। रईसी ठाट, रईसी अहम्मन्यता, रईसी लम्पटता। उन्होंने
पहाडी नामक औरत बठा ली थी, उसीकी लडकी है यह शिवदुलारी।
ना परिवार और अपना इलाका छोडकर वह लखनऊ मे बस गए थे।
लडकी को उन्होंने लिखाया-पढाया, बी० ए० पास करवाया। लेकिन
इसका विवाह नही कर सके, उनकी मृत्यु हो गई। इसकी माता की मृत्यु
दो साल पहले हो चुकी थी। पिता की मृत्यु के बाद यह अकेली रह गई,
राश्रित! इसके छोटे-छोटे सौतेले भाई इसके काका के साथ रहते थे। ता
के काका लखनऊ आए इसे साथ ले चलने के लिए, लेकिन यह उनके
थ नहीं गई। उस समय इसकी अवस्था बाईस-तेईस वर्ष की रही होगी।
नपुर म कन्या विद्यालय म अध्यापिका का विज्ञापन निकला था, इसने
हाँ दरख्वास्त दी और वहाँ नियुक्त हो गई। उसके बाद इसने अपने पिता के
रिवार का मुख नहीं देखा, उन लोगो से यह घृणा करती है।" फिर धीमे-से
र में उसने कहा, "भगवान् जाने खबर कहाँ तक सच है, कहा जाता है कि
इसके सौ काका ने लखनऊ आन पर इसके साथ बलात्कार किया था।"

आश्चर्य से जगतप्रकाश की आँखें फैल गई, "क्या यह भी सम्भव है?"

उदास स्वर म बाबूराम बोला, "दुनिया मे असम्भव कुछ भी नहीं है।
स कन्या विद्यालय म इसकी नियुक्ति हुई थी उसके मैनेजर से इसका
बध सम्बध हो गया था, ऐसा लगता है, क्योंकि एक दिन मनेजिंग कमेटी

म उन्हें जूतों से मारा गया था। भगनजि कमटी के सदस्यों में मगर झगडा था, वह वडा वर्द्धमान आदमी था। दस तो कुछ हुआ नहीं, म को इस्तीफा देना पडा। तब म यह उस कन्याविद्यालय की हर्मन्द्र मनजर है, सब-कुछ ह। इतनी वदुता के बाद भी वह औरत अपन वाली नकी सँजाय हुए ह, यही क्या कम ह? अच्छा चलो, अब नहा भूख लगी ह, जल्दी से खाना खा ल।"

वास्तव में इतना स्वादिष्ट खाना जगतप्रकाश न अपनी याद में खाया था। बिलकुल सादा निरामिष भोजन, रोटी, दाल-चावल और दो की सब्जियां। लेकिन यह सब कितना स्वादिष्ट था! बाबूराम न ठी कहा था, शिवदुलारी के हाथ म रस ह। शिवदुलारी वडे आग्रह के सा दोनों को खाना खिला रही थी। वह हस रही थी, बातें कर रही थी। किसी तरह की कुण्ठा नहीं, कहीं किसी तरह की कटुता नहीं, कहीं दिखा का बनावटीपन नहीं। जगतप्रकाश को वह स्त्री अच्छी लग रही थी, समस्त परिवश के साथ। शायद यही स्वाभाविक और उन्मुक्त जीवन है

जगतप्रकाश को इस बार के काग्रेस अधिवशन म इतनी सरगर्मी दिखी जितनी उस त्रिपुरी वाले पिछले अधिवेशन मे दिखी थी। सुब्ज कमेटियो के अधिवेशनो म जसवन्त और जमील की सहायता से वह तो गया, लेकिन उसे लगा कि सब-कुछ सोया-सोया-सा है। महात्मा और ब्रिटिश सरकार के बीच बातचीत म झटके-पर झटके लग रहे वैधानिक रूप से बिना जनता की इच्छा के भारतवष विश्व-युद्ध म सम्मि कर लिया गया था, हिन्दुस्तान म फौज की भर्ती तेजी के साथ हो रह और काग्रेस के अन्दर से कहीं भी किसी तरह के आन्दोलन अथवा मरकार के साथ सघर्ष की बात नहीं उठ रही थी। सब-कुछ महात्मा के हाथ में सौंप दिया गया था। महात्मा गाधी के उत्तराधिकारी जवाहर नेहरू और उनके तथाकथित सेनापति सरदार वल्लभभाई पटेल— आदमी दिखते थे और इनकी बातें सुनी भी जाती थीं, बाकी सब लोग पुतलियों की तरह सिर हिलाते थे, हाथ उठाते थे।

जमील शायद ठीक ही कहता था, देश स्वतन्त्रता के युद्ध के लिए नहीं है। आखिर यह देश है क्या? यह देश गाधी का अनुयायी है, जो

ही नहा, यह देश गाधी का मानसिक गुलाम है—मगर यह सच मान लिया जाए कि देश का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र सस्था काग्रेम है। राजनीति के रामच पर गाधी के आने के बाद ही तो देश ने स्वतत्रता का सपना देखा है, गाधी के आने के पहले औपनिवेशिक स्वराज्य ही चाहते थे। आज भी देश के पढे लिखे लोगो का एक वग ब्रिटेन के शासन से मुक्त नहीं होना चाहता। लेकिन वह वग बहुत छोटा है, देश की कोटि-कोटि जनता गाधी को देवता मानती है, गाधी जो कुछ कहता है इस जनता के लिए वह वेद-वाक्य है।

देश की चेतना क्या गाधी मे सिमटकर जड और निष्क्रिय हो गई है? गाधी का वह व्याख्यान जगतप्रकाश ने ध्यान मे सुना था जो उन्होने सब्जेक्ट्स कमेटी मे दिया था। गाधी का निणय ही देश का निणय था। गाधी डिक्टेटर है, डिक्टेटर देवता हुआ करता है। हिटलर डिक्टेटर है, स्तालिन डिक्टेटर है, मुसोलिनी डिक्टेटर है। जनतत्र समाप्त हो रहा है।

अपने अन्दर वाली मथन से जगतप्रकाश छटपटा रहा था, अपने अन्दर वाले अनक प्रश्नो और शकाओ का उसे उत्तर नही मिल रहा था। उसका मन इस काग्रेम के अधिवेशन से बुरी तरह ऊब रहा था। फिर काग्रेस के खुले अधिवेशन का दिन आ पहुँचा।

उस दिन सुबह के समय जब वह सब्जेक्ट्स कमेटी की मीटिंग से वापस लौटा, वह अपने अन्दर एक घुटन अनुभव कर रहा था। वह घुटन उसके प्राणों की थी, वह घुटन काग्रेस अधिवेशन के वातावरण की थी या वह घुटन वहाँ की वायु की थी, उसकी समझ म नही आ रहा था। उन्नीस तारीख की शाम का खुला अधिवेशन होने वाला था। दोपहर के बाद जमील ने उससे कहा, "चलो बरखुरदार, एक दफा फिर से काग्रेस के इस नगर का चक्कर लगा लिया जाए। यहाँ से स्पेशल बोगी तो परसो सुबह रवाना होगी, लेकिन मैं एक दिन के लिए कलकत्ता जाना चाहता हूँ। लिहाज़ा कल सुबह मुझ कलकत्ता के लिए रवाना हो जाना है। यह काग्रेस अधिवेशन तो औपचारिक दिखावा है, आज की सब्जेक्टस कमेटी के बाद मेरे लिए यह काग्रेस अधिवेशन खत्म हो चुका।"

तयार होते हुए जगतप्रकाश ने कहा, "मुझे बाईस तारीख को महोना

पहुँचना है। कल तुम्हारे साथ कलकत्ता पहुँचकर रात के लिए बनारस गाडी पकड लूगा। इक्कीस की सुबह बनारस और वाइस का अपने पहुँच जाऊँगा।"

दोनो निकल पडे। जमील न आसमान की तरफ देखते हुए 'आसार तो अच्छे नजर नही आ रहे बरखुरदार! वह देख रहे हो की तरफ से बादल आ रहे है, मटीले और पीले रग के। इन बादलो मे छिपा होता है।"

जगतप्रकाश न आसमान की ओर देखा, सचमुच कुछ पीले और रग की धुध से उत्तर का आकाश भर गया था। साथ ही हवा लगी थी और उस हवा मे ठडक थी। उसने कहा, "क्या तुम समझते हो रात तक पानी बरसेगा?"

"रात तक नही बरखुरदार, हवा की रफ्तार जिस तेजी के साथ रही है उससे तो यह दिखता है कि घण्टे-आध घण्टे मे ही यह घटा जाएगी।"

पाच बजते-बजते चारो ओर अधकार छा गया। दूर से पीले मटमैले दिखने वाले बादल एकाएक सिर पर आकर काले और डरावने गए थे। बूदे पडनी आरम्भ हो गइ। उस समय ये लोग काग्रेस पण्डाल पास पहुँच गए थे। जैसे ही इन्होने अधिवेशन के अहाते म प्रवेश किया की वर्षा होने लगी। काग्रेस के प्रतिनिधिगण एकत्रित हो रहे थे और जोर पकडता जा रहा था। सभा स्थल एक समतल मैदान था जिसके थोर पहाडिया थी। अब पानी मैदान म भरने लगा, वर्षा और भी तेज जा रही थी। प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित हो गया था। लोगो के मुख घबराहट थी।

ठीक साढे पाच बजे उस मूसलाधार वर्षा मे खुले मैदान म वह अधि वेशन आरम्भ हुआ। सब लोग खडे थे, बैठने का कोई प्रश्न ही नहा था। वह मैदान एक तालाब-सा बन गया था। औपचारिक ढग से स्वागताध्यक्ष और काग्रेसअध्यक्ष के भाषण पढे गए, उसके बाद उस दिन का प्रस्ताव रखा गया और पास हो गया। जगतप्रकाश देख रहा था कि इस काल म भी नियम का पालन किया जा रहा है। पानी अब घुटनो तक

या था। प्रतिनिधियों की भीड़ अब आधी रह गई थी। मूल प्रस्ताव पास होने के बाद अधिवेशन स्थगित कर दिया गया।

जगतप्रकाश उस लौटती भीड़ में अपने साथियों से छूटकर अकेला रह गया। लोगों की सहायता करता, उस प्रलय के दृश्य को देखता, भीगता वह रहा था। हर तरफ़ जल प्रलय, हर तरफ़ घबराहट। जब वह अपने कैम्प में वापस लौटा, बाबूराम और सुखलाल वापस आ गए थे, बुरी तरह भीगे हुए और कांपते हुए। शिवदुलारी भी वहीं थी और कह रही थी, "ऐसी वर्षा तो मैंने देखी ही नहीं, हर तरफ़ पानी ही-पानी। यह तम्बुओं का बनाता का शहर, क्या होगा?"

बाबूराम बोला, "होगा सब-कुछ ठीक ही। युद्ध-क्षेत्रों में जब इस तरह वर्षा होती है या इससे भी अधिक भयानक हिमपात होते हैं तब भी सब ठीक रहता है। मनुष्य इन सब उत्पातों को सहने का आदी है, रात में सब कुछ ठीक हो जाएगा। कोई बरसात का मौसम थोड़े ही है।"

सुखलाल कपड़े बदल रहा था, उसने कहा, "हां, यह फागुन की वर्षा बड़ी खराब होती है। पानी तो रुक जाएगा ही, लेकिन आधी रात या सुबह तक रुक पाएगा, बादलों से और वर्षा की तेजी से तो ऐसा लगता है। अब सवाल खान-पीने का है। कैसे होगा? मैंने तो दोपहर का खाना ही नहीं खाया, अब भूख लग रही है।"

अब जमील भी आ पहुंचा, वह बुरी तरह कांप रहा था। वह बोला, "क्या बतलाऊं, अगर थोड़ी-सी चाय मिल सकती तो बड़ा अच्छा होता, ढूंढता रहा लेकिन कहीं नहीं मिली।"

शिवदुलारी बोली, "चाय तो मैं बना देती, लेकिन क्या बतलाऊं, स्टोव का तेल खत्म हो गया है, और चूल्हा जल नहीं सकता। इस बरसते पानी में तेल कहां ढूंढा जाए? समझ में नहीं आता क्या किया जाए? पानी तो रुकने का नाम नहीं लेता है। आज रात उपवास ही करना होगा हम लोगों को, ऐसा लगता है।"

जगतप्रकाश अभी तक चुप था, वह बोला, "आप लोग कपड़े बदलिए, मैं बाज़ार से पूड़ी मिठाई लिये आता हूं।" और इसके पहले कि कोई कुछ कहे वह घूमकर चल दिया।

बाजार वहा से करीव आधा मील की दूरी पर था। पानी अब व
हो गया था। वाजार पहुँचकर उसने पूडी मिठाई ली और वापस हो
रात और वरसात का गहरा अँधेरा—इस सबमे उसे डेढ घण्टा लग
टेण्ट तक लौटते लौटते उसके अन्दर सरदी की एक लहर दौड गई था,
दात किटकिटा रहे थे। लेकिन वह अपने अन्दर समस्त साहस बटोर
अभी कुछ देर पहले वावूराम ने ही तो कहा था कि युद्धक्षेत्र में
वर्षा और हिमपात के समय मनुष्य इन प्राकृतिक विपत्तियों
करता है।

जब वह अपने टेण्ट मे पहुँचा, नौ बज गए थे। पूडी मिठाई र
उसने कहा, "उफ, भयानक वर्षा है! लेकिन वह शिवदुलारीदेवी ?"

"वह अपने टेण्ट म चली गई है।" जमील बोला, "अब तुम कप
डालो, तुम बहुत भीगे हो—तुम्हारे दात किटकिटा रहे है।"

"कपडे बदलकर इस पानी म फिर से भीगना होगा। नहीं, मैं
खाना दिए आता हूँ, आप लोग खा लीजिए। मेरा हिस्सा रख दीजिए
इतमीनान के साथ खाऊँगा।"

शिवदुलारी कपडे बदलकर लेट गई थी। जगतप्रकाश को दे
वह उठ खडी हुई। जगतप्रकाश का शरीर अब ठड से बेतरह काप रह
उसने टूटे स्वर म कहा, 'लीजिए, मैं पूडी मिठाइ ले आया हूँ।"

शिवदुलारी ने जगतप्रकाश की हालत देखते हुए कहा, "अरे!
अभी तक कपडे नही बदले। तब से भीग ही रहे हो!" वह जगतप्रका
निकट आ गई, 'अरे, तुम तो काप रह हो! तुम सरदी खा गए हो,
इन कपडो को।"

जगतप्रकाश की चेतना अब जैसे जवाब देने लगी थी, लडखडा
म उसने कहा, "अपने टेण्ट म जाकर मैं कपडे बदलता हूँ।"

"अपने टेण्ट तक पहुँच सकोगे मुझे शक है, जल्दी से कपडे उता
उसने जगतप्रकाश का हाथ पकडते हुए कहा, "अरे, शरीर बर्फ हो रहा है
उसने खुद जगतप्रकाश की वण्डी उतारी, कुरता उतारा। फिर वह अपनी
धोती ले आई, 'लो, इसे पहन लो।" तौलिए स उसने जगतप्रकाश का
पोछा।

जगतप्रकाश का सारा शरीर सुन-सा पड गया था। शिवदुलारी ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया, फिर उसने अपना दुशाला उसे उढा दिया। जगतप्रकाश अब भी काँप रहा था, सरदी जस उसके शरीर म घुस गई थी। और तभी जगतप्रकाश को लगा कि उसके शरीर म सेंक पहुँच रहा है उसकी चेतना वापस लौट रही है। उसे यह अनुभव करने मे थोडा-सा समय लगा कि निवस्त्रा शिवदुलारी बिस्तर म शाल के अन्दर उसे चिपकाए लेटी है। वह कह उठा, "अरे-अरे, यह क्या ?" उसन उठने की कोशिश की।

शिवदुलारी न अपने हाथो से जगतप्रकाश का शरीर कस लिया, "चुप रहो, यहा गरम कुछ नही है सिवा मेरे शरीर के। तुम्हारे शरीर की ठिठुरन जाती रही है। मैं तुम्हारी डॉक्टर हूँ, जसा मैं कहूँ वैसा तुम्हे करना होगा।"

जिस समय वह शिवदुलारी के बिस्तर से बाहर निकला वह पूणरूप स स्वस्थ था। शिवदुलारी न उससे कहा, "पानी तो अब भी बहुत तेज़ बरस रहा है, कैसे जाओगे ? लेकिन तुम्ह जाना तो होगा ही। अब मैं खाना खाऊँगी, मुझे बडी भूख लगी है।"

सिर झुकाए हुए जगतप्रकाश ने कहा, "अब थोडी-सी ठडक से कुछ नही होगा। टण्ट मे जाते ही कपडे बदल लूगा और खाना खाकर सो जाऊँगा।"

शिवदुलारी न जगतप्रकाश को विदा करते हुए कहा, "जो कुछ हुआ उसे भूल जाना। मैं बदनाम हूँ, गिरी हुई हूँ। और तुम अभी अबोध और निष्पाप हो। मैंने तुम्हारी जान बचाने की कोशिश की थी, लेकिन परिस्थितियो पर वश नही चलता। यह हमारा प्रथम प्रणय था, यह हमारा अन्तिम प्रणय हो। सिफ इतना याद रखना कि तुम अभी तक बच्चे थे, मैंने तुम्हें मर्द बना दिया है।" और शिवदुलारी खिलखिलाकर हँस पडी।

१४

विश्व-युद्ध न अब भयानक रूप धारण कर लिया था। फ्रास पर ने पूरी तौर से कब्जा करके ब्रिटेन पर अपने प्रहार की योजना को [illegible] वित करन पर ध्यान दिया। ब्रिटन पर जमनी के हवाइ हमले होने [illegible]

अजीब-सी बात लग रही थी जगतप्रकाश को, लेकिन सत्य मे [illegible] कैसे किया जा सकता था। फ्रास और ब्रिटेन—अपन विशाल साम्राज [illegible] साधनो और उनकी शक्ति को समेटते हुए—ये दोनो देश जमनी को [illegible] करना दूर रहा, जमनी की शक्ति के सामने लडखडा रहे थे। फ्रास ट [illegible] था, ब्रिटन को तोडने का भरसक प्रयत्न हो रहा था। समस्त आर्थिक [illegible] नता और साधनो से युक्त दो महान् साम्राज्य नष्ट हो रहे थे—जगतप्र [illegible] चक्कर मे था।

डॉक्टर शमा चुपचाप जगतप्रकाश की बातो का सुन रह थ। [illegible] महायुद्ध का पराजित जमनी, जिसका समस्त स्वण भाण्डार क्षतिपूर्ति [illegible] मे फ्रास ने छीनकर जिसे कगाल बना दिया था, अवमूल्यन के कारण [illegible] मुद्रा सन् सत्ताईस अट्ठाईस मे टूट चुकी थी, जिसकी लोहे की खा [illegible] छीनकर फ्रास न सैकडो मील लम्बी भूमिगत लोहे की किलाबन्दी कर [illegible] थी मेजीनो लाइन के नाम पर, वह जमनी सात आठ वप म इतना [illegible] हो गया कि विश्व पर विजय प्राप्त करने को निकल पडा। यह क्ये ? [illegible] की समस्त शक्ति इस अथ पर केन्द्रित है, अथशास्त्र के विद्यार्थी की [illegible] से यह समझा था। यह अथ अपना नियम और विधान कस छोड [illegible] जगतप्रकाश की समझ म नही आ रहा था।

शाम बीत गई थी और बरामदे म अधकार घिर आया था। [illegible]

मा ने उठकर लाइट जलाई और उनका नौकर चाय की ट्रे उठा ले गया।
फिर शर्मा फिर अपनी कुरसी पर बैठ गए, "हाँ, एक वर्ष पूरा हो गया इस
ढंग का, और इस एक वर्ष में अर्थशास्त्र की निर्धारित मान्यताएँ गलत
साबित हुई। इस बात पर गौर कर लेना कि मैंने निर्धारित शब्द का प्रयोग
किया है, इसलिए कि कोई भी मान्यता अन्तिम सत्य के रूप में नहीं है।
जिस दिन अन्तिम सत्य का पता लग जाएगा उसी दिन मानव का विकास
समाप्त हो जाएगा। लेकिन इतना स्वीकार करना पड़ेगा कि अर्थ मानव-
समाज के विकास की अनिवार्य इकाई है।"

'यही तो समझ में नहीं आता। बिना धन के यह जर्मनी इतना सशक्त
कैसे बन गया?" जगतप्रकाश बोला, "इतनी प्रबल सैनिक शक्ति उस
आर्थिक रूप से टूटे हुए देश ने कैसे प्राप्त कर ली? अर्थशास्त्र के समस्त
सिद्धान्त झूठे पड़ गए इस सत्य से! ब्रिटेन का अति शक्तिशाली जहाजी
बेड़ा जर्मनी के व्यापार को ठप किये हुए है, लेकिन जर्मनी की आर्थिक
व्यवस्था सुदृढ़ है, अभाव का जो लक्षण बढ़ती हुई कीमतों में पाया जाता है,
वह भी तो जर्मनी में नहीं है, क्योंकि वहाँ चीज़ों की कीमत बढ़ी नहीं।"

डॉक्टर शर्मा के मुख पर एक हलकी-सी मुसकराहट आई "जगत! मैंने
तुम्हें डाक्टरेट लेने के लिए जर्मनी जाने की सलाह दी थी, वह सलाह अकारण
नहीं थी। जर्मनी का एक अर्थशास्त्री है, डॉक्टर शैख्ट! उसके हाथ में हिटलर
ने जर्मनी की समस्त अर्थ-व्यवस्था दे दी है। यह सब उसके जादू का करिश्मा
बतलाया जाता है। उसकी एक नई आर्थिक व्यवस्था है जो सत्य तो है
लेकिन नित्य नहीं है, और इसलिए उसे अर्ध-सत्य के रूप में ही स्वीकार
किया जा सकता है। यह नई अर्थ व्यवस्था हिटलर के नेशनल सोशलिज्म
का पूरक अंग है, और जहाँ तक मेरा अनुभव है यह अर्थ-व्यवस्था उतनी ही
अल्पायु है जितना यह नेशनल सोशलिज्म है।"

जगतप्रकाश ने डाक्टर शर्मा के कथन पर कोई टिप्पणी नहीं की। वह
सोचने लगा था कि क्या हिटलर का नेशनल सोशलिज्म वास्तव में अल्पायु
है? लेकिन डॉक्टर शर्मा ने अपनी बात जारी रक्खी, "ये जितने राजनीतिक
दर्शन हैं, ये सब अर्थ पर कायम हैं। समाजवाद का आधार ही अर्थ पर है,
मार्क्स के कैपिटल से यह स्पष्ट हो जाता है। मार्क्सवाद अर्थ का दूसरा

पहलू है। लेकिन यह नाज़ीवाद राष्ट्रीय अभिमान पर आधारित है। [illegible]
दिखने वाला यह राष्ट्रीय अभिमान विशुद्ध घृणा का दूसरा रूप है।"

जगतप्रकाश को डाक्टर शर्मा की बात कुछ अजीब-सी लगी, [illegible]
राष्ट्रीय अभिमान विशुद्ध घृणा का दूसरा रूप है। मैं समझा नहीं।"

'बड़ी साधारण-सी बात है। पिछले महायुद्ध का पराजित जर्मनी, जिसे
ब्रिटेन और फ्रांस ने तबाह कर दिया था, राष्ट्रीय अपमान की भावना [illegible]
विक्षुब्ध था। समस्त जर्मन राष्ट्र अपमानित और अभावग्रस्त हो गया था।
लेकिन इस जर्मन राष्ट्र की एक विशेषता रही है अनादि काल से। अ[illegible]
परिश्रम, अटूट निष्ठा! जिसे हम ईमानदारी कहते हैं वह इस परिश्रम और
निष्ठा का ही दूसरा रूप है। हिटलर उस अपमानित, पराजित और लु[illegible]
जर्मन राष्ट्र का प्रतीक है जो इन साम्राज्यवादी देशों अर्थात् फ्रांस और
ब्रिटेन से घृणा करता है। हिटलर अपने राष्ट्र को क्षत विक्षत देखकर [illegible]
रहा था। उसने अपनी घृणा की भावना को प्रसारित किया जनता [illegible]
गर्व और स्वाभिमान के रूप में। असमर्थ राष्ट्र को उनके अन्दर जमाए गए
वाला स्वाभिमान ही समर्थ बना सकता है। जर्मनी की समस्त ताकत [illegible]
स्वाभिमान की भावना से पोषित उसकी घृणा की ताकत है।"

लेकिन आर्थिक नियमों पर इस घृणा का प्रभाव कैसे पड़ सकता है?'
जगतप्रकाश ने पूछा।

कुछ सोचकर डाक्टर शर्मा बोले "जीवन में अर्थ सबसे अधिक मह[illegible]
पूर्ण तत्त्व है यह निर्विवाद सत्य है लेकिन इस अर्थ के प्रेरक तत्त्व [illegible]
अधिक शक्तिशाली प्रेरक तत्त्व घृणा है। हरेक मनोवैज्ञानिक यह जानता है।
पर यहां एक बात पर और ध्यान रखना पड़ेगा, यह घृणा अस्थायी मना[illegible]
जीवन का स्वाभाविक नियम है प्रेम क्योंकि समाज का समस्त [illegible]
और सहयोग पर कायम है, घृणा जीवन में केवल अपवाद के रूप में [illegible]
है। मानव की बुद्धि का सहारा लेकर यह घृणा कुछ समय के लिए [illegible]
एक निजी विधान बना सकती है और यह विधान स्वाभाविक रूप से नि[illegible]
रित विधान को कुछ समय के लिए परास्त भी कर सकता है। लेकिन इस[illegible]
उपभोग नहीं किया जा सकता है कि घृणा अस्थायी सत्ता है। यह घृणा [illegible]
बनकर विस्तार की लिप्सा का रूप धारण कर लेगी क्योंकि बिना [illegible]

और गव के आवरण मे यह घृणा काम कर रही है, वह ता रह जाएगा ही और उन आवरण क नीचे घृणा के स्थान पर उसके सहयागी तत्त्व ववरता और नरासता आ जाएँगे। और तब यह घृणा के आधार पर बनी आर्थिक व्यवस्था नष्ट हो जाएगी।" डाक्टर शर्मा उठ खडे हुए, "काफी देर हो गई है। अगल सेटर्डे क्लब म तुम्ह जो पपर पढना है वह तो तुमने तयार कर ही लिया होगा। हाँ, कल की एक्जीक्यूटिव कमेटी की मीटिंग मे तुम्ह डी फिल की डिग्री मिल जाएगी। मैं तुम्हे बधाई देता हूँ डॉक्टर जगतप्रकाश।"

जगतप्रकाश के मुख पर चमक आ गई, वह डॉक्टर शर्मा के चरणो पर अनायास ही झुक गया, "आपका अशीवाद मेरे लिए वरदान के रूप म हमेशा रहा है।"

जगतप्रकाश डॉक्टर शर्मा के यहाँ से सीधे अपने घर वापस लौटा। आज टाउन के एक बँगले म दो कमरा का एक भाग उसन किराये पर ले रखा था। उसकी बहन ने सुमेर को गाँव से उसके पास भेज दिया था। सुमेर न उसके आते ही कहा, "वडी देर लगा दी भइया! चाय का पानी उबलकर जल भी गया। पानी चढाए देते है।"

"नही, चाय मैं एक जगह पी आया हूँ। हा, कोई चिट्ठी आई है?"

सुमर न एक लिफाफा जगतप्रकाश के हाथ मे दे दिया। लिफाफा दखते ही वह चौंक उठा, वह पत्र अनुराधा का था। दो दिन पहले तो उसका पत्र आ चुका है, और पिछले दिन ही उसने उस पत्र का उत्तर भी दे दिया है। यह शनिवार के दिन अनुराधा का दूसरा पत्र कैसा? बडी व्यग्रता के साथ उसन वह लिफाफा खोला।

बहुत छोटा-सा पत्र था—केवल यह सूचना देते हुए कि अनुराधा सोमवार के दिन सुबह की गाडी से इलाहाबाद पहुँच रही है, उसे जगतप्रकाश से कुछ जरूरी परामर्श करना है, जगतप्रकाश स्टेशन आ जाए।

सोमवार की सुबह जगतप्रकाश अनुराधा को लेने स्टेशन पहुँच गया। अनुराधा अकेली न थी, उसके साथ यमुना के चाचा रामसहाय भी थे। अनुराधा ने जगतप्रकाश के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "मैं तो नही आना चाहती थी, लेकिन यह रामसहाय लाला मुझे जबदस्ती खीच लाए। फिर मैंने भी सोचा कि भइया से मिलने के साथ प्रयागराज के दशन भी हो जाएँगे।"

बँगले पर पहुँचकर अनुराधा ने सबसे पहले जगतप्रकाश के पास जो भाग था, उसका निरीक्षण किया, फिर उसने कहा, "मकान अच्छा है, लेकिन बहुत छोटा है, कुल दो कमरे ! कसे काम चलेगा ?"

"अभी तो अकेला हूँ, बडे मजे मे काम चल रहा है। बडा मकान ढूँढ रहा हूँ, महीने-दो महीने मे मिल जाएगा। लेकिन दीदी, तुम्हे यहा आकर मेरे साथ रहना होगा। महोना मे अब तुम अकेली न रहोगी।"

अनुराधा ने अपने कठोर स्वर म कहा, "वही रहूँगी। जहा जन्म लिया है वही मरूँगी, मेरे भाग्य मे यही लिखा है। तुम लोगो के साथ महीना-दो-महीना आकर रह लूगी। आखिर वहाँ अपनी खेती है, अपना पुश्तनी मकान है, वह तो नही छोडा जाएगा।" फिर कुछ रुककर उसने कहा, "हा, तो इन रामसहाय लाला का कहना है कि इस जाडे मे दिसम्बर के महीने म हो ब्याह हो जाए। लेकिन एक मुसीबत है। वह रूपलाल माताप्रसाद के बीस हजार रुपये हजम किय जा रहा है।"

"कसे बीस हजार रुपये ?" जगतप्रकाश ने पूछा, और फिर एकाएक उसे याद आ गया, "ओह उस जमन फम की रकम।" फिर कुछ रुककर उसने कहा "लेकिन इसका क्या सबूत कि बाबू माताप्रसाद ने रूपलाल के पास वे रुपय रखे थे ?"

उदास स्वर म रामसहाय ने कहा, "यही तो मुसीबत है। उस रकम की कोई लिखा पढी हो भी नही सकती थी। तो अब सारा बोझा मेरे सिर पर आ पडा है और काफी बडा परिवार है भइया का। कसे यह शादी होगी ? दस-पाच मेहमानो को बुलाकर उस लडकी के हाथ पीले कर सकता हू, इससे ज्यादा मैं न कर सकूगा।'

तभी अनुराधा ने बिगडकर कहा, मेरा एक ही भाइ है रामसहाय लाला, बडे हौसले से इसे पाला पोसा है। हम दहज वहेज कुछ नही चाहिए, लेकिन शादी धूम धाम से होगी, इतना कहे देती हूँ।"

रामसहाय ने अनुराधा की बात का कोई उत्तर नही दिया, उन्होंने जगतप्रकाश की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। उस प्रश्नसूचक दृष्टि मे एक तरह की विवशता थी।

जगतप्रकाश अपनी बहन से बोला, "अच्छा, अभी इस बातचीत को

द करो, थकी हुई आई हो, नहाओ-धोओ, कपडे-वपडे बदलो। शाम के
क इतमीनान के साथ बातचीत होगी। शादी तो यह होनी ही है, कोई न-
ाइ हल निकाला जाएगा।"

अनुराधा आगन म चली गई। एकान्त पाकर जगतप्रकाश ने रामसहाय
से कहा, "मैं आपकी मुसीबत समझता हूँ, लेकिन दीदी का मन तो रखना ही
होगा। बरात की खातिरदारी अच्छी तरह होनी चाहिए, दिखावे के लिए
भी कुछ करना होगा।"

रामसहाय के मुख का धुधलापन हटा नही, "इस सबमे तो एक हजार
रुपया लग जाएगा। तुम्हे शायद नही मालूम, मैं अपनी तीन लडकियो की
शादी कर चुका हूँ, क़र्ज़ म आ गया हूँ। अब अपनी चौथी लडकी की शादी
की फ़िक्र म हूँ। कस होगा ?"

जगतप्रकाश ने कुछ सोचकर कहा, "आप दीदी से कुछ न कहिएगा,
मेरी बात मान जाइएगा। मैं आपको एक हजार रुपये दे दूगा, आपको
रुपया की कोई चिन्ता नही करनी होगी।"

रामसहाय ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, "तुम आदमी नही,
देवता हो। मैं कोशिश करूँगा कि तुम्हारे रुपयो की जरूरत न पडे। रूप-
लाल स मैं फिर मिलूगा। उसके पास भैया न रुपया जमा कराया है, इस
बात से वह इनकार नही करता, लेकिन वह रुपया न मुझे देता है, न भौजी
को हो। भौजी और उनके बच्चे कानपुर मे ही है। रूपलाल चाहता है कि
शादी कानपुर स ही हो, भला यह कैसे हो। सकता है ? यह रूपलाल मुझसे
सीधी तौर म बात भी नही करता।"

जगतप्रकाश बोला, "नही, आप रूपलाल से रुपया की बाबत कोई बात
न कीजिए। उसके पास जो रुपया है वह अधम का रुपया है। आप बस्ती
म ही शादी कीजिए, मैंने आपसे जो कुछ कहा है वही ठीक रहेगा।"

दूसरे दिन शाम की गाडी पर अनुराधा और रामसहाय को महाना के
लिए चढ़ाकर जब जगतप्रकाश स्टेशन से वापस लौटा, उसने देखा कि एक
आदमी उनके बरामदे म बैठा हुआ है। खाकी पैण्ट, उस पर सफेद कमीज,
पैरा म चप्पल। नाम का धुधलापन गहरा होने लगा था, जगतप्रकाश ने
पूछा, 'किसे चाहते हैं आप ?"

वह आदमी हँस पडा, "तो तुम भी नही पहचान पाए मुझे बरखुरदार! देखा कैसी खूबी के साथ मैंने अपनी शक्ल बदल ली है! दाढी-मूछ साफ।

"अरे जमील काका, तुम! यह क्या धजा बना रखी है तुमने? कब आए?"

"अभी करीब पाच मिनट पहले। यहा आकर देखा कि ताला लटक रहा है। वापस लौटने के पहले सोचा कुछ देर आराम कर लू, दिन भर चक्कर लगाता रहा तो बेहद थक गया हूँ। तब तक तुम आ गए।"

जगतप्रकाश ने ताला खोलकर सुमेर से, जो उसके साथ ही स्टेशन से लौटा था, कहा, "पहले चाय बनाओ, फिर खाना बनाने का इन्तजाम करना।"

सुमेर के जाने के बाद जगतप्रकाश ने कहा, "मैं तो तुम्हे पहचान ही नही सका। अपने आने की खबर कर दी होती।"

"खबर किसे दू बरखुरदार, जब अपनी खबर मुझे नही है। दोपहर को इलाहाबाद आया, वहा से तुम्हारे उस होस्टल पहुँचा जहा तुम रहते थे। वहा पता नही चला तब तुम्हारी यूनीवर्सिटी पहुँचा। वहा पता चला कि तुम चले गए, जार्ज टाउन के इस बँगले मे रहते हो। वहा से शहर लौटा, सोचा घूम घामकर शाम तक तो लौट आओगे ही। बडी मुश्किल से तुम्हारा यह मकान मिला।"

कमरे मे जमील को बिठाकर जगतप्रकाश ने पूछा, "तुम्हारा असबाब कहा है?"

"शहर मे एक दोस्त के यहा रखा है, वही रहेगा भी। मेरी इस धजा पर तुम जो ताज्जुब कर रहे हो, वह मुझे मजबूरन बनानी पडी है। मुझे बम्बई मे पता चला कि मेरे नाम वारट है और मुझे फरार होना पडा। आजकल कम्युनिस्टो की गिरफ्तारी जोरो के साथ हो रही है। बम्बई का पुलिस-कमिश्नर कुलसुम बेन का मुलाकाती है और कुलसुम बेन के मिलने मे मेरी हाजिरी लिखी थी, तो उसने कुलसुम बेन को बतलाया कि मेरे नाम वारट है। मुझे पुलिस की नजरो से ओझल होने मे ही खैर दिखी। दस दिन तो मै बम्बई मे रहा, अपना हुलिया बदलकर, फिर मैं कानपुर आया। एक हफ्ता वहा रहकर आज इलाहाबाद के लिए चला।"

"तो क्या कर रह हो इन दिनो ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

जमील हँस पडा, "पुलिस के साथ आख मिचौनी खेल रहा हूँ। पुलिस परामों के साथ वम्वई मे मेरी तलाश कर रही है। वह वम्वई भी इन्सानी का समन्दर है, अगर वहाँ कोई आदमी गुम हो जाए तो उसका पता लगाना वडा मुश्किल है। लेकिन वम्वई की पुलिस को भी अपने ऊपर नाज है। उसने सब जगह मेरी खबर कर दी है। तो अब हाल्त यह है कि मेरे नाम वारंट है और मेरा किसी के साथ ठहरना उसके लिए खतरनाक साबित हो सकता है।"

जगतप्रकाश के मन पर एक उदासी छा गई, "लेकिन—लेकिन—जमाल काका! भाभी और बच्चो की देखभाल कौन करेगा ?"

'खुदा करेगा।" जमील मुसकराया, "यहा से मैं गाव जा रहा हूँ। रास्ते मे मने कोई पहचानेगा नही, गाव मे दो चार दिन रहकर चल दूगा। अभी छ रुपय मन गहूँ है और आठ रुपये मन चावल है। दस मन अनाज घर मे भरवाए देता हूँ। शायद आगे चलकर हिन्दुस्तान को एक बहुत बडे कहत का सामना करना पड जाए।"

जगतप्रकाश चक्कर म पड गया, "कहत! यह क्या कह रहे हो जमील काका? फसलें तो ठीक हो रही हैं, अनाज के दाम नही के वरावर चढ रहे हैं, यह कहत कसा? कही भी तो अनाज की कमी नही दिखलाई दे रही है।"

'यही तो खूबी है इस ब्रिटिश सरकार की। इतनी वडी लडाई लड रही है यह ब्रिटिश सरकार, लाखो आदमी फौज मे भरती किये जा रहे हैं। अभी एक महीना पहले मैं पजाब के दौरे पर गया था। गाँव-के-गाव खाली पडे हैं, एक भी मर्द नही नजर आया वहा, सिफ बूढे, बच्चे, औरते। ये भला कही खेती सभाल सकते हैं? जमीन बिना जोती-बोई पडी है। अच्छी तनख्वाह मिल रही हैं फ़ौज म, जोरा के साथ भरती हो रही है। लेकिन वरखुरदार अनाज की पदावार तो वन्द हो गई है। कहत नही पडेगा तो क्या होगा? फिर अनाज की खपत भी बेतहाशा वढ गई है। मौत का मुकाबला करने जो जाएगा उसे अच्छी तरह खिलाया पिलाया जाएगा। मैं गलत तो नहा कहता?"

जगतप्रकाश आश्चय के साथ जमील की बात सुन रहा था, "हाँ, और

सरकार अनाज की खरीद भी कर रही है—तभी कीमतें कुछ बढ़ी हैं।'
जमील बोला, 'बिलकुल ठीक। फौजों के वास्ते सरकार अनाज खरीद कर रही है बेतहाशा। यह सब इसी देश का अनाज है। लेकिन फिर भी बाजार में अनाज की कमी नहीं दिख रही। बरखुरदार, यह तो तुम जानते ही हो कि इधर चन्द सालों में बर्मा से चावल मँगाकर और आस्ट्रेलिया से गेहूँ मँगाकर देश में अनाज की जरूरत पूरी करनी पड़ी है। अब यह बर्मा और आस्ट्रेलिया से अनाज का आना बन्द हो गया है, क्योंकि ढोने वाले जहाज़ों की कमी है। ये माल ढोने वाले जहाज़ जंग का सामान ढो रहे हैं, रोज़ जर्मन-पनडुब्बियाँ उन्हें डुबो रही हैं। देश में अनाज की कमी नहीं दिखलाई देती। है न अंग्रेज़ों का जादू!'
जमील जो कुछ कह रहा था वह सत्य था, जगतप्रकाश चक्कर में था, "हाँ, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि देश में अनाज की कमी लोगों को महसूस क्यों नहीं हो रही?"
"अभी नहीं महसूस होगी बरखुरदार, यही तो खूबी है। अब मैं तुम्हें राज की बात बतलाता हूँ। तुम यह तो जानते ही हो कि नई फसल का अनाज बाज़ार में नहीं आता, नया अनाज लोग नहीं खाते। हमेशा यहाँ एक साल का अनाज स्टाक में पड़ा रहता है। यह स्टाक और किसी साल फसल खराब हो जाए तो हमारी हिफाज़त करता है। तो हमारी हिन्दुस्तानी सरकार इस स्टाक को निकलवा रही है अनाज के चढ़े दामों पर उसकी खरीद करके। रुपये के लालच में लोग अपना नया अनाज बेच रहे हैं। मेरा ख्याल है कि जिस मिकदार में सरकार की खरीदारी हो रही है उससे दो या तीन साल में अनाज का स्टाक खत्म हो जाएगा। तब हालत यह आ जाएगी कि अगर फसल होती है तो तुम्हारे पास खाने को है और अगर फसल बरबाद हो जाती है तो तुम्हें भूखा मरना पड़ेगा। मैं तुम्हारा गाँव कहूँ दूँगा कि वह अपना अनाज न बेचें, नहीं तो पछताना पड़ सकता है।'
सुमेर ने चाय सजाकर रख दी थी, जगतप्रकाश ने उठते हुए कहा, "चलो जमील काका, चाय तो पी लो। मैं सोच रहा हूँ कि क्या तुम्हारा गाँव जाना ठीक होगा, जबकि तुम्हारे नाम वारंट है? गाँव में तो तुम इस हुलिया के बावजूद पहचान लिए जाओगे।'

कुछ चिन्ता के भाव से जमील बोला, "हाँ, खतरा तो है ही, लेकिन मेरे म वारंट तो बम्बई में है। हिंदुस्तान की पुलिस इतनी सतर्क नहीं है कि हमेरे गाँव जाकर मेरा पीछा करे।" फिर कुछ सोचकर वह बोला, लेकिन—लेकिन—कुछ कहा नहीं जा सकता। जिस तरह मुल्क भर में म्युनिस्टों की गिरफ्तारियाँ हो रही हैं उससे लगता है कि इन गिरफ्तारियों हिंदुस्तान की सरकार का हाथ है। बहरहाल अगर मैं गिरफ्तार भी हो ऊँ, घरवालों का इंतजाम करने के बाद तो मुझे अफसोस नहीं होगा। जेल में कहाँ-कहाँ मारा मारा घूमूँगा।"

जमील के अन्दर कहीं एक प्रकार की निराशा है—जगतप्रकाश को ह अनुभव हुआ। उसने बात आगे नहीं बढ़ाई। रात में खाना खाकर जमील गया।

जगतप्रकाश उस दिन बहुत थक गया था, लेटते ही उसे नींद आ गई। सुबह जब जगतप्रकाश सोकर उठा, उसका मन बहुत भारी था। चाय पीकर वह अपना उस दिन का लेक्चर तैयार करने बैठ गया, लेकिन उसका मन नहीं लग रहा था। रह रहकर उसका मन कचोट उठता था। तभी उसे दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। उसने उठकर दरवाज़ा खोला, सामने एक पुलिस अफसर खड़ा था, उसके पीछे चार सिपाही थे।

"कहिए!" जगतप्रकाश ने पूछा।

"आपका ही नाम जगतप्रकाश है?" पुलिस-अफसर ने पूछा।

"जी हाँ।"

"मेरे पास आपकी गिरफ्तारी का वारंट है। मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ।"

जगतप्रकाश को जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, "मेरी गिरफ्तारी! लेकिन मैंने कौन-सा अपराध किया है?"

"अपराध तो आपने अभी तक नहीं किया है, यह वारंट डिफेंस ऑफ़ इंडिया एक्ट के मुताबिक है। आपको हमारे साथ चलना है। आप अपना आवश्यक सामान ले लीजिए और तैयार हो जाइए, हम आपका इन्तज़ार करते हैं। अगर आप किसी को अपनी गिरफ्तारी की इत्तिला देना चाहते हैं तो आप उसे चिट्ठी लिख सकते हैं। यह गिरफ्तारी बिना ज़मानत की है,

आप पर कोई मुकदमा नही चलेगा। आपको यह पता तो होगा ही कि द
भर म कम्युनिस्टो की गिरफ्तारिया हो रही हैं।"

बिजली की तरह जगतप्रकाश के दिमाग म सब-कुछ आ गया। ज
रात म आया था, उसके नाम वारट है और उसे अपने वारट का पता
गया था। लेकिन जमील तो कम्युनिस्ट है, वह पार्टी का सक्रिय सदस्य
है। उसने पुलिस-अफसर स कहा, लेकिन मैं तो कम्युनिस्ट नही हू न
कम्युनिस्ट पार्टी स कोई सम्बन्ध नही है। मैं यहा यूनीवर्सिटी म अर्थशास्
का लेक्चरर हूँ।"

'जी, आप यूनीवर्सिटी म लेक्चरर हैं, सरकार को इस बात का प
है और सरकार को यह भी पता है कि आप कम्युनिस्ट हैं। मुझसे कु
कहना वक्त की बरबादी होगी, मुझे तो सरकार की आज्ञा का पा
करना है।"

सुमेर अन्दर से बाहर आ गया था। जगतप्रकाश ने एक ठडी सा
ठीक है आप कुछ नही कर सकते। आप बठिए, मैं तैयार होता हू।"
जगतप्रकाश ने सुमेर की सहायता स ट्रक म अपने कपडे रखे। फिर
एक पत्र अनुराधा के नाम लिखा, उसे अपनी गिरफ्तारी की सूचना न
और एक पत्र डॉक्टर शर्मा को लिखा। इस तरह उस एक घण्टे
सुमेर के हाथ उसने दोनो पत्र देकर कहा, 'यह चिटठी मेरे जा
बाद ही डॉक्टर शर्मा को दे आना, और आज शाम को ही महाराज
यह चिटठी दीदी को दे देना। दीदी को समझा देना कि मैंने कोई अप
नही किया है, कुछ दिनो बाद मैं छूट जाऊँगा।" फिर उसने पुलिस-अ
स कहा चलिए मैं तैयार हूँ।'

जगतप्रकाश के अन्दर न जाने कहाँ से एक दृढ़ता आ गई थी।
सी शक्ति अन्दर छिपी हुई है जो मनुष्य की गतिविधि को संचालित क
रहती है? पुलिस-वैन चली जा रही थी और उसम बैठा जगतप्रकाश
रहा था। उसकी गिरफ्तारी की खबर सुनकर अनुराधा को बड़ा
लगेगा, लेकिन अनुराधा म उस आघात को सह लेने की
अनुराधा का जीवन संघर्षों मे ही बीता है एक संघर्ष और सही। और
विचारधारा अनुराधा से हटकर यमुना पर केन्द्रित हो गई। यमुना

वचन उसने दिया था वह उसे पूरा न कर सका। उसके हाथ में कुछ नहीं है, यमुना के हाथ में कुछ नहीं है, किसी के हाथ में कुछ नहीं है। मनुष्य से अलग हटकर वहीं कोई विधान है, अनजाना, अदृश्य! वही विधान सब-कुछ संचालित कर रहा है।

यमुना को खबर लग जाएगी, रामसहाय को खबर लग जाएगी। क्या लोग जगतप्रकाश के जेल से छूटने की प्रतीक्षा करेंगे? वह चिन्तित हो गया, यमुना का क्या होगा?

लेकिन किसका क्या होगा? सब-कुछ अनिश्चित है। वह कब छूटेगा? वह किस जेल में रहेगा? वह अपने सगे-सम्बन्धियों से मिल सकेगा? सभी कुछ अनिश्चित है। दुनिया में महायुद्ध हो रहा है, नगरों पर बम-वर्षा हो रही है, निरपराध नागरिक मर रहे हैं—चारों ओर विनाश का ताण्डव! फिर चिन्ता किस बात की? जो कुछ सामने है, वही सत्य है। विगत का कोई अस्तित्व नहीं, भविष्य पर मनुष्य का वश नहीं। सब-कुछ खोया-खोया, सब-कुछ धुंधला धुंधला!

फिर जब जगतप्रकाश की चेतना सजग हुई और उसका मन सुस्थिर हुआ, उसने अनुभव किया कि वह सुदूर राजस्थान में रेल्वे-लाइन से दूर और इसलिए अगम्य देवली कंसेंट्रेशन कैम्प में है। एक छोटी-सी बस्ती और उसके चारों ओर उजाड़ खण्ड। नितान्त अनजाने आदमी, कुछ को शायद उसने ज्ञानचन्द के विवाह के अवसर पर देखा भी था, और उन अनजाने आदमियों में नित्य बढ़ता हुआ भाईचारा।

उस कैम्प में और बाहर की दुनिया से जैसे कोई सम्बन्ध न हो। उस कैम्प के इर्द गिर्द काँटेदार तारों का एक जाल बिछा था, राइफल लिये हुए संतरियों का कड़ा पहरा! वहाँ से किसी का भाग सकना असम्भव था।

जगतप्रकाश को अनुभव हुआ कि उस जनहीन मरु प्रदेश में वह जन-चेतना, जन-जागरण और जन संघर्ष के घनिष्ठ सम्पर्क में आ पड़ा है। [illegible] में भरा एक संकल्प जाग उठा है उनमें। हार होगी या जीत होगी, इसकी बाद चिन्ता नहीं थी उन्हें, उनका मार्ग स्वयं ही निर्धारित हो चुका है, उस मार्ग पर उन्हें चलते रहना है।

[illegible] पहले साल का वह दिन याद हो आया उन्हें, जब वह

कमलाकान्त के साथ त्रिपुरी कांग्रेस का तमाशा देखने जबलपुर गया
उस समय उसे यह पता न था कि जिन लोगों के साथ वह जबलपुर गा
है वे अपने को कम्युनिस्ट कहते या समझते है। त्रिभुवन महता, मा
मनुभाई, जसवन्त कपूर, कुलसुम कावसजी—एक से एक सम्पन्न र
कम्युनिज्म उनके लिए फैशन था, केवल फैशन। उन लोगों म से का
आज उसके साथ न था। वे सब-के सब मौज मे घूमते होंगे जीवन की स
सुविधाओं से घिरे हुए। और वह देवली कंसेन्ट्रेशन कैम्प म बन्द है।

और वह कुलसुम! उसे क्या उसकी गिरफ्तारी की खबर मिली हो
इलाहाबाद मे गिरफ्तार होने के समय उसने अपनी गिरफ्तारी की
सूचना कुलसुम को नही दी थी। पिछले तीन चार महीनो म उसे कु
के दो पत्र मिले थे, उसने केवल एक पत्र लिखा था। कुलसुम क दूसर
का उसने कोई उत्तर नही दिया था, उत्तर देने की इच्छा नहीं हुई थी

और अब! जब उसे राजद्रोही करार दे दिया गया है, यद्यपि
किसी प्रकार का राजद्रोह नही किया है। उसे राजद्रोही बनना प
जगतप्रकाश ने उस देवली कंसेन्ट्रेशन कैम्प मे तपे हुए कम्युनिस्टो से क
निज्म की दीक्षा ले ली।

दूसरा खण्ड

२५

सन् १९४१ का जलता हुआ जून का महीना, और बाईस तारीख की जलती हुई दोपहर।

राजस्थान के एक वीरान इलाके मे देवली कसेन्ट्रेशन कैम्प, एक विस्तृत और उजाड भूखण्ड—मरुप्रदेश का भयावनापन लिये हुए। चारो ओर जलन, सिवा जलन के और कुछ नही। जमीन जल रही थी, आसमान जल रहा था, हवा जल रही थी, सूर्य की किरणे जल रही थी। और जगतप्रकाश को अनुभव हो रहा था जैसे उसका शरीर जल रहा है, उसकी आँखें जल रही हैं, और इस सबके साथ उसका मन जल रहा है। उस दिन रामकिशोर ने उससे कहा, "तुम कम्युनिस्ट! तुम्हारी कोई हस्ती नही, तुम्हारे पास तुम्हारा कोई आदर्श नही। कम्युनिज्म कैपिटलिज्म के असतुलन की प्रतिक्रिया-भर है, कैपिटलिज्म की बुराइयो का कोई निदान नही है।"

जगतप्रकाश को रामकिशोर की बात अच्छी नही लगी, लेकिन उसने रामकिशोर की बात का कोई उत्तर नही दिया। यह रामकिशोरसिंह सुभाष बोस का अनुयायी था, एक उद्दण्ड और बलिष्ठ युवक, लम्बाई करीब छः फुट, कसरती बदन, गोरा रग, जाति का भूमिहार। रामकिशोरसिंह को उसी वर्ष राजनीतिशास्त्र मे डॉक्टरेट मिली थी और वह पटना कॉलेज मे राजनीतिशास्त्र का लेक्चरर था।

जगतप्रकाश के मौन से उत्साहित होकर उसने अपनी बात आगे बढाई, "हम भारतीय आर्य हैं और जर्मन लोग आर्य हैं। स्वस्तिक जर्मन लोगो का राष्ट्रीय चिह्न है, स्वस्तिक हम हिन्दुओं का धार्मिक चिह्न है। आर्य जाति विश्व की श्रेष्ठतम जाति है, दुनिया म आर्य जाति का आधिपत्य होकर

रहेगा। हिटलर अजेय है क्योकि वह किसी प्रकार की प्रतिक्रिया का नही है, वह मौलिक इकाई है, ठीक उसी तरह, जिस तरह हमारे देश हुए है। राम ने आय-सभ्यता को दक्षिण भारत मे पहुँचाया था, आय सभ्यता को दुनिया के हर कोने मे पहुँचाएगा।"

हिटलर का मीनकाम्फ पढने के बाद जगतप्रकाश को हिटलर से हो गई थी। मीनकाम्फ स्वय म घृणा की धम-पुस्तक थी। जिस आय की रामकिशोरसिंह ने दुहाई दी थी, उस आय जाति का रूप उस जगत ने गावो मे देखा था, नगरो मे दखा था, देश के राजनीतिक और सामा जीवन मे उसन देखा था। और हर जगह उसे अमानुषिक घृणा के दर्श थे। तभी उसे प्राफेसर शर्मा के य शब्द याद हो आए, जो उन्होंने महीने पहले उसकी गिरफ्तारी के दो-तीन दिन पहले कहे थे, "जनता समस्त ताकत उसके स्वाभिमान से युक्त घृणा की ताकत है।"

जगतप्रकाश ने दबी जबान म कहा, "क्या हिटलर का आर्य जाति होने के नाते जमन-राष्ट्र दुनिया का सबसे श्रेष्ठ और राष्ट्र है, दुनिया की अन्य जातियो के प्रति घृणा का प्रदशन नही है? जमन राष्ट्र दुनिया की अन्य जातियो को आर्यों की गुलामी म नही चाहता?"

आवेश मे भरकर रामकिशोर ने उत्तर दिया, "दुनिया मे सारे और समस्त अशान्ति का कारण है मत विभिन्नता। जो सवश्रेष्ठ है, सत्य उसके साथ है। सत्य का रूप तो एक होता है। जमन जाति को गुलाम नही बनाना चाहती, वह दुनिया की सभ्यता, संस्कृति सम्पन्नता के विकास मे दिशा निर्देश करेगी, और यह उचित ही है।"

एकाएक जगतप्रकाश का मन जल उठा, शरीर जल उठा। उसने स्वर मे कहा, "यह सद्भावना से भरा दिशा निर्देश नही है, यह घृणा नर-सहार और हत्याकाण्ड है, जिसका प्रतिनिधित्व हिटलर कर रहा है। जमनी और ब्रिटेन का युद्ध आदर्शों को लेकर नही हो रहा है, वह दो कर्ता और उत्पीडको का युद्ध है, दोनो ही पक्ष पशुता की भावना मे भरे है। दोनो ही पक्ष शोषण, गुलामी और उत्पीडन के समर्थक। इन दोनो को दूसरे से लडकर नष्ट हो जाना चाहिए, इन दो दानवी शक्तियो का विनाश

ाद ही दुनिया मे समाजवाद की स्थापना सम्भव है।"

देखें कौन-कौन मिटता है, कौन-कौन बनता है।" रामकिशोरसिंह ने मुस्कराते हुए कहा, "यह युद्ध अब करीब-करीब खत्म ही समझो। फ्रांस तो समाप्त हो ही चुका है, ब्रिटेन भी करीब-करीब टूट चुका है। हमारे देश को स्वतंत्रता मिलेगी, मुझे ऐसा लगता है।"

"या जर्मनी की और भी भयानक गुलामी मे बँधना पडेगा इस देश को।" जगतप्रकाश बोला और वह उठ खडा हुआ, "दुनिया मे इतना सब हो रहा और हम लोग यहा इस निर्जन सुदूर नरक मे डाल दिये गए हैं, विवश और असहायावस्था म।" जगतप्रकाश ने अपने सामने दूर तक फैले हुए, तपते हुए भूखण्ड को देखा। एकाएक उसके मुख से निकल पडा, "क्या यहा से निकला नही जा सकता? यह कँटिदार तारो का जाल, ये राइफल लिये हुए सैनिक, जो भागनेवाले को तत्काल गोली मार दे। आज करीब एक साल होने को आया। पता नही अपने लोग कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं? जीवित-मृत्यु, यही सज्ञा दी जा सकती है इस स्थिति को। जीवन मौजूद है। इन शृखलाओ और बन्धनो से जकडा हुआ यह जीवन—यह तो मृत्यु से भी भयानक है।"

रामकिशोरसिंह ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, "बैठो, कहाँ भागोगे? ब्रिटेन पराजित होगा, हम लोग यहाँ से छूटेंगे। तब तक हम लोगो को इतजार करना है।"

जगतप्रकाश फिर बैठ गया। उसके मुख पर एक व्यग्यात्मक मुसकान आई, "हमारी सारी जिन्दगी ही इतजार की जिन्दगी है, लेकिन सच पूछा जाए तो यह इतजार मृत्युवत् है। जिस दिन हम पैदा होते हैं उसी दिन से हमारा मृत्यु का इतजार आरम्भ हो जाता है। यह मृत्यु अनिवार्यता है और यही अनिवार्यता सत्य है। जिन्दगी की सार्थकता इस अनिवार्यता की उपेक्षा करने म ही है, क्योकि हमे कर्म करना है। कर्म यहाँ पर हमारे लिए वर्जित है। आज के कर्म म हम अपने को खो दें, इतजार की भावना को हम दूर कर द, यही जिन्दगी का सीधा-सादा नुसखा है। लेकिन यहाँ देवली कसेंट्रेशन कैम्प म यह सम्भव नही।"

रामकिशोर बोला, "शायद तुम ठीक कहते हो। बडे पैमाने मे कर्म के

अभाव के कारण हम लोगो का अनशन, हम लोगो का रोटी के लिए, कपड़ों के
लिए, मक्खन के लिए सघर्ष ही आज हम लोगा के कर्म का आधार
है। लेकिन इस सघर्ष मे फल की भावना तो निहित है और यह फल भविष्य
की चीज है। भविष्य की प्राप्ति के लिए वर्तमान का सघर्ष है।"

"लेकिन हमारे सोचे हुए भविष्य की प्राप्ति हमारे हाथ म नहीं है—
तो ऐसा लगता है।" उदास भाव से जगतप्रकाश ने कहा, "इस विश्व-युद्ध का
अन्त क्या होगा—कोई कुछ नही कह सकता। सवाल मेरे सामने एक है,
है, आखिर इस विश्व-युद्ध की आवश्यकता क्या थी?" जगतप्रकाश यह
कहते रुक गया, क्योकि एक शोर इन दोनो को सुनाई दिया जो पास के
बैरक से आ रहा था। दो क़ैदियो मे झगडा हो गया था और ये दो भिन्न
राजनीतिक विचारधाराओ के थे। एक कम्युनिस्ट था, दूसरा सुभाष
का अनुयायी था। यह झगडा दो व्यक्तियो म सीमित न रहकर दो दलों का
बन गया था। रामकिशोरसिंह के साथ जगतप्रकाश को घटनास्थल
जाना पडा। बडी मुश्किल से झगडा शान्त हुआ।

वहाँ से लौटते हुए रामकिशोर ने कहा, "अभी तुमने पूछा था कि
विश्व-युद्ध की आवश्यकता क्या थी? और मैं तुमसे पूछ रहा हू कि इस
झगडे और मारपीट की आवश्यकता क्या थी? हिटलर महान् है,
स्टालिन महान् है, इससे हम लोगो को क्या मतलब? हम जो अंग्रेजों की
गुलामी मे पिस रहे हैं, हम मतलब अंग्रेजों की पराजय से है। तुम स्टालिन के
प्रशसक हो, मैं हिटलर का प्रशसक हूँ, इससे फर्क क्या पडता है? हम
दोनो ही समान भाव म बन्दी हैं, ब्रिटिश सरकार दोनो को ही समान रूप
से अपना दुश्मन समझती है। फिर भी हम लोगो म अक्सर ही यह
झगडा हो जाया करता है। यह झगडा कभी-कभी मारपीट का रूप धारण
कर लेता है। यह मारपीट अगर हमारे पास हथियार होते तो खून-खराबे
म बदल सकती थी। इसका कारण सिर्फ यह है कि हम लोग [illegible]
होकर काम करने के आदी हैं। व्यक्तिगत सघर्ष भावना का सहारा पा
दलगत सघर्ष बन जाते हैं और खून-खराबा [illegible] हुए ये [illegible]
युद्ध रहेगा हैं।'

जगतप्रकाश कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने [illegible]

रहा, "लेकिन यह विश्व युद्ध तो राष्ट्रों के बीच हो रहा है, दलों के बीच नहीं। पूरा-का-पूरा जर्मनी एकमन और एकप्राण होकर यह युद्ध कर रहा है।"

राजकिशोर के पास उत्तर मौजूद था, "मैं बतलाता हूँ। आज देश-के-देश दलों में विभक्त हो चुके हैं। तुम्हें याद है हिटलर के अभ्युदय का क्रम। हिटलर के पहले जर्मनी की जनता न जाने कितने दलों में बँटी थी। वहाँ कम्युनिस्ट थे, वहाँ यहूदी थे, वहाँ कमजोर किस्म के राष्ट्रवादी थे, वहाँ अभिमानी और अपमानित देश प्रेमी थे। राष्ट्रवाद के सबसे बड़े दुश्मन थे यहूदी और कम्युनिस्ट। यहूदी का कोई देश नहीं, कोई राष्ट्र नहीं, वह भटका हुआ प्राणी है, वह दुनिया भर में फैला हुआ है, और उसकी सत्ता उसके धर्म की है, उसके देश की नहीं है। लेकिन यह यहूदी शोषित नहीं है, वह यहूदी शोषक है, क्योंकि यह पूँजीवाद का सबसे बड़ा प्रतीक बन गया है। इस यहूदी को दुनिया में पूँजीवाद का दानव कहा जा सकता है। पिछले महायुद्ध में जर्मनी की जो पराजय हुई उससे जर्मनी में रहने वाले यहूदी का कोई ग्लानि नहीं हुई, उसका कोई नुकसान नहीं हुआ। वह तो और भी अधिक अमीर हो गया। हिटलर ने राष्ट्रवाद को मजबूत करने के लिए यहूदियों के विरुद्ध अभियान आरम्भ कर दिया। इसके बाद आता है कम्युनिस्ट का स्थान। कम्युनिज्म का जन्म ही पिछले महायुद्ध में जर्मनी के हाथ रूस की पराजय के फलस्वरूप हुआ। लेकिन यह कम्युनिज्म अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की चीज है। कम्युनिज्म राष्ट्रवाद का सबसे प्रबल विरोधी तत्त्व है। इसलिए हिटलर ने कम्युनिज्म के विरुद्ध अभियान चलाया। परिणामस्वरूप जर्मनी में राष्ट्रवाद स्थापित हो गया, यहूदियों और कम्युनिस्टों की शक्तियाँ क्षीण होते होते मिट गई। और आज जर्मनी राष्ट्रवादियों का सबसे शक्तिशाली और बड़ा सामूहिक दल है। एक ओर वह अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवाद को, जिसका प्रतीक रूप यहूदी जाति है, चुनौती दे रहा है, दूसरी ओर वह अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद को, जिसका प्रतीक रूस है, चुनौती दे रहा है।"

"लेकिन रूस न तो जर्मनी का युद्ध नहीं हो रहा है।" जगतप्रकाश ने कहा, "जर्मनी ने रूस से मित्रता कर रखी है।"

"वह इसलिए कि पहले उसे फ्रांस और ब्रिटेन को पराजित करना है,

क्योकि पिछले महायुद्ध मे उसे फ्रास और ब्रिटेन ने पराजित और अपमानित किया था। ये दोनो देश पूजीवाद का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, यद्यपि यह पूजीवाद सुसगठित नही है, सुस्पष्ट नही है। हम यह नही भूल सकते कि पूजीवाद उत्पीडन और शोषण पर कायम है। आज बढती हुई चेतना के युग मे कोई भी राष्ट्र पूजीवाद को आधार बनाकर खुल्लमखुल्ला शक्ति प्राप्त नही कर सकता, क्योकि शक्ति जनता के हाथ म है जो शोषित है, उत्पीडित है। इसलिए फ्रास और ब्रिटन—इन दोना देशा म पूजीवाद को राष्ट्रवाद का जामा पहनना पडा है। यही फ्रास और ब्रिटेन की कमजोरी है, क्योकि इन दोना देशा मे पूजीवाद के विरोधी तत्त्व मौजूद हैं। फ्रास और ब्रिटेन मे राष्ट्रवाद का पागलपन नही है।"

जगतप्रकाश का मन अनायास ही हल्का हो गया। राष्ट्रवाद एक पागलपन है, पूजीवाद मक्कारी और शैतानियत है। केवल समाजवाद में वह क्षमता है जो दुनिया को एक बना सके, उसकी समस्या को हल करके विश्व-शान्ति स्थापित कर सके। जगतप्रकाश की धारणा रामकिशोरसिह के कथन से पुष्ट हो गई। उसने गम्भीरतापूर्वक कहा, "ठीक कह रहे हो, ब्रिटेन और फ्रास के पूजीवाद को नष्ट होना ही चाहिए, क्योकि यह पूजीवाद साम्राज्य का रूप धारण कर चुका है। कितनी आसानी से कुछ दिनो के अन्दर फ्रास पराजित हो गया, यह फ्रास की पराजय उसके अन्दर वाले पूजीवाद के खोखलेपन को ही प्रकट करती है। अकेला ब्रिटन बचा है, और वह भी इसलिए कि ब्रिटेन के चारो ओर समुद्र है, और ब्रिटन हमेशा से अपनी नौ-शक्ति के प्रति सजग रहा है। और जब तक ब्रिटेन पूरी तौर से नष्ट नही होगा तब तक यह युद्ध चलेगा।"

तभी बाहर से कुछ लोगो की जोर जोर की बातचीत इन दोनो को सुनाई दी। क्या फिर कोई झगडा होने वाला है आपस मे? दोनो बाहर निकले। कुछ लोग रेडियो के सामने खडे थे और रेडियो से खबरें आ रही थी। वह समय रेडियो की खबरो का नहो था, दोनो रेडियो के पास पहुँचे। काफी उत्तेजना थी रेडियो के सामने खडी हुई भीड मे।

जर्मन सेनाओ ने रूस पर आक्रमण कर दिया है अलस्सुबह—और जर्मन सेनाएँ तेजी के साथ रूस के अधिकार मे पोलण्ड की भूमि म बढती

रूस की सीमा की ओर बढ रही हैं। यह अचानक क्या हो गया, एक सनसनी फैल गई थी समस्त वातावरण म।

२२ जून सन् १९४१—एक महत्त्वपूर्ण तिथि, उस दिन विश्व-युद्ध ने नया मोड ले लिया। राष्ट्रवाद और समाजवाद की दोस्ती खत्म हो गई, वह दोस्ती अब दुश्मनी मे बदल गई। लेकिन हरेक के मन मे एक आशका—एक तरह की निराशा। युद्ध अब काफी लम्बा चलेगा। यही नही युद्ध अब दुनिया के विभिन्न भागो मे फैलगा। और जो लोग उस मरुस्थल मे कैद कर दिए गए हैं, वे कैद रहग।

जगतप्रकाश अपनी बैरक मे आकर चुपचाप बैठ गया और सोचने लगा। साम्राज्यवाद राष्ट्रवाद की व्युत्पत्ति है। यह पूजीवादी और साम्राज्यवादी ब्रिटेन किसी समय राष्ट्रवादी था, यह राष्ट्रवादी जमनी अब साम्राज्यवादी बन रहा है। इस राष्ट्रवाद म ही तो सामूहिक शोषण और उत्पीडन है जहाँ एक शक्तिशाली राष्ट्र निबल राष्ट्रो की समस्त जनसख्या को गुलाम बनाकर शोषण करता है। दुनिया के दु ख दैन्य का एक ही इलाज है—समाजवाद! और अब समाजवाद पर घातक प्रहार आरम्भ हो गया है। जमनी की दानवी शक्ति के मुकाबले मे क्या रूस टिक सकेगा? फ्रास नष्ट हो चुका है, ब्रिटेन क्षत विक्षत हो चुका है, वह रूस की कोई सहायता नही कर सकता। क्या दुनिया म एकछत्र जमनी का शासन होगा?

नही, यह नही हो सकता, इसे नही होने देना चाहिए। जगतप्रकाश को अब अपनी कद और अपनी विवशता अखरने लगी। उसके मन मे आया, वह क्या इस सघष म भाग नही ले सकता? दुनिया विचारो पर विकसित हो रहा है, लेकिन विचारो का कोई अस्तित्व नही है अगर वे कम मे न परिणत हो सकें। और कम? देवली के उस मरुप्रदेश मे कम सम्भव नही।

दिन बीत रहे थे, रूस की हार की खबरें आ रही थी। जमन सेनाएँ अब तेजी के साथ रूस की सीमा मे प्रवेश कर रही थी। जिन देशो पर रूस ने आरम्भ म कब्जा किया था व सब जमनी ने उससे छीन लिये थे।

देवली कम्प म हिन्दुस्तानी कैदियो के दो दल बन गए थे। एक दल, जो हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिए व्यग्र था, जमनी की रूस पर विजय पर प्रसन्न था, दूसरा दल, जो समाजवाद का समथक था, रूस की पराजय पर

विक्षुब्ध था। दोनो दल एक-दूसरे के शत्रु बन गए थे। लेकिन इन दोनों ... को जेल मे बन्द किये हुए थी ब्रिटिश सरकार।

देवली म आने वाले कदियो की सख्या बढती जा रही थी, और नवम्बर के महीने मे जगतप्रकाश को कुछ अन्य कम्युनिस्ट क़ैदियो के साथ बरेली ... दिया गया। जनवरी १९४२ के प्रथम सप्ताह मे उसे बरेली जल स छोड़ दिया गया।

जततप्रकाश बरेली से सीधा अपने गाव महोना आया। अनुराधा ... देखते ही चीख-सी उठी, "अरे तुम!" दौडकर उसन जगतप्रकाश को अपनी बाहो म कस लिया। अनुराधा की आखो म आसू थे और वह कह रही थी, "तुम छूट आए! मेरे भगवान्! मेरा लाल छूटकर घर वापस आ गया। तुम कहा से आ रह हो? कितने दुबले हो गए हो?"

"बरेली सेण्ट्रल जेल से छूटा हूँ। देवली से बरेली भेज दिया गया था।" जगतप्रकाश न मुसकरात हुए कहा, "पहले सोचा इलाहाबाद चलू, फिर सोचा कि अपनी दीदी से तो मिल लू—अपने घर की शक्ल तो देख लू।"

तभी उसकी नजर सुमेर पर पडी जो मकान के अन्दर से आकर ... खडा हो गया था। उसने सुमेर से कहा, 'तुम यही आ गए हो! इलाहाबाद के मकान का क्या हुआ?"

अनुराधा की क्षणिक भावनात्मक कोमलता जैसे एकाएक लोप हो ... "होता क्या? तुम्हारी चिट्ठी पाते ही मैं इलाहाबाद गई और तुम्हारा सामान साथ ले आई, मकान खाली कर दिया। किराया कौन देता? ... इस बीच तुम्हारी वहा की नौकरी भी खत्म हो गई होगी।"

डेढ साल बाद—पूरे डेढ साल बाद वह आजाद होकर अपने घर म ... की नीद सोया। सुबह जब उसकी नीद खुली, पहले तो वह अपन आसपास के वातावरण को पहचान नही पाया, फिर धीरे धीरे उसकी चेतना ... उसकी बहन ने रात मे कहा था कि इलाहाबाद मे उसकी नौकरी छूट ... होगी। उसका सारा सामान महोना मे आ गया है। इलाहाबाद से अब ... उसका कोई सम्पक नही रह गया है इलाहाबाद ही क्यो, अपने गाँव ... छोडकर और कही से उसका कोई सम्पक नही रह गया है। उसे फिर ... सम्पक स्थापित करन पडेगे।

और शायद वही सम्पर्क स्थापित करने के लिए सुबह का नाश्ता करके अपने गाव का एक चक्कर लगाने निकल पडा। उसने देखा कि ना गाव अब पहले जसा सूना और उजाड नही है। उस दिन गाव मे ज़ार लगा था। बाजार मे माल भरा था, लोग खरीद रहे थे और बेच थे। पहले तो इतनी खरीद फरोख्त नही होती थी। तो लोगो की आर्थिक वस्था कुछ सुधरी है। उनके पास पैसा आ गया है। अनायास ही बढ जाने ली लोगो की सम्पन्नता पर जगतप्रकाश को आश्चय हो रहा था। चुप-ाप वह चला जा रहा था।

तभी उसे एक आवाज सुनाई दी, "अरे जगत भइया, तुम! कब आए? हमने तो सुना था कि तुम जेल मे हो। हमने भी महात्मा गाधी का लिखा था कि हम सत्याग्रह करने की अनुमति दी जाए, लेकिन हमे अनुमति मिली ही नही, तो हम यहाँ बाहर ही रहे। जी मे आता है कि हम बिना अनुमति के ही सत्याग्रह कर दें, लेकिन साथ के काग्रेसी कायकर्ता हमे रोकते हैं। कितने दिन की सजा हुई थी?"

"सजा नही हुई थी।" जगतप्रकाश बोला, "क्योकि मैंने सत्याग्रह किया ही नही था। मुझे तो बिना मुकदमा चलाए ही जेल म बन्द कर दिया गया था। दो दिन हुए छूटा हूँ। और कहो, क्या हाल हैं गाव के?"

"हाल तो बडे अच्छे हैं। यह लडाई क्या छिडी, जैसे लोगो के पास रुपया उमड पडा है। अनाज के दाम चढते जा रहे हैं, गेहूँ रुपये का साढे पाँच सेर हो गया है। अपनी दीदी से कहो कि यह मौक़ा है, इतने ऊँचे दाम फिर न मिलेंगे गहूँ के। पूरा माल निकाल दें। हम आठ रुपये मन के हिसाब से सब गहूँ खरीद लेंगे—रुपये का पाच सेर समझो!"

जगतप्रकाश को कुछ आश्चय हुआ अँगनू की बात सुनकर, "क्या तुमने अनाज का व्यापार शुरू कर दिया है?"

"हें हे हे! बेकार बैठे रहने से कुछ काम काज करना अच्छा है। बात यह है कि सरकार अनाज खरीद रही है फौज के वास्ते। हमारे बहनोई राजा ब्रदस की तरफ से बस्ती म अनाज खरीदने को नियुक्त हुए है, तो हमसे बोले कि पदा कर लो, ऐसा मौका बार-बार नही मिलता। भगवान् की दया से माल भर म दस-बारह हजार रुपया मिल गया है।"

एकाएक जगतप्रकाश को जमील की बातचीत की याद हो आई जो उसके गिरफ्तार होने के पहले हुई थी। उसने रुखाई के साथ कहा, 'अनाज खरीदने और बेचने की बात दीदी से करो, तुम तो जानते ही हो कि मैं दाम के मामले मे कोई दखल नही देता।" और वह आगे बढ गया।

घूमता हुआ वह जमील के मकान के सामने पहुँचा। जमील की पत्नी सईदा ने उसे देखते ही कहा, "अरे, आप छूट आए! तो मियाँ की बात ठीक निकली। दो महीने पहले आए थे। कहते थे कि उनके नाम वारण्ट गया है, आप भी जल्दी ही छूट जाएँगे।"

"आजकल वह कहा है?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"खुदा जाने कहा हैं? कहते थे कि इन दिनो कानपुर मे अपना ठिकाना बना लिया है लेकिन बम्बई जाने की भी सोच रहे थे। जब से गये हैं कोई खबर नही दी। लेकिन होगे कानपुर मे ही, बम्बई जाते तो मुझे खबर जरूर देते क्योंकि बम्बई वाला मकान अभी भी उनके पास है, और मैं भी यहाँ की जिन्दगी से आजिज आ गई हूँ। मैं उनके आने का इन्तजार कर रही हूँ।"

जिस समय जगतप्रकाश घूमकर वापस लौटा था, एक बज गया था। आसमान पर हलके-हलके बादल छाए हुए थे, और तेज उत्तरी हवा चल रही थी जिससे उसका शरीर काप रहा था। आते ही वह खाना खाने बैठ गया लेकिन उसे लग रहा था कि उसे भूख नही है। मन के अन्दर एक गहरी उदासी और असन्तोष। खाना खाने के बाद उठते हुए उसने अनुराधा से पूछा, "बाबू रामसहाय ने क्या इस बीच कोई खबर ली मेरी?"

अनुराधा का मुख कठोर हो गया, 'नहीं, इधर उन्होंने कोई खबर नहीं ली। उन्हे तुम्हारी गिरफ्तारी की खबर मिल गई थी और उन्हें बड़ा अफसोस था। फिर उसके बाद कोई बात नही हुई। छोडो भी उस रिश्ते को। बनारस से एक रिश्ता आया है। लडकी बी० ए० की परीक्षा दे रही है इस साल, लडकी के बाप अच्छे वकील थे, अब तो वकालत छोड़ दी। उन्होंने कांग्रेस के सेक्रेटरी हो गए हैं। जमींदारी है, हैसियत वाले हैं वे लोग। वे जानते हैं कि तुम जेल में हो। मैंने कह दिया था जेल से छूटने के बाद तुम्हारे छूटने पर मैं जवाब दूंगी। लड़की सुन्दर है,'

खा है।"

'यह तो ठीक है, लेकिन मैं यमुना के साथ विवाह करने का वचन दे हू। तुम एक दफा बाबू रामसहाय को बतला तो दो कि म जेल से छूट गया हू।"

अनुराधा भड़क उठी, "उन्हें बतलाय जा कर मेरी बला! जो कुछ करना तुम्ही करो जा कर।"

जगतप्रकाश ने अनुराधा की बात का कोई उत्तर नही दिया। भाई-म एक प्रकार का पुराना समझौता था कि अगर क्रोध म आकर बात कहे तो दूसरा उसका उत्तर न देकर चुप हो जाए। उसस क्रोध ठडा हो जाएगा। जगतप्रकाश चुपचाप अपने कमरे मे चला गया। देर बाद अनुराधा उसके कमरे मे आई, 'कल सुबह मैं बस्ती जा रही मसहाय के यहा। उनसे पूरी तौर से साफ साफ बात कर लू।"

'नही दीदी, तुम वहा मत जाना। वही आकर बात करे।"

'कहा तक उनका इन्तजार करूँगी बनारस वाले मुझे घेरगे आकर, ही उन्हें पता चलेगा कि तुम छूटकर आ गए हो। अगर हज न हो तो भी मेरे साथ बस्ती चले चलो।"

बड़े प्यार से अपनी बहन का हाथ अपने हाथ म लेते हुए जगतप्रकाश हा, 'दीदी, अभी मेरी शादी की इतनी जल्दी क्यो? एक नौकरी थी, भी छूट गई। कल का कोई ठिकाना नही। यमुना की बात तो मैंने लिए चलाई थी कि मैंने यमुना को वचन दे दिया था।"

अनुराधा पिघल गई जगतप्रकाश की बात सुनकर, उसने कहा, "मैं तुम कोई दबाव नही डाल रही हूँ, तुम जैसा ठीक समझो वैसा करो!"

"पहले मैं अपने लिए काम ढूढूगा जा कर। अभी तो चार दिन यहा घर रहकर आराम करूँगा, फिर इलाहाबाद जा कर पूछूगा कि वहा की स्थिति है।"

उदास नजर से अनुराधा ने जगतप्रकाश को देखा, फिर एक ठडी सास र बोली, 'भगवान् जाने कौन सा पाप हम लोगो से हुआ है जिसका इस ह दण्ड मिल रहा है! जिन्दगी से तो जूझना ही है।" उसकी आखें भर ई। तत्काल वह घूमकर चल दी।

जगतप्रकाश के लिए अपने गाँव में एक हफ्ता काटना मुश्किल हो गया। दुनिया में महायुद्ध हो रहा था, और वह समस्त साधना से रिक्त-सा बिछुड़ा हुआ गाँव में अकेला बैठा था। उसे चारों ओर जो चेहरे दिखते थे, वे बुझे हुए, उत्साहहीन। जैसे नितान्त अनजाने आदमियों के बीच वह आ पड़ा हो। यह गाँव भी तो एक जेल था, शायद जेल से भी बदतर। वहाँ जीवन की गति और ताजगी नहीं। केवल उसकी बहन की ममता, और वह ममता भी अब उसे अखर रही थी। लेकिन वह अब एकान्त और संयम का आदी हो गया था। जहाँ डेढ़ साल, वहाँ एक हफ्ता और। इसके बाद उसे निकलना है, उसे काम करना है, अपनी बहन के शब्दों में उसे जिन्दगी से जूझना है, लेकिन कौन-सा काम करना है उसे ? किस तरह जिन्दगी से जूझा जाए, से निकला जाए ? वह उलझ जाता था। जैसे-तैसे एक हफ्ता बीता और वह इलाहाबाद के लिए रवाना हुआ।

अपना सामान स्टेशन के क्लॉक रूम में रखकर जगतप्रकाश कमलाकान्त के यहाँ उसके होस्टल पहुँचा। कमलाकान्त जगतप्रकाश को देखते ही चौंक पडा, "अरे तुम ! तो तुम छूट गए ! कब आए इलाहाबाद ? कहाँ ठहरे हो ? मकान तो तुम्हारी बहन खाली करके चली गई थी ?"

"आज सुबह अपने गाँव से आया हूँ। असबाब स्टेशन पर रखकर सीधा तुम्हारे यहाँ आ रहा हूँ।"

"तो फिर तुम्हारे ठहरने का क्या इन्तजाम होगा ?" कमलाकान्त ने जगतप्रकाश को अपने साथ ठहरने को आमन्त्रित नहीं किया।

"कोई मकान ढूँढना होगा, तब तक किसी होटल में टिक जाऊँगा।" शान्त भाव से जगतप्रकाश बोला, "अभी तो मुझे पता लगाना है कि युनिवर्सिटी में मेरी स्थिति क्या है। क्या मैं बर्खास्त कर दिया गया हूँ, या अपनी पोस्ट पर लिया जा सकता हूँ। मेरे सामने जिन्दगी नए सिरे से शुरू करने का प्रश्न है।"

कमलाकान्त ने पूरी सहानुभूति दिखलाते हुए कहा, "मुझे बड़ा अफसोस है जगत ! मुझे नहीं मालूम था कि तुम कम्युनिस्ट पार्टी में इतने गहरे पैठ गए हो ! जहाँ तक मैं समझता हूँ तुम यूनीवर्सिटी में अपनी पोस्ट खत्म समझो। तुम्हारे स्थान पर एक नई नियुक्ति हो गई है।"

जगतप्रकाश मुसकराया,
रुद्ध कोई अभियोग नही था
फसर दामा म मिलकर मैं अप
कमलाकान्त उठ खडा हुअ
है बतलाना कि क्या स्थिति ह
यहाँ जाना है। मैंन भी अपन
 सुबह मैं एक महोन के लिए
ग्रह के साथ बुलाया है।"
जगतप्रका भी उठ खडा हु
यी उसके मन म। कमलाकान
साचा था। वसे उसे कमलाकान
न्त जिस वग का आदमी था
सकता था ? उसने घडी देखी,

किया, मेरा भी भला किया। विवाह के
हो जाता। मैने उस समय इसका
ककर चले जाए ये। लेकिन
द क व धन मे फँमाने के
डी किया या। मुझे
रह ह। अच्छा
मोचती हूँ
गते।"
किया

दिया। फिर वह जगतप्रकाश से
लेकिन यह दुनिया भले और
फरेब, झूठ और हिंसा
अपने अनुभवों से
हूँ, मैं यह अनुभव
जगतप्रका
आई थी।

फ़ेसर शर्मा ठीक दस बजे यूनीवर्सिटी पहुँच जाते हैं उसे यह मालूम था।
ह यूनीवर्सिटी की ओर चल पडा।

जगतप्रकाश को देखते ही प्रोफेसर शर्मा उठ खडे हुए। उन्होंने तपाक
साथ जगतप्रकाश से हाथ मिलाते हुए कहा, "मुझे तुम्हारे छूटने की खबर
हफ्ता पहले मिली थी। मुझे आश्चय हो रहा था कि तुम कहा रह गए।
हे सीधे यहाँ आना चाहिए था।"

'जा, बरली से छूटकर मैं सीधे अपने गाँव महोना चला गया था अपनी
हन क पास। यहाँ का मकान तो छूट गया है, डेढ साल तक कसे मकान
लिा बिना किराया पाए मकान खाली रखता ? मेरी वहन यहाँ आकर मेरा
रा सामान ल गइ थी।"

मैं समझता हूँ। लेकिन अगर तुम्हारी वहन मकान खाली करन के
हले मुझसे मिल लेती तो यह नौबत न आन पाती। खर छोडो भी, जो
गया वह हो गया। यहाँ इलाहाबाद कब आए और कहा ठहरे हो ?"

"आज सुबह आया हूँ और असबाब स्टेशन पर पडा है। पता नही, क्या
करना होगा, कहाँ जाना होगा! इलाहाबाद म मेरा कोई दोस्त या रिश्तेदार
भी नहा है जिसके यहाँ जाकर ठहरता। सोचा कि आपसे मिलने के बाद

किसी होटल मे ठहर जाऊँगा।"

कुछ देर तक मौन भाव से प्रोफेसर शर्मा ने जगतप्रकाश को देखा
उनके मुख पर एक मुसकराहट आई, 'तुम्हारा दोस्त यहाँ है, तुम्हारा
दार यहा है। तुम अपना असबाब मेरे यहा ले आओ, यह तुम अपने
तुल्य किसी आदमी का आदेश समझो। बाद म तुम अपने लिए एक
भी ढूँढ लेना। तुम्हें इलाहाबाद मे ही रहना है, तुम्हें इसी यूनीवर्सिटी म
भी करना है—यह मेरी ज़िम्मेदारी है। तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है
फँसाया गया है, मैंने सब पता लगा लिया है। यह बरिस्टर वर्मा
उनका कोई रिश्तेदार रूपलाल—ये सब इस षडयन्त्र म थे। मुझे
यह पता चल गया है।"

जगतप्रकाश चौंक उठा। अपने बन्दी जीवन म वह लगातार यह
रहा था कि उसे क्यो गिरफ्तार किया गया, लेकिन कारण उसकी
नही आया था। उसे ताज्जुब हो रहा था कि इस सम्भावना पर उसका
क्यो नही गया। रूपलाल सी० आई० डी० का आदमी था और वर्मा
का उसने अपमान किया था। उसने प्रोफेसर शर्मा से कहा, 'जैसी आ
आना, सर! लेकिन मेरे आने से आपको असुविधा होगी।"

'अपनी सुविधा-असुविधा को जितना मैं समझ सकता हूँ उतना
नही समझ सकते। अच्छा, अब तुम स्टेशन जाकर असबाब मेरे यहाँ
आओ। वैसे यूनीवर्सिटी म तुम्हारी जगह एक नई नियुक्ति हो गई है,
यह नियुक्ति एक साल की है। इधर डॉक्टर कौल चार महीने से बा
मैं वाइस चासलर से बात करता हूँ। तुम अपनी पोस्ट पर वापस आ
तुम्हारी पोस्ट पर जो ज्ञानेन्द्रकुमार काम कर रहे है वह डाक्टर कौल
पोस्ट पर काम करते रहेगे।"

डॉक्टर शर्मा ने जगतप्रकाश के अन्दर मिटती हुई आस्था को बढ़ा
लिया। जगतप्रकाश अपना असबाब डाक्टर शर्मा के यहा ले आया।

स्नान करके और कपडे बदलकर वह करीब दो बजे यूनीवर्सिटी
वह अपने विभाग म प्रवेश कर ही रहा था कि उसकी नज़र सुषमा पर
गई जो गलियारे मे खडी एकटक जगतप्रकाश को देख रही थी। सुषमा
उसे नमस्ते की। सुषमा के नमस्ते का उत्तर देते हुए जगतप्रकाश ने मुसकरा

कहा, "अच्छा तरह हैं आप! एम० ए० तो पास कर लिया होगा?"

"जी हां, अब डॉक्टर शर्मा की अध्यक्षता में रिसर्च कर रही हूँ। तो आप छूटकर आ गए। मुझे बड़ा अफसोस है कि आप पर इतनी बड़ी विपत्ति अकारण ही आ पड़ी।"

जगतप्रकाश की मुसकराहट वैसी-की वैसी बनी रही, "कारण तो कहीं-न-कहीं जाने या अनजाने होते ही हैं। फिर विपत्तियों का मुकाबला करने और उन पर विजय पाने के लिए ही तो आदमी का जन्म हुआ है।"

अब सुषमा की झिझक जाती रही, उसने भी मुसकराते हुए कहा, "मुझे ताज्जुब होता है कि दर्शनशास्त्र और राजनीतिशास्त्र में आपका सम्मान अधिकार कैसे प्राप्त है जबकि आपका विषय अर्थशास्त्र है। प्रोफेसर तो अभी पांच मिनट पहले वाइस चांसलर के यहाँ गये हैं, चलिए तब तक हम लोग किसी रेस्तरां में चाय पी लें। सर्दी काफी है, चाय पीने में आपको कोई आपत्ति तो न होगी।"

सुबह जो-कुछ उसे प्रोफेसर शर्मा ने बताया था, उसे सुनने के बाद सुषमा के साथ चाय पीने में और उससे बात करने में कोई हर्ज न होगा—जगतप्रकाश ने यह अनुभव किया।

बाहर एक छोटी-सी खूबसूरत कार खड़ी थी। सुषमा ने जगतप्रकाश को अपनी बगल में बैठाते हुए कहा, "एम० ए० पास करने के पुरस्कार में पापा ने मुझे यह कार खरीद दी है, एक कार से काम नहीं चलता था, पापा को असुविधा होती थी। पसन्द आई यह कार?"

जगतप्रकाश को कुलसुम की याद आ गई, उसके पास भी तो उसकी निजी कार है। यह कार सम्पन्नता की निशानी है। वह मन-ही-मन हँस पड़ा, उसने सुषमा से केवल इतना कहा, "बड़ी खूबसूरत कार है, मैं आपको इसके लिए बधाई देता हूँ।"

सिविल लाइन्स में एक शानदार रेस्तरां के सामने सुषमा ने अपनी कार रोकी। रेस्तरां के दरबान ने बढ़कर कार का दरवाजा खोला और झुककर सुषमा को सलाम किया। इसके मानी यह थे कि सुषमा उस रेस्तरां में अक्सर जाती थी।

रेस्तरां के एक केबिन में दोनों बैठ गए, सुषमा ने चाय का आर्डर

दिया। फिर वह जगतप्रकाश से बोली, "आप बहुत भले हैं, बहुत साव। लेकिन यह दुनिया भले और सीधे आदमियों के लिए नहीं है। स्वार्थ, फरेब, झूठ और हिंसा—इन्हीं पर यह दुनिया कायम है। पता नहीं अपने अनुभवों से आपको कोई सबक मिला या नहीं। आपके साथ ज्यादती हुई, मैं यह अनुभव करती रही हूँ।"

जगतप्रकाश ने गौर से सुषमा को देखा, उसकी सुन्दरता और आत्मविश्वास आई थी। उसने पूछा, "तुम्हें कैसे पता कि मेरे साथ ज्यादती हुई थी?"

"इसलिए कि आपको फँसाने में रूपलाल का हाथ था, इन्हीं का अनुरोध थी। मैंने उन दोनों की बातें सुन ली थीं।"

एकाएक जगतप्रकाश पूछ बैठा, "तुम्हारा विवाह हुआ या नहीं?"

सुषमा हँस पड़ी, "नहीं, और अब मेरा विवाह होगा भी नहीं, क्योंकि विवाह करने को मैं तैयार नहीं हूँ। मुझे क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में अंग्रेजी के लेक्चरर की जगह मिल गई है। अब मैं किसी बंधन में नहीं बंधना चाहती हूँ। विवाह के लिए मुझमें कोई प्रवृत्ति नहीं है शायद मैं किसी एक पुरुष की होकर रह नहीं सकती। हाँ, कहाँ ठहरे हैं आप?"

"अभी तो प्रोफेसर शर्मा ने मुझे अपने साथ ठहरा लिया है। मकान तो छूट गया था मेरी गिरफ्तारी के बाद ही। आज से ही मकान की तलाश करना आरम्भ कर दूँगा।"

"सिविल लाइंस में मिस्टर बनर्जी के बँगले का एक हिस्सा खाली है दो कमरे हैं, किचन है, बाथरूम है। तीन दिन पहले उन्होंने मुझसे कहा था किराया पैंतीस रुपया महीना मांगते हैं पिछला किराएदार तीस रुपया महीना देता था। अगर कहिए तो वह मकान आपको दिलवा दूँ—किराया वही तीस रुपया ही तय करा दूँगी।"

जगतप्रकाश ने सुषमा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया, वह आँखें नीची किये हुए कुछ सोच रहा था। कितनी साहसी, कितनी स्पष्टभाषिणी थी यह सुषमा! और तभी उसे अनुभव हुआ कि उसका हाथ सुषमा के हाथ में चला गया। उसे सुषमा के हाथ से अपना हाथ छुड़ाने की इच्छा नहीं हुई। सुषमा कहती जा रही थी, "उस मकान में रहने में आप मेरे पड़ोसी रहेंगे, लेकिन आपको मुझसे कोई खतरा नहीं होगा। आपने मेरे साथ विवाह

स इनकार करके अपना भला किया, मेरा भी भला किया। विवाह के हम दोनों का जीवन कटु और विषाक्त हो जाता। मैंने उस समय इनका ख नहीं किया था जिस दिन आप मुझे झटककर चले आए थे। लेकिन यह है कि क्या मैंने आपको अपने साथ विवाह के बंधन में फसाने के वह सब किया था? शायद किया था, शायद नहीं किया था। मुझे अच्छे लगे थे, उस सबके बाद भी आप मुझे अच्छे लग रहे हैं। अच्छा मैं अब यह तो नहीं होते कि मैं आपके साथ विवाह करूँ। सोचती हूँ अगर आपसे मेरा विवाह हो गया होता तो आप मुझे बुरे लगने लगते।'

जगतप्रकाश के शरीर में एक सनसनाहट दौड़ रही थी। यह सब क्या रहा है—उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वह सुषमा के एक प्रश्न से किंचित् हो गया, "सच कहिए, आज जब आपके साथ मेरे विवाह का ई प्रश्न नहीं रह गया, तब क्या मैं आपको अच्छी लगती हूँ?"

बड़ा जबरदस्त नियन्त्रण रखना पड़ा जगतप्रकाश को अपने ऊपर, जब उसने कहा, 'मैं कह नहीं सकता, लेकिन तुम मुझे बुरी नहीं लग रही।"

चाय आ गई थी, चाय पीकर सुषमा ने बिल अदा किया। फिर उठते हुए उसने कहा, "आपको मेरे पापा से बदला लेना चाहिए।" और वह खिलखिलाकर हँस पड़ी, "मैं इतनी बुरी नहीं हूँ जितने मेरे पापा हैं। अच्छा, शाम आप मेरे यहाँ आइएगा, पापा एक केस में कानपुर गए हैं। मैं खाने की बात कर रखूँगी।"

जिस समय जगतप्रकाश अपने विभाग वापस लौटा प्रोफेसर शर्मा वाइस चांसलर से मिलकर वापस आ गए थे। वह कुछ झुंझलाए हुए-से थे। उन्होंने जगतप्रकाश से कहा, "क्या बताऊँ, डाक्टर कौल अगले हफ्ते ज्वाइन कर रहे हैं। अभी उनकी तन्दुरुस्ती ठीक नहीं है, डॉक्टरों की सलाह है कि वह अभी तीन महीने और आराम करें। लेकिन उन्हें समझाए कौन? जिद पकड़ गए हैं। वाइस चान्सलर का कहना है कि उन्हें जबरदस्ती छुट्टी नहीं दी जा सकती। उन्होंने कोई दूसरा रास्ता निकालने को कहा है। कल सुबह तुम उनसे मिल लेना, उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं तुम्हें उनके पास भेज दूँ।"

'अच्छी बात है सर, कल मैं उनसे मिल लूँगा। वैसे मैं तीन चार महीने

इन्तज़ार कर सकता हूँ। आदमी का कोई वश नही, परिस्थितिया
उनसे समझौता करना ही पडेगा।"

दूसरे दिन सुबह ग्यारह बजे जगतप्रकाश वाइस चासलर से
पहुँचा। वाइस चांसलर ने जगतप्रकाश से पूरी बात सुनी, फिर उन्होंने
"मुझे बडा दु ख है कि इस समय मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सक
वैसे मैं सी० आई० डी० की रिपोर्ट से और इस टर्म के बाद मैं तुम्हे
जगह ले लूगा। लेकिन अच्छा यह होगा कि तुम यहाँ के कलक्टर से मिल
अपनी स्थिति स्पष्ट कर दो। शायद वह तुमसे इस प्रकार का बयान
कि कम्युनिज्म पर तुम्हे विश्वास नहीं है। अगर कलक्टर सरकार से तुम्हा
सिफारिश कर दे तो मैं तुम्हे तत्काल ले लूगा।"

"लेकिन मुझे कम्युनिज्म पर विश्वास हो गया है।" जगतप्रकाश बो
"जब मैं गिरफ्तार हुआ था तब मुझमे कम्युनिज्म के प्रति एक तरह
भावनात्मक लगाव भर था लेकिन विश्वास नही था। जेल मे रहकर मैं
कम्युनिज्म पर मनन किया उसका साहित्य मैंने पढा, और अब मैं क
सकता हूँ कि मुझमे कम्युनिज्म के प्रति पूर्ण विश्वास है, उसके प्रति गहरी
आस्था है।"

वाइस चासलर ने ग़ौर से जगतप्रकाश को देखा, एक मुसकान
मुख पर आई, तुम साहसी हो तुम सत्यवादी हो, तुम्हारे प्रति मेरे मन मे
आदर है। लेकिन नीति कहती है कि अपना काम साधने के लिए अगर
झूठ बोलना पडे जो अहितकर न हो तो उसे बोल देना चाहिए। वैसे मैं
तुम्हारी पूरी सहायता करूँगा, सरकार जबरदस्ती कोई गैर-कानूनी बात
नही मनवा सकती, लेकिन इसके लिए तुम्हे इस टर्म के अन्त तक ठहरना
पडेगा। मैं तुम्हारे हित की ही बात कह रहा हूँ इस पर अच्छी तरह
समझ लो।"

जगतप्रकाश उठ खडा हुआ, 'धन्यवाद सर! मैं सोचूगा लेकिन—
लेकिन—बडा मुश्किल काम बताया है आपने।"

वाइस चासलर ने उठकर जगतप्रकाश से हाथ मिलाया
मेरी मुश्किल हल हो जाएगी। तुम समझदार हो, और तुम जानते हो
कि कम्युनिज्म ने नीति वाले झूठ से इनकार नही किया है।"

ज्ञानप्रकाश ने वाइस चासलर की बात का कोई उत्तर नही दिया, वह उठकर चल दिया। उसके मन मे एक तरह की कडुआहट आ गई थी इस बातचीत के बाद। एक विश्वविद्यालय का वाइस चासलर, प्रकाण्ड पंडित, विद्वान् और इज्जतवाला आदमी उसे झूठ बोलने की सलाह दे रहा था। तभी उसे अनुभव हुआ कि सारे समाज की मान्यताएँ इस सुविधा और झूठ की मान्यताएँ हैं। वाइस चासलर ने अभी कहा था कि कम्युनिज्म ने जाति के झूठ से इनकार नही किया है, और उन्होंने गलत नही कहा था। रूस ने जर्मनी से दोस्ती की, अपनी सुविधा को ध्यान मे रखकर, लेकिन रूस में जर्मनी के प्रति सद्भावना नही थी, हो भी नही सकती थी। और अन्त मे जर्मनी और रूस मे ही युद्ध छिड गया। यह युद्ध अनिवार्य था।

लेकिन क्या व्यक्ति और समाज की मान्यताएँ एक हो सकती हैं या एक होनी चाहिए? गाधी का कहना है कि ये मान्यताएँ एक होनी चाहिए, तभी स्थायी शान्ति और सुख सम्भव है। लेकिन समाज और व्यक्ति की मान्यताएँ एक हो नही सकती, होनी भी नही चाहिए अन्यथा समस्त सामाजिक विकास ही रुक जाएगा। समाज की स्थापना सामूहिक संगठन की स्थापना है, एक सामूहिक संगठन दूसरे सामूहिक संगठन से भिन्न हो सकता है, विपरीत दिशा मे हो सकता है। एक समाज को दूसरे समाज का मुकाबला करना होता है, एक देश की दूसरे देश से प्रतिद्वन्द्विता है। एक जाति दूसरी जाति से संघर्षरत है, एक धर्म दूसरे धर्म का विरोधी तत्त्व है। यह देश, जाति, धर्म का संगठन व्यक्तियों के चारित्रिक बल पर निर्भर है। व्यक्ति अगर सुविधा और झूठ की मान्यताएँ स्वीकार कर ले तो समाज बिखर पड़ जाएगा।

और तभी ज्ञानप्रकाश के सामने एक समस्या और उठ खड़ी हुई। ये जितनी सामाजिक मान्यताएँ हैं, व्यक्तियों द्वारा ही तो प्रतिपादित होती हैं। आखिर व्यक्ति और समाज की मान्यताओं की सीमारेखा कहाँ है? ज्ञानप्रकाश एक नई उलझन मे फँस गया। क्या व्यक्ति की मान्यताएँ द्वैत रूप धारण कर सकती हैं? शायद हाँ, शायद नही। राष्ट्र के नेता अथवा राजनीतिज्ञ, इनके व्यक्तित्व दो धाराओं मे काम करते हैं। एक समाज के प्रतिनिधि के रूप मे, सामूहिक हित-अहित के द्योतक, दूसरा व्यक्तिगत रूप

म जहाँ मनुष्य का मनुष्य के साथ सम्बन्ध है, जहाँ व्यक्तियों के हित समान हैं। इन दोनों व्यक्तित्वों की मान्यताओं म अन्तर होना चाहिए, अन्यथा समाज का विकास सम्भव नहीं है।

वाइस चासलर ने जगतप्रकाश को व्यक्तिगत हित के लिए सामाजिक मान्यता अपनाने की सलाह दी थी। शायद जगतप्रकाश का प्रश्न सामाजिक प्रश्न था भी जहाँ एक सरकार अपनी नीतियों और अपने हितों की रक्षा के लिए दूसरे समाज यानी कम्युनिस्ट दल के व्यक्तियों का प्रताडित करती है। लेकिन जहाँ तक जगतप्रकाश का प्रश्न था, यूनिवर्सिटी की लक्चररशिप केवल उसके व्यक्तिगत हित की बात थी। वहा सामाजिक हित अथवा अहित का प्रश्न ही नहीं था। नहीं, उसे अपने व्यक्तिगत हित के लिए झूठ नहीं बोलना चाहिए। उसकी चिन्ता वह क्या करे—जो कुछ आगे होने वाला है, उस पर उसका कोई वश नहीं।

अपने अन्दर वाले इस मथन के बाद उसके अन्दर वाली कटुता दूर हो गई। कलक्टर से झूठ बोलकर उसे धोखा देकर वह अपने व्यक्तिगत हित का साधन नहीं करेगा किसी हालत म नहीं। वह तीन चार महीने तक प्रतीक्षा कर सकता है।

जगतप्रकाश प्रोफेसर शर्मा के कमरे मे पहुँचा। जगतप्रकाश को देखते ही वह बोले, मिल आए वाइस चासलर से ? क्या बात हुई ?"

"वह कहते हैं कि कल मैं कलक्टर से मिलकर यह बयान दे दू कि मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ और कलक्टर से सरकार के पास अपनी सिफारिश करवा दू तो वह मुझे यूनिवर्सिटी म तत्काल ले लग नहीं तो मुझे इस टर्म के अन्त तक इन्तजार करना होगा।'

'कायर कहीं का।" प्रोफेसर शर्मा के माथे पर बल पड गए यूनिवर्सिटी का वाइस चासलर होकर कलक्टर से इतना डर और दब। लेकिन किया क्या जाए ? हम गुलाम हैं सिर्फ इसलिए न कि हम कायर हैं। फिर तुम कल कलक्टर से मिल लो जहाँ तक मुझे पता है वह भला आदमी है।"

कुछ देर चुप रहकर जगतप्रकाश ने कहा, "मैं सोच रहा हू कि इस टर्म के अन्त तक मैं इन्तजार ही कर लू। मैं व्यक्तिगत हित के लिए झूठ नहीं बोलना चाहता, मैं कम्युनिस्ट हो गया हूँ।'

प्रोफेसर शर्मा मुसकराए, "मैं कम्युनिस्ट पार्टी को बधाई देता हूँ कि उसे तुम्हारे जैसा चरित्रवान्, निष्ठावान और बुद्धिमान आदमी मिल गया है। अगर तुम इस टर्म के अन्त तक इन्तजार कर सकते हो तो ठीक है।" फिर कुछ रुककर उन्होंने कहा, "यह तुम्हारा व्यक्तिगत मामला है, मैं तुमसे कोई आग्रह नहीं करूँगा, लेकिन मैं समझता हूँ कि तुम किसी राजनीतिक पार्टी के योग्य नहीं हो, राजनीति झूठ और बेईमानी का दूसरा नाम है।"

"कम्युनिज्म राजनीतिक नारा है—क्या आप ऐसा समझते हैं?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"तुम क्या समझते हो?" प्रोफेसर शर्मा ने जगतप्रकाश के प्रश्न का उत्तर न देकर स्वयं प्रश्न किया।

"मैं समझता हूँ कि कम्युनिज्म जीवन का दर्शन है, मानव-विकास का सत्य है। माइकावली और चाणक्य का युग समाप्त हो गया। इंडस्ट्रियल रिवाल्यूशन के बाद अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र की प्राचीन परम्परागत मान्यताएँ नष्ट हो गई हैं। राजनीतिशास्त्र और दर्शनशास्त्र मिलकर एक नए अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र की रचना कर रहे हैं।"

प्रोफेसर शर्मा के मुख पर एक चमक आई, 'तुमने शायद जेल में काफी अध्ययन किया है?"

'वहाँ मेरे पास और कुछ करने को था ही क्या?" जगतप्रकाश मुसकराया, मैंने अध्ययन जो कुछ किया वह तो किया ही, मैंने मनन बहुत किया है। हो सकता है कि मेरा अध्ययन और मनन एकांगी हो, क्योंकि जिन परिस्थितियों में मेरा यह अध्ययन और मनन हुआ है वह असाधारण थी। लेकिन इतना तय है कि मेरे पास मनन करने के लिए प्रचुर समय था।"

प्रोफेसर शर्मा को एक मीटिंग में जाना था, उन्होंने कहा, "फिर रात में तुमसे विस्तार में बातें होंगी।"

कुछ हिचकिचाते हुए जगतप्रकाश ने कहा, "मैं कुछ दिनों के लिए कानपुर जाना चाहता हूँ। सिविल लाइन्स में एक मकान तय हो रहा है, आज शाम को ही मैं शायद वह मकान ले लूँ।"

'नहीं, जब तक यूनिवर्सिटी में तुम्हारी नियुक्ति न हो जाए तब तक तुम्हें मकान लेने की कोई जरूरत नहीं है। मेरे यहाँ तुम्हें तब तक रहना है।

शायद मुझे तुमसे कुछ सीखना पडे।" प्रोफेसर शमा हँस पडे, 'कानपुर से तुम मेरे यहा ही लौटना। तुम कानपुर कब जाओगे?"

कुछ सोचकर जगतप्रकाश ने कहा, "मुझे यहा कोई काम नही है, मैं आज तीसरे पहर ही जा सकता हूँ।"

"ठीक है। मुझे भी आज रात की गाडी से कलकत्ता जाना है, वहाँ एक मीटिंग है। दो दिन बाद वापस लौटूगा।"

जगतप्रकाश को तीन बजे की एक्सप्रेस ट्रेन मिल गई और सात बजे कानपुर पहुँच गया। रात हो गई थी। उसने स्टेशन के पास एक होटल एक कमरा लेकर उसमे अपना असबाब रख दिया, फिर वह जमील का पता लगाने के लिए निकल पडा। खलासी लेन म बाबूराम मिश्र का मकान उसे आसानी से मिल गया। बाबूराम उस समय अपने घर म ही था। जगतप्रकाश को देखते ही बाबूराम उसे पहचान गया, उसने कहा, 'अरे आप! तो आप भी जेल से छूट आए—कुछ सुना तो था। आइए अदर।

दरवाजे से ही जगतप्रकाश ने कहा, 'मै अभी इलाहाबाद से आ रहा हूँ। स्टेशन पर खाना होटल म असबाब रखकर जमील का पता लगाने निकला हूँ। जमील की पत्नी ने बतलाया था कि वह आपके साथ ही ठहरे हुए हैं।"

'हाँ, वह मेरे यहाँ ही ठहरे हुए हैं लेकिन इस वक्त वह घर म नही हैं। एक शादी की दावत म गये हुए हैं और रात म देर से लौटेंगे। भीतर आइए न हो तो एक प्याला चाय ही पी लीजिए। वैसे उस दावत म मुझे भी जाना है लेकिन जाने की तबीअत नही हो रही। यह शादी क्या, एक तरह का खिलवाड है। आप वर और वधू दोनो को ही जानते है, वर हैं चौधरी सुखलाल और वधू है शिवदुलारीदेवी।

जगतप्रकाश अन्दर जाकर कमरे मे बैठ गया और बाबूराम ने स्टोव जलाकर चाय का पानी चढा दिया। फिर वह बोला, "यह सुखलाल—इसने अपने पिता की मर्जी के खिलाफ यह शादी की है। हिन्दू लॉ के अनुसार यह शादी हो ही नही सकती थी, लेकिन काग्रेसमैनो ने मिलकर आर्यसमाजी ढग से यह शादी करवा दी है। जब तक कोर्ट म ये लोग रजिस्टर्ड मैरेज न करवा लें तब तक यह शादी कानूनी नही हो सकती।

ल्क हाल म तमाम काग्रेसमैनो को दावत दी गई है, अपने घर म दावत न की हिम्मत नही पडी। कौन जाता सुखलाल के घर मे खाना खाने—अर मे यह हरिजन उद्धार का मामला ठीक है।"

"क्यो? महात्मा गाधी तो हरिजनो के बीच ठहरते है हरिजन वस्ती में हैं, हरिजना के साथ खाना खाते है। हरेक काग्रेसमन महात्मा गाधी का अनुयायी है।"

"अरे महात्मा गाधी आदमी थोडे ही है, वह तो देवता हैं, साक्षात् भगवान्! यह छुआछूत, यह जाति पाति—ये मनुष्यो पर लागू होते है, देवताओ पर नही।"

चाय पीने के बाद बाबूराम ने जगतप्रकाश से कहा, 'आप भी चलिये मेरे साथ उस दावत म। मुझे यह छूट है कि म जिसे चाहूँ उस दावत मे निमत्रित कर दू। शिवदुलारीदेवी का अगर यह पता होता कि आप यहाँ कानपुर म हैं तो वह जबदस्ती आपका घसीटकर ले जाती। जानते है, आपकी वह बहुत इज्जत करती हैं, अकसर आपका याद कर लेती है। आपकी गिरफ्तारी की खबर सुनकर वह एक तरह के गर्व से तनकर कह उठी थी, 'वह प्रोफेसर! तुम लोगा ने उसे पहचाना नही। वह दुनिया का बहुत बडा आदमी बनेगा।"

साधारण परिस्थिति मे जगतप्रकाश उस दावत म न जाता, लेकिन बाबूराम की बात सुनकर उसकी पुरानी स्मृतिया जाग उठी। शिवदुलारी को एक बार फिर देखने की इच्छा उसमे प्रबल होउठी, उसने कहा 'अच्छी बात है। होटल के खाने के मुकाबले वहा का खाना अच्छा होगा। फिर वहाँ जमील स आज ही मुलाकात हो जाएगी। सच पूछो तो मैं जमील काका का ढूढता हुआ ही कानपुर आया हूँ।"

जिस समय ये दोनो तिलक हॉल पहुँचे नौ बज रहे थे। करीब सौ आदमी वहाँ एकत्रित हुए थे, खाने का प्रबन्ध मेज-कुरसियो पर था। जगतप्रकाश ने देखा कि जमील एक ओर कुछ आदमियो के साथ खडा बातें कर रहा है और हॉल के बीचो-बीच चौधरी सुखलाल और शिवदुलारी को घेरे कुछ आदमी खडे हैं। जगतप्रकाश ने बाबूराम से कहा, 'वह रहे जमील काका।" और जगतप्रकाश जमील की ओर बढने को मुडा। लेकिन

वावूराम न उसका हाथ पकड लिया, "पहले शिवदुलारी और सुखलाल से मिल लो।"

जगतप्रकाश को देखते ही शिवदुलारी चिल्ला उठी, "अरे प्रोफेसर साहब, तुम! मेरे इतने अच्छे भाग्य कि भगवान विना बुलाए चले आए!" और उठकर वह जगतप्रकाश की ओर बढी, "तो तुम छूट आए! खबर उडती उडती सुनी थी।" वह हँस पडी, "तुमसे कहा था न! ताकी कर ही ली—आओ मेरे साथ!" जगतप्रकाश का हाथ पकडकर वह जहाँ पहले बैठी थी वहा घसीट ले गई। उसने सुखलाल से कहा, "पहचानते हो प्रोफेसर को, हम लोगो के साथ रामगढ गये थे।"

सुखलाल न जगतप्रकाश का अभिवादन किया, तभी जगतप्रकाश चौंक पडा। उसे मानो अपनी आखो पर विश्वास नही हुआ। सुखलाल की बगल मे जो आदमी बैठा था वह बडे गौर से जगतप्रकाश को देख रहा था। वह रूपलाल था। पट्टू का गरम कोट, खादी की धोती, सिर पर गाधी टोपी—इस पोशाक मे रूपलाल काग्रेसमना की उस भीड म सम्मिलित था। सुखलाल ने रूपलाल स कहा, "यह इलाहावाद यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जगतप्रकाश हैं। सुना है कम्युनिस्ट होने के नाते यह गिरफ्तार हो गए थ। हम लोगो से इनकी पुरानी मुलाकात है। देवीजी तो इनकी पूजा करती हैं।"

रूपलाल न एक कृत्रिम मुसकान के साथ जगतप्रकाश को नमस्ते की, "आपसे मिलकर वडी प्रसन्नता हुई।"

शिवदुलारी ने जगतप्रकाश से कहा, "यह भाई रूपलाल हैं। वैसे पुलिस के आदमी है लेकिन अन्दर से बहुत बडे देशभक्त हैं। चौधरी साहब से तो इनका घरेलू सम्बन्ध है।"

"मैं इन्हें अच्छी तरह जानता हूँ।" जगतप्रकाश न 'अच्छी तरह' शब्दो पर जोर देते हुए कहा और फिर अपने मुख पर भी कृत्रिम मुसकराहट लाते हुए उसने रूपलाल स कहा, "आपसे यहाँ भेंट होगी, इसकी कल्पना तक नहीं की थी। म आज ही यहाँ अनायास आ पहुँचा, अभी दस-ग्यारह दिन हुए है जेल स छूटे हुए।"

बडे भोलेपन के साथ रूपलाल न कहा, "मेरी तो समझ म ही नहीं आया कि आप क्यो गिरफ्तार कर लिये गए। चलिये, छूट तो गए।"

ाद म आपने अपनी पोस्ट ज्वाइन कर ली होगी। मैंने सुना है कि
। मकान आपकी बहन ने खाली कर दिया था।"
नकी पूरी खबर थी रूपलाल को, लेकिन अब वह कितना अहित कर
है। जगनप्रकाश बोला, "इलाहाबाद से ही आ रहा हूँ। वाइस
र ने ज्वाइन कर लेने को कहा था, लेकिन म अभी सोचने विचारने
। म हू। इस सेशन के बाद ही ज्वाइन करूँगा।"
शिवदुलारी ने कहा, "आप लोग तो जिगरी दोस्त निकले, मुझे क्या
था!"
रूपलाल बोला, "हम पुलिस वालो के पास जिगर तो होता है लेकिन
ना के लिए नही। हमलोग दूर के रिश्तेदार होते ह।"
जमील अपने साथियो से बात खत्म करके वहाँ आ गया, उसने जात-
ग मे कहा, "क्या बरखुरदार, मुझसे मिलने आए हो इलाहाबाद से और
इन लोगो म उलझ गए, मुझे पूछा तक नही।" उसने रूपलाल की ओर
कर कहा, "इन्सपेक्टर साहब! हम लोगो के चक्कर मे पडकर आप क्या
नौकरी खतरे म डाल रहे हैं। सुखलाल की खातिर-तवाजा आप
के घर म मजूर कीजिए, इस तिलक हॉल म नही।"
रूपलाल ने उत्तर दिया, "जमीलअहमद साहब! मुझे सरकार से
तनख्वाह ही इसलिए मिलती है कि मै आप लोगो से मिलू, आप लोगो के
मन की बात निकालकर सरकार को उसकी इत्तिला कर दू। आप जानते
है कि मैंने आप लोगो को पहले से ही आगाह कर दिया है। लेकिन मैं भी तो
हिन्दुस्तानी हूँ, देश का प्रेम मेरे अन्दर भी है। वैसे जिन्दा रहने के लिए
नौकरी करनी पडती है। जितना भी हो, आप लोगो की मदद करने को
तैयार हूँ। फ़र्ज, देश प्रेम और दोस्ती—इन तीनो म तालमेल बैठाना बडा
मुश्किल होता है।"
जगनप्रकाश का मन कर रहा था कि वह रूपलाल के मुख पर जोर का
तमाचा मार। जो कुछ सुषमा ने उसे बतलाया था, जो कुछ उसने माता-
दीन के सम्पर्क म देखा था, उसके हिसाब से यह आदमी शैतान है। लेकिन
यह दुनिया शैतानो म भरी पडी है, फिर किस शैतान से वह उलझता फिरेगा!
जमील जगनप्रकाश का हाथ पकडकर उस भीड से अलग हो गया।

जब मेजों पर खाना लग गया था और लोग खाना खाने के लिए बठ रहे थ जमील ने जगतप्रकाश के साथ एक मेज पर बैठते हुए कहा, "दो सौ आदमियों को दावत दी गई थी, लेकिन कुल सौ-सवा सौ आदमी खाना खाते आए हैं। लेकिन इसकी शिकायत क्या ? इतने आदमी आ गए एक अदना की दावत में, यही क्या कम है ?"

जिस मेज पर यह दोनो बैठे थ उस पर चार आदमियों के खाने का इंतजाम था। लेकिन वहाँ केवल यही दो थे और सब लोग बैठ चुके थे। जमील ने परोसने वालों से दो पत्तलें हटवा दीं, फिर वह जगतप्रकाश से बोला "अच्छा ही हुआ, हम दोनों अकेले में बात कर सकते हैं। हाँ, तो तुम कब लौटे ? मुझे आज ही सईदा की चिट्ठी मिली कि तुम गाँव गये थे, मैं सोच रहा था कि तुम शायद इलाहाबाद चले गए होगे।"

"हाँ मैं आज ही इलाहाबाद से आया हूँ।" जगतप्रकाश ने इलाहाबाद मे जो कुछ हुआ था वही विस्तार के साथ जमील को बतला दिया।

करीब ग्यारह बजे रात को दावत खत्म हुई। जमील ने जगतप्रकाश को विदा करते हुए कहा "कल सुबह नौ दस बजे के बीच मैं तुम्हारे होटल मे आऊँगा मेरा इंतजार करना।

दूसरे दिन जब जगतप्रकाश सोकर उठा, उसके अन्दर एक तरह की थकावट थी। उसे लग रहा था कि वह रास्ता भूल गया है। आखिर वह कानपुर क्यो आया ? उसकी समझ मे नही आ रहा था कि उसका रास्ता किधर है, उसकी मंजिल कहाँ है! बड़ी देर तक वह बिस्तर पर पड़ा सोचता रहा। बाहर कोहरा छाया हुआ था, उस समय का कोई अन्दाज नहीं था।

एकाएक उसकी नजर सिरहाने रखी हुई उसकी घड़ी पर पड़ी, नौ बज रहे थे। एक झटके के साथ वह उठा, जमील ने उससे नौ-दस बजे के बीच आने का वादा किया था। जल्दी जल्दी वह तैयार हुआ, और फिर बैठकर वह जमील की प्रतीक्षा करने लगा। समय उसे काट रहा था, एक थकन साथ ही एक घुटन। तभी जमील ने उसके कमरे मे प्रवेश किया और जगतप्रकाश को एक तरह की राहत मिली।

जमील कुछ उदास सा था, 'क्या बतलाऊँ बरखुरदार, आज सुबह बाबू राम के घर की तलाशी हुई, गोकि तलाशी में कोई चीज नहीं मिली। बत

ार यह अच्छी तरह जानती है कि कम्युनिस्ट लोग और ट्रेड यूनियन ब्रिटिश सरकार की मुखालिफत नहीं कर रहे। बाबूराम के यहाँ तलाशी सी नतीजे पर पहुँचा जा सकता है कि कोई शख्स बाबूराम का जाती न है और वह बाबूराम को ख्वाहमख्वाह फँसाना चाहता है। इन्हीं दा म मुझे यहाँ आने म कुछ दर हो गई।"

'यह तो बडी बजा बात है। इस बात का पता लगाना चाहिए कि कौन स बाबूराम के पीछे पडा है। जो लोग अँधेरे म प्रहार करते हैं उनसे वधान रहना अच्छा है।"

पता लगे तो कैसे?" उलझन के स्वर म जमील बोला, "सोच रहा रूपलाल से इस सम्बन्ध म बात कर लू। रूपलाल से खबरें मिल जाया रती हैं। उसे शायद पता होगा।"

"रूपलाल!" जगतप्रकाश के माथे पर बल पड गए, "रूपलाल खुद पीछे वार कर सकता है, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। उससे कोई सहायता नहीं मलगी।"

'मुझे भी उम्मीद कम ही है, लेकिन चौधरी सुखलाल ने कहा है कि रूपलाल से मिल लिया जाए, और मैं भी इसमें कोई हर्ज नहीं समझता। चलो मेरे साथ, कहीं बाहर निकला जाए।"

रूपलाल के यहाँ जाने को जगतप्रकाश क्यों तैयार हो गया, इसका पता उसे भी नहीं था। बहुत सम्भव है उसके अन्दर अनजाने एक भावना रही हो कि शायद रूपलाल से यमुना का कुछ पता चल जाए। जमील के साथ वह चल पडा।

मैस्टन रोड म एक मकान की ऊपर की मंजिल मे रूपलाल रहता था। जमील ने किवाड पर दस्तक देकर पुकारा, "रूपलाल साहब!"

थोडी देर बाद अन्दर से एक स्त्री-कण्ठ उसे सुनाई दिया, "वह घर पर नहीं हैं। आज सुबह लखनऊ चले गए हैं, शाम तक आएँगे।"

जगतप्रकाश चौंक उठा, यह कण्ठ उसका बहुत अधिक पहचाना हुआ था। क्या यह कण्ठ यमुना का था? लेकिन यमुना रूपलाल के घर म क्या आई? उससे न रहा गया, उसने कहा, "उनसे कह दीजिएगा कि जगतप्रकाश आए थे—बस इतना ही।'

एकाएक मकान का दरवाज़ा खुल गया। जमील पीछे हट आया था, जगतप्रकाश दरवाज़े के सामने था। "अरे आप! हाय राम आप! उन्होंने आपके खिलाफ कुछ नहीं किया था, आप विश्वास मानिए। लेकिन आपको तो कालेपानी की सजा हुई थी, आप छूट कैसे आए?"

जगतप्रकाश बोला, "मुझे सजा नहीं हुई थी, बिना मुकदमा चलाए मैं बन्द कर दिया गया था। जैसे बन्द हुआ था वैसे छूट भी आया हूँ। अच्छा, अब मैं चलता हूँ।"

'आपके साथ शायद यह आपके जमील काका हैं, आपके गाँव में इन्हें देखा था। लेकिन—कुछ देर बाद जाइएगा। आपसे बहुत बातें पूछनी हैं।

जमील जगतप्रकाश से बोला, 'मैं तिलक हॉल में बैठता हूँ चलकर, वहाँ तुम्हारा इंतज़ार करूँगा।"

जगतप्रकाश मकान के अन्दर चला गया, वह दरवाज़ा बाहरी कमरे का था। यमुना ने कहा, 'बैठिए! अब यह बताइए, यह सब क्या हुआ था?" यमुना की आवाज़ काँप रही थी।

'सब-कुछ बतलाता हूँ, लेकिन सबसे पहले एक बात जानना चाहता हूँ, क्या तुम्हारी रूपलाल से शादी हो गई है?"

एकाएक यमुना फूट पड़ी। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे, और जैसे वह अपना भार स्वयं न सम्हाल सकती हो, वह ज़मीन पर बैठ गई, "यह क्यों पूछ रहे हैं? क्यों नहीं रह गए हैं आप मुझे यहाँ? आपकी तरफ से अम्माँ निराश हो गई थीं, चाचाजी निराश हो गए थे, और सब लोगों ने मेरा विवाह कर दिया, मेरे रोने-कलपने की कोई परवाह नहीं की किसी ने। स्त्री कितनी बेबस होती है! फिर बाबूजी के बीस हज़ार रुपये भी तो थे इनके पास। इन्होंने वह सारी रकम अम्माँ को दे दी, न देते तो इनसे कोई ले नहीं सकता था। अम्माँ ने बस्ती में ज़मींदारी खरीद ली है और वहीं चली गई हैं, मैं तब से यहाँ हूँ।"

जगतप्रकाश सिर झुकाए बैठा रहा। फिर घुटे हुए स्वर में उसने पूछा, "तुम सुखी तो हो यहाँ?"

बल लगाकर यमुना ज़मीन से उठी, मुँह फेरकर उसने कहा, "अभी तक तो दुखी नहीं थी, अब आगे क्या होगा, मैं नहीं जानती।"

जगतप्रकाश उठ खडा हुआ, "रूपलाल से न बतलाना कि मैं यहा आया था, अब मैं चलता हूँ। मेरी वजह से तुम दुखी न होना—रूपलाल ने मेरे खिलाफ कुछ भी नहा किया है।"

यमुना कहती जा रही थी, "लेकिन लेकिन " और जगतप्रकाश तेजी मे कमरे के बाहर निकल गया।

तिल्क हाल म जमील बठा हुआ जगतप्रकाश की राह देख रहा था। उसने कहा, "अरे, वडी जल्दी चले आए तुम! क्या तुम्ह पता नही था कि इस लडकी से रूपलाल से शादी हो गई है?"

जगतप्रकाश के मुख पर एक व्यग्यात्मक मुसकान आई, "नही, दीदी को भी पता नही था। जमील काका, मेरी गिरफ्तारी मे इस रूपलाल का हाथ था—मुझे पता चला है। क्या इसने मुझे इसलिए गिरफ्तार कराया था कि यह यमुना से शादी कर ले? यमुना इतनी सुदर तो नही है।"

सिर हिलाते हुए जमील न कहा, "नही बरखुरदार, यह लडकी वहुत ज्यादा सुन्दर है, तन से भले ही न हो, लेकिन मन से। तुम अपनी ही बात लो। तुम इसे बेहद प्यार करने लगे थे कि नही? यह रूपलाल भी तो इसान है, खद अपने मन की सुन्दरता उसके पास भले ही न हो, यमुना के मन की सुन्दरता पर यह फरेफ्ता रहा होगा।"

एक बहुत ही कडुवी हँसी हँस पडा जगतप्रकाश, "मन! स्त्री के भी मन हाता है? नही जमील काका! चलो चला जाए।"

जमील जगतप्रकाश की इस कडुवी हँसी पर चकित रह गया। जगतप्रकाश के मन की व्यथा को वह नही देख पाया।

१६

"तकदीर अच्छी है जो इस कम्पाटमेण्ट के सब आदमी कानपुर म उतर गए।" जमील न इटर क्लास के एक छोट से कम्पाटमेण्ट मे प्रवश करत हुए जगतप्रकाश से कहा, "कानपुर के बाद कोई इतना बडा स्टेशन नही पडता जहा लोग इटर क्लास म आएँ। इत्मीनान के साथ बिस्तर बिछा लिया जाए, बरखुरदार।"

यन्त्र की भाति जगतप्रकाश न एक बथ पर अपना बिस्तर बिछा लिया, दूसरी बथ पर जमील न। दो मुसाफिर और आए, एक ने तीसरा बथ पर बिछाया, दूसरे ने ऊपर की बथ पर। जगतप्रकाश की बथ खिडकी से मिली हुई थी, वह चुपचाप बाहर प्लेटफाम की भीड का देखन लगा।

प्लेटफाम खचाखच भरा था, और वहा की भीड फौजिया की भीड थी। सकडा सिपाही अपना असबाब लिय हुए प्लेटफाम पर लेट थ, किसी मिलिटरी स्पशल की प्रतीक्षा म। उनके मुख पर किसी तरह की भावना नही थी। वे सब-के-सब बीस-बाईस साल के नौजवान थे जिन्होंने गाव म कभी अच्छा पहना नही था, अच्छा खाया नही था। इस समय कुछ ऊनी कम्बल बिछाए और ओढे लेटे थे कुछ ऊनी वर्दियाँ पहन हुए बठे थ। कुछ चाय पी रह थे, खाना खा रह थे या गा रह थ।

जगतप्रकाश सोच रहा था—य सब लोग मरन जा रह हैं। लकिन जैस युद्ध की भयानकता और मृत्यु की कुरूपता को उन्होन दखा ही नहीं था—उन्ह तो कवल भयानक गरीबी, शोषण और अभाव न बाच ही रहना पडा था। पर इन लोगो म कुछ एसे भी थ जो उदास थ, जिनके चहर मुरझाए हुए थ। जगतप्रकाश को लगा कि इन सनिको म कही कोइ उत्साह नही था

ो कोई उमग नही थी। ये लोग सिफ पैसे के मोह म पडकर जा रहे थे—
ने देश स दूर—बहुत दूर लडने और मरने के लिए।

अखबारो म जो खबरें आ रही थी उनसे तो यही लगता था कि ब्रिटेन
हर जगह पराजय मिल रही है। उत्तरी अफ्रीका मे जमन और इतालवी
जें आगे बढ रही हैं। पूव मे जापान तेजी के साथ बढता आ रहा है।
याम म युद्ध हो रहा है, मलाया के बाद बमा, बमा के बाद हिदुस्तान!
र उधर रूस—वह क्षत विक्षत कराह रहा है।

प्राचीन साम्राज्यवादी देश मिट रहे है और उनके स्थान पर उनसे भी
ानक साम्राज्यवादी देशा का अभ्युदय हो रहा है। पुरान साम्राज्यवाद
कुछ परम्पराएँ बन चुकी थी कुछ मयादाएँ स्थापित हो चुकी थी—
किन ये नए साम्राज्यवादी देश, भावनाहीन और क्रूर! इस नए साम्राज्य-
द को रोकना होगा, इसे कुचलना होगा। लेकिन यह कैसे?

जगतप्रकाश के कम्पाटमेण्ट के सामने मिलिटरी पुलिस की हिरासत मे
चौबीस-पच्चीस साल का युवक बठा हुआ रो रहा था, और उसके चारा
फ फौजी सिपाहिया की एक छोटी-सी भीड थी। यह युवक फौज स भागा
, यानी यह आदमी युद्ध म मरना नही चाहता था। अपने पिता से लडकर
घर छोड आया था, भरती करने वालो के बहकाव मे आकर क्षणिक
वेश म वह फौज म भरती हो गया था। और बाद म उसकी हिम्मत जवाब
गइ थी। किसके लिए मरे? क्यो मरे?

जगतप्रकाश ने जमील की ओर देखा, 'क्या जमील काका! अगर यह
दमी फौज म नही जाना चाहता तो इसे जबरदस्ती क्यो लिये जा रहे है ये
ग? इसके अन्दर युद्ध करने की कोई प्रवृत्ति नही है। यह तय बात है कि
ह आदमी युद्ध-क्षेत्र म अपनी जान बचाने का प्रयत्न करेगा।"

जमील न कहा, "ठीक कहते हो बरखुरदार, लकिन अगर ये लोग इसे
ड दें ना फौज से भागने वाला की तादाद बेतहाशा बढ जाएगी। बस पैसा
र अपनी जान बचने वाले लोग हमेशा से होते रहे ह, और फौज इन्ही लागा
नती हैं। लकिन इन पशेवर सिपाहियो की जातिया होती हैं, इन लोगा
खानदान होन ह जिनके अलग नैतिक मापदण्ड होते ह। इन जातियो तथा
नदानो के करीब-करीब सभी नौजवान फौज म भरती हो चुक है। लेकिन

इस विश्व-युद्ध मे बहुत ज्यादा फौज की जरूरत है। इस जग मे तापें, म
गन और टैंक लडते है। इस जग मे भाग सकने की गुजाइश नही है, व
मारा और मरा का सवाल रहता है। इस जग मे लोगो को मजबूरन ल
पडता है।"

वह कैदी रो रहा था, गिडगिडा रहा था, हाथ-पैर जोड रहा था अ
जान बचाने के लिए, और उसके इद गिर्द खडे लोगो मे कुछ चुपचाप स
दृष्टि से उसे देख रहे थे, कुछ हँस रहे थे, कुछ उसे गालिया दे रहे थे। ज
प्रकाश ने अब उधर से अपनी आखे हटा ली, गाडी ने अब चलने की सा
दी थी।

जगतप्रकाश ने घडी देखी, नौ बज रहे थे। गाडी चल दी और जग
प्रकाश ने एक ठडी सास ली। जमील अपने बिस्तर पर लेट गया था। श
के समय शिवदुलारी ने इन दोनो को अपने यहा खाना खाने बुलाया था
भोजन स्वादिष्ट बना था और इन दोनो ने पेट भरकर भोजन किया था
जमील ने लेटते ही अपनी आख बन्द कर ली, लेकिन जगतप्रकाश का म
बहक रहा था। वह भी लेट गया लेकिन जगतप्रकाश की आँखो मे नींद नह
थी। गाडी की रफ्तार अब तेज हो गई थी।

यह गाडी दिल्ली जा रही है, वही इस गाडी के सफर का अन्त होगा।
वहाँ से दूसरे दिन फिर यह गाडी वापस लौटेगी कलकत्ता के लिए। इस गाडी
का एक निर्दिष्ट मार्ग है, एक निर्दिष्ट गति है, एक निर्दिष्ट लक्ष्य है। लेकिन
क्या जगतप्रकाश का कोई निर्दिष्ट मार्ग है? क्या उसकी कोई निर्दिष्ट गति
है? क्या उसका कोई निर्दिष्ट लक्ष्य है? वह दिल्ली क्यो जा रहा है?

जमील के साथियो की एक बैठक है दिल्ली मे, पीपुल्स वार का नारा
बुलन्द करना है कुछ लोगो को। उन कुछ लोगो मे जगतप्रकाश को भी होना
चाहिए। जमील ने उसे समझाया था, और वह उस समय समझ
गया था।

लेकिन क्या वह इस पीपुल्स वार की भावना से प्रेरित होकर दिल्ली जा
रहा है? नही, ऐसा समझना अपने को धोखा देना होगा। असलियत यह है
कि वह भाग रहा है—भाग रहा है। उसका कोई निर्दिष्ट लक्ष्य नही है,
उसकी कोई निर्दिष्ट गति नही है, उसका कोई निर्दिष्ट मार्ग नही है।

ह भाग कहाँ से रहा है ? किससे रहा है ? क्या चीज़ें उसके वश मे है ? ोई याजना नही, काई कायक्रम नही, जैसे सब-कुछ अपने-आप हो रहा है।

सब-कुछ अपन आप हा रहा है—जगतप्रकाश अपने से ही उल्झ गया ! यह सब-कुछ अपन आप होना—यह तो मनुष्य की पराजय है। जहाँ म है वहा कर्ता भी है, कम कर्ता की व्युत्पत्ति है। जो कुछ हो रहा है, उसे रने वाला ता मनुष्य है। इन्ही कर्मों मे तो सघष है।

जगतप्रकाश की विचारधारा ने पलटा खाया। मनुष्य के हरेक कम के ल मे एक प्रेरणा रहती है, लेकिन क्या यह प्रेरणा वैयक्तिक है या यह प्रेरणा सामाजिक है ? व्यक्ति से समाज वनता है—यह सत्य है लेकिन समाज म ही तो व्यक्ति का अस्तित्व है, व्यक्ति समाज का अविच्छिन्न भाग है। जो व्यक्ति समाज स छिटक जाता है, वह अपराधी होता है, या वह पागल होता है। हरेक वयक्तिव प्रेरणा का एक सामाजिक पहलू होना अनिवाय है, इस यक्तिक प्रेरणा का सामाजिक प्रेरणा मे विलयन ही मानव विकास है। और इसके लिए मानव को सतत प्रयत्नशील होना पडेगा।

सके साथ अभी तक जो कुछ हुआ है वह अकारण नही हुआ है, उस बके कारण हैं, यद्यपि उन कारणा को ठीक-ठीक समझ पाना शायद सम्भव नही है। और वे सब कारण कम रहे हैं उमके पहले अनेक कारणो के। यह कारण और कम, कम और कारण की शृखला अनादि काल से चल रही है—अनन्त काल तक चलती रहगी। मनुष्य इस कम-कारण की शृखला मे योगदान करता आया है, शायद स्वय ही कम और कारण के रूप म उसे योगदान करते रहना होगा।

एक तरह की शाति अब वह अनुभव कर रहा था अपने अन्दर। उसे जल म छूटे हुए प्राय पन्द्रह दिन हो गए थे, और तब से उसके अन्दर लगा तार एक तरह का मथन चल रहा था। उमके अन्दर वाला मथन तो दूर नहा हुआ, लेकिन उस मथन के साथ वाला तनाव अब जाता रहा था। वह मथन अब गाडी क हिचकोला की थपकियो म बदल गया था, पहिया की खट-खट अब नींद लान वाली लोरिया मे बदल गई थीं, और जगतप्रकाश को नींद आ गई।

जिस समय जगतप्रकाश की नींद खुली, गाडी यमुना का पुल पार कर

रही थी। जमील बाहर वाले अँधेरे मे से फूटते हुए धुधले-से प्रकाश को एक टक देख रहा था। जगतप्रकाश से उसने कहा, "बरखुरदार! मालूम होता है बडी अच्छी नींद आई।"

'हाँ, आज बहुत दिनो बाद ठीक से नीद आइ, और वह भी रेल के सफर म।" जगतप्रकाश न बिस्तर बाँधते हुए जवाब दिया, एकाएक सब कुछ बदल गया है चारो तरफ। बाहर ही नही, मेर अदर भी। सब बन्धन टूट चुके ह, और इन बधनो के टूटने के बाद मैं कितना आज़ाद और कितना हल्का महसूस कर रहा हूँ।"

जमील न कुछ सोचते हुए कहा, "लेकिन बरखुरदार, ज़िन्दगी भी एक बधन है। बधनो से छुटकारा कसे पाया जा सकता है?"

जगतप्रकाश मुसकराया, 'शायद ठीक कह रह हो जमील भाई। शरीर के बधनो स जकडी हुई, विश्वासो और भावनाओ से जकडी ज़िन्दगी खुद मनुष्य के लिए एक समस्या बन रही है—और फिर एक गहरी उदासी उसके मन मे उतरने लगी। एक तरफ बाहर प्रकाश फूट रहा था और दूसरी ओर जगतप्रकाश के अदर अधकार उमड रहा था। ट्रेन अब प्लेटफाम पर रेंग रही थी।

फतहपुरी के एक छोटे से होटल म ये दोनो ठहरे। तयार होकर उन्होंने चाय पी, फिर जमील ने कहा "मीटिंग का वक्त ग्यारह बजे ह, जहा मीटिंग होगी उस जगह का पता मेरे पास है। तुम हम लोगो मे एकदम नये हो, जो लोग तुम्हे वहा मिलेंगे शायद तुम उन्हे नही जानते। लेकिन वह सब तुम्हारा नाम जानते है, तुमसे मिलकर उन्हे खुशी होगी। अभी नौ बजे हैं तब तक चादनी चौक का एक चक्कर लगा लिया जाए।"

करीब ग्यारह बजे जमील के साथ जगतप्रकाश दरियागज पहुचा जहाँ मीटिंग होने वाली थी। एक मकान मे एक बडा-सा कमरा जिसमे मुश्किल से तीस-चालीस आदमी फश पर बैठ सकते थे। यह मकान कामरेड चेतराम का था और चेतराम बरामदे म खडा आनेवालो का स्वागत कर रहा था। चेतराम न जमील को देखते ही कहा, 'कामरेड जमील अहमद, बाबूराम क्यो नही आए?" उसने जगतप्रकाश की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

जमील ने कामरेड चेतराम से जगतप्रकाश का परिचय कराया, "यह मरेड जगतप्रकाश हैं, आठ जनवरी को जेल से छूटे ह। कामरेड बाबूराम नी झझटो मे फँसे हुए हैं, तो मैं उनकी जगह इन्हे अपने साथ लेता आया। और यह हैं कामरेड चेतराम, दिल्ली मे लेबर यूनियन के सेक्रेटरी।" ने जगतप्रकाश की ओर मुडकर कहा।

चेतराम ने जगतप्रकाश से हाथ मिलाया, "आपकी बाबत सुना तो था, किन दर्शन आपके आज ही हुए ह।" जमील की ओर मुडकर उसने कहा, हुत कम आदमी आ रहे है आज की मीटिंग मे, बाहर से तो कुल सात-ठ आदमियो के आने की खबर ह, बाकी यहा के लोग है—कुल पन्द्रह-स आदमी होग। पुलिस की झझटें हम लोगा के साथ अभी भी लगी हुई। लाख चाहते हुए कि हम लाग इस युद्ध म ब्रिटिश सरकार की मदद कर, मौका ही नहा दिया जा रहा है। कल मैं सैलाब साहब स मिला था, यहाँ सबसे बडे वार-प्रापेगण्डा के अफ्सर की हैसियत से काम कर रहे। उन्हाने कहा है कि वह बड अफ्सरा से इस मामले मे बात करेंगे। लेकिन टिश सरकार का जो रवैया है उससे जी खट्टा हा जाता ह।"

जमील बोला, "ठीक कहते हो कामरेड! बाबूराम के पीछे भी पुलिस से हाथ धोकर पड गई है। मैं कभी कभी सोचने लगता हूँ कि आखिर हम एहसान फरामोश ब्रिटिश सरकार की मदद क्या करना चाहते ह।"

शान्त स्वर म जगतप्रकाश ने कहा, "सरकार एक आदमी की तो होती हा जमील राका! तरह-तरह के लोग, तरह-तरह के ढग, और फिर सर-री मुलाजिमो के काम करने का पुराना और घिसा पिटा तरीका। सरकार एक समूह है, और दुर्भाग्यवश उसके कुछ आदमिया की गलतिया पूरी रकार की गलतियाँ बन जाती ह। लेकिन हम सब लोग तो व्यक्ति हैं, हम पन व्यक्तिगत कर्तव्यो को देखना पडेगा। सरकार की गलतियो की वजह हम अपना रास्ता कैसे छोड दे?"

चेतराम का बुझता हुआ उत्साह फिर से चमक उठा, 'बडे पते की कही मने कामरेड।" और फिर जमील की ओर मुडकर उसने कहा, "कामरेड मीर अहमद! तुमने बडा अच्छा किया जो इन्हे अपने साथ ले आए। मारी मुसीबत यह है कि हममे साफ देखने और सही तौर म सोचने वाला

की कमी है। दिल्ली के सबसे बडे कम्युनिस्ट नेता डाक्टर शमाम पाकिस्तान
की, यानी मुल्क के बँटवारे की रट लगाए हुए हैं। उन्होने हिंदू-मुस्लिम
प्राब्लेम को इतनी अहमियत दे रखी है चाहे रूस बच या मरे, चाहे जर्मनी
जीते या हारे। हिंदुस्तान में हिंदू मुस्लिम एकता हो ही नहीं सकता, और
बिना इस एकता के हिंदुस्तान इस युद्ध मे पूरा योगदान कर ही नहीं सकता।
अच्छा, अब ग्यारह बज गए है, जिन लोगो को आना था वे आ गए हैं,
शायद एकाध और भूला-भटका आ जाए। कमरे म चलकर कारवाई शुरू
की जाए।"

चेतराम ने ठीक ही कहा था, उस कमरे मे इन तीनो को मिलाकर
पन्द्रह आदमी थे। यह मीटिंग इसलिए बुलाई गई थी कि देश के कम्युनिस्ट
नेता किस तरह रूस की अधिक-से-अधिक मदद कर सकते हैं। रूस की
पराजय की खबरे लगातार आती चली जा रही थी और जर्मनी हर क्षेत्र मे
सफलता प्राप्त करता जा रहा था। जमनी के साथ जापान भी आ गया था
और स्थिति दिनो-दिन निराशाजनक होती जा रही थी। कामरेड चेतराम
का प्रस्ताव था कि देश के कम्युनिस्ट एक वालंटियर कोर बनाकर इस युद्ध
मे भाग ले। इस सम्बन्ध मे उन्होने एक विस्तृत योजना बना रखी थी।
कामरेड चेतराम जाट थे, सैनिको के खानदान के, उनमे मरने-मारने का
उत्साह था।

उनके प्रस्ताव पर कामरेड अर्जुनसिंह और कामरेड फ़रुखअहमद
को आपत्तियां थी। दुनिया भर से स्पेन म कम्युनिस्ट वालंटियर गये थे
लेकिन स्पेन मे सिविल वार थी। हिटलर के टैंको, हवाई-जहाजो और
ब्लिट्ज़ के युद्ध मे यह वालंटियर कोर पूरा-का पूरा बेमौत मारा जाएगा।
फिर सवाल यह था कि यह वालंटियर कोर रूस पहुँचेगा कैसे? इन
को लेकर काफी गरमागरम बहस छिड गई। यह गरमागरम बहस अब व्यक्ति-
गत आक्षेपो और गाली-गलौज का रूप धारण करने लगी थी कि बाहर
एक मोटर कार के हॉर्न की आवाज़ जगतप्रकाश को सुनाई पडा।
चेतराम इस बहस मे इस बुरी तरह से उलझे हुए थे कि उन्होने इस आवाज़
पर ध्यान ही नहीं दिया। तभी कमरे का दरवाजा खुला और जसवन्त ने
कमरे मे प्रवेश किया। जसवन्त के प्रवेश करते ही यह बहस एकाएक बन्द

ई जसे उबलते दूध पर पानी की छीटे पड गए हो।

"मुझे देर हो गई कामरेड चेतराम, माफ करना। बात यह है कि फ्रंटियर मेल आज दा घण्टे लेट आया। फिर मेरे साथ शर्मिष्ठा भी थी, ता उसे पहुँचान घर जाना पडा। वहा से सीधा आ रहा हूँ।" और वह भी फ़र्श पर बठ गया। उसने अपन चारा ओर देखा और उसकी आख जगतप्रकाश की आखो स टकराई, "अरे तुम जगतप्रकाश! तुमसे मिलन की ता मैंने कोई उम्मीद ही नही की थी, तो तुम बाहर आ गए!"

जगतप्रकाश ने मुसकराते हुए कहा, 'आप लोगो के बीच म मौजूद हूँ, यही इस बात का सबूत है। लेकिन बाहर आन पर मुझे लगा कि जेल की सीमा बढ गई है। पहले वह सीमा ऊँची-ऊँची दीवारो की थी, अब वह समुद्रा और पहाडा की हो गई है। सारा हिदुस्तान एक जेल की तरह लग रहा है मुझे।"

जसवन्त के माथे पर बल पड गए, "शायद तुम ठीक कह रहे हो।" फिर वह वहाँ उपस्थित लोगो की ओर घूमा, "हम लाग रूस की सहायता नही कर सकते, क्याकि हम इस हिदुस्तान रूपी जेल मे कैद हैं और ब्रिटिश सेना जेल के सन्तरियो की तरह हम पर पहरा दे रही है। सवाल यह है कि हम हिदुस्तानी किस तरह जमन-साम्राज्यवाद का विरोध कर सकते हैं किस तरह हम अपने एकमात्र पथ-प्रदशक रूस को विनाश से बचा सकते हैं, क्याकि रूस का विनाश कम्युनिज्म का विनाश हागा। क्यो जगतप्रकाश, कोई उपाय सूचता है तुम्हे?"

निराश भाव से सिर हिलाते हुए जगतप्रकाश ने कहा, "नही, मुझे तो कोई उपाय नही सूझता। हिदुस्तान का जनमत जमनी के पक्ष मे है और ब्रिटन के खिलाफ जितना विद्राह हिदुस्तान मे बढता जाता है, उतना ही अधिक यहा का जनमत जमनी और जापान के पक्ष मे होता जा रहा है।"

जमील अभी तक चुप था। उसने अब कहा, 'तो हम लोग फिलहाल हिन्दुस्तान के लोगा मे जमनी और जापान के खिलाफ नफरत का प्रचार जोरा से चलाएँ। यह प्रचार रूस के हक मे होगा, यानी हिदुस्तान के लाग इस जग म अग्रेजा का साथ देकर रूस की मदद करेंगे।"

कुछ उलझन के साथ जसवत न कहा, "इससे तो हिन्दुस्तान की जनता

हम लोगो को देशद्रोही करार देगी।"

जगतप्रकाश ने उत्तर दिया, "हम लोग देश के मत को बदलने के लिए बढ रहे हैं न कि दश के मत को अपनाने के लिए।"

एक लम्बा विवाद उठ खडा हुआ जगतप्रकाश की इस बात पर, लेकिन अन्त म जगतप्रकाश की ही बात स्वीकार की गई।

जिस समय मीटिंग समाप्त हुई, एक बज गया था। जसवन्त ने जगत प्रकाश का हाथ पकड कर कहा, "कहा ठहर हो ?" जमील उस समय दूसरे लोगो स बात कर रहा था।

'फतहपुरी के एक होटल म जमील के साथ। वही मुझ अपने साथ दिल्ली ल आए हैं।'

जसवन्त ने जमील के पास जाकर कहा, 'कामरेड जमील अहमद, मैं तुम्हारे साथी को इस वक्त अपने साथ लिये जा रहा हूँ। शाम को यह पाच छ बजे तक वापस आ जाएँगे या यो कहो, मैं इन्हे वापस भेज जाऊगा। बहुत लम्बे अरसे बाद इनसे मिलना हुआ है, इनसे कुछ बातें होगी।"

'जरूर जरूर! लकिन मेरा कोई ठीक नही कि शाम के वक्त मैं कहाँ रहूगा। कई जगह जाना है सब्जीमण्डी करोलबाग, नइ दिल्ली। वहरहाल म पाच बजे तक होटल वापस आ जाऊँगा, वसे कमरे की एक चाभी इनके पास भी है।'

कुछ सोचकर जसवन्त बोला तुम मेरा मकान तो जानते हो हो कामरेड। शाम के वक्त मेर यहा ही आ जाना और चाय वहा पीना।'

हा यही ठीक रहगा। जमील ने कहा। फिर वह जगतप्रकाश से बोला मुडा मेरा दिल्ली का काम तो आज और कल म खतम हो जाएगा। रात म होटल वापस जाकर आगे प्रोग्राम बनगा।"

जसवन्त के साथ जगतप्रकाश बाहर निकला। वह टक्सी से आया था और टैक्सी चली गई थी। दोनो पैदल ही चल दिए। दिल्ली गेट तक उन्हे कोइ सवारी नही मिली। उजाड और सुनसान सडक। जाड की सुनहली दोपहर, दोनो बात करते चले जा रहे थे। तभी एक ताँगा इन लोगो की बगल म आकर रका उसम एक आदमी सज का शानदार सूट पहने बठा था। उसने जसवन्त स कहा 'अरे जसवन्त साहब! पदल जा रहे हैं क्या

ाज़िर है खिदमत म, तशरीफ रखिए। कब तशरीफ आई है जनाब की ?
ाख़िन अपनी कोठी जा रह है। में भी नई दिल्ली जा रहा हूँ।"

"अरे सलाव तुम!" जसवन्त ने कहा, "बडे ठाठ ह। सुना ता था कि ल्ली फतह कर रहे हा, लेकिन यह पता नही था कि तुम्हारा मकान कहा और दफ्तर कहा है। साल-भर से मैं लाहौर म हूँ, दिल्ली आना ही नही था। आया भी तो दो एक दिन के लिए।"

जसवन्त न जगतप्रकाश के साथ ताग प बैठते हुए सलाव स जगतप्रकाश ा परिचय कराया, 'इन्हे ता पहचानते ही होग, जगतप्रकाश इनका नाम ।"

"जी इन्ह भला कसे भूल सकता हूँ! आपकी शादी के मौके पर नके साथ बम्बई से अमृतसर का सफर तय किया था।' सैलाव जगतप्रकाश ो ओर घूमा, "अकसर आपकी याद आ जाती है जब जसवन्त साहब क ामा लाला सेवाराम के साथ बठक होती हे। आप भी सोचन हाग में कितना दल गया हूँ। शायर सैलाव मर गया, अब ता गवनमण्ट आफ इण्डिया के ार प्रापगण्डा का इचाज सलाव रह गया हूँ। गुरू म मेरे साथियो ने मेरी डी लानत-मलामत की। कम्युनिस्ट पार्टी का उम्मीदवार सैलाव ब्रिटिश रकार की मुलाज़िमत करे, इस जग म ब्रिटिश सरकार का प्रापगण्डा करे। किन शायर औलिया होता है, जी औलिया! आखिर रूस पर जमनी के मल के बाद यह साबित हो गया कि मैंने सही काम किया था। मैंने जो इम ग का प्रोपगण्डा रेडियो से शुरू किया है, उसकी धूम मच गई ह।'

जसवन्त मुसकराया, "मैं तुम्हे मुबारकबाद देता हूँ। बल्कि रेडियो ने क हफ्ता पहले तुम्हे बनहाशा गालियाँ दी है, यहा तक कहा ह कि इस जग में फतह पाने के बाद सबसे पहल इस मूजी सलाव से निपटा जाएगा।'

सलाव न जोश के साथ कहा, 'जी, अगर मे उनके मिलू ता वह मुझे कच्चा चबा जाएँ। सलाव मियाँ का लोहा मानना पड गया उन हरामजादो का।" धीरे धीरे सलाव के चेहरे का रग उतरता जा रहा था, 'लेकिन यह जमनी है बडा ज़ालिम, और दूसरा ज़ालिम जापान इसके साथ हो गया है। बडी उल्टा हालत है। अगर कही जमनी की फ़तह हो गई तो सैलाव मियाँ गए काम म।"

"जमनी का नही जीतना चाहिए।" जगतप्रकाश न अपन या
"जमनी नही जीत सकता, नहीं जीत सकता।" जगतप्रकाश क र
आवेश था।

एक मौन सा छा गया थोडी दर के लिए, उस मौन को जसवन्त न
"जमनी अकेला नही ह अब, उसक साथ जापान भी ह। यह जापान ब्रि
साम्राज्य को नष्ट कर देगा। अभी तक युद्ध यूरोप म हो रहा था अब
एशिया म भी आ गया ह, हमारे देश के बहुत निकट। मलाया का क
करीब जापानियो ने जीत लिया है, सिंगापुर की ओर जापानी बढ़ रहे
उसके बाद बर्मा—हिन्दुस्तान। ब्रिटेन को जमनी न इतना अधिक तोड़
है कि वह इस दक्षिण-पूर्व एशिया को नही बचा सकेगा। इस को ब्रि
मार्ग से भी कोई सहायता नही पहुँचाई जा सकती।"

सैलाब चुपचाप ये बातें सुन रहा था, अब उसने कमजोर स्वर म कहा
"लेकिन इधर अमेरिका भी तो जग म आ गया है। अमरिका बहुत ब
मुल्क है, खुशहाल ताकतवर, भरापूरा। जापान कुछ दिना के लिए भले ह
अमेरिका और ब्रिटेन को नाकाम कर दे, फतह आखिर में अमेरिका और
ब्रिटेन का ही मिलेगी।" और कुछ हिचकिचाते हुए उसने धीमे स्वर म कहा
'अगर हिन्दुस्तान म कोई गड़बडी नही पैदा होती।"

"क्या हिन्दुस्तान म कोई गडबडी हो सकती है?" जगतप्रकाश ने पूछा।

'हाँ, लेकिन वह गडबडी महात्मा गाधी की वजह से रुकी हुई है।'
जसवन्त बोला, 'महात्मा गाधी ने तटस्थता की नीति अपना रखी है, देश क
जनमत मर्माहत-सा पडा है। जो नेता जमनी और जापान की नीतियों
परिचित ह वे चाहते है कि देश इस समय ब्रिटेन का साथ दे, लेकिन ब्रिटिश
सरकार हिन्दुस्तान से वादे तो करती हैं, हिन्दुस्तान को स्वराज्य देने का
कोई ठोस कदम नही उठाती और इसलिए जनसमुदाय विद्रोह करना चाहता
है। यह मौका विद्रोह का है भी। अजीब हालत है।" फिर उसने सहज
कहा, 'खाना खा चुके हो? नही तो मेरे साथ चलो, वहा खाना तैयार होगा।'

'नही भाईजान, मुझे नौ बजे अपने ऑफिस पहुँचना है। तुम मेरा फोन
नम्बर नोट कर लो। आज शाम का एक बडी जरूरी मीटिंग है, कल शाम
मुलाकात होगी। दोपहर को फोन कर लना, मैं अपने आफिस म ही रहूँगा।

ार उसने जगतप्रकाश से कहा, "बहुत अरसे बाद आपसे मिलना हुआ है, र मुलाकात होगी।" सलाव कजन रोड पर जसवन्त की काठी पर इन ता को उतारकर चला गया।

शर्मिष्ठा जसवन्त की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने उलाहने से भरे स्वर कहा, "बडी देर लगा दी आपने।" तभी उसकी दृष्टि जगतप्रकाश र पडी, और वह आग कुछ कहते-कहते रुक गई। जसवन्त ने जगतप्रकाश ी आर इशारा करते हुए कहा, "इन्हे पहचानती हो ? यह जगतप्रकाश है।"

"अब पहचान गई हूँ इन्हे, तो यह भी आपके साथ उस मीटिंग मे थे। च्छा आप लोग ड्राइंग-रूम म बैठिये, मैं खाना लगाती हूँ।"

डाइंग रूम में पहुँचकर जसवन्त ने जगतप्रकाश से कहा, "मुझे तुम्हारी रफ्तारी की खबर मिल गई थी, और उस खबर स मुझे आश्चर्य भी हुआ ा। कुछ समझ म नही आया, क्योकि तुम्हारा तो कम्युनिस्ट पार्टी से कभी इ सम्बन्ध था नही।"

"पहले कभी न रहा हो, लेकिन अब तो हो रहा है। या यो कहना ठीक गा कि अब मैं पूरी तौर से कम्युनिस्ट बन गया हूँ, देवली मे रहकर।"

जसवन्त एकाएक गम्भीर हो गया, 'और मेरे मन म आ रहा है कि कम्युनिस्ट पार्टी से अलग हो जाऊँ। इस पार्टी के लोग अब गलत ढग से चिने व काम करने लगे है। सिद्धान्त से हटकर जब हम कम पर आते हैं, ब सही और गलत म मतभेद हो ही जाता है।"

"मैं आपकी बात नही समझा। आज की मीटिंग मे तो कोई ऐसी बात हो हुई।"

"तुम अभी हाल मे जेल से बाहर निकले हो। देश के सामने जो नई मस्याए महत्वपूर्ण बन गई हैं, तुम्हे उनका पता नही है। यह जो ब्रिटिश रकार से कांग्रेस का समझौता नही हो पा रहा, उसकी जड मे देश का सलमान है। वह देश का बँटवारा चाहता है। एक भाग पाकिस्तान कहलाएगा, दूसरा भाग हिन्दुस्तान कहलाएगा। देश को स्वतन्त्रता मिल सकती है इस बँटवारे के बाद, इसके पहले नही।"

जगतप्रकाश को अनुभव हो रहा था कि उसके मस्तिष्क म एक धुधला-न भरता जा रहा है। बात यहा तक पहुँच चुकी है, उसने इसकी कल्पना

शर्मिष्ठा लौट आई थी, उसने भी जगतप्रकाश की कहानी का कुछ सुना, और उसकी समझ म सिर्फ इतना आया कि जगतप्रकाश निरुद्देश्य लक्ष्यहीन घूम रहा है। उसने जसवन्त की ओर देखा, "क्या जसवन्त! यहा अपने साथ क्यो नही बुला लेते ? तुम्हारा अकेलापन दूर हो जाएगा"

"हा, मैं भी इनसे यही कहना चाहता था कि यह यहा आ ..." उसने जगतप्रकाश से कहा, "तुम लोग उस गन्दे और छोटे से होटल मे हो, शाम को जमील और तुम्हारे साथ चलकर मैं तुम लोगो का सामान यहा ले आऊँगा।"

जसवन्त की वह कोठी बहुत बडी थी और दुमंजिली थी। ऊपर नीचे मिलाकर करीब चौदह पन्द्रह कमरे थे उसम, सभी खाली ... खाना खाने के बाद जसवन्त जगतप्रकाश को ड्राइंग रूम से लगे हुए एक रूम म ले गया, 'यह तुम्हारा कमरा है। तुम दोपहर को यहाँ आराम करो, हम लोग ऊपर के कमरे म हैं।"

शाम के समय जब जगतप्रकाश शर्मिष्ठा और जसवन्त के साथ चाय पी रहा था, जमील आ गया। चाय के साथ गहरा नाश्ता भी था, ... मिठाई, मेवे और नमकीन। जगतप्रकाश सोच रहा था कि दोपहर के ... भरपेट भोजन करने के बाद मेज पर इतना अधिक खाने का सामान ... है, जबकि न जसवन्त कुछ खा रहा था, न शर्मिष्ठा कुछ खा रही थी, न उस खाने की कोई इच्छा थी। और उसने देखा कि जमील ने अपनी ... मिठाइया और नमकीन मे भर ली, "क्या बतलाऊ, यहा खाना ... सका। सोच रहा था कि होटल म लौटकर ही रात के वक्त यह ... रोजा तोड़ूगा, लेकिन यहाँ इस सामान को देखकर नीयत बदल गई।"

जसवन्त बोला, "जमील अहमद साहब! आप यही ... होटल मे ही आप रोजा तोड रहे हैं, आपका और जगतप्रकाश का ... होगा। अभी चाय पीकर मैं आप लोगो के साथ चलता हू होटल से ... असबाब लाने के लिए।"

जमील ने जगतप्रकाश को देखा, "क्या बरखुरदार, ... मुमकिन हो। इस आलीशान कोठी म खातिरदारी!" और फिर ... जसवन्त से कहा, 'आप जगतप्रकाश को अपने साथ ले जाइए, मैं ...

ागो को होटल म मिलने का वक्त दे दिया है। फिर मुझे कल शाम की गाडी ' नागपुर जाना है।"

"होटल म आप अपने मिलने वालो के लिए सदश छाड दीजिए कि ाप मेरे यहा हैं, आपसे जो लोग मिलने आने वाले ह वे सब मेरा मकान ानते हैं। और रही नागपुर जाने की बात, वह मैं समझता हूँ आपका वहा ाना वेकार होगा। नागपुर और अहमदाबाद-बम्बई के लोगा को सम्हालना इन जाहा को।"

"जी, और मैं बम्बई का आदमी हूँ—आप यह क्या भूल जात है?" ामील बोला।

जसवन्त ने कुछ सोचकर कहा, "हा, मुझे इस बात का खयाल ही नही ा। अच्छा, अभी नागपुर जाने की जल्दी क्या है, कल इतमीनान के साथ ोचा जाएगा।"

चाय पीने के बाद अपनी कार पर इन दोना का असबाब वह अपने घर ा आया।

दूसरे दिन सुबह नौ बजे ही नाश्ता करने के बाद जमील के साथ ासवन्त निकल गया, जगतप्रकाश अकेला रह गया। बरामदे मे धूप जब लने लगी थी। उस दिन का अखबार लेकर जगतप्रकाश बरामदे मे बैठ या। जापान की विजय की खबरो से अखबार भरा था, बोर्नियो पर जापानी ना हमला कर रही थी। बर्मा के रास्ते हिन्दुस्तान की तरफ युद्ध बढने ी आशका थी। उधर जमन सेना मास्को और लेनिनग्राड पहुँच रही थी। ादि स अ त तक निराशाजनक समाचार। जगतप्रकाश के अन्दर एक रह की घुटन और वह घुटन उसके अन्दर वाले क्रोध की। उसे अनुभव हो हा था कि एक तरह की विवशता से उसका सारा अस्तित्व जकडा आ है।

उस शर्मिष्ठा का स्वर सुनाई पडा, "आप नही गये, अकेले ही बठे है।" ससने सिर उठाकर देखा, सामने शर्मिष्ठा खडी हुई है। "सोचा जरा बाज़ार ो आऊँ, बेबी के लिए कुछ कपडे लेन हैं। कार लेकर जसवन्त निकल गए, किन नजदीक ही तो है कनाट प्लेस, वहा मामाजी का ऑफिस है। मामाजी ो तो आप जानते ही होंगे?"

"जी—कौन हैं वे, मुझे याद नही पडता कि मैं उनसे कभी मिला हूँ" और एकाएक उसे दिल्ली से अमृतसर की यात्रा याद हो आई, 'अरे या' गया। लाला सेवाराम से तो आपका मतलब नही है? उनसे तो मैं मि चुका हूँ।"

शर्मिष्ठा मुसकराई, "जी वही। उनसे मिलन के बाद फिर उन्हें भू नही जा सकता। आजकल उनका कार-बार बहुत बढ गया है। लेकिन उन बडे लडके महेन्दर न सब काम-काज सम्हाल लिया है, मामाजी तो आफिस की देख-भाल करते है। मामाजी को फोन किया था तो वह बोले मैं चली आऊँ। वह खरीदारी करवा देगे।" फिर कुछ रुककर उसने कहा "आपको अगर कोई जरूरी काम न हो तो मुझे कनाटप्लेस पहुचा दें।"

जगतप्रकाश को उठना पडा, यद्यपि उसकी उठने की इच्छा न थी। शर्मिष्ठा के साथ चलते चलते उसे लगा कि शर्मिष्ठा ने साथ आकर उसने अच्छा ही किया, क्योकि शरीर की जडता के साथ-साथ मन की जडता भी दूर होने लगी थी। शर्मिष्ठा बडे उत्साह के साथ उससे अपने बच्चे के सम्बन्ध म बात कर रही थी, "बिलकुल जसवन्त की शक्ल मिला है उसे। अभी कुल सवा साल का हुआ है, लेकिन सारे घर को सिर पर उठाए रहता है। लालाजी के साथ लगा रहता है।"

जगतप्रकाश को शर्मिष्ठा के बच्चे मे दिलचस्पी लेनी पडी, "क्या नाम रखा है उसका?"

"अभी उसका नामकरण सस्कार कहा हुआ है।" लालाजी इसे तिलक कहकर पुकारते हैं, वह इसका नाम तिलकराज रखना चाहते हैं। लेकिन यह नाम जसवन्त को जरा भी पसन्द नही है।"

'आपको पसन्द है या नही?" जगतप्रकाश ने पूछा।

शर्मिष्ठा बोली, "मुझे भी न जाने क्या यह नाम अच्छा नहा लगता। तिलक की मा कहलान म मुझे कितनी शर्म लगेगी! जसवन्त इसका नाम श्रमदेव रखना चाहते हैं। पूरा कम्युनिस्ट नाम है। लालाजी इस नाम के एकदम खिलाफ हैं।"

जगतप्रकाश को हँसी आ गई शर्मिष्ठा की बात सुनकर, और उसने शर्मिष्ठा को गौर से देखा। वह आरोपण की प्रवत्ति, वह तीखापन

जगतप्रकाश ने प्रथम परिचय के समय शर्मिष्ठा में देखा था। उनका कहीं निशान नहीं था उसके मुख पर, इस समय शर्मिष्ठा एक कोमल और सुन्दर गुड़िया की भांति लग रही थी, अस्तित्वहीन और व्यक्तित्वहीन। इसका व्यक्तित्व कहां गायब हो गया? अनायास ही वह पूछ उठा, "आपने भी कोई नाम सोचा है?"

शर्मिष्ठा ने बड़ी करुण मुद्रा बनाते हुए कहा, "मेरा सोचा भला कहीं चलता है, गोकि लालाजी की देखा देखी मैं भी इसे तिलक नाम से पुकारती हूं। जसवन्त इसके पिता हैं, नाम रखने की जिम्मेदारी उन पर है, या फिर लालाजी पर है। यह लालाजी का विरोध नहीं करना चाहते, इसलिए मुझसे कहते हैं कि मैं इसका नाम तिलकराज रखने से रोकूं। मेरे ज़रिये यह लालाजी को दबाते रहते हैं, भला यह भी कोई बात है!"

"हां, यह तो ठीक नहीं है। लेकिन शायद इसमें जसवन्त का कोई कसूर नहीं है, लालाजी से कोई बात कहने की उन्हें हिम्मत न पड़ती होगी।" जगतप्रकाश बोला।

"हिम्मत! इन्हें हिम्मत नहीं पड़ती? तो फिर आप अपने दोस्त को जानते नहीं।" शर्मिष्ठा मुसकराई और उसकी आंख चमक उठी, मानो उसे अपने पति की हिम्मत पर बेहद गर्व हो, "असल बात यह है कि यह लालाजी को अपनी हिम्मत दिखाना नहीं चाहते। खैर छोड़िए भी इस बात को। यह श्रमदेव नाम आपको कैसा लगता है? इसमें लालाजी के नाम का आधा हिस्सा तो है ही।" बड़े भोलेपन के साथ शर्मिष्ठा ने कहा, "लेकिन यह श्रम —यह तो बिल्कुल कम्युनिस्ट भावना वाला है। लालाजी किसी तरह इस नाम पर राज़ी नहीं होंगे। तिलकराज नाम पर अब वह ज़्यादा ज़ोर नहीं दे रहे हैं। हमारा एक दूर का रिश्तेदार है, उसका नाम तिलकराज है। उस पर जालसाज़ी का मुकदमा चल रहा है, तो लालाजी को मैं समझा लूंगी। लेकिन इन्हें समझा सकना मेरे वश में नहीं है। आप इसमें कुछ मेरी मदद कीजिए।"

कितनी जल्दी और कितनी आसानी से स्त्री पारिवारिक बंधनों में जकड़ जाती है और इन पारिवारिक बंधनों में उसे कितना सुख मिलने लगता है, जगतप्रकाश ने प्रथम बार यह अनुभव किया। वह उद्धत, ज़िद्दी

और हठी शर्मिष्ठा कैसे अपने पति और अपने पिता की हरेक इच्छा का पालन करने वाली, पति से अनुशासित होने वाली स्त्री के रूप में बदल गई।

जगतप्रकाश ने कुछ मजाक मे कहा, "श्रमदेव के स्थान पर आप अपने लडके का नाम देवाश्रम रख दीजिए, जसवन्त का सस्कृत आती नही। जस का स्थान आश्रम ले लेगा।"

शर्मिष्ठा मुसकराई, "मैं अपने लडके का नाम रखना चाहती हू, उसके मकान का नही।"

जगतप्रकाश इस उत्तर से कट गया। दोनो अब कनाट प्लेस पहुच गए थे। मेहरा एण्ड कम्पनी का बोर्ड एक दूकान पर लगा था। शर्मिष्ठा ने कहा, "यही मामाजी का आफिस है। अन्दर चलिए, या आपको और कहा जाना है? मुझे यहा ज्यादा वक्त नही लगेगा, मामाजी यहा बैठे बैठे सब कुछ मँगवा देगे।"

लाला सेवाराम शर्मिष्ठा का इतजार कर रहे थे। शर्मिष्ठा ने कहा, "क्या बतलाऊँ मामाजी, जसवन्त को तो फुरसत ही नही मिलती, सुबह नौ बजे कार लेकर निकल गए, तो घर से यहा तक पैदल आई हूँ। यह जसवन्त के दोस्त जगतप्रकाश है, यह घर पर थे तो इन्हे साथ ले लिया, नही तो मैं न आ पाती।"

लाला सेवाराम ने जगतप्रकाश से तपाक के साथ हाथ मिलाया, "ओ तुम! तुम्हे भला मैं कैसे भूल सकता हू! हम लोगो ने शर्मिष्ठा की शादी में दिल्ली से अमृतसर तक साथ-साथ सफर किया था। तुम्हारे साथ वह सरदार नाम का शायर भी था—याद है। वह आजकल दिल्ली में बहुत बडा सरकारी अफसर बन गया है। तुम्हे शायद नही मालूम कि इन दिनो वह मेरा एक बडा दोस्त बन गया है। क्या समझे?" और लाला सेवाराम ने कपडो का एक बडा पैकेट शर्मिष्ठा को देते हुए कहा, "तुमने कपडो की जो फेहरिस्त टेलीफोन पर बतलाई थी, वे मैंने मँगवा लिए है। बाजार में कहाँ मारी-मारी घूमोगी! और अभी तुमने मुझे फोन कर दिया होता तो मैं अपनी कार तुम्हे भेज देता।"

"यहा से दूर ही कौन बहुत है!" शर्मिष्ठा ने उस पैकेट को खोलते हुए कहा। पैकेट में बच्चे के सिले-सिलाए और बुने हुए बारह ऊनी स्वेटर

और वे सब कीमती थे। शर्मिष्ठा ने छ सूट पसन्द किए, "ये छ मुझे पसन्द हैं। इनकी कीमत क्या है ?"

लाला सेवाराम ने बिगडते हुए कहा, "यह छ नही, बारहो लेने होगे। और तुम इनकी कीमत दोगी मुझे—लाला सेवाराम को ! क्या समझी—मुझे !" और उन्होने आवाज लगाई, "अरे जो जीत के बच्चे ! यह पैकेट मेरी मोटर मे रख दे, और देख, बीबीजी को मेरे घर ले जा।" फिर शर्मिष्ठा से उन्होने कहा, "तुम्हारी मामी बडी शिकायत करती थी कि शर्मिष्ठा दिल्ली तो आती है, लेकिन मेरे यहाँ नही आती। तो आज उनकी शिकायत दूर कर दे।"

शर्मिष्ठा बोली "फिर कभी आऊँगी आपके घर जसवन्त के साथ, इस वक्त तो घर वापस लौटना है।"

"जसवन्त के साथ आ चुकी—फिर अगर मैं यह सब न मँगवा रखता तो यहा खरीदारी म दो ढाई घण्टे लगा देती।" और फिर उन्होने जीत से कहा "बीबीजी के साथ रहना जब तक यह कहे, फिर इन्हे इनकी कोठी पहुँचा देना। क्या समझे ! मैं तुम्हारे यहा फोन किए देता हूँ कि तुम एक बजे तक वापस आओगी।" शर्मिष्ठा की ओर मुडकर उन्होंने कहा।

शर्मिष्ठा चुपचाप ड्राइवर के साथ चली गई। जगतप्रकाश ने भी उठते हुए कहा, "अच्छा, मैं भी चलता हूँ—थोडा घूम फिर लू।"

सेवाराम ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, "अरे बैठो भी, वह तुम्हारे दोस्त सैलाब आते होगे। आज शनिवार है, दोपहर को वे खाना मेरे साथ ही खाएँगे।" और फिर मुस्कराते हुए बोले, "बडे जीवट का आदमी है यह सलाव ! शनिवार के दिन अकसर हम दोनो साथ ही लच करते हैं यहा इम्पीरियल होटल मे—क्या समझे ! तो आज तुम भी शामिल होगे हम लोगो के साथ।"

जगतप्रकाश बैठ गया। पिछले दिन सैलाब की बातें सुनकर उसमे सलाब के प्रति दिलचस्पी पैदा हो गई थी। उसने कहा, "अच्छी बात है। लेकिन मुझे जसवन्त को फोन कर देना पडेगा, नही तो जसवन्त खाने के लिए मेरा इन्तजार करेगा।"

"मैं उसे फोन कर दूगा, दो बजे से पहले तो वह लौटेगा नही, फिर

उसकी बीवी मेरे यहाँ गई हुई है, इस वक्त घर मे होगा कौन ? नौकर
बात सही समझेगा, आधी बात गलत समझेगा ।" फिर कुछ रुककर वह
बोले, "बात यह है कि आज शनिवार है, दफ्तर आधे दिन खुलते हैं। मेरा
दफ्तर भी विलायती ढग से चलता है, यानी एक बजे मेरा दफ्तर बन्द।
अभी ग्यारह बजे हैं अगर तबीअत ऊब रही हो तो कनाट प्लेस का एक
चक्कर लगा लो, तब तक मैं यहा का काम निपटा लू। वैसे बहुत ज्यादा काम
नही है, मैंने महेन्दर को फर्म का जनरल मनेजर बना दिया है, और
काम सुरेन्दर देखता है बम्बई म। लेकिन खास-खास मामलो को तो मुझे
देखना पडता है। पार्टियो को सम्हालना इन लौडो के बस का नहीं है—
समझे ! तो नीचे की मजिल म मेहरा एण्ड कम्पनी का आफ़िस है, ऊपर
मजिल पर सेवाराम एण्ड सस का आफिस है—क्या समझे ! चलो, वहाँ
आराम से बैठेंगे हम लोग ।" और लाला सेवाराम उठ खडे हुए।

ऊपर वाले दफ्तर का रास्ता बाहर से था। लाला सेवाराम तब
प्रकाश के साथ बाहर निकले, उन्होने देखा कि उनकी कार वापस आ
है। वह रुक गए। कार के खडी होने पर उन्होने ड्राइवर से कहा, "अरे
जीत ! बडी जल्दी लौट आया। क्या घर नही गया ?"

कार से उतरकर ड्राइवर बोला, "क्या बताऊँ लालाजी, बीबीजी
कर्जन रोड पर अपनी कोठी मे उतर गइ और कह दिया कि वह आज
घर नही जाएँगी, मैं कार वापस ले जाऊँ।"

झल्लाकर लाला सेवाराम बोले, "आजकल की औरतो म नखरा
बचाए, अपने मन की होती है। अच्छा चलो, फोन कर दूँ कि तुम खाना
साथ खा रहे हो।"

ऊपर पहुँचकर लाला सेवाराम अपने काम म लग गए और
प्रकाश चुपचाप बैठ गया। वह कब तक इस तरह बैठा उसे याद नहीं,
वह अपने विचारो म खो गया था, और इन विचारो ने दिवा-स्वप्न का
धारण कर लिया था। वह कमरा, जिसमें वह बैठा था, काफी गरम था,
उसम हीटर लगा था। और तभी जोर जोर की आवाजो से उसका
टूटी। भारी और रौबदार एक आवाज उसने सुनी, "तो फिर आ ही गए।
तुम्हारे एक पुराने साथी को मैंने रोक रखा है।"

'मेरा साथी !" जगतप्रकाश को सैलाब का स्वर सुनाई पडा, और
गतप्रकाश तनकर बैठ गया तथा उसने अपनी आखें खोल दी। जगतप्रकाश
को देखते ही सैलाब बोला, "अरे वाह ! आपसे मेरी पहली मुलाक़ात इन्हीं-
के साथ हुई थी।" और उसने जगतप्रकाश से कहा, "जसवन्त साहेब ने कल
फोन नही किया, मैं भी बडा मशगूल रहा। तो आप अकेले यहा है, जसवन्त
साहेब का कहा छोडा ?"

"वह जमील अहमद के साथ सुबह नौ बजे ही निकल गए, खाना खाने
के वक्त लौटेंगे।"

'वही पुरानी आदत ! खुदा जाने दोपहर का खाना खाने लौटेंगे या
रात का खाना खाने लौटेंगे।" सैलाब हँस पडा, "हा लालाजी, तो कागज
की बाबत क्या किया आपने ? मुझे एक हफ्ते के अन्दर यह कागज चाहिए,
सरकारी आर्डर तो मिल गया होगा।"

लाला सेवाराम बोले, "मैंने मिल को तार दे दिया है, कल ही। विला-
यती कागज के दाम तो बहुत चढ रहे है—देसी कागज के दाम भी चढते जा
रहे हैं। सात पैसे पाउण्ड से बढकर ढाई आने पाउण्ड का रेट हो गया है।
लेकिन दो सौ टन कागज ! इतनी लम्बी खरीद को देखकर मिल वाले
मुमकिन है धेला या पैसा और बढा दें।"

"दाम की फिक्र नही, मुझे कागज़ चाहिए। वार प्रोपेगण्डा का मामला
है, आप तीन आने पाउण्ड तक के दाम पर कागज खरीद सकते हैं।"

लाला सेवाराम की बाछे खिल गइ, "इस कीमत पर तो मैं दिल्ली के
मार्केट से कागज बटोरकर मगल तक दे सकता हूँ—क्या समझे ! अच्छा,
वह स्काच का केस आ गया है, तुम्हारी मोटर पर रखवाए देता हूँ।"

"वाह लालाजी ! आप निहायत बढिया किस्म के आदमी हैं। वार क्या
छिडी, यह स्काच मिलती ही नही, और अगर मिल भी जाए तो अनाप-
शनाप कीमत पर। और मैंने अपने सेक्रेटरी व दीगर अफसरान को दावत
दे रखी है। तो अब यहा से उठा जाए, टेबिल तो आपने रिजर्व करा ही रखी
होगी।"

"लाला सेवाराम मेहरा से चूक नही हो सकती इस मामले मे।" और
उन्होंने आवाज लगाई, 'अरे ओ जगदीश ! वह स्काच का केस सैलाब साहेब

की मोटर पर रखवा दना ।"

इसके साथ ही सैलाब ने भी आवाज दी, "लालाजी की मोटर में रखवाना । स्टाफ-कार आज डिप्टी सेक्रेटरी ने मँगवा ली है, तो अपनी ही कार में ले जाऊँगा । मैं ताँगे पर आया हूँ ।"

लाला सेवाराम न जसवन्त के यहाँ फोन मिलाया । फोन शर्मिष्ठा ने उठाया । पहल तो उन्होंने शर्मिष्ठा को एक मीठी-सी डाट बताई बतला न जान के लिए, फिर उन्होंने कहा कि जगतप्रकाश के खाने का इन्तज़ार किया जाए, क्योंकि वह उनके साथ खाना खा रहा है।

होटल इम्पीरियल म पहुँचकर तीनों डाईनिंग हॉल म एक किनारे टेबिल पर बैठ गए । लाला सेवाराम ने जिन और वरमूथ का आर्डर दिया। जगतप्रकाश बोला, "मैं नही पीता, आप तो जानते ही हैं।"

"अरे हा, मैं तो भूल ही गया था ।" फिर उन्होंने बेयरा से कहा, दो पैग जिन और वरमूथ के और एक गिलास पाइन एपिल जूस ।"

दौर चलने लगे और सैलाब म तथा लाला सेवाराम म बिजनेस की बात होने लगी । काफी दबी हुई और नपी-तुली आवाज में यह बातचीत हो रही है, जगह होटलों म बिजनस की बात करने के दोनों आदी हों। लाला सेवाराम कह रहे थे "अफ्रीका म रसद की सप्लाई का लाखों का वारा न्यारा है। चार सौ रँगरूट दिये हैं मैंने, ब्रिगेडियर हावड मुझे अपने सगे की तरह मानता है । कमसेरियट म कोई अपना आदमी पहुच जाता तो बड़ा अच्छा होता, लेकिन अपना कोई आदमी अफ्रीका के फ्रंट पर जाने को तैयार नहीं होता ।"

सैलाब ने एक के बाद एक करके दो पग गले के नीचे उतार लिए। अब वह रग म आ रहा था, "लालाजी, रुपया लुट रहा है इन दिनों, जितना हो सके लूट लीजिए। मेरे सेक्रेटरी मिस्टर स्मिथ हैं, तो उनके यहाँ डिप्टी जनरल कमिग्स से मुलाकात हुई मेरी। उन्ही के लिए यह स्काच का दौर जा रहा है, मरे सेक्रेटरी न दावत दी है उन्हें, हिंदुस्तान म रिक्रूटमेंट के इचाज है । लेकिन लालाजी, उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड रही हैं। सिपाही तो लाखों की तादाद म भरती हो रहे है, लेकिन पढ़े लिखे नौजवान जो अफसर बन सकें, इन्हें नही मिलते । और आज की लड़ाई हाथ-पैर से

होकर दिल और दिमाग़ की वन गई है। यानी मोर्चेबन्दी की लडाई है यह, जहा टका, मशीनगना और हवाई जहाजो का काम है, यानी अफसरो का काम है। तो काग्रेस के इस हगामे की वजह से पढे लिखे आदमी भरती ही नही हो रहे।"

लाला सेवाराम हँस पडे, "पढा लिखा आदमी समझदार व होशियार होता है, वह अग्रेजो के लिए अपनी जान क्या देगा ? अग्रेजो ने हम लूटा है और हम अग्रेजो को लूट रहे है। क्या समझे !"

"जो कुछ आपने समझाया वही समझा।" सैलाब हँस पडा, "लूट का जवाब लूट। तो दो सौ टन कागज का आर्डर है, मगल तक मिल जाएगा, यह आपने वादा कर लिया है। इसके बाद पाच सौ टन कागज का आर्डर और रहेगा, मिल वालो से सौदा पक्का कर लीजिए। आप पैसा बनाइए, मुझे स्काच के केस देते रहिए, कमसरियट आपके हाथ मे, रसद आपके हाथ मे है। हम दोनो ही खुश। यह लडाई, दिख रहा है, लम्बी खिंचेगी।"

एकाएक लाला सेवाराम की आखे चमक उठी, "अच्छा सलाब साहेब ! इस कागज का लेने और इसका हिसाब रखने की जिम्मेदारी किस पर है ?"

'किस पर हो सकती है मुझे छोडकर !" कुछ ऐठकर सैलाब ने कहा, 'सारा महकमा मेरी तहत मे है।"

"तो सलाब साहब, मेरे स्टाक मे एक सौ टन कागज मौजूद है। क्या इस दो सौ टन बनाया जा सकता है, बिना आप पर आच आए हुए ? पचास टन की कीमत आपकी, पचास टन की कीमत मेरी।"

सैलाब ने तीसरा पेग पीते हुए कहा, "हो सब-कुछ सकता है बिना मुझ पर आच आए हुए। वह सेक्रेटरी स्मिथ, वह निरा उल्लू का पट्ठा है, लेकिन लालाजी, यह होगा नही। हराम की रकम से मै दूर ही रहता हूँ। मैं मुसलमान हूँ, बनिया नही हूँ। यह रकम आप बनियो को पच सकती है, मुझे नही पचेगी।"

बडी कडी बात कह दी थी सैलाब ने, जगतप्रकाश उत्सुकता के साथ लाला सेवाराम के मुख की ओर देख रहा था, लेकिन जैसे लाला सेवाराम पर इसका कोई असर ही नही हुआ, "हा हा हा, क्या बात कह दी आपने

सैलाव साहेब! तबीअत खुश हो गई। हमीं यह जहर पी सकते हैं, तुम नहीं पी सकते। तुम तो सिर्फ शराब पी सकते हो, गाकि वह भी तुम्हारे मजहब की रग से हराम है।"

वेईमानी वेश्या होती है, वेशर्म होती है—इसका स्पष्ट उदाहरण जगत प्रकाश देख रहा था। जिस दुनिया में वह इस समय आ पड़ा था वह अब तक उसके लिए नितान्त अनजानी दुनिया थी। खाना अब मेज पर लग दिया गया था। डाइनिंग हॉल में भीड़ बढ़ गई थी। उस भीड़ में अधिकांश यूरोपियन लोग थे, और उन यूरोपियनों में अधिकांश फौजी अफसर थे। बैंड बज रहा था, एक विचित्र-सा वातावरण वहाँ पर दिखा जगतप्रकाश को।

खाना खाकर तीनों सेवाराम के दफ्तर पहुँचे। लाला सेवाराम ने ड्राइवर से कहा, "सैलाव साहब को उनके घर उतार देना, फिर जगतप्रकाश साहेब की कोठी पर जगतप्रकाश साहेब को उतारकर यहाँ आ जाना।"

सैलाव के साथ जगतप्रकाश मोटर पर बैठ गया। यह सैलाव बड़ा विचित्र आदमी था। सैलाव ने जगतप्रकाश से कहा, "देख रहे हैं आप! जंग चल रही है, लोग मर रहे हैं और रुपिया बनाया जा रहा है। लेकिन यह रुपिया किस काम का? यूरोप में बड़े-बड़े लखपती और करोड़पती तबाह हो गए हैं। अगर यह जंग हिन्दुस्तान में आती है तो यहाँ भी वही हाल होगी। इस सबसे एक ही नतीजे पर पहुँचा जा सकता है, जब तक जिन्दा रहना है, मौज के साथ जिन्दा रहो। यह रुपिया जोड़ना, इस रुपए पर धन ईमान बेचना—यह गलत है।"

जगतप्रकाश ने कहा, 'लेकिन सैलाव साहेब! आप कहाँ तक अपने को ठीक समझते हैं? क्या आप इस सबमें साथ नहीं दे रहे?"

सैलाव बोला, "मैं कतई साथ नहीं दे रहा, मैं अपना फर्ज अदा कर रहा हूँ। मुझे बेईमान आदमियों से ही काम लेना है—यहाँ हरेक बिजनेसमैन बेईमान है। यह लाला सेवाराम मुझे बेवकूफ समझते हैं, मैं इन्हें बेवकूफ समझता हूँ। अपना-अपना नजरिया। मेरा जो फर्ज है उसे मैं अदा करता हूँ, उसके बाद मौज की जिन्दगी! मैं सोचता नहीं, मैं घुलता नहीं। इस सोचने और घुलने से कोई फायदा भी तो नहीं होता। तुमने होटल में देखा, वे फौजी अफसर, जो जंग में लड़ने और जान देने के लिए जान बूझ

विस मस्ती के साथ सा-पी रहे थे ! जिन्दगी का एक अपना फर्ज है, एक
पना रस है। दोनों अलग-अलग हैं। इसलिए मुझे गलत न समझ लेना।
कम्युनिस्ट था, मैं कम्युनिस्ट हूँ। जो भी मदद तुम लोग मुझसे चाहोगे
ह मैं तुम लोगों को दूगा। मुझे सब पता है कि तुम देवली कसेन्ट्रेशन कैम्प
थ, तुम वरली जेल मे थे। मैं यह भी समझ रहा हूँ कि तुम किस कदर
लझन म हो। मैं कभी शायर था, आज मैं शायरी से कोसों दूर हूँ। मेरा
वान तुम देख ही लोगे, अगर दिल्ली मे रहना तो मुझसे मिलते रहना। मैं
म्हारी इज्जत करता हूँ, तुम बडे बढिया किस्म के आदमी हो।" और
गतप्रकाश को लगा जस सलाव की आख नशे से मपी जा रही हैं।

गोल मार्केट के पास एक छोटे-से बगले मे सलाव रहता था। कार
सके बँगले के सामने रुकी और सलाव बोला, "मैं अपनी मंजिल पर आ
या हूँ, अब मैं आराम करूँगा। और दोस्त यह याद रखना, यह दुनिया बडी
टपटी है, और इस अटपटी दुनिया मे ही हम जिन्दा रहना है। कल क्या
ोगा, कोई नहीं जानता। इस आज मे हमे जिन्दा रहना है। यह बदमाश
ौर बेईमान लाला, यह मुर्दा है, क्योंकि इसने कल म अपने को दफना लिया
।" सलाव लडखडाते पैरों से उतरा और घर के अन्दर चला गया।

ये बात लाला सवाराम के ड्राइवर के सामने हो रही थीं। जगत-
काश न डाइवर को देखा, कुछ क्षमा-प्रार्थना के स्वर म उसन कहा, "ज्यादा
ी गए हैं, इनकी बात का बुरा न मानना।"

डाइवर ने मुसकराते हुए कहा, "लेकिन बात पते की कहते हैं
लाव साहब ! बडे दरियादिल व नेक आदमी है।" और डाइवर ने कार
टार्ट कर दी।

११

कार चल रही थी और जगतप्रकाश चुपचाप बैठा सोच रहा था—दुनिया के अनगिनती भागों में रक्तपात हो रहा है, हत्याकाण्ड चल रहे हैं, शहर उजड रहे है, मकान जल रहे है। मरने वालो और घायलों की चीख-पुकार—विनाश और ताण्डव! दिल्ली की ही भाति दुनिया के अनगिनती भागों में शराब के दौर चल रहे है, लोग रुपया लूट रहे हैं। जैसे यह लूट, बेईमानी, शराबखोरी ही वास्तविक जीवन है जो विनाश और मृत्यु के पहले जी लिया जाना चाहिए। कितना भयानक अनियमन है यह सब!

लेकिन क्या यह अनियमन का ही युग तो नहीं है? जो सामान्य जीवन कहलाता है, क्या यह अनियमन का युग उसके नीचे स्तर का है?

करोड़ो आदमी हर साल मरते है, बीमारी, दुर्घटना, भूख, अकाल से ग्रस्त होकर। करोडो आदमी अपनी इच्छा से अथवा अनिच्छा से पशुता का जीवन व्यतीत कर रहे है। क्या यही नियमन है? क्या यही जीवन की स्वाभाविक गति है? इस सबमें एक भयानक असन्तुलन है—जीवन में मृत्यु की निष्क्रियता और सडांध घुसी हुई है। जगतप्रकाश अपने में ही कह उठा, "नही, इस जीवन से युद्ध की मृत्यु अच्छी है। उसमें सघर्ष तो है, सही काम करने या गलत काम करने की एक प्रेरणा तो है, उसमें द्वन्द्व की एक उद्दाम गति है जो घिसटती नहीं, रेंगती नहीं।

कार अब जसवन्त की कोठी के सामने आ गई थी। जगतप्रकाश कार से उतरकर अन्दर गया। दो बज चुके थे, शर्मिष्ठा डाइनिंग रूम में अकेले ही खाना खा रही थी। जमील और जसवन्त का कहीं पता न था। जगतप्रकाश अपने कमरे में जाकर लेट गया, उसे अपने अन्दर काफी

महसूस हो रही थी।

कितनी देर तक वह इस थकान की वेहोशी म पडा रहा, जगतप्रकाश को इसका पता ही नही चला। लेकिन उसे इतना पता जरूर चला कि फोन की घण्टी वजी काफी देर तक, फिर शर्मिष्ठा न फोन उठाकर बात की। फोन पर क्या वातचीत हुई इसका तो उसे भान नही हुआ, क्योकि फोन ड्राइग रूम की गैलरी म था, लेकिन उसे ऐमा लगा कि शर्मिष्ठा काफी उत्साह के साथ बात कर रही है। वातचीत बन्द हो गई और फिर एक सन्नाटा।

जगतप्रकाश की थकान अव दूर हो गई थी। वह अपने कमरे मे पडी उस सप्ताह की पत्र पत्रिकाओ को उलटने लगा। लेकिन इसम उसका मन नही लगा। ऊबकर वह उठा, अपने कमरे म मे निकलकर वह वरामदे म आया। सामने लॉन पर शर्मिष्ठा अपने वच्चे और आया के साथ वैठी धूप सेक रही थी। शर्मिष्ठा ने जगतप्रकाश को देखते ही कहा "अरे आप कव आए ? मुझे तो पता ही नही चला। खाना तो खा चुके होगे, फोन पर मामाजी ने वतला दिया था। जसवन्त और आपके वह साथी क्या नाम है उनका तो उन लोगा ने फोन पर वतला दिया था कि खाना व कही बाहर ही खा रहे हैं।"

लान पर पहुँचकर जगतप्रकाश ने पूछा, "तो अभी जो फोन आया था, क्या वह जसवन्त का था ?"

शर्मिष्ठा मुसकराई, "नही, उन्होने तो मेरे लौटने के आधा घण्टा वाद ही फोन कर दिया था। यह फोन कुलसुम कावसजी का था। वह मेडस होटल मे ठहरी है पुरानी दिल्ली म। उसने मुझे और जसवन्त को आज रात डिनर पर बुलाया है अपने होटल म। भला यह भी कोई बात हुई ? मैंने उससे अपने यहाँ डिनर पर आने को कहा, यह भी कहा कि मेरे यहाँ दो मेहमान ठहरे है, तो वह बोली कि अपने मेहमाना को भी साथ लेती आऊँ।"

पास पडी हुई कुर्सी पर जगतप्रकाश बठ गया, 'कुल्सुम कावसजी ! तो क्या वह दिल्ली म हैं ? कव आइ यहाँ ?"

वह रही थी कि कल शाम को आई है। मैंन उससे कहा कि मेरी इतनी

वडी कोठी पडी है, उसे उस होटल मे ठहरने की क्या जरूरत है, मैं खुद आ रही हूँ, लेकिन उसने साफ इनकार कर दिया। उसने बहुत आग्रह किया है कि हम लोग अपने दोनों मेहमानों के साथ शाम को उसके यहाँ डिनर में जरूर आएँ।"

"आपने उसे बतलाया कि आपके मेहमान कौन हैं?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"मैं क्या बतलाती, जब वही पूरी बात नहीं बतला रही थी। वह चाहती थी कि हम लोगों के उसके यहाँ जाने पर ही वह पूरी बात बतलाएगी तो मैंने सोचा कि मैं ही उसे पूरी बात क्या बतलाऊँ।"

जगतप्रकाश के मन में आया कि वह तत्काल ही कुल्सुम को फोन करे। इस कुल्सुम से मिलने की एक गौण भावना को लेकर ही तो वह कानपुर में जमील के साथ हो लिया था। दिल्ली में कुछ रुककर बम्बई जाने का कार्यक्रम था उसका। अभी तक कुल्सुम से मिलने की व्यग्रता सोई-सी पड़ी थी उसके अन्दर, अब वह व्यग्रता एकाएक भड़क उठी थी। बड़े प्रयत्न से उसने अपनी व्यग्रता को दबाया। यह शर्मिष्ठा क्या सोचेगी? वह आँखें बन्द करके बैठ गया और उसके सामने कुल्सुम का चित्र उभर आया, ममता और स्नेह की प्रतिमा कुल्सुम! इस बीच में न जाने कितनी बार कुल्सुम का चित्र उसके सामने आया था, विशेष रूप से कानपुर में यमुना से मिलने के बाद। कुल्सुम के प्रति निस्पृहता और उदासीनता की भावना जो उसने एक लम्बे अरसे में संचित कर ली थी, उसके अन्दर से अब जाती रही थी लेकिन इसका स्पष्ट अनुभव उसे उस समय तक नहीं हुआ था। उस दिन दिल्ली में कुल्सुम की मौजूदगी की खबर सुनकर उसके अन्दर क्रमशः करवटें लेती हुई कुल्सुम के प्रति आसक्ति और मोह की भावना एकाएक चेतन होकर सक्रिय हो उठी थी। इस व्यग्रता को दबाना उसके लिए कठिन हो रहा था। कुल्सुम से अपना ध्यान हटाने का प्रयत्न करते हुए जगतप्रकाश ने पूछा, "जसवन्त ने कुछ कहा था कि वह कब तक लौटेंगे?"

"यही ढाई-तीन बजे तक लौटने को कहा था। तीन तो बज गए हैं, अब आते ही होंगे।" फिर उसने कुछ सोचकर कहा, "आप इन्हें समझाइए कि यह लाहौर छोड़कर दिल्ली में रहें आकर। मैं लालाजी को राजी कर

गी। लेकिन यह तो जसे लाहौर से चिपक गए है।"

शर्मिष्ठा की इस बात से जगतप्रकाश को आश्चय हुआ। स्वभावत जसवन्त को दिल्ली मे रुचि होनी चाहिए थी, क्योकि विवाह के पहले जसवन्त दिल्ली म ही रहता था, जबकि शर्मिष्ठा की जडें लाहौर मे थी और शर्मिष्ठा का लाहौर के प्रति लगाव होना चाहिए था। लेकिन यहा बात उल्टी हो थी। उसने कुछ देर तक गौर स शर्मिष्ठा को देखा, फिर उसने पूछा, "क्या, क्या आपको लाहौर पसन्द नही? आप तो लाहौर की रहने वाली है, आपके सगी-साथी सब वही होगे।"

एक करुण मुसकराहट शर्मिष्ठा क होठो पर आई, "आप ठीक कहते है, मैं लाहौर की रहने वाली हूँ। मेरे नाते रिश्तेदार, सगी-साथी सभी लाहौर म हैं। लेकिन मैं सच कहती हूँ, न जाने क्या मुझे लाहौर म डर लगता है। कुछ बना अप्रिय और भयकर होने वाला है वहा पर। हिंदुओ और मुसलमानो म जसे एक-दूसरे पर से विश्वास ही जाता रहा है वहा पर। इस वैमनस्य और अविश्वास के वातावरण म रहने से मेरा दम घुटने लगा है।"

जगतप्रकाश ने कुछ नही कहा। पत्रो मे पजाब की जो खबरें आ रही थी वे काफी चिन्ताजनक थी। शर्मिष्ठा ने कुछ रुककर कहा, "जहाँ तक स्त्री के सगी-साथियो का सवाल है, स्त्री की दुनिया उसके घर मे है, उसके पति मे है, उसके बच्चो म है। उसके पति के सगे सम्बन्धी ही उसके सगे-सम्बन्धी हैं। जसवन्त एक तरह से लाहौर मे अजनबी है, अपने को जमाने की कोशिश तो कर रहे हैं वह वहाँ पर, लेकिन अपने को जमा नही पाते। जसे जसवन्त वहा पर अपने को जमाने की जिद पकड गए हैं। खतरो से खेलना इन्हे अच्छा लगता है।" शर्मिष्ठा ने आखें झुका ली थी, मन-ही-मन जसे वह अपने से तर्क करने लगी थी, "खतरो से खेलना शायद पुरुष की प्रवत्ति है। लेकिन मुझे तो अपने बच्चो का पालन करना है, मुझे तो अपने पति का सहारा देना है, मुझे तो अपने पिता की सेवा करनी है। लोग स्त्री को कायर कहते है। वह क्यो कायर है, कभी किसी ने इस पर ध्यान दिया है? खुद कष्ट सहन म, खुद मरने मिटने मे स्त्री कभी भी पीछे नही रही है। वह कायर बन गई है अपनो के लिए जीवित रहने के सदभ मे।"

जगतप्रकाश बडे ध्यान से शर्मिष्ठा की बातें सुन रहा था। कानपुर मे

यमुना से साक्षात्कार के बाद जो एक तरह की कटुता उसके अन्दर नर थी, वह उससे दूर होती जा रही है—उसने अनुभव किया। शर्मिष्ठा क जा रही थी, "आप ताज्जुब करेंगे, विवाह के बाद मैं कितना बदल ग कभी कभी खुद मुझे अपने को पहचानने मे धोखा हो जाता है। यह हिन्दू-मुस्लिम-समस्या उठ खडी हुई है, अकेले पजाब म ही नहा, सारे दश यह समस्या मेरे विवाह के पहले भी मेरे सामन थी, लेकिन उन समय अन्दर इस समस्या का मुकाबला करने का उत्साह था, और विवाह हन बाद मेरे अन्दर का सारा उत्साह जाता रहा, उस उत्साह का स्थान ले लिया है। आप समझाइए जसवन्त को, हिन्दू मुस्लिम-समस्या के न पर नही—जसवन्त के लिए इस हिन्दू-मुस्लिम-समस्या का कोई आन्तर नहीं, आप जसवन्त से अपना काय-क्षेत्र बदलने का आग्रह करें। कम्युनिस्ट मे आपके नाम की बडी इज्जत है—इतना मेरी समझ म आ गया है, ज वन्त गोकि उम्र म आपसे बडे हैं, लेकिन वह आपकी इज्जत करते हैं। अ भी शायद इस हिन्दू-मुस्लिम-समस्या का महत्त्व न देते होंगे, आप लोगों मनोवृत्ति मैं थोडा-बहुत समझने लगी हूँ। लेकिन जसवन्त न इस बात नाम पर मेरे नाम पर आप जसवन्त को लाहौर छोडकर यहाँ आने की सलाह दीजिए।"

"देखिए, मैं कोशिश जरूर करूँगा, लेकिन आप जसवन्त को ज्यादा जानती हैं। दूसरो के समझान म आने वाले व नहा हैं।"

उसी समय जसवन्त की कार ने फाटक म प्रवेश किया। जमाल और जसवन्त कार से उतरे, जसवन्त ने ज्ञानप्रकाश के पास आकर कहा, बतलाएँ, हम लोग कुछ लोगो से बातें करने म फँस गए और हम उन्हीं के साथ खाना खाना पडा। इस हिन्दू-मुस्लिम सवाल को लेकर हमारे मे दरार पडती दिखती है। तुमने खाना खा लिया, क्या शर्मिष्ठा ?"

"इन्होंने तो मामाजी के साथ खाना खाया है, मैं इन्हें साथ लेकर के यहाँ कुछ कपडे खरीदने गई थी, तो उन्होंने इन्हें रोक लिया और जबदस्ती अपनी कार पर बैठाकर अपने घर भेजने की कोशिश की। मैं जानती थी कि आप लोग बाहर खाना खाएँगे, नहीं तो मैं उनके यहाँ आती। नतीजा यह हुआ कि मैं अपने घर उतर पडी और मामाजी

हार भिजवा दी। इसके बाद उन्होंने टेलीफोन पर मुझे डाटा और बोले कि वह जगतप्रकाश उनके साथ खाना खाएँगे।"

जसवन्त ने मुसकराते हुए जगतप्रकाश की ओर देखा, "मामाजी के साथ इतनी गहरी दोस्ती कब हो गई तुम्हारी?"

'आपकी शादी में अमृतसर जाते हुए सैलाब और मैंने आपके मामाजी के साथ एक ही कम्पार्टमेण्ट में सफर किया था। दोस्ती तो उनकी सैलाब के साथ है। सैलाब को उन्होंने इम्पीरियल होटल में लंच के लिए बुलाया था। मुझे भी उन्होंने जबरदस्ती रोक लिया।"

धूप अब ढलने लगी थी और लॉन पर सर्दी की एक लहर सी दौड़ने लगी थी। शर्मिष्ठा ने उठते हुए कहा, "कुल्सुम का फोन आया था, वह कल रात बम्बई से आई है और मेडस होटल में ठहरी है। रात को उसने हम सबको डिनर पर बुलाया है। मैंने उससे कहा कि वह होटल में क्या ठहरी है, यहाँ चली आए तो बोली कि इसमें राज है।"

जसवन्त बोला, "जो प्रोग्राम बनाता हूँ वही रद्द हो जाता है। आज सब लोगों के साथ सिनेमा देखने को सोचा था।"

शर्मिष्ठा हँस पड़ी, 'कुल्सुम के यहाँ सिनेमा भी देखियेगा, डिनर भी खाइयेगा।" और बिना जसवन्त के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा किये हुए वह बच्चे को गोद में लेकर अन्दर चली गई अपनी आया के साथ।

सात बजे सब लोग तैयार होकर मेडेस होटल में पहुँचे। पोर्टिको से लगे हुए बरामदे में कुलसुम परवेज के साथ खड़ी थी। जगतप्रकाश को देखते ही कुल्सुम ने दौड़कर जगतप्रकाश का हाथ पकड़ लिया, "अरे जगत तुम! तो तुम छूट आए! मुझे तुमने अपने छूटने की खबर ही नहीं दी। मैं कितनी खुशकिस्मत हूँ कि तुम मिल गए।" फिर उसने शर्मिष्ठा की ओर मुड़कर कहा, "क्या, तुमने अपने मेहमानों का नाम ही नहीं बतलाया, नहीं तो मैं उसी वक्त सीधे तुम्हारे यहाँ पहुँचती।" फिर उसने जसवन्त से कहा, "मेरे प्यारे जसवन्त! तुमने अपने साथ जगतप्रकाश और जमील को लाकर मेरा बड़ा उपकार किया। अब चलो मेरे कमरे में, वहीं बातें होंगी।"

सब लोग कुल्सुम के साथ उसके कमरे में गये। वह एक दुहरा बेडरूम था, और उसके साथ लगा हुआ एक छोटा-सा ड्राइंग रूम था। जब सब लोग

बैठ गए, कुल्सुम ने परवेज का हाथ पकड़कर खड़े होते हुए कहा, 'इन
सब लोगों से मेरे पति परवेज झाबवाला से मिलिए। अब मैं कुल्सुम
न रहकर कुल्सुम झाबवाला हो गई हूँ।"

जसवन्त ने उठकर तपाक के साथ परवेज से हाथ मिलाया,
भी जसवन्त का साथ दिया। जगतप्रकाश ने भी उठते हुए कुल्सुम
देखा। कुल्सुम के मुख पर एक स्निग्ध भाव था, एक तरह का उल्लास
तरह का सन्तोष। और तभी जगतप्रकाश को लगा कि
एक घुटन भर गई है। उस घुटन को दबाने के लिए उस
लेकिन उसकी मुसकराहट के विद्रूप पर किसी ने ध्यान नहीं दिया
उसने बढ़कर परवेज से हाथ मिलाते हुए कहा, "मेरी बधाई तुम्हें
कुल्सुम को।' केवल इतने शब्द उसके मुख से निकले।

सब लोग बैठ गए और कुलसुम ने घण्टी बजाई। बेयरा कमरे
गया। उसने बेयरा से कहा, "शम्पेन के छै गिलास। और वह
बोतल अलमारी में रखी है उसे लाओ।"

शर्मिष्ठा बोली 'मैं शराब नहीं पीती—मुझे पाइन एपिल जूस
दो।' और साथ ही जगतप्रकाश बोला, 'तुम तो जानती ही हो कि
शराब नहीं पीता। मुझे भी कोई फ्रूट-जूस मँगवा दो।"

कुल्सुम मुसकराई उसने शर्मिष्ठा से कहा, "शादी के पहले तुम
समाजी थी, अब तो तुम्हारा धर्म वही हो गया है जो जसवन्त का है।
शम्पेन शराब होती भी नहीं, वह तो सिर्फ अंगूर का रस है।"

शर्मिष्ठा ने भी मुसकराते हुए कहा, 'मैं जसवन्त का धर्म जानती हूँ।
लेकिन स्त्री और पुरुष के धर्म अलग-अलग होते हैं, होने भी चाहिए।'
शर्मिष्ठा के उन शब्दों में एक दृढ़ता थी।

कुलसुम हँस पड़ी, 'मैं तुमसे जीत नहीं सकती, तुम पाइन एपिल जूस
ही लो।' और की ओर जगत मुड़कर उसने कहा, 'जगत! मेरी शादी है,
जश्न की यह दावत है। मैंने तुमसे कभी शराब पीने का आग्रह नहीं किया
है। आज पहली दफा यह मेरा आग्रह है।"

जगतप्रकाश के अन्दर वाली कड़ुआहट अब हल्के ढंग से मुखर हो
उठी शायद अपने आग्रहों को मनवाना तुम्हारी जिन्दगी है। लेकिन

यह नही समझ पाती कि मेरी भी कोई निजी जिन्दगी होनी चाहिए, मेरे भी तो कुछ आग्रह है, दूसरो के साथ भले ही न हो, अपने साथ तो हो सकते हैं।"

कुलसुम ने जगतप्रकाश की आखो मे अपनी आख डाल दी, और जगतप्रकाश को लगा कि कुलसुम की आखो मे पीडा से भरी एक तरलता है। उल्लास की जगह एक गहरी उदासी दिखी उसे कुलसुम की आखो मे, और उसे कुलसुम के शब्द सुन पडे, "जिन्दगी मे पहली बार और अन्तिम बार तुमसे यह आग्रह कर रही हूँ।" और कुलसुम ने शैम्पेन का गिलास जगतप्रकाश के सामने रख दिया।

सब लोगो के साथ जगतप्रकाश ने भी अपने सामने वाला गिलास होठो से लगा लिया। उसके अन्दर जैसे कोई कह रहा हो, तुम इतने कटु और कुण्ठित क्यो हो? दोष कुलसुम का नही है, दोष तुम्हारा भी नही है। दोष किसी का नही है, सब कुछ स्वाभाविक रूप से हो रहा है। इस स्वाभाविकता से समझौता करने के सिवाय तुम और कुछ कर भी नही सकते हो।"

हल्की-सी मिठास से भरा वह तीखा खटटापन—जगतप्रकाश को वह बुरा नही लग रहा था। लेकिन नसो की झनझनाहट के साथ उसके मस्तिष्क मे घिरता हुआ एक धुधलापन! और जगतप्रकाश को वह धुधलापन भी बुरा नही लग रहा था। जीवन मे चारो ओर धुधलेपन के सिवाय और है क्या? उस होटल की बिजलियो की जगमगाहट, वहा बैठे लोगो की हँसी, कुलसुम और परवेज का उल्लास—और इस सबके पीछे उस दुनिया से अलग, दूर—एक दूसरी दुनिया! हर तरफ अनिश्चय! कुलसुम हँस रही थी, वह बडे उत्साह से बाते कर रही थी। लेकिन जगतप्रकाश चुपचाप उन बातो को सुन रहा था। उसकी समझ मे कुछ नही आ रहा था—इस सबसे अधिक—सब-कुछ उसकी समझ के बाहर था। जगतप्रकाश कोशिश कर रहा था कि उसका विचार कहा तो केन्द्रित हो।

जमील जगतप्रकाश की बगल मे बैठा था। उसे शायद जगतप्रकाश की मनोदशा का पता था। उसने धीमे स्वर मे जगतप्रकाश के कान मे कहा, 'हाँ मे आओ बरखुरदार! तुम भी हँसो, तुम भी इस जश्न मे शामिल हो।"

जगतप्रकाश ने अपने सिर को एक झटका दिया, और अपनी आ
आगे वाला धुँधलापन कुछ फटता-सा लगा उसे। जसवन्त उस समय कु
से कह रहा था, "तुमने मुझे अपनी शादी का न्यौता ही नहीं दिया, न
मैं ज़रूर आता और शर्मिष्ठा भी आती। यह चुपचाप बिना हम लो
बताए शादी कर लेने की क्या तुक थी?"

कुलसुम ने हँसते हुए कहा, "किसी को नहीं बुलाया बाहर से।
परवेज़ और परवेज़ के बाप, दोनों को तार दे दिया डैडी ने। दोनों
आए। डैडी की तबीअत ठीक नहीं रहती, और मैं ठहरी औरत। यहाँ
का काम-काज मुझसे सम्हलता नहीं। फिर एक मिल और खरीद ली है
ने। परवेज़ के बाप को डैडी ने उस मिल में साझे के लिए बुलाया था, लेकि
इन लोगों के बम्बई आने पर डैडी ने परवेज़ के साथ मेरी शादी कर दी

परवेज़ ने बड़े उल्लास के साथ कहा, "यह कुलसुम झूठ कह रही है
गवर्नर को साफ-साफ लिखा था इसके डैडी ने कि शादी करनी है
कुलसुम ने शादी की हामी भर दी है।"

कुलसुम ने बड़े प्यार से परवेज़ के गाल पर एक हल्की-सी चपत मार
हुए कहा, 'तुम बड़े गलत किस्म के आदमी हो परवेज़ जो मेरे झूठ को ...
मुँह पर ही काट रहे हो। हाँ, डैडी ने मुझ पर बड़ा ज़ोर डाला कि परवेज़ को
हम लोगों के साथ रहना चाहिए मिल का काम-काज सम्हालने के लिए—
और मुझे राज़ी होना पड़ा।" और वह जगतप्रकाश की ओर घूमी, 'म...
जगत! जेल से छूटने के बाद तुमने मुझे इत्तिला क्या नहीं दी? तुम जि...
वक्त गिरफ्तार हुए थे उसी वक्त तुम्हें इत्तिला देनी चाहिए थी मुझे।

जगतप्रकाश की चेतना अब करीब-करीब लौट आई थी। उसने क...
क्या यह ज़रूरी था कि मैं गिरफ्तार होने के वक्त या जेल से छूटने के ...
तुम्हें इत्तिला देता? तुम जानती ही हो कि मैं अपराधी था और अपराधी
जिन लोगों का सम्पर्क होता है उन पर भी अपराधी होने का शक कि...
जाता है।"

और तभी जमील बोला, 'जगत ने तय किया था कि वह कल ...
मेरे साथ बम्बई चलेंगे, खुद इत्तिला देने की शक्ल में।"

'सच! तुम कितने अच्छे हो जगत! अब तुम हमारे साथ बम्बई ...

बात ! क्या परवेज़, तुम जगतप्रकाश से अपने साथ चलने को कहो।"

परवेज़ बोला, "जो कुछ तुम कहती हो, वही मेरा कहा समझो ! लेकिन हम लोगों को यहा से जबलपुर जाना होगा। गवनर न कहा था न कि पहले जबलपुर, फिर बम्बई। वहा का काम-काज गवनर को समझाना होगा न!"

'नही, मुझे बम्बई की बडी याद आ रही है, मैं जबलपुर नही जाऊँगी। तुम वहाँ चले जाओ, और गवनर को अपने साथ लेकर बम्बई चले आना। जगतप्रकाश के साथ मैं बम्बई चली जाऊँगी।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी !" परवेज़ बोला और वह शैम्पेन पीने लगा।

न जाने क्यो जगतप्रकाश के मन मे परवेज़ के प्रति एक प्रकार की ग्लानि भर गई। कुलसुम ने जगतप्रकाश के मना करने पर भी उसके गिलास में थोडी-सी शम्पेन डाल दी थी और जगतप्रकाश ने एक घूट पीकर परवेज़ की ओर देखा।

जगतप्रकाश को लगा कि उसके अन्दर वाली परवेज़ के प्रति ग्लानि वास्तव म परवेज़ के प्रति दया और सवदना है, तथा उसके अपने ही अन्दर वाली झुझलाहट है। कैसा आदमी है यह परवेज़ जिसके पास उसकी कोई निजी इच्छा नही है, उसका काई निजी सकल्प नही है। नितान्त व्यक्तित्व-विहीन ! इस आदमी के साथ कुलसुम ने विवाह किया है। शायद कुलसुम के निकट वही आ सकता है जा व्यक्तित्व विहीन हो। जीवन कुल्सुम के लिए अह की तुष्टि है। और धीरे-धीरे परवेज़ के प्रति उसकी झुझलाहट कुलसुम क प्रति झुझलाहट मे बदलने लगी। तभी उसे कुलसुम की आवाज़ सुनाई दी, 'क्यो जगत ! मेरे साथ बम्बई चल रह हा न ! परवेज़ कल शाम को जबलपुर के लिए रवाना होगा। परसो सुबह के प्लेन से मैं बम्बई जाऊगी। तुम्हारे लिए भी एक सीट बुक करा लू।"

जगतप्रकाश ने अपना सिर उठाया, थोडी देर तक वह कुल्सुम की ओर देखता रहा, फिर उसने कहा, "मैं जमील के साथ निकला हूँ, और मैं बम्बई तक जमील के साथ ही रहूँगा। तुम्हे परवेज़ के साथ जबलपुर जाना चाहिए, फिर वहाँ स बम्बई। हम लोग यहा से दो चार दिन बाद चलेंगे, अगर तुम तब तक बम्बई नही पहुँचोगी तो मैं तुम्हारा इतजार कर लूगा। जमील का कमरा ता है ही इनके पास, इनके साथ ठहरने म मुझे कोई असुविधा नही

होगी।"

जगतप्रकाश को लगा कि परवेज का चेहरा खिल गया उसकी बात और कुल्सुम के मुख पर भी एक मुसकराहट आ गई। क्या परवेज! क्या कहा था? यह जगतप्रकाश कभी भी ग़लत काम में मुझसे सहमत न होंगे। मैं कल तुम्हारे साथ जबलपुर ही चलूंगी।" फिर उसने जमील से "कामरेड जमील अहमद! तुम जगतप्रकाश को अपने साथ बम्बई ज़रूर ले आना।" इसके बाद कुलसुम जसवन्त और शर्मिष्ठा से बात में लग गई।

जगतप्रकाश को कुलसुम, जसवन्त और शर्मिष्ठा की बातों में दिलचस्पी नहीं थी, वह अपने अस्पष्ट और धुंधले विचारों में डूब गया। हँसी-खुशी, यह राग-रंग—क्या यह वास्तविकता है? जब दुनिया के अनगिनती भागों में नगर जल रहे हैं, लोग मर रहे हैं, तबाह हो रहे हैं, आदर्शों और स्वार्थों के बीच जीवन मरण का संघर्ष चल रहा है, तब यहां इस ऐश्वर्य के भुलावे में क्या आ पड़ा? जगतप्रकाश ने अपने सिर को फिर झटका दिया और इसके साथ ही शम्पेन का गिलास फिर ... से चिपक गया। उसी समय जगतप्रकाश के कानों में जसवन्त की आवाज़ पड़ी, "क्या बतलाऊँ, लाहौर से निकलने की फुरसत ही नहीं मिलता। ... साम्प्रदायिक हालत दिन दिन बिगड़ती जा रही है। उसे सुधारने की कोशिश कर रहा हूँ लेकिन कामयाबी नहीं मिल रही। वह तो ... चेतराम का आग्रह था कि मैं पार्टी की बैठक में ज़रूर आऊं, और ... भी लाहौर के बाहर कहीं चलने को उत्सुक थी, तो मैं दिल्ली चला ... नहीं तो तुमसे मिलना न होता।"

"हां, लाहौर तो मैं नहीं जाती। शायद कामरेड जमील अहमद ... जगतप्रकाश भी इसी मीटिंग के सिलसिले में यहाँ आए हैं।" कुल्सुम ने लापरवाही के साथ कहा।

"आपका क़यास बिलकुल ठीक है।" जमील ने उत्तर दिया "... में बुलाया मुझे गया था। तो मैं जगतप्रकाश को भी अपने साथ ले ... यह कहकर कि हम लोग यहाँ से बम्बई चलेंगे।"

"ख़ैर यह तो अच्छा ही किया," कुल्सुम बोली, लेकिन ...

मील अहमद ! जगतप्रकाश को अब आप लोग इस सबसे दूर रखिये। फ़ हम लोगों का साथ हो जाने से इन्हें देवली जाना पडा, क्या इतना फ़ी नही है ? इनका निजी कैरियर है, उसे क्यो बरबाद कर रहे है आप ग ?"

जगतप्रकाश की भाह खिच गईं। यह कुलसुम कौन होती है उसके म्बन्ध म इतनी फिक्र करने वाली ! उसके वदन मे आग लग गई जैसे। सने कहा, "अपना कैरियर मैं जानता हूँ कुल्सुम ! उसकी फिक्र करने की सरो को कोई जरूरत नही है। मेरा रास्ता बन चुका है, वही रास्ता सही ।" और जगतप्रकाश अपनी बात कहते-कहते रुक गया, उसे लगा कि सकी जबान कुछ लडखडा रही है और उसकी आखो के आग धुधलापन रता जा रहा है।

कुलसुम न कहा, "नही जगत, वह तुम्हारा रास्ता नहीं है और न वह सही रास्ता है। यह पार्टी मे शामिल होकर दर-दर घूमना, हर तरह की तक्लीफ उठाना, अपने को खो देना। तुम इस सबके लिए नही बने हो। अलग रहकर पार्टी की जितनी मदद कर सक्त हो करो, लेकिन—लेकिन—क्यो, तुम इस तरह मेरी तरफ क्यो देख रहे हो ?"

जगतप्रकाश हँस पडा, लेकिन उसकी हँसी स्वाभाविक नही थी। हँसते हुए उसने कहा, "तुम अपने लिए यह कह सकती हो कि तुम इसके लिए नही बनी हो शायद, जसवन्त भी कह सकते हैं कि यह इसके लिए नही बने हैं। यह सब तुम पैसे वालो के लिए एक फशन भर है। लेकिन मेरी जडे जमीन म हैं। मैं जहाँ से आ रहा हूँ वहाँ के लोग फैशन कर ही नही सकते। फैशन करने पर वे विकृतियो के शिकार बन जाते ह।" और जगतप्रकाश चुप हो गया, उसे लगा कि वह अकारण ही इतना अधिक कटु हो गया है।

एक सन्नाटा-सा छा गया वहा पर, बडी कडी बात कह दी थी जगत-प्रकाश ने। जमील ने शैम्पेन का गिलास जगतप्रकाश के सामने से हटाते हुए कहा, "इनकी बात का बुरा न मानियेगा, आप ही लोगो ने इन्हे जबदस्ती पिला दी है।"

लेकिन कुल्सुम ने उठकर शम्पेन का गिलास जमील के हाथ मे ले लिया। उसने गिलास जगतप्रकाश के सामने रखकर उसमे थोडी-सी शैम्पेन

और डाल दी। फिर उसने कहा, "तुम ठीक कहते हो जगत, तब कह साहस है तुममे। मैं अपने अल्फाज़ वापस लेती हूँ, तुम जसा ठीक स वैसा करो।" और उसने एक ठडी सास ली, "हम लोगो के लिए कम्युनि एक फैशन है, मैं यह बात स्वीकार करती हूँ, कम-स-कम अपनी बाबत मैं यह कह ही सकती हूँ।" फिर वह हँस पडी, "क्या जसवन्त! क्या पर कम्युनिज्म का कोई असर है? मैं तो ऐसा नही समझती, क्योकि तुम अपनी जमीन-जायदाद सम्हाल्ने मे लग गए हो, दिल्ली छोडकर तुम लाहौर मे रहने लग हो।"

जसवन्त के उत्तर देन के स्थान पर शर्मिष्ठा वाली, "यह क्या कह रहे ज़मीन-जायदाद, वह तो लालाजी सम्हाल रहे हैं। लालाजी की देख-भाल करन के लिए मुझे वहाँ रहना पडता है और मेरी देख भाल करन के लिए जसवन्त को रहना पडता है। फिर कुछ चुप रहकर उदास भाव से वह बोली, "इस ज़मीन जायदाद का मोह वडा भयानक है। तुम लोगों को पता नही कि लाहौर मे क्या हो रहा है, जिन्दा रहने का ठिकाना नही, मौत नाच रही है सब तरफ। मैं तो इस सबसे आजिज़ आ गई हूँ। एक लालाजी का मोह बाधे हुए है हमे।"

जगतप्रकाश चौक उठा परवेज़ की आवाज़ सुनकर, जो कह रहा था, "कर क्या शर्मिष्ठा वन, जहा अपुन है वहाँ अपना भी है। यह अपना मिट जाए तो अपुन भी मिट जाए। अपना खानदान, अपना घर, अपनी ज़मीन जायदाद, अपना मुल्क। इसीसे तो अपुन कायम है।" परवेज़ ने अपना सिर हिलाया, 'वसे न अपुन हमेशा रहग और न अपनी ज़मीन जायदाद हमेशा रहगी।"

जसवन्त ने परवेज की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा, "बडी पते की बात कह दी तुमन परवज़। तुम इतन ज्ञानी हो, मुझे यह न मालूम था। कुलसुम। परवेज़ से शादी करने पर मैं तुम्हे बधाई देता हूँ।" परवेज़ ने शरमाकर अपना सिर झुका लिया।

जगतप्रकाश के अन्दर वाली कटुता और कुण्ठा, दाना ही गायब हो न थी बातचीत क इस मोड से। उसने अनुभव किया कि अनात के प्रति एक प्रकार का भय और उस भय को दबान वाला एक वहलाव का दान उ

ानदार होटल मे बैठकर शराब पीते हुए और जश्न मनाते हुए लोगो मे ौजूद है।

कुलसुम उठ खडी हुई, "चलो साढे नौ बजे है। चले, अब खाना खा ।"

खाना खाकर जब सब लोग चलने लगे, कुलसुम ने जगतप्रकाश से कहा, मैं कल रात की गाडी से इलाहाबाद होते हुए जबलपुर जाऊँगी। कल ोपहर के वक्त यहा आ जाना, तुमसे तो बातें ही नही हुइ।"

जगतप्रकाश अब करीब-करीब बेहोश-सा हो चुका था। उसने कहा, हा, मैं आऊँगा।" और लडखडाते कदमो से चलकर वह जसवन्त की कार र बैठ गया।

सुबह जब जगतप्रकाश की नीद खुली, बाहर गहरा अँधकार छाया आ था। घना कुहरा! पहले तो उसने समझा कि अभी काफी रात बाकी है, किन जब उसने घडी देखी तो आठ बज चुके थे। उसके सारे शरीर मे एक कावट भरी थी और उसका मन बेतरह भारी था। उसे लग रहा था कि हि एक दु स्वप्न देखकर उठा है। लेकिन वह दु स्वप्न क्या था, उसे याद नही ा रहा था। उठकर वह बगल के कमरे मे गया जहा जमील ठहरा था। मील विस्तर पर बैठा बाहर की ओर देख रहा था। जगतप्रकाश को देखते ी वह उठ खडा हुआ, "तो नीद खुल गई बरखुरदार! मैं तुम्हारे उठने का तजार ही कर रहा था। चलो पहले चाय पी ली जाए।"

डाइनिंग रूम मे दोनो बैठ गए, चाय इन लोगो के सामने आ गई। जमील बोला, "मुझे दो-तीन दिन और दिल्ली मे रुकना होगा, इसके बाद हम लोग बम्बई चलेंगे। यहा तुम्हारा जी तो नही ऊब रहा है ?"

जगतप्रकाश ने निस्पृह भाव से कहा, "नही, जी ऊबा देने वाली ऐसी कोइ खास बात तो नही है यहा। जसवन्त के यहाँ अच्छी लाइब्रेरी है, पढने में वक्त कट जाता है।"

"नाश्ता करने के बाद मुझे जसवन्त के साथ कई जगह जाना है। पहले तो सोचा था कि तुम्हे भी हम लोग साथ ले चलें, लेकिन सोच रहा हूँ कि कुलसुम बन ने ठीक ही कहा था कि मैं तुम्हे इस सबसे दूर ही रखू। तुम सिर्फ इटलेक्चुएली हम लोगो की मदद करो। तुम्हे फील्ड-वर्क्स मे नही

आना चाहिए। फिर दोपहर के वक्त तुम्हें कुल्सुम बेन ने भी तो बु
जमील की बात सुनकर जगतप्रकाश मुसकराया, 'इस इटल्क्चु
को दिमागी एयाशी कहा जा सकता है, और इसलिए यह दिमागी ब
भी कहला सकता है। और जहाँ तक फील्ड वर्कर्स का सवाल है, वहाँ
नजरिए अलग-अलग हैं। मैं खुद ही नहीं समझ पा रहा कि हमारे लिए
रास्ता क्या है, लोगों की बातें सुनकर उलझन होती है, गुस्सा आता है।"

जमील और जसवन्त के जाने के बाद जगतप्रकाश फिर एक उ
डूब गया। कुल्सुम ने उसे दोपहर को बुलाया है, वह यह भूल ही गया था,
जमील ने उसे इस बात की याद दिलाई थी। उसने कपड़े पहने और वह
निकल पड़ा। कर्जन रोड से कनाट प्लेस आकर उसे पुरानी दिल्ली के लिए
बस लेनी थी—मेडेंस होटल पहुँचने के लिए।

अपने से उलझा हुआ वह चल रहा था और तेजी से एक के बाद ए
विचार आ रहे थे उसके दिमाग में। वह कुल्सुम से मिलने क्यों जा रहा है?
आखिर कुल्सुम का उसके जीवन में स्थान ही क्या है? वह कुल्सुम से क्यों
मिले? कुल्सुम में उसके प्रति कौन-सी भावना है जो उसने उसे बुलाया है?
मन-ही-मन जाने कितने प्रश्न कुल्सुम के सम्बन्ध में कर डाले उसने अपने से,
और सन्तोषजनक उत्तर उसे किसी प्रश्न का भी नहीं मिला। फिर उसने अ
अपने को टटोला। कुल्सुम के प्रति उसमें कौन-सी भावना है?

इलाहाबाद से वह चला था कानपुर के लिए, जमील से मिलने। क्या
वह सिर्फ जमील से मिलने कानपुर गया था? जमील से मिलना सिर्फ ए
बहाना भर था। अन्दर ही-अन्दर उसमें यमुना की खबर पाने की ला
थी। डेढ़ साल तक जेल में बन्द रहने के बाद वह प्रेम के नशे में अपने को
खो देने को उत्सुक था। उसके बिना जाने अन्दर ही अन्दर उसमें स्त्री की
कोमलता प्राप्त करने की भावना बलवती हो उठी थी, जीवन की भयानक
कठोरता के बाद।

और कानपुर में उसे यमुना का पता लग गया। वह यमुना से मि
यमुना से उसने बात भी की। एक सुन्दर और सुमधुर सपना टूट गया, य
दूसरे की हो चुकी थी। लेकिन इसमें यमुना का दोष नहीं था। उसका भी
दोष नहीं था। फिर भी कुछ समय के लिए उसमें एक कटुता आ ग

किन आदमी कटुना को जिन्दगी भर तो नही पाल मकता। यमुना वाले
न का स्थान कुल्सुम से सम्बद्ध एक नए सपन ने ले लिया। इसी सपने
मादक इन्द्रजाल म खिंचा हुआ वह जमील के साथ दिल्ली होन हुए बम्बई
न को निकल पडा था।

और यहाँ दिल्ली मे उसकी मुलाकात अनायास ही कुल्सुम से हो गई।
निपुर म अनायास ही उसका पहला सपना टूटा था, दिल्ली म अनायास ही
सका दूसरा सपना भी टूट गया।

कुल्सुम दूसरे की हो गई। लेकिन यह कुल्सुम क्या कभी उसकी रही
थी है? जाति, समाज, धर्म—कहीं भी, कुल्सुम म और उसम कोई साम्य
हा। उसे आश्चय हो रहा था कि कुलसुम स उसकी घनिष्ठता बढी कैसे
और क्या? पहले भी वह कुल्सुम के जीवन स दूर हटने का सकल्प कर चुका
था। उसने यमुना के साथ अपन विवाह की स्वीकृति द दी थी, मन ही मन
वह कुल्सुम को त्याग चुका था। कुल्सुम की यह शिकायत ठीक थी कि उसने
गिरफ्तार होते समय कुल्सुम को कोई सूचना नही दी थी।

आखिर कुलसुम म और उसमे साम्य क्या था? वह साम्य सामाजिक
नही था, वह साम्य आर्थिक भी नही था। और वह साम्य सास्कृतिक भी
नही कहा जा सकता था। वह साम्य शुद्ध रूप से वचारिक था और यह वैचा-
रिक साम्य भी समाप्त हो गया था। पिछली रात कुल्सुम ने स्वय स्वीकार
किया था कि कम्युनिजम उसके लिए फैशन-भर है, इससे अधिक कुछ नही।
और जगतप्रकाश के लिए कम्युनिजम उसका जीवन बन चुका था।

सिंधिया हाउस के सामने नौ नम्बर की बस खडी थी जिससे उसे
मेडन होटल जाना था। उसने वह बस नही ली, वह आगे बढ गया। उसे
कुल्सुम के यहा नहीं जाना है, मन-ही-मन उसने यह तय कर लिया। लेकिन
वह घर से निकला है, कही तो उसे जाना ही होगा। उसका वापस लौटना
गलत होगा।

आखिर वह लौट भी तो कहा? इलाहाबाद? अपने गाव महोना?
नही, उसे तो आगे बढना है। लेकिन यह आगे कहाँ? सारा हिन्दुस्तान एक
जेल है—उसन अनजान दो दिन पहले यह बात कह दी थी, एक छोटी सी
जेल से निकलकर वह एक बडी जेल मे आ पडा था। इस जेल के बाहर

मानवता व भाग्य का फैसला करने वाले संघर्ष हो रहे थे, इस संघर्ष में दान करना उसका धर्म है। फिर उसे दो दिन पहले वाली मीटिंग की याद हो आई।

रूस हार रहा है, ब्रिटेन हार रहा है। इन दोनों देशों की पराजय की विजय होगी जो अन्याय, अत्याचार और दानवता के प्रतीक हैं। चेतराम ने जो वालन्टियर कार का सुझाव दिया था, उस सुझाव में ईमानदारी से भरी भावना तो थी, वह सुझाव भले ही कार्यान्वित न किया जा सके। और यह सोचते सोचते उसके मन में आया कि वह स्वयं इस युद्ध में क्या न योगदान करे सैनिक की भांति ! इस हिन्दुस्तान की जेल के बाहर तो वह निकल सकेगा।

और तभी उसे सैलाव की याद आ गई। सैलाव ने कहा था कि उसकी मुलाकात रिक्रूटमेण्ट के इंचार्ज से है, और उस इंचार्ज का कहना है कि सेना में हिन्दुस्तानी अफसरों की कमी है, शिक्षित हिन्दुस्तानी सेना में भर्ती ही नहीं होते। सैलाव ने यह भी कहा था कि वह जगतप्रकाश की हर तरह से मदद करने को तैयार है। इस विचार के साथ ही उसके कदम सैलाव के आफिस की ओर उठ गए।

सैलाव अपने कमरे में ही था। जगतप्रकाश का कार्ड पाते ही उसने जगतप्रकाश को अन्दर बुला लिया। उसने जगतप्रकाश से कहा, "मेरी बड़ी किस्मत जो यहाँ आने की तकलीफ गवारा की तुमने। अरे, तुम्हारा चेहरा बड़ा उतरा है क्या बात है ?"

जगतप्रकाश ने बैठते हुए कहा "मैं बड़ी उलझन में हूँ। उस दिन आपने कहा था कि आपकी मुलाकात रिक्रूटमेण्ट के इंचार्ज किसी मेजर जनरल से है।"

"हाँ हाँ ! मेजर जनरल कमिंग्स ! तो उनसे क्या काम आ पड़ा तुम्हें ?"

"आपने यह भी कहा था कि उन्हें इस बात की शिकायत है कि हिन्दुस्तान में कांग्रेस मूवमेण्ट की वजह से पढ़े लिखे ऐसे हिन्दुस्तानी नहीं मिल रहे जिन्हें फौज में अफ्सर बनाया जा सके।"

सैलाव ने गौर से जगतप्रकाश को देखा, "तो क्या तुम—तुम अपने

करना चाहते हो ? तुम तो यूनिवर्सिटी में लेक्चरर हो।"
हूँ भी, नहीं भी हूँ। असल बात यह है कि मैं फौज में भरती होना
हूँ। आप मेरी मदद कर सकते है ?"
छ सोचकर सैलाव वाला, "मैं समझता हूँ कि फौज में कमीशन
पर तुम लेक्चरर से ऊँचे ओहदे पर ही रहोगे, गोकि वहा जान का
है। बेतहाशा लोग मर रहे है इस जग में। तो अच्छी तरह सोच

'सोचने की बात क्या है ? जान का खतरा कहा नहीं है ? इस घुटन
ड़ाव की जिन्दगी से, जो हम जी रहे है, मौत शायद ज्यादा अच्छी
। फिर मुझे यह संतोष रहेगा कि मैं कुछ कर तो रहा हूँ।"
लाव ने फोन मिलाया। जनरल कमिंग्स से बात करके उसने जगत-
। से कहा, "तुम्हें इमर्जेन्सी कमीशन मिल जाएगा, कल मेरे साथ उनके
चलना। ग्यारह बजे का वक्त दिया है उन्होंने। इस बीच तुम अच्छी
सोच लो। कुल एक महीने की ट्रेनिंग मिलेगी यहा हिन्दुस्तान में, और
सीधे मोर्चे पर।"
जगतप्रकाश ने उठकर सैलाव से हाथ मिलाया, "आपने मुझ पर बड़ा
ान किया है सलाव साहेब! एक एहसान और कीजिएगा, जसवन्त कपूर
ल तक इस बात का जिक्र न कीजिएगा, मैं खुद अपने अन्दर ही सोचना
ता हूँ। कल साढ़े दस बजे मैं आ जाऊँगा।"
एक नवीन उमंग, एक नवीन उत्साह। जगतप्रकाश अपने निर्णय पर
प्रसन्न था। उसका मन हल्का था, उसके अन्दर वाली सारी उदासी
ो रही थी। उसने घड़ी देखी, अभी कुल बारह बजे थे। और फिर उसे
सुम की याद आ गई जिसने उसे दोपहर के समय बुलाया था। जसवन्त
रहाँ वह कह आया था कि वह दोपहर का खाना बाहर ही खाएगा और
म तक लौटेगा। सेक्रेटेरिएट के सामने पुरानी दिल्ली जाने वाली बस खड़ी
, जगतप्रकाश उस पर बैठ गया। अब वह कुल्सुम के यहां बिना किसी
चक के, बिना किसी आन्तरिक ग्लानि के जा सकता था।
कुल्सुम जगतप्रकाश का इन्तजार कर रही थी, एक बज रहा था। उसने
गतप्रकाश से कहा, 'तुम्हें कुछ देर हो गई है, मैं समझती थी कि तुम

ग्यारह-बारह बजे तक आ जाओगे।"

परवेज़ उस समय होटल म नही था। जगतप्रकाश ने कहा, देर तो हो गई। परवज कहाँ है ?"

"वह स्टेशन गये है, आज रात की गाडी के टिकट खरीदने। गाडिया म बडी भीड रहती है, पहले स रिजव कराए बिना यह ति रहता कि जगह मिल ही जाएगी। फस्ट और सकण्ड क्लास म तो फौजी नज़र आते है। बैठो, परवज़ आते ही होगे। एक घण्टे स ऊपर उ ह गये हुए।"

जगतप्रकाश चुपचाप बठ गया। कुलसुम ने पूछा, "तुम्हारी का पता मुझे जमील अहमद स मिला था। लेकिन मेरी समझ म न कि तुम्ह गिरफ्तार क्यो किया गया, जमील को भी ताज्जुब हो रहा था।"

जगतप्रकाश मुसकराया "जिन्दगी म होने वाली बाता म हमारी समझ म नही आती। और मेरा अनुभव तो मुझस कहता है कि काम किया नही जाता वह खुद हो जाया करता है।"

'मैं इसे नही मानती यह ता सिफ भाग्यवाद है।" कुलसुम

'अच्छा तो इलाहाबाद यूनिवर्सिटी म तुम्हारी सर्विस का क्या हुआ? शायद छूट गई होगी, नही तो तुम्ह इन दिना इलाहाबाद म होना च

"हाँ, अभी ता छूटी हुई ही समझो। इस टम के अन्त तक जगह दूसरा आदमी ले लिया गया है। तुमने ठीक ही समझा, मन थी तो जमील के साथ घूमने निकल पडा।"

कुलसुम ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, "जगत! मेरी मानो। तुम इलाहाबाद छोडकर बम्बई आ जाओ! वहाँ शिक्षा में तुम्हे आसानी स नौकरी मिल जाएगी—डडी का काफी प्रभाव पर फिर मैं भी लोगा को जानती हूँ।"

जगतप्रकाश मुसकराया, 'इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स बढकर वालजा की सर्विस न हो। लेकिन मैं अब शिक्षक नही बनना तय कर लिया है मैं फौज म भर्ती हो रहा हूँ।"

कुलसुम को एक धक्का-सा लगा, 'फौज म भर्ती हो रहे हो! किन! यह कसा पागलपन ?"

"मुझे इमर्जेंसी कमीशन मिल जाएगा, मैं यहाँ आने के पहले सब-कुछ
प कर आया हूँ, इसीलिए मुझे कुछ देर हो गई। कल सब फार्मेल्टीज़ पूरी
। जाएगी। असल बात यह है कि मैं आदर्शों और मानवता के युद्ध मे
टस्थ नही रहना चाहता। और जिस तरह कम्युनिस्ट पार्टी वाले सोच रहे
, काम कर रहे हैं, मुझे उस पर भरोसा नही। मैं खुद युद्ध-क्षेत्र म जाकर
स सघष म योगदान करूँगा।"

कुल्सुम अवाक देख रही थी जगतप्रकाश को, और जगतप्रकाश कहता
। रहा था, "मैंने अभी कुछ देर पहले कहा था कि कोई काम किया नही
ाता, वह हो जाया करता है। जब तीन साल पहले मैं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
रिसर्च कर रहा था, मैंने सिर्फ एक प्रोफेसर बनना चाहा था। और मैं
फेसर बना भी। लेकिन इन तीन वर्षों म मैं कितना बदल गया हूँ। मेरी
ान्यताएँ बदल गई है, मेरा दृष्टिकोण बदल गया है। अगर मै गिरफ्तार
रके जेल न भेज दिया जाता तो मैं कम्युनिस्ट भी न बनता। जिन्दगी बिना
री इच्छा के अजीब ढग से ढलती चली गई। एक के बाद एक विचित्र
नुभव। और उन अनुभवो ने मुझे बुरी तरह सन्त्रस्त किया। कल मै तुम्हारे
ाथ बेकार कटु हो गया था, मुझे इस बात का अफसोस है, लेकिन मैं अपन
ो से बेबस था।"

कुलसुम ने जगतप्रकाश की बात काटी, "नही तुमने सही बात कही थी
गत—मुझे तुम्हारी बात पर जरा भी बुरा नही लगा।"

जगतप्रकाश बोला, "मैं जानता हूँ, लेकिन शिष्टता और शालीनता की
र्यादा को तो मैं लाँघ ही गया था। हा, तो मैं कह रहा था कि आज सुबह
क मैं भयानक रूप से कुण्ठित और निराश था। और तभी कही से एक
रणा मेरे अन्दर आई—जो कुछ आता है उसे स्वीकार करो और भोगो,
सन्न होकर। जन्म तुम्हारे हाथ म नही है, मरण तुम्हारे हाथ मे नही है,
कर किस लोभ म यह सडाँध और घुटन की जिन्दगी बिताई जाए? आज
ारी दुनिया पर यह जमनी के नाजीवाद का सकट मँडरा रहा है। उसे हर
दम पर विजय मिलती जा रही है। और हम यहा झूठी और लचर
मस्याओ मे उलझे हुए हैं। मुझे इस नाजीवाद का मुकाबला करना है।
ब्दजाल म उलझे रहने से तो काम नही चलेगा।"

कुलसुम बोली, "मैंने जमील से सुना था कि तुम्हारी शादी त
है। तो क्या तुम शादी नहीं कराेगे?"

एक व्यंग्यात्मक मुसकान के साथ जगतप्रकाश बोला, 'जिससे
हुई थी, उसकी शादी दूसरी जगह हो गई जब मैं जेल में था।
समझता हूँ कि शायद यह अच्छा ही हुआ। मैं एक ऐसे बन्धन में बंधने
बच गया जो मुझे कायर बना देता। अब मेरे आगे पीछे कोई ऐसा न
जिसे मेरी जरूरत हो।"

कुलसुम का गला भर आया, "ऐसा मत कहो जगत! तुम्हारे आने
हर जगह ऐसे लोग हैं जिन्हें तुम्हारी जरूरत है। यह इतना बड़ा
क्या उठा रहे हो?"

कुलसुम के स्वर की व्यथा जैसे जगतप्रकाश के स्वर में उतर आई।
धीमे स्वर में उसने कहा, "नहीं कुलसुम! सिवा इसके मेरा और कोई
हो ही नहीं सकता था, होना भी नहीं चाहिए था। अभी तुमने जरूरत की
कही थी, वहां मैं समझता हूँ कि जरूरत उसकी होती है जो सहारा दे
है, या जिसका सहारा चाहा जाता है। मेरी बहन को मेरे सहारे की
नहीं है, वह अभी तक मुझे सहारा देती रही है, आखिरी दम तक
देती रहेगी। मेरी ट्रेजेडी यह है कि मैं अभी तक किसी को सहारा
सका, दूसरे ही मुझे सहारा देते रहे हैं। मैं पुरुष हूँ, सहारा देने के लिए
हुआ हूँ। आज मिटती हुई और बरबाद होती हुई दुनिया को
की जरूरत है।" यह कहते-कहते जगतप्रकाश के चेहरे पर एक
आ गई।

कुलसुम कुछ कहते-कहते रुक गई, कमरे में परवेज प्रवेश कर रहा
उसने अन्दर आते ही कहा, 'मैंने कहा था न, बड़ी मुश्किल से एक
है, फर्स्ट क्लास में, उफ कितनी भीड़ थी! तो जगतप्रकाश भी आ
अब खाना खा लिया जाए, बड़ी भूख लगी है। अरे! तुम बड़ी उदास
क्या बात हुई?"

कुलसुम की आँखों की कोरों में कुछ बूँदें थीं, उसने आँसू
"शायद कोई तिनका पड़ गया है।" फिर उठते हुए वह बोली,
अब खाना खा लिया जाए। गाड़ी आठ बजकर बीस मिनट पर जाती है।"

खाना खाते-खाते जगतप्रकाश को लगा कि उसने जैसे अपने अन्दर वाली सारी उदासी और घुटन कुलसुम के अन्दर उतार दी है। वह परवेज से बात कर रहा था, मज़ाक कर रहा था और कुलसुम मौन थी। परवेज को उसने बतला दिया था कि उसे फौज म कमीशन मिल गया है, और परवेज ने उसे फौज मे न जाने का आग्रह भी किया। खाना खाने के बाद उसने कुलसुम से कहा, "हिन्दुस्तान से बाहर जाने के लिए मुझे शायद बम्बई से जहाज़ लेना पडे, तब मै मिलूगा तुमसे।"

और कुलसुम ने टूटे हुए स्वर मे कहा, "जगत! तुम मुझे एक हफ्ते के अन्दर ही चिट्ठी लिखना। एक दफा फिर अच्छी तरह सोच-समझ लो, मैं समझती हू कि तुम गलत कदम उठा रहे हो। लेकिन मेरी समझ ही ठीक है, यह मैं कैसे कह सकती हूँ। खुदा तुम्हारी हिफाज़त करे।"

उसने जसवन्त और जमील को कोई बात नही बतलाई, दूसरे दिन सुबह साढे दस बजे वह सलाव के दफ्तर म पहुँच गया और दिन भर उसे मेडिकल एक्जामिनेशन तथा अन्य औपचारिकताओ मे लगा गया। शाम के समय इमर्जेंसी कमीशन का आडर उसकी जेब म था। उसे एक हफ्ते के अन्दर देहरादून मिलिटरी एकेडमी म अपनी, वाइनिंग रिपोर्ट करनी थी।

करीब साढे पाच बजे वह घर पहुँचा। जमील और जसवन्त दोनो ही चाय पीने वाले थ। जगतप्रकाश को देखते ही जसवन्त बोला, "बडे वक्त से आए। दिन भर तुम्हारा पता ही नही चला। हम लोग भी दिन भर बड फिक्री रहे।"

जगतप्रकाश की मुद्रा म, उसकी चाल ढाल म अजीब तरह का परिवतन हो गया था। अब वह मन ही मन अपने को सनिक समझने लगा था। जमील ने उससे कहा, 'कहो बरखुरदार, बडे मस्त नजर आ रहे हो! क्या क्या किया दिन भर?"

"किया बहुत-कुछ—यानी मै फौज म भरती हो गया हूँ, और मुझे इमर्जेंसी कमीशन मिल गया है। मेडिकल हुआ, मेजर जेनरल कमिंग्स से इंटरव्यू हुआ, कान्ट्रैक्ट साइन किया, और अब मैं सेकण्ड लेफ्टिनेण्ट जगत-प्रकाश हूँ।"

वहा बैठे सब लोग सन्नाटे म आ गए। जसवन्त ने कहा, "तुम फौज म

भरती हो गए—यह कैसे और क्यों ? हमें खबर ही नहीं ।"

शर्मिष्ठा ने चाय बनाकर प्याला जगतप्रकाश के सामने [illegible] प्याला लेते हुए उसने कहा, "दुनिया मे जिन्दगी और मौत का [illegible] है, और मैंने सोचा कि मैं भी उस खेल मे हिस्सा लूँ । कल सुबह मैंने [illegible] से कहा कि मैं भी फौज मे भरती होना चाहता हूँ, मेजर जेनरल [illegible] उसकी दोस्ती है, और आज उसने मुझे इमर्जेंसी कमीशन दिलवा दिया। [illegible] हफ्ते के अन्दर ही मुझे देहरादून पहुँचना है । आज रात की गाड़ी से इलाहाबाद जा रहा हूँ, वहाँ से एक दिन के लिए महोना और फिर देहरादून।"

जमील स्तब्ध-सा अभी तक जगतप्रकाश को देख रहा था, एकाएक वह कराह-सा उठा, 'यह क्या कर डाला तुमने बरखुरदार ? जिन्दगी इतनी [illegible] तो नही है ।"

जगतप्रकाश मुसकराया 'जिन्दगी इतनी बेकार भी नही है कि यह [illegible] और सड़ाँध म बिताई जाए ।" और उसने अपनी प्लेट पर गहरा नाश्ता [illegible] लिया, "आज दिन म कही खाना नही खाया, याद ही नही रहा कि मुझे भूख लगी है । अभी तक मैं भटक रहा था, अब जाकर कहीं ठीक रास्ता मिला है मुझे ।'

नाश्ता करने के बाद जगतप्रकाश उठ खड़ा हुआ, "मुझे अपना सामान बाँधना है । अभी छ बजे हैं, गाड़ी आठ बजकर बीस मिनट पर जाती है, वह गाडी पकडनी है मुझे ।

जमील ने भी जगतप्रकाश के साथ उठते हुए कहा, 'मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ कानपुर तक । नागपुर जाने की अभी कोई जरूरत नहीं।"

जसवन्त इन दोनों को स्टेशन पहुँचाने गया । सेकण्ड क्लास में [illegible] उसी दिन कैंसिल हुई थी, जसवन्त न इन दोनो के लिए दो सेकण्ड क्लास [illegible] टिकट खरीद दिए, [illegible] जमील और जगतप्रकाश के मना करने पर [illegible] गाड़ी चल पड़ी और जगतप्रकाश न सन्तोष की एक गहरी साँस ली। [illegible] सन्तोष की गहरी साँस व उसी समय जमील की एक कराह [illegible] चीजों ने यह शक्ल अख्तियार कर ली ! मैं अपने को कोस रहा [illegible] तुम्हें अपने साथ दिल्ली क्यों लाया ।"

जमील जगतप्रकाश की बगल में बैठा था, जगतप्रकाश के

य पकड लिया, "यह अफसोस का मौका नही है जमील काका, यह तो ी का मौका है। आज दुनिया मे जा युद्ध हो रहा है वह पीपुल्स वार है, म योगदान देना हरेक आदमी का धम है, अपने-अपने ढग से। राज-तिक सगठन के दाव पच मुझे आते नही, और हिन्दुस्तान की जो हालत अहिसा के नारे के पीछे एक कायरता से भरी जो निष्क्रियता है, उससे ा जरा भी आशा नही बँधती कि हिन्दुस्तान इस पीपुल्स वार मे योगदान सकेगा।"

जमील न जगतप्रकाश की वात का कोई उत्तर नही दिया, चुपचाप ातप्रकाश का हाथ पकडे वह काफी देर तक बैठा रहा, फिर उसने धीमे र उदास स्वर मे पूछा, "वरखुरदार! एक वात सच-सच वतलाना। ा कुलसुम की परवेज के साथ शादी से तुम्हारे दिल को किसी तरह की ा लगी?"

"मैं समझा नही।" जगतप्रकाश वोला।

"इसम समझने की बहुत बडी बात तो नही है। मैं जानता हूँ कि मुना और रूपलाल की शादी से तुम्हारे दिल का धक्का लगा था, मने उस न तुम्हारी शक्ल देखी थी जब तुम जमुना से मिलकर लौटे थे। लकिन ल्दी ही तुमने अपने ऊपर काबू पा लिया था। यानी तुम मरे साथ दिल्ली लिए चल पडे, वम्बई जाने के लिए। मैं गल्त तो नही कहता।"

"यहाँ तक ठीक कहा तुमने।" जगतप्रकाश ने स्वीकार किया।

'इसके वाद यहा तुम्हारी मुलाकात कुलसुम स हुई, उस कुलसुम से जसे तुम मन-ही-मन प्यार करते थे। और तुमने देखा कि कुल्सुम न भी ादी कर ली है। इससे तुम्हारे दिल को फिर ठेस लगी। जख्म हरा हो या, इस दफा के धक्के को तुम नही सँभाल सके, दूसरे ही दिन तुमने ैसला कर लिया फौज म भरती होन का, जिन्दगी को दाँव पर लगा देने ा।"

जगतप्रकाश मुसकराया, "यहाँ तुमने मुझे समझने मे ग़लती की। कुलसुम स मेरी शादी हो सकती है, मैंने कभी इस पर सोचा ही नही। मैं जानता था कि उसकी शादी परवेज के साथ तय हो चुकी है। मैंने जो क़दम उठाया उसके कारणो को ठीक तरह से तुम महसूस नही कर रहे हो।" फिर

कुछ रुककर वह बोला, "शायद मेरे अन्दर खतरो से खेलने की सहज प्रवृत्ति है। पिछले डेढ साल तक जेल मे बन्द रहने से यह प्रवृत्ति न आई है।"

जमील ने उदास भाव से सिर हिलाया, "इन्सान के अन्दर की गुत्थियो को समझना बडा मुश्किल होता है, और हम सब एक अजाबदार की दुनिया म रह रहे हैं। कुर्बानियो की यह दुनिया, जहाँ लोग अपनी जान की बाजी तक लगा रहे है। खुदा जाने यह दुनिया सुधरेगी या बिगड़ेगी। तुम बहुत ऊँचे किस्म के इन्सान हो बरखुरदार, खुदा तुम्हारी मदद करे और तुम्हे सही-सलामत रखे।"

१८

कप्टेन साडस शायद कुछ ज्यादा पी गया था। उसने लेफ्टिनेण्ट गतप्रकाश की ओर जलती आखो से देखा, "लफ्टिनण्ट जगतप्रकाश! दूर छ घरघराहट की आवाज़ तुम्हे सुनाई पडती है?"

"नही, मुझे तो कोई आवाज़ सुनाई नही पडती है। आपका कुछ भ्रम मा है कप्टेन!" जगतप्रकाश ने जवाब दिया।

मस म खाने की मेज पर दोनो बैठे थे और दोना के हाथ मे रम के लास थे। कप्टेन साडस ने कहा, "तुम गधे हो! हरेक हिदुस्तानी गधा ता है। मुझे साफ-साफ आवाज़ सुनाई पड रही है। दुश्मन हमला करने ी तयारी म है।"

अकारण गाली, केवल उसे नही, उसके समस्त देशवासियो को। जगत-काश ने तनकर कहा, "कैप्टेन, तुम सूअर हो। मै अग्रेज़ जाति को तो गाली ही दूगा, लकिन तुम अग्रेज जाति के कलक हो।"

कप्टेन साडस न जगतप्रकाश की बात का कोई जवाब नही दिया, लती आखो स वह जगतप्रकाश को देख रहा था।

कप्टन साडस ने अपना सैनिक जीवन साधारण टामी की हैसियत से ारम्भ किया था और भाग्यशाली होने के नाते मोर्चे पर हरेक युद्ध मे चता हुआ तथा पदोन्नति प्राप्त करता हुआ वह कप्टेन बन गया था। वर असभ्य, अपने ढग से चतुर, खतरे के मुह म दूसरो को डालकर खुद च निकलने म दक्ष। जगतप्रकाश को कप्टेन साडस की मातहती अखर रही थी।

जून सन् १९४२ की लम्बी शाम और इजिप्ट की पश्चिमी सीमा के

रेगिस्तानी भाग मे इण्डियन डिवीजन की नियुक्ति। जमन और [illegible] सेनाएँ उत्तरी अफ्रीका मे हजारो मील तक खदेडता हुई इजिप्ट [illegible] पर पहुँच गई थी। तब्रूक से पराजित होने के बाद मसामत्रूह [illegible] छोटे-से कस्बे का आधार बनाकर ब्रिटिश सेनाओ ने [illegible] उन्तीसवी इण्डियन इनफेण्ट्री ब्रिगेड को मोर्चेबन्दी के मध्य भाग [illegible] गया था, और जगतप्रकाश की नियुक्ति इसी ब्रिगेड म हुई थी।

जनरल रोमल का आतक फैला हुआ था हर तरफ। इजिप्ट पर [illegible] के हमले का अथ होगा—मित्र-राष्ट्रो की पराजय और रूस [illegible] हर हालत म इजिप्ट की रक्षा करनी थी ब्रिटेन को। ब्रिटेन ने अधिक-अधिक सेना इजिप्ट की रक्षा करने के लिए एकत्रित कर ली थी—[illegible] आस्ट्रेलिया से न्यूजीलैण्ड से, भारत स और अफ्रीका से। जहाँ स [illegible] हुआ ब्रिटेन ने अफ्रीका म सेनाएँ बुलाई थी। जगतप्रकाश जिस ब्रिगेड [illegible] वह उस भारतीय डिवीजन का भाग था जो एक अरसे स [illegible] रहा था और जिसका समय समय पर पुनगठन होता रहता था। [illegible] के सिलसिले मे ही कैप्टेन साडस का ब्रिटिश डिवीजन स हटाकर ब्रिगेड म नियुक्त किया गया था, क्योकि भारतीय अफसरो [illegible]

एकाएक कैप्टेन साडस उठ खडा हुआ और मस के बाहर [illegible] बाहर से उसने आवाज़ दी, "लेफ्टिनट प्रकाश!"

जगतप्रकाश को बाहर आना पडा। औपचारिक तौर स [illegible] हुए उसने कहा, "यस सर!"

'एक प्लाटून के साथ तुम फारवड पोजीशन पर पट्रोल [illegible] जाओ—दुश्मन शायद हमला करने वाला है।'

आज्ञा का पालन करना, बिना किसी तक के, बिना किसी [illegible] हरेक सैनिक का कतव्य होता है। जगतप्रकाश ने फिर सैनिक [illegible] राइट-टर्न करके वह चल दिया। उसने अभी खाना नहा खाया था और उस मेस म खाना खाने के स्थान पर टिन म बन्द खाना खाते [illegible] रास्ता चलते हुए। तभी उसे कप्टन साडस की आवाज सुनाई दी "[illegible] निगर!"

खून का घूट पीकर रह जाना पडा जगतप्रकाश को। उन्ने [illegible]

कप्टेन साइस की ओर देखा तक नही, चुपचाप वह अपने टेंट मे चला गया, एक जलन अपन अन्दर लिये हुए।

रात के नौ बज रहे थे, हल्की-सी अरुणिमा क्षितिज पर अब भी थी। वातावरण की जलन अब दूर हो गई थी, उत्तर म समुद्र की ओर से आन वाली हवा मे एक तरह की ताजगी थी। अपने प्लाटून को साथ लेकर वह निकल पडा पश्चिम की ओर—जहा कही दूर—बहुत दूर जमन और इटलियन सेना का जमाव था।

अन्धकार प्रतिक्षण गहरा होता जा रहा था आसमान पर तारे टिम-टिमा रह थे, और चारा ओर खामोशी का वातावरण था। वह समस्त प्रदेश उस प्लाटून का जाना-पहचाना था, न जान कितनी बार वह पट्रोल पर आ चुका था वहा। जमादार बख्तावरसिंह ने कहा, 'लफ्टण्ट साहब! लफ्टैण्ट नयाज अहमद साहेब के साथ पन्द्रहवी प्लेटून दो घण्टा पहले पटोल पर गई है, हम लोगा को आप क्यो लिये चल रहे है? अभी जमनी क हमले क कोई आसार नही दिखाई देते।"

"कप्टन साइस का आडर है।" छोटा सा उत्तर जगतप्रकाश का था।

"यह कप्तान साइस बडा हरामजादा है। ख्वाहमख्वाह लोगो से उलझ जाता है। इसके मुकाबले का बदमाश और जालिम आदमी मैंने नही देखा है।" बख्तावरसिंह बोला।

जगतप्रकाश ने जमादार बख्तावरसिंह की बात का कोई उत्तर नही दिया, वह चल रहा था और सोच रहा था।

कैप्टेन साइस ने उसे गाली दी थी, गाली देने का उसे अधिकार था, क्योकि वह अफसर था। लेकिन उसने गाली खाई क्यो? अनुशासन के वश होकर अनुशासन! जगतप्रकाश उलझ गया। इस अनुशासन की कहीं कोई सीमा रेखा तो होनी चाहिए। जब अनुशासन मनुष्य के विवेक को कुण्ठित कर दे उसकी चेतना को जड कर दे, तब वह गुलामी से भी निकृष्ट पशुता का रूप धारण कर लेता है।

विवेक, चेतना! ये वैयक्तिक गुण है जो कभी-कभी सामाजिकता के विरोधी तत्त्व साबित हो सकते है—जगतप्रकाश की बुद्धि ने तर्क किया। सामाजिक हित के लिए अपने को मिटा देना पडता है। अगर वैयक्तिक

मानापमान पर ही मनुष्य केन्द्रित रहे तो सामाजिक जीवन असम्भव हो जाएगा। अनुशासन तो मनुष्य के विकास का प्रेरक तत्व है, क्योंकि मनुष्यता का विकास सामाजिक विकास है और समाज का नाव अनुशासन पर है। यह कप्टन साडस अपनी वैयक्तिक विकृतियों से मजबूर है, उसने अकेले जगतप्रकाश को गाली नहीं दी, वह अपने मातहत हरेक व्यक्ति को गाली देता है। इसी समय जगतप्रकाश को बख्तावरसिंह की आवाज सुनाई दी, 'लफ्टण्ट साहेब! किसी दिन इस साले साडस को गोली मार दूगा, मौका भर मिल जाए।"

जगतप्रकाश एकाएक रुक गया, उसने बख्तावरसिंह के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, जमादार बख्तावरसिंह! आगे कभी यह बात मुह से निकालना, न कभी ऐसी बात सोचना। देखो, कुछ लोगो के परों की आहट सुनाई दे रही है।"

अपने ही लोगो के परों की आहट है लफ्टण्ट साहेब! आप सब चिन्ता न कीजिए। दुश्मन का कहीं दूर तक कोई निशान नहीं है, वह अपने जख्मों की मरहम पट्टी कर रहा है।" और फिर दबी जबान में उसने जगतप्रकाश से कहा "लफ्टण्ट साहेब! आप इस हरामजादे कप्तान साडस से दबिएगा नहीं हम सब उससे घृणा करते है और आपके साथ है।"

जगतप्रकाश चलने लगा, उसने जमादार बख्तावरसिंह को अधिक बात करने का मौका नहीं दिया। वह गहरे विचारों में खो गया। यह जाति भेद यह रंग भेद! यह इस युद्ध-क्षेत्र में भी मौजूद है, जहाँ जीवन-मरण का संघर्ष चल रहा है। यह कप्तान अंग्रेज है और इसके नीचे वाले सिपाही तथा अफसर हिन्दुस्तानी है। यह अंग्रेज अपने को ऊचा समझता है, यह अंग्रेज हिन्दुस्तानियों को नीचा समझता है, हिन्दुस्तानियों से घृणा करता है। कुछ थोडी देर पहले ही कप्टेन साडस ने उससे कहा था—डर्टी निगर!'

अनादिकाल से यह जाति भेद और रंग भेद मानव-समाज में रहे हैं और यह जाति-भेद तथा रंग भेद अमानुषिक अत्याचारों एव हत्याकाण्डों के कारण रहे हैं। हिटलर ने इसी जाति भेद और रंग-भेद का नारा लगाकर अपनी शक्ति प्राप्त की है। यह विश्व युद्ध ही इस जाति भेद के आधार पर लड़ा जा

ता है। आय जाति विश्व की सवश्रेष्ठ और निर्मनित जाति है, हिटलर न हा ता कहा है, और जमन जाति शुद्ध रूप से आय जाति हे। जमन जाति नेतृत्व म ही दुनिया उन्नति कर सकती है, जमनी को हिटलर ने यही न्देश तो दिया है। हिटलर अपनी जाति की श्रेष्ठता पर विश्वास करता । लेकिन अंग्रेज ! यह अपनी जाति की श्रेष्ठता का ढिढोरा भले ही न टे, यह दूसरी जातियों की निकृष्टता की घोषणा तो करता है। 'डर्टी-गर!' यह अंग्रेजो की गाली है। यह नीग्रो, यह इतना निकृष्ट प्राणी है क इससे घृणा की जाए। सैकडो साल तक यह भावना अंग्रेजो मे जमाई ई है। यही नही, हिन्दुस्तान म भी हब्शियो के लिए घृणा भर दी गई है। ह हिन्दुस्तानी भी अपने को हब्शियो से श्रेष्ठ समझता है। साथ ही अंग्रेजो ो अपने से श्रेष्ठ समझने की और उनसे दबने की प्रवृत्ति भी इस अंग्रेज ने हिन्दुस्तानियो म भर दी है।

अपने को श्रेष्ठ समझना, अपने को हीन समझना ! क्या इस प्रवृत्ति का रूप हमेशा से एक ही रहा है ?

जगतप्रकाश के सामने उसके गाव का, उसके समाज का चित्र उभर आया। यह ब्राह्मण अपने को देवता कहता है, यह क्षत्रिय अपने को राजा कहता है, यह बनिया अपने को धनपति कहता है—और फिर आता है शूद्र, यह अपने को सेवक कहता है, अपने को गुलाम कहता है, अपने को परजा कहता है। यह पतित है, यह कायर है, यह निधन है। बात यही खत्म नही हो जाती, इन शूद्रो के बाद आते है अछूत—धानुक, चमार, पासी। इनसे भी नीचे है चाण्डाल। इन लोगो को छुआ तक नही जाता। ये सब अपनी-अपनी स्थिति से सन्तुष्ट है या सन्तुष्ट रहने को विवश है। इनकी चेतना कुण्ठित कर दी गई है और उस समाज म रग भेद नही है, रग भेद तो विभिन्न देशो के निवासियो म हुआ करता है वहा जाति भेद है।

इस विभेद का स्रोत कहा है ? जगतप्रकाश के सामने यह प्रश्न था। जगतप्रकाश को लगा कि इस समस्त विभेद का स्रोत मनुष्य की सामर्थ्य, सक्षमता शारीरिक एव बौद्धिक बल म है। जो शक्तिशाली और समर्थ है वह श्रेष्ठ है, जो निर्बल और असमर्थ है वह पतित है।

जगतप्रकाश को इस तरह विचारो मे डूबा हुआ देखकर सम्भवत

देनी चाहिए और इसीलिए मैं फौज मे भर्ती हुआ हूँ।"

बात ने अब नया रंग ले लिया था, बख्तावरसिंह बोल उठा, "लेकिन लफ्टण्ट साहेब! यह जमनी आसानी से हारने वाला नही है। जमनो को देखत ही इन अंग्रेजो की पतलून खराब हो जाती है। तब्रूक की लडाई मे जमना की बहादुरी देखकर दंग रह जाना पडा। हमारी फौज के मुकाबले आधी फौज थी जमनो की और जो हमारी लाइन को चीरकर बढे जमन लोग, तो बस हम लोगो को भागते ही बना। जमना का भी बडा नुकसान हुआ होगा, लेकिन जैसे जान की कोई परवाह नही है उन लोगो को।"

दोनो फिर चुप हो गए। चन्द्रमा अब पूर्वी क्षितिज पर उग आया था, आधा और धुंधला-सा। ये लोग करीब दस मील का चक्कर लगा चुके थे, दोनो चल रहे थे। बख्तावरसिंह ने कहा, "लफ्टण्ट साहब, एक बज रहा है, अब हम लोगो को लौटना चाहिए।"

"पन्द्रहवी प्लाटून के आदमी नही दिखे कही।" जगतप्रकाश बोला।

"वे लोग दक्खिन की तरफ से चले गए होंगे। इस वक्त वे लोग आराम से पैर फैलाए सो रहे होगे अपने खेमो मे। लेकिन लफ्टैण्ट साहब! ये अंग्रेज साले हैं बडे हरामजादे! अच्छा हो जो ये इस जंग म हारे, देश को गुलामी से छुटकारा तो मिले। वह तो मेरी पन्द्रह साल की नौकरी है इस फौज म। जान देन के लिए यहा आने के सिवा कोई चारा नही था। आप कह सकते हैं कि जमनी बडा जालिम है, लेकिन अंग्रेज कम ज़ालिम कब है? ज़ुल्म के बल पर ही तो गुलामी कराई जाती है। मुझे तो महात्मा गाधी की बात ठीक लगती है कि इस युद्ध म हिन्दुस्तानियो को कोई भाग लेना ही नही चाहिए, ये दोनो आपस मे लडे और मरे।"

"नही जमादार बख्तावरसिंह, ऐसी बात मन मे आनी ही नही चाहिए। यह अकेले अंग्रेज़ो के हारने जीतने का सवाल नही है।"

"आप पढे लिखे आदमी है लफ्टैण्ट साहब और मैं बुद्धिहीन हूँ। लेकिन मैं असली सिपाही खानदान का आदमी हूँ, जिसका नमक खाया है, उसकी नमकहरामी नही करूँगा। आप निसाखातिर रहिये, नही तो मैने इन हराम-जाद साडस का बहुत पहले गोली मार दी होती।" बख्तावरसिंह के स्वर मे क्रोध से भरी एक प्रकार की घुटन और विवशता थी।

कही बडी भयानक घृणा है कप्टेन साडस के प्रति इस जमादार ब
सिंह के अन्दर । जगतप्रकाश न कुछ रहकर पूछा, "क्या जमादार सा
बडे नाराज हो इस कैप्टेन साडस से ।"

"लफ्टैण्ट साहेब ! यह बडा कमीना आदमी है । तब्रूक म इसने
दस्ती सौ हिदुस्तानी जवाना की टुकडी कटवा दी थी जबकि [illegible]
आडर हो चुका था उसमे मेरा सगा भाई हवलदार भीमसिंह मारा [illegible]
था । वाद म यह हँसकर बोला था कि पाँच जमन मारे गए यह क्या कम है।
सौ हिदुस्तानिया की जान की कीमत क्या है ? चवालीस करोड हिदु[illegible]
निया म कुल सौ ही तो खत्म हुए । तबीयत हुई कि उसी वक्त इसका का[illegible]
तमाम कर दू लेकिन फिर वही अपनी खानदानी परम्परा मेरी बाधा
गई । अफसर अफसर है, उस पर हाथ नही उठाया जा सकता ।"

जगतप्रकाश का मन भारी हो गया, हिदुस्तानी सेना से अग्रेजा[illegible]
विशेष सहायता नही मिल सकेगी । अन्दर-ही-अन्दर एक तरह का वि[illegible]
जाग रहा है हिदुस्तानी सना म । यह विद्रोह सैद्धान्तिक नहा है, यह वि[illegible]
भावनात्मक भी नही है, यह विद्रोह केवल रागात्मक है । इस विद्रोह को कैसे
रोका जा सकता है उसकी समझ म नही आ रहा था ।

तभी उससे करीब एक फर्लांग की दूरी पर एक गोला फटा
दूसरा फिर तीसरा । जमना की गोलाबारी शुरू हो गई थी । ब[illegible]
बख्तावरसिंह ने कहा 'लफ्टण्ट साहब जल्दी वापस लौटिए, दुश्मन ह[illegible]
करने वाला है और शायद उसने हमले के लिए यह बीच का हिस्सा चु[illegible]
जहाँ हम हैं ।' और दबी जबान म उसने ब्रिटिश कमान को गाली दे[illegible]
हरामजादा न जाने कब यहाँ पूरी तौर से मुरचे भी नहीं बि[illegible]
उत्तर म जहाँ अग्रेजी फौज का जमाव है वहाँ पूरी तौर से मुरचें बि[illegible]
हैं लेकिन म भी न्यूजीलैण्ड के डिवीजन ने मुरचें बिछा रखा है ।'

रेगिस्तान का सारा सन्नाटा गायब हो गया था । [illegible]
आवाज गूज रही थी और जब दूर म टकरा [illegible]
सुनाई पड़ रही थी । जमादार बख्तावरसिंह [illegible]
"लेकिन लफ्टण्ट साहब [illegible] फिर इन जमना [illegible]
हमला किया है, क्योंकि हिदुस्तानी फौज यहा अधिक [illegible] है।' [illegible]

जमना रा एक गाली देकर उसने कहा, "लेकिन ये सूअर के बच्चे हमारी नाकबन्दी नही तोड सकेंगे।" और वह जगतप्रकाश का हाथ पकडकर दौड रहा था पीछे की ओर।

इन लागा के कम्प मे पहुँचने के पहले ही पूरा ब्रिगेड सजग हो गया था। तापा पर लाग पहुँच गए थे। अब जगतप्रकाश का लगा कि कप्टन साडस का नाक अकारण नही था, उसे खतरा का पूर्वाभास हो जाता है। जगत-प्रकाश ने अपन आदमिया के साथ पोजीशन सँभाल ली। और अब उसकी तरफ़ वाली तोप भी आग उगलने लगी थी।

लेकिन इस तरफ की गोलाबारी का जसे कोई असर ही नही पड रहा था। टका की घरघराहट लगातार नजदीक आती जा रही थी और शत्रु की गालाबारी प्रबल होती जा रही थी। बख्तावरसिंह जगतप्रकाश क साथ ही था, वह अपने आदमिया का ऑडर द रहा था। सनिक गाला स ज़ख्मी होकर या मरकर गिर रहे थे। जमन टका को रोकने के लिए इधर टक नही थे, हवाई जहाज नही थे, सुरग नहीं थी। केवल पैदल सना और तोपो मे यह हमला नही रोका जा सकता था।

कप्टेन साडस जगतप्रकाश के पास आया उसने पास खडे हुए बख्तावर-सिंह से कहा, "घबराना नही, उत्तर और दक्खिन मे हमारी बख्तरबन्द फौज हैं, मै उन्ह खबर करता हूँ, अभी ये जमन कुछ दूर है तुम इन लोगा को हर हाल्त म रोके रहना।" वह एक मोटर पर बैठकर दक्खिन की ओर चल पडा।

जमना के टक अब निकट आ गए थे। चादनी क धुधले प्रकाश म जगतप्रकाश का लग रहा था कि आग उगलते हुए दैत्य बढे चले आ रहे हैं। बख्तावरसिंह ने जगतप्रकाश से कहा, ' इन जमना को रोक सकना गैर-मुम-किन है। वह हरामजादा फिर हम हिन्दुस्तानिया को कटवाने के लिए छोड-कर भाग गया है। देखिय, ब्रिगड की और कम्पनिया हट रही है।" उसने अपने आदमिया को उत्तर की ओर हटने का ऑर्डर दिया।

जगतप्रकाश ने जीवन मे प्रथम बार युद्ध देखा था और उस युद्ध मे वह भाग भी ले रहा था। लाग मर रह थे, चिल्ला रहे थे, कराह रहे थे, भाग रहे थ, गालियाँ दे रहे थे। रेडक्रॉस वाले ज़ख्मियो को उठा रहे थे, लेकिन

उस गोलावारी म अस्पताल भी नही वच सकते थे। इन [illegible]
उठाने की ज़िम्मेदारी जमन रेडक्रॉस की होगी। वे लोग भी [illegible]
लगे।

अव कुल चालीस आदमी वच रहे थे इन लोगा के साथ। इनसे
एक मील की दूरी पर जर्मन टैंक पूरव की ओर वढ़ रहे थे। पास में
लारिया खडी थी। वख़्तावरसिंह ने अपने आदमिया को लारियों पर
उत्तर-पूरव की तरफ वढने का ऑडर दिया। जगतप्रकाश को उसने [illegible]
वगल मे वैठा लिया।

"हम लोग कहा चल रहे हैं?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"भगवान् जाने कहा लेकिन मर्सामित्रू की तरफ नही। थोड़ी दूर [illegible]
के वाद ये टैंक मर्सामित्रूह की तरफ घूम पडेंगे और हम लोग घिर जाएँगे।
पूरब की तरफ हमे चलना है, जहां तक इन लारिया का पेट्रोल हमें ले जाए।
जो मर गए उनकी फिक्र हमे नही करनी, जो जिन्दा हैं उन्हें बचाना है।"
दोनो गाडियाँ अव दौड रही थी पूरव की ओर।

पूरव म अव प्रकाश की रेखा फूट रही थी। सत्ताईस जून की [illegible]
सुवह कितनी भयावनी थी! दूर से गोला की आवाज़ें लगातार आ रही
थी। जमन सेना और जमन टैंको ने अपना एक और घातक हमला [illegible]
दिया था। इस खुले हुए रेगिस्तान म छिपने और बचने का कोई स्थान
नही। वख़्तावरसिंह कह रहा था, 'तब्रूक की क़िलेवन्दी भी नहीं बचा सकी
थी हम लोगा को। तीस हजार आदमिया को जमना ने गिरफ़्तार किया
या जवकि शायद जमन फौज म मुश्किल से तीस-चालीस हजार आदमी
रहे हागे। सारा जगी सामान जमना के हाथ लग गया और यहाँ मर्सा-
मत्रूह म तो कोई क़िलेवन्दी नहीं। सिवा मौत के कोई चारा नहीं, [illegible]
बचाव यहाँ किया नही जा सकता, या फिर दुश्मनों के हाथों गिरफ़्तार हो
जाना। यह गिरफ्तारी मौत से भी वदतर है।"

गाडियाँ मर्सामित्रू से अलामीन जाने वाली सड़क पर चल रही थी।
एकाएक वख़्तावरसिंह न गाड़ियाँ रुकवा दीं। उसने बयानाकुल [illegible]
पूरव की ओर देखा। पूरव मे क़रीब चार-पाँच मील की दूरी पर [illegible]
बन्द गाड़िया और टैंका का जमाव नजर आया। उसने कहा, "आगे के [illegible]

शायद जमन पहुँच गए है, इधर वढना खतरनाक है। गाडिया दक्षिण ओर मोड दो।"

दक्षिण की ओर रेतीली ज़मीन, गाडिया दौडने के स्थान पर घिसट ी थी। आठ-दस मील दक्षिण की ओर चलने के वाद गाडिया फिर उत्तर-व की ओर मोड दी गई। इस समय तक सूय की किरणा म काफी गरमी ाई थी। जगतप्रकाश ने घडी देखी, आठ वज रह थे। जगतप्रकाश ने ा, "क्या जमादार साहेव, आपको कोई अन्दाजा है कि हम लोग हा हैं?"

"कसे बताऊँ लफ्टैण्ट साहेब, लेकिन हम लोग शायद अलामीन से प द्रह-म मील की दूरी पर है। हम लोग टैका की मार स ता वाहर हो गए है, व सिर्फ़ कुदरत की मार है, क्याकि गाडिया आगे वढने से इन्कार कर रही। मालूम होता है पट्रोल खत्म हो गया है।"

दोना गाडिया कुछ दूर चलकर रुक गईं, वास्तव मे गाडिया का पेट्रोल त्म हो चुका था।

सव लोग गाडिया से उतर पड। सूय की किरणो मे काफी प्रखरता आ ई थी, आसमान पर धुध छान लगी थी। जमादार वख्तावरसिंह ने कहा, सबसे पहले हम सडक पर पहुँचना होगा। यहाँ इस रेत के अ धड म चलना र मुमकिन होगा।" और उन लोगो न उत्तर की ओर चलना आरम्भ कर या। करीब दो घण्टे ये लोग चलते रहे और अन्त मे सडक पर पहुँच ए।

जगतप्रकाश अनुभव कर रहा था कि वह वेतरह थक गया है। पिछली ात स चलना—चलते रहना—चलने के सिवा और कुछ नही। और यह लना मौत से भागने के लिए था। अभी उसे और चलना है। कितना लना है, उसे यह ज्ञात नहीं था। लेकिन वह यह जानता था कि वह मौत मुह से बच आया है। उसने वख्तावरसिंह से पूछा, "जमादार साहेब, व कितना और चलना है? इस सफर का क्या कोई अन्त भी है?"

वख्तावरसिंह मुसकराया, "हरेक सफर का कहा-न कही अन्त हाता है फ्टैण्ट साहब! हिम्मत न हारिए। यह सडक समुद्र के किनारे किनारे ल रही है।" और उसने फिर दूरवीन आखा से लगाकर देखा, "वह दूर

पर अलामीन का कस्वा दिखाई देता है जहाँ हमारी फ़ौजों का [illegible] है। नौ-दस मील से ज्यादा दूर नही है। बस बढते चलिए, दोपहर तक लोग वहा पहुँच जाएँगे।"

"थोडी देर यहा सुस्ता लिया जाए, हम लोग बेतहाशा थक गए," जगतप्रकाश ने कहा।

"ऐसी गलती न कर बैठिएगा लफ्टैण्ट साहेब! अगर हम लोग [illegible] के लिए रुके तो फिर एक कदम आगे न बढ़ पाएँगे।"

बख्तावरसिंह की बात मानने के सिवा और कोई चारा नहीं था जगतप्रकाश के लिए। सडक पर पीछे से अनगिनती लारियाँ आ रही थीं जिनमे सामान लदा था आदमी लदे थे। आगे भी कई लारियाँ गई [illegible] सब लारियाँ ठसाठस भरी हुई थी कोई लारी रुकी नही, किसी आदमी ने इन लोगो से कुछ पूछा नही। करीब एक बजे दोपहर को ये लोग अला-मीन पहुँचे।

अलामीन! यहाँ ब्रिटिश सेनाओ को रुकना होगा, हर हालत में। अलामीन से पीछे हटने के अर्थ होंगे इजिप्ट को अपने हाथ से खो देना, भूमध्य सागर को अपने हाथ से खो देना, पश्चिमी एशिया को अपने हाथ से खो देना। सब तरफ से फौजें अलामीन में एकत्रित हो रही थीं। पूरब से नई फौजें आ रही थी पश्चिम से पराजित फौजें लौट रही थीं। और [illegible] ब्रिटन की सब फौजें मसामत्रूह से निकल आई थी जर्मनों के घेरे को [illegible] कर, आशा के सर्वथा विपरीत।

तेजी के साथ सेना का पुनर्गठन हुआ, लडाई का नया दौर आरम्भ होने वाला था। लेकिन जगतप्रकाश का साथी कप्टेन साइरस बच निकला गया था, अपनी कम्पनी को मौत के मुह में छोडकर भागने पर दण्ड मिलने के स्थान पर उसे पुरस्कार मिला था।

जुलाई का महीना आरम्भ हो गया था और अफ्रीका का युद्ध एक तरह से रुक गया था। जगतप्रकाश के मन पर मर्सामत्रूह की पराजय का बुरा असर पड़ा था, उसकी टुकड़ी के न जाने कितने लोग मर गए थे, उन लोगों को मरते उसने देखा था। अपने घरों से दूर, अपने देश से दूर, इस मरु प्रदेश में आकर वे मरे थे, अनजान लोगो की [illegible]

ाकार होकर, अपने को बचाने का सघष भी तो वह नही कर सके थे। ह क्यो? क्या उन लोगो मे इस युद्ध मे विजय अथवा पराजय की कोई ावना भी थी?

दूर से युद्ध की कल्पना करना एक बात है, युद्ध मे आकर लडना, मारना ौर मरना दूसरी बात है। युद्ध-क्षेत्र मे सैनिक के सामने केवल एक लक्ष्य हता है—शत्रु-पक्ष के आदमी की जान लेना। लेकिन यह शत्रु-पक्ष! यह शत्रु-क्ष कौन है? बख्तावरसिंह एक दिन बात करते-करते उससे एक दिन पूछ ठा था, "लफ्टैण्ट साहेब! यह जमन आपका दुश्मन क्यो है और यह अग्रेज ापका दोस्त क्यो है? जमना को हम जानते नही, अग्रेजो को हम जानते । अग्रेज हम गुलाम बनाए हुए हैं—यह सत्य है जिससे इन्कार नही किया ा सकता, लेकिन यह जमन हमे गुलाम बनाएगा—इसका क्या सबूत है मारे पास? जमनी की दुश्मनी अग्रेजो के साथ है, हम हिन्दुस्तानियो के ाथ उसकी दुश्मनी का कोई सवाल नही उठता। कभी-कभी मन मे उठता कि कुछ ग़लत काम कर रहे है हम लोग।"

जगतप्रकाश ने बख्तावरसिंह की बात सुनी तो, लेकिन उस बात को ह समझा नही, उस समय वह अपने विचारो मे डूबा हुआ था। यह मृत्यु ा ताण्डव, यह चीख-कराह, य गोलो के धमाके! इन सबके बीच म वह ा आ पडा? महात्मा गाधी ने जो अहिंसा का सन्देश दिया है, उस सन्देश वही कोइ सत्य है—उसे लग रहा था। हिंसा विनाश है, निमाण नही है। ह विनाश के प्रागण मे आ पडा है या यह कहना अधिक ठीक होगा कि ह इस विनाश के प्रागण मे खुद अपनी इच्छा से आया है। शायद इसलिए ा बिना विनाश के निर्माण सम्भव नही है। मानव समाज म नई परम्पराओ ा अगर निर्माण करना है तो उसकी प्राचीन दूषित और विकृत परम्पराओ ो नष्ट भी करना होगा। इन परम्पराओ को नष्ट करने के लिए इन रम्पराओ के पोषक और प्रतिपादक तत्त्वो को भी नष्ट करना होगा। न्ही तत्त्वो के विनाश का नाम युद्ध है। लेकिन—लेकिन—क्या यह विनाश नितान्त आवश्यक है?

मनुष्य को मारने की क्या आवश्यकता? वह तो नश्वर है, वह खुद र जाएगा। और सृष्टि की जीवन-अवधि के हिसाब से मनुष्य की आयु ही

कितनी है ? नही, मनुष्य को मारने से काम नही चलेगा, मनुष्य परम्पराओ को नष्ट किया जाना चाहिए। हरेक मनुष्य परम्पराएँ लेकर जन्म लेता है, परम्पराएँ छोडकर मरता है। मनुष्य परम्परा द्वारा निर्मित है, लेकिन यह परम्परा भी तो मनुष्य द्वारा निर्मित है। मनुष्य के ज्ञान, उसके विश्वासो और उसके अनुभवो ने परम्परा को जन्म दिया है। ज्ञान, विश्वास और अनुभव—ये तीनो आधारभूत रूप मे मनुष्य की भावना की उपज है। भावना मारी नही जाती, वह केवल बदली जा सकती है। विकृतियो को केवल हृदय-परिवर्तन द्वारा नष्ट किया जा सकता है—महात्मा गाधी का यह मत है। इस रक्त पात और नर-सहार से तो मनुष्य के अन्दर वाली घृणा उभरती है, उसके अन्दर वाली हिंसा जागती है। मानव-समाज की सारी विकृतिया इसी घृणा और हिंसा की तो उपज है। घृणा और हिंसा से विकृतियो को नही दबाया जा सकता।

इस युद्ध-क्षेत्र मे जगतप्रकाश के मन मे शका के बीज अकुरित हो रहे थे। उसने इस विनाश और रक्त-पात से दूर हिन्दुस्तान मे सद्धान्तिक रूप से जिस घृणा और हिंसा का प्रतिपादन अपनी भावना से प्रेरित बुद्धि के तर्क पर किया था, वह शायद गलत था—उसका वीभत्स और कुत्सित रूप वह देख रहा था।

टैंक, हवाई जहाज, तोपे, मशीनगनें—मनुष्य का विनाश करने वाले ये सामान प्रचुर मात्रा मे अलामीन मे आ रहे थे, और इन सामानो से शत्रु का सहार करने के लिए अनगिनती आदमी दुनिया के विभिन्न भागो से वहाँ भेजे जा रहे थे। इनमे इगलण्ड के निवासी थे, भारत के निवासी थे, आस्ट्रेलिया के निवासी थे, अफ्रीका के निवासी थे। ब्रिटेन अब जर्मनी पर हमला करने की तैयारी कर रहा था। लेकिन मोरचे के उस पार भी इसी तरह की तैयारिया हो रही होगी। उस युद्ध-क्षेत्र मे आदर्श नही थे, सिद्धान्त नहा थे—केवल घृणा थी।

एक अजीब तरह की उदासी उस जगतप्रकाश के मन मे उत्पन्न हो रही हो। क्या फ़ौज मे आकर उसने गलती की है ?

ब्रिटिश सेना जर्मन सेना के हमले की प्रतीक्षा कर रही थी, और जर्मन सेना भी ब्रिटिश सेना के हमले की प्रतीक्षा कर रही थी। ब्रिटिश

ा पक्ष युद्ध के लिए पूरी तौर से तैयार न हो तब हमला करने वाला ही नुकसान म रहेगा, जगतप्रकाश इतना जानता था। लेकिन यह प्रतीक्षा जगतप्रकाश को अखर रही थी। शत्रुआ की सेना की टोह लगाने के लिए दोनो ही पक्ष की टुकडिया इन दोनो सेनाओ के बीच वाले अनधिकत क्षेत्र मे दूर-दूर तक घुम जाया करती थी। कभी कभी इन दो टुकडियो मे मुठभेड भी हो जाती थी, गोलिया चलती थी और इक्के-दुक्के लोग मरते थे या घायल होते थे। जगतप्रकाश को भी इन टुकडियो के साथ जाना पडता था।

दस जुलाई को गश्त लगाने के लिए जगतप्रकाश की बारी थी। करीब चार बजे शाम को वह अपनी टुकडी के साथ निकल पडा। इस दिन मेजर सान्डस भी इस टुकडी के साथ हो लिया। जगतप्रकाश म उसने कहा, "चौदह या पन्द्रह जुलाई तक हम लोग खद दुश्मन पर हमला करने वाले हं। मुझसे इस भूभाग का निरीक्षण करने को कहा गया है, क्योकि तुम लोगा पर भरोसा नही किया जा सकता। मेरी समझ म नही आता कि हिन्दुस्तानी सेना को इस युद्ध म बुलाया क्या गया ? इस सेना से सहायता की जगह बाधा ही मिलनी है।"

जगतप्रकाश को मेजर साडस की यह कड़वी बात अखर गई, उसने तीखे स्वर म कहा, "आप हेडक्वाटर का सलाह दीजिय कि हिन्दुस्तानी सेना यहाँ स हटा दी जाए।"

मेजर साडस एक विद्रूप हँसी हँस पडा, "तव जमन सेनाओ का निशाना कौन बनेगा ? युद्ध मे मारने वालो के साथ मरने वाले भी तो होने चाहिएँ। मैं ग़लत तो नही कह रहा ?"

जगतप्रकाश ने मेजर साडस की इस बात का कोई उत्तर नही दिया। वह आदमी जगतप्रकाश को अपमानित करने पर तुला हुआ था और उसके मन म प्रश्न उठा कि क्या वह इस आदमी स अपमानित होने के लिए आया है ?

दोनो चुपचाप चले जा रहे थे। कुछ दूर चलने के बाद मेजर साडस ने जगतप्रकाश से कहा, 'तुम अपनी टुकडी के साथ चलो, मैं अकेला निरीक्षण करूँगा। तुम लोगो से मुझे कोई मदद नही मिलेगी।" और एक कुटिल हँसी के साथ वह उत्तर-पश्चिम की ओर चलने लगा।

भारतीय सेना का कैम्प अलामीन के दक्षिण म करीब आठ मील
दूरी पर था। दूर तक वीरान मरुस्थल, जहा केवल झाडियाँ थी, छोटी-
कुरूप और झुलसी हुई सी, या फिर वीरान रेतीली ज़मीन। जगतप्रकाश
अब उत्तर की ओर देखा जिधर साडस गया था। साडस ने कुछ दूर चल
फिर अपनी दिशा बदल दी थी, अब वह करीब पाच सौ गज की दूरी
जगतप्रकाश की टुकडी के समाना तर चल रहा था। जगतप्रकाश की टुकडी
करीब सात-आठ मील तक अनधिकृत प्रदेश म घुस गई, शत्रु का कहीं
पता नही था। उसके सामने कँटीली झाडियो का फिर एक झुण्ड था और
उन झाडियो के झुण्ड के बाद फिर वही रेतीला भूखण्ड। जगतप्रकाश
टुकडी दक्षिण की ओर मुड गई, और वह रुककर अपने सामने वाले प्रदेश
को देखने लगा।

उस समय सूर्यास्त हो रहा था। सूरज का लाल गोला सामने रेगिस्तान
के क्षितिज मे गडता चला जा रहा था—निष्प्रभ, निस्तेज ! कितना सुन्दर
दृश्य था वह, और तभी उसे पाच सौ गज की दूरी पर, जहाँ वह झाडियों
का झुण्ड था एक छाया सी दिखी। जगतप्रकाश ने अपनी राइफल सम्हाल
ली और वह धीरे धीरे उस ओर बढने लगा। उसने अब स्पष्ट देखा कि
छायाकृति किसी जमन सैनिक की है जिसके हाथ म एक राइफल है और
वह मेजर साडस पर निशाना लगा रहा है जो उन झाडियो से करीब
गज़ की दूरी पर पहुँच गया है और जो अपने खतरे से बिलकुल बेखबर है।

जगतप्रकाश ने उस सैनिक पर निशाना साधा जो मेजर साडस पर
निशाना साध रहा था। और इसके पहले कि वह मेजर साडस पर गोली
चलाए, जगतप्रकाश ने अपनी राइफल का घोडा दबा दिया। राइफल उस
सैनिक के हाथ से छूट गई और वह जमीन पर गिर पडा। जगतप्रकाश ने
देखा कि मेजर साडस पीछे मुडकर बेतहाशा भाग रहा है।

जगतप्रकाश उस सैनिक की ओर दौडा। उसके पीछे-पीछे जमादार
बख्तावरसिंह के साथ दो जवान भी दौड रहे थे। जिस समय य लोग उस
स्थान पर पहुँचे जहाँ वह जमन सैनिक गिरा था, वह सनिक पीडा से छटपटा
रहा था। गोली उसके पट को चीरती हुई निकल गई थी। उसकी चेतना
अभी लुप्त नही हुई थी, उसने आँखें खोलकर जमन भाषा में कहा, "धन्यवाद"

जगतप्रकाश ने अपनी पानी की बोतल उसके हाठो से लगा दी। पानी पीकर उसने फिर जर्मन भाषा मे कहा, "तुम—हिन्दुस्तानी—" और तभी उसका सिर लुढक गया और वह निश्चेष्ट हो गया। जमादार बख्तावरसिंह ने सिर हिलाकर कहा, "गया—ल्फ्टैण्ट साहब! लेकिन इसकी जेब की तलाशी ले ली जाए।"

तलाशी लेने पर सिवा एक डायरी के उसकी जेब से और कुछ नही निकला। जगतप्रकाश जर्मन भाषा जानता था, डायरी उसने अपनी जेब मे रख ली, बख्तावरसिंह से उसने कहा, "शायद यह डायरी कुछ काम की साबित हो। लेकिन यह किसी गुप्तचर की डायरी नही है, यह इसकी अपनी निजी डायरी है, इसे पढकर ही मैं इसे हेडक्वार्टर मे दूगा जमादार साहब! तुम इसका जिक्र अभी मत करना।"

"बडे मौके से देख लिया इसे आपने ल्फ्टैण्ट साहेब, वरना यह आपको खत्म कर देता। अब आगे से कभी अपनी टुकडी से अलग न होना ल्फ्टैण्ट साहेब!" जमादार बख्तावरसिंह बोला।

जगतप्रकाश मुसकराया, "मुझे नही, मेजर साडस को खत्म कर देता। यह मेजर साडस पर निशाना साध रहा था। गोली की आवाज सुनकर मेजर साडस बेतहाशा भागा—कायर कही का!"

"तो इसे मारकर आपने उस हरामजादे साडस की जान बचाई ल्फ्टण्ट साहेब? यह तो अच्छा नही किया आपने।" बख्तावरसिंह ने कहा।

"मैंने वह किया जो एक सैनिक को करना चाहिए था। वह अच्छा था, या बुरा था—यह मैं नही जानता।"

"शक्ल-सूरत से यह शरीफ आदमी दिखता है।" जमादार बख्तावरसिंह बोला, फिर उसने अपने आदमियो को एक गढा खोदने का हुक्म देते हुए कहा "इसकी लाश को यहा दफन कर दिया जाए, इसानियत का तकाजा यही है।"

और उसकी लाश को दफन करके सब लोग लौट पडे।

लेकिन उस जर्मन सैनिक की शक्ल जगतप्रकाश की आखो के आगे बार बार नाच उठती थी। वह एक दुबला-पतला आदमी था—कुछ थोडा-सा कोमल। उसका चेहरा सुन्दर था और उसकी उम्र करीब पच्चीस छब्बीस

वप की रही होगी। जमनो के चेहरे पर जिस बबरता और दृढ़ता की
की कल्पना जगतप्रकाश ने की थी, उसके स्थान पर जगतप्रकाश को उ
पर एक करुण निरीहता मिली थी। वह चलता जाता था और उ
सैनिक की डायरी के पन्नो को उलटता-पुलटता जाता था। वह डायरी
के रूप मे थी जो उस सैनिक ने अपनी पत्नी के नाम लिखन चाहे थे,
जिन्हे वह सेंशरशिप के कारण अपनी पत्नी के पास भेज नही सकता था।
जगतप्रकाश को जमन भापा का अच्छा ज्ञान हो गया था, उस सैनिक के
अन्तिम पत्र से वह उलझ गया। और उसे लगा कि उस जमन के शब्द
की भाति उसके मस्तिष्क पर प्रहार कर रहे हैं—"मेरी जूडिथ! हम यहाँ
रेगिस्तान मे रुक गए हैं। हमारे सामने मिस्र का हरा भरा देश है जहाँ
लोग सुख-शान्ति से रह रह है। लेकिन उनकी सुख-शान्ति कितन दिन की!
जल्दी ही हम मिस्र पर प्रहार करेंगे और हम उस भूमि को वीरान कर देंगे।
हम बरबादी और तबाही के रूप मे आगे बढ़ रहे हैं।

हम उन व्यक्तिया के प्राण ले रहे हैं जिन्हाने हमारा कोई अहित नहीं
किया, जिन्हे हमने पहले कभी देसा नही, जिन्हे हम जानते नही। हमें
युद्ध म जबदस्ती ढकेल दिया गया है। हम मारना नही चाहते, हम
नही चाहते। मेरे चारा ओर खून-ही-खून है—मृत्यु और विनाश!
यही सब फैलाने के लिए भगवान् ने हमे जन्म दिया है? मेरा मन
है इस सबसे, लेकिन इससे निकल सकना सम्भव नहीं। भानना
युद्ध का विरोध करना देश द्रोह है। वीरता और देश भक्ति
किसी शक्तिशाली व्यक्तित्व के आरोपण के लिए मारो और मरो।

'मेरी जूडिथ! जिन्दगी प्रेम है, सद्भावना है, ममता है। लेकिन
सब मरे लिए वजित है, मैं कितना अभागा हूँ! दशनशास्त्र के
हैसियत स मैंने नीटशे के सिद्धान्ता को सत्य समझकर प्रतिपादित किया
था, लेकिन इस युद्ध-क्षेत्र म मुझे पता चला कि नीट्शे विनाश
दूत है।

कहाँ हैं व मेर प्यारे विद्यार्थी जो मेरा आदर करते थ, कहाँ
मेरे सगे-सम्बन्धी जो मरे सुख-दुःख म शामिल होते थ, कहाँ हो तुम
जिसकी ममता से मैं विभोर हो जाता था, कहाँ है मेरा

किलकारियाँ मेरे हृदय मे अपूर्व उल्लास जागृत करती थी। तुम सबसे मिलने का मैं कितना व्यग्र हूँ, मेरे प्राण छटपटा रहे हैं।

"शायद एक महीना और लगेगा। हम अभी इजिप्ट की सीमा पर रुक गए हैं। इजिप्ट पर विजय प्राप्त करके मैं लौटूगा एक लम्बी छुट्टी पर। जर्मन जाति विजय प्राप्त करेगी, लेकिन इस विजय की बहुत बडी कीमत चुकानी पड रही है "

अचकचाकर जगतप्रकाश ने वह डायरी बन्द कर दी, और फिर उसने वह डायरी जमीन पर फेंक दी। कुछ देर तक वह जमीन पर पडी उस डायरी को देखता रहा, और फिर उसकी आखो म आसू आ गए। उसे लगा कि उसने कोई बहुत बडा पाप कर डाला है। उसने झुककर वह रतीली जमीन खादी और उसने उस डायरी को ज़मीन मे गाड दिया। इसके बाद धीमे कदमो मे वह चलने लगा। उसने उस जर्मन सैनिक को युद्ध म नही मारा था। उसने उस जर्मन सैनिक की हत्या की थी।

उसने एक नेक, ईमानदार, निरीह आदमी की हत्या कर डाली थी, उस बदमाश, बर्बर और पाजी साइस की जान बचाने के लिए। यह उसने क्या कर डाला? जमादार बख्तावरसिंह उससे कुछ दूर आगे चल रहा था, चुपचाप, उदास। जमादार बख्तावरसिंह की नजरो म वह अपराधी था साइस की जान बचाने के अपराध म, लेकिन अब वह अपनी ही नजर म अपराधी बन गया था उस जर्मन सैनिक की हत्या के अपराध म।

उसका कम्प अभी दो मील की दूरी पर था, और उसे अनुभव हो रहा था कि उसके पैरो म ताकत नही रह गई है। उसका दिमाग जैसे फटा जा रहा है। वह अब अपनी राइफल का सहारा लेकर चल रहा था, लेकिन भला राइफल के सहारे कही चला जा सकता है? वह बैठ गया।

जमादार बख्तावरसिंह बीच-बीच मे घूमकर जगतप्रकाश को देखता जाता था। उसने जगतप्रकाश को बैठते हुए देख लिया। जगतप्रकाश के पास आकर कहा, "क्या बात है लफ्टैण्ट साहेब! तबीयत तो ठीक है बैठ क्या गए?"

"बडी कमज़ोरी लग रही है जमादार साहेब!" कमज़ोर स्वर मे जगत प्रकाश बोला, "लगता है यहा से एक कदम नही चल पाऊँगा।"

वख्तावरसिंह ने सहारा देकर जगतप्रकाश को उठाया, "आपका बुखार सा मालूम होता है लफ्टैण्ट साहेब! हिम्मत कीजिए, मैं आपका देता हूँ। वह अपना कैम्प दिखाई दे रहा है।"

अपने अन्दर की समस्त शक्तिया को बटारकर जगतप्रकाश बख्तावर के सहारे चलने लगा। कुछ दूर चलने के बाद उसने कहा, "जमादार जानते हो, मैंने उस जमन की डायरी पढी! वह बडा नेकदिल आदमी अपनी डायरी मे उसने अपनी बीवी को समय-समय पर पत्र लिखे थ, भावना से भरपूर! वह बडा पवित्र आदमी था, आपने उसे दफन पुण्य का काम किया। मैंने उसकी डायरी भी दफन कर दी। लेकिन नजर से उसने मुझे देखा था वह मै भूल नही पा रहा। उसने मुझसे था—तुम हिन्दुस्तानी! जैसे उसे ताज्जुब हो रहा हो कि हिन्दुस्तानी हुए मैंने उस क्या मारा?"

वख्तावरसिंह कुछ सोचकर बोला, "उसने आपको भी शायद देखा और उस हरामजादे साडस को भी देखा था। आप पर उसने गोली चलाई, वह साडस का मारना चाहता था। आप खुले म थे, साडस झाडिया की आड मे था।"

'हे भगवान्!" जगतप्रकाश कराह उठा, "अगर वह चाहता तो मुझे मार सकता था। लेकिन उसने मेरे प्राण छोड दिए और मैंने उसे डाला। बहुत बडा पाप कर डाला मैंने।"

'जो कुछ हुआ उसे भूल जाइए लफ्टैण्ट साहब! यह जग का मैदान है जहा धाधु-ध गालिया चलानी पडती हैं। जो सोचता-समझता है अपनी जान स हाथ धोना पडता है। उस जमन ने सोचा-समझा था और उसे अपनी जान से हाथ धोना पडा।"

जगतप्रकाश न वख्तावरसिंह की बात का कोई जवाब नही दिया और वख्तावरसिंह कहता जा रहा था, "आप बच गए लफ्टैण्ट साहेब! भगवान को धन्यवाद दीजिए। लो अब हम अपने कैम्प म पहुँच रहे हैं, आप आराम कीजिए। कल सुबह तक आपकी तबीयत ठीक हो जाएगी। यह लडाई बस की नही है। आप पढे-लिखे आदमी है, आपका हृदय कोमल है। सबका आदी होने मे आपको समय लगेगा।"

जिस समय जगतप्रकाश अपने कैम्प म पहुँचा, वह अपने विस्तर पर
।-सा गिर पडा। पता नही उसे नीद थी या वेहोशी, रात-भर वह भया-
पने देखता रहा। सुबह जब उसकी नीद खुली, या उसकी वेहोशी टूटी,
अनुभव किया कि उमसे खडा नही हुआ जा रहा है। घिसटता हुआ
ख्तावरसिंह के कैम्प म गया।

वख्तावरसिंह उसे देखते ही चौक पडा, "अरे लफ्टण्ट साहब! यह
को क्या हो गया?" और उसने जगतप्रकाश का हाथ छूकर कहा,
पको तो बुखार है—कल शाम की ही तरह। मैं आपके इलाज का इन्त-
करता हूँ।"

आधे घण्टे के अन्दर ही वह पीछे की ओर वाले अस्पताल मे भेज दिया
, अध चेतनावस्था म।

उसके कम्प के पीछे करीब एक मील की दूरी पर भारतीय सना का
ताल था। जगतप्रकाश के साथ जमादार वख्तावरसिंह भी गया था।
टर नियोगी से वख्तावरसिंह न सब बाते बतलाइ, और डॉक्टर नियोगी
र हिलाकर कहा, "इन्हे गहरा मानसिक धक्का लगा है। चौबीस घण्ट
शायद इनकी हालत सुधर जाए, नही तो इन्हे अलेक्जेंड्रिया भेजना
।"

शाम तक जगतप्रकाश बेहोश-सा लेटा रहा, करीब पाच बजे शाम को
की आख खुली। वह कहा है, उसकी समझ मे नही आ रहा था। उसके
स-पास का वातावरण नितान्त अपरिचित था। कुछ लोग कैम्प खाटो पर
थे। दूर पर खडी एक नस किसी मरीज को दवा पिला रही थी।
डी देर म जगतप्रकाश की समझ म आया कि वह अस्पताल म है।

वह अस्पताल म है! क्या वह जख्मी हो गया है, क्या कोई लडाई हुई
पिछले दिन? उसके शरीर मे किसी तरह की पीडा नही थी, उसने अपन
थ-पर हिलाए, सब कुछ ठीक था। वह उठकर बैठ गया। नस को बुलाकर
सने पूछा कि उस यहाँ क्यो लाया गया?

'आज सुबह आपके साथी आपको यहा लाए थे—आपको बुखार था।"

जगतप्रकाश की चेतना धीरे-धीर लौट रही थी। उस याद हो आया
सुबह जब वह सोकर उठा था, उसके पैरा म बेहद कमजोरी थी और उसस

चला नहीं जा रहा था। लेकिन अब उसका
"अब मेरी तबीअत ठीक है, मैं अब कैम्प में जा
नर्स बोली, "डॉक्टर से पूछ लीजिए, मैं उन्हें
नर्स के जाते ही जगतप्रकाश की विचारधारा
की घटनाएँ उसके मानस-पटल पर उभर आई, और उस
जमन सैनिक का चित्र जिसे उसने मारा था, और साथ
चित्र जिसे उसने बेतहाशा भागते देखा था। और फिर उस
का अन्तिम भाग। उसका एक-एक शब्द उसके दिमाग़ पर
कुल पन्द्रह मिनट लगे नर्स को डॉक्टर को साथ लेकर लौटने
पन्द्रह मिनट उसे एक युग के समान लगे। डॉक्टर नियोगी ने
प्रकाश से कहा, "क्या तुम बिलकुल ठीक अनुभव कर रहे हो,
जाना चाहते हो ?"

मन-ही-मन जगतप्रकाश को बड़ी राहत मिली नर्स और
जाने से। उसने खड़े होते हुए कहा, "हाँ, मेरी तबीअत अब
अपने कैम्प में वापस लौटना चाहता हूँ।"

डॉक्टर नियोगी मुसकराया, "अच्छी बात है, तुम जा
वह अस्पताल के खेमे में पड़े एक स्टूल पर बैठ गया।

जगतप्रकाश खेमे के बाहर निकला। खेमे से क़रीब दस क़द
पर वह गया होगा कि वह रुक गया। थोड़ी देर तक वह खड़ा
फिर वह धीरे-धीरे चलकर अस्पताल के खेमे में आ गया,
मैं वापस नहीं जा सकता, मुझसे चला नहीं जाता, खड़े होने में
तकलीफ होती है।" और वह कैम्प-खाट पर बैठ गया।

"मैं यही समझता था कि तुम नहीं जा सकोगे। तुम्हें
ज़रूरत है, और इस आराम के साथ दवा की। तुम लेट जाओ"

बड़े उदास स्वर में जगतप्रकाश ने पूछा, "मुझे कौन-सा
किसी तरह की शारीरिक पीड़ा मैं अनुभव नहीं कर रहा
है।"

"तुम्हें किसी तरह का शारीरिक रोग नहीं है,
गई है किसी मानसिक धक्के से। सच पूछो तो इस

कोई इलाज नहीं है। इस बार सर्विस मे आने के पहले मैं नब्ज़ का डॉक्टर —यह तुम्हारा सौभाग्य है। मैं समझता हूँ कि एक हफ्ते मे मैं तुम्हारे रो की कमजोरी दूर कर दूगा, यानी एक हफ्ता तुम्हे इस अस्पताल म रहना डगा। इसके बाद फिर देखूगा क्या किया जाए। फिर उसने नम से कहा, मस मण्डल! लेफ्टिनेण्ट जगतप्रकाश की देख-भाल की जिम्मेदारी तुम —इन्हे पूरा आराम चाहिए। इन्हे दवा की एक गोली खिला दो।" और ह बाहर चला गया।

मिस मण्डल ने जगतप्रकाश को ट्रैंक्विलाइज़र की एक गोली खिला दी, फर वह जगतप्रकाश की खाट के पास एक स्टूल डालकर बैठ गई। उसने हा, 'मैं यहीं आपके पास बैठी हूँ, अगर आपको किसी चीज की ावश्यकता हो तो मुझे बतला दीजिएगा।"

मिस मण्डल की वाणी म कुछ ऐसी मिठास थी, जिसने उसके शरीर मे क पुलक पैदा कर दी। उसने मिस मण्डल को गौर से देखा सत्ताईस-ट्ठाईस साल की एक साँवली-सी युवती, मासल शरीर, मुख गोल, आख ड़ी-बड़ी। जगतप्रकाश ने उससे पूछा, 'आप बगाली है?"

"हा, बगाली अछूत! लेकिन अब अछूत नहीं रह गई, क्योंकि मैं ईसाई न गई हूँ।"

आप ईसाई बनी हैं या आपके पिता ईसाई बन ये?" जगतप्रकाश ने छा।

'मैं ईसाई बनी हूँ। मेरे पिता अब भी हिन्दू है और चटगाव मे वकालत रते हैं। उनके पास अच्छी सम्पत्ति है और वह बहुत बडे नेता है। बगाल ी मिनिस्टी म वह किसी-न किसी दिन आ जाएँगे। उन्होने मुझे ईसाई बनने स बहुत रोका, लेकिन मैं नहीं मानी। जिस धम मे मनुष्य का अपमान हो, मनुष्य लाछित समझा जाए, वह धम दूषित है।"

जगतप्रकाश की आखे झप रही थी, लेकिन उसे मिस मण्डल की आवाज बड़ी प्यारी लग रही थी। एक अरसा हो गया था उसे स्त्री-कण्ठ सुने हुए। उसने कहा, 'आपकी कहानी बडी दिलचस्प होगी। अगर आप अनुचित न समझे तो आप मुझे अपनी कहानी सुना दे।'

मिस मण्डल मुसकराई, "जो सत्य है उसे सुनाना अनुचित क्या होगा?

मैं आपको अपनी कहानी सुना दूगी, और उसके बदले में मैं आपकी कहानी भी सुनूँगी। लेकिन आपको नींद आ रही है, आप आराम से सोइए।"

जगतप्रकाश मिस मण्डल की बात का अर्थ नहीं समझ पाया, वह केवल शब्दों का संगीत ही सुन रहा था, और उन संगीत के बाद से उसकी आँखें झपी जा रही थीं। उसे यह भी पता नहीं चला कि मिस मण्डल कब उसके सिरहाने से उठकर चली गई।

दूसरे दिन सुबह जगतप्रकाश की नींद बहुत जल्दी खुल गई। इसके उसे अपने चारों ओर वाले वातावरण को पहचानने में देर नहीं लगी। और तभी मिस मण्डल का चित्र उसकी आँखों के आगे उभर आया। उसने चारों ओर अपनी नजर दौड़ाई मिस मण्डल वहाँ नहीं थी। उससे कुछ दूर पर चालीस-पैंतालीस वर्ष की एक अधेड़ नर्स एक मेल नर्स की सहायता से किसी घायल सैनिक की मरहम-पट्टी कर रही थी। जगतप्रकाश उठकर बिस्तर पर बैठ गया।

मरहम-पट्टी करके उस नर्स ने अपने चारों ओर देखा, फिर वह जगत-प्रकाश के पास आई, "आप सो चुके। आपकी तबीअत तो कुछ ठीक मालूम देती है।" उसने मेल नर्स को बुलाया, "चिनैया! तुम इन्हें थोड़ा-सा घुमा फिरा लाओ—एक फर्लांग से ज्यादा नहीं।"

"क्या मैं इतना चल सकूँगा?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"अगर आप इच्छा करेंगे। नहीं तो यह चिनैया तो आपके साथ है, यह आपको सहारा दे देगा गोकि आपको सहारे की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी।" कुछ कठोर और निस्पृह स्वर में वह बोला।

"डॉक्टर कहाँ हैं?" जगतप्रकाश ने उठते हुए पूछा।

"कौन—मेजर नियोगी! वह सर्जिकल कैम्प में हैं, रात से ही आपरेशन कर रहे हैं। वहाँ बिस्तरों की बड़ी कमी है, इसलिए वहाँ के कम घायल, जो करीब-करीब अच्छे हो गए हैं, इस कैम्प में भेजे जा रहे हैं।"

जगतप्रकाश मिस मण्डल के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन वह रुक गया। चिनैया के साथ वह चला गया। आज उसके पैरों में अपेक्षाकृत अधिक ताकत थी। जब वह वापस लौटा, मेजर नियोगी आ गए थे और एक कोने में एक आरामकुर्सी पर बैठे हुए विश्राम कर रहे थे। जा...

पैरों की आहट पाकर उन्होंने आँख खोली, अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे उन्होंने कहा, "कहो, आज तबीअत कैसी है ?"

"कल के मुक़ाबले आज मैं बहुत अच्छा हूँ। लेकिन " जगतप्रकाश अपनी बात कहते-कहते रुक गया।

"स्वाभाविक रूप से अच्छा होने में तुम्हें एक हफ्ते से कम नही लगेगा, मुमकिन है एक पखवारा लग जाए। नाश्ता करके तुम चुपचाप लेट जाओ और सोने की कोशिश करो।" और मेजर नियोगी ने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

दोपहर के समय जब जगतप्रकाश की नींद टूटी, उसने देखा कि सुबह वाली नर्स चली गई है और मिस मण्डल आ गई है। मिस मण्डल ने जगतप्रकाश को खाना खिलाया। इसके बाद उसने कहा, 'मेरी ड्यूटी बारह बजे दोपहर से रात के बारह बजे तक है। लेकिन आज तो आपकी तबीअत काफी अच्छी दीखती है। डाक्टर एक घण्टा हुआ अलेक्ज़ेण्ड्रिया चले गए हैं। शाम तक आ जाएंगे।"

जगतप्रकाश बोला, "बैठिए न, आप बड़ी अच्छी हैं। ऐसा दिखता है कि आपके साथ इस अस्पताल मे एक हफ्ता बिताना पड़ेगा। लेकिन यह यह क्या हो रहा है ?"

दूर से गोलों की आवाज आने लगी थी—लगातार। जगतप्रकाश के मन में फिर एक तरह की घबराहट जाग उठी। उसने पूछा, ये शेलिंग की आवाज़ कैसी ? क्या जर्मनों ने अपना हमला आरम्भ कर दिया है ?"

"नहीं, ये हमारी तोपें शेलिंग कर रही हैं। खबर यह है कि अब हम लोगों का हमला करना है। जर्मनों के हमले की प्रतीक्षा करते-करते हम लोग थक गए हैं।" मिस मण्डल के मुख पर एक मुसकराहट थी, "यह सनाटनी ! इस सनाटनी को तो टूटना ही चाहिए।" और अब वह हँस पड़ी।

जगतप्रकाश को आश्चर्य हुआ, "आप हँस रही हैं ! मौत का फिर से ताण्डव होने वाला है—और आप प्रसन्न हैं।"

"इसमें रोने या उदास होने से भी तो कोई लाभ नहीं होने का। और मौत तो ज़िन्दगी के साथ लगी हुई है, उससे डर कैसा ?"

"न जाने क्या मेरा जी घबरा रहा है, ये गोलों की आवाज़ मुझे बर्दाश्त

नही हो रही है।" जगतप्रकाश बोला।

मिस मण्डल ने ट्रैंक्विलाइजर की एक गोली जगतप्रकाश को दि

और वह फिर जगतप्रकाश के सिरहाने बैठ गई। जगतप्रकाश को ल

था कि गोलो की आवाजें अब दूर से आने लगी है, और धीरे धीरे व

वी आवाजे नगाडो पर चोटो मे बदल रही है—अपना एक सा

हुए।

रात के समय जब जगतप्रकाश की चेतना वापस लौटी, उस

अस्पताल के कैम्प मे कुछ चहल-पहल है। जगतप्रकाश कुछ देर तक

स यह सब देखता रहा, फिर उसने पुकारा, "नस।"

मिस मण्डल उसके पास आई, "आप जाग गए?"

"हा बडी अच्छी नीद आई। लेकिन यह सब क्या हो रहा है?"

'मेजर नियोगी ने अलेक्जेण्ड्रिया से वापस आकर बताया है कि

फौजो को कल सुबह आगे बढने का हुक्म हुआ है। परसो सुबह तक

अस्पताल को भी फौजो के पीछे-पीछे बढना होगा।"

इसी समय मेजर नियोगी जगतप्रकाश के पास आकर खडे हो

जगतप्रकाश ने मेजर नियोगी से पूछा, 'डॉक्टर! क्या हमारी

अब आफेंसिव ले रही है?"

"हा दोस्त! कल से हमारी फौजो का आगे बढना आरम्भ हो

और परसो अस्पताल का यह खीमा उखड जाएगा, फौजो के पीछे

बढने के लिए। साथ ही कल तुम्हे पीछे जाना है अलेक्जेण्डिया के अ

मे। वहा से शायद एक हफ्ते बाद तुम्हे हिन्दुस्तान भेज दिया जाए,

मैंने रिपोर्ट दे दी है कि तुम जग मे लडने के काबिल नहीं रहे। और

एक हफ्ता बाद तुम बम्बई पहुँच जाओगे। बम्बई मे डाक्टर

स्पेशलिस्ट हैं, वे मेरे गुरु भी रह चुके हैं। उनके नाम मैं तुम्हे

दिये देता हूँ, उनके इलाज से तुम एकदम ठीक हो जाओगे।"

लेकिन डाक्टर! मैं नही जाना चाहता। क्या आप मुझे

कर सकते कि मैं इस युद्ध मे भाग लूं?"

सिर हिलाते हुए मेजर नियोगी ने कहा, "नही दोस्त, तुम युद्ध

सोचना छोड दो। युद्ध की बर्बरता तुम्हे बर्दाश्त नही होगी, तुम्हे

ापस लौटना चाहिए।" और डाक्टर नियोगी वहा से चले गए।
जगतप्रकाश अकेला रह गया और वह सोचने लगा, आखिर हिन्दुस्तान र वह करेगा क्या? उसकी इच्छा हिन्दुस्तान लौटने की ज़रा भी हा रही थी। लेकिन यहा युद्ध क्षेत्र मे भी वह क्या कर सकेगा? का की यह मरुभूमि उसके लिए कितनी अभिशप्त साबित हुई! वह यहाँ र अच्छा नही हो सकेगा, उसे हिन्दुस्तान लौटना चाहिए। उसने फौज ग्ती होकर गल्ती की थी, उसने अफ्रीका आकर गलती की थी और ने उस जर्मन सैनिक को गोली मारकर गल्ती की थी। उफ वह जर्मन क! जगतप्रकाश तो हिन्दुस्तान लौट रहा है, टूटा, बीमार जैसा भी लेकिन वह शरीफ और नेक जर्मन सैनिक! उसके प्राण तो नहीं लौटाए सकते।

लेकिन किसके प्राण लौटाए जा सकते है? जो पैदा हुआ है वह मरेगा। जगतप्रकाश को भी एक-न एक दिन मरना है। फिर सोच किस बात? जगतप्रकाश का मन हल्का हो गया था, लेकिन उसे लग रहा था कि के अन्दर की थकान बढती जा रही है। उसने अपनी आखे बन्द कर ली, केन वह अपने कान तो नही बन्द कर सकता था। दूर से गोलो की आवाजे रही थी। कल सुबह से टैंक, मशीनगनें और राइफलें लिये हुए ब्रिटिश सेना गे बढ़ेगी, ऊपर हवाई जहाज होंगे। और दूसरी ओर जर्मन सेनाएँ होंगी, पने पूरे सामान के साथ। यह युद्ध हफ्तो चलेगा, महीनो चलेगा, शायद वर्षों के। जगतप्रकाश को भी कल किसी समय इस युद्ध-क्षेत्र से वापस लौटना गा।

जगतप्रकाश को उस रात खाना खाने मे भी कोई रुचि नही लगी।

सुबह वह एम्बुलेंस कार पर बैठकर रवाना हो गया। चलने के समय ह बख्तावरसिंह से नही मिल पाया। ब्रिटिश सेनाओ ने हमला आरम्भ कर दया था। बख्तावरसिंह भी आगे बढ रहा होगा, मरने के लिए—मारने के लिए। पता नही, कब फिर बख्तावरसिंह से मिलना होगा।

११

जगतप्रकाश अस्पताल मे डिस्चार्ज हो गया था, वह फौज से डिस्चार्ज गया था। वह अब बम्बई म था और उसे वहा अपना इलाज करवाना था।

अलेक्जेण्ड्रिया के अस्पताल मे उसे कुल दो दिन रखा गया। डाक्टर ने रिपोट दे दी कि वह सेना के अयोग्य है। और उसे सेना से छुट्टी मिल गई। चाथे दिन घायला को लेकर एक जहाज हिंदुस्तान जा रहा था, जगतप्रकाश के लिए उस जहाज म जाने का प्रबध कर दिया गया। उस जहाज को बम्बई पहुँचने म कुल पाच दिन लगे।

जिस समय वह जहाज से बम्बई म उतरा, उसके परा म लडखडाहट थी, और उससे भी अधिक उसके मन म लडखडाहट थी। एक बार उसने अपन चारा ओर देखा, डेक पर काफी अधिक भीड थी, लाग आ रहे थे, जा रह थे, वैसी ही चहल पहल जैसी वह बम्बई से जाने के समय देख गया था, मानो विश्व-व्यापी नर-सहार का बम्बई पर कोई असर ही न पडा हो।

डेकयाड मे निकलकर वह विक्टोरिया टर्मिनस पहुचा, इलाहाबाद रवाना होने के लिए। दोपहर के बारह बज रह थ। वहाँ जाकर उसे पता चला कि इलाहाबाद वाली गाडी रात को नौ बजे छूटगी। और तब उसके मन म आया कि वह बीमार है, उसे अपना इलाज करवाना है। इलाज का विशेषज्ञ बम्बई मे ही रहता है। मेजर नियोगी का विशेषज्ञ के नाम पत्र उसक पास था। मेजर नियोगी ने उसे विश्वास दिलाया था कि डाक्टर के इलाज से वह बिल्कुल ठीक हो जाएगा और स्टेशन से निकलकर वह टैक्सी पर बैठ गया।

"कहाँ चलना है साब ?" टैक्सी वाले ने पूछा।

"किसी अच्छे और सस्ते होटल म ।" ये शब्द उसके होंठों पर आते-
रुक गए, एकाएक कुलसुम का चेहरा उसकी नज़र के आगे उभर आया।
हिन्दुस्तान से बम्बई होते हुए जाने के समय वह कुलसुम से नहीं मिला था।
बम्बई में वह उस बार करीब छ घण्टे ठहरा था, लेकिन कुलसुम स मिलने
की इच्छा ही नही हुई थी उसे। और इस बार कुलसुम का चेहरा अपनी
उस मुसकराहट के साथ जब उसके सामने आया, उसने कह दिया, "वाडन
रोड।"

जिस समय उसकी टक्सी कुलसुम के बंगले पर पहुँची, परवेज लच
लेने के बाद मिल जाने के लिए कार पर बठ रहा था। जगतप्रकाश को
देखते ही वह चिल्ला उठा, 'अरे तुम, मिस्टर जगतप्रकाश! ऐ कुलसुम!"
उसने ज़ोर स आवाज लगाई, 'देखो तो कौन आया है!" और फिर जगत-
प्रकाश के पास आकर उसने पूछा, "तुम कहाँ से आ रहे हो? बडे सुस्त
नज़र आ रहे हो? तबीअत तो ठीक है?"

कमज़ोर स्वर म जगतप्रकाश ने कहा, "मैं इजिप्ट स आ रहा हूँ—अभी
घण्टा-डेढ़ घण्टा पहले जहाज़ से उतरा हूँ।"

'हम लोगों को तुम्हारी कोई खबर नहीं मिली—कुलसुम को बडी
फ़िक्र थी। तो तुम इजिप्ट म थे।" परवेज़ बोला। इस समय तक कुलसुम
बरामदे म आ गई थी। जगतप्रकाश को देखते ही वह चीख-सी पडी, "अरे
जगत! मेरे जगत तुम! यह तुम्हारी क्या हालत है?' और वह बरामदे
से दौड़ती हुई जगतप्रकाश के पास आकर खडी हो गई।

"मैं बीमार हूँ।" जगतप्रकाश ने लडखडाते हुए स्वर मे कहा। उसे लग
रहा था कि वह गिर पडेगा। कुलसुम उसे सहारा देकर बरामदे मे ले आई
और नौकर ने उसका असबाब टैक्सी से उठाकर कमरे मे रख दिया। कुलसुम
ने टैक्सी का किराया अदा करके उसे रवाना कर दिया। फिर वह परवेज़ से
बोली, 'डाक्टर पटेल को फोन कर दो!"

"नहीं, डॉक्टर पटेल को बुलाने की ज़रूरत नहीं है, मुझे अपनी बीमारी
का पता है। अब मैं ठीक हूँ। कल सुबह मैं उन्हें फोन करके दिखा लूंगा,
इजिप्ट के डाक्टर मेजर नियोगी ने उनके नाम मुझे एक पत्र दे दिया है।
फिर वह परवेज़ की ओर घूमा 'मेरी फ़िक्र मत करो। जहाज़ के लम्बे सफर की

वजह से मैं वेहद थक गया हूँ, वस इतनी-सी वात है। अब तुम अपने कम
पर जाओ।"

"हा, ऑफिस पहुँचने के पहले मुझे मिल नम्बर दो म जाना हगा,
गोकि कायदे के मुताविक वहा इस वक्त कुलसुम को जाना चाहिए। मरे
जिम्मे तो मिल नम्बर एक है, जहाँ मैं सुवह हो आया हूँ।" परवेज मुस्कराया,
"लेकिन यह कुल्सुम हमेशा टाल जाती है। अर वावा—यह महात्मा गा
और उनकी काग्रेस के ब्रिटिश सरकार वाले झगडे मे हम लाग क्या पड?
भला महात्मा गावी के कहने भर से तो ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तान स थाे
ही चली जाएगी। और खास तौर से जब जापान सिर पर आकर वठ द्व
है। अच्छा—अब लौटकर म आपसे मिलूगा।" और परवेज यह कहकर
चला गया।

परवेज वे जाने के वाद कुल्सुम ने जगतप्रकाश को उसके कमरे म ले
जाकर कहा "तुमने शायद अभी खाना नही खाया होगा। तो पहले तुम
खाना खा लो, तब वाते हागी।"

"अरे मैं तो भूल ही गया था कि मैंने अभी तक खाना नहा खाना है।
जब जहाज से मैं उतरा था तब भूख लगी थी। इस जहाज क सफ़र म
आराम मिला है उससे तबीअत अब काफी सँभल गइ है। साचा था
किसी होटल म चलकर पहले खाना खाऊँ फिर वहाँ कमरा तलाश करू।
फिर न जाने क्या सोचकर मैंने टैक्सी वाले से तुम्हारे यहाँ ले चलने का
दिया। इस वीच मे भूख भी गायव हो गई।"

"तो तुम किसी होटल म रहना चाहते थे, यहाँ वम्बई म मेरे रहते
हुए।" कुल्सुम के मुख पर उदासी का भाव आ गया, "कौन-सा दु
मेरा जो तुम मुझे अपन से दूर समझने लगे हो जगत?"

"दूर नही हो पाता हूँ, यही तो विडम्बना है, नहीं तो इतने से दूर
यहाँ वरवस खिचा न चला आता। गालिब सत्य यह है कि हम
दूसरे से वहुत दूर रह है—हमेशा से, और यह दूरी हट नहा सकती।"
जगतप्रकाश के अन्दर कुछ टूट-सा रहा था, और जगतप्रकाश अन्दर
उस टूटते हुए को वचाने का प्रयत्न करते हुए भी वचा न पा रहा
कहता हूँ कुल्सुम, मेरे आगे वाला प्रकाश धुधला पड गया है। ...

रहा है कुछ भी, रास्ता नही दीख रहा है।"

एकाएक कुलसुम ने दोना हाथ जगतप्रकाश के गले मे डाल दिए और उसने जगतप्रकाश के मस्तक को चूम लिया। फिर अलग होकर उसने कहा, "तुम बीमार हो जगत, इसलिए तुम्हें ऐसा लग रहा है। तुम यहा रहकर अपना इलाज करा लो। डाक्टर मोदी इस वक्त तो मेडिकल कालेज मे होंगे, शाम के वक्त मैं उनस एपॉइटमेट ले लूगी। अभी तुम खाना खाकर सो जाओ।"

जगतप्रकाश को अपने अन्दर एक प्रकार का परिवतन होता हुआ लग रहा था। उसे अनुभव हो रहा था कि दुनिया मे आत्मीयता है, प्रेम है, सहानुभूति है। अब वह हिंसा रक्त पात और घृणा की दुनिया से निकलकर आत्मीयता के वातावरण मे आ गया है। उसे उस दिन भाजन म स्वाद आया, उन बादलो से छन छनकर आन वाली धूप मे जीवन की उष्णता मिली, उसे अपने सामन लहराते हुए समुद्र मे एक गहनता मिली। खाना खाकर वह लेट गया और उसे नीद आ गई।

शाम के समय जब उसकी नीद खुली उसका मन हल्का था। वर्षों बाद वह सुख की नीद सोया था। नौकर चाय उसके कमरे मे ले आया, 'बेबी मेम सा'ब सेठ के साथ डॉक्टर के यहा गई ह, कहा है कि छ बजे तक वापस आएँगी। आप चाय पी लीजिए।"

जगतप्रकाश ने घडी देखी, पाँच बजे थे। एक उल्लास से भरा आलस वह अपने अन्दर अनुभव कर रहा था—और वह फिर लेट गया। कुछ देर बाद उसे बाहर परवेज की आवाज सुनाई पडी, "अरे मिस्टर जगतप्रकाश! देखो, कौन आया है?"

जगतप्रकाश को उठना पडा। बरामदे म निकलकर उसने देखा कि जमील बठा हुआ है। जगतप्रकाश के बरामदे मे आते ही जमील उठ खडा हुआ, "तो बरखुरदार, तुम इजिप्ट से वापस आ गए। मिल म परवेज साहब ने बतलाया कि तुम अफ्रीका म बीमार पड़ गए थे। तो मैं इनके साथ चला आया।"

एक और आत्मीय मिल गया—जगतप्रकाश को लगा। बैठते हुए उसने कहा, "हाँ, रक्त-पात, मृत्यु और हत्या के उस वातावरण से निकलकर आ

रहा हूँ जमील साहब, लेकिन मुझे इस बात का है कि यहाँ से ...करता
रहा हूँ। रहा ... में रहा जा रहा कि दुनिया में यह सब क्या हो रहा है
और क्या हो रहा है?"

जमील ने एक ठंडी साँस ली, "ठीक कहते हो बरखुरदार, लेकिन यह
बुरी है। यह सब होता ही है, क्योंकि इन्सान में गुनाहों का वास बचपन
गया है। अब तबीयत कैसी है?"

"आज दोपहर तक तो बड़ी खराब थी।" जगतप्रकाश बोला, "...
मैं बम्बई में जहाज से उतरा हूँ। आज कौन-सी तारीख है? सुनता
और तारीख तक का पता नहीं।"

"आज बाईस जुलाई है।" जमील बोला, "ताज्जुब की बात है कि
तुम्हें दिन और तारीख का भी पता नहीं है।"

"हाँ, दिन और तारीख जानने की इच्छा ही नहीं हुई मुझे जल्दबाज़ी
से यहाँ तक के सफर में। मेरे लिए तो वक्त बीत रहा था—सुबह दोपहर
शाम और रात। सिर्फ एक उदासी छाई हुई थी मेरे ऊपर, सिवा उस
के और कुछ नहीं। जब बम्बई में उतरा, वह उदासी बसी-की-बसी थी। उस
समय में यह तय नहीं आ रहा था कि मुझे कहाँ जाना है, कहाँ ठहरना है।
आदत से मजबूर होकर मैंने टैक्सी वाले को कुल्सुम का पता बतला दिया
और मैं यहाँ आ गया। लेकिन दोपहर के बाद तबीयत ठीक होनी शुरू
गई, और इस वक्त तो मुझे यह भी नहीं मालूम हो रहा है कि मैं बना
हूँ।"

परवेज बड़े गौर से जगतप्रकाश की बात सुन रहा था। अब वह बो
"मैं बतलाऊँ। अपना मुल्क ही सबसे प्यारा होता है। वह अपना है
पराया मुल्क, वहाँ दोस्त—दुश्मन—सभी पराए आदमी—सब
पराया। और फिर वहाँ काम भी—मारना-मरना। यह मारना मरना है
एक नशा होता है मिस्टर जगतप्रकाश—लेकिन तुम उस नशे के आदी
हो सकते।"

"शायद तुम ठीक कहते हो।" जगतप्रकाश ने परवेज की ओर दे
"वह एक ऐसा नशा है जिसमें गुनाह गुनाह नहीं रह जाता, इन्सान इ
नहीं रह जाता। पता नहीं, वह नशा है या पागलपन है।"

"बिल्कुल ठीक।" परवेज़ ने ताली बजाते हुए कहा, "मैं भी यही कहना चाहता था, लेकिन ठीक तौर से मैं कह नहीं पाया।"

इसी समय कुलसुम की कार फाटक के अन्दर घुसी और परवेज़ का उत्साह और भी बढ़ गया। घड़ी देखते हुए उसने कहा, "ठीक छ बजे हैं और कुलसुम डैडी को लेकर डॉक्टर के यहां से वापस आ गई।" वह कार की ओर बढ़ा और जमशेद कावसजी को सहारा देकर वह बरामदे में ले आया। जमशेद कावसजी कुरसी पर बैठ गए। वह काफी प्रसन्न दीख रहे थे। परवेज़ ने पूछा, "क्या डैडी! डॉक्टर पटेल ने आपको देख लिया? क्या कहा उन्होंने?"

जमशेद के उत्तर देने के पहले ही कुलसुम तेज आवाज में बोल उठी, "डॉक्टर पटेल का दिमाग खराब हो गया है। वह बोले कि डैडी अब बिलकुल ठीक है, अपना काम-काज सँभालने लगें—सिर्फ ज्यादा मेहनत न करें। यह तो ठीक है, लेकिन उन्होंने डैडी को दारू पीने की इजाजत दे दी है। यह भी कोई बात है! हार्ट ट्रबुल के मरीज को दारू एकदम मना होती है।"

जमशेद कावसजी के मुख पर संतोष का हल्का उल्लास था। वह बोले, "मैं बिलकुल ठीक हूँ। क्या परवेज़, डाक्टर पटेल ज्यादा जानते हैं कि यह कुलसुम ज्यादा जानती है। रास्ते भर डॉक्टर पटेल को भला-बुरा कहती रही। उनके सामने इसकी ज़बान नहीं खुलती, पीठ-पीछे उनकी बुराई करती है और मुझसे लड़ती है। समझाते क्यों नहीं इसे?"

परवेज़ कुछ उलझन में पड़ गया, लेकिन जल्दी ही वह उलझन से निकल आया, 'डैडी, आप कुल्सुम की बात भी मानिए और डाक्टर पटेल की बात भी मानिए। यानी आप ह्विस्की पीना बन्द कर दीजिए। अब आप बियर लीजिए, कभी-कभी आप वरमूथ और जिन ले लिया कीजिए।"

जमशेद कावसजी ने बिगड़कर कहा, "क्या बकवास करते हो!" और कुलसुम की ओर घूमकर वह बोले, 'वह स्काच की बोतल मँगवाओ।" और फिर बिना कुलसुम के प्रतिवाद की प्रतीक्षा करते हुए उन्होंने जगतप्रकाश से कहा, 'सुना है तुम इजिप्ट में बीमार पड़ गए थे। अब तो ब्रिटिश फौजें जर्मनों को पीछे धकेल रही हैं। ऐसे मौके पर तुम्हें जंग के मोरचे से यहां लौटना पड़ा। मुझे तुम्हारे साथ पूरी हमदर्दी है।"

जगतप्रकाश को लगा ।... ती चेतना धीरे धीरे लौट रही है। स
से वह अलेक्जेण्ड्रिया के अस्पताल में भरती हुआ था तब से उसे दुनिया
कोई खबर नहीं मिली थी। उसे याद आ गया कि उसके अलवर्ट ड्राम
चलने के पहले ब्रिटिश सेनाओं को आफेंसिव लेने का आर्डर मिल गया था।
उसके अदर वाला कौतूहल जागा। वह बोला, "अच्छा, जब मैं चला था
हमारी फौजों ने हमला शुरू कर दिया था। तो उन्हें सफलता मिल रही है।
कहा तक हमारी सेनाएँ बढ़ीं ?"

"इजिप्ट की सरहद से जर्मन फौजें निकाल बाहर कर दी गई हैं।"
जमशेद कावसजी ने हँसते हुए कहा, "लड़ाई ने अब एक नया मोड़ लिया
है। रूस में जर्मन फौजों का आगे बढ़ना रुक गया है, अफ्रीका में जर्मन फौजें
को पीछे हटना पड़ रहा है। यह लड़ाई शायद चार-पाँच साल और चले,
लेकिन आखिर में फतह ब्रिटेन को ही मिलेगी।"

"जी, यकीन के साथ कुछ भी नहीं कहा जा सकता।" यह आवाज
जमील की थी, "खतरा तो अब हमारे मुल्क को पैदा हो गया है। जापान
बर्मा तक आ गई है—और इसके बाद है हिंदुस्तान।"

"इसके बाद है हिंदुस्तान।' जगतप्रकाश ने जमील के शब्द दुहराए,
और इसी समय जगतप्रकाश को याद हो आया कि वह बीमार है और उसे
डॉक्टर मोदी का इलाज कराना है। उसने कुलसुम की ओर देखा, "डॉक्टर
मोदी तो अब मेडिकल कालेज से आ गए होंगे—उनसे शाम के वक्त के
लिए एप्वाइंटमेण्ट लेने को कहा था तुमने।"

"अरे हाँ, मैं तो भूल ही गई थी।" कुलसुम ने अब जमशेद कावसजी की
ओर देखा, "डैडी। आप डॉक्टर मोदी को फोन कर दीजिए—वे
आप अच्छी तरह जानते होंगे।"

टेलीफोन मँगवाकर जमशेद कावसजी ने डॉक्टर मोदी का नम्बर
मिलाया। दूसरे दिन सुबह नौ बजे का समय दिया डॉक्टर मोदी ने।
फोन की बात समाप्त करके जमशेद कावसजी उठ खड़े हुए, "अच्छा,
अब मैं अपने कमरे में जा रहा हूँ। और परवेज, बैरा से कहना
साढ़े या साढ़े आठ बजे मेरे कमरे में भेज देना।"

आसमान पर गहरे बादल घिर आए और पानी बरसने लगा। ...

जमशेद कावसजी के पीछे-पीछे चला गया था, कुलसुम जगतप्रकाश और जमील के साथ बैठी रही। बौछार अब बरामदे मे आने लगी थी। कुलसुम ने भी उठते हुए कहा, "कामरेड जमीलअहमद! खाना आप यहा खाइएगा। आप जगतप्रकाश के साथ कमरे म बैठिए मै डैडी के पास जाती हूँ, वह परवेज के बस के नही। वह ज्यादा पी जाएँगे तो कल सुबह फिर उनकी तबीअत खराब हो जाएगी। ममी तो गठिया के रोग से बरसो से बिस्तर पकडे हुए हैं, मुझे ही सँभालना पडता है डैडी का।"

कुल्सुम के जाने के बाद जगतप्रकाश जमील के साथ अपने कमरे मे चला गया। दोनो बैठ गए, फिर जगतप्रकाश ने पूछा, "क्या जमील काका! यहाँ देश मे राजनीति कौन-सा मोड ले रही है? मै तो पिछले चार-पाच महीनो से बिलकुल बे-खबर रहा हू इस सबसे।"

"बतलाऊँगा बरखुरदार सब-कुछ, लेकिन पहले मै तुम्हारी बीमारी की बाबत जानना चाहता हूँ। अफ्रीका म ब्रिटिश फौजो की शिकस्त की खबरें मिलती रही, बडी फिक्र लगी हुई थी तुम्हारी। इस बीच दीदी से भी दो-चार बार मिलना हुआ, अजीब औरत है वह भी। ठीक फौलाद की तरह, माथे पर किसी तरह की शिकन नही। उन्हे यकीन है कि तुम पर आच नहा आ सकती उनके जीते-जी। उन्हीकी बात ठीक निकली, तुम सही-सलामत वापस आ गए।"

जगतप्रकाश के मुख पर एक फीकी मुसकान आई, "हा, सही सलामत लौटा हूँ, जहाँ तक शरीर का सम्बन्ध है लेकिन जैसे मेरी आत्मा टूट गई है। यह रक्त-पात, यह घृणा, यह हिंसा, यह मृत्यु की उपासना।' और जगतप्रकाश न अफ्रीका मे जो कुछ हुआ था, वह सब विस्तार के साथ जमील को बतला दिया।

जमील ने ध्यान से जगतप्रकाश की बातें सुनी, फिर उसने कहा, "तुम्हारे दिल की बात समझ रहा हूँ बरखुरदार, लेकिन यह क्या भूल जाते हो कि यह जग और बरबादी उतनी ही स्वाभाविक है जितना यह अमनो-अमान। तवारीख के पन्ने इसके गवाह है। जिदगी के साथ मौत जुडी हुई है। तुमने उस जर्मन को मारकर कोई गुनाह नही किया, वह तो होना ही था, क्योकि उसकी मौत आ गई थी। उसे भूल जाओ। अभी तो और बहुत-कुछ देखना है, शायद

जमील बोला, "नर्वस ब्रेकडाउन भी भला कोई मर्ज है! डटकर खाओ, पियो और खुश रहो। किसी तरह का फिक्र नहीं करना चाहिए। यही इसका इलाज है।"

खाना खाने के बाद कुलसुम ने जमील को अपनी मोटर पर उनके भिजवा दिया।

सुबह नौ बजे जगतप्रकाश डॉक्टर मोदी के चेम्बर में पहुँचा। डॉक्टर मोदी ने जगतप्रकाश को तत्काल बुला लिया।

डॉक्टर मोदी करीब पैंसठ-सत्तर वर्ष के स्वस्थ और हँसमुख आदमी थे। जगतप्रकाश से हाथ मिलाते हुए उन्होंने कहा, "तुम शक्ल से तो बीमार दिखते नहीं—हाँ डाक्टर नियोगी ने तुम्हें मेरे पास भेजा है तो जरूर बीमार होगे। कहाँ है वह आजकल? ब्रिलिएण्ट यंग मैन! भला क्या सूझी जो वह आर्मी में चला गया—वह नर्व्ज का अच्छा सर्जन है! आर्टिस्ट! वह आर्मी में रोज की चीर-फाड़ में फँस गया, भला यह भी कोई बात है!"

जगतप्रकाश को डाक्टर मोदी का व्यक्तित्व आकर्षक दिखा। मेजर नियोगी का पत्र डॉक्टर मोदी को दे दिया। डाक्टर मोदी ने डाक्टर नियोगी का पत्र पढ़कर जगतप्रकाश को गौर से देखा, "अब तुम विस्तार के साथ वे परिस्थितियाँ बतलाओ जिनमें तुम्हें यह नर्वस एटैक हुआ। दिखता है कि यह नर्वस एटैक तुम्हें एकाएक हुआ। कोई बहुत बड़ा शॉक रहा होगा।"

जगतप्रकाश ने विस्तार के साथ मेजर साण्डर्स और उस जर्मन सैनिक की कहानी सुनाकर कहा, "डॉक्टर! उस जर्मन सैनिक की शक्ल मेरे भूलती जिसकी मैंने हत्या कर दी। उसने मुझे नहीं मारा, जबकि वह मार सकता था। वह तो उस मेजर साण्डर्स पर निशाना लगा रहा था।"

"लेकिन इसका क्या सबूत कि उस जर्मन सैनिक ने तुम्हें देखा ही था? उसने शायद मेजर साण्डर्स को पहले देखा था, और उसको मारने की फिक्र में वह इतना डूब गया कि उसने तुम्हारी ओर ध्यान ही न दिया हो। कुछ लोगों का दिमाग इस तरह का होता है कि जिस पर वह एक बार जमा, उसे छोड़कर अन्य चीजों का अस्तित्व ही उसके लिए लुप्त हो गया।

है। खास तौर से पढे-लिखे और दिमागी काम करने वालो मे यह प्रवृत्ति अक्सर मिलती है।"

कुछ सोचकर जगतप्रकाश ने कहा, "हाँ, इस बात की सम्भावना हो सकता है। पढे लिखे लोगो के सम्बन्ध मे आपने जो कहा, वह ठीक है—यह मेरा भी अनुभव है। और वह जर्मन सैनिक भी बौद्धिक प्राणी था, शायद दर्शन शास्त्र का अध्यापक रहा हो, उसकी डायरी मे तो मुझे यही लगा। भावनात्मक और बौद्धिक तत्त्वो का सम्मिश्रण अक्सर मनुष्य को असाधारण बना देता है।"

डाक्टर मोदी हँस पडे, "शाबाश! तुमने बिलकुल ठीक बात कही। तुम भी बौद्धिक आदमी दिखते हो। युद्ध मे जाने के पहले तुम क्या करते थे?"

"मैं प्रयाग विश्वविद्यालय मे लेक्चरर था। इमर्जेंसी कमीशन लेकर मैं युद्ध मे गया था।"

"युद्ध का अनुभव प्राप्त करने—हा हा हा! लेकिन शक्ल से तो तुम कडे दिल वाले और लडाकू आदमी नही दिखते, वरना इतनी साधारण बात पर तुम्हे नर्वस ब्रेकडाउन नही हुआ होता।" और डॉक्टर मोदी ने जगत-प्रकाश के शरीर की परीक्षा आरम्भ कर दी। वह परीक्षा करते जाते थे और कहते जाते थे, "युद्ध के अनुभव का शौक तुम्हे आर्मी मे नही ले गया—यह तय बात है। तुम मुझे सच-सच बताओ कि तुम आर्मी मे क्यो गये, जबकि तुम यूनिवर्सिटी मे पढाने का अच्छा-खासा काम कर रहे थे?"

कुछ हिचकिचाते हुए जगतप्रकाश ने कहा, 'जी, बात यह है कि अगस्त सन १९४१ मे मुझे कम्युनिस्ट होने के नाते गिरफ्तार कर लिया गया था। और देवली कंसट्रेशन कैम्प मे भेज दिया गया था। जनवरी १९४२ मे जब मैं जेल से छूटा तब मेरी जगह दूसरा आदमी अस्थायी तौर से ले लिया गया था। इस बीच रूस पर जर्मनी का हमला हो चुका था और आप जानते ही हैं कि रूस अधमरा हो चुका है। जर्मनी की रूस पर विजय दुनिया के लिए सबसे बडा अभिशाप होगी, लगातार यह बात मेरे दिमाग मे चक्कर काट रही थी और परिस्थितिया कुछ ऐसी आ पडी कि इस बीच मुझे इमर्जेंसी कमीशन भी मिल गया। इसके बाद मैं इजिप्ट मे इण्डियन डिवीजन

की एक ब्रिगेड मे भेज दिया गया।"

"तो तुम कम्युनिस्ट हो! यह बडी बुरी बात है। यह कम्युनिज्म मानवता का बहुत बडा कलक है क्योकि यह घृणा और हिंसा पर कायम है। इस कम्युनिज्म को एकदम छोड दो—एकदम! समझे, नहीं तो तुम अच्छे न हो सकोगे। यह कम्युनिज्म हृदयहीन लोगो के लिए है, तुम्हारे जैसे भावनात्मक और कोमल लोगो के लिए नहीं है।" डाक्टर मोदी ने जगतप्रकाश के शरीर की परीक्षा पूरी कर ली थी। अपनी मेज पर बठते हुए वह फिर बोले, "तुम्हारे शरीर मे कहीं किसी किस्म की कोई खराबी नहीं है। अब तुम यह भूल जाओ कि तुमने उस जर्मन सैनिक की हत्या की थी, तुमने सिर्फ उसे युद्ध मे मारा था। यह जो बम्बाडमेण्ट म हजारो आदमियो की हत्या होती है—बूढे, बच्चे, औरत, उन पर बम गिराने वालो ने तो यह सब कभी न सोचा। मिस्टर प्रकाश! युद्ध का अपना एक अलग क़ानून होता है, उसकी अपनी एक अलग नैतिकता होती है। तुम बिलकुल ठीक हो, मैं तुम्हे एक हफ्ते की दवा लिखे देता हूँ। एक हफ्ते बाद तुम मुझे फिर दिखा देना। पन्द्रह दिन म तुम्हे किसी तरह की शिकायत नही रहेगी। और बम्बई की आबहवा तुम्हारे लिए बडी अच्छी साबित होगी। अगर तुम बम्बई म एक महीना रह सको तो बडा अच्छा होगा। अब बारिश का मौसम खत्म हो रहा है।"

डॉक्टर मोदी की फीस देकर जगतप्रकाश जब चलने लगा, तब डाक्टर मोदी ने फिर कहा, "और तुम सोचना और फिक्र करना बिल्कुल बन्द कर दो, साथ ही तुम कम्युनिज्म का रास्ता भी छोड दो। यह हिंसा और घृणा का रास्ता तुम्हारे कास्टीट्यूशन के माफिक नहीं है। लेकिन अगर तुम्हारी नसो मे ही राजनीति है तो तुम महात्मा गाधी की अहिंसा का रास्ता अपनाकर काग्रेस म शामिल हो जाओ।" और डॉक्टर मोदी की मुक्त हँसी उनके चेम्बर म गूज उठी।

एक हफ्ता। कम-से-कम एक हफ्ता उसे बम्बई म अनिवार्यत रहना पडेगा, क्योकि डॉक्टर मोदी न उसे एक हफ्ते के बाद बुलाया है। वैसे उनका इलाज पन्द्रह दिन तक होगा। और कुल्सुम का आग्रह था कि वह एक महीना बम्बइ म रुके। लेकिन जगतप्रकाश जल्दी-से-जल्दी बम्बई से जाना चाह

अपने गाव, अपनी बहन के पास। इलाहाबाद मे डॉक्टर शर्मा के नाम
न पत्र लिख दिया, और डॉक्टर शर्मा का उत्तर भी आ गया था कि
वर्सिटी म अब वह आसानी से ले लिया जाएगा, ब्रिटिश सरकार का अब
स कोई शिकायत नही है। उसने अपनी बहन को भी पत्र लिख दिया
कि वह हिन्दुस्तान वापस आ गया है और एक महीने के अन्दर वह अपने
र आएगा।

लेकिन वह अपने अन्दर एक प्रकार का सम्मोहन जगता हुआ अनुभव
र रहा था—और वह सम्मोहन शका और भय का सम्मोहन था। इस
मोहन मे निकलने की इच्छा उसके अन्दर धीरे धीरे मरती जा रही थी।
दिन वह एकान्त मे पडा रहता था, जमशेद कावसजी की कोठी के एक
मरे म। और पूरे दिन वह सोचा करता था, अफ्रीका म नमनो को पीछे
टना पडा था, लेकिन वे हारे नही थे। और इधर हिन्दुस्तान के सिर पर
ापान का खतरा मॅंडरा रहा था।

एक हफ्ता बाद, यानी बीस जुलाई को वह फिर डाक्टर मोदी के यहा
या। उसे देखते ही डॉक्टर मोदी प्रसन्नता के साथ बोल उठे, "तुम्हारी तो
क्ल ही बदल गई है।"

डाक्टर मोदी ने जगतप्रकाश के शरीर की फिर पूरी परीक्षा की। जगत-
काश का वजन करीब दो पौण्ड बढ गया था और उसके मुख पर आया
पीलापन मिट गया था। उसके पैरो की कमजोरी अब पूरी तौर से जाती
रही थी, और उसके अन्दर अनायास ही कभी कभी उठने वाली घबराहट
बन्द हो गई थी। परीक्षा करने के बाद डॉक्टर मोदी ने कहा, "बस, अब
एक हफ्ता और यही दवा ले लो। वैसे तुम अच्छे हो गए हो, बस चिन्ता से
तुम दूर रहना। अगर तुम बम्बई से जाना चाहते हो तो तुम जा सकते हो,
दवा भर लेते रहना। इस दवा के खत्म होने पर तुम एक महीने तक टानिक
लेते रहना।"

शाम के समय चाय पीते हुए जगतप्रकाश ने कुलसुम को डॉक्टर मोदी
ने जो कुछ कहा था वह बतला दिया। कुलसुम ने प्रसन्न भाव से कहा,
"ईश्वर का बहुत-बहुत शुक्रिया कि तुम इतनी जल्दी अच्छे हो गए। मैं इधर
इतनी बिजी रही हूँ कि तुम्हारी देख-भाल ही नही कर सकी। आज मुझे

जसवन्त की चिट्ठी मिली है, वह पाच अगस्त को यहाँ पहुच रहा है। सात आठ तारीख को ए० आई० सी० सी० की जो महत्त्वपूर्ण बैठक हो रही है उसमे भाग लेने के लिए। उन दिनो बडी चहल पहल रहेगी। वह मेरे यहाँ ही ठहरेगा। मैने उसे लिख दिया है कि वह शर्मिष्ठा को अपने साथ लेता जाए। यह शर्मिष्ठा बडी नेक और मासूम औरत है। मुझे बडा खुशी है कि जसवन्त ने उससे शादी कर ली।"

भावना का असली रूप क्या होता है? जगतप्रकाश कुल्सुम का बात सुनकर चक्कर म पड गया। यह कुलसुम, जो किसी समय जसवन्त से प्रेम करती थी जसवन्त की पत्नी के प्रति इतनी सदय और उदार क्या है? यदि उसका विवाह यमुना के साथ हो गया होता तो क्या यह कुलसुम यमुना के प्रति भी इतनी सदय और उदार होती? और यमुना की याद आते ही एक ग्लानि और वितष्णा जाग उठी उसके मन मे। अपने को इन विचारों से अलग रखने का प्रयत्न करते हुए जगतप्रकाश ने कहा, 'मैं कल ही घर जाना चाहता हूँ। मेरी बहन मेरी राह देख रही होगी। डाक्टर मानी ने मुझसे कहा है कि अगर बम्बई से जाना जरूरी हो तो मैं जा सकता हूँ।"

कुलसुम ने शायद जगतप्रकाश से यह बात सुनने की आशा नहीं की थी, उसने आश्चर्य से जगतप्रकाश को देखा, "क्यो, तुमने तो यहाँ पन्द्रह दिन रुकने का तय कर लिया था। सात-आठ अगस्त को आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हो रही है, इस बैठक मे मुल्क की तक़दीर का फ़ैसला होने वाला है। देश मे एक बहुत बडा और शायद आखिरी आन्दोलन शुरू होने वाला है। तो यह बम्बई की ए० आई० सी० सी० की मीटिंग तो देख लो। मैं तुम्हारे लिए प्रेस गैलरी के पास का इन्तजाम कर दूगी।"

इसी समय जमील आ गया, और वह काफी चिन्तित था। उसने आते ही कहा, "माफ करना बरखुरदार, इधर तीन-चार दिन मैं आ नही सका तुम्हारे पास। मालूम होता है महात्मा गाधी का 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास हो जाएगा। और यह प्रस्ताव जापानियो और जर्मनो के हक़ मे होगा—इतना तय है। खुदा जाने यह मुल्क कहाँ जा रहा है।"

कुल्सुम ने हँसते हुए जमील से कहा, "छाडिए भी इस बात को अब्बा जमीलअहमद! जो होना है वह तो होकर रहेगा। आप इन्सान यह ...

सकता।" और कुल्सुम ने जमील के लिए भी चाय का प्याला तैयार किया। चाय का प्याला जमील को देते हुए कुल्सुम बोली, "मैं आपको एक खुश-खबरी सुनाऊँ, जगतप्रकाश आज सुबह डाक्टर मोदी के यहा गये थे। डाक्टर मोदी का कहना है कि यह बिल्कुल अच्छे हैं, इनका वजन भी दो पौण्ड बढ गया है। अगर यह बम्बई से जाना जरूरी समझते हैं तो यह जा सकते है। लेकिन मैं इन्हे ए० आई० सी० सी० के सैशन तक जबदस्ती रोक रही हूँ। इस खुशी म हम लोग आज शाम एक पिक्चर देखने चलें। मैं फोन किये देती हूँ रीगल म चार सीटें रिजर्व कर देने के लिए। परवेज, मैं, आप और जगतप्रकाश।"

जमील के मुख पर भी प्रसन्नता की एक चमक आ गई, "यह तो बडी अच्छी खबर है। वसे रात के वक्त मैंने रमैया और शिवनारायण से मिलने का प्रोग्राम बनाया था, लेकिन मैं इस वक्त महसूस कर रहा हूँ कि मैं बेहद थका हुआ हूँ। उन लोगो से मिलने और अपने को परेशान करने के बजाय सिनमा देखना ज्यादा मुनासिब होगा।"

कुल्सुम उठ खडी हुई। उसने परवेज़ को फोन कर दिया कि वह घर वापस लौटने के बजाय उसे रीगल म मिले, फिर उसने रीगल म रिजर्वेशन के लिए फान करके जगतप्रकाश से कहा, 'मै जरा तैयार हो लू—हम लोगो को आधे घण्टे के अन्दर चल देना चाहिए।"

कुल्सुम के घर के अन्दर जाने के बाद जगतप्रकाश ने जमील से कहा, 'जमील काका! यह सब क्या हो रहा है? जवाहरलाल नेहरू के होते हुए यह 'भारत छोडो' प्रस्ताव कसे पास हो जाएगा, मेरी समझ म नही आ रहा। और महात्मा गाधी खुद इस प्रस्ताव पर क्या अडे हुए हैं?"

जमील कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने कहा, 'जहा तक जवाहरलाल का सवाल है, उन्होंने इलाहाबाद की वर्किंग कमेटी मे इस प्रस्ताव की मुखालिफत की थी, और वहा यह मामला मुल्तवी कर दिया गया था। क्योंकि महात्मा गाधी उस मीटिंग मे मौजूद नही थे। जवाहरलाल हिन्दुस्तान से अंग्रेजी फौजो के हटाए जाने के खिलाफ थे। और जहा तक महात्मा गाधी की नेकनीयती व ईमानदारी का सवाल है उस पर शक नही किया जा सकता। जमनी, ब्रिटेन, जापान—ये सभी साम्राज्यवादी देश है, और इनमे

किसी के साथ महात्मा गाधी की हमदर्दी नही है। 'हिदुस्तान छोड़ो'
महात्मा गाधी का मकसद सिफ इतना है कि अगर हिदुस्तान आज़ाद हो
जाए तो जापान को हिन्दुस्तान पर हमला करने की कोई ज़रूरत नहीं र
जाएगी और हिन्दुस्तान इस जग की बरबादी से बच जाएगा। वरना अगर
अग्रेज हिदुस्तान से नही हटते तो जापान यक़ीनन हिन्दुस्तान पर हमला
करेगा। और ब्रिटेन जितना कमज़ोर हो गया है, साथ ही ब्रिटेन ने हि
स्तानियो के दिल पर अपने तइ जो नफरत पैदा कर दी है, उससे हिन्दुस्तान
के हर हिस्से से ब्रिटेन की फौजो को हारना पडेगा जग करते हुए, और
जग मे हिदुस्तान तबाह हो जाएगा।"

"लेकिन सवाल यह है कि क्या वाकई ब्रिटेन इतना कमज़ोर हो गया है
कि जापान हिदुस्तान पर कब्ज़ा कर ले ? इस विश्व-युद्ध का एक नया दौर
शुरू हो गया है, अमेरिका की सहायता से ब्रिटेन की ताकत काफी बढ़ गई
है।"

"जानता हूँ बरखुरदार ! बगाल और आसाम म अमरीकी फौजें इकट्ठी
हो रही है। लेकिन कुछ कहा नहीं जा सकता।"

एकाएक जगतप्रकाश उत्तेजित हो उठा, "नही, जमनी और जापान को
हारना ही चाहिए। हिन्दुस्तान को इस युद्ध म ब्रिटेन की नहीं, रूस की मदद
करनी चाहिए। रूस की पराजय समाजवाद की पराजय होगी, मानवता की
पराजय होगी।"

जमील ने जगतप्रकाश के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "मैं भी ऐसा
ही समझता हूँ, और मेरे अन्दर पूरा भरोसा है कि फतह आखिर म रूस और
ब्रिटेन की ही होगी। लेकिन मजबूरी यह है कि अग्रेजो के रवय म कोई फ़र्क
नही आया। वह हिन्दुस्तान के मामले म अपनी बदनीयती और
छोड नही पा रहा है। खैर छोडो भी, अब तुम्हारा प्रोग्राम क्या है ?"

जगतप्रकाश ने एक ठडी सास लेकर कहा, "सुबह सोचा था कि
महोना चला जाऊँ। इतने दिन हो गए दीदी को देखे हुए ताकि मैंने
चिट्ठी लिख दी है और मुझे उनका जवाब भी मिल गया है। डाक्टर ने
हफ्ता और दवा लेने को कहा है गोकि उन्होंने बम्बई से बाहर जाने की
इजाज़त दे दी है। अब तो लगता है कि कल जाना नहीं होगा।

कि ए० आई० सी० सी० की मीटिंग तक मैं यहाँ और रुकू।"

जमील मुसकराया, "और म भी तुम्हे यही सलाह दूगा। मुझे भी सईदा को लेने के लिए गाँव जाना है, अव तो वह वम्बई आने की जिद पकड गई है। इन ए० आई० सी० सी० के जलसे के बाद हम-तुम दोना साथ ही गाव चलेंगे। वसे मुझे लगता है कि हमारा देश एक खतरनाक दौर से गुजर रहा है।"

जगतप्रकाश के मन पर फिर से एक धुधलापन छा गया। निराशा, घुटन —लेकिन इस सवके साथ सघप की एक क्षीण भावना! जमील ने जैसे जगतप्रकाश की मनोदशा अनुभव कर ली हो, "लेकिन वरखुरदार इसमे फ़िक्र की कोई बात नही। इस 'भारत छोडो' नारे मे कोई दम नही, ठीक उस तरह जसे इडिविजुअल सत्याग्रह मे कोई दम नही था। असलियत तो यह है कि हिन्दुस्तान नामर्दों का देश है। मैंने माना कि महात्मा गाधी का मंशा हिन्दुस्तान को जग और उसकी वरवादी से वचाने का है, लेकिन जब सारी दुनिया तवाही और वरवादी के दौर से गुजर रही है, इसानियत के उसूलो की रक्षा करने के लिए, उस वक्त इस हिदुस्तान को जग से वचाने की बात सोचना ही वुज़दिली और नामर्दी की अलामत है। और इसलिए मैं तुम्हे यक़ीन दिलाता हूँ कि इस 'भारत छोडो' आन्दोलन का कोई असर नही पडेगा।"

जमील ने जो कुछ कहा उसमे कही कोई सत्य हो सकता है। हिन्दुस्तान मे न जाने कितने आन्दोलन हुए, न जाने कितने आदोलन यहा नित्य होते रहते हैं और न जाने कितने आन्दोलन आगे चलकर होगे। लेकिन कही किसी का कोई असर नही। जगतप्रकाश उठकर कपडे वदलने चला गया, क्योंकि उसे कुल्सुम और जमील के साथ पिक्चर देखने जाना था। और कपडे वदलते हुए वह सोचने लगा, 'क्या जमील ने सिफ उसका मन समझाने के लिए तो यह वात नही कही है? जमील स्वय मे वे-तरह चिन्तित है, वह दौड धूप कर रहा है। आज की परिस्थितिया असाधारण है, क्या नही हो सकता आज की परिस्थितियो मे? वैसे ऊपर से देश का वातावरण शान्त था, व्यापार हो रहा था, चोरवाजारी चल रही थी। लोग भूखो मर रहे थे, लोग ऐश कर रह थे। लेकिन अन्दर-ही-अदर कही कोई आग सुलग रही है, और वह आग भडकेगी। यह आग भडककर विस्फोट का रूप भी धारण

मर सकती है। और जगतप्रकाश को लगा कि उसके अन्दर कोई चीज़ गहरी होती जा रही है।

जगतप्रकाश का मन पिक्चर में नहीं लगा। जो हो रहा है वह हो रहा है, लेकिन इस गलती का सुधार क्या जा सकता है? और क्या गलती का सुधार सकना उसके वश में है? क्या इस गलती को सुधारना किसी के वश में है? उसका मन कह रहा था कि वह कहीं एकान्त में जाए और सोचे समझे। लेकिन कहीं भी तो यह एकान्त नहीं है। सब जगह मनुष्य, सब जगह उन मनुष्यों की समस्याएँ! मनुष्यों की व्यक्तिगत समस्याएँ राष्ट्रीय रूप धारण करके अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष में बदल जाती हैं। सिनेमा देखकर जब वह वापस लौटा, वह बड़ी थकावट अनुभव कर रहा था। जमील के जाने के बाद कुल्सुम और परवेज़ के साथ बैठकर वह बातें करने लगा। लेकिन उस बातचीत में भी उसे कोई रस नहीं मिल रहा था।

कुल्सुम ने उससे कहा, "क्या जगत, तुम इतने गुमसुम क्यों हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है। पिक्चर में तुम चुपचाप बैठे रहे।"

जगतप्रकाश ने धीमे और कमज़ोर स्वर में कहा, "मैं यहाँ होने वाली ए० आई० सी० सी० की मीटिंग की बात सोच रहा हूँ। यह महात्मा गांधी का 'भारत छोड़ो' आन्दोलन, मुमकिन है विस्फोट का रूप धारण कर ले। जमील को इस बात का भय है और वह बहुत चिन्तित है।"

कुलसुम ने मुस्कराते हुए कहा, "इस सबकी फिक्र मत करो! जमील का भय झूठा है। जो कुछ होगा वह कुदरती ढंग से होगा, फिर उन सब पर सोचना-विचारना बेकार है।"

"कैसे फिक्र न करूँ कुलसुम! यह समस्या तो देश की नहीं, मानव के जीवन-मरण की समस्या है।"

कुलसुम एकटक जगतप्रकाश को देखती रही, लेकिन उसने जगतप्रकाश को कोई उत्तर नहीं दिया। शायद उसके पास कोई उत्तर था भी नहीं। उसने धीमे स्वर में कहा, "इस सबको भूल जाओ जगत, अपनी तन्दुरुस्ती पर ध्यान दो। जान है तो जहान है।"

"नहीं कुलसुम, इस सबको भूल सकना मेरे वश में नहीं है।" जगतप्रकाश कराह उठा।

एकाएक उसे परवेज़ का स्वर सुनाई पडा, "मिस्टर जगतप्रकाश! क्या आपका धरम पर यकीन है?"

परवेज़ का प्रश्न सुनकर जगतप्रकाश चौंक उठा। धर्म के बारे में उसने कभी सोचा न था। उसने हिन्दू-समाज मे जन्म अवश्य लिया था, हिन्दू धर्म की सामाजिक मान्यताओं को वह आंख बन्द करके मानता भी रहा था, लेकिन उसने कभी गम्भीरतापूर्वक धर्म का मनन नहीं किया था। स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, ईश्वर प्रकृति—इनकी मान्यताएँ कभी उसके सामने आई ही नहीं। उसने कुछ चुप रहकर कहा, "क्या धर्म पर विश्वास करना जरूरी है?"

"मेरा तो ऐसा खयाल है। मुझे तो लगता है कि इन्सान की सारी उलझना, फिक्र और कशमकश का इलाज धर्म है। और खास तौर से जब दिमाग सोचने समझने पर तुल जाए तब धरम इन्सान के बहुत काम में आता है। तुमने गीता पढ़ी है?"

गीता के सम्बन्ध मे सुना बहुत था जगतप्रकाश ने, लेकिन उसने गीता कहां पढ़ी थी। कुल की परम्परा के अनुसार उसकी शिक्षा दीक्षा हिन्दी और उर्दू में हुई थी, संस्कृत तो केवल धर्म की भाषा थी, जो ब्राह्मणों तक ही सीमित थी। धार्मिक पुस्तकों में उसकी गति केवल रामचरितमानस तक थी। उसने पूछा, "गीता! परवेज़, क्या तुमने गीता पढ़ी है? क्या तुम्हें धरम में दिलचस्पी है?"

परवेज़ हँस पड़ा, "इस कुल्सुम को तो धरम में दिलचस्पी है नहीं, और घर में तो किसी को धरम में दिलचस्पी होनी चाहिए। मेरा मिल-मैनेजर जमूभाई देसाई बडा धरम-करम वाला आदमी है, उससे अक्सर धरम-करम की बात चल जाती है। वह एक बहुत बड़े स्वामी विराटानन्द का चेला बन गया है। एक दिन वह मुझे भी अपने साथ स्वामीजी के यहाँ ले गया। बडा पहुँचा हुआ स्वामी है वह, बडा ज्ञानी। तो उसने मुझे गीता की एक किताब दी, अंग्रेज़ी में ट्रांसलेशन।"

कुल्सुम ने आश्चर्य से परवेज़ को देखा, "मैंने तो तुम्हें गीता पढ़ते कभी देखा नहीं।"

"अरे, मुझे उसे पढ़ने का वक्त ही कहाँ मिलता है! दिन-भर काम-काज और रात में आराम! कभी इतमीनान के साथ पढ़ूंगा उसे। तब तक तुम उसे

पढ डालो, मिस्टर जगतप्रकाश! शायद अपनी उलझनो का हल तुम्हें इस मिल सके।" और परवेज बिना जगतप्रकाश के 'हाँ-ना!' की प्रतीक्षा किए गीता की वह प्रति निकाल लाया।

उस दिन रात मे देर तक जगतप्रकाश गीता पढता रहा। जब वह सोया, उसका मन काफ़ी हल्का हो गया था, और उसके अन्दर वाली उदासी बहुत कम हो गई थी।

चार अगस्त को कुलसुम के नाम जसवन्त का तार आया कि वह शर्मिष्ठा के साथ पाँचवी तारीख की सुबह फण्टियर मेल से बम्बई आ रहा है। उसी दिन कुलसुम ने जगतप्रकाश के कमरे के बगल वाला कमरा खुलवाकर साफ कराया और उसे ढग से सजवा दिया।

पाच तारीख की सुबह कुलसुम जगतप्रकाश को साथ लेकर सेण्ट्रल स्टेशन के लिए चल पडी। पजाब, दिल्ली, राजस्थान और से अनगिनती लोग ए० आई० सी० सी० मे भाग लेने के लिए आ थे। उन लोगो का स्वागत करने के लिए एक भीड-सी उस दिन स्टेशन उमड पडी थी। जसवन्त, शर्मिष्ठा और उनका लडका, ये तीनो एक फ्र क्लास कम्पाटमेट मे थे, सर्वेण्टस कम्पाट मे बच्चे की आया थी।

जगतप्रकाश को देखते ही जसवन्त चिल्ला पडा, "अरे तुम! तुमको तो लडाई के मैदान मे होना चाहिए था।"

जगतप्रकाश ने हँसते हुए कहा, "मैं लडाई के मैदान मे ही तो हूँ हिन्दुस्तान की लडाई का यह मैदान ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।"

कुलसुम शर्मिष्ठा के साथ उसका असबाब उठवाने में मदद कर थी। असबाब कुली पर लदवाकर जब सब लोग प्लेटफार्म से बाहर चले शर्मिष्ठा ने जगतप्रकाश को नमस्ते की, "आप सही-सलामत यहाँ हैं देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। आप इजिप्ट युद्ध-क्षेत्र मे लड रहे हैं जसवन्त से यह खबर सुनकर मुझे बडी चिन्ता हो गई थी।"

एक सद्भावना, एक ममता—दुनिया में सभी-कुछ है, शर्मिष्ठा की बात सुनकर जगतप्रकाश के मन को शान्ति मिली। उसने मुस्कराते कहा, मैं फौज छोडकर आ गया हूँ, मेरे-जैसे लोगों के लिए फ़ौज की जिन्दगी नही है।"

घर लौटकर जगतप्रकाश फिर अपने कमरे मे बन्द हो गया, गीता पढन और मनन करने मे वह तन्मय हो गया था। एक नया रास्ता उसे मिल गया था, एक नई दिशा उसने देखी थी।

दूसरे दिन शाम के समय कुलसुम ने प्रेस गैलरी का एक पास जगत-प्रकाश का दे दिया।

सात तारीख को दोहर का खाना खाकर कुल्सुम, जसवन्त, शर्मिष्ठा और परवेज के साथ जगतप्रकाश ए० आई० सी० सी० के अधिवेशन को देखन के लिए रवाना हो गया।

गवालिया टैक का वहुत बडा मैदान, बम्बई के मध्य मे और उस मैदान म एक बहुत बडा पण्डाल, जिसमे करीव पन्द्रह-बीस हजार आदमी बठ सकें। उस अधिवेशन मे समस्त भारत स करीव ढाई सौ प्रतिनिधि आए थे, लेकिन दशका की सख्या करीव पन्द्रह-बीस हजार थी। कुलसुम और जसवन्त ए० आई० सी० सी० के सदस्य होने के नाते प्रतिनिधियो मे सम्मिलित हो गए थे, परवेज के साथ शर्मिष्ठा विशिष्ट दशका की गैलरी मे बठ गई और जगतप्रकाश प्रेस-गैलरी मे पीछे की तरफ बैठ गया।

ठीक पौने तीन बजे व देमातरम् गान के साथ बैठक की कायवाही आरम्भ हुई।

सभापति के आसन पर मौलाना अबुल कलाम आजाद बैठे थे—एक भव्य और मोहक व्यक्तित्व। व देमातरम् के वाद पिछली मीटिंग की कायवाही ही गइ और फिर जबदस्त करतल ध्वनि के साथ कांग्रेस-अध्यक्ष ने अपना भाषण आरम्भ किया। सबत्र शान्ति और निस्तब्धता छाई हुई थी। किन परिस्थितियो म उस दिन वाला प्रस्ताव रखा जा रहा है, उस प्रस्ताव का आशा क्या है—करीब सौ मिनट तक मौलाना आजाद बोलते रहे, और लोग सुनते रहे। और फिर इसके वाद ही महात्मा गाधी मच पर आए।

महात्मा गाधी के भाषण के साथ ही लोगा को स्थिति की गम्भीरता का अनुभव हुआ। वह बहुत थोडे समय तक बोले, लेकिन नपे-तुले शब्दा मे उन्होंने भावी आन्दोलन की अनिवायताओ और आवश्यकताओ पर प्रकाश डाला। उन्होंने किसी तरह का दिशा निर्देश नही दिया, न उन्होंने किसी तरह का आग्रह किया, लेकिन उनका एक-एक शब्द आग्रह था, दिशा-

निदश था।

और फिर मूल प्रस्ताव जवाहरलाल नेहरू ने पश किया।

जवाहरलाल नहरू द्वारा प्रस्ताव पेश किए जान पर जगतप्रकाश चौंक उठा। उसने कभी यह न सोचा था कि समाजवाद का प्रमुख अनुयायी ऐसा प्रस्ताव को पेश करेगा जिसका उद्देश्य ऊपरी ढग स तो स्वतन्त्रता को प्राप्त करना था, लेकिन जो पीपुल्स वार म भयानक बाधा पहुँचाएगा। एक अजीब तरह का खोखलापन लगा उस जवाहरलाल के उस भाषण म। लेकिन उसकी भावना से होता क्या है? जो ठोस सत्य था वह कुरूप था। वह प्रस्ताव अहिंसा के नाम पर देश भक्ति के नाम पर, न्याय और अधिकार के नाम पर टूटते और पराजित होते हुए ब्रिटेन और रूस पर एक प्रहार था। वितृष्णा और क्रोध—एक अजीब उलझी हुई भावना। और उसके साथ मन की कडवाहट। जवाहरलाल नेहरू के व्याख्यान क बाद वह उठ खडा हुआ। वह सारा-का सारा अधिवेशन जसे उसे काट रहा था। चारों ओर एक उत्साह, एक उमग, और ठीक उसके विपरीत जगतप्रकाश क मन मे घुटन और नपुसकता से भरा क्रोध। वह उठकर बाहर आ गया।

नेहरू न कहा था कि कांग्रेस स्वतन्त्रता का अन्तिम सघर्ष आरम्भ कर रही है, अब पीछे नही हटा जा सकता। जवाहरलाल ने कहा था कि महात्मा गाधी ब्रिटिश एव विदेशी फौजो को हिदुस्तान म बने रहने के लिए राजी है, केवल देश को स्वतन्त्र कर दिया जाए। जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि उन्हे हर तरफ ब्रिटेन और अमेरिका की बदनीयती दिखाई देती है। जवाहरलाल नेहरू न कहा था कि यह जीवन मरण का सवाल है। जो कुछ नेहरू ने कहा था वह प्रभावोत्पादक था, वह ऊपर से सत्य निहित था, लेकिन उसका दूसरा पहलू भी तो था। उस दूसरे पहलू पर चिन्तन करने वाले वहा मौजूद है लेकिन क्या उन लोगो की वाणी म बल है? क्या उनके नतृत्व म कोई प्रभाव है?

जगतप्रकाश सोच रहा था, बडे व्यग्र भाव स। सरदार वल्लभभाई पटेल उस प्रस्ताव का समर्थन करने को उठ खडे हुए और जगतप्रकाश पडाल के बाहर सडक पर चल पडा। उस लग रहा था कि जो कुछ कहा जा चुका है वही बहुत है आग जो कुछ कहा जाएगा, उस सुनकर उसका

फट जाएगा। कुलसुम और जसवन्त अधिवेशन मे मौजूद थे प्रतिनिधियो के रूप म, व लोग अन्त तक वहाँ बैठेंगे। परवेज़ और शर्मिष्ठा के लिए शायद वह अधिवशन एक दिलचस्प तमाशा है। जगतप्रकाश चौपाटी की ओर चल दिया।

मान लिया जाए कि ब्रिटिश सरकार काग्रेस की माँग स्वीकार करके देश को स्वतन्त्र कर देती है तो देश का रूप क्या होगा ? और युद्ध के प्रयत्नो पर उसका क्या असर पडेगा ? यह निश्चित है कि देश के स्वतन्त्र होने पर सत्ता काग्रेस के हाथ म आ जाएगी और महात्मा गाधी के नेतृत्व म काग्रेस की नीति अहिंसा एव सत्याग्रह की ही हो सकती है। लेकिन देश के मुसलमान! व न तो इस अहिंसा को अपना सकते है और न इस सत्याग्रह पर चल सकते हैं। मिस्टर जिन्ना काग्रेस के हाथ म सत्ता आने का विरोध कर रहे हैं, देश के समस्त मुसल्मान मिस्टर जिन्ना के साथ है। और इसलिए इस स्वतन्त्रता के माने होगे देश मे हिन्दू मुसलमानो का गृह-युद्ध। जवाहरलाल नेहरू इस कुरूप सत्ता के प्रति अन्धे क्यो है।

कितनी देर वह चौपाटी के तट पर बैठा सोचता रहा, इसका जगतप्रकाश को पता नही चला। आसमान घिरा हुआ था और अब कुछ हल्की-हल्की बूँद पडनी शुरू हो गई थी। जगतप्रकाश ने घडी देखी, रात के नौ बज रहे थे। उसने टैक्सी ली और वह कुलसुम के घर लौट गया।

बरामदे म कुलसुम, शर्मिष्ठा, जसवन्त कपूर और परवेज़ बैठे हुए उस दिन के अधिवेशन पर बातें कर रहे थे। जगतप्रकाश को देखते ही जसवन्त बोला, "अरे, तुम कहाँ चले गये थे ? हम लोगो ने तुम्हे इतना ढूँढा। इस वक्त हम लोग तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे थे, खाना लग रहा है।"

जगतप्रकाश को अनुभव हुआ कि उसे भूख लगी है चुपचाप वह एक कुरसी पर बैठ गया।

कुल्सुम ने जगतप्रकाश की ओर देखा, "क्या जगत, तुमने जवाहरलाल नेहरू का स्पीच सुनी, कैसी लगी तुम्हे ?"

उदास भाव से जगतप्रकाश ने उत्तर दिया, 'मेरी समझ मे नही आता कि जवाहरलाल नेहरू ने यह प्रस्ताव पेश क्यो किया। मुझे तो उसकी स्पीच बडी खोखली लगी।"

जसवन्त हँस पड़ा, "अब तो मेरी बात की ताईद हो गई। जवाहरलाल के पास कोई विश्वास नहीं, उनके पास कोई सिद्धान्त नहीं। उनके पास उनका अहम है, जिसे आरोपित करने के लिए उन्हें महात्मा गांधी का सहारा चाहिए। साथ ही उनके पास नाटकीयता से भरा एक दिखावा है, ऐसा सफल अभिनय जो दुनिया के बड़े से-बड़े आदमी को चक्कर में डाल सकता है।"

कुलसुम को जसवन्त की यह बात अच्छी नहीं लगी, "जसवन्त! तुम्हें ऐसी बात कहते शर्म आनी चाहिए। जवाहरलाल देश के नौजवानों का एक मात्र नेता है। क्या शर्मिष्ठा! क्या खयाल है तुम्हारा?"

शर्मिष्ठा का मन शायद अपने बच्चे में उलझा हुआ था, "बात तो जवाहरलालजी ने बड़ी साफ-साफ और बड़ी तर्कसंगत कही है। मैं तो उनकी बात से बड़ी प्रभावित हुई।"

"यही तो देश का दुर्भाग्य है!" जसवन्त बोला, "गांधी की अन्धी ममता ने और जवाहरलाल के मोहक अभिनय ने मिलकर जवाहरलाल के व्यक्तित्व को देश पर इस कदर आरोपित कर दिया है कि उससे अब देश को छुटकारा मिलना असम्भव है। मुझे तो देश का भविष्य बड़ा अन्धकारमय दिखता है।"

जगतप्रकाश को याद हो आया कि उसने कुछ ऐसी ही बात जसवन्त या जमील से पहले भी सुनी है। जवाहरलाल के प्रति उसकी वितृष्णा में शायद जसवन्त के पूर्वाग्रह का प्रभाव है। वह अब अपने अन्दर ही उलझ गया।

इसी समय बेयरा ने आकर सूचना दी कि खाना मेज पर लग गया है।

दूसरे दिन जब जगतप्रकाश सोकर उठा, उसके अन्दर वाली उद्विग्नता जाती रही थी। सुबह का नाश्ता करके वह फिर गीता पढ़ने बैठ गया। अब उसे गीता में रस आने लगा था।

दोपहर के तीन बजे अन्तिम अधिवेशन होने वाला था। सब लोगों के साथ जगतप्रकाश भी अधिवेशन में गया। उस दिन 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पर वाद विवाद होने वाला था, एक क्षीण-सी आशा थी जगतप्रकाश को कि शायद इस प्रस्ताव का कड़ा विरोध हो। लेकिन अधिवेशन में जगतप्र-

दिखा कि वहाँ जितने भी पुराने काग्रेसमैन है वे सब महात्मा गाधी के साथ हैं। अगर उस प्रस्ताव का कही विरोध है तो वह इने-गिने नवयुवक नेताओ म है, जिनम अधिकाश वामपथी विचार धारा के लोग है। सशोधन रखे गए, लेकिन उन सशोधना का कही भी स्पष्ट विरोध नही दिखा उसे, केवल घुमाव फिराव की बाते ही थी। अधिकाश सशोधन वापस ले लिए गए, कुछ पर मतदान हुआ और उनके पक्ष मे कुल बारह-तेरह वोट मिले, विरोध के प्रतीक रूप म। और फिर 'भारत छोडो' प्रस्ताव पास हो गया।

प्रस्ताव के पास होते ही हर्ष की तालिया बजी, जनता इस सघर्ष के लिए तिलमिला रही है। लेकिन इस सघर्ष का रूप क्या होगा, किसी को नही मालूम—जनता अधी होती है। और प्रस्ताव पास होने के बाद महात्मा गाधी मच पर आए, सुस्थिर और अडिग। उन्होने दो घण्टे तक अपना इतिहास प्रसिद्ध भाषण दिया—उस भाषण का प्रमुख नारा था, 'करो या मरो।'

जगतप्रकाश उस दिन शान्ति से वह महत्त्वपूर्ण कार्यवाही देखता रहा, उसके अन्दर न क्रोध था, न उल्लास था। केवल एक उदासीनता थी। गीता मे भगवान् कृष्ण ने कहा है, 'फल की चिन्ता मत कर, परिणाम तेरे हाथ म नही है, तू अपना धर्म पालन कर।' जगतप्रकाश को मालूम था कि महात्मा गाधी की गीता पर सम्पूर्ण आस्था है—यही नही, उन्होने गीता का अनुवाद किया है। महात्मा गाधी अपने धर्म का पालन कर रहे थे। वह धर्म था सत्ता के प्रति विद्रोह—मृत्यु की शान्ति की अपेक्षा देश को क्रान्ति और अराजकता की अवस्था म फेक देना। तो क्या महात्मा गाधी को मानवता की अपेक्षा देश अधिक प्रिय था? गुलामी की अपेक्षा अराजकता अधिक अच्छी, उसने यह बात सुनी थी, इस बात की सार्थकता को उसने अगर स्वीकार नहीं किया था तो अस्वीकार भी नही किया था।

और तभी जगतप्रकाश के मन मे एक प्रश्न उठा। महात्मा गाधी ने सदा से मानवता की दुहाई दी है। यह अहिंसा का नारा मानवता का नारा है। क्या इस प्रस्ताव से महात्मा गाधी ने देश के लिए हिंसा का मार्ग प्रशस्त नही किया है? 'करो या मरो' का वास्तविक रूप क्या 'मारो या मरो' तो नहीं है? शब्दो के साथ खिलवाड! क्या करो? विनाश—

विध्वस! महात्मा गाधी के अन्दर इतनी कटुता कैसे भर गई कि वह अ
अहिंसा की सीमा-रेखा पार कर गए? दो घण्टे तक महात्मा गाधी ने भा
दिया, उनका एक एक शब्द हथौडे के प्रहार की भाति था, जिसका उद्दे
था—तोडना, लगातार तोडना!

क्या इस कटुता का स्रोत ब्रिटिश सरकार मे है? क्या इस कटु
स्रोत मिस्टर जिन्ना मे है? और तभी जगतप्रकाश के मुख पर मुस्करा
आ गई—क्या इस कटुता का स्रोत स्वय महात्मा गाधी के अन्दर ना
है? अपने इस प्रश्न से स्वय जगतप्रकाश को भय लगा, लेकिन प्रश्न
उभर आया था, और इस प्रश्न का उत्तर उसे पाना ही था।

देश के मुसलमानो के प्रति महात्मा गाधी कटु थे, मुसलमानो का
को एक-मात्र नेता कहने वाले मिस्टर जिन्ना के प्रति वह कटु थे—
उन्होने इसका मौखिक उल्लेख कभी नहा किया था। सस्कृत का
कहावत है—'सच बोलो, लेकिन प्रिय बोलो, अप्रिय सत्य न बोलो।' हमा
सस्कृति सहिष्णुता और समन्वय का उपदेश देती है। लेकिन क्या यह
सभ्यता और सस्कृति के आवरण मे ढोग और आडम्बर की परम्परा ता
है? महात्मा गाधी जानते थे कि देश के मुसलमानो मे राष्ट्रीयता की भाव
नही है, उसने पढ रखा था कि अपने सवप्रथम आन्दोलन म महात्मा गाधी
असहयोग के साथ खिलाफत को जोड देना आवश्यक समझा था, मुस
को राष्ट्रीय आन्दोलन मे सम्मिलित करने के लिए। इसम उन्हें आर
कुछ सफलता भी मिली थी। लेकिन अग्रेजो की कूटनीति स देश का मु
मान फिर राष्ट्रीयता से छिटक गया। अग्रेजो द्वारा उस विशेषाधि
मिलते रहे, विशेष सुविधाएँ मिलती रही। फिर भी मुसलमानो का
छोटा-सा दल राष्ट्रीयता की भावना को अपनाकर महात्मा गाधी के
चल रहा था—और तभी महात्मा गाधी के सामने आ गए मिस्टर जिन्ना।

जिन्ना योग्य था, जिन्ना ईमानदार था, जिन्ना म विद्रोह था
जिन्ना मुसलमान था। महात्मा गाधी की सरपरस्ती म जवाहरलाल
देश का नेतृत्व अपने हाथ म लेने को बढ रहे थे, महात्मा गाधी का
स्नेह और उनकी ममता को लेकर। यही तो जमाल ने उसने कहा
जिन्ना महात्मा गाधी के बाद उनके समकक्ष ही दूसरा स्थान रखता

था। जिन्ना के पास वे गुण नही थे जिन पर महात्मा गाधी को आस्था थी, जिन्ना राजसी ठाठ स रहते थे, जिन्ना मे कटुता स भरी स्पष्टवादिता थी। जिन्ना महात्मा गाधी के आग झुकते नही थे। जवाहरलाल नेहरू मे वे सब गुण थे, वह जेल गये थे, वह खादी पहनते थे, वह महात्मा गाधी पर अटूट विश्वास रखते थे। सस्कृतियो के साम्य के पक्षपाती थे।

यह स्वाभाविक था कि महात्मा गाधी न नेहरू को महत्ता दी, और फलस्वरूप जिन्ना राष्ट्रीय आन्दोलन से छिटककर विशुद्ध साम्प्रदायिक बन गए। जिन्ना नमाज नही पढते थे, जिन्ना को इस्लाम पर अन्धी आस्था नही थी, लेकिन यह जिन्ना अहम और अपनी महत्त्वाकाक्षा स प्रेरित होकर देश का बटवारा कराने पर तुल गया था। इस जिन्ना का कहना था कि स्वतन्त्र भारत म हिन्दू मुसलमानो को खा जाएँगे, इसलिए कि खुद जिन्ना को आगे बढने से रोक दिया गया है।

और जब जिन्ना को दानवीय शक्ति प्राप्त हो गई, तब महात्मा गाधी को स्थिति की गम्भीरता का पता चला। क्या नही किया उन्होने जिन्ना को सतुष्ट करने के लिए? जिन्ना को महात्मा गाधी ने ही तो कायदे-आजम की उपाधि दी थी। लेकिन स्थिति अब उनके हाथ स बाहर हो गई थी। जिन्ना महात्मा गाधी की हर उचित-अनुचित बात का विरोध करने पर तुल गया था, और यह विरोध शुद्ध रूप से व्यक्तिगत था, यद्यपि जिन्ना न इस विरोध को सैद्धान्तिक जामा पहना दिया था।

जिन्ना को ताकत मिल रही थी ब्रिटिश शासन से। 'डिवाइड एण्ड रूल'—भेद भाव द्वारा शासन। इस नीति के अनुसार जिन्ना ब्रिटिश शासन के हाथ म सबस बडा हथियार था। आज इस भयानक सकट-काल म ब्रिटेन इसी अस्त्र के बल पर हिन्दुस्तान को दबाये हुए था। महात्मा गाधी के किसी भी आश्वासन पर ब्रिटिश सरकार को भरोसा नही, और फिर ब्रिटेन का हिन्दुस्तान को एक रखने मे कोई दिलचस्पी नही। उसे तो जर्मनी और जापान पर विजय पानी है।

क्या यह जापान का खतरा शुद्ध रूप से काल्पनिक है? सत्य यह है कि इस समय गाधी के नेतृत्व के लिए खतरा पैदा हो गया है, क्योकि वह इस विश्व-युद्ध के मोड़ पर भी भारत को स्वतन्त्र नही करा पा रहे है। गाधी को

अपना नेतृत्व बचाना है—करो या मरो। लेकिन क्या गाधी अपना नेतृ
बचा सकेंगे ?

उस रात कुलसुम के यहा देर से खाना हुआ। थके होने के कारण स
लोग जल्दी सो गए। लेकिन सुबह पाच बजे ही जगतप्रकाश को उठना प
कुलसुम तेज स्वर मे कह रही थी, "महात्मा गाधी गिरफ्तार हो गए, व
कमेटी के सब सदस्य गिरफ्तार हो गए।" और सब लोग बरामदे म एक
हो गए।

इसके पहले कि काग्रेस अपना आन्दोलन चलाए, ब्रिटिश सरका
अपना कदम उठा लिया। पहले से ही तैयारियाँ कर रखी थी ब्रिटिश सर
ने—नेतृत्व के अभाव मे यह आन्दोलन नही चलने पाएगा। जसवन्त
रहा था, "अब मैं समझा कि महात्मा गाधी ने कल वह उत्तेजक भाषण
दिया। उन्हे आभास हो गया था कि आन्दोलन आरम्भ होने के पहले ही
वह गिरफ्तार हो जाएँगे, काग्रेस के सारे नेता गिरफ्तार हो जाएँगे।"

और कुल्सुम बोली, "लेकिन आन्दोलन कल ही शुरू हो गया अ
महात्मा गाधी ने जनता के हाथ मे यह छोड दिया कि इस आन्दोलन का स
क्या होगा।"

२०

जलूस निकल रहे थे, गोलिया चल रही थी, गोलियाँ चल रही थी, जलूस निकल रहे थे। लेकिन यह सब कब तक ?

बम्बई का जन-जीवन वसा-का-वैसा था, शान्त, कमहीन भावना सबमे थी, लेकिन यह भावना बुदबुदो की भाति थी जो उभरते थे और फूट जाते थे। क्या यह वास्तव म भावना है, या क्षणिक आवेग है—जगतप्रकाश की समझ म नही आ रहा था। नगर-भर मे सशस्त्र सैनिक और पुलिस की गश्त हो रही थी। इस जबरदस्त हिंसा के आगे जन की हिंसा टिक नही सकती थी। और इसके फलस्वरूप अहिंसा। क्या यह अहिंसा कायरता और विवशता का दूसरा रूप नही है ?

क्या कही कोई आन्दोलन भी है ? जगतप्रकाश की समझ म नही आ रहा था। कही किसी प्रकार का सचालन नही, नियन्त्रण नही, दिशा-निर्देश नही। अहिंसा बिना किसी सचालन के, दिशा निर्देश के, अथवा नियन्त्रण के आन्दोलन का रूप धारण कैसे कर सकती है ! तो फिर इन जलूसो का उद्देश्य क्या है ? इन जलूसो म कौन सा कायक्रम है ?

ये जलूस केवल नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध के रूप म निकल रहे हैं, जन के क्षणिक आवेग से प्रेरित होकर, और ये जलूस अराजकता और लूट-पाट का रूप भी धारण कर सकते हैं अगर इन्हे रोका न जाए। इस अराजकता को रोका जा सकता है केवल गोलियाँ चलाकर।

कुसुम के साथ जसवन्त ने नगर की स्थिति का जायजा लेने के लिए नगर भर का एक चक्कर लगाया, जगतप्रकाश भी इनके साथ हो लिया था। स्थिति इतनी गम्भीर नही थी जितनी उन लोगो ने समझ रखी थी।

उत्तेजना अवश्य थी। उस उत्तेजना के पीछे एक हिंसा की भावना थी, लेकिन साथ ही सशस्त्र सनिको और पुलिस के भय की कायरता उससे अधिक थी।

शाम के समय जब ये लोग चक्कर लगाकर लौटे, इन लोगों के अन्दर वाला तनाव जाता रहा था। जमील कुलसुम के बरामदे म बैठा इन लोगों का इतजार कर रहा था। जसवन्त ने आते ही जमील से पूछा, 'कहिए जमील अहमद ! कहिए, आपकी तरफ मिल एरिया की क्या हालत है?"

"कोई खास खराब तो नही है।" जमील बोला, "लेकिन अभी यकीनी तौर से कहा नही जा सकता। आज तो शुरुआत भर है, लेकिन लोगों में जोश बहुत है।"

कुल्सुम बोली, "यह जोश कल कम पड जाएगा, परसो और कम पड़ेगा और चार छ दिन मे खत्म हो जाएगा।"

जमील ने सिर हिलाया, "इतनी सीधी बात नही है कुल्सुम बेन ! जोश जो भडक रहा है, वह ब्रिटिश फौजो और हथियारबन्द पुलिस की वजह से।"

जगतप्रकाश से नही रहा गया। उसने कहा, "लेकिन महात्मा गांधी की अध्यक्षता म कांग्रेस की नीति अहिंसा की है—हम यह क्या भूल जाते हैं। मैं समझता हूँ कि यह अहिंसा स्वय म इस आन्दोलन की मत्यु है। बिना निश्चित निर्देश और कार्यक्रम के अहिंसा का कोई अस्तित्व हो नहा है।"

जसवन्त न गौर से जगतप्रकाश को देखा, "एक बात मैं तुमसे पूछूं जगतप्रकाश ! क्या तुम समझते हो कि कांग्रेस का हरेक सदस्य अहिंसा में विश्वास करता है ?"

जगतप्रकाश कुछ उलझन मे पड गया। कुछ सोचकर उसने कहा, "शायद नही।"

"शायद नहीं—नहीं, निश्चित रूप स नही।" जसवन्त बोला, "कांग्रेस के नेताओं ने जो अहिंसा अपनाई है, वह विश्वास स प्रेरित होकर नहीं, बेबसी के कारण। 'करो या मरो' वाला महात्मा गांधी का अन्तिम सन्देश हिंसा का सन्देश नहीं था, वह स्पष्ट रूप से हिंसा का आदेश था। 'करो' का असली अर्थ है 'मारो या मरो'।"

जगतप्रकाश को अनुभव हुआ कि उसके मस्तिष्क का धुंधलापन

है। जसवन्त ने जो बात कही है उसमे कही कोई सत्य है। 'करो या मरो'
मरो' तो निश्चित आदेश है, लेकिन 'करो!' क्या करो? कोई निर्देश
है। ऐसी हालत मे 'मरो' का उलटा 'मारो' ही इस करो का रूप हो
ता है। 'मारो!' यह नारा जमनी का है, यह नारा जापान का है। यह
ा तो घोर हिंसात्मक है, इस नारे से लडना हागा।

जमील कह रहा था, "जहा तक मुझे इल्म है, तोड फोड की एक योजना
गई है काग्रेसमना के अन्दर-ही-अन्दर। इस ए० आई० मी० सी० की
टग म जा लोग आये थे उनम ज्यादातर लोगा को पता था कि यहा
आ की गिरफ्तारिया हागी। मुझे पता चला है कि काग्रेममना मे
दातर लोग अण्डर-ग्राउण्ड चले गए ह। खुदा जाने, क्या हाने वाला है!"

जसवन्त काफी गम्भीर था, "लेकिन कामरेड जमीलअहमद! यह तोड-
ता युद्ध क प्रयत्ना म काफी घातक सावित होगी, जबकि जापानी फौज
ा म बढ़ रही है।"

एक फीकी मुसकान के साथ जमील बोला, "मेरा भी ऐमा ही खयाल
आज सुबह बस्ती के एक बहुत बडे काग्रेसी नता मेरे घर पर आ गए,
नाम वारट है—ऐसा उनका खयाल है। मैंन उनस बात की, वह इस
पर तुले हैं कि हर हालत मे ब्रिटिश सरकार को मिटा दिया जाए। कल
हर का वह वापस जा रहे हैं। मैंने उन्ह बारहा समझाया, लेकिन वह
ी जिद पर अडे हुए हैं। जैसे कोई भूत सवार हो गया हो उनके सिर पर।
नता हूँ कि बस्ती के इद गिद बहुत असर है उनका। मैं अगर चाहूँ तो
स का खबर करके उन्ह गिरफ्तार करा दू, लेकिन इन्सानियत का
जा यह नही है।"

जमील की इस बात के बाद वहाँ एक मौन-सा छा गया। जगतप्रकाश
रहा था कि इन्सानियत का तकाजा क्या है? एक आदमी का बचाना
ार देश को, सारी दुनिया को बचाना? जिस आदमी का जिक्र जमील
था वह निश्चित रूप से देश के लिए ही नही, मानवता के लिए खतर-
है। उसका बाहर रहना और भूमिगत होकर तोड-फोड करना जापान क
म होगा। उसने दबी जबान म कहा, 'लेकिन जमील भाई, अगर तुम
गिरफ्तार करा देत हो तो तुम इन्सानियत का उपकार ही करोगे।"

"यही बात मेरे दिल मे भी आई, लेकिन उसे गिरफ्तार कराना उसके साथ विश्वासघात करना होगा।" फिर कुछ चुप रहकर बोला, "बरखुरदार, खैरियत यह है कि हिन्दुस्तान की पूर्वी सीमा बगाल है, और पूर्वी बगाल म ज्यादा आबादी मुसलमानो की है। देश के मुसलमान इस आन्दोलन मे शामिल नही हैं, वे हर तरह से ब्रिटिश सरकार की मदद करेंगे, और इस लिए मेरे खयाल से फिलहाल मुल्क के लिए उतना खतरा नही है जितना ऊपर से दिखता है। इस बीच मे अगर खुदा ने चाहा तो बावजूद तमाम तोड फोड के यह आन्दोलन खुद ब-खुद दब जाएगा।"

जगतप्रकाश ने जमील की बात का कोई उत्तर नही दिया। वह फिर अपने मे उलझ गया। 'परिणाम की चिन्ता मत कर—तू अपना धर्म पालन कर! भगवान् कृष्ण ने यही तो कहा है गीता मे! लेकिन यह अपना धर्म क्या है? क्या तोड-फोड करने के लिए उकसाने वाले लोगो का विरोध न करके उन्हे उत्साहित किया जाए, या उनकी सूचना पुलिस को देकर उन्हें गिरफ्तार करवा दिया जाए? लेकिन—लेकिन—उन्हे पुलिस द्वारा गिरफ्तार करवाना—क्या यह उनके साथ विश्वास-घात करना न होगा, जैसा अभी-अभी जमील ने कहा था! क्या कम्युनिस्ट पार्टी की अपनी एक अलग और स्वतन्त्र सत्ता है जो देश के नेतृत्व को अपने हाथो मे ले सकती है, या फिर कम्युनिस्ट पार्टी को ब्रिटिश सरकार के खुफिया-विभाग का काम करना है? तोड-फोड का कार्यक्रम लेकर आगे बढने वाले लोग वही हैं जो कम्युनिस्ट पार्टी वालो के सहयोगी रहे हैं, जिन्होंने कम्युनिस्ट विचार धारा के लोगो के साथ कन्धे से कन्धा भिडाकर अभी कुछ समय पहले तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ युद्ध किया है। क्या कम्युनिस्ट पार्टी हिन्दुस्तान म ब्रिटिश साम्राज्यवाद की मौजूदगी का समर्थन करती है?'

वहाँ जो मौन छाया हुआ था उसे जसवन्त ने तोडा, "मैंने कभी यह नही सोचा था कि महात्मा गाधी इतना बडा कदम उठा लेंगे। मैं यह तो नही कहता कि उन्होंने हिंसा का आदेश दिया है, लेकिन असलियत को नजर अन्दाज कैसे किया जा सकता है?" और जसवन्त एक खिसियाहट की हँसी हँस पडा, "इस दफा ट्रेजेडी यह है कि हम लोग हमेशा से कहते आए हैं कि हमारा अहिंसा पर विश्वास नही है और इसलिए हम अहिंसा का विरोध

"यही बात मेरे दिल में भी आई, लेकिन उसे गिरफ्तार कराना उसके साथ विश्वासघात करना होगा।" फिर कुछ चुप रहकर बोला, "बरखुरदार, खैरियत यह है कि हिंदुस्तान की पूर्वी सीमा बंगाल है, और पूर्वी बंगाल में ज्यादा आबादी मुसलमानों की है। देश के मुसलमान इस आन्दोलन में शामिल नहीं है, वे हर तरह से ब्रिटिश सरकार की मदद करेंगे, और इस लिए मेरे ख़याल से फ़िलहाल मुल्क के लिए उतना ख़तरा नहीं है जितना ऊपर से दिखता है। इस बीच में अगर खुदा ने चाहा तो बावजूद तमाम तोड़-फोड़ के यह आंदोलन खुद-ब-खुद दब जाएगा।"

जगतप्रकाश ने जमील की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह फिर अपने में उलझ गया। 'परिणाम की चिन्ता मत कर—तू अपना धर्म पालन कर! भगवान् कृष्ण ने यही तो कहा है गीता में! लेकिन यह अपना धर्म क्या है? क्या तोड़-फोड़ करने के लिए उकसाने वाले लोगों का विरोध न करके उन्हें उत्साहित किया जाए, या उनकी सूचना पुलिस को देकर उन्हें गिरफ्तार करवा दिया जाए? लेकिन—लेकिन—उन्हें पुलिस द्वारा गिरफ्तार करवाना—क्या यह उनके साथ विश्वास-घात करना न होगा, जैसा अभी-अभी जमील ने कहा था! क्या कम्युनिस्ट पार्टी की अपनी एक अलग और स्वतंत्र सत्ता है जो देश के नेतृत्व को अपने हाथों में ले सकती है, या फिर कम्युनिस्ट पार्टी को ब्रिटिश सरकार के खुफिया-विभाग का काम करना है? तोड़-फोड़ का कार्यक्रम लेकर आगे बढ़ने वाले लोग वही हैं जो कम्युनिस्ट पार्टी वालों के सहयोगी रहे हैं, जिन्होंने कम्युनिस्ट विचार धारा के लोगों के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर अभी कुछ समय पहले तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ युद्ध किया है। क्या कम्युनिस्ट पार्टी हिंदुस्तान में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की मौजूदगी का समर्थन करती है?'

वहाँ जो मौन छाया हुआ था उसे जसवन्त ने तोड़ा, "मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि महात्मा गांधी इतना बड़ा क़दम उठा लेंगे। मैं यह तो नहीं कहता कि उन्होंने हिंसा का आदेश दिया है, लेकिन असलियत का नज़र अन्दाज कैसे किया जा सकता है?" और जसवन्त एक खिसियाहट की हंसी हँस पड़ा, "इस दफ़ा ट्रेजेडी यह है कि हम लोग हमेशा से कहते आए हैं कि हमारा अहिंसा पर विश्वास नहीं है और इसलिए हम अहिंसा का विरोध

मैं एक न एक झझट मे फँसा रहा, उसे साथ ला ही नही पाया। आज जब यह हगामा उठ खडा हुआ है, मुझे लगता है कि मुझे अपने वतन म होना चाहिए।"

जगतप्रकाश को अनायास लगा कि उसे दिशा मिल रही है, और जमील के साथ उसे भी अपने गाव जाना चाहिए। उसने जमील से कहा, "जमील काका, परसो मैं भी तुम्हारे साथ चलूगा। मेरी तबीअत अब बिलकुल ठीक हो गई है। दीदी को मैंने अफ्रीका से यहा लौटने की खबर दे दी थी, वह मेरा इतज़ार कर रही होगी।"

दूसरे दिन सुबह जसवन्त और शर्मिष्ठा हवाई जहाज़ से दिल्ली के लिए रवाना हो गए, दो दिन दिल्ली म ठहरकर लाहौर जाने का प्रोग्राम था उनका। एयरोड्रोम से जब जसवन्त को भेजकर कुलसुम जगतप्रकाश के साथ कार पर लौट रही थी उसने जगतप्रकाश से कहा, "जगत! मेरा ऐसा खयाल है कि अभी तुम्हारा जाना ठीक न होगा, ज़रा इन हगामो को रुक जाने दो।"

'मेरा खयाल है कि वहा कोई हगामा नही होगा। आज बम्बई की हालत बहुत शान्त दिख रही है।'

'इसलिए कि यहाँ बम्बई म फौज है, पुलिस है। लेकिन ब्रिटिश सरकार के पास इतनी फौज और पुलिस तो नही है कि वह सारे मुल्क मे अमन कायम रख सके। बहुत बडा मुल्क है यह हिदुस्तान।"

जगतप्रकाश ने कुछ सोचकर कहा, "लेकिन हगामा करने वाले तो जेल म ब द कर दिए गए है। और हिन्दुस्तान का जन अचेतन है, कायर है इस सत्य को भी तो नही भूला जा सकता।"

जगतप्रकाश को अपनी बात कहने के बाद खुद अपने पर आश्चय हुआ, उसे लगा कि अन्दर ही अन्दर वह बदल गया है। आशावादी होने के स्थान पर अब वह निराशावादी होने लगा है। तभी कुलसुम की आवाज उसे सुनाई दी, शायद तुम्हारी ही बात ठीक हो। ब्रिटिश गवनमट ने इस मूवमेट को कुचलने की पूरी तैयारी कर रखी है। बहरहाल अगर हगामे मचेंगे भी तो हफ्ता-दो हफ्ता बाद ही मचेंगे, इसलिए मैं तुम्हे न रोकूगी, क्योकि तुम्हारी बहन तुम्हारा इन्तज़ार कर रही होगी। मुझे तुमसे सिफ इतना कहना है कि

तुम हमेशा मुझे अपनी समझना, मेरे मकान को अपना मकान समझना। घर पहुँचते ही मुझे चिट्ठी लिखना।"

कुलसुम ने बिना जगतप्रकाश और जमील को बतलाये हुए ट्रेवल एजेण्ट से पंजाब मेल से लखनऊ के लिए दो सेकण्ड क्लास की बर्थें रिजर्व करा लीं। जमील दूसरे दिन दो बजे दोपहर को ही अपना सामान लेकर कुलसुम के यहाँ आ गया था। उसके आते ही परवेज और कुलसुम इन दोनों को कार पर लेकर विक्टोरिया टर्मिनस के लिए रवाना हो गए। कुलसुम और परवेज को चार बजे मिल-मालिकों की एक आवश्यक मीटिंग में जाना था जो मजदूरों की हड़ताल के कारण मिलों की बन्दी पर विचार करने के लिए बुलाई गई थी।

पंजाब मेल प्लेटफार्म पर लग गया था। जगतप्रकाश और जमील का सामान ट्रेन में रख दिया गया। चलने के पहले कुलसुम ने जगतप्रकाश को अलग ले जाकर उसके हाथ में एक लिफाफा देते हुए कहा, "इस लिफाफे को सँभालकर रखना जगत, और इसे लखनऊ जाकर ही खोलना। इस लिफाफे की बाबत तुम मुझसे कुछ पूछना नहीं, क्योंकि मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दूँगी। और तुम यह याद रखना कि मेरी रूह हमेशा हमेशा तुम्हारी है और रहेगी।" और कुलसुम एकाएक घूमकर परवेज की बगल में खड़ी हो गई। उसने परवेज के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "चलो परवेज—साढ़े तीन बज रहे हैं।"

जगतप्रकाश ने कुलसुम वाला लिफाफा अपनी जेब में रख लिया और जमील के साथ कम्पार्टमेंट में बैठ गया।

चार बजे ट्रेन चल पड़ी और जगतप्रकाश अपने विचारों में खो गया।

दूसरे दिन रात के समय यह गाड़ी लखनऊ पहुँचेगी, और तीसरे दिन उसे महोना के लिए गाड़ी मिलेगी। तीसरे दिन रात के समय वह अपने गाँव पहुँचेगा। उसके मन में अब एक पुलक था, एक संतोष था। वह कुछ दिन अपने गाँव में रहेगा, सारी चहल-पहल, सारी कशमकश और सारी सभ्यता से दूर—बहुत दूर! वह आराम करेगा और फिर वहाँ से वह इलाहाबाद जाएगा। इलाहाबाद पहुँचकर वह फिर से अपना नियमित जीवन आरम्भ करेगा। वह जानता था कि युद्ध से लौटने के बाद वह आसानी से विश्व-

विद्यालय मे ले लिया जाएगा—इसी टम मे। और इन्ही सुखद विचारो म डूबे हुए, उसने कब खाना खाया, वह कब सोया—इसका उसे पता ही नही चला।

एकाएक जगतप्रकाश की नीद खुल गई, गाडी किसी बडे जक्शन पर खडी थी और बाहर प्लेटफाम पर काफी शोर हो रहा था। थोडी दर तक वह चुपचाप लेटा हुआ गाडी के चलने की प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन गाडी ने चलने का नाम नही लिया। वह उठ बठा और कम्पाटमण्ट के बाहर निकला। गाडी भुसावल जकशन पर खडी थी और रात का एक बज रहा था। लोग घबराये हुए इधर-उधर घूम रह थे। जगतप्रकाश न एक आदमी से पूछा कि गाडी यहा क्या रुक गई है और उसे पता चला कि शाम से भुसावल स नागपुर के लिए कोई गाडी नही चली है। नागपुर जान वाली एक्सप्रेस शाम स ही प्लेटफाम पर रुकी खडी है दूसरे प्लेटफाम पर एक पसन्जर ट्रेन रुकी हुई ह। भुसावल के आगे नागपुर की तरफ स्थिति बडा खराब है। वहा तार काटे जा रह है पटरिया उखाडी जा रही है और गोलियाँ चल रही ह। सनिको की एक स्पेशल ट्रेन बम्बई से चल दी है, पहले वह भेजी जाएगी, बाद म यदि सभव हो सका तो ये रुकी हुई गाडिया चलेंगी। इटारसी की ओर स अभी इस प्रकार के उपद्रव की कोई खबर नहा मिली है, फिर भी सावधानी के लिए मेल ट्रेन के आगे-आगे एक पाइलट इजन चलेगा। वह भेज दिया गया है, अगल स्टेशन पर उसके पहुँचने के बाद ही यह मेल ट्रेन छोडी जाएगी।

जगतप्रकाश गाडी मे लौट आया। तो स्थिति इतनी बिगड गइ है। क्या यह गाडी सही-सलामत झासी पहुँच सकेगी? और फिर उसके आगे—और उसके भी आगे? इसी समय गाडी ने सीटी दी और गाडी चल दी। जगतप्रकाश के मन को एक राहत सी हुई। वह घर पहुँच जाएगा, इतना भरोसा उसके मन को हुआ। लेकिन उसकी नीद गायब हो गइ थी।

बारह बजे दोपहर को पहुँचने के स्थान पर गाडी चार बजे शाम को झासी पहुँची। रास्ते भर वह देखता आया पुलिस, फौज—हर तरफ एक तनाव। लखनऊ जाने वाली गाडी खडी हुई अभी भी मेल ट्रेन की प्रतीक्षा कर रही थी। जगतप्रकाश और जमील जिस डिब्बे मे थे वह डिब्बा काटकर झासी-लखनऊ मेल म लगा दिया गया।

कानपुर स्टेशन पर जब गाडी रुकी, जमील ने जगतप्रकाश से कहा, "बरखुदार, अगर हर्ज न समझो तो हम लोग एकाध दिन के लिए कानपुर उतर पड़े। मुझे अपने साथियो से मिलना है, उनसे मिलकर यहा के हालात का अन्दाज़ा लगा लूं।"

"नही जमील चाचा मैं सीधा अपने गाव जाऊँगा, तुम यहा कानपुर मे उतर जाओ। अब मैं अपने प्रान्त म आ गया हूँ। यहा की हरेक चीज़ जानी-पहचानी है, मेरी ओर से तुम निश्चिन्त रहो मैं बिना किसी बाधा के अपने घर पहुँच जाऊँगा।"

लखनऊ पहुँचने पर जगतप्रकाश को कुलसुम ने जो लिफाफा उसे दिया था, उसकी याद आ गई। उसने लिफाफा खोला सौ सौ रुपय के दस नोट और उसके साथ एक छोटा-सा पत्र। उस पत्र म केवल इतना लिखा था

"मेरे जगत! तुम बढो, जीवन मे तुम महान् बनो! तुम्हारी महानता और विकास म मेरे सपनो की पूर्ति है। किसी तरह की बाधा—किसी तरह का अभाव नही होना चाहिए तुम्हे, कुलसुम तुम्हारी है कुलसुम का जो कुछ है वह तुम्हारा है। जब भी कभी अवकाश मिले बम्बई आ जाना, तुम्हे देखकर प्राणो को राहत मिलती है।"

रात म वेटिंग रूम मे लेटा-लेटा वह कुलसुम के सम्बन्ध मे सोचता रहा। यह कुलसुम उसके इतना निकट कैसे आ गई? यह क्या हो रहा है? शायद वह उसके और भी निकट आ जाती यदि जगतप्रकाश चाहता—या अगर खुद कुलसुम ही चाहती। लकिन लकिन कुछ भी किसी के वश म नही है, जो कुछ हुआ, वही विधान था, वही हो सकता था।

जगतप्रकाश निश्चित समय पर ही महोना पहुँच गया। रास्ते म उसे केवल तनाव की स्थिति ही दिखी, कही किसी तरह का विद्रोह उसे नजर नही आया, न तोड-फोड का वातावरण ही उसे कही दिखा।

जगतप्रकाश को देखते ही अनुराधा ने दौडकर उसे अपने अक मे भर लिया, "तो तुम आ ही गए—आ ही गए! भगवान् से मैंने कितना मनाया कि वह मुझे ले ल, और मेरी उम्र तुम्हे दे दे, तुम पर किसी तरह की आच न आन पाए। भगवान् ने मेरी सुन ली।" और अनुराधा का मुख प्रसन्नता से चमक रहा था, उसकी आँखो मे आनन्द के आसू थे।

कितनी ममता, कितना स्नेह! वह उजडा हुआ सा गाव, जो इधर पिछले कई वर्षों से उसे नरक सा दिखता था, वह अब इस ममता के वातावरण को समेटे हुए स्वर्ग की भाति दिख रहा था उसे।

हत्या और रक्त पात से दूर आदोलन, अविश्वास और सघर्ष से दूर, चहल पहल और कशमकश से दूर—बहुत दूर वह आ गया था। सुबह तड़के उठकर वह घूमने निकल जाता था। खुली हवा और चारो ओर हरियाली। दोपहर के समय वह वापस लौटता था, प्रसन्न और सतुष्ट। अब वह बिल्कुल स्वस्थ था। डॉक्टर मोदी की दवा ने उसकी बीमारी दूर कर दी थी। उसके मन मे फिर से एक नया उल्लास भर गया था और एक नई उमग जाग उठी थी।

लेकिन कहा कोई अतर्मन, कहीं कोई हलचल करवट बदल रहा था उसके अन्दर। विश्व युद्ध की गतिविधि कैसी है? हिन्दुस्तान के अन्य भागो मे इस आदोलन का क्या रूप है? यह आन्दोलन दब गया है या उभर रहा है? किसी बात की खबर नहीं उसको!

चौथे दिन जब वह सुबह घूमने निकला, उसने देखा कि गाव मे कुछ चहल पहल है और उसे याद आ गया कि उस दिन महोना का बाजार है। उस दिन वह अपना चक्कर लगाकर जल्दी ही लौट आया, बाजार उस समय तक पूरी तौर से लग गया था। घर न लौटकर जगतप्रकाश बाजार मे चला गया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस दिन बाजार मे भीड बहुत कम थी। बाहर के व्यापारी नहीं आए थे, आस-पास के किसान और महोना के दूकानदार ही अपनी-अपनी चीजे बेच रहे थे। सिर झुकाए हुए वह चल रहा था, यह सब सोचता हुआ कि उसे एक जानी पहचानी आवाज सुनाई पड़ी, 'अरे जगतप्रकाश बेटा! इस तरह सिर झुकाए हुए चुपचाप चले जा रहे हो! लेकिन हम हैं रामलखन पाण्डे, दूर से ही पहचान लिया तुम्हे। कब आए?"

रामलखन पाण्डे का हुलिया बिलकुल वही था जो उसने तीन साल पहले देखा था। वही मैली धोती वह फटी हुई बण्डी, वही कुटिलता से भरी मुस्कराहट, और मुख पर वही अथलालुपता! जगतप्रकाश की इच्छा नहीं हो रही थी कि वह रामलखन से बात करे, लेकिन रामलखन अब उसकी बगल

मे आ गए थे। जगतप्रकाश ने अन्यमनस्क भाव से कहा, "तीन दिन हुए, आया हूं।"

खनी बनाते हुए रामलखन ने कहा, "तभी, क्योंकि कल से तो गाड़ियां ठीक तरह से चल नहीं रही हैं। रास्ते मे लाइन टूट रही है, लाइनें बनाई जा रही है, थाना डाकखाना-कचहरी—इन पर हमले हो रहे हैं और गोलियां चल रही है। एकदम बगावत खड़ी हो गई है। अरे हां, हमने सुना था कि तुम फौज मे बड़े अफसर हो गए हो और अफ्रीका मे लड़ रहे हो। लेकिन फौज ठहरी, फौज! मारना, मरना! हर वखत जान का खतरा। तो क्या छुट्टी पर आए हो?"

रामलखन ने जो कुछ कहा उसके प्रथम भाग मे जगतप्रकाश को दिलचस्पी थी, दूसरे भाग में नहीं थी। उसने कहा, "नहीं, फौज की नौकरी छोड़ दी। लेकिन यह बगावत की बात आप क्या कह रहे हैं? यह बगावत कहाँ हो रही है? यहाँ तो पूरी शान्ति है।"

रामलखन हँस पड़े, "यह बाजार देख रहे हो? कितने आदमी आए हैं यहां पर? महात्मा गांधी की गिरफ्तारी से देश भर में आग लग गई है। आज अँगनू साह आए हैं बस्ती से। कह रहे हैं कि देश-भर मे बलवे हो रहे हैं। थाना कचहरी फूंक दो, तार काट डालो, रेल की लाइनें उखाड़ डालो—इस जालिम ब्रिटिश सरकार का डटकर मुकाबला करना चाहिए। हम लोगों को भी बगावत शुरू कर देनी है। एक मीटिंग बुलाई है अँगनू साह ने, तो वहीं जा रहे हैं हम। तुम भी चलो! स्वतन्त्रता का अन्तिम संग्राम छिड़ गया है।"

जैसे एक करंट मार गया जगतप्रकाश को! तो यह संघर्ष उसके पीछे-पीछे, यहाँ भी आ पहुँचा। यह क्या हो रहा है? वह रामलखन के साथ-साथ चुपचाप मीटिंग के स्थान की ओर चल पड़ा।

मुश्किल से बीस-पचीस आदमी थे उस मीटिंग मे, और जगतप्रकाश ने देखा कि उनमें अधिकांश आस-पास के जाने पहचाने गुण्डे थे। अँगनू साह भाषण दे रहे थे और कह रहे थे, "भाइयो! समय आ गया है इस अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेंको। जापानी फौजें आसाम में घुस आई हैं और बंगाल की तरफ़ बढ़ रही हैं—उसके बाद विहार, और फिर यहाँ। अंग्रेज हार रहे

है और भाग रहे है। मौका है, तहसील का खजाना लूट लो, पुलिस चौकी म आग लगा दो—बोलो महात्मा गाधी की जय।"

एक भयानक आतक फलता जा रहा था और बाजार धीरे धीरे उखड रहा था। मीटिंग के अत मे जगतप्रकाश ने अँगनू को अलग बुलाकर कहा, "क्या अँगनू साह! महात्मा गाधी न ता अहिंसा का उपदेश दिया है, तुम लोग हिंसा पर कसे उतर आए?"

"यह हिंसा कहा है? हम लोग जो तोड फोड करने जा रहे हैं और सरकारी खजाना लूटने जा रहे है थाने म आग लगाने जा रहे है, उसम हम किसी की जान तो नही ले रहे हैं, फिर यह हिंसा कस हुई?"

बहुत धीमी आवाज़ मे जगतप्रकाश बोला, "ये लोग जो तुम्हारे साथ हैं, इनम ज्यादातर डाकू और गुण्डे है यह तो तुम जानते ही हो।"

'हाँ य सब जीवट के आदमी है। यह क्रान्ति कायर लोग थोडे ही कर सकते है।" तमककर अँगनू ने उत्तर दिया।

जगतप्रकाश ने शान्त भाव से कहा, "हा, कायर लोग यह क्रान्ति नहा कर सकते, तुमने बिलकुल ठीक कहा है। लेकिन क्रान्ति के अर्थ लूट-मार तो नहा होते, लूट मार तो अराजकता है।"

अँगनू ने मुसकराते हुए व्यग्य किया, "क्या ठीक और क्या गलत है, महात्मा गाधी और काग्रेस के नेता तुमसे ज्यादा अच्छा जानते हैं। तुम हम क्या बनलाओगे जो सरकार की गुलामी म पडकर फौज म भरती हो गए थे, अग्रेजा के लिए जान तक देन के लिए।"

"और युद्ध म रक्त-पात देखकर मैं बीमार पड गया था।" जगतप्रकाश न अँगनू के व्यग्य की उपेक्षा करते हुए कहा, "नही। अँगनू साह! एक दफा अगर लूट मच गई तो कही उनका कोई अन्त नहा। अच्छा, एक बात बताओ, महाना म तुम्ही तो सबसे अमीर आदमी हो। मैं गलत तो नहा कहता।"

' नहा, वसा जरूर है नियत वाले आदमी हैं। लेकिन इनम क्या?" अँगनू के स्वर म उपेक्षा के स्थान पर कौतूहल आ गया था।

बडी साफ बात है। य जो तुम्हारे साथी हैं, इन्ह अगर लूटने फ्र मिल गई तो फिर य लोग एक दिन तुम्हारा मकान भी लूटेंगे—इतना

मन्य ला। तुम अपने पैरो मे ही कुल्हाडी मार रहे हो।" और जगतप्रकाश चलने के लिए घूम पडा।

अँगनू ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, "नही जगत भइया, तुमने मुझे बडे मौक़े से सावधान कर दिया, मैंने इस पर कभी सोचा ही नही था। अब तुम बताओ कि क्या हो ?"

"तुम चुप हो जाओ। बिना किसी नेता के ये लोग कोई काम नही कर सकते। जो कुछ हो रहा है वह बहुत गल्त ढग से हो रहा है। लेकिन यह तोड फोड और लूट-मार का आदेश कहा से मिला है तुम्हे ?" जगत-प्रकाश ने पूछा।

"कहा से बताएँ तुम्हे ? बडे-बडे नेता तो जेला मे बन्द है। महात्मा गाधी कह गए हैं, 'करो या मरो !' तो क्या करो—यह कोई नही बताता। हर तरफ आग लग गई है और अब उस आग की लपटे इधर फैल रही है। शहरो मे जलूस निकल रहे है, गोलिया चल रही है।" और फिर कुछ चुप रहकर उसने सिर हिलाया, "लेकिन, शायद यह सब अच्छा नही हो रहा है। इस पर फिर से सोचना विचारना पडेगा। मैं इन लोगो को अभी टालता हूँ। तुम बडे अच्छे मिल गए जगत भइया !" और अँगनू अपने साथियो के पास चला गया।

जगतप्रकाश अपने घर लौट आया, अपने अन्दर ही उलझा हुआ। जो कुछ हो रहा है वह गल्त हो रहा है, लेकिन शायद उस सबका होना अनि-वार्य है। तो क्या यह आन्दोलन हिंसात्मक हो जाएगा और ब्रिटिश सरकार को उखाड फेकेगा ? नही, यह सब नही हो सकता, इसे होना नही चाहिए। जापान बर्मा मे रुका हुआ इस आन्दोलन की सफलता की प्रतीक्षा कर रहा है। उसने अँगनू को कुछ समय के लिए रोक दिया है, लेकिन वह किस-किसको रोक सकेगा ?

और फिर उसे उस मीटिंग की याद हो आई जिससे लौटकर वह आया था। कुछ छोटे-से आदमी, और वे भी अपराधी किस्म के। जनता को जैसे इस सबमे कोई दिलचस्पी नही थी। दस पाच साधारण लोग कुछ सहमे हुए उस मीटिंग मे भाषणो को सुन रहे थे। यह जन-समुदाय क्या इस आन्दो-लन का साथ देगा ? शायद नही, शायद हाँ। भावना के आवेग मे लोग न

जाने क्या क्या कर डालते हैं।

जगतप्रकाश को भोजन कराते हुए अनुराधा ने कहा, 'सुना है अगनू साह ने यहां कोई सभा बुलाई थी ?"

"हां, रास्ते में रामलखन मास्टर मिल गए थे, वह मुझे उस सभा में घसीट ले गए थे।"

"ये लोग कुछ उपद्रव करना चाहते हैं, लेकिन यह अच्छा नहीं है। महात्मा गांधी गिरफ्तार हो गए तो हो गए, उनकी गिरफ्तारी से देश भर में मार-काट मच जाए, यह भी कोई बात है। अभी कुछ देर पहले सुमेर बतला गया है कि तुम अँगनू साह से बड़ी देर तक अकेले कुछ बात करते रहे। तुम तो जानते ही हो कि यह अँगनू अच्छा आदमी नहीं है, उससे दूर रहने में ही कल्याण है। हां, एक बात कहना तो मैं भूल गई। तुम्हारे आने के एक दिन पहले बनारस से जयबहादुर वकील की चिट्ठी आई थी, उन्होंने तुम्हारे बारे में फिर पूछा है। उनकी लड़की ने एम० ए० पास कर लिया है और नवम्बर दिसम्बर में वह अपनी लड़की की शादी करना चाहते हैं। उन्होंने लिखा है कि मैं तुम्हें मनाकर दो एक दिन के लिए बनारस भेज दूं। वहां तुम लड़की देख लो और बात पक्की कर लो।"

जगतप्रकाश ने अपनी बहन की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह सोचने लगा—उसे एक बार फिर से नया जीवन आरम्भ करना है, और नया जीवन आरम्भ करने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपना विवाह कर ले। इलाहाबाद जाकर यूनीवर्सिटी की सर्विस में फिर से वह प्रवेश करेगा, और फिर विवाह करके स्थायी रूप से वह वहाँ बस जाएगा, मन-ही मन बड़ी तेज़ी के साथ वह योजना बना रहा था।

जगतप्रकाश को मौन देखकर अनुराधा बोली, "क्या, चुप क्यों हो ? मेरी बड़ी साध है कि मैं तुम्हारा विवाह कर दूं। इतनी लम्बी दुख की ज़िन्दगी मैंने इस साध को पूरी करने के लिए ही काटी है। इसके बाद मैं सुख से मर सकूंगी। कभी-कभी मुझे ऐसा लगने लगता है कि मुझे इस दुनिया से चलना होगा। तो मेरी यह बात मान लो।"

जगतप्रकाश बोला, 'ऐसी अशुभ बात न करो दीदी, तुम्हीं तो मेरी सब-कुछ हो। जैसा चाहो वैसा करो।"

अनुराधा के मुख पर सतोष की एक मुसकराहट आई, 'तो फिर तुम कल बनारस चले जाओ। अगर लडकी पसन्द हो तो उनसे कह देना, नारान म वरिच्छा हो जाए। जाडे मे शादी हो जाएगी।"

अपनी वहन का अनुरोध जगतप्रकाश को मानना ही था। उसे भरोसा तो नही था कि बाबू जयबहादुर जेल के बाहर होगे, काग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी होने के नाते वह जेल के बाहर कसे रह सकते थे, लेकिन अपनी बहन पर उसने अपनी शका नही प्रकट की। उसके अन्दर भी अपने गाव से निकलकर अपने प्रान्त की दशा देखने की इच्छा बलवती हो गई थी। दूसरे दिन सुबह के समय वह स्टेशन के लिए रवाना हो गया।

स्टेशन उजाड पडा था। कुल चार-पाच आदमी वहा मौजूद थे। स्टेशन-मास्टर से उसे पता चला कि रात वाली पैसजर भी अभी तक नही आई है, गाडियो के समय मे बडी गडबडी पैदा हो गई है। रात की पसजर बस्ती से छूट चुकी है, आधे घण्टे के अन्दर ही आनी होगी। जगतप्रकाश ने सुमेर के साथ बैलगाडी को भेज दिया।

आधे घण्टे के स्थान पर एक घण्टे बाद पसजर आई, रेंगती हुई। उस पसेंजर पर ब्रिटिश फौज की एक कम्पनी थी, साथ ही सशस्त्र पुलिस की एक बटालियन थी। थोडे से यात्री—और वे सहमे हुए अपने डिब्बो मे बैठे थे। जगतप्रकाश एक सेकण्ड-क्लास कम्पार्टमेण्ट मे बैठ गया।

दोपहर के समय गाडी गोरखपुर पहुँची। गोरखपुर मे पता चला कि वहाँ से बनारस होते हुए इलाहाबाद जाने वाली गाडी पिछले दिन से बन्द है, शायद भटनी के आगे रास्ते मे कही कोई गडबडी है—उधर से भी कोई गाडी नही आई है। भटनी जाकर ही उसे पता चलेगा कि क्या मामला है।

ब्रिटिश सेना की कम्पनी गोरखपुर मे ही उतर गई, पुलिस की बटालियन गाडी पर ही बैठी रही। एक घण्टे तक गाडी गोरखपुर स्टेशन पर रुकी रही, फिर वह आगे बढी।

और जगतप्रकाश सोच रहा था कि यह सब क्या हो रहा है? बम्बई से महोना आते समय उसे भुसावल जक्शन पर पता चला था कि नागपुर की तरफ विद्रोह उठ पडा है, और यहाँ भी वह विद्रोह आ पहुँचा है। देश के कितने भागो मे यह विद्रोह है? इसका उसे पता नही। जब से वह महोना

पहुँचा है उसे कोई अखबार पढने को नहीं मिला। लेकिन स्थिति सरकार के वश में नहीं मालूम होती। कितने स्थानों पर सेनाएँ भेजी जाएगी? और यह पुलिस—यह तो हिन्दुस्तानी है। क्या यह पुलिस स्वयं विद्रोह न कर देगी?

भटनी जक्शन पर जगतप्रकाश उतर पडा। सेकण्ड-क्लास वेटिंग रूम में अपना असबाब रखकर उसने स्टेशन मास्टर से पूछा कि बनारस जाने वाली गाडी कब छूटेगी?

कुछ आश्चर्य और कुछ उलझन के स्वर में स्टेशन-मास्टर बोला, "आपको पता नहीं? बीच में लाइन उखाड दी गई है। हर जगह यहा विद्रोह फैला हुआ है। कल रात यहा का स्टेशन जलाने की कोशिश की गई थी—फौज ने गोलिया चलाई, तीस चालीस आदमी मरे, तब भीड भागी। आप देख रहे हैं कितनी फौज और पुलिस इकट्ठा है यहाँ पर! अगर स्थिति काबू में आ गई तो कम-से-कम पन्द्रह दिन लग जाएगे इस लाइन के चालू होने में।" और कुछ रुककर उसने कहा "ऐसी हालत में आप घर से निकल क्या पडे? आप अपने घर वापस जाइए, कब और कहा क्या हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता।"

सिवा महोना वापस लौटने के और कोई चारा नहीं। जगतप्रकाश ने पूछा, "बस्ती के लिए गाडी किस वक्त मिलेगी?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता। बिहार में भी उपद्रव हो रहे हैं, यह तो क्राति की आग लग गई है। अभी इस मेन लाइन के टूटने की कोई खबर नहीं है, इसलिए कोई-न-कोई गाडी जरूर आएगी—आप वेटिंग रूम में आराम कीजिए, जब गाडी आए तब चले जाइएगा, कुली से कह दीजिएगा।"

दूसरे दिन सुबह पाच बजे जगतप्रकाश को गाडी मिल सकी। गाडी में मशीनगन लिये हुए सैनिक थे। जगतप्रकाश ने देखा कि लाइन के किनारे किनारे पुलिस और फौज के आदमी थोडी थोडी दूर पर तैनात हैं। लाइन के पास वाले गाँवों में सन्नाटा छाया हुआ है। कहीं कहीं लाइन के किनारे किनारे कुछ लोग इकट्ठा होकर ढेले फेंक देते थे और तभी गाडी के ऊपर से सिपाही मशीनगनों से गोलियों की वर्षा कर देते थे। भीड भागती या पागल और मृतकों को छटपटाती हुई, और गाडी बढ जाती थी।

दोपहर के समय गाडी सिखल पहुँची, लेकिन उस स्टशन पर वह रुकी नही। सिखल स्टेशन जल रहा था और पुलिस तथा फ़ौज के सिपाही आग बुना रह थे। गाडी आगे बढ गई। वह बस्ती स्टशन पर रुकी। जगतप्रकाश बस्ती स्टशन पर उतर पडा। उसके मन म घबराहट पैदा हो गई थी। अराजकता की आग उसके क्षेत्र म भी पहुँच गई ह। अँगनू को उसने रोक दिया था, लेकिन रुकता कौन है ? महोना की क्या हालत होगी ? जगतप्रकाश ने बस्ती स्टशन से महोना के लिए एक इक्का लिया। दो घण्ट म वह महोना पहुँच जाएगा। कच्ची सडक पर इक्का चल रहा था, सडक के दोना ओर गन्ने, ज्वार और धान के खेत लदे खडे थे और उन खेता म किसान काम कर रह थे। इक्के वाला कह रहा था, "सुना ह सिखल स्टशन जला दिया गया है, लेकिन फौज वहाँ पहुँच गई आर उपद्रवी रेल की पटरी नही उखाड पाए। गाडी भी चली है आस-पास के कुछ गावो म। कोई घर के बाहर नही निकल रहा है। हम भी डर लग रहा है।"

डर इक्के वाले को बस्ती स महोना चलने के समय भी लग रहा था। जगतप्रकाश ने दस रुपये देन को कहा तब कहीं इक्के वाला महोना चलन को राजी हुआ था। य लोग महोना से करीब तीन चार मील रह गय थे जब इक्के वाले ने इक्का रोक दिया। उसने जगतप्रकाश से कहा, "मालिक, भागकर कही खेत म छिप जाओ, मात आ रही है।" और वह भागकर एक ज्वार के खेत म घुसकर लेट गया। जगतप्रकाश को दूर पर उसे एक जीप दौडी आ सडक पर इसी ओर आ रही थी। कुछ सोचकर वह भी एक ज्वार के खेत म घुस गया।

जीप मे मशीनगन चलने की आवाज आ रही थी। ऐसा लगता था कि जीप पर बैठ हुए लोग जगह जगह पर मशीनगना से गोलियो की बौछार करत हुए चल रहे हैं। वह खेत, जिसमे य लोग छिपे थे, सडक से करीब सौ गज की दूरी पर था। और जहा इन लोगा का इक्का रुका था, जब जीप वहा से गुजरी तब सडक के दोनो ओर मशीनगन की गोलियो की एक और बौछार हुई आर फिर जीप आग बढ गई।

काफी दर तक खेत मे चुपचाप खडे रहन के बाद जगतप्रकाश बाहर निकला। उसने इक्के वाले को आवाज दी, और भय से कापता हुआ इक्के-

"क्या हुआ ?" जगतप्रकाश ने सुमेर को उठाते हुए पूछा।

"मालकिन—मालकिन जाय रही हैं।" सुमेर की हिचकियाँ बँध गई। जगतप्रकाश उसे धकेलकर आगे बढ़ा, भीड़ ने उसे रास्ता दिया। बाहर वाले दालान में एक चारपाई पर अनुराधा लेटी थी, खून से भीगी हुई, और उसके जख्मों से खून लगातार निकल रहा था। जगतप्रकाश अनुराधा के सिरहाने पहुँचकर चिल्ला उठा, "हाय दीदी—यह क्या हुआ !"

अनुराधा बेहोश नहीं थी, जगतप्रकाश की आवाज सुनते ही उसने आँखें खोल दीं, "तुम आ गए—हे मेरे भगवान् ! तुम्हारे लिए ही यह प्राण अटके थे। अब मुझे जमीन पर लिटा दो। थोड़ा-सा गंगाजल और तुलसीदल।"

"नहीं दीदी, तुम मरोगी नहीं, मैं तुम्हें अभी बस्ती के अस्पताल में लिये चलता हूँ। सुमेर "

"नहीं भइया, मैं तो मर चुकी हूँ। शरीर गोलियों से छलनी हो गया है। सिर्फ तुम्हें देखने को प्राण अटके रहे। कहा न कि जमीन पर लिटा दो।"

जगतप्रकाश ने अनुराधा को जमीन पर लिटा दिया, सुमेर गंगाजली से गंगाजल और तुलसीदल लेने चला गया। अनुराधा ने उपस्थित लोगों से कहा, "अब तुम लोग जाओ, भइया आ गए हैं।"

लोगों के जाने के बाद उसने जगतप्रकाश से कहा, "बैठ जाओ मेरे पास और मेरा हाथ पकड़ लो। भइया ये जालिम अंग्रेज—क्या ये हम सब लोगों की हत्या कर देंगे? निहत्थे आदमियों पर गोलियाँ चला रहे थे, चार आदमी मर गए, पन्द्रह बीस आदमी जख्मी हुए। मैंने उन्हें रोका तो मुझे भी गोलियों से भून दिया। हाय ! बड़ा दर्द हो रहा है।"

'मेरी दीदी !" जगतप्रकाश चीख उठा, 'क्या यही देखना बदा था। मैं भी जिन्दा नहीं रह सकूँगा।"

एक करुण मुसकान आई अनुराधा के मुख पर, 'भइया, भगवान् तुम्हें जिन्दा रखेगा। तुम्हारी बला मैंने अपने ऊपर ले ली है। दुःख इतना है कि मैं तुम्हारा घर नहीं बसा पाई।"

सुमेर गंगाजल और तुलसीदल ले आया था। अनुराधा बोली, "बड़ी प्यास लगी है भइया ! अपने हाथों गंगाजल पिला दो मुझे, इस पीड़ा से तो छुटकारा मिले।"

जगतप्रकाश ने गंगाजल के गिलास में तुलसीदल डालकर गिलास अनुराधा के होठों से लगा दिया, और गंगाजल पीते-पीते अनुराधा का सिर लुढक गया। जगतप्रकाश ने देखा कि असीम शान्ति है उसके मुख पर।

जगतप्रकाश अवसन्न रह गया। मृत्यु के जिन विकराल दृश्यों को युद्ध क्षेत्र में देखकर वह लौटा था, वैसा ही विकराल दृश्य यहा उसके घर में। लेकिन जगतप्रकाश की आखो में आसू नहीं थे। पत्थर की तरह वह रात भर बैठा रहा अनुराधा के सिरहाने, और उसके साथ-साथ सुमेर भी जागता रहा। सुबह जगतप्रकाश के घर के सामने लोग इकट्ठे हो गये—और वे सब लोग विलख रहे थे। उस गाव का सबसे बड़ा आत्मीय जाता रहा। उस गाव के निवासियो को बचाने में उस आत्मीय ने अपने प्राण दे दिए। और विधिवत अनुराधा का दाह-संस्कार जगतप्रकाश के हाथो किया गया।

केवल एक बन्धन था जगतप्रकाश को बाधे हुए—और वह बन्धन भी इस अप्रत्याशित रूप से टूट गया। दुनिया में वह नितान्त अकेला रह गया। इस अकेलेपन को वह कैसे भोग पाएगा? जगतप्रकाश के पास गीता की वह प्रति थी जो उसे परवेज ने बम्बई में दी थी। उसीमें तो भगवान कृष्ण ने कहा था—न शस्त्र मुझे बेध सकते हैं न आग मुझे जला सकती है, यानी मनुष्य कभी मरता नहीं। जो बिधा था और जो जला था वह अनुराधा नहीं थी—अनुराधा का शरीर था। अनुराधा स्वयं नहीं मरी, वह जीवित है कहीं किसी रूप में। लेकिन वह सशरीर अनुराधा, जो उसकी बहन थी, जिसका जगतप्रकाश को पूरा सहारा था, वह तो चली गई। दुनिया की इस उथल पुथल ने उसके एक-मात्र सहारे को उससे छीन लिया, उसने उसका एक-मात्र बन्धन काट दिया। लेकिन यह सब क्या हुआ?

ये ब्रिटिश सैनिक! ये जर्मन सैनिको से अच्छे किस बात में हैं? जर्मन सैनिकों के जघन्य अपराधो के सम्बन्ध में इतना लिखा गया है, उसने इतना पढा और सुना है। लेकिन ये ब्रिटिश सैनिक! ये भी तो भयानक निर्ममता के साथ हत्याएँ कर रहे हैं। अभी तक उसने जो कुछ सोचा-समझा था वह गलत था। युद्ध पाशविक है हत्या पाशविक है। एक तरह का रोष जाग उठा जगतप्रकाश के अन्दर ब्रिटेन के खिलाफ। इस ब्रिटिश जाति से बुरा कोई नहीं होगा, चाहे वह जर्मनी हो, चाहे वह जापान हो। जगतप्रकाश

अन्दर एक प्रकार की ग्लानि भर गई अपने ही प्रति।

तेरह दिन तक वह अपने अन्दर ही सोचता रहा, अपने से ही तर्क करता रहा, अपने को धिक्कारता रहा और साथ ही अपना रास्ता खोजता रहा। पुत्र की भांति उसने अपनी बहन के सब संस्कार किये। और तेरहवीं होने के बाद दूसरे ही दिन उसने सुमेर को बुलाया, "अब क्या होगा सुमेर? दीदी तो चली गई और दीदी के साथ साथ इस गांव का मेरे साथ रिश्ता भी गया।"

"ऐसा मत कहो भइया! बाप-दादा का घर बार और जमीन भी भला कहीं छोडी जाती है? हम तो हैं तुम्हारे पुश्तैनी सेवक! तुम जहां भी रहो, हम तुम्हारा काम-काज देखते रहेंगे।"

जगतप्रकाश ने सिर हिलाया, "नहीं सुमेर, यह पुश्तैनी सेवकाई का युग नहीं है और न पुश्तैनी जमीन-जायदाद का युग है। इस गांव में मेरा सम्बन्ध हमेशा के लिए टूट रहा है।"

सुमेर डबडबाई आंखों से जगतप्रकाश को कुछ देर तक देखता रहा, फिर उसने कहा, "चार-पांच दिन हुए अंगनू साह मिले थे। वह कहते थे कि भइया इस गांव में नहीं रहेंगे। तो अगर भइया अपना मकान और अपनी जमीन बेचना चाहें, तो वह खरीदने को तैयार हैं। जमीन, मकान, गोरू और गाड़ी—सब-कुछ खरीद लेंगे, चार हजार रुपये में।'

जगतप्रकाश ने उदास भाव से कहा, "नहीं सुमेर, बिकेगा कुछ नहीं। जमीन मैं तुम्हारे नाम कर दूंगा, हल-बैल भी जमीन के साथ ही जाएंगे तुम्हारे पास। रहा घर, वह मेरे पास अभी रहेगा जब तक कोई उचित व्यवस्था न हो जाए। तुम पहले की तरह सब-कुछ संभालते रहो। मैं तो चला जा रहा हूं। कब लौटूंगा, इसका मुझे पता नहीं।"

अनुराधा के पास कुछ गहने, कुछ कपड़े और नकद तीन हजार रुपये निकले। कपड़े जगतप्रकाश ने गांव की औरतों को बांट दिये, गहने और रुपये उसने अपने साथ ले लिये। इसके बाद उसने घर में ताला लगाया। ताले की चाभी सुमेर के हाथ में देकर कहा, "कभी कभी घर की सफाई करा देना, और अगर मरम्मत की जरूरत पड़े तो मरम्मत भी करा देना। जब मुझे गांव आना होगा मैं तुम्हें चिट्ठी लिख दूंगा।"

दो सत्रह-अठारह दिनों में आन्दोलन ठण्डा पड़ गया था, जगतप्रकाश महीनों से इलाहाबाद पहुँचा।

एक होटल में अपना असबाब रखकर जगतप्रकाश ने पहला काम जो किया, वह था गहनों को बेचना। इसके बाद वह बैंक में गया। उसका एकाउंट अभी बैंक में मौजूद था, करीब चार सौ रुपए। उसने अपने पास एक हज़ार रुपया रखकर पाँच हज़ार रुपए बैंक में जमा कर दिए। इस सबमें उसे पूरा दिन लग गया। शाम के समय वह प्रोफेसर शर्मा के घर पर पहुँचा।

प्रोफेसर शर्मा जगतप्रकाश को देखते ही उठ खड़े हुए, "अरे जगत प्रकाश, तुम! यहाँ बैठो, कब आए?"

"आज सुबह आया हूँ सर! अपने गाँव से, वहाँ सब-कुछ समाप्त करके।" और जगतप्रकाश ने अपनी बहन की मृत्यु के सम्बन्ध में तथा उसके पहले वाली अपनी गतिविधि के सम्बन्ध में विस्तार के साथ सब-कुछ बतला दिया।

जगतप्रकाश की कहानी सुनने के बाद प्रोफेसर शर्मा ने एक ठंडी साँस ली, "मुझे तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है। लेकिन जो कुछ हुआ है उसे एकदम भुला दो। अब नये सिरे से तुम्हें जिन्दगी शुरू करनी है। यूनीवर्सिटी में तुम्हारे लिए स्थान अब भी है क्योंकि मैंने तुम्हारी पोस्ट अभी तक नहीं भरी है। तुम्हारे लिये जाने में अब किसी तरह की बाधा नहीं होगी। हाँ, आर्मी से तुम अपना डिस्चार्ज सर्टिफिकेट तो अपने साथ लाए हो।"

"जी हाँ, वह मेरे पास है।" जगतप्रकाश बोला।

"तो, तुम कल दस बजे मेरे डिपार्टमेंट में मुझसे मिलना। और हाँ, तुम ठहरे कहाँ हो?"

"एक होटल में ठहर गया हूँ सर! दो एक दिन में कोई मकान ढूँढ़ लूँगा।"

"क्या बतलाऊँ, मेरे यहाँ कुछ मेहमान आ गए हैं और एक महीने से यहीं रुके हुए हैं। इन उपद्रवों के कारण वे जा नहीं सके। नहीं तो मैं तुम्हें अपने यहाँ बुला लेता।" और इसी समय डाक्टर शर्मा का नौकर चाय की ट्रे ले आया।

जगतप्रकाश ने चाय बनाते हुए पूछा, "सर, यहाँ इलाहाबाद में तो

काई तोड फोड नही हुई, ऐसा लगता है।"

डॉक्टर शर्मा ने सिर हिलाया, "नही, और होने की सम्भावना भी नही थी। कुछ थोडे-से जुलूस, कुछ हडताल, कुछ लाठी चार्ज और कुछ गिरफ्तारिया, और 'भारत छाडो' आन्दोलन समाप्त हो गया। यह आन्दोलन क्या था, एक मशाल था।"

'लेकिन सर, पूर्वी युक्तप्रान्त मे, वहा ता सकडा हजारा लोग मरे। वहाँ कुछ दिना तक तो ब्रिटिश राज्य रह ही नही गया था। मुझे ही इस आन्दालन की वडी महँगी कीमत चुकानी पडी अपनी बहन को खोकर। मेरी ता जडें ही उखड गई हैं अपन गाव से।"

प्रोफेसर शमा ने चाय पीते हुए कहा, "किसकी जड कहा हैं, मैं आज तक यह नही समझ पाया। लोग मकान बदलते रहत हैं, स्थान बदलत रहत हैं, देश बदलते रहते हैं—अनादि काल से, और दुनिया अपनी गति से चल रही है। तुम वह सब भूल जाओ। एक तरह से तुम बडे भाग्यशाली हो, इतनी कम अवस्था मे और इतने कम समय मे तुम्ह इतन अनुभव हो चुके है।" और डॉक्टर शर्मा ने कुछ रुककर कहा, "इस देश म जो कुछ हुआ वह अच्छा नही हुआ, लेकिन उस सबका हाना अनिवाय था।"

उसी समय एक कार बँगले मे आई। वह कार जगतप्रकाश का कुछ पहचानी-सी लगी। जगतप्रकाश को कार की ओर दखते देखकर प्रोफेसर शर्मा न कहा, "यह सुषमा वसगोपाल है, तुम तो इसे जानते ही हो। अपनी थीसिस के सम्बन्ध म आई होगी।" तभी सुषमा कार से उतरकर बरामदे म आ गई। उसके हाथ मे एक मोटा-सा रजिस्टर था।

सुषमा की नजर जगतप्रकाश पर पडी। उसने एक हल्की मुस्कराहट के साथ जगतप्रकाश को नमस्ते करते हुए प्रोफेसर शर्मा से कहा, "प्रणाम सर! यह थीसिस मैंने टाइप करा ली है और कल मैंने सबमिट भी कर दी है। इसकी एक प्रति आपको देने आई हूँ।"

"अपन गाइड को तो एक प्रति दे दी होगी।" प्रोफेसर ने थीसिस हाथ म लेकर उस खोलते हुए कहा।

"जी हा सर! डॉक्टर भारद्वाज ने ही मुझे आपके पास भेजा है।" सुषमा ने एक खाली कुरसी पर बठते हुए कहा।

"यह डॉक्टर जगतप्रकाश हैं, इन्हे तो तुम जानती ही होगी। इन्होने आर्मी ज्वाइन कर ली थी, इजिप्ट के युद्ध मे यह लडे हैं। अब फौज छोडकर कल से यूनीवर्सिटी मे वापस आ रहे हैं।"

सुषमा ने विस्फारित नयनो से जगतप्रकाश को देखा, "सच डाक्टर! आप फौज मे थे और इजिप्ट के युद्ध म आपने भाग भी लिया! कितनी शानदार बात है! मैं सोचती थी कि आप कहा गायब हो गए।" फिर उसने प्रोफेसर शर्मा की ओर मुडकर कहा, "सर, पिछली बार—शायद जनवरी मे, मैंने इनके लिए यहा एक मकान तय कर दिया था, लेकिन यह एकाएक बिना मुझे बताए यहा से चले गए।"

प्रोफ़ेसर शर्मा मुसकराए, "और सितम्बर मे फिर वापस आ गए। सुबह का भूला अगर शाम को घर वापस आ जाए तो भटका हुआ नही कहलाता है। और इनको इस दफा भी मकान की ज़रूरत है। तो इस दफा यह गायब नही होगे, क्योकि मैं इन्हे कल ही यूनीवर्सिटी ज्वाइन करा दूगा।"

सुषमा ने ताली बजाते हुए कहा, "यह तो बडी अच्छी खबर है डाक्टर प्रकाश! और मैं कल तक निश्चय ही आपके लिए मकान ढूढ दूगी, सिविल लाइस मे ही। अभी आप कहा ठहरे हैं?"

"जास्टनगज के पजाब होटल मे ठहरा हूँ।" जगतप्रकाश बोला।

"अरे, वह भी कोई ठहरने की जगह है," सुषमा बोली, 'इससे तो सिविल लाइस के किसी होटल मे ठहर जाते।" और फिर वह प्रोफेसर शर्मा की ओर घूमी, "सर! आप जल्दी ही इस थीसिस को परीक्षको के पास भिजवा दें, इस कनवोकेशन मे मुझे डिग्री मिल जाए।"

"इतनी जल्दी क्या है?" डॉक्टर शर्मा मुसकराते हुए बाले, 'खर, मैं कोशिश करूँगा। कल ही मैं इसे परीक्षको के पास भिजवा दूगा।"

डॉक्टर शर्मा उठ खडे हुए, "मुझे एक मीटिंग म जाना है। डाक्टर जगतप्रकाश, कल दस बजे सुबह मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूँगा। उस मीटिंग मे आज शाम को ही वाइस-चासलर से मेरी मुलाकात होगी, मैं वहा सब कुछ तय कर लूगा। कल सुबह तुम यूनीवर्सिटी ज्वाइन करके अपना काम आरम्भ कर दो।"

जगतप्रकाश के साथ सुषमा भी उठ खडी हुई। प्रोफेसर शर्मा घर के

अन्दर चले गए और जगतप्रकाश के साथ चलते हुए सुषमा ने कहा, "चलिए, आप जहाँ जाना चाहें मैं आपको पहुँचा दूँ।"

'अभी तो मैं अपने होटल ही जाऊँगा। आप मुझे कटरा में उतार दें, वहाँ से मैं कोई सवारी ले लूँगा।" जगतप्रकाश ने सुषमा के साथ कार पर बैठते हुए कहा।

सुषमा ने कार कटरा की ओर मोड़ने के स्थान पर कर्नलगंज होते हुए एल्फ्रेड पार्क की ओर मोड़ दी। जगतप्रकाश ने पूछा, "क्या आपको इधर कोई काम है?"

"नहीं, भला एल्फ्रेड पार्क में मुझे क्या काम हो सकता है? मैंने सोचा कि मैं आपका होटल ही देख लूँ, आपको आपके होटल में उतारकर घर वापस जाऊँगी।" और कुछ रुककर उसने किंचित् उदास स्वर में कहा, "घर में भी एक उदासी का वातावरण है। आपको शायद यह पता नहीं है कि जून में पापा को पैरेलिटिक एटैक हुआ था, तब से वह बिस्तर पर पड़े हैं। अभी तक वह अच्छे नहीं हो पाए हैं, बड़ा सीरियस एटैक था। डाक्टरों का कहना है कि अभी छः महीने और लगेंगे। दिन रात कराहा करते हैं। बड़े चिड़चिड़े हो गए हैं। और सिवा मेरे उनकी देख-भाल करने वाला भी तो ममी को छोड़कर और कोई घर में नहीं है। बड़े भाई साहब तो विलायत में ही फँस गए हैं इस वार की वजह से।"

"मुझे बड़ा दुःख हुआ यह सुनकर।" जगतप्रकाश बोला "वाकई तुम्हारे ऊपर बड़ी मुसीबत आ पड़ी है।"

उदासीनता के भाव से सुषमा ने कहा, "हाँ, कुछ आर्थिक कठिनाइयाँ भी पैदा हो गई हैं। वैसे पापा ने काफी रुपया इकट्ठा कर रखा है बैंक में, लेकिन उनके इलाज में खर्च भी बहुत हो रहा है। अच्छा छोड़िए भी इस बात को, कहाँ मैं अपना पचड़ा लेकर बैठ गई! आपसे आपके सम्बन्ध में मैंने कुछ पूछा ही नहीं। अच्छा, आप तो वार में अफसर बन गए होंगे, वहाँ से चले क्यों आए?"

"मैं बीमार पड़ गया था और डॉक्टरों ने मुझे डिस्चार्ज करा दिया।" एक छोटा-सा उत्तर।

'यह बड़ा अच्छा हुआ। नहीं तो आप ज़िन्दा उस युद्ध से लौटते, यह

कहना बडा मुश्किल था। मुझे वाकई बडी खुशी हुई कि आप इलाहाबाद मे फिर वापस आ गए। पापा ने आपको जो झूठ मूठ फसवाकर आपका कॅरियर नष्ट किया, उसकी सजा उन्हे मिल गई।"

"ऐसी बात न कहो!" जगतप्रकाश बोला, "आदमी कुछ नही करता चीजें हो जाया करती हैं। मेरे मन मे तुम्हारे पापा के प्रति किसी तरह की कटुता नही है। उन्होने जो कुछ किया वह रूपलाल के बहकावे म आकर किया। असल मे रूपलाल खुद यमुना से विवाह करना चाहता था और उसने उससे विवाह कर भी लिया।"

"और पापा आपके साथ मेरा विवाह करना चाहते थे।" सुषमा हँस पडी, "रूपलाल ने यमुना से विवाह कर लिया और पापा आपसे मेरा विवाह नही कर पाए। है न मजेदार बात! और मैं सोचती हूँ कि लोग विवाह के लिए दीवाने क्यो रहते है? विवाह आखिरकार एक बन्धन ही तो है, लोग जान-बूझकर अपने को इस बन्धन मे क्यो बाधना चाहते हैं?"

"शायद इसलिए कि मनुष्य स्वय शरीर के बन्धनो से जकडा हुआ जन्म लेता है, यह जीवन स्वय एक बन्धन है। मुक्ति तो मृत्यु म होती है।" जगतप्रकाश बिना कुछ सोचे विचारे कह गया।

"नही, आप ऐसी बात न कहिए। अभी मैं मृत्यु की कामना नहीं कर सकती, बिलकुल नही।"

कार जास्टनगज म पजाब होटल के सामने पहुँच गई थी। जगतप्रकाश से सुषमा ने कहा, "बडी गन्दी जगह है यह होटल, भीड और शोर! आपको रात मे नींद कैसे आएगी? कल पहला काम जो मैं करूँगी वह सिविल लाइन्स के किसी बँगले म आपके लिए एक हिस्से का ढूढना।" और जगतप्रकाश को कार से उतारकर सुषमा चली गई।

दूसरे दिन ठीक दस बजे जगतप्रकाश यूनीवर्सिटी पहुँच गया। प्रोफेसर शर्मा ने कहा, "कल शाम को मैंने वाइस चासलर से बात कर ली है। तुम उनसे मिलकर दफ्तर मे रजिस्ट्रार को ज्वाइनिंग रिपोर्ट दे दो। और कल से तुम सेमिनार क्लास लेना शुरू कर दो, पहली अक्टूबर से तुम्हें बी० ए० फस्ट ईयर का एक पीरियड लेना होगा। रजिस्ट्रार-ऑफिस से तुम स्टाफ रूम मे आ जाना।"

जगतप्रकाश फिर से यूनीवर्सिटी मे आ गया। उसने अपने अन्दर एक तरह के सन्तोष का अनुभव किया। लेकिन क्या वह वास्तव मे सन्तोष था? स्टाफ़ रूम मे उसके पुराने सहयोगी मौजूद थे, उन सबने उसका हार्दिक स्वागत किया। लोगो को वह अपने अनुभव सुनाता रहा। तभी उसने देखा कि सुषमा डाक्टर भारद्वाज को ढूढती हुई स्टाफ रूम म आ गई। सुषमा ने डाक्टर भारद्वाज से कहा, "डॉक्टर, कल शाम मै प्राफेसर को अपनी थीसिस दे आई। आपके पास आई हूँ कि आप उनसे यह थीसिस आज ही परीक्षक के पास भिजवा द, प्रोफेसर ने वायदा कर लिया ह।"

"आज तो प्रोफेसर डाक्टर जगतप्रकाश के काम काज मे बिजी रहे, उनसे मेरी मुलाकात ही नही हुइ। कल सुबह के वक्त मैं उनसे मिलकर जरूर भिजवा दूगा, अपने सामने। इन्हे तो तुम जानती होगी, डाक्टर जगतप्रकाश! आज से यह फिर हम लोगो के साथ आ गए है।"

"कल प्रोफेसर के यहा मैं इनसे मिल चुकी हूँ। यहा इनसे भी मिलना था मुझे। कल प्रोफेसर ने इनके लिए मकान ढूढने का भार मुझ पर डाल दिया था, तो वह मकान मैंने ढूढ दिया है।" और वह जगतप्रकाश की ओर घूमी, "आप तो खाली होग डॉक्टर प्रकाश!"

जगतप्रकाश ने घडी देखी, तीन बज चुके थे, उसने उठते हुए कहा, "हाँ, मैं खाली हूँ, चलू, मकान भी तय कर लू चलकर।"

एलगिन राड पर एक बडे बँगले म दो कमरो का एक हिस्सा खाली था। मकान की हालत अच्छी नही थी, ऐसा दिखता था कि बहुत दिनो से उसकी देख भाल नहीं हुई है। सुषमा ने कहा, "इस बँगले के स्वामी मिस्टर चोपडा का देहान्त हो चुका है। चोपडा साहब का बडा लडका इजीनियर है शाहजहाँपुर मे, छोटा लडका दिल्ली मे अपने मामा के साथ रहकर पढ रहा है। चोपडा साहब की पत्नी और दो छोटे-छोटे लडके यहा हैं।" और सुषमा न मकान खुलवाया। जगतप्रकाश को वह हिस्सा पसन्द आया।

श्रीमती चोपडा मोटी-सी अधेड महिला थी, उन्होंने सुषमा से पूछा, "यह भले आदमी तो हैं! क्या करते ह?"

सुषमा बोली, 'मैं इन्हे लाई ह तो इन्हे भला आदमी ही होना चाहिए चाचीजी, वो यह यूनीवर्सिटी मे प्रोफेसर हैं।'

श्रीमती चोपडा यह जानकर कि जगतप्रकाश यूनीवर्सिटी में प्रोफेसर हैं, सतुष्ट हो गई, "अभी तो बच्चे दिखते हैं।" फिर उन्होंने जगतप्रकाश से पूछा "तुम्हारी शादी हो चुकी है ? घर म कौन-कौन है ?"

"घर मे कोई नही है, अभी शादी नहीं की है।" जगतप्रकाश बोला।

"तो फिर ठीक है। बात यह है कि ज्यादा आदमियों से मकान गदा रहता है। इन कमरों म सब-कुछ सामान मौजूद है, पलग, कुर्सी, मेज, बिजली का पखा। साथ मे रसोई का कमरा है और गुसलखाना है। किराया पचास रुपये होगा।"

जगतप्रकाश ने उत्तर दिया, 'मुझे मजूर है, कब आ जाऊँ ?"

"जब जी चाहे—आज, अभी आ सकते हो। हा, किराया पेशगी देना होगा।"

जगतप्रकाश ने पैसे निकालकर पचास रुपये श्रीमती चोपडा को दे दिए। सुषमा ने श्रीमती चोपडा से कहा, "यह एक होटल म ठहरे हैं, अभी घण्टे-दो घण्टे म आए जाते हैं।' और उसने श्रीमती चोपडा से मकान की चाभी ले ली।

जगतप्रकाश को अपनी कार पर बिठाकर उसने कहा, "चलो, यह काम भी पूरा हुआ, अब आपको एक नौकर चाहिए जो रसोई बना सके और आपका काम-काज कर सके। दो एक दिन म नौकर का भी इन्तजाम मैं कर दूगी। अब चलें, होटल से आपका सामान ले आया जाए।"

होटल का हिसाब चुकाकर तथा अपना असबाब लेकर जब जगतप्रकाश एलगिन रोड वाले बंगले मे पहुँचा आठ बज रहे थे। सुषमा ने पूछा, "अब आप खाना कहा खाएँगे ?"

"मुझे कोई खास भूख नही है अगर भूख लगेगी तो कही होटल म खा लूगा। अब तुम घर जाओ, काफी देर हो गई है।"

सुषमा के जाने के बाद जगतप्रकाश ने अपना सब सामान निकालकर सजाया। थोडी देर म उसे श्रीमती चोपडा की आवाज सुनाई दी, 'तो आप आ गए ! आपके साथ कोई नौकर तो है नहीं, खाने का क्या इतजाम है ?'

आज खाने की तबीअत नही है, शाम को चाय पी ली थी होटल में।'

पर जगतप्रकाश को वास्तव मे भूख मालूम हो रही थी।

"नहीं, भूखे नही सोना होगा। मैं अपने नौकर के हाथ खाना भिजवाए देती हूँ। जब तक तुम नौकर का इन्तजाम नही कर लेते, नाश्ता और खाना मेरे यहाँ से आ जाया करेगा।" और श्रीमती चोपडा बिना जगतप्रकाश के उत्तर की प्रतीक्षा किये चली गइ।

भोजन करके जब जगतप्रकाश बिस्तर पर लेटा, वह सतुष्ट था, प्रसन्न था। दुनिया मे अकेली कुरुपता ही नही है, दुनिया म ममता है, सहानुभूति है, सवदना ह।

२१

जगतप्रकाश को अपने जीवन के क्रम से सतोप नही था, एक अजाव-सी एकरसता, भयानक और कुरूप ।

हर तरफ एव घुटन और सटाध । दुनिया के अनेक भागो म मत्यु और विनाश का ताण्डव हो रहा था, लोग मर रह थे और तबाह हो रह थे, लेकिन उसके इद गिद कहीं किसी तरह का परिवतन नही । जमनी रूस म दूर तक घुसकर वैठ गया था, समस्त यूरोप पर उसका कब्जा हो चुका था । जापान ने वमा ले लिया था । यह सब हुआ था करीव साल भर पहल । इसके वाद—कुछ भी नही, सिवा इधर-उधर की कुछ छोटी-छोटी घटनाओ के, जो दुनिया क महान सकट के सन्दभ म नगण्य और महत्वहीन कही जा सकती थी ।

लेकिन युद्ध हो रहा था—कही शान्ति नही, कही स्थायित्व नही । और इन युद्ध के फलस्वरूप सामाजिक एव आर्थिक व्यवस्था वेतरह विगड रही थी । चीजो के दाम तेजी स वढ रह थे—मनुष्य बदनीयत और बईमान हो गया था । वाजार म कपडा नहीं दिखता था, अठगुने या दसगुन दाम हो गए थे उसके, लेकिन इन दामा पर खरीदने की क्षमता किसम था ? इग्लड म कट्रोल लगे—उस कट्रोल के फलस्वरूप वहा ब्लैक मार्केट का जन्म हुआ, और वह ब्लैक मार्केट हिदुस्तान म पहुँच गया । यहा भी खुले वाजार स निकलकर माल ब्लैक मार्केट मे चला गया था । अनाज के दाम दुगुने और तिगुन हो रहे थे । चारा ओर एक भयानक अभाव की छाया । और इन सवका कारण था युद्ध । युद्ध के दानव के मुख म सव कुछ समाया जा रहा था—अन्न, वस्त्र, स्वाभिमान, जीवन ।

इगलैण्ड म यह ब्लैक मार्कट चल रहा था, वहा इस ब्लैक मार्कट चलने के कारण थे। एक छोटा सा द्वीप, चारो ओर समुद्र से घिरा हुआ। वहाँ सब-कुछ बाहर से आता था—अनाज, रुई अन्न, दूध, अडा, मक्खन। और जमनी की बमबारी से इगलैण्ड बुरी तरह क्षति-ग्रस्त हो चुका था। उत्पादन रुक गया था, क्योकि वहा की आधे स अधिक जनसख्या युद्ध के प्रयत्नो मे लगी हुई थी। विदेशो से माल आ नही सकता था, क्योकि जमन सबमरीनें इगलैण्ड के व्यापारी जहाजो को लगातार डुबो रही थी। वहा तो जीवन मरण का प्रश्न था।

जहा अभाव है वहा यह ब्लैक मार्कट या काला बाजार चलेगा ही। अभाव की अवस्था मे समान वितरण असम्भव है। और मनुष्य के अन्दर वाला स्वाथ, उसकी खुदगर्जी—ये वे अवयव है जिन्ह मनुष्य कभी भी अपने से अलग नही कर सका। इगलैंड मे जो कुछ हो रहा था वह स्वाभाविक था।

लेकिन वही सब इस देश मे हो रहा था, जहा किसी तरह का अभाव नही था। अन्न वस्त्र—इनकी तो प्रचुरता थी इस देश म। फिर यह सब क्या ?

दिसम्बर मास के तीसरे सप्ताह म सरदी बढनी आरम्भ हो गई थी। ज्ञानप्रकाश एक गरम सूट बनवाना चाहता था, लेकिन उसे ऊनी कपडा की क़ीमत देनी अखर गई थी। उस दिन प्रोफ़ेसर शमा न अपन सहयोगियो को अपने यहा चाय पर बुलाया था। लेक्चरर ज्ञानरजन न एक निबन्ध लिखा था—काला बाजार—अभाव का एक नया पहलू। चाय पीने के बाद ज्ञानरजन ने अपना निबन्ध पढा, और उसके बाद उस निबन्ध पर परिचर्चा आरम्भ हुई।

भारतीय अथ व्यवस्था का जो दयनीय रूप उस परिचर्चा म प्रकट हुआ उससे ज्ञानप्रकाश घबरा गया। चीजो की मँहगाई वह भुगत रहा था, लोगो की विवशता को वह अनुभव कर रहा था, और उसे आश्चय हो रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। सेना के लिए अनाज खरीदा जा रहा था, सेना के लिए कपडा खरीदा जा रहा था। लेकिन चालीस करोड आदमियो का यह देश! इसकी आवश्यकताओ का कितना प्रतिशत सेना के लिए लिया जा

सकता है ? फिर यह अभाव क्या ?

जगतप्रकाश ने उस परिचर्चा में कोई भाग नहीं लिया। अन्त में प्रोफेसर शर्मा ने उससे कहा, "डॉक्टर जगतप्रकाश ! तुमने कुछ नहीं कहा। तुम्हारा क्या मत है ?"

जगतप्रकाश को उठना पड़ा, "काला बाजार मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति की उपज है, मेरा तो ऐसा मत है, और शायद सभी लोग इससे सहमत होंगे। यह मुनाफाखोरी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण पहलू है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि इस प्रवृत्ति को अभाव की अवस्था बल देती है, और इसलिए हम आज ब्लैक मार्केट का विकृत रूप देख रहे हैं, क्योंकि युद्ध के कारण वितरण-व्यवस्था में नियन्त्रण लगा दिए गए हैं, और इसलिए मुझे तो ऐसा लगता है कि काला बाजार कन्ट्रोल का पहलू है, न कि अभाव का। अभाव स्वाभाविक हो सकते हैं, अभाव पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था द्वारा कृत्रिम रूप से पैदा किये जा सकते हैं। अगर यह पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था शासन-तन्त्र पर हावी हो जाए। और इस वास्तविक अथवा कृत्रिम अभाव के कारण, मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति के कारण चीजों के दाम बेतहाशा बढ़ सकते हैं। लेकिन काला बाजार नाम की चीज वहां नहीं होती, क्योंकि चीजें खुले बाजार में बिकती हैं और सप्लाइ एण्ड डिमाण्ड के सिद्धान्त के अनुसार इन चीजों की कीमत घटती-बढ़ती रहती हैं। लेकिन जब सरकार द्वारा चीजों के दाम स्थिर किये जाते हैं और उनकी मांग पर नियन्त्रण लगा दिया जाता है तब ब्लैक मार्केट की सृष्टि होती है। यह ब्लैक मार्केट मानव के बौद्धिक विकास की उपज है जिसका रूप इस विश्व-युद्ध की असाधारण परिस्थितियों में उभर आया है।"

सब लोग ध्यान से जगतप्रकाश की बात सुन रहे थे, प्रोफेसर शर्मा ने जगतप्रकाश की ओर बड़े कौतूहल के साथ देखा, 'तो तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि यह काला बाजार अभाव का पहलू न होकर मुनाफाखोरी का पहलू है, और चूंकि अभाव दूर भी हो सकते हैं लेकिन यह मुनाफाखोरी की प्रकृति शाश्वत है इसलिए यह ब्लैक मार्केट अभाव की स्थिति समाप्त होने पर भी कायम रह सकता है। यह तो बड़ी निराशाजनक तसवीर है डाक्टर प्रकाश !'

"मैं तो ऐसा ही समझता हूँ सर ! बौद्धिक विकास के क्रम मे मनुष्य के अन्दर वाली सद् और कल्याणकारिणी प्रवृत्तिया के साथ उसकी असद् और समाज विरोधी विकृतिया का भी विकास होता रहता है। कोई भी चीज़ अस्वाभाविक नही होती, यह काला बाज़ार पूजीवादी अथ-व्यवस्था के विकास का एक नया और मौलिक पहलू है।"

"तो इसके ये अथ हुए कि पूजीवादी अथ-व्यवस्था के विकास के साथ यह ब्लैक मार्केट भी विकसित होता जाएगा ?" डाक्टर भारद्वाज ने उत्तेजित स्वर मे पूछा, "डॉक्टर प्रकाश ! जहा तक मुझे पता है तुम समाजवादी अथ-व्यवस्था पर विश्वास करते हो।"

"आपको इसम कोई आपत्ति है क्या ?" शान्त भाव से जगतप्रकाश ने पूछा।

इसके पहले कि डॉक्टर भारद्वाज कोई उत्तर द, प्रोफेसर शमा ने कहा, "हम लोगो के व्यक्तिगत विश्वासो से कोई मतलब नही। लेकिन डॉक्टर प्रकाश, अभी-अभी तुमने कहा है कि कण्ट्रोल अर्थात् सरकारी नियन्त्रण के कारण ब्लैक मार्केट का जन्म हुआ है। मैं पूछता हूँ कि क्या सरकारी नियन्त्रण स्वय म समाजवादी अथ-व्यवस्था का पहलू नही है ?"

"मैं आपका मतलब समझ गया।" जगतप्रकाश बोला, "मैं यह स्वीकार करता हूँ कि यह सरकारी नियन्त्रण समाजवादी अथ व्यवस्था का पहलू है, केवल अध-सत्य के रूप म। यह पहलू एकागी है—आतकवाद पर आधारित, जैसा कि जमनी की अध-समाजवादी अथ व्यवस्था मे हम देख रहे हैं। उत्पादन और वितरण जब तक व्यक्ति के हाथ म हैं, नियन्त्रण के माने होंगे समाज और व्यक्ति के बीच म बौद्धिक उखाड पछाड। वहा व्यक्ति को एक अत्यन्त छोटी इकाई होने के नाते बौद्धिक दाव-पेंच की अधिक-से-अधिक सुविधाए प्राप्त हैं। समाज वितरण का नियन्त्रण अपने हाथ मे लेकर समाजवादी अथ-व्यवस्था का एक ही पहलू स्वीकार करता है। इसलिए यह मिश्रित अथ-व्यवस्था और भी भयानक है।"

डॉक्टर भारद्वाज ने और भी तेज आवाज़ मे कहा, "डाक्टर प्रकाश ! अब मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम कम्युनिस्ट हो।"

परिचचा ने अब कटुता का रूप धारण कर लिया है, प्रोफेसर शर्मा ने

अनुभव किया, और उन्होंने यह भी अनुभव किया कि जगतप्रकाश वहाँ अपने विचारों और विश्वासों में एकाकी है। उन्होंने अब परिचर्चा समाप्त करते हुए कहा, "ज्ञान का क्षेत्र तर्क का क्षेत्र है, वह पूर्वाग्रहों और कटुता का क्षेत्र नहीं है। डॉक्टर प्रकाश ने जो विचार प्रकट किए हैं, उनसे पूरी तौर से सहमत न होते हुए भी मेरी समझ में वह आज की समस्याओं का एक नया पहलू प्रस्तुत करते हैं, इस पर हम लोगों को गम्भीरतापूर्वक मनन करना चाहिए।"

जिस समय जगतप्रकाश उस मीटिंग के बाहर निकला, वह कुछ उदास था। डॉक्टर भारद्वाज एकाएक उसके खिलाफ कटु क्यों हो गए थे?

उस मीटिंग में सुषमा भी आई थी। प्रोफेसर शर्मा ने सुषमा को अलग बुलाकर कहा, 'मेरी तुम्हें बधाई सुषमा वसगोपाल! आज एकेडमिक कौंसिल ने तुम्हें डॉक्टरेट प्रदान कर दी है।"

सुषमा का चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा, "आपको बहुत-बहुत धन्यवाद सर! मुझे डॉक्टर भारद्वाज ने तो नहीं बतलाया।"

"उन्हें अभी नहीं मालूम। उन्हें यह भी नहीं मालूम कि तुम्हारी थीसिस के चौथे चैप्टर पर डॉक्टर खरवण्डे ने कुछ शंकाएँ प्रकट करके मेरे पास भेज दी थीं और मेरे कहने से डाक्टर प्रकाश ने उन शंकाओं का समाधान कर दिया था। इसी सबब तुम्हें डॉक्टरेट मिलने में कुछ देर हो गई। लेकिन डॉक्टर भारद्वाज से यह सब न कहना। मेरी समझ में यह नहीं आता कि वह डॉक्टर जगतप्रकाश के प्रति अकारण ही कटु क्यों हो गए हैं, वह मेरे प्रति भी कटु हो जाएँगे, मैं यह नहीं चाहता।"

"आप विश्वास रखिए, मैं किसी से यह बात न कहूँगी। मैं आपकी कितनी कृतज्ञ हूँ।" और वह तेज़ी के साथ बाहर चल दी।

एकाकी और उदास—जगतप्रकाश पार्टिको के बाहर निकल रहा था जब सुषमा दौड़ती हुई उसके पास पहुँची।

"आप अकेले ही चल दिए।" उसने कहा।

एक कड़वी मुसकराहट के साथ जगतप्रकाश बोला, 'मैं अकेला ही हूँ। आज की परिचर्चा में मुझे पता चल गया।"

'आप अकेले कैसे हैं? प्रोफेसर जो आपका समर्थन कर रहे थे।"

सुषमा बोली।

उसी करुण मुस्कान के साथ जगतप्रकाश ने सिर हिलाया, "नहीं, प्रोफेसर की सहानुभूति-भर मेरे साथ है, उनके विचार और विश्वास मेरे साथ नही है। मुझे लग रहा है कि मैं गलत वातावरण मे, गलत लोगो के बीच आ पड़ा हूँ।"

सुषमा ने बात बदली, "आप मेरे साथ चलिये, आज मेरे उत्सव का दिन है। मुझे आज एकेडेमिक कौंसिल ने डाक्टरेट की डिग्री प्रदान कर दी है, अभी-अभी प्रोफेसर ने मुझे बतलाया है।"

जगतप्रकाश जैसे अनायास ही एक धुंध की दुनिया से निकलकर प्रकाश की दुनिया मे आ गया। उसने सुषमा का हाथ पकडकर कहा, "मेरी बहुत-बहुत बधाई। लेकिन प्रोफेसर ने डिपार्टमेण्ट मे तो इस बात का जिक्र नही किया।"

सुषमा के साथ जगतप्रकाश उसकी कार पर बैठ गया। कार स्टार्ट करते हुए सुषमा ने कहा, "अच्छा, एक बात बताइये। मेरी थीसिस एक जगह से वापस आ गई थी कुछ प्रश्नो के साथ। प्रोफेसर ने उन प्रश्नो का उत्तर आपसे लिखवाकर थीसिस को फिर से भिजवाया था। आपने मुझे यह सब नही बतलाया।"

"इसलिए कि यह बात विभाग के अन्य लोगो के कान तक पहुँच जाती। फिर बात भी कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण नही थी।"

"आप नही जानते, मेरे लिए यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण थी।" सुषमा बोली। और फिर जैसे उसकी आँखें चमक उठी हो, "आज आप मेरे साथ एक पिक्चर देखेगे, फिर हम लोग एक साथ खाना खाएंगे किसी होटल मे। मैं घर मे कहे देती हूँ कि मैं रात को देर से लौटूंगी।"

जगतप्रकाश के बँगले पर सुषमा ने कार रोककर कहा, "आप मुँह-हाथ धोकर तैयार हो जाइये, अभी छै बजे है। पन्द्रह बीस मिनट मे मैं आती हूँ। और हाँ, आपका नौकर तो बडा अच्छा खाना बनाता है, उससे कह दीजिये कि वह खाना बना ले—यही आपके यहा खाना खाऊँगी। होटलो की भीड मे न ठीक ढग का खाना मिलता है, न ठीक तौर से खाया जा सकता है।"

जगतप्रकाश ने अपने नौकर को दो आदमियो का खाना बनाने का

आदेश दे दिया। ठीक बीस मिनट मे सुषमा अपने घर से लौट आई। दोनों पैलेस मे पिक्चर देखने चल दिए।

जगतप्रकाश के मन की सारी उदासी जाती रही थी। सुषमा कह रही थी, "आप अकेले नहीं हैं। प्रोफेसर आपके साथ हैं, क्योंकि वे केवल आप पर विश्वास करते हैं। और—और—मैं आपके साथ हूँ, क्योंकि आप मेरे सबसे अधिक निकटस्थ है। डाक्टर भारद्वाज को आपसे ईर्ष्या है, अब वह प्रोफेसर के इतने निकटस्थ नही रहे जितना पहले थे। और उससे भी बढ़कर उनकी ईर्ष्या का कारण मैं हूँ।" और सुषमा खिलखिलाकर हँस पड़ी, "डाक्टर प्रकाश, मैं सच कहती हूँ कि आप डाक्टर भारद्वाज की अपेक्षा लगातार मेरे अधिक निकट आते जा रहे हैं। उन्होंने एकाध बार मुझसे यह संकेत भी किया है। लेकिन—लेकिन, सुषमा ने अब जगतप्रकाश का हाथ जोर से पकड़ लिया, "उन्हें यह पता नहीं कि मैं तुम्हारे निकट इतना आ जाऊँगी।"

सुषमा का हाथ जल रहा था और जगतप्रकाश को लगा कि सुषमा के हाथ की जलन बिजली के करेंट की भांति उसके अन्दर भर गई है। उसका सारा शरीर थनथना उठा और घबराकर उसने सुषमा के हाथ से अपना हाथ छुड़ा लिया।

पौन नौ बजे पिक्चर खत्म हुई और सुषमा जगतप्रकाश को लेकर उसके बँगले में पहुँची। कमरे मे आकर वह एक आरामकुरसी पर बैठ गई, 'बड़ी थकावट है। सुख और पुलक में भी एक तरह की थकावट होती है। डाक्टर जगतप्रकाश, अभी तो खाना बनने मे शायद कुछ देर हो।"

जगतप्रकाश ने आवाज़ दी, "महादेव! खाना बनने मे कितनी देर है?"

'बस, आधे-पौन घण्टे मे तयार हुआ जाता है, अच्छा खाना बनाने मे देर तो लगती है और फिर जब बीबीजी जैसी शौकीन खाने वाली हों।' महादेव के मुख पर एक बहुत हल्की मुसकान थी जिसे जगतप्रकाश नहीं देख पाया।

सुषमा एक झटके के साथ उठ खड़ी हुई, "अरे, मैं तो भूल ही गई थी कार मे कुछ सामान रख लाई हूँ घर से, आज तो अपनी डाक्टरेट का जश्न मनाने निकली हूँ।" और वह बाहर जाकर कार से एक झोला ले आई।

उन दीनों में स्काच ह्विस्की की एक बोतल थी जो दो-तिहाई खाली थी, और दो बोतल सोडे की थी। जाले से बोतलें निकालकर उसने मेज पर रख दी, "पापा को पीना मना कर दिया गया है, तो मैं इसे उठा लाई। सोचा, तुम्हारे यहां शायद न हो, और सलीब्रेट मुझे करना ही है।"

जगतप्रकाश ने बहुत पहले सुषमा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की बातें सुनी थी, पर वह उन बातों को अब तक भूल चुका था। सुषमा उस समय कितनी सुन्दर दिख रही थी, जीवन की गति और उसकी हलचल से मुक्त। अपनी ओर जगतप्रकाश को इस प्रकार अनिमेष नयनों से निहारते देखकर सुषमा ने कहा, "क्यों, इस तरह मुझे क्या देख रहे हो? तुम तो आर्मी में रहे हो। आर्मी में जितने लोग जाते हैं वे शराब पीने लगते हैं। शराब जीवन के संघर्षों की द्योतक है। तुमने भी शराब पी होगी।"

'हां, मैंने भी पी है, उन संघर्षों की थकान से त्राण पाने के लिए। वहां से लौटकर फिर नहीं पी।"

"तो फिर आज मेरे हाथ से मेरे साथ पियो।" और सुषमा ने दो गिलासों में ह्विस्की का एक एक पेग डाल दिया। जगतप्रकाश ने बिना किसी प्रतिवाद के ह्विस्की का गिलास उठा लिया। उसने केवल इतना कहा, "नौकर यह सब देखकर क्या सोचेगा।"

सुषमा हंस पड़ी, 'बिना परिवार वाले युवकों के नौकर न कुछ देखते हैं और न कुछ सोचते हैं।" और वह जगतप्रकाश की बगल में सटकर बैठ गई।

जगतप्रकाश को लग रहा था कि उसके अन्दर कहीं एक पशु सोया हुआ पड़ा था और अब वह जाग रहा है। और सुषमा कहती जा रही थी, 'डॉक्टर भारद्वाज ने मुझे गाइड करके मेरी थीसिस लिख दी और उन्होंने उसकी कीमत मुझसे वसूल की। लेकिन डाक्टरेट तुमने मुझे दिलवाई है, तुम बहुत सीधे और भोले हो, तो मैं खुद तुम्हें उसकी कीमत अदा करने आई हूं।'

अपने अन्दर वाले पशु को भरसक दबाने का प्रयत्न करते हुए जगत-प्रकाश ने कहा, "लेकिन मैंने तो तुमसे कोई कीमत मांगी नहीं।"

'तुम भीरु हो, मर्यादा, सभ्यता, परम्परा के बन्धनों से जकड़े हुए।

लेकिन मैं तो मुक्त और स्वच्छन्द प्राणी हूँ। मैंने तुम्हारे साथ कुछ उपकार किये हे, मैं ही तुमसे कीमत वसूल करने आई हूँ।" और सुषमा ने यह कह कर जगतप्रकाश के गिलास मे ह्विस्की का पैग डाला और अपने हाथों से वह गिलास उठाकर जगतप्रकाश के होठों से लगा दिया।

जगतप्रकाश वास्तविकता की दुनिया से निकल चुका था—वह अपने को खोता चला जा रहा था। उससे पहले जीवन में उसे ऐसा अनुभव नहीं हुआ था। और जब बारह बजे रात के समय सुषमा उसके कमरे से गई, वह आधी बेहोशी की हालत में अपने बिस्तर पर गिर पड़ा।

सुबह जब जगतप्रकाश सोकर उठा, उसके अन्दर न किसी तरह की ग्लानि थी, और न किसी तरह का परिताप। उसके अन्दर एक प्रकार का मादक पुलक था, एक नशे के रूप में। उसने उस दिन वाला दैनिक पत्र खोला, सुषमा को डॉक्टरेट मिलने की खबर उसमें छपी थी। इतमीनान के साथ उसने पूरा पत्र पढ डाला, उस दिन उसने विश्व-युद्ध की खबरों में भी कोई खास दिलचस्पी नहीं ली। दोपहर के समय खाना खाकर वह सो गया। शाम के समय उसने कपडे पहन और घूमने को निकल पड़ा। घर से निकलते ही उसे सुषमा की याद आ गई। शहर की तरफ बढने के स्थान पर उसके कदम आप ही आप सुषमा के बँगले की तरफ उठ गए।

सुषमा ड्राइंग रूम में डाक्टर भारद्वाज के साथ बैठी चाय पी रही थी। जगतप्रकाश को देखते ही वह उठ खडी हुई, "आइए डॉक्टर प्रकाश! अभी कुछ देर पहले ही डाक्टर भारद्वाज मुझे बधाई देने आए है। उन्होंने आज के पेपर में मुझे डाक्टरेट मिलने की खबर पढी।"

'मैं भी तुम्हे बधाई देने आया हूँ।" जगतप्रकाश के मुँह से यह कुछ अनायास ही निकल पड़ा।

डाक्टर भारद्वाज बोल उठे, 'बडी होनहार और तेज लड़की है। मुझे इसकी थीसिस गाइड करने पर नाज है।'

'जी हाँ, होना भी चाहिए।" जगतप्रकाश ने बैठते हुए कहा। सुषमा ने चाय का प्याला बनाकर जगतप्रकाश को दे दिया और जगतप्रकाश इतमीनान के साथ बैठकर चाय पीने लगा।

डाक्टर भारद्वाज का पूरा नाम था डाक्टर दीनानाथ भारद्वाज, और वे

प्रयाग विश्वविद्यालय मे अर्थशास्त्र के रीडर थ । उनकी अवस्था करीब पैतालीस वर्ष की रही होगी, लेकिन उनकी तन्दुरुस्ती अच्छी थी और शक्ल से वह पैंतीस छत्तीस वर्ष के युवक की भाति दिखते थे। भरा हुआ कसरती बदन, सावला रग, आखें छोटी-छोटी लेकिन चमकती हुई, और मुख कुछ ऐसा, जो सुन्दर तो कहा ही नही जा सकता था। शायद उस समय सुषमा के यहाँ जगतप्रकाश का आना डॉक्टर भारद्वाज को अच्छा नही लगा। उन्होंने जगतप्रकाश से कहा, "क्या आप यहा कही पास मे रहते है, डाक्टर प्रकाश ?"

और इस प्रश्न का उत्तर सुषमा ने दिया, "जी हा, यहा से करीब एक फर्लांग की दूरी पर। मैंने ही वह मकान डॉक्टर प्रकाश का दिलवाया था।"

'तब ता आप अकसर यहा आ जाया करते होगे ?"

"आज मैं दूसरी बार आया हूँ।" इस बार जगतप्रकाश बोला। और जगतप्रकाश की बात को काटकर सुषमा बोली "मै ही अकसर इनके यहा चली जाया करती हूँ डॉक्टर! हम दोना पडोसी है, तो हम दोना म मित्रता भी होनी चाहिए। आप अपनी ही बात ले आप जाज टाउन मे रहते है, लेकिन आप भी अकसर चले आया करते है।" और सुषमा खिलखिलाकर हँस पडी।

खिसियाहट भरी मुसकान अपने मुख पर लाते हुए डॉक्टर भारद्वाज बोले, "तुम मेरी स्टूडेण्ट थी न! मैंने तुम्हारी थीसिस गाइड की है।"

जगतप्रकाश को वहाँ का वातावरण कुछ कुरूप और कटुता से भरा लग रहा था। वह उठ खडा हुआ, मेरी बहुत बधाई सुषमा, और आपको भी डाक्टर भारद्वाज! अब मैं चलूगा, क्योकि मुझे एक काम से जाना है।"

सुषमा बोली, 'थोडी देर और बैठिए, इतनी जल्दी क्या है, अभी तो छ नही बजे हैं। क्या डाक्टर!" वह डॉक्टर भारद्वाज स बाली, 'भला इतवार के दिन कौन सा ऐसा काम हो सकता है जिसकी वजह से एक अच्छी कम्पनी छोडकर चल दिया जाए। फिर डॉक्टर प्रकाश अपने म सिमटे हुए और बन्द आदमी हैं, इनकी तो इलाहाबाद के लोगा से जान-पहचान भी ज्यादा नही है। दिन-भर अपने मकान मे बन्द पढा करते हैं, किसी से मिलने-जुलने का नाम तक नही लेते।"

गम्भीरतापूर्वक सिर हिलाते हुए डाक्टर भारद्वाज ने कहा, "लोगों की जिन्दगी की कई परतें होती है। ऊपरी परत को देखकर कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। डॉक्टर प्रकाश को जरूर कोई आवश्यक काम होगा, नहीं तो यह तुम्हारे आग्रह का अस्वीकार न करते। आप जाइए डाक्टर प्रकाश! सुषमा में अब भी काफी लड़कपन है।"

"जब तक मैं इन्हें जाने की इजाजत नहीं दूँगी, तब तक यह नहीं जा सकते।" और सुषमा फिर खिलखिलाकर हँस पड़ी, "आप तो जानते हैं डाक्टर कि तीन हठ मशहूर है, राज-हठ, बाल-हठ और तिरिया-हठ। तो आज के उत्सव की रानी मैं हूँ, क्योंकि आप दोनों मुझे बधाई देने आए हैं मेरी डॉक्टरेट पर। और आपने जो मेरे लड़कपन की बात कही, उससे मेरे राज-हठ के साथ बाल-हठ भी उभर आता है। फिर मैं स्त्री हूँ, इस हिसाब से मेरा तिरिया-हठ भी आ गया। एक साथ इन तीनों हठों की उपेक्षा कैसे करेंगे डाक्टर प्रकाश?"

जगतप्रकाश बैठा नहीं उसने देखा कि डॉक्टर भारद्वाज के चेहरे पर एक धुंधलापन छा गया है और उनकी आँखों में हिंसा भड़क उठी है। जगत् प्रकाश को अब झूठ बोलना पड़ा, "बात यह है कि दिल्ली से मेरे एक दोस्त आ रहे हैं, इसी डाकगाड़ी से। वह शायद ठहरेंगे भी मेरे यहाँ। मेल यहाँ सात बजे पहुँचता है, और इस वक्त छ बज रहे हैं। सोचा था यहाँ से स्टेशन पैदल घूमता हुआ निकल जाऊँगा।"

"मुझे भी स्टेशन जाना है, मामाजी आ रहे हैं कानपुर से, उन्हें लेने डॉक्टर, तुमने अच्छी याद दिलाई, मैं तो इस खुशी में यह भूल ही गई थी। मैं अभी पन्द्रह मिनट में तैयार होकर आती हूँ, हम दोनों साथ ही चलेंगे।" और उसने डाक्टर भारद्वाज से कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद डाक्टर! थीसिस के छपवाने की बात मैं फिर आपसे फुरसत में करूँगी।" और सुषमा उठ खड़ी हुई।

सुषमा के उठने के साथ डाक्टर भारद्वाज को भी उठना पड़ा। सुषमा ने कहा, 'आप बैठिए, मैं आपके लिए ताँगा मँगवाए देती हूँ।"

"नहीं, मैं ताँगा रास्ते में ले लूँगा। जब इस तरफ आया हूँ तो दो चार जगह और मिल लूँगा।' और डॉक्टर भारद्वाज बिना जगतप्रकाश की ओर

बाहर चले गए। सुषमा उन्हे पहुँचाने के लिए फाटक तक गई।

डाक्टर भारद्वाज को विदा करके सुषमा ड्राइग-रूम म वापस लौटी। ने जगतप्रकाश की आखो से अपनी आँख मिलाते हुए कहा, "क्या वास्तव तुम्हारे कोई मित्र दिल्ली से आ रहे है?"

इस प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर जगतप्रकाश ने प्रश्न किया, "क्या स्तव मे तुम्हारे मामाजी कानपुर से आ रहे ह?"

कुछ देर तक मौन दोनो एक-दूसरे को देखते रहे, फिर दोना ही हँस ', और इसके साथ दोनो ही बैठ गए। सुषमा ने जगतप्रकाश का हाथ अपन थ म लेते हुए कहा, "मैंने यह नही सोचा था तुम इस वक्त आओग क्टर! लेकिन तुम वरदान की तरह इस समय आ गए। मैं इस आदमी से णा करने लगी हूँ।"

जगतप्रकाश ने गौर से सुषमा को देखा, "कब से?"

जगतप्रकाश के इस प्रश्न से सुषमा चौक उठी कुछ सोचकर उसने हा, "कल शाम से, या कल रात के बाद, या फिर अभी कुछ देर पहले से —मैं ठीक नही कह सकती, लेकिन इस समय मै यह अनुभव कर रही हूँ के मेरे हृदय म कभी भी इस आदमी के लिए आदर का भाव आया ही ही। शायद वह निरादर की भावना घृणा का प्रारम्भिक रूप रहा हो जो भाज अचानक प्रस्फुटित हो गई है।"

जगतप्रकाश के हाथ म सुषमा का हाथ था, और जब उसने उस हाथ का स्पर्श अनुभव किया। स्पर्श का अनुभव करते ही उसका सारा शरीर सनसना उठा, उसने सुषमा का हाथ कसकर दबाया, "जानती हो, दोपहर क बाद मैं अपने को रोक नही पाया जैसे तुम्हारे शरीर की सुगध मेरे अन्दर बस गई है।"

सुषमा न उठते हुए कहा, ' चलो मेरे कमरे म, वह एक किनारे है और वहाँ कोई नही आता। कल मैं तुम्हारे यहा से बारह बजे रात को लौटी थी, आज तुम मेरे यहा से बारह बजे रात को लौटना।'

दूसरे दिन यूनिवर्सिटी मे डॉक्टर भारद्वाज ने जगतप्रकाश से मिलते ही प्रश्न किया ' डॉक्टर! तुम्हारे मेहमान आ गए कल?"

"जी हा, लेकिन वह इलाहाबाद रुके नही, सीधे कलकत्ता चले गए।"

"और सुषमा के मामाजी ?" डॉक्टर भारद्वाज के मुख पर एक कुटिल मुसकराहट थी जो जगतप्रकाश को अच्छी नहीं लगी।

जगतप्रकाश को फिर झूठ बोलना पड़ा, "मैं अपने मेहमान से बात करने में इस कदर उलझा हुआ था कि मुझे उन लोगों का ध्यान ही नहीं रहा।"

डॉक्टर भारद्वाज बोले, "प्रोफेसर का कहना है कि तुम बड़े सच्चे, ईमानदार और सच्चरित्र आदमी हो। मुझे उनकी ग़लतफहमी पर अफ़सोस है।" और डाक्टर भारद्वाज घूमकर चले गए।

जैसे डाक्टर भारद्वाज ने जगतप्रकाश के मुख पर जोर का तमाचा मारा हो, जगतप्रकाश तिलमिला उठा। लेकिन डॉक्टर भारद्वाज ने जो कुछ कहा था, वह सत्य था—एक अप्रिय और कुरूप सत्य। कितनी आसानी से वह झूठ बोल गया था पिछले दिन! बिना किसी हिचक के। लेकिन वह आवश्यकता के लिए बोला हुआ झूठ वर्जित नहीं है। जगतप्रकाश ने अपने मन को समझाने की कोशिश की, लेकिन उसीके अन्दर बैठा हुआ कोई उसके इस समाधान का जबरदस्त विरोध कर रहा था। सत्य की वास्तविकता का जब तक उसे संकेत नहीं मिला था तब तक उसका मन आश्वस्त था, भुलावा आदत पड़ते-पड़ते, स्वयं जीवन का अंग बन जाया करता है। लेकिन यह भुलावा, यह मिथ्या—इसके प्रति इतनी विरक्ति क्यों ?

बात आई और चली गई। शठ के साथ शठता का ही आचरण करना चाहिए—संस्कृत की एक कहावत है। डाक्टर भारद्वाज नीच हैं, पतित हैं, लम्पट हैं, जो कुछ सुषमा ने डाक्टर भारद्वाज के सम्बन्ध में बतलाया था उससे यह स्पष्ट था। स्वयं प्रोफेसर शर्मा को डाक्टर भारद्वाज पसन्द नहीं थे। विभाग में डॉक्टर भारद्वाज ने अपना एक गुट बना लिया था, जिसका काम था प्रोफेसर शर्मा की निन्दा करना। अकेले प्रोफ़ेसर शर्मा की ही नहीं, जो भी उस दल के सामने पड़ जाए उसकी निन्दा करना। डाक्टर भारद्वाज ने जो कुछ कहा था उसकी तिलमिलाहट जगतप्रकाश के अन्दर डाक्टर भारद्वाज के प्रति आक्रोश में बदल गई। झूठ, छल कपट, चरित्रहीनता के प्रतीक भारद्वाज—वह जगतप्रकाश द्वारा सुविधा के लिए बोले जाने वाले छोटे-से झूठ पर व्यंग्य कर गया।

सुषमा के साथ जगतप्रकाश की जो घनिष्ठता क़ायम हो गई औ

जो रूप धारण कर लिया था वह जगतप्रकाश को कुछ अजीब-सा लग रहा था। सुषमा उससे केवल एकान्त मे मिलती थी, जैसे वह जगतप्रकाश के साथ अपनी घनिष्ठता को दुनिया से छिपाना चाहती हो। जगतप्रकाश को यह अच्छा नही लगता था। वह चाहता था कि वह सुषमा के साथ खुलकर मिले उसका मन स्वाभाविक ममता और आत्मीयता के लिए तडप रहा था। वर्तमान स्थिति मे वह कभी कभी अपने को एक अपराधी की भाँति महसूस करने लगता था।

समय बीतता जाता था और जगतप्रकाश के अन्दर अपराध की भावना बढती जाती थी। लेकिन यह अपराध किसके प्रति ? यह अपराध समाज के प्रति नही था, यह अपराध सुषमा के प्रति नही था, फिर ? तो यह अपराध स्वय अपने प्रति था। उसे इस अपराध का शमन करना होगा, सुषमा के साथ अवैध सम्बन्ध को वैध बनाकर।

मार्च का महीना आ गया था और सरदी का मौसम समाप्त हो गया था। जगतप्रकाश के अन्दर वाला तनाव अब काफी बढ गया था। होली के दूसरे दिन जब वह प्रोफेसर शर्मा के यहाँ होली मिलन पहुँचा उसने देखा कि उसके विभाग के करीब-करीब सब लोग वहा आये हुए है। डाक्टर शर्मा उठकर जगतप्रकाश से गले मिले। अन्य सहयोगियो से गले मिलकर वह बैठ गया। बातें चल रही थी, चाय-नाश्ता चल रहा था, हँसी मजाक चल रहा था। और जगतप्रकाश जड की भाति चुपचाप बैठा था। प्रोफेसर शर्मा ने जगतप्रकाश से कहा, "डाक्टर प्रकाश ! इतने गम्भीर क्या हो ? वह भी खास तौर से होली के दिन। यह तो हँसने-खेलने का राष्ट्रीय पर्व है।"

इसके पहले जगतप्रकाश कुछ कहे, डॉक्टर भारद्वाज ने फिकरा कसा, 'यह राष्ट्रीय पर्व है, अन्तर्राष्ट्रीय पर्व तो नहीं है। डाक्टर प्रकाश अन्तर्राष्ट्रीयता पर विश्वास करते हैं और राष्ट्रीयता एव अन्तर्राष्ट्रीयता एक-दूसरे के विरोधी तत्त्व है।"

डाक्टर भारद्वाज के इस फिकरे पर सब लोग हँस पड़े, यद्यपि उसमे हँसने की क्या बात है जगतप्रकाश की समझ मे यह नही आया। जगतप्रकाश अब सजग हुआ था, उसने मुसकराते हुए कहा, 'डाक्टर भारद्वाज ! मुझे यह पता नही था कि अर्थशास्त्र के साथ आपका राजनीतिशास्त्र और दर्शन-

शास्त्र म भी दखल है।"

और इस बात पर भी वहाँ बैठे सब लोग हँस पडे, मानो हर बात पर हँसना वहाँ बैठे हरेक आदमी का धर्म है।

'तुम मेरी बात का बुरा मान गए डॉक्टर प्रकाश! मैंने तो सिर्फ़ मज़ाक किया था।" डाक्टर भारद्वाज ने कुछ बदले हुए स्वर म कहा, और फिर वह प्रोफेसर शर्मा की ओर मुडकर बोले, 'प्रोफेसर! क्या यह सच है कि कुवारे लोगो को वश मे करने के लिए किसी नकेल की आवश्यकता होती है? डाक्टर प्रकाश! मेरी सलाह है कि तुम शादी कर डालो।"

प्रोफेसर शर्मा भी हँसी मजाक के मूड मे थे, वह छूटते ही बोले, 'मैं डॉक्टर प्रकाश का गार्जियन हूँ डाक्टर भारद्वाज! लडका पढा लिखा, ब्रिलिएण्ट और मैं तो यहाँ तक कह सकता हूँ जीनियस है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे लेक्चरर है, और मेरा ऐसा खयाल है कि जिन्दगी म काफी ऊचा उठेगा। वह चरित्रवान् और ईमानदार है। देखने-सुनने म काफी सुन्दर है। आप सब लोग उसे देख सकते है। अब अगर आपकी नज़र मे कोई खूबसूरत और पढी लिखी लडकी हो तो आप मुझसे बात कीजिए। जल्दी-से जल्दी मैं इस लडके का विवाह करना चाहता हूँ।"

डॉक्टर भारद्वाज ने मुसकराते हुए जगतप्रकाश की ओर देखा, 'क्या डॉक्टर प्रकाश मै ढूढ दू तुम्हारे लिए कोई लडकी?"

"दुनिया म लडकियो की कमी नही है, आप इतनी तकलीफ गवारा न करें। अपना काम मैं खुद कर सकता हूँ।"

"और वह काम तुम करोगे नही डॉक्टर प्रकाश।' प्रोफ़ेसर शर्मा ने हँसते हुए कहा, "क्योकि अगर तुम शादी कर लोगे तो तुम्हे हम लोगों को दावतें देनी पडेगी।" प्रोफेसर शर्मा के साथ सब लोग हँस पडे।

जगतप्रकाश जब प्रोफेसर शर्मा के यहा से चला वह काफी गम्भीर था। इस बार जब से वह इलाहाबाद आया था, वह अपने को अपने विभाग म नितान्त अकेला अनुभव कर रहा था। और उसका मुख्य कारण था डाक्टर भारद्वाज का उसके प्रति विरोध। इस विरोध को वह अपने सहयोगियो के साथ सामाजिक सम्पर्क स्थापित करके नाकाम कर सकता था, लेकिन अनायास ही वह सामाजिकता से दूर छिटक गया था, सुषमा के कारण। उनके

विवाह की बात को लेकर आज जो हँसी-मज़ाक हुआ था उससे यह स्पष्ट था कि सुषमा के साथ उसका अवैध सम्बन्ध अब खतरे की सीमा पर पहुँच रहा था।

सुषमा जगतप्रकाश के दिल पर छाई हुई थी, वह उसके दिमाग पर छाई हुई थी। इलाहाबाद आकर उसे सुषमा की आत्मीयता मिली थी, उसका साहचर्य मिला था। और सुषमा जगतप्रकाश के जीवन की अनिवार्यता बन गई थी। इलाहाबाद मे जगतप्रकाश की समस्त स्थापना सुषमा के आधार पर थी। इस सत्य को वह अपने सहयोगियो से छिपाए था, यह क्या?

सुषमा के पिता ने एक दिन उसके साथ सुषमा के विवाह का प्रस्ताव किया था, और उसने उस प्रस्ताव को निदयता के साथ अपमानजनक तरीके से ठुकरा दिया था। बसगोपाल का जो अपमान जगतप्रकाश ने किया था उसका बदला उन्होने ले लिया था। लेकिन क्या वास्तव मे उसने बसगोपल का अपमान किया था? बसगोपाल ने उसे जेल भिजवाने का षड्यत्र रचकर उसके साथ ज्यादती की थी, उसका दण्ड भी उन्हे मिल गया, सुषमा ने ही तो एक दिन उससे यह कहा था। अपने पिता के पाप के प्रायश्चित्त के रूप मे सुषमा ने अपने को जगतप्रकाश के हाथ मे सौप दिया था। जो काम बसगोपाल एक लम्बे दहेज के बल पर नही कर पाए, वह सुषमा ने अपनी सवेदना और सहानुभूति के बल पर कर डाला। जगतप्रकाश सुषमा का हो चुका था।

इन्ही विचारो मे डूबा हुआ जब वह अपने घर पहुँचा, उसके नौकर ने कहा, 'सुषमा बीबीजी आई थी। वह कह गई हैं कि मैं आपका खाना न बनाऊँ, आपका खाना उनके यहा खाना है।"

और फिर एक पुलक जाग उठा जगतप्रकाश के मन मे। आज वह सुषमा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखेगा। आज वह सामाजिकता के जीवन मे प्रवेश करने का पहला कदम उठाएगा।

जिस समय जगतप्रकाश सुषमा के यहा पहुँचा, सुषमा अपने पिता के पास बैठी थी। जगतप्रकाश के आने की सूचना पाकर वह बाहर आ गई। उसने उल्लास के भाव से कहा, 'आज तुम मेरे साथ होली खेलने आए ही नही, तो मै तुम्हारे यहा गई थी।" और यह कहकर उसने थोड़ी-सी

अबीर जगतप्रकाश के मुख पर मल दी। जगतप्रकाश ने सुषमा को अपने आलिंगन पाश में कस लिया, वह बोला, "मैंने इस वक्त आने का तय किया था। दिन भर तो मैं रंग की वजह से घर के बाहर निकला ही नहीं, शाम के वक्त मैं प्रोफेसर शर्मा के यहां गया था। विभाग के सब लोग वहां आए थे।"

दोनों बैठ गए, फिर सुषमा ने दो गिलासों में ह्विस्की उँडेली, "आज होली का त्यौहार है।" और यह कहकर उसने ह्विस्की का गिलास उसके होंठों से लगा दिया। दोनों ही पी रहे थे, दोनों ही बातें कर रहे थे। प्रोफेसर के यहां जो बातें हुईं, उसके विवाह के प्रश्न को उठाकर वहां जो हंसी-मजाक हुआ, जगतप्रकाश ब्यौरे के साथ सब कुछ सुषमा को सुना गया। सुषमा ने हँसते हुए कहा, "मैं भी समझती हूँ कि तुम्हें अपना विवाह कर लेना चाहिए। लेकिन विवाह किसके साथ करोगे? यमुना की शादी तो रूपलाल के साथ हो चुकी है।"

यमुना का नाम सुनते ही एक तरह की कड़ुआहट भर गई जगतप्रकाश में। उसने कहा, "शायद वह मेरे लिए नहीं थी—मैं बच गया।"

सुषमा हँस पड़ी, "मैं जानती हूँ कि वह बेपढ़ी और गँवार लड़की तुम्हारे लिए नहीं थी। फिर तुमने कभी सोचा है कि कौन-सी लड़की तुम्हारे लिए है?"

जगतप्रकाश कुछ देर तक गौर से सुषमा को देखता रहा, और उसने देखा कि सुषमा की आंखों में एक तरह की चमक है जो उसे असह्य-सा लग रही है। उसने अपनी आंखें नीची करते हुए कहा, 'सुषमा! न मुझे कहीं ढूंढने जाना है और न मुझे सोचना है। तुम हो, एक मात्र तुम हो मेरे जीवन में। मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ, मैं आज तुमसे केवल यही कहने आया हूँ।"

अब सुषमा की बारी थी जगतप्रकाश को गौर से देखने की। उसके मुख पर आई हँसी गायब हो चुकी थी, उसके दांत भिंच गए थे। जगतप्रकाश अब भी आंखें नीची किए हुए बैठा था, इसलिए सुषमा का वह रूप उसने नहीं देखा जो एकाएक विकृत हो गया था। और सुषमा ने एक सांस में अपने गिलास की शराब खाली गले के नीचे उँडेल ली। फिर अनायास ही उसके मुख पर मुसकराहट आ गई। उसने जगतप्रकाश के गिलास में थोड़ी-सी

शराब उँडेली, फिर अपने गिलास में। फिर बड़े शान्त स्वर में वह बोली, "मैं इतने दिनों से सोच रही थी कि तुम अपना यह प्रस्ताव कब रखोगे ?"

जगतप्रकाश ने अपनी आँखें जब ऊपर उठाईं सुषमा के मुख पर आई मुसकान कितनी मोहक थी! उसने कहा, "सच! तो तुम मुझसे विवाह करोगी ? तुम मेरे जीवन को पल्लवित और कुसुमित करोगी, मेरे जीवन को सार्थक बनाओगी!"

सुषमा की हँसी जगतप्रकाश को कुछ अजीब सी लगी जब उसने कहा, "तुम पापा से बात कर लो। मेरे विवाह की ज़िम्मेदारी पापा पर है, उन्हें मैंने इस ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं किया है। चलो!"

सुषमा उठ खड़ी हुई। जगतप्रकाश भी उठ खड़ा हुआ। लेकिन न जाने क्यों उसके मन में एक आशंका से भरा भय पैदा हो गया था। सुषमा के पीछे-पीछे वह बसंगोपाल के कमरे में गया।

बसंगोपाल कमरे में अकेले बैठे पढ़ रहे थे। सुषमा और जगतप्रकाश को देखकर उन्होंने जगतप्रकाश से कहा, "आओ! तुमने आज होली के दिन मुझे याद तो कर लिया।"

सुषमा बोली, "पापा! यह डाक्टर जगतप्रकाश आपसे कुछ कहने आए हैं।"

बसंगोपाल सावधान होकर बैठ गए "कहो, बोलो, क्या बात कहनी है?"

जगतप्रकाश ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह एक कुरसी पर बैठ गया, सुषमा खड़ी ही रही। उसने जगतप्रकाश से कहा, "हाँ कहो, तुम पापा से क्या कहना चाहते हो!"

लड़खड़ाते स्वर में जगतप्रकाश ने कहा, "जी जी मैं आपसे यह प्रार्थना करने आया हूँ कि आप सुषमा का विवाह मेरे साथ कर दें।"

बसंगोपाल चौंक पड़े, "सच! तुम सुषमा से विवाह करना चाहते हो।" फिर कुछ रुककर उन्होंने कहा, "तुम्हें याद है तुम एक दफ़ा सुषमा से विवाह करने से इनकार कर चुके हो—उस समय मैंने तुम्हारे सामने यह प्रस्ताव रखा था।"

"जी, मुझसे गलती हो गई थी। अब मैंने वह गलती महसूस की है।"

इसके पहले कि बसन्तपाल कोई उत्तर दें, सुषमा बोल उठी, "और पापा की तरफ से मैंने उनकी गलती महसूस कर ली कि वह एक निम्न और असभ्य आदमी से मेरा विवाह करना चाहते थे। समझे मिस्टर जगतप्रकाश! मैं तुमसे विवाह करूँगी, इसकी कल्पना तुम्हें नहीं करनी चाहिए। मैं मुक्त हूँ, स्वतन्त्र हूँ, निर्बन्ध हूँ। पापा यह जानते हैं, सब कोई यह जानता है।" और जगतप्रकाश ने देखा कि सुषमा की आँखें जल रही हैं।

जगतप्रकाश का सारा अस्तित्व जैसे लड़खड़ा रहा हो, उसे सँभालने का प्रयत्न करते हुए उसने कहा, "सुषमा, तुम यह क्या कह रही हो ?"

"मैं ठीक कह रही हूँ। तुमने अकेले पापा का अपमान नहीं किया था, तुमने मेरा भी अपमान किया था, और उस अपमान का बदला मैं तुमसे ले रही हूँ। तुम जो अपने को चरित्रवान् समझते थे, निष्ठावान् समझते थे, तुम्हारी निष्ठा चूर-चूर हो चुकी है तुम्हारा चरित्र भ्रष्ट हो चुका है।"

जगतप्रकाश को लग रहा था जैसे वह गिर पड़ेगा। सुषमा ने जो कुछ कहा, उसका एक-एक शब्द सत्य था। वह पराजित हुआ है, वह टूट चुका है। और फिर उसने बल लगाकर अपना साहस बटोरा। शान्त स्वर में उसने कहा, "तुम ठीक कह रही हो, तुमने मुझे बचा लिया। मैं तुम्हारा बड़ा आभारी हूँ।" और यह कहकर वह घूमा और चल दिया। सुषमा उसके पीछे-पीछे आई। जगतप्रकाश ड्राइंग रूम में रुका नहीं, वह बाहर की ओर बढ़ा। तभी सुषमा बोली, "खाना तो खा लो, मैं आप में नहीं थी।"

जगतप्रकाश ने सुषमा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया, वह तेज़ी से बँगले के बाहर निकल गया।

दूसरे दिन जब जगतप्रकाश सोकर उठा, उसके अन्दर से पाप और अपराध की भावना एकदम धुल चुकी थी। इलाहाबाद आकर उसके जीवन का जो एक कुरूप परिच्छेद आरम्भ हुआ था, उसका अन्त हो गया। उस परिच्छेद वाला तनाव अब जाता रहा था—एक नये परिच्छेद का प्रारम्भ उसे करना था।

उस दिन यूनीवर्सिटी में जो जगतप्रकाश गया वह कोई दूसरा ही व्यक्ति था। उसके विद्यार्थियों को कुछ ऐसा लगा, उसके सहयोगियों को कुछ ऐसा लगा, स्वयं उसे कुछ ऐसा लगा। यूनीवर्सिटी की परीक्षाएँ थीं, परीक्षाएँ अब

समाप्त हो गई थी, केवल बी० ए० प्रीवियस की एक क्लास उसे पढ़ाना पड़ती थी। और अपने शेष समय मे वह अध्ययन करता था।

विश्व-युद्ध की गति मे अब परिवतन आ गया था। ब्रिटेन, रूस और अमरिका न जमनी के बढाव को रोक दिया था। यही नही, अब इन देशा न उलटा अपना प्रहार आरम्भ कर दिया था। लेकिन भविष्य अनिश्चित था।

देश के अन्दर 'भारत छोडो' आन्दोलन पूरी तरह से कुचल दिया गया था, और इस आन्दोलन के कुचलने म तीन तत्त्व प्रमुख थे। पहला था ब्रिटिश सेना और देश की पुलिस का निदयता न भरा अभियान, दूसरा था हिन्दू-मस्लिम भेद भाव, और तीसरा तत्त्व जो अस्पष्ट तो था लेकिन जो सबसे अधिक महत्वपूण था—वह था देश की अनैतिकता।

इस अनतिकता ने लूट का रूप धारण कर लिया था। महँगाई बेतहाशा बढती जा रही थी और इस महँगाई से जन-समुदाय त्रस्त था। एक आर एक छोटा-सा वग बेतहाशा अमीर बनता जा रहा था, और दूसरी आर करोडो आदमी अभाव का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

जगतप्रकाश अब अपने अन्दर एक नई तरह की बेचनी अनुभव करने लगा। उसके जीवन म एकरसता आ गई थी, और यह एकरसता अब उसे असह्य होने लगी थी। सुषमा ने उसकी एकरसता को दूर किया था, और सुषमा उसके जीवन मे निकल गई थी। कभी-कभी किसी हाईकोट के जज की कार म, किसी बडे अफसर की कार मे या फिर अपनी कार म सुषमा दिख जाती थी, और जगतप्रकाश सुषमा को देखकर मुह फेर लेता था। आखिर वह इस इलाहाबाद म क्या आ पडा है? लेकिन अगर वह यहा से जाए भी तो कहाँ जाए? कितना आधारहीन था उसका जीवन! वह अध्ययन और अध्यापन मे मन लगाने का प्रयत्न करता था, उसमे सफल भी होता था और फिर अकारण ही अनायास उसका मन छिटक जाता था। कभी-कभी वह कुल्सुम क पत्रा के उत्तर म अपनी मनोव्यथा व्यक्त कर देता था, लेकिन वह ठीक तौर से अपनी मनोव्यथा को समझ भी तो नही पाता था।

अप्रल के अन्तिम सप्ताह म युक्तप्रान्त के मैदाना म, और विशेष रूप स इलाहाबाद म गरमी उग्र रूप धारण कर लेती है। यूनीवर्सिटी सात बजे

सुबह खुलकर ग्यारह बजे बन्द हो जाती थी, दोपहर के समय अध्यापक अपने-अपने घरों में बन्द रहते थे। उस दिन शनिवार था, जगतप्रकाश ठीक साढ़े ग्यारह बजे अपने घर लौट आया। खाना खाकर वह सोने की तयारी कर रहा था कि उसे अपने दरवाज़े पर दस्तक सुनाई दी। जगतप्रकाश ने उठकर दरवाज़ा खोला और वह चिल्ला पड़ा, "अरे जमील काका, तुम!"

जमील पसीने में लथपथ खड़ा था, कमरे में प्रवेश करते हुए उसने कहा "हां मैं। आखिर मैंने तुम्हें ढूंढ ही निकाला, लेकिन कितनी परेशानियों के बाद! उफ! कितनी गरमी है, जैसे जान निकली जा रही हो। सीधा तुम्हारी यूनीवर्सिटी से चला आ रहा हूँ चपरासी से तुम्हारा पता लेकर।"

"हां, यूनीवर्सिटी सुबह की हो गई है।" जगतप्रकाश ने बिजली का पंखा तेज करते हुए कहा "कहाँ से आ रहे हो?"

'बम्बई से! कुलसुम बन से पता चला कि तुम इलाहाबाद में जम गए हो। गांव जाने पर दीदी के हादसे का पता चला, और सुमेर ने बतलाया कि तुम कहीं दूर चले गए हो। बाल-बच्चे बम्बई चलने को राज़ी नहीं हुए इस हंगामे की वजह से, लिहाज़ा अकेला ही बम्बई वापस लौटा, सोचा था कि तुम बम्बई गए होगे, लेकिन वहां न तुम मिले न तुम्हारा पता मिला। फिर मैं अपने काम काज में मशगूल हो गया। जनवरी के महीने में कुलसुम बन से फिर मुलाकात हुई तो उन्होंने बतलाया कि तुम इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हो गए, दिल को राहत हुई।"

'तुम्हारा असबाब कहां है? खाना तो अभी नहीं खाया होगा, मैं बनवाता हूँ।" जगतप्रकाश बोला।

"मैं खाना स्टेशन से खाकर चला हूँ और असबाब वेटिंग रूम में रख आया हूँ। बम्बई से कानपुर के लिए रवाना हुआ था तो सोचा इलाहाबाद होते हुए निकल चलूं। तुम्हारे घर का पता नहीं था, और ख़याल यह था कि यूनीवर्सिटी दस बजे खुलेगी। लिहाज़ा दस बजे खाना खाकर तुम्हें ढूंढने निकला। और अब कहीं एक बजे दोपहर को मंज़िल मिली।"

जगतप्रकाश ने मुसकराते हुए कहा, 'तुम्हें मंज़िल तो मिल गई जमील काका! मैं तो मंज़िल से एकबारगी ही भटक गया हूँ।"

जगतप्रकाश के वाक्य में कितनी व्यथा थी, जमील हिल-सा गया। उसने

कहा, "बहुत दुखी मालूम होते हो बरखुरदार!"

किसी तरह का भाव परिवर्तन नहीं आया ज्ञानप्रकाश के मुख पर, जैसे उसका चेहरा पत्थर का बना हो। "सुख-दुःख से ऊपर उठ चुका हूँ जमील काका! जो होना है, उसे रोका नहीं जा सकता, क्योंकि वह हमारे हाथ में नहीं है। ज़िन्दगी जैसी भी मिली है, उसे ढोना पड़ेगा।"

जमील ने एक ठण्डी साँस ली, "इस तरह हिम्मत हारने से तो काम नहीं चलेगा बरखुरदार! ज़िन्दगी में सुख-दुःख गायब हो जाने के माने है मौत।"

"मौत का तो हमें हर कदम पर मुकाबला करना पड़ता है जमील काका! या अगर मैं कहूँ कि हर लम्हे पर हम मरते हैं और पैदा होते हैं तो गलत नहीं होगा। खैर छोड़ो इस बात को, सोफे पर लेट जाओ, बहुत थके और परेशान होगे। शाम के वक्त तुम्हारा असबाब ले आऊँगा चलकर।"

जमील सोफे पर पैर फैलाकर लेट गया, ज्ञानप्रकाश अपनी चारपाई पर लेट गया। जमील ने कहा, "छोड़ने की बात नहीं है बरखुरदार! यह फल्सफा मेरी समझ में आया नहीं, थोड़ा और खुलासा करो।"

ज्ञानप्रकाश हँस पड़ा, 'मुसीबत तो यह है कि यह फल्सफा मेरी समझ में भी नहीं आ रहा, खुलासा क्या करूँ? इधर इन दिनों मेरे पास वक्त काफी था और काम नहीं के बराबर था। गीता पढ़ने के बाद मुझे दर्शन-शास्त्र में रुचि पैदा हो गई और विभिन्न दर्शनों का अध्ययन मैंने कर डाला। सब अलग-अलग राहों की ओर संकेत करते हैं। लेकिन सिर्फ एक बात समान भाव से इन दर्शनों में मुझे मिली।'

"वह बात क्या है?" जमील ने कौतूहल के साथ पूछा।

'वह यह कि दर्शनशास्त्र जीवन के अनुभवों की व्युत्पत्ति है, जीवन को दर्शनशास्त्र के अनुसार नहीं ढाला जा सकता, क्योंकि जीवन अबाध गति से विकसित हो रहा है।"

'मैं समझा नहीं।" जमील के स्वर में एक उलझन थी।

जगतप्रकाश कुछ देर तक सोचता रहा, "अच्छा जमील काका! तुम किसी फ़ल्सफ़े पर विश्वास करते हो?"

जमील हँस पड़ा, "बरखुरदार! विश्वास और फलसफा! ये दोनों

ी तकलीफ तो नहा है इस अकेलेपन मे ?"

"मन मे ही समझो।" जगतप्रकाश बोला, "जहा तक अकेलेपन का सवाल है, उसका मैं आदी हो चुका हूँ। लेकिन इस अकेलेपन म एक रिक्तता ता हानी ही है, वह रिक्तता कभी-कभी बुरी तरह अखरने लगती है। मेरे आगे-पीछे कोई नहीं रह गया, जीजी के जाने से मेरा एक मात्र आधार जाता रहा। इस पीपुल्स वार ने मुझे तबाह कर दिया।"

जमील की आखो मे सहानुभूति थी, "समझ रहा हूँ बरखुरदार तुम्हारी भावना का, लेकिन शायद यही बदा था।"

जगतप्रकाश न एक ठडी सास ली, 'मैं भी अपने मन को समझा लेता हूँ यह कहकर कि यही नियति का विधान था। लेकिन ब्रिटिश जाति की यह हिंसा इस ब्रिटिश जाति को नष्ट कर देगी। ये अग्रेज जमनो की अपेक्षा कम बबर नहीं हैं, अब तो एसा लगता है कि शायद अधिक बबर हैं सिफ इनकी बबरता के चारो ओर एक झूठी सभ्यता आर ढोग का आवरण है। मैं अग्रेज जाति से घृणा करन लगा हूँ।"

महादेव चाय ले आया, और चाय के साथ उस दिन की डाक भी। केवल एक पत्र था और लिफाफे पर कुलसुम की लिखावट थी। जमील चाय बनाने लगा और जगतप्रकाश न वह पत्र खोला।

कुलसुम ने जगतप्रकाश को बम्बई बुलाया था गरमी की छुट्टियो के अवसर पर। इधर कुछ समय से जगतप्रकाश को कुलसुम के पत्रो मे ऐसी आत्मीयता का बोध हो रहा था जो उसके जीवन की रिक्तता को दूर करने म सहायक हो। आदि से अन्त तक कुलसुम के पत्र को पढने के बाद जगत-प्रकाश ने कहा, "यह कुलसुम की चिट्ठी है। उसने गरमी की छुट्टियो मे मुझे बम्बई बुलाया है।"

"कब स गरमी की छुट्टियाँ हो रही ह ?" जमील ने पूछा।

"वैसे सात मई से आरम्भ होगी, लेकिन प्रोफेसर ने मुझसे कहा है कि मैं पहली मई से जा सकता हूँ। मेरा काम खत्म हो गया है।"

"आज उन्नीस तारीख है।" जमील बोला, "पाँच मई को बाबूराम के मुकदमे की पेशी है और उस दिन मुझे कानपुर मे मौजूद रहना चाहिए। कल इतवार है। इसके माने हैं कि तुम आज से ही छुट्टी पर जा

सकते हो।"

"हा, लेकिन मैंने अपना सब काम पूरा नहीं किया है, न कहीं जा योजना बनाई है। फिर पहली को तनख्वाह भी तो लेनी है। तुम्हारा म क्या है?"

ऐसे ही। मैंने सोचा था कि तुम भी मेरे साथ कानपुर चलो। बा को कत्ल के जुर्म में फँसाया गया है, सरासर झूठा केस। मेरा ऐसा ख्य कि रजिया की वजह से यह हुआ है। पूरे हालात का पता नहीं है, का चलकर ही पता चलेगा।"

'तो परसों दोपहर की गाड़ी में मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूं। दिन बाद आये हो, परसों तक तो रुक सकते हो। अब चलो स्टेशन, तुम असबाब ले जाएँ चलकर।"

पहली मई को जब जमील के साथ आठ बजे रात के समय जगतप्र कानपुर स्टेशन पर उतरा, उसने जमील ने पूछा, "कहां ठहरना हो बाबूराम तो शायद जेल में होगा।"

"और अगर जेल में न भी होता तो मैं तुम्हें तो वहां ठहराता नहीं चलो, किसी ढंग के होटल में ठहरा जाए।"

मेस्टन रोड पर रजीत होटल में दोनों ठहर गए। खाना इन दोनों फतहपुर में ही खा लिया था। असबाब होटल में रखकर दोनों ने मुंह धोया, फिर जमील ने कहा, "चलो, बाबूराम के केस का पता लगा जाए। मुझे शमशेर की चिट्ठी मिली थी, वह भी खलासी लेन में ही रहता बाबूराम का पड़ोसी है।"

दोनों शमशेरसिंह के घर पहुँचे। शमशेरसिंह की पत्नी ने बतलाया कि वह शाम के समय एक मीटिंग में गया था, और अभी तक वापस नहीं लौ है। परेड के मैदान में वह मीटिंग थी।

'अरे! मैं तो भूल ही गया था।" जमील बोला, "आज पहली मई है—मई दिवस! लेकिन परेड में तो भीड़ नहीं।" फिर कुछ सोचकर उसने कहा, देखूं, शायद शिवदुलारीदेवी से कुछ पता चले, यहां पास ही परमट में तो वह रहती है।"

शिवदुलारी का नाम जगतप्रकाश भूल ही गया था। इस नाम का सु

कर वह चाक उठा, और सोई हुई स्मृतिया जाग उठी। उसने कोई उत्तर नही दिया, चुपचाप वह जमील के पीछे पीछे चल पडा। परमट पर एक बगल म शिवदुलारी और सुखलाल रहते थे। पिछली बार जब जगतप्रकाश कानपुर आया था, उसने शिवदुलारी के इसी बँगले म खाना खाया था। शिवदुलारी अपन बँगले म ही थी, अकेली। उसन जमील का देखते ही कहा, 'तो तुम आ ही गए जमील मिया!" और तभी उसकी नजर जगतप्रकाश पर पडी, "अर प्रोफेसर साहब! तुम भी साथ मे हो। मैंने तो इस जिंदगी म तुम्हारे दर्शन की आशा ही छोड दी थी!" उसने उन दोनो को ड्राइगरूम म बिठाया। फिर बोली, "पिछली दफा जब जमील मिया यहा आये थे, इन्होंने तुम्हारा जिक्र किया था कि तुम फौज म अफसर बनकर इन हराम-जादे अग्रजो की तरफ से अफ्रीका म लडे थे। बडा गुस्सा आया था तुम पर। लेकिन फिर पता चला कि तुमने फौज से नौकरी छोड दी। आजकल कहा हो?"

'इलाहाबाद म, अपनी पुरानी जगह। यूनीवर्सिटी म पढा रहा हूँ।" जगतप्रकाश बोला।

शिवदुलारी हँस पडी। वही उसकी उन्मुक्त हँसी, "घर के बुद्धू घर को आए! तो प्रोफेसर साहब! कानपुर तो पास म है, जब जी ऊबे, कानपुर चले आया करो—तुम मुझे बडे अच्छे लगते हो।" और बिना जगतप्रकाश के उत्तर की प्रतीक्षा किए उसने जमील से कहा, 'बाबूराम के केस का पूरा पता है तुम्हे?"

'सिर्फ इतना पता है कि उस पर कत्ल का मुकदमा चल रहा है और वह जेल म है।"

"हाँ। हुआ यह कि गौरी फ्लोर मिल मे हडताल हुई। इन दिनो ये आटा मिल वाले रकम काट रहे हैं, और मजूरो का रुपया देते नही। तो बाबूराम यहा ट्रेड यूनियन के लीडर हैं, हडताल म इनका अच्छा खासा हाथ था। गौरी फ्लोर मिल के मालिक लाला गौरीशकर चौधरी साहब के अच्छे-खास दोस्त थे। चौधरी साहेब के जरिये उन्होने बाबूराम को दो हजार रुपया देकर हडताल खत्म कराने की कोशिश की। लेकिन भला बाबूराम बिकने वाले आदमी कहा! उन्होने रुपया लेने से साफ इन्कार कर

दिया। हड़ताल चलती रही, पुलिस बुलाई गई, गोलियाँ चलीं, चार मज़ जख्मी हुए, हड़ताल टूट गई। हड़ताल टूटने के एक हफ्ते बाद लाला गौ शंकर के छावनी वाले बँगले में उनकी हत्या कर दी गई। तीन आद बताए जाते हैं, दो आदमी तो वहीं पकड़ लिये गए, एक आदमी भ निकला। इन दो आदमियों का बयान है कि तीसरा आदमी बाबूराम जिसने हत्या की—वे दोनो उसके साथ उसकी मदद के लिए गए थे। दोनों सरकारी गवाह बन गए हैं।"

"यह तो बड़ा संगीन मामला है। बाबूराम तो बड़े ठंडे दिमाग़ आदमी है, उसने यह सब कैसे कर डाला ?" जमील सिर हिलाते हुए बोल

"बाबूराम वहाँ गया ही नहीं, पुलिस ने यह मुकदमा बिल्कुल झू बनाया है।" शिवदुलारी बोली।

"आपको कैसे मालूम कि बाबूराम वहाँ नहीं गया ?" जमील ने पूछ "आखिर वह उस वक्त कहाँ था ? कोई सबूत दे सकता है वह ?"

शिवदुलारी ने तड़पकर कहा, "वह इस बगल वाले कमरे में मेरे सा सो रहा था। सुन लिया तुमने जमील मियाँ, और वह हरामजादा सुखला बेहोश पड़ा था अपने कमरे में। इन दोनों ने एक साथ शराब पी थी औ मैंने पिलाई थी इन दोनों को।"

जगतप्रकाश जैसे आसमान से गिरा। उसके मन में भयानक ग्लानि भर गई, और शिवदुलारी कहती जा रही थी, "सरकारी गवाहों से मुकदमा बन नहीं सकता। मिस्टर मेहरोत्रा जो कानपुर में फौजदारी के सबसे बड़े वकील हैं, उनका कहना है कि जुर्म साबित नहीं हो सकता। वह इस मुकदमे की पैरवी कर रहे हैं।"

सारी स्थिति जैसे जमील की समझ में आ गई। उसने पूछा, 'क्या चौधरी को तुम्हारे और बाबूराम के सम्बन्ध में कुछ शक है ?"

"कह नहीं सकती हूँ, बड़ा भीतरी आदमी है यह चौधरी—इसने कभी शक ज़ाहिर नहीं किया। लेकिन शायद हो भी।"

ये बातें हो ही रही थीं कि सुखलाल की कार ने बँगले में प्रवेश किया। शिवदुलारी सँभलकर बैठ गई। उसने सुखलाल से कहा, "यह जमील मियाँ बम्बई से आए हैं बाबूराम की पैरवी में और यह प्रोफेसर जगतप्रकाश, इन्हें

तो तुम जानते ही होगे, यह इलाहाबाद से आए हैं।"

सुखलाल किसी डिनर से लौटा था, और वहाँ शायद उसने काफी पी ली था। वह सोफ़े पर धम से बैठ गया। उसने कहा "बडी खुशी हुई कि आप दाना आ गए। बेचारा बाबूराम! बुरा फँसा इस दफा। बचना गैर-मुमकिन है। मैंने माना कि गौरीशंकर ने पुलिस बुलाकर हडतालियो पर गोली चलवाई और हडताल टूट गई, लेकिन इसमे बाबूराम के इस कदर पागल हो जाने की क्या बात थी कि वह गौरीशंकर की हत्या कर डालता।"

शिवदुलारी ने कडे स्वर मे कहा, "तो क्या तुम भी समझते हो कि बाबूराम ने हत्या की है?"

"वे दो आदमी जो मौक़े पर गिरफ्तार हुए, वे तो ऐसा ही कहते हैं।"

"तुम यह तो जानते हो कि उस दिन बाबूराम मेरे यहाँ था। तुम्हारे साथ वह बैठा हुआ पी रहा था।"

"हाँ, मुझे याद है, नौ बजे रात तक वह मेरे यहाँ था। लेकिन हत्या तो रात के बारह बजे हुई है। फिर वह गौरीशंकर के खिलाफ अनाप-शनाप बात बक रहा था। उसने यह भी कहा था कि वह गौरीशंकर को समझ लेगा।"

शिवदुलारी चिल्ला उठी, "तुम झूठ कहते हो। मैं तो मौजूद थी, उसने इस तरह की कोई बात नही कही।"

सुखलाल उठ खडा हुआ, "मुमकिन है तब न कही हो, उसके पहले कही हो, लेकिन कही उसने जरूर थी और मुझसे। जो जैसा करेगा, वैसा भोगेगा, तुम बेकार एक हत्यारे का पक्ष ले रही हो।" और वह वहाँ से चला गया।

शिवदुलारी भी उठ खडी हुई। उसने जमील से कहा, "तुम लोग जाओ। मैंने सुना था कि सरकारी गवाहो म इसका भी नाम है, लेकिन मैं कहती हूँ कि यह गवाही नही देगा।" फिर वह जगतप्रकाश की ओर घूमी, प्रोफेसर साहब! तुम क्या इस झंझट मे आकर फँस गए? लेकिन अब आ ही गए तो कभी-कभी मुझे दर्शन देते रहना।"

दूसरे दिन जगतप्रकाश जमील के साथ [illegible] के यहाँ [illegible] लौटा रहा। पुलिस की इन्क्वाइरी मे सुखलाल का [illegible] [illegible] बना था उसने शिवदुलारी के सामने कहा था। और [illegible]

था कि सुखलाल के बयान से तो बाबूराम फन्दे म आ जाता है। शाम के समय जब जगतप्रकाश के साथ जमील वापस लौटा तो वह बडा उदास था। उसने कहा, "एक बेगुनाह को फासी पर लटकाने की पूरी तयारी हो चुकी है। यह सुखलाल सरासर झूठ बोलने पर तुल गया है।"

"लेकिन शिवदुलारी का कहना है कि सुखलाल गवाही नही देगा।' जगतप्रकाश बोला।

"उसका खयाल गलत है। यह सुखलाल बडा कमीना आदमी है। शिवदुलारी कोट म बयान दे सकती है कि उस रात बाबूराम उसके साथ सो रहा था, और सुखलाल जलन की वजह से झूठी गवाही दे रहा है, लेकिन उसकी बात पर अदालत विश्वास नही करेगी। नही बरखुरदार, कुछ नही हो सकता, बाबूराम का गला फदे मे आ गया है, उसे कोई नही बचा सकता।"

उस रात जगतप्रकाश को ठीक तरह से नीद नही आई, जीवन का एक और कुरूप अनुभव!

दूसरे दिन ग्यारह बजे सुबह खाना खाकर जमील ने जगतप्रकाश से कहा, "आज बाबूराम से जेल मे मिलने जाना है। परसो से मुकदमा शुरू होगा, देखू, वह क्या कहता है।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ जमील काका।" और जगतप्रकाश जमील के साथ चल पडा। माल रोड पर पहुँचकर जमील ने जगतप्रकाश से कहा, 'सोच रहा हूँ बरखुरदार, तुम शिवदुलारी देवी के यहा हो आओ, उन्होंने तुमसे अपने यहा आने का इसरार किया था। यह भी पता चल जाएगा कि क्या वह सुखलाल को गवाही देने से रोकने म कामयाब हुई है।"

जगतप्रकाश जिस समय शिवदुलारी के यहा पहुँचा, वह ड्राइग-रूम म उदास बैठी थी। जगतप्रकाश को देखकर वह उठी, "तुम आओ प्रोफेसर साहेब, इसकी आशा मैंने नही की थी। बैठो, जमील मिर्या को कहाँ छोडा?"

"वे जेल गये हैं, बाबूराम से मिलने।" जगतप्रकाश बोला, "परसो से मुकदमा शुरू हो रहा है न।"

'हाँ, परसो से मुकदमा शुरू है।' एक ठडी सास लेकर शिवदुला

वाली, और वह फिर सोचने लगी। विषाद की एक गहरी छाया थी उसके मुख पर।

'आप बड़ी उदास हैं! क्या बात है?"

शिवदुलारी ने अपनी आखें उठाईं और जगतप्रकाश ने देखा उन अनिश्चय कठोर मुख वाली आखों में आसुओं की बूदें हैं। भरे हुए स्वर में उसने कहा, "प्रोफ़ेसर साहब, जिन्दगी फूलों की सेज नहीं, अगारों की राह है और इस अगारों की राह पर बिना उफ़ किए अभी तक चलती आई हूं। हरेक आदमी को सुख पहुंचाने की मैंने कोशिश की अपने को दबाकर। जानते हो प्रोफ़ेसर साहब, मुझे जिन्दगी में कहीं से कभी भी प्रेम नहीं मिला, और मैंने भी तो कभी प्रेम नहीं किया।'

कुछ रुककर शिवदुलारी ने फिर कहा, "अपने पिता के पापों को ढोना पड़ा है मुझे सारी जिन्दगी, शायद यह जिन्दगी ढोने के लिए ही बनी है। और जब ढोना है तो मैंने सब-कुछ हंसकर ढोया है। मैंने कभी किसी से कुछ मांगा नहीं, किसी से कुछ चाहा नहीं—इतनी हिम्मत भगवान् ने मुझे दे दी थी। और अब वह हिम्मत भी उसने मुझसे छीन ली।"

जगतप्रकाश की समझ में शिवदुलारी की बात नहीं आ रही थी, फिर भी उसे कहना पड़ा, 'समझता हूं।"

शिवदुलारी मुसकराई, 'तुम कुछ नहीं समझते प्रोफ़ेसर साहब, क्योंकि तुम भोले हो, तुममें छल-कपट नहीं है। लोग कहते हैं कि मैं छिनाल हूं।" और एकाएक शिवदुलारी उत्तेजित हो उठी, "लेकिन मैं छिनाल नहीं हूं। जो कुछ मैंने किया वह दूसरों को सुख पहुंचाने के लिए किया, शायद दूसरों को सुखी बनाने में मुझे सुख मिलता था। अपनी तरफ से मुझे कोई प्रेरणा नहीं हुई, सिवा एक दफ़ा के—रामगढ़ में।" शिवदुलारी ने जगतप्रकाश का हाथ पकड़ लिया, "एक तुम हो—एक तुम हो प्रोफ़ेसर साहब, जिसके प्रति अपने की भावना कभी मेरे अन्दर जागी थी, लेकिन मैं पतिता, तुम्हारे लिए छिनाल स्त्री—तुम्हारे जीवन में मैं अभिशाप बनकर ही आती। और मैंने अपने को दबा दिया। मुझे तो जिन्दगी को ढोना था।' [illegible]

जगतप्रकाश का हाथ छोड़ दिया और वह उठ खड़ी हुई, [illegible]

अब तुम जाओ, मेरे सम्पर्क में आकर तुम्हारी आत्मा कलुषित हो

[illegible]

तुम जाओ यहा से—मैं तुम्हार हाथ जोडती हूँ।"

जातप्रकाश को शिवदुलारी के इस व्यवहार से आश्चय हुआ, लकि उने उठना पडा। दरवाजे तक शिवदुलारी उसके साथ आई, "प्रोफ़ेस साहेब! शायद अब तुमसे फिर कभी मिलना न हो। तुम अचानक आ ग यह मेरा भाग्य था। लेकिन अगर हो सके तो कभी-कभी मुझे याद क लेना।" और शिवदुलारी ने दरवाजा बन्द कर दिया।

२२

"वडा उलझा हुआ मामला है बरखुरदार ! इस मामले म रूपलाल का हाथ है, उसन बाबूराम को फँसाया है।" जमील न शाम क समय चाय पीत हुए जगतप्रकाश से कहा।

'लकिन रूपलाल—आखिर रूपलाल बाबूराम स दुश्मनी क्या मानता है?" जगतप्रकाश न पूछा।

"मेरा खयाल है, कुछ सुखलाल और शिवदुलारी के घरेलू मामला का लकर। यह रूपलाल चौधरी सुखलाल का जिगरी दास्त बन गया है, हम-प्याला और हम निवाला। दोना ही निहायत बेईमान बदनीयत और कमीने हैं। बाबूराम को यह रूपलाल कतई पसन्द नही, दोनो मे एक अरसे से मन-मुटाव चला आ रहा है। और लगता है इन दिना बाबूराम शिवदुलारी के बहुत नजदीक आ गया है। इसमे शायद न शिवदुलारी का कसूर है, न बाबूराम का काई कसूर है और सुखलाल उतना ही बवकूफ है जितना रूपलाल चालबाज है—सुखलाल रूपलाल के हाथ म पूरी तौर मे खेल रहा है। शायद रूपलाल ने इस सुखलाल को शिवदुलारी के सम्बन्ध म शक दिला दिया है। लेकिन समम मे नही आता कि यह सुखलाल बाबूराम की जान का गाहक क्या बन गया है ? उसन सरासर झूठा बयान दिया है इनक्वाइरी म। हाँ, शिवदुलारी से कुछ पता चला तुम्ह ?"

जगतप्रकाश ने सिर हिलाया, "नही, कुछ भी पता नही चला। शिवदुलारी अपन आपे म नही है कुछ अजीव-सी बातें करती रही।"

'यह ता तय है कि गौरीशकर की हत्या हुई, और दो आदमी वही मौके पर पकड लिय गए।"

कुछ सोचता हुआ जगतप्रकाश बोला, "अजीब बात है, मारने वाला भाग निकला, और जो साथ गए थे वे पकड लिए गए।"

"इसमे अजीब कुछ नही है। ये दोनो आदमी छँटे हुए पेशेवर बदमाश हैं, कई दफा के सजायाफ्ता! बाबूराम इन दोनो को जानता है, और उसका खयाल है कि हत्या इन दोनो ने की है। लेकिन इन दोनो का गौरीशंकर से कोई वास्ता नही था, इसके माने है इन दो आदमियो से हत्या कराई गई है, और जिसने हत्या कराई है उसे छिपाने के लिए बाबूराम का नाम डाल दिया गया है। इस सबमे रूपलाल का हाथ है, इसमे शक किया ही नही जा सकता।"

"तो फिर—तो फिर क्या सुखलाल बाबूराम के खिलाफ गवाही देगा?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"यकीनन। बाबूराम का शक है कि इस हत्या मे बहुत मुमकिन है सुखलाल का हाथ हो गौरीशंकर और सुखलाल मे कुछ रंजिश थी। मैं बाबूराम के वकील से मिला था। वह कहते तो है कि वह बाबूराम को छुडा लेंगे, लेकिन उनके चेहरे से लगता था कि उन्हे पूरा भरोसा नही है। देखें खुदा की क्या मर्जी है।"

उस रात जगतप्रकाश देर तक जागता रहा। उसकी आखो के आगे शिवदुलारी का चेहरा बार बार आ जाता था। वह शिवदुलारी, जिसे उसने रामगढ-कांग्रेस मे देखा था, कितनी बदल गई थी! वह उन्मुक्त, जीवनी शक्ति से भरी हुई चिंता रहित शिवदुलारी कितनी उदास, कितनी टूटी हुई थी सुबह, आज सुबह! वह जगतप्रकाश के सामने रो पडी थी। जगतप्रकाश ने पहले कभी रोती हुई शिवदुलारी की कल्पना नही की थी।

सुबह जब उसकी नीद खुली, आठ बज रहे थे। कमरे के बरामदे मे जमील के साथ शमशेरसिंह और दो अन्य आदमी बैठे हुए बडी उत्तेजित अवस्था मे बात कर रहे थे। जगतप्रकाश को लगा कि कही कोई अप्रिय घटना हो गई है, वह बरामदे मे पहुँचा। जमील ने जगतप्रकाश को देखते ही कहा, "बरखुरदार! गजब हो गया। शिवदुलारी और सुखलाल—दोनो अपने बिस्तरो पर मरे हुए पाये गए हैं।"

बिजली की तरह जगतप्रकाश की आखो के आगे शिवदुलारी का

चित्र कौध गया जो उसने पिछले दिन देखा था, और उसके ये शब्द—'शायद अब तुमसे कभी मिलना न हो।' उसके कानो मे गूज उठे। वह टूटा हुआ-सा कुरसी पर बैठ गया।

शमशेरसिंह ने बताया, "नौकर का कहना है कि मालकिन ने कल रात खुद अपने हाथो रसोई बनाई, दोनो ने बडे प्रेम से एक साथ शराब पी, बातें की, खाना खाया। और आज सुबह जब कोई नही उठा तो कमरे का दरवाजा तोडा गया। दोनो मरे हुए पडे थे। पुलिस पहुँच गई है, सुखलाल के मा बाप, भाई-बहन सभी पहुँच गए है। कुहराम मचा हुआ है वहा, दोनो के बदन काले पड गए है।"

"इसके माने है कि दोनो की मृत्यु जहर से हुई है।" जगतप्रकाश बोला।

'बिलकुल ठीक!" शमशेरसिंह बोला, 'शिवदुलारी के तकिये के नीचे एक चिटठी मिली है—पुलिस ने वह चिटठी ले ली है। उसमे शिवदुलारी के हाथ के लिखे तीन वाक्य है—हम दोनो पापी है अपने-अपने ढग से। मैं अपना पाप ढोते ढोते आजिज आ गई हूँ सुखलाल को भी उसके पापी जीवन से मुक्त करना है। मैं सुखलाल को जहर दे रही हूँ और खुद भी खा रही हूँ।"

जमील चिल्ला उठा, "तो शिवदुलारी ने अपना कौल पूरा किया। उसने कहा था कि सुखलाल गवाही नही देगा, और सुखलाल गवाही देने के लिए अब दुनिया मे मौजूद नही है।"

जगतप्रकाश को लगा कि उसे चक्कर आ रहा है और वह बेहोश हो जाएगा। बडा प्रयत्न करके उसने अपने को सँभाला, और कमरे मे जाकर उसने पानी पिया। उस दिन उससे ठीक तौर से खाना नही खाया गया, वह होस्टल से निकला भी नही। दिन भर उदास और खोया हुआ वह अपने कमरे मे पडा रहा। शाम के समय जमील ने लौटकर बतलाया कि दोनो शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए गए है।

पाच तारीख को सुबह दस बजे जगतप्रकाश जमील के साथ कचहरी पहुँचा, बाबूराम का मुकदमा शुरू होने वाला था। जगतप्रकाश ने देखा कि नगर के नेताओ की, सुखलाल के सगे-सम्बन्धियो की और सुखलाल के बाप

की फैक्टरी के कार्यकर्ताओं की एक बड़ी भीड़ कचहरी में जमा है। सुखलाल की शव-यात्रा का शानदार प्रबन्ध किया गया है। कचहरी की मातहती में सुखलाल का शव बड़ी धूम धाम के साथ निकाला गया।

जगतप्रकाश ने जमील से पूछा, "जमील काका! ये लोग सुखलाल की लाश लिए जा रहे हैं। लेकिन शिवदुलारी की लाश! उसका क्या होगा?"

"लावारिस की लाश की तरह सरकार उसे ठिकाने लगा देगी।" जमील ने उदास स्वर में कहा, "इसका कोई है भी नहीं इस दुनिया में और अब कौन इसे अपना मानने के लिए तैयार होगा?"

एकाएक जगतप्रकाश कह उठा, "इसे मैं अपना मानने को तैयार हूँ जमील काका! क्या इसकी अन्त्येष्टि क्रिया करने का प्रबन्ध किया जा सकता है? मैं पूरा खर्च उठाऊँगा।"

जमील ने आश्चर्य से जगतप्रकाश को देखा, "पागल तो नहीं हो गए बरखुरदार! यह तुम क्या कह रहे हो?"

"नहीं जमील काका! मैं बिल्कुल सही दिमाग में हूँ।" यह कहकर उसने पर्स से सौ रुपये का नोट निकाला, "मेरा ऐसा ख्याल है कि आज मुकदमा नहीं शुरू होगा, पुलिस रिमांड लेगी। बाबूराम के खिलाफ एक-मात्र गवाह इस दुनिया में नहीं रहा, पुलिस उलझन में होगी। क्या इस नेक और अभागी शिवदुलारी की लाश को गति नहीं मिल सकती? बोलो जमील काका! चुप क्यों हो? उसने मुझसे परसों कहा था—'तुम अचानक आ गए, यह मेरा भाग्य था।' और उसका यह विश्वास झूठा न हो, मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ।"

जमील की आखों में आँसू छलक आए, "तुम इंसान नहीं हो, फरिश्ते हो, तुम्हारा मंशा पूरा होगा।"

शिवदुलारी के शव को जगतप्रकाश ने आग दी। कुल सात-आठ आदमी इकट्ठे कर सका था जमील, भैरवघाट के एक कोने में उसकी लाश जलाई गई। शाम को छः बजे जब उसकी लाश भस्म हो चुकी, जगतप्रकाश ने उसकी चिता पर पानी डाला। फिर उसने स्नान किया। जमील के साथ वह करीब आठ बजे अपने होटल वापस लौटा।

दिन भर जगतप्रकाश ने कुछ खाया पिया नही था, न जमील ने कुछ खाया पिया था। दोना न ही खाना खाया। जगतप्रकाश के मन मे असीम शान्ति थी, मानव-जीवन के एक अतिशय कुरूप और वीभत्स परिच्छेद का अन्त हो चुका था। उसी समय चार-पाच आदमिया के साथ बाबूराम जमील से मिलने आया।

बाबूराम को देखते ही जमील खुशी से कह उठा, "तो क्या तुम छूट आए, इतनी जल्दी ?"

मुसकराते हुए बाबूराम न कहा, "छूटा तो नही हूँ, जमानत हो गई है। पुलिस ने रिमाड ले लिया है। मेरे वकील का कहना है कि मुझ छूटा ही समझो !" और फिर तत्काल ही उसके मुख पर आई मुस्कराहट गायब हो गई, "लेकिन मेरी जान बचाने के लिए शिवदुलारी ने बहुत बडी कीमत चुकाई। उसने अपनी जान दे दी।"

"शायद यही होना था।" जमील के मुख पर दाशनिकता से युक्त गम्भीरता आ गई, "चीजें क्यो होती है ? कैसे होती हैं ? इन्सान की समझ म यह आसानी से नही आता, लेकिन कहीं कोई सिलसिला जरूर है। शिवदुलारी ने उसी दिन अपनी जिन्दगी का खात्मा कर दिया था जिस दिन उसने इस सुखलाल से शादी की थी। उस सुखलाल की बीवी बनकर उसे क़दम-क़दम पर मौत का दद बर्दाश्त करना पडा होगा। और आखिरकार उसने इस मौत क दद से हमेशा के लिए छुटकारा पा लिया।"

"लेकिन यह हत्या और आत्महत्या ! दो बहुत बडे पाप करने पडे उसे।" बाबूराम बोला।

जगतप्रकाश के मुख पर एक करुण मुस्कान आई, "यह हत्या और आत्महत्या—यह तो हम जिन्दगी मे हमेशा ही करते रहते हैं। लेकिन यह हत्या और आत्महत्या शरीर की नही होती, यह आत्मा की होती है जिसे हम देख नही पाते। शरीर तत्त्व की हत्या और आत्महत्या की अपेक्षा ये आत्मा की हत्या और आत्महत्या अधिक भयानक हैं।"

वहाँ बठे लोगो ने जगतप्रकाश की बात समझी या नही समझी, यह नही कहा जा सकता। लेकिन किसी ने जगतप्रकाश की बात पर कुछ कहा नहा। सब लोग थोडी दर तक चुप बैठे रहे। फिर जगतप्रकाश ही बोला, 'ये

जमील काका मुझे इलाहाबाद से अपने साथ कानपुर ले आए हैं। मुझे तो यहां की स्थिति का पता ही नहीं था। हम दोनों का यहां से बम्बई जाने का कार्यक्रम है। और मैं समझता हूं कि अब जमील काका की यहां कोई जरूरत नहीं रह गई।" फिर उसने जमील की ओर देखा, "क्या जमील काका! क्या खयाल है तुम्हारा ?"

"मैं भी समझता हूं कि कानपुर में मेरा काम पूरा हो चुका है।" और फिर उसने बाबूराम से कहा, "हम लोग कल सुबह डाकगाडी से बम्बई जा रहे हैं। तुम्हारी पैरवी के लिए मैं पांच सौ रुपये लाया था, वह ले लो। गोकि तुम एक तरह से छूट गए हो, लेकिन अभी इस मुकदमे में खर्च तो होगा ही। अगर ज्यादा की जरूरत हो तो मुझे लिख देना।" यह कहकर जमील ने पांच सौ रुपये बाबूराम को दे दिए, "शायद मई के दूसरे या तीसरे हफ्ते में तुम्हें बम्बई जाना पड़े हम लोग कम्युनिस्ट पार्टी का पहला कन्वेंशन बम्बई में करना चाहते हैं। तुम्हें इत्तिला भेज दी जाएगी।"

छः मई की सुबह मेल से जगतप्रकाश जमील के साथ बम्बई के लिए रवाना हो गया। कानपुर से चलते समय उसने कुलसुम को तार दे दिया था, और कुलसुम स्वयं स्टेशन आई थी उसे लेने।

बम्बई की चहल-पहल में जगतप्रकाश ने विगत को भूलने की न जाने कितनी कोशिश की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिल रही थी। कुलसुम और उससे भी अधिक परवेज जगतप्रकाश की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखते थे, लेकिन उसे जगतप्रकाश के अन्दर एक तरह की उदासीनता ने घर कर लिया था। उसे लग रहा था कि वह जीवन से अनायास ही छिटक गया है, और इस पर उसे दुःख भी न था। वह कुछ करना चाहता था, वह जीवित रहना चाहता था। लेकिन वह करे तो क्या ? जीवित रहे तो किस तरह ? वह कुलसुम के यहां उसे हर तरह का आराम था, जीवन की समस्त सुविधाएं उसे उपलब्ध थीं, लेकिन आराम और सुविधा ही तो जिन्दगी नहीं है। इस आराम और सुविधा की दलदल से वह निकलना चाहता था। और उसे रास्ता नहीं दीख रहा था।

उस दिन शनिवार था और वतहाशा गरमी थी। परवेज तीसरे पहर ही मिल से लौट आया था, कुलसुम किसी मीटिंग में गई थी। परवेज ने मुं

पर उसकी स्वाभाविक प्रसन्नता प्रस्फुटित हो रही थी। उसने जगतप्रकाश से कहा, "मिस्टर जगतप्रकाश! कलकत्ता से बागची आर्ट सटर का एक ट्रुप आया है। आज देसाई हॉल म उसका एक शो है। डास, म्युजिक और भी न जाने क्या-क्या? आज वहा चला जाए तो कैसा रहे? सुना है बगाली लोग बडा आर्टिस्ट होना है, वैसे अपुन का इस आर्ट फार्ट की कोई जानकारी नहीं, लेकिन बडी तारीफ है। सुना है सब आर्टिस्ट शान्तिनिकेतन मे तालीम पाया है।"

जगतप्रकाश ने अपने को उदासीनता से निकालने का प्रयत्न करते हुए कहा, "आइडिया तो बुरा नही है परवेज! तुमने क्या यह बगाल का नृत्य देखा है और सगीत सुना है?"

'वह जो बगाल का आर्ट कहलाता है उसका रिवाज तो यहा बम्बई म और पूरे गुजरात मे बहुत है। यहाँ वकील सिस्टर्स का एक ग्रुप है। बडे बडे बाल रखे जनाना शक्ल वाले नौजवान, और काजल लगाए हिजडो की तरह हाव भाव दिखाता औरत लोग, तो वह सब तो अपुन को कुछ जमा नहीं। लेकिन यह सब तो नकल है, नकल तो बुरा लगना ही है। आज जो हो रहा है वह असल हो रहा है—निखालिस बगाली आर्ट! आज तो वहा जाने का बडा मन करता है। छ बजे से शो है, अभी चार बजे है। तुम तैयार हो जाओ, हम-तुम दोनो चलेगे।"

लेकिन कुलसुम बेन! अगर तुम उन्हे साथ न लोगे तो वह क्या कहेगी?" जगतप्रकाश बोला।

"कुलसुम जाने कब आए! उसके वे कम्युनिस्ट साथी लोग, कुलसुम को घेरे हुए हैं। आज दोपहर को ही दफ्तर म आ गए थे, वही कोई मीटिंग-वीटिंग है। हम तो आजिज है इन कुलसुम से और इन कम्युनिस्टो से! बाबा हम लोगो की जान छोड, लेकिन नहीं। आज अपुन कुलसुम को समझाएँगे। मिस्टर जगतप्रकाश, तुम भी कुलसुम को समझाना। यह कुलसुम तुम्हारी बडी इज्जत करती है, तुम्हे बिल्कुल गुरु की तरह मानती है।"

कितना भला है यह परवेज, साथ ही कितना भोला! जगतप्रकाश ने पूछा, "क्या परवेज! क्या तुम्हे कम्युनिज्म से कोई शिकायत है?"

परवेज कुछ देर तक सोचता रहा, फिर बोला, "मिस्टर जगतप्रकाश!

दामले वोला, "इसमे सोचने विचारने की क्या बात है ? आप पार्टी के सदस्य नही वन रहे हैं, पार्टी आपको अपना सदस्य बना रही है। पार्टी की सदस्यता पार्टी का सीक्रेट है जो जनता पर प्रकट नही किया जाएगा। हम लोग तो आपको यह सूचना देने आए हैं।"

"इस सूचना के साथ आप मेरी स्वीकारोक्ति तो चाहेंगे ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

और तभी कुलसुम वोल उठी, "जगतप्रकाश की स्वीकारोक्ति मैं देती हू।"

दामले वोल उठा, "आपके कहने से तो काम नही चलेगा कुलसुम बेन ! हम लोगो को डॉक्टर जगतप्रकाश की स्वीकारोक्ति चाहिए।"

जगतप्रकाश वोला, "क्या आप कन्वेंशन होने के दो एक दिन वाद तक मेरी स्वीकारोक्ति की प्रतीक्षा कर सकते है ? मैं वडी उलझन म हू, मुझे कुछ सोचना पडेगा।"

अव जमील वोला, "कामरेड दामले ! मैं भी समझता हूँ कि जगतप्रकाश को सोचने-समझने का मौका दिया जाए। यह जो भी काम करते हैं वह पूरी लगन और पूरी जिम्मेदारी के साथ करते है। वहरहाल कन्वेंशन म यह शिरकत करगे, इतना तय है। क्यो जगत ?"

"हा, मैं कन्वेंशन म आऊँगा और इस वीच मैं अपने भावी जीवन और भावी कार्यक्रम पर भी निर्णय ले लूगा।"

सव लोगो ने चाय पी और फिर सव लोग चले गए। सव लोगो के जाने के वाद परवेज वोला, "आज का सव प्रोग्राम चौपट। न वागची आर्ट सेंटर का नाच-गाना, न लालचन्द भाई स वातचीत। इन कम्युनिस्टो स खुदा बचाए।"

कुल्सुम हँस पडी, "कोई वात नही परवेज ! खुदा न मुझे तो वचा लिया। मैंने उनसे कह दिया है कि मैं कन्वेंशन म भाग नही लूगी। अव त तुम खुदा।'

परवेज का मुख प्रसन्नता स चमक उठा, "सच ! तुम अच्छी हो कुल्सुम जो तुमने मेरी वात मान ली। लेकिन तुम जगतप्रकाश पर क्या जोर दे थी पार्टी का मेम्वर वनाने के लिए ?"

कुल्सुम ने कुछ सोचकर कहा, "तुम नहीं समझोगे परवेज, शायद जगत-प्रकाश भी नहीं समझ पाएँगे, क्योंकि खुद मेरी समझ में यह सब ठीक तौर से नहीं आ रहा है। अच्छा, अब क्या प्रोग्राम है तुम्हारा ? मैं तो बहुत थक गई हूँ।"

"और मैं बड़ा बोर हो रहा हूँ।" परवेज बोला, "सोचा था लालचन्द भाई से मिल लूँ। वह बहुत ज्यादा ब्लैक कर रहे हैं और बदनामी हम लोगों की मिल की हो रही है। यह बड़ी बेजा बात है।"

"डैडी से बात कर ली है ?" कुल्सुम ने पूछा।

"डैडी का कहना है कि हम क़ानूनन कुछ नहीं कर सकते। सेठ लाल-चन्द हमारे माल के सेलिंग एजेण्ट हैं। लेकिन मैं जानता हूँ, क्या किया जाए। मैं गवनमेण्ट के हाथ सीधे-सीधे अपनी मिल का पूरा माल बेचने का इन्त-जाम कर लूँगा, फिर देखूँगा लालचन्द भाई कैसे ब्लैक करते हैं। मैं हूँ परवेज ! हाँ, एक दफा लालचन्द भाई को आगाह कर देना है। तो उनके यहाँ जा रहा हूँ, कुछ देर लग जाएगी वहाँ।" और परवेज चला गया।

"आओ, ड्राइंग रूम में बैठें चलकर !" कुल्सुम ने उठते हुए जगतप्रकाश से कहा, "आज मुझे तुमसे बहुत बातें करनी हैं।"

ड्राइंग रूम में पहुँचकर कुल्सुम बोली, "जगत ! अब तुम्हारी जिन्दगी का क्या प्रोग्राम है ? मैं समझती हूँ कि इलाहाबाद में तुम खुश नहीं हो, तुम्हारे चेहरे से जैसे सारी खुशी गायब हो गई है।"

कुल्सुम के इस प्रश्न से जगतप्रकाश चौंक उठा, "उसने हिचकिचाते हुए कहा, इलाहाबाद से मुझे कोई मोह नहीं रह गया है। और अगर सच पूछो तो मुझे अब किसी जगह के लिए किसी तरह का मोह नहीं रह गया है। जितने बन्धन थे, वे सब एक एक करके कटते चले गए, मेरी इच्छा-अनिच्छा का कहीं कोई सवाल ही नहीं उठा।"

'तो फिर ?" कुल्सुम ने उत्सुकता के साथ जगतप्रकाश को देखा।

जगतप्रकाश ने अपनी आखें मूद लीं, जैसे वह अपने आगे वाले अन्धकार से कुल्सुम के इस 'तो फिर ?' का उत्तर निकालना चाह रहा हो, और उसने साँस खींच ली, "सच पूछो तो मैंने इन दिनों अपने सम्बन्ध में सोचना ही छोड़ दिया है। अपना सोचा होता कब है ?" और एकाएक जगतप्रकाश

हँस पडा, एक रूखी और करुण हँसी, "कुलसुम! मैंने कहा न कि मेरे सारे बंधन आप-ही-आप कटते चले गए। जहा मैं पैदा हुआ, वहा से मेरी जडें उखड गई, जहा मैं पढा और पनपा वह जगह अनजानी-सी बन गई। कहीं कोई नही, जिसे मैं अपना समझू या जो मुझे अपना समझ सके। एक बार किसी ने मुझसे कहा कि वह जिन्दगी ढो रहा है, और मुझे लग रहा है कि मैं भी अपनी जिन्दगी ढो रहा हूँ।"

कुलसुम ने जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, "ऐसा मत कहो जगत! तुम मुझे अपना भले ही न समझ सको जगत, लेकिन मैं तुम्हे अपना समझती हूँ।" और जगतप्रकाश का हाथ छोडकर कुलसुम सोफे की पीठ पर टिक गई। अब उसके स्वर म एक करुण कोमलता आ गई थी, "मेरे जगत! मेरी रूह तुम्हारी है, तुम मेरे सपनो के राजकुमार हो।" कुछ रुककर उसने फिर कहा, "तुम्हे याद है कि अभी कुछ देर पहले उस मामले मे मैंने तुम्हारी तरफ से हामी भर दी थी कि तुम कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर बन जाओगे। मैंने वह हामी सच पूछा तो अपने लिए भरी थी। तुमम मैं अपना भावनाओं की पूर्ति की कल्पना करने लगी हूँ। भावनात्मक रूप से मैं अभी तक कम्युनिस्ट पार्टी के साथ रही हूँ, लेकिन मेरी सामाजिक परिस्थितिया ऐसी हैं कि मुझे उनका साथ छोडना पड रहा है। और उस समय जब व लोग तुमसे बात कर रहे थे, मैंने तुमम अपना भावनात्मक बिम्ब देखा और मेरे मन म आया कि तुम्हारे रूप मे मै कम्युनिस्ट पार्टी से अपना सम्बन्ध क़ायम रखूगी। परवेज के सामने मैं तुमसे यह सब नही कहना चाहती थी।"

जगतप्रकाश आश्चय से कुलसुम की ओर देख रहा था। एकाएक वह पूछ बैठा, "लेकिन मैं—मेरा भी तो कोई स्वतन्त्र अस्तित्व है।"

'अपने भावावेश मे यही तो मैं उस वक्त भूल गई थी कि स्त्री का अस्तित्व पुरुष के अस्तित्व म निहित है न कि पुरुष का अस्तित्व स्त्री के अस्तित्व मे। जगत! मेरे बौद्धिक और राजनीतिक विचार वही होने चाहिएँ, जो तुम्हारे है। भावना के आवेश मे मैं यह ग़लती कर गई थी, तुम मुझे माफ कर दोगे।"

इतनी आत्मीयता, इतनी ममता! जगतप्रकाश इन आत्मीयता और ममता के बोझ से मानो टूटता जा रहा था। उसने कहा, "तुम मुझसे क्या

हती हो कुसुम ? बोलो, मैं तुम्हारी बात मानूगा।"
"मैं कुछ नही चाहती तुमसे मेरे जगत ! मै सिर्फ इतना चाहती हूँ कि मेरे नजदीक रहो, मेरी नजरो के सामने रहो। तुम अगर पार्टी के मेम्बर नही बनना चाहते हो तो न बनो। शायद पार्टी के सदस्य बनकर पार्टी के अनुशासन मे बँधना तुम्हारे लिए गलत होगा। जब मैंने तुम्हारी तरफ से हामी भरी थी, उस वक्त मेरे दिल म यह खयाल था कि पार्टी के मेम्बर बनकर तुम्हें बम्बई म रहना होगा, मेरे नजदीक, मेरी आखो के आगे। लेकिन मैं सोचती हूँ कि तुम बिना पार्टी के मेम्बर बन भी बम्बई मे रह सकते हो। तुम्हें इलाहाबाद से कोई मोह तो नही है ?"
जगतप्रकाश को अपने सामने एक रास्ता दिखा यद्यपि वह रास्ता भी बहुत दूर पर अन्धकार म खोया नजर आ रहा था। उसने कहा, "नही, मुझे इलाहाबाद से कोई मोह नही है। लेकिन इलाहाबाद म मैं सर्विस तो कर रहा हूँ, यहा बम्बई मे रहकर मैं क्या करूँगा ?"
"क्या एक जगह बँधकर कुछ काम करने म ही जिन्दगी है जगत ? हमारा देश को आत्म-समर्पण करके काम करने वालो की बडी आवश्यकता है। यहा बम्बई म तुम्हारा खर्च ही कितना होगा ? चौपाटी पर मेरा एक फ्लैट खाली पडा है, मभी का मकान है वह, हम लोगो ने उसका एक फ्लैट किराए पर नही उठाया। तीन बडे-बडे कमरे हैं, पूरी तौर से सजे हुए। उस फ्लैट मे स्थायी तौर से तुम रहो। मैं तुमम अपनी अभिलाषाओ और आकाक्षाओ की पूर्ति देखना चाहती हूँ। बोलो, इतना तो कर सकोगे ? मैंने कहा न, कि जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है।"
इतना आग्रह, ममता से ओत प्रोत ! जगतप्रकाश ने ठडी सास लेकर कहा, "मेरी समझ म कुछ नही आ रहा है कुसुम, जैसे जीवन की गति पर अब मेरा कोई अधिकार नही रह गया है। तुम्हारी भावना और तुम्हारे विश्वासो की रक्षा कर सकूँ—भगवान् मुझे इतना बल दे।"
कुसुम बोली, "मै जमील से बात करूँगी। तुम्हारे साथ तुम्हारी देख-भाल करने वाला कोई आदमी चाहिए। जमील के बीवी-बच्चे यहा नही हैं, भिण्डी बाजार के एक गन्दे-से चाल म वह रहता है। अगर वह तुम्हारे साथ रहने पर राजी हो जाए तो मुझे दिलजमई होगी। अकेले एक नौकर की

देख भाल मे तुम रहो, मुझे यह पसन्द नही। क्या खयाल है तुम्हारा ?"

"वैसे मेरी देख-भाल करने की किसी को कोई जरूरत नही, इलाहाबाद मे मैं अकेला ही रहता था। लेकिन अगर जमील मेरे साथ आ जाएँ तो मुझे अच्छा ही लगेगा।"

दूसरे दिन शाम के समय जमील के साथ चौपाटी वाले फ्लैट मे जगत चला गया।

तेईस मई को कम्युनिस्ट पार्टी का कन्वेशन हो गया। इस कन्वेशन मे भाग लेने के लिए जसवन्त कपूर भी आया था। जसवन्त कपूर कुलसुम के साथ ठहरा था। उस कन्वेशन म ब्रिटिश सरकार के युद्ध प्रयत्नो म सहयोग देने पर अधिक-से-अधिक बल दिया गया था और काग्रेस के आन्दोलन की निन्दा की गई थी। पूजीवाद से लडने के लिए वर्ग-सघर्ष की एक रूप रेखा तैयार की गई थी।

उस कन्वेशन मे जगतप्रकाश ने केवल एक दर्शक की भाति भाग लिया, उसका मन भारी था कही कोइ बडी उलझन थी उसके अन्दर। उसकी बगल म ही जसवन्त बैठा था और उसने देखा कि जसवन्त के मुख पर भी किसी तरह का उल्लास नही है। जो कुछ हो रहा है वह सब औपचारिक ढग से हो रहा है।

रात के समय कुलसुम के यहाँ जसवन्त के साथ जगतप्रकाश और जमील का खाना था।

कुलसुम ने जसवन्त से कहा, "क्यो जसवन्त, सुना है तुम वहाँ कुछ नहीं बोले। क्या बात है ?"

"जो कुछ मैं कहना चाहता था उसे सुनने और समझने के लिए न किसी मे प्रवृत्ति थी, न किसी प्रकार की उत्सुकता थी।" उदास भाव से जसवन्त ने कहा। और फिर कुछ रुककर मानो वह अपने से ही कहने लगा हो, "मैं मानता हूँ कि विश्व-सघर्ष म रूस और ब्रिटेन के प्रति हमारी कुछ जिम्मेदारी है लेकिन अपने देश के उन करोडो आदमियो के प्रति भी तो हमारी कोई जिम्मेदारी है जो भयानक गरीबी म अपनी जिन्दगी बिता रहे हैं। उनका ग्रस्त और भूखा जन-समुदाय, मौत के मुह म पडा हुआ—इस जन-समुदाय के प्रति हम अन्धे क्या हो रहे हैं? बगाल म भयानक अकाल का छा

मँडरा रही है, उस अकाल की जिम्मेदारी किस पर है ? मैं कहता हूँ कि यह जिम्मदारी ब्रिटिश सरकार पर है।"

जमील ने सिर हिलाते हुए कहा, "जहा तक मुझे पता है, इधर कई साला स बगाल मे फसले खराब होती रही है। और अखबारा स तो पता चलता है कि सरकार उस अकाल का मुकाबला करन की हर तरह से कोशिश कर रही है।"

जसवन्त वाला, "गलत, एकदम गलत ! जापान आगे बढ रहा है—स्काच अथ पालिसी—यानी जहा से हटो वहा सब-कुछ बरबाद कर दो ! ताकि जापानिया को वहा कुछ न मिले। सीमावर्ती बगाल के किसाना से उनका सब धन छीन लिया गया है या खरीद लिया गया है। वह आज कहा गया ? इस साल फसल खराब हुई है, मैं जानता हूँ, लेकिन हिदुस्तान इतना बडा देश है और हर जगह से अनाज भेजा जा सकता है। लेकिन इस युद्ध के काल म मुनाफाखोरी और ज़खीरेबाजी हरक आदमी की प्रवत्ति बन गइ है। अनाज के वितरण की व्यवस्था भी तो सरकार ने अपने हाथ म नही ली है, उसने एक सम्प्रदाय से यह वितरण व्यवस्था दूसरे सम्प्रदाय के हाथा म सौंप दी है, और य दूसरे सम्प्रदाय के लाग अवसर का लाभ उठाकर रातो रात लखपती या करोडपती बनना चाहते ह। मुझे बगाल की हालत का पता है, साम्प्रदायिक्ता को बढावा देकर लाखा आदमियो का भूख स मारने की तयारी हो रही है।"

जसवन्त की बात शायद जमील को अच्छी नही लगी, "आपका मतलब है कि बगाल की मुस्लिम लीगी सरकार क्यो वहा के अकाल के लिए जिम्मेदार है ?"

जसवन्त के मुख पर एक व्यग्यात्मक मुस्कराहट आई, "मुस्लिम लीगी सरकार, ब्रिटिश सरकार, व्यापारी वग, कम्युनिस्ट पार्टी—और देश का हरक आदमी जा मर चुका है, जो गुलामी को वरदान के रूप में अपने ऊपर लादे हुए है—अकाल की जिम्मेदारी उन सब पर है। प्रकृति पर नही है, भगवान् पर नही है।"

"क्या बगाल की हालत इतनी खराब है ? अभी तक अकाल से मौतो की तो खबर नही आ रही ह।" कुल्सुम बोली।

"खबरें नहीं आ रही हैं, क्योंकि खबरों को दबाया जा रहा है। आखिर ये खबरें दे कौन ? जो खबर देने वाले हैं उन्हें अच्छा खाना खिलाया जाता है अच्छी-से-अच्छी शराबें पिलाई जाती हैं। मैं अभी बंगाल का दौरा करके लौटा हूँ। बंगाल के गाँवों में नरकंकालों की भीड़ नजर आ रही है। बीस रुपए मन चावल बिक रहा है। लोगों के पास पैसे नहीं हैं कि वे इतना महंगा अनाज खरीदें। हर तरफ अभाव, हर तरफ शोषण।"

जगतप्रकाश गौर से जसवन्त की बात सुन रहा था। उसने कहा, 'फिर किया क्या जाए ?'

निराश भाव से जसवन्त ने सिर हिलाया, "कुछ भी नहीं। यही तो कम्युनिस्ट पार्टी वालों का कहना है। उनका कहना है कि मैं आवश्यकता से अधिक भावुक हूँ उनका कहना है कि वहां की स्थिति काबू में है। उनका कहना है कि सरकार पर विश्वास करके और उस पर भरोसा रखकर सरकार को सहयोग देना चाहिए। और मैं कहता हूँ कि बंगाल की एक चौथाई आबादी भूख से मर जाएगी, अगर हम दया, दान, सेवा और सहायता के भाव को नहीं अपनाते। यह हमारा दुर्भाग्य है कि मानवता, दया, त्याग और प्रेम का एक-मात्र प्रतिनिधि गांधी जेल में बन्द है, उसके सब अनुयायी जेलों में ठूंस दिये गए हैं। महात्मा गांधी और उनके अनुयायी ही बंगाल को बचा सकते थे, लेकिन आज तो उनके विरोधी तत्त्व ही शक्तिशाली है।"

"क्या यह सच है ?" जगतप्रकाश के अन्दर से किसी ने पूछा, और तभी जमील की आवाज उसे सुनाई पड़ी "लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी इसमें क्या कर सकती है ? दान दया उन लोगों की चीज है, जिनके पास खुशहाली है, सरमाया है। इन खुशहाल सरमाएदारों से चन्दा उगाहना तो कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में नहीं है !"

"लेकिन मुनाफाखोरी रोकना, अनाज के वितरण की ठीक ठीक व्यवस्था करना, लोगों को अपने अस्तित्व और अपने अधिकारों के प्रति सजग करना, यह सब तो कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में है। पार्टी सरकार पर यह दबाव तो डाल सकती है कि बंगाल के लोगों को ठीक तौर से सहायता पहुंचाई जाए। यह दिल्ली में केन्द्रीय ब्रिटिश सरकार की नीति, यह बंगाल में मुस्लिमलीगी

सरकार की नीति—इनकी निन्दा तो की जा सकती है। फज़लुल हक़ की सरकार ने भारत सरकार की नीति की निन्दा की थी, फज़लुल हक़ की सरकार ने इस अकाल की छाया देखी थी और फज़लुल हक़ का जाना पड़ा। फज़लुल हक़ को हिन्दू पूंजीपतियों का गुलाम घोषित करके हिन्दू कांग्रेस का एजेण्ट बताकर लांछित किया गया। यह सब क्या हो रहा है?"

"जसवन्त साहब, इस मसले को अगर आप साम्प्रदायिक रंग न दें तो अच्छा हो। आप जानते हैं कि बंगाल की पचपन फीसदी जनता मुसलमान है, और यह पचपन फीसदी जनता निहायत गरीब है, क्योंकि बंगाल के व्यापारी और ज़मींदार ज़्यादातर हिन्दू हैं। अकाल में जो लोग मर रहे हैं या मरेंगे, उनमें हिन्दू मुसल्मान दोनों ही होंगे।" जमील बोला। "अब सवाल यह है कि क्या हम लोग पार्टी के बाहर से कुछ कर सकते हैं? पार्टी के अन्दर यह मसला उलझ जाता है, क्योंकि इसमें बुनियादी उमूल उठ खड़े होते हैं।"

कुछ उलझन के स्वर में जसवन्त बोला, "मेरी समझ में नहीं आ रहा। वैसे मैं पांच हज़ार मन गेहूँ भेजना चाहता हूँ बंगाल को, कुछ का इंतज़ाम मैं कर चुका हूँ, कुछ का यहां से लौटकर करूँगा। लेकिन उस अनाज को किसके हाथ में सौंपा जाए? ताकि वह भूखा मरने वालों के पास तक पहुंच सके! कलकत्ता में कई सार्वजनिक संस्थाओं के सम्पर्क में मैं आया हूं, ये सब संस्थाएँ अकाल से लड़ने में भरपूर काम कर रही हैं। मैं सेवाश्रम रिलीफ सोसाइटी वालों के पास यह अनाज भेज रहा हूं।" फिर कुछ सोचकर उसने कहा, "लेकिन आज किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। जैसा कामरेड जमीलअहमद का कहना है, दान-दया सरमाएदारी के ही पहलू होते हैं। यह अनाज वाकई भूखों मरने वालों तक पहुँचेगा या फिर बंगाल के अंदरूनी भाग में जाकर काले बाज़ार में बिकेगा, इसका कोई ठिकाना नहीं। मैं वहां जाकर रह नहीं सकता।"

एकाएक जगतप्रकाश बोल उठा, "मैं कलकत्ता जा सकता हूँ, तुम्हारा प्रतिनिधि बनकर, मुझे यहां बम्बई में अभी तो कोई खास काम नहीं है।"

जसवन्त ने ग़ौर से जगतप्रकाश को देखा, "क्या तुम वाकई कलकत्ता जा सकोगे?"

जगतप्रकाश मुसकराया, "क्यों, इसमे क्या शक है? कुलसुम से तुम्हे मेरे सम्बन्ध मे सब कुछ मालूम हो चुका होगा। मैंने इलाहाबाद यूनीवर्सिटी से अपना त्यागपत्र देना तय कर लिया है। जून के अन्तिम सप्ताह मे मैं इलाहाबाद जाकर वहाँ से हमेशा के लिए अपना सम्बन्ध तोड लूँगा। इसके बाद मैं मुक्त हूँ।"

जसवन्त ने उठकर जगतप्रकाश से हाथ मिलाया, "तो फिर तय रहा। मुझे भी अनाज का इलजाम करने मे डेढ-दो महीने लग जाएँगे। मैं तुम्हे सेवाश्रम रिलीफ सोसाइटी के अधिकारियो के नाम एक पत्र दे दूँगा।" जसवन्त की उदासी इस समय तक दूर हो गई थी।

अठारह जुलाई को जगतप्रकाश कलकत्ता पहुँच गया। रास्ते भर वह देखता गया वर्षा का नितान्त अभाव। बगाल मे पानी बहुत कम बरसा था और उसे खबर मिली थी कि इस बार बगाल पर इन्द्र भगवान् का भयानक प्रकोप है। लेकिन कलकत्ता नगर की हलचल और चहल-पहल मे किसी तरह की कमी नही थी। सेवाश्रम रिलीफ सोसाइटी के एक उत्साही कार्यकर्ता परमेश्वरलाल ने जगतप्रकाश का स्वागत किया।

परमेश्वरलाल तेईस चौबीस साल का एक लम्बा-सा नवयुवक था। उसके पिता चम्पालाल कलकत्ता के प्रतिष्ठित शेयर-ब्रोकर थे और कलकत्ता के सामाजिक जीवन मे उनका भी एक अच्छा खासा स्थान था। परमेश्वरलाल ने दो वर्ष पहले कामर्स लेकर एम० कॉम० पास किया था और अब वह चार्टर्ड एकाउण्टेंसी की शिक्षा ले रहा था। जिस इमारत मे उसका परिवार रहता था, उसीमे नीचे की मजिल मे दो कमरे लेकर उसने अपना ऑफिस बना लिया था। जगतप्रकाश को उसने अपने ऑफिस वाले फ्लैट में ठहराया।

दिन मे जगतप्रकाश परमेश्वरलाल के साथ सेवाश्रम रिलीफ सोसाइटी के अन्य कार्यकर्ताओं से मिलता और बातचीत करता रहा, शाम के समय जब वह वापस लौटा, अपने अन्दर वह सतुष्ट था। वह कर्म-क्षेत्र मे प्रवेश कर रहा था। जीवन मे कही कोई सार्थकता होनी चाहिए, और वह अपने जीवन को सार्थक बना रहा था। एक नये अनुभव का क्षेत्र!

भोजन उसने परमेश्वरलाल के साथ ही किया। यह परमेश्वरलाल

उसे अच्छा लग रहा था, निश्छल, अबाध और ईमानदार। भोजन करने के बाद परमेश्वरलाल जगतप्रकाश के पास बैठ गया। दिन म कार्यकर्ताओ से मिलकर उसने जो ज्ञान प्राप्त किया था, उससे उसे यह आभास हो गया कि बगाल म कितना अधिक अन्न सकट है। उसने परमेश्वरलाल से कहा, "यहा की स्थिति तो बडी विचित्र और उलझी हुई दिख रही है, कलकत्ता से तो स्थिति का सही अन्दाजा नही लगाया जा सकता। बगाल के गावो की क्या हालत है ?"

कुछ बुझे हुए स्वर म परमेश्वरलाल बोला, 'मैंने अभी तक बगाल के अन्दरूनी भागो का दौरा नही किया है, लेकिन वहा से आने वाले लोगो का कहना है कि वहा की जनता से या तो उनका अनाज खरीद लिया गया ऊँचे-से ऊचे दामो पर, या फिर विशेष रूप से सीमावर्ती लोगो से उनका अनाज छीन लिया गया है, ताकि अगर जापानी आगे बढे तो अनाज उनके हाथ न लगे। जनता के पास अनाज नही है, वह इस वर्ष की धान की फसल पर निर्भर है। लेकिन जैसा आप देख रहे है, इस साल पानी नही बरसा है, धान की फसल मारी गई।"

"तो फिर इसके अर्थ होगे उन लोगो के लिए मृत्यु! क्या बाहर से अनाज नही आ सकता इस अकाल का मुकाबला करने के लिए ?"

'अनाज आ तो सकता है, थोडा बहुत आ भी रहा है, लेकिन बाहर से आने वाले अनाज के दाम बहुत अधिक है और जनता अभी तक महँगा अनाज खरीद-खरीदकर अपना सब रुपया खर्च कर चुकी है। जनता कगाल है, वह अनाज खरीद ही नही सकती।"

कुछ देर चुप रहकर परमेश्वरलाल ने कहा जनता को अनाज चाहिए मुफ्त का! और जब मुफ्त का माल बँटता है तब लूटने वालो की सख्या भी बेतहाशा बढ जाती है। फिर करोडो आदमियो का पेट भरने के लिए कहाँ तक अनाज मँगाया जा सकता है ? अगर आप कहे तो हम लोग बगाल के अन्दरूनी भाग के दौरे का एक कार्यक्रम बना ले।"

"यह ठीक रहेगा।" जगतप्रकाश भी बगाल के गावो की हालत देखना चाहता था।

अगस्त के पहले सप्ताह म जगतप्रकाश परमेश्वरलाल के साथ बगाल

के अन्दरूनी भागो के दौरे पर निकल पडा। जहा जहाँ वह गया उसे भूखे और नगे नर-ककालो के समूह दिखे, परमेश्वरलाल ने जो कुछ कहा था वह सत्य था। अनाज था, थोडा-बहुत हर जगह, लेकिन लोगा के पास अनाज खरीदने के लिए पैसे नही थे। दो हफ्ते वह बगाल के अन्दर का दौरा करता रहा, अगस्त के अन्तिम सप्ताह म वह वापस लौटा—एक तरह से हतोन्मा हित और उदास। बडा कठिन काम उठा लिया था उसने अपने ऊपर।

जसवन्त ने पाच हजार मन गेहूँ भिजवा दिया था, उसने लिखा था कि वह पाच हजार मन और भेजने की व्यवस्था कर रहा है। इस अनाज के वितरण की क्या व्यवस्था होगी—प्रश्न यह था। जगतप्रकाश ने परमेश्वर लाल से पूछा, और परमेश्वरलाल ने उत्तर दिया, "यह व्यवस्था बगाल के निवासियो के द्वारा ही हो सकती है। हमारी सोसाइटी के प्रधान हैं सुबोध बाबू—सुबोधकुमार भट्टाचार्य। वह यहा के बहुत बडे एडवोकेट और सार्वजनिक कार्यकर्ता है। चलो, मै तुम्हे उनसे मिला दू।"

बालीगज म सुबोध बाबू की बडी शानदार कोठी थी। पचपन साल के लम्बे और गोरे आदमी, सुबोध बाबू विनय और शिष्टाचार की मूर्ति थे। परमेश्वरलाल जिस समय जगतप्रकाश को अपने साथ लेकर सुबोध बाबू के यहा पहुँचा, सुबोध बाबू अपने ड्राइग रूम म कुछ लोगो के साथ बैठे बात चीत कर रहे थे। करीब पन्द्रह मिनट बाद सुबोध बाबू ने उठकर मुसकराते हुए, और ये दोनो ड्राइग रूम मे गये। सुबोध बाबू ने उठकर मुसकराते हुए इन दोनो का स्वागत किया, "क्षमा करना, जो इतनी प्रतीक्षा करनी पडी। बात यह है कि अनीता के विवाह के सम्बन्ध म ये लोग आ गए थे। गिरीश मुखर्जी से अनीता का विवाह तय हो गया है—यह गिरीश मुखर्जी आई० सी० एस० हो गया है। पिता देवेश मुखर्जी बहुत बडे जमीदार हैं, खुलना के। तो ये लोग नवम्बर म विवाह करना चाहते हैं। सितम्बर आ चल ही रहा है—डेढ महीने म इस विवाह का प्रबन्ध करना है। फिर इस बगाल की हालत और बिगड रही है।"

जगतप्रकाश ने अनुभव किया कि सुबोध बाबू काफी चिन्तित है अनीता के विवाह की बात को लेकर। परमेश्वरलाल ने सुबोध बाबू से जगतप्रकाश का परिचय कराया। सुबोध बाबू ने जगतप्रकाश से कहा, "बडी प्रसन्नता

हुई आपसे मिलकर। हम बंगाल वाले आप लोगों के बड़े आभारी हैं आपकी सहानुभूति, सद्भावना और सहायता के लिए। लेकिन समस्या भयानक रूप से जटिल है यहां। बंगाल में इस दुर्भिक्ष की जिम्मेदारी यहां की मुस्लिमलीगी सरकार और दिल्ली में बैठी हुई ब्रिटिश सरकार के ऊपर है। बंगाल में साम्प्रदायिक विग्रह नित्य प्रति बढ़ता जा रहा है। भूखों मरने वालों में भी यह भेद भाव किया जा रहा है। यहां के अधिकारियों और कार्यकर्ताओं द्वारा। लेकिन मृत्यु तो इस तरह का साम्प्रदायिक भेद-भाव नहीं करती।"

"आप ठीक कहते हैं, यह साम्प्रदायिक प्रश्न तो हमारे देश के लिए अभिशाप बन रहा है।" जगतप्रकाश बोला।

तभी परमेश्वरलाल ने कहा, "जगतप्रकाश को साथ लेकर मैं बंगाल के अंदरूनी भागों का दौरा कर आया हूँ। इस बार अनावृष्टि के कारण सारी फसल मारी गई हैं, बड़ी बुरी हालत है।"

"जानता हूँ, हर तरफ से मेरे पास खबर आ रही है। भगवान् का भयानक कोप है, सब तरफ निराशा! कहाँ तक सहायता की जा सकती है? विशेष रूप से जब सरकार निष्क्रिय और उदासीन हो। हम निस्पृह और ईमानदार कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है, और इन दिनों लूट और चोरबाजारी के युग में ऐसे कार्यकर्ताओं का नितान्त अभाव है। अधिकांश सेवा और त्याग की भावना वाले लोग कांग्रेस के आन्दोलन के फलस्वरूप जेलों में बन्द हैं।" फिर उन्होंने जगतप्रकाश से कहा, "आप यहां कलकत्ता में बैठकर अनाज की वितरण-व्यवस्था का नियन्त्रण करें। आप कहां ठहरे हैं?"

जगतप्रकाश बोला, "अभी तो मैं परमेश्वरलाल के यहां ठहरा हूँ, लेकिन आवास की कुछ व्यवस्था तो करनी पड़ेगी।"

कुछ सोचकर सुबोध बाबू ने कहा, "यहां भवानीपुर में जग्गूबाबू के बाजार के पीछे मेरे मुवक्किल श्यामाचरण की एक कोठी है। उसमें दो कमरों का एक फ्लैट है। पन्द्रह सितम्बर से वह फ्लैट खाली हो जाएगा। इसमें आप आ जाइए। भोजन की व्यवस्था किसी होटल में हो सकती है, भवानीपुर में बंगाली हिन्दुस्तानी-पंजाबी कई होटल हैं, सस्ते और अच्छे।"

सुबोध बाबू के यहां से जब जगतप्रकाश लौटा, उसके अन्दर दृढ़ता से

भरा एक प्रकार का सकल्प था। मानवता और समाज के लिए सबसे अधिक उपयोगी काम करने का उसे मौका मिला था। यह दुर्भिक्ष स लडना, वह उसके जीवन का अमूल्य अनुभव होगा। घर आकर उसने विस्तार के साथ कुल्सुम को, जसवन्त को और जमील को बगाल की स्थिति के सम्बन्ध म पत्र लिखे। कुलसुम को उसने लिख दिया था कि इस दुर्भिक्ष-काल म उसे कलकत्ता मे रहकर ही काम करना है।

सोलह सितम्बर को जगतप्रकाश भवानीपुर वाले फ्लैट म चला गया।

बगाल की हालत दिनो दिन खराब होती जा रही थी। देश भर से अनाज आ रहा था, उस अनाज का वितरण भी हो रहा था, और साथ ही प्रान्त भर स भूखो मरने वालो की खबरें आ रही थी। अक्टूबर के दूसरे हफ्ते म जमील भी आ गया जगतप्रकाश के पास। कुल्सुम ने जोर देकर जमील को कलकत्ता भेजा था, जगतप्रकाश के साथ रहकर उसकी देख भाल करने के लिए। जीवन और मत्यु के उस भयानक सघष मे जमील भी जगतप्रकाश के साथ लग गया। लेकिन मत्यु उसी तरह अनिवाय है जिस तरह जीवन है। और फिर मत्यु जीवन की स्वाभाविक परिणति भी तो है।

और अब अकालपीडित लोग गावो से निकलकर नगरो की ओर चलने लगे। गावो म अनाज समाप्त हो गया था। और फिर नगरो स निकलकर कलकत्ता की ओर चलने लगे, क्योकि नगरो म भी अनाज का अभाव हो गया था। खाली हाथ—खाली पेट नर-ककाल—वे अपना सब-कुछ बेच चुके थे पेट भरने के लिए, और पेट वैसा ही खाली था। शरीर पर वस्त्र नही। अनगिनती लोग चले आ रहे थे, चले आ रहे थे कलकत्ता म, उन्होने सुन रखा था कि कलकत्ता मे अनाज बँट रहा है, मुफ्त! लडखडाते हुए, घिसटते हुए झुण्ड के-झुण्ड आदमी चले आ रहे थे, बूढे, बच्चे, जवान! उनमे पुरुष थे, उनम स्त्रियाँ थी।

उस दिन जगतप्रकाश बहुत थक गया था। दिन भर वह जमील के साथ इधर-उधर घूमता रहा, अनाज के वितरण की व्यवस्था करते हुए, और रात को करीब आठ बजे भवानीपुर के एक होटल म खाना खाया। वहा स लौटकर दोनो घर आए।

ये लोग आपस म बाते कर रहे थे कि परमेश्वरलाल आ पहुँचा। उसने

जगतप्रकाश से कहा, "कुछ अंग्रेज पत्रकार आए है बगाल फैमिन का हाल दखने के लिए। वे हमारे कार्यकर्ताओ से मिलना चाहते हैं। सुबोध बाबू तो बहुत व्यस्त है, कल ही उनकी लडकी का विवाह है—अरे हा, तुम्हे भी तो बुलाया होगा।"

"हा, कल रात को विवाह का भोज है। मुझसे और जमील से उन्होने आने का बहुत आग्रह किया है। तबीअत तो नही होती, लेकिन उनके आग्रह को स्वीकार करना पडा।"

"अगर सुबोध बाबू उन लोगो से मिल सकते तो बडा अच्छा होता। लेकिन विवशता है। कल दोपहर को मैंने उन पत्रकारो को लच के लिए फरपो म आमन्त्रित किया है, आप एक बजे दोपहर को जमील भाई के साथ फरपो म आ जाइएगा।" परमेश्वरलाल जल्दी मे था, "अब मैं चलू। कलकत्ता की हालत आजकल बहुत खराब है। आज कलकत्ता की सडको पर सत्तर आदमी भूख से मरे पाए गए। ये सरकारी आकडे है, मेरा ऐसा खयाल है कि सात-आठ सौ आदमियो से कम नही मरे है।"

जगतप्रकाश चौंक उठा, "क्या कहा? इतने आदमी मर गए, और हम लोगो को इसका पता तक नही। कलकत्ता का सब काम-काज वैसा-का-वैसा चल रहा है, वैसी ही चहल पहल, वैसा ही राग-रग!"

जमील मुसकराया, "इसम ताज्जुब की क्या बात है बरखुरदार? हिंदुस्तान हमेशा से भूखा मरने वालो का देश रहा हे, यह भूखा रहना तो यहाँ के लोगो का एक फलसफा बन गया है। व्रत उपवास और भूखा मरना। हिंदुस्तान म वक्त-बक्त पर इस तरह के अकाल पडते रहे हैं और लोग भूखा मरते रहे ह। यह आत्मबलिदान और अहिंसा का देश है।"

"लेकिन इस तरह तडप-तडपकर विवशता की मौत मरना न आत्म-बलिदान है और न अहिंसा है—यह तो कायरता है!" जगतप्रकाश ने कुछ उत्तेजित होकर कहा।

"शायद तुम ठीक कहते हो, यह हैवानियत से भरी कायरता है। लेकिन मैंने—तुम जिसे संस्कार कहते हो ये तो विरासत के तौर पर हम मिले है। यह अहिंसा का फलसफा बुजदिली का फलसफा है, मैं एक मुसल्मान की हैसियत स नहा, एक इन्सान की हैसियत स कहता रहा हूँ।"

परमेश्वरलाल वैसे शान्त प्रकृति का आदमी था, लेकिन जमील की बात उसे अच्छी नही लगी। उसने कहा, "अहिंसा से बढकर वीरता और कही नही मिल सकती। वीरता दूसरो को मारने म नही होती, वीरता स्वय मरने मे होती है। अकर्मण्य बनकर स्वय मरना कायरता है, और यह कायरता अकेले हिन्दुओ म नही, दुनिया की अन्य जातियो मे मिलती रही है। वीरता है अन्याय का विरोध करते हुए, अन्याय के उन्मूलन का प्रयत्न करते हुए मरने मे। जमीलअहमद साहेब! आप महात्मा गाधी का अपमान कर रहे हैं। इस अहिंसा के लिए मनोबल की आवश्यकता होती है, हिंसा पशुता का गुण है।"

इस बातचीत मे जो कटुता आ रही थी उसे दूर करने का प्रयत्न करते हुए जगतप्रकाश ने कहा, 'अच्छा परमेश्वरलाल! यह मनोबल, जिसकी बात तुमने अभी कही है, क्या यह सामाजिक गुण है या वैयक्तिक गुण है? महावीर और बुद्ध को हुए ढाई हजार वर्ष हो चुके लेकिन हिन्दुस्तान के न किसी समाज म और न किसी व्यक्ति म यह मनोबल आ पाया।"

कुछ सोचते हुए परमेश्वरलाल ने कहा, "ये अहिंसा और मनोबल वैयक्तिक गुण ही हैं और इसीलिए यह अहिंसा चिरस्थायी नही हो पाई। महात्मा गाधी ने इस अहिंसा और मनोबल को सामाजिक गुण बनाने का प्रयत्न किया है। वैयक्तिक साधना व्यक्ति के साथ लोप हो जाती है, लेकिन सामाजिक साधना निरन्तर विकसित होती रहती है।"

जमील ने मुह बनाते हुए कहा, "मेरा ऐसा खयाल है कि इस कलकत्ता शहर मे अभी तक सात-आठ हजार मौतें हो चुकी हैं, सडको पर लोग भूख से मरकर गिर रहे हैं। लेकिन यह बताओ, क्या यहाँ का एक भी होटल लुटा है? एक भी अनाज की दूकान लुटी है, एक भी मिठाई की दूकान लुटी है? आदमी जब जीवित रहने का सक्रिय प्रयत्न छोड दे तब यह सामाजिक साधना नही, सामाजिक कायरता की शक्ल हो जाती है।"

परमेश्वरलाल के पास इस बात का कोई उत्तर नहा था, या वह बात की जल्दी म था। उसने उठते हुए कहा, "अच्छा, हम लोग अब इस बहस मुबाहिसे को छोडें। हाँ यह याद रखिए कि कल दोपहर के एक बजे दफ्तर म आप लोगो को आना है। हम उन पत्रकारो को बतलाना है कि इस दुर्भिक्ष

की जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार पर है।"

दूसरे दिन दोपहर का एक बजे जमील के साथ जगतप्रकाश चौरंगी पहुँच गया। चौरंगी म चहल-पहल वैसी-की वैसी थी। अमरीकी और ब्रिटिश सनिक अपनी-अपनी वर्दिया म घूम रहे थे, दूकाना मे खरीदारी हा रही थी, होटला मे भीड थी। सब-कुछ सुव्यवस्थित ढग से चल रहा था। परमेश्वरलाल फरपो क सामने खडा था। इन दोना का दखत ही वह बढकर इनके पास आया, "आप लोग ठीक वक्त पर आ गए। अभी-अभी मिस्टर वनहम का फोन मिला है, वह और उनके साथी दस मिनट म पहुँच जाएँगे।"

और तभी जगतप्रकाश की नजर भूखे आर अधनग लोगो की टाली पर पडी जो चुपचाप हाथ फलाए चल रह थ ताकि उनके हाथ म कोई कुछ पैसे डाल दे। ये लोग चल नही रहे थे, अपन को घसीट रहे थ। उस टाली को फटी फटी आखा से इस प्रकार जगतप्रकाश को देखकर परमेश्वरलाल बोला, 'देहातो से निकलकर य लाग इस वभव की नगरी कलकत्ता म अनाज ढूढते हुए आ रहे हैं। अनाज थाडा-बहुत देहाता मे है लेकिन कोई अपना अनाज बच नही रहा। फिर इन लोगा के पास पैसे नही हैं कि ये अनाज खरीद सकें। पूरा-का पूरा प्रान्त निरसगा बन गया है।'

जगतप्रकाश ने उस आर से अपनी आखें हटा ली बडा बीभत्स और कुरूप दृश्य था वह। उसी समय हाटल के सामन एक टक्सी रुकी, तीन अंग्रेज पत्रकार उसस उतरे। परमेश्वरलाल न बढकर उन तीना का स्वागत किया। फिर उसन जगतप्रकाश और जमील से उन तीनो का परिचय कराया। इसके बाद सब लोग होटल के अन्दर गये।

परमेश्वरलाल के दो साथी अन्दर पहले से ही मौजूद थे। सब लोग बठ गए और बातें होने लगी। अकाल क क्या कारण हैं, अकाल के इस बीभत्स रूप की जिम्मेदारी किस पर है? इस अकाल की विभीषिका का क्या अब भी रोका जा सकता है और किस तरह रोका जा सकता है? न जाने कितन विषयो पर बातें होती रही। और इन लोगो के सामने खाने का अम्बार लगा था। तरह-तरह क भोजन। तभी जगतप्रकाश की नजर बाहर होटल के बरामद पर पडी। डाइनिंग हॉल और बरामदे के बीच बडे-बडे

काचा की दीवार थी, और इस काच की दीवार से चिपके खडे थे सकडा नर-कराल, जिनकी आवाजें तो नही सुनाई पडती थी, लेकिन जिनकी चेष्टाएँ स्पष्ट रूप से जगतप्रकाश को दिख रही थी। वे हाथ जोड रहे थे, भोजन की याचना कर रहे थे।

एकाएक जगतप्रकाश उठ खडा हुआ। अपने रूमाल मे उसने अपनी प्लेट का सामान बटोरा। परमेश्वरलाल कह उठा, "अरे! आप यह क्या कर रहे हैं ?"

और उत्तेजित स्वर मे जगतप्रकाश बोला, "देख रहे हो उन लोगो को! उनके सामने भला यही खाना खाया जा सकता है ? मैं जा रहा हूँ, मुझे माफ करना।" और तेजी के साथ वह बरामदे मे निकल आया। उसके बाहर निकलते ही उसे भिखारियो ने घेर लिया। एक बूढे नर कंकाल के साथ एक दस बारह बरस का लडका था, जो हिचकियाँ भर रहा था। बूढा बगला भाषा मे रिरियाया, "हम मत दीजिए लेकिन इस पाल्टू की जान बचाइए। यह मर रहा है।"

जगतप्रकाश ने समस्त भोजन-सामग्री वही फर्श पर उडेल दी। बूढे ने झपटकर एक मछली का टुकडा उठाया, उस टुकडे को लडके के मुख की ओर करते हुए वह बोला, 'ले, साक्षात् भगवान तुझे बचाने आए हैं।'

लेकिन लडके ने अपनी आख उलट दी थी, उसका दम उखड रहा था।

जगतप्रकाश वहाँ से भागा और उसे जमील की आवाज सुनाई दी जो उसके पीछे-पीछे डाइनिंग हॉल से निकल आया था। जमील ने उसके पास आकर कहा, 'क्या बात है बरखुरदार ? यह तुम्हे क्या हो गया है ? अपना जी कडा करो! तुमने बहुत बडा काम उठा रखा है अपने ऊपर, अपने ऊपर काबू रखो।"

रुँधे गले से जगतप्रकाश बोला, "जमील काका! यह सब क्या हो रहा है ? हजारो लाखो आदमी मेरे सामने भूखो मर रहे हैं—इस अकाल की विभीषिका को देखते हुए कैसे खाना खाया जा सकता है ? यह तो दानवता और पशुता का ताण्डव हो रहा है, इसकी जिम्मेदारी किस पर है ?"

'किस्मत पर, खुदा पर!" जमील बोला।

'नही, इस सबकी जिम्मेदारी मनुष्य पर है। मनुष्य के पास उसका

बुद्धि है, उसकी सामर्थ्य है, जिसके सहारे वह अनादि काल से इन प्राकृति संकटों से लड़ता आया है। आज मैं देख रहा हूँ कि भावना मर गई है, बुद्धि विकृत और कुण्ठित हो गई है।"

जमील ने जगतप्रकाश का हाथ पकड़ लिया, "तुम ठीक कहते हो। लेकिन इस कुदरत के साथ लड़ने में हमेशा इंसान ही जीते, यह मुमकिन नहीं। मर्ज जब लाइलाज हो जाता है तब कोई बस नहीं चलता। इन लोगों को मरना ही है। जग में जो करोड़ों आदमी मर रहे हैं, उन्हें भी तो बचाया जा सकता था, लेकिन कुदरत को यह मंजूर नहीं। अच्छा, अब यहाँ से चलें। लेकिन तुमने कुछ भी नहीं खाया, घर चलकर कुछ खा लो!" और जमील ने एक खाली टैक्सी को रोका।

"भूख मर गई है जमील काका, अब खाना नहीं खा सकूँगा, घर जाकर आराम करूँगा। तुम होटल में जाओ। उन लोगों से कह देना कि मेरी तबीअत एकाएक खराब हो गई।"

जगतप्रकाश चार बजे शाम तक सोता रहा। जब वह सोकर उठा, उसकी तबीअत कुछ हल्की थी, सिर्फ सिर में हल्का हल्का दर्द हो रहा था। करीब पाँच बजे जमील वापस लौटा। उन अंग्रेज जर्नलिस्टों से उसकी क्या-क्या बातें हुईं, उसने विस्तार के साथ बतलाया। उन्होंने वादा किया है कि वे भारत सरकार पर जोर डालकर और अधिक अनाज बंगाल में भिजवाएँगे। जमील ने उठकर चाय बनाई। फिर उसने कहा, "मुझे लगता है यह काम हम लोगों के बस का नहीं है। वह अनाज, जो इन लोगों के लिए आता है, चोरबाजार में गायब हो जाता है, इस मुनाफाखोरी ने इन्सान को हैवान बना दिया है। यह काम तो फौज के द्वारा ही किया जा सकता है—मुझे उन जर्नलिस्टों का सुझाव पसन्द आया। अच्छा, आज आठ बजे सुबोध-बाबू की लड़की के विवाह की दावत है, वहाँ तो चलना ही होगा।"

"जान की तबीअत नहीं होती।" जगतप्रकाश बोला।"

"नहीं बरखुरदार, इससे काम नहीं चलने का। जो सामने है उसका मुकाबला करना है—भागा नहीं जा सकता। परमेश्वरलाल ने कहा है कि वह साढ़े सात बजे आकर हम लोगों को अपने साथ ले चलेगा।"

आठ बजे परमेश्वरलाल के साथ ये लोग सुबोध भट्टाचार्य की कोठी

वह दु स्वप्नो से भरी रात ! जगतप्रकाश बेहोशी म पडा रहा। सुबह जब वह सोकर उठा, उसने जमील से कहा, "जमील काका ! बडी कमजोरी है, उठने की तबीअत नही होती।"

जमील ने जगतप्रकाश का हाथ छुआ, "तुम्हे तो हल्की हरारत मालूम हो रही है।"

एक फीकी मुसकराहट जगतप्रकाश के मुख पर आई, "नही, सिफ मेरी नज खराब हो रही है। मैं आज दिन भर आराम करूँगा। परमेश्वरलाल से कह देना कि मैं आज न आ सकूगा।"

जमील कुछ देर तक जगतप्रकाश को देखता रहा। फिर वह बोला, "अच्छी बात है। आराम करो।" और वह कुछ सोचता हुआ चला गया।

करीब एक बजे जमील लौट आया, उसके हाथ मे कुछ फल थे, और उसकी जेब म बम्बई के सेकण्ड क्लास के टिकट थे। जगतप्रकाश को फल खिलाकर जमील बोला, "बम्बई चलना है बरखुरदार, आज शाम की डाक-गाडी स। किस्मत थी कि आज के लिए दो टिकट मिल गए—दस रुपए देने पडे। लेकिन अब तुम कलकत्ता म एक दिन भी नही रुक सकते तुम्हे मेरे साथ चलना है।"

जगतप्रकाश ने जमील की बात का कोई उत्तर नही दिया, वह एकटक उसे देख रहा था।

और जमील कहता जा रहा था, "इसान कितना बुजदिल हो गया है! सडको पर मर मरकर गिर रहा है, और इस भरे-पूरे शहर म, जहा बाजारो मे चीज पटी पडी है, हजारो आदमी अभी तक जिन्दगी की भीख मागते हुए मरकर गिर पडे, लेकिन एक भी दूकान नही लुटी। बर्दाश्त के बाहर है यह सब, लेकिन किया क्या जा सकता है ! हमारी कौम बुजदिल और गुलामो की कौम है, व चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो। और अब मुझ पर साफ हो गया कि यह बुजदिली वाली अहिंसा हिन्दुस्तान के अवाम की नस-नस म भरी हुई है।"

जगतप्रकाश कराह उठा, "लेकिन जमील काका ! यह सब कितना कुरूप है, कितना वीभत्स है !"

जमील ने उठते हुए कहा, "बरखुरदार ! मौत कुरूप होती है, चाहे

वह बीमारी की मौत हो, चाहे वह अकाल की मौन हो, चाहे वह जा की मौत हो। जिन्दगी इस मौत के मुह मे जाने को ही बनी है। अब मैं असबाब बाधता हूं। अभी एक बजा है, गाडी शाम को छै बजे जाती है। मैंने पर मेश्वरलाल से कह दिया है, वह यहा चार बजे आ जाएगा। उसके हाथ म मकान की चाबी दे दी जाएगी।"

जगतप्रकाश ने एक ठंडी सास भरी, "ठीक है। यह कलकत्ता अब मुन काटने को दौडता है।"

२३

बम्बई आकर एक महीने के अन्दर ही जगतप्रकाश स्वस्थ हो गया।

विश्व-युद्ध ने अब नया मोड ले लिया था। सन् १९४३ का शीतकाल आरम्भ होते ही हिटलर ने रूस पर अपना असीम प्रहार किया और जर्मन सेनाएँ स्टालिनग्राड तक तेजी के साथ बढती चली गई। यह अन्तिम और निर्णयात्मक प्रहार था। पन्द्रह दिन तक स्टालिनग्राड के अन्दर, स्टालिनग्राड के बाहर युद्ध होता रहा, जीवन-मरण का युद्ध। और फिर खबर आई कि जर्मन सेनाएँ पीछे हटने लगी, भयानक पाला पडने लगा है, ये सेनाएँ पीछे हटकर अपनी सुरक्षा-पंक्ति स्थापित करेंगी।

उस दिन जमील बडा प्रसन्न था, उसने कहा, "मैंने क्या कहा था बरखुरदार! रूस जर्मनी को तोडकर रख देगा। आखिर उसे पहली जबदस्त शिकस्त रूसी फौजो से ही मिली।"

जगतप्रकाश ने अखबार अपने सामने से हटाते हुए कहा, "यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि उसे पहली जबदस्त शिकस्त रूस में मिली, यह शिकस्त रूस की फौजो से नही मिली, यह शिकस्त रूस में शीत-काल के पाले से मिली। हिटलर के सेनापतियो का ही अनुमान ठीक था, उन्होंने हिटलर को इस आक्रमण से रोका था।"

"मैं समझा नही तुम्हारी बात बरखुरदार!" जमील बोला।

जगतप्रकाश ने उत्तर दिया, "जमील बाबा! एक मुल्क जर्मनी—सारी दुनिया से जंग कर रहा है। और इस युद्ध को चलते हुए चार वर्ष से अधिक हो चुके। हिटलर ने पूरी तैयारी करके रूस को हमेशा के लिए खत्म करने की कोशिश की। लेकिन रूस का शीतकाल स्वयं में एक ऐसी सेना है जिस

पर विजय नहीं पाई जा सकती। इस शीतकाल ने नेपोलियन को समाप्त कर दिया, यह शीतकालीन पाला हिटलर को समाप्त कर देगा।"

कुछ उलझन के साथ जमील बोला, "लेकिन हिटलर-जैसा सूझ-बूझ का और काबिल आदमी, यह गलती कैसे कर गया ?"

जगतप्रकाश मुसकराया, "संस्कृत में एक कहावत है—'विनाशकाले विपरीतबुद्धि।' हिटलर का खयाल था कि वह शीतकालीन पाला पड़ने के पहले ही स्टालिनग्राड पर कब्जा कर लेगा। यदि एक बार नगर के अन्दर जब जर्मन सेनाएँ पहुँच गईं, तो उनको पाले का कोई भय नहीं रहेगा। उसने प्रहार किया और वह स्टालिनग्राड तक पहुँच गया। लेकिन रूस की सेनाओं ने बहादुरी के साथ जर्मन सेनाओं का मुकाबला किया—उन्होंने वीरता के साथ जर्मन सेनाओं को रोका। और जब जर्मन सेनाएँ करीब करीब सफल हो रही थीं उसी समय पाला पड़ना आरम्भ हो गया। इस बार अनुमान के खिलाफ पन्द्रह दिन पहले ही पाला पड़ने लगा। और लाखों की तादाद में जर्मन सेनाएँ स्टालिनग्राड के बाहर वीरान इलाके में घुल रही थीं। उनके लिए सिवा पीछे हटने के कोई चारा नहीं था। जर्मनों को तबाह कर रख दिया है इस रूस के शीतकाल ने।"

जमील एकटक जगतप्रकाश को देख रहा था, और जगतप्रकाश कहता जा रहा था, "यह जर्मनी की पराजय का आरम्भ—हिटलर की दानवी शक्ति को पराजित किया है भगवान ने—दानवता अगर सफल हो जाए तो सृष्टि का अन्त ही हो जाएगा जमील भाई! यह रूस की विजय नहीं है, यह न्याय, सत्य और मानवता की विजय है।"

जमील ने प्रसन्नता से भरे उल्लास के साथ एक गहरी साँस ली, "तुम कहते हो सरकार! लेकिन यह जर्मनी बड़ा जालिम है—एक हार इसे तोड़ देगी, इस पर आसानी से यकीन नहीं होता, तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर, तुम्हारी ही बात सही साबित हो। अच्छा, अब मैं पार्टी-आफिस जा रहा हूँ, वहाँ देखूँ, लोग क्या कहते हैं।"

लेकिन जगतप्रकाश के मन में न किसी तरह का भय था और न किसी तरह का उत्साह। इस मौसम में चीजों के दाम बढ़ रहे थे, बाजार में अभाव बढ़ रहा था, संकट बढ़ रहा था। जापान भारत की पूर्वी सीमा पर डटा था, [illegible]

उसे भी पसिफिक महासागर म कई जगह पराजय मिल चुकी थी। अकाल और अभाव का प्रेत इस देश मे घुस आया था। मद्रास और केरल स अन्नाभाव की खबर आ रही थी और देश की जनता इस अभाव और अकाल से लडने की क्षमता खोती चली जा रही थी।

कांग्रेस के नेता धीरे-धीरे छोड़े जा रहे थे, पिछले तीन वर्षों म जो हिंदुस्तान की हालत हो गई थी उससे ब्रिटन आश्वस्त था कि यहा किसी प्रकार की अन्दरूनी क्रान्ति असम्भव है। भयानक नैतिक पतन! दानवता और पशुता का एक अजीब सम्मिश्रण!

अप्रल सन् १९४४ का तीसरा सप्ताह! जगतप्रकाश सुबह के समय मरीन ड्राइव का एक चक्कर लगाकर वापस लौटा था। जगतप्रकाश के नौकर डिसोजा ने छोटा-हाजरी जगतप्रकाश के कमरे म ही उसकी मेज पर रखते हुए उससे पूछा, "साहब, वह कामरेड सामन्त आया है, पूछता है कि जमील-अहमद कब लौटगा। हमने बोला, हमको नहीं मालूम, तो बोला आपस बात करेगा।"

जगतप्रकाश उस दिन का 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' पढ रहा था, उसने कहा, "उन्ह यही ले आओ, उनके लिए भी चाय बना लाना—दो टोस्ट और सेंक लो, एक अण्डा फ्राई कर लाना।"

छूटे हुए कांग्रेस नेताओं की एक महत्वपूर्ण बैठक १७ १८ अप्रल को लखनऊ मे हुई थी, उसकी पूरी रिपोर्ट उस दिन आई थी। डिसोजा कामरेड सामन्त को जगतप्रकाश के कमरे म ले आया और फिर वह रसोईघर मे चला गया। जगतप्रकाश ने खड़े होकर कामरेड सामन्त का स्वागत किया, "बैठिए कामरेड सामन्त! मैं नाश्ता करने जा रहा था कि आप आ गए।" और उसने दोनो के लिए चाय बनाई, 'कहिए, कैसे कष्ट किया आपने? जमील तो अपने गाव गये हैं अपने बच्चों से मिलने। उन्ह परसो आ जाना चाहिए था, लेकिन मालूम होता है वह लखनऊ म रुक गए। वहा छूटे हुए कांग्रेसी नेताओं की एक कान्फरेंस हो रही है।"

"कामरेड जमीलअहमद को कांग्रेस के नेताओं की कान्फरेंस से कोई वास्ता नहीं होना चाहिए।" सामन्त ने कड़े स्वर म कहा।

यह आप उनसे कहिएगा जब वह यहा आ जाएँ।" जगतप्रकाश शान्त

स्वर मे वोला। लेकिन जिस ढग से जगतप्रकाश ने अपनी वात नही थी उससे कामरेड सामन्त को यह पता चल गया कि सामन्त की वात और उसके कहने का ढग जगतप्रकाश को अच्छा नही लगा। अब कुछ मुलायम स्वर म सामन्त वाला, "वात यह है कि कल सुबह हमारी एक महत्त्वपूर्ण मीटिंग हो रही है और उस मीटिंग मे कामरेड जमीलअहमद की उपस्थिति आवश्यक है। वह कह गए थे कि वे पन्द्रह या सोलह तक जरूर-जरूर आ जाएँगे और इसलिए हम लोगो ने यह मीटिंग बीस तारीख को रखी है।"

सहज भाव से जगतप्रकाश ने कहा, "मुझसे तो जमील ने बीस तारीख वाली मीटिंग का कोई जिक्र नही किया था। किस सम्बन्ध म यह मीटिंग हो रही है?"

सामन्त का स्वर फिर रूखा हो गया, "पार्टी के मामलो की जानकारी सिर्फ पार्टी वालो को रहती है, रहनी भी चाहिए।"

सामन्त के स्वर की इस रुखाई का उत्तर वह रुखाई के साथ दे, एक बार जगतप्रकाश के मन मे यह आया, तभी उसके संस्कार उभर आए। उसने मुसकराते हुए कहा, "माफ करना मुझे कामरेड सामन्त। वास्तव म मुझे पार्टी की वातो को जानने का कोई अधिकार नही है।"

"वह अधिकार हम लोगो ने तुम्हे देना चाहा था, लेकिन उस समय तुमने स्वीकार नही किया था।" कामरेड सामन्त ने नाश्ता करते हुए कहा, "और शायद यह अच्छा ही हुआ। तुम तर्क और शका म उलझे हुए हो, तुम स्वय सोचने-समझने म विश्वास करते हो, तुम वैयक्तिक प्रेरणाओ और विश्वासो के आदमी हो और हमारी पार्टी अनुशासन पर कायम है। एसा नही कि हम व्यक्तिगत तर्क वितर्क पर विश्वास न करते हो, लेकिन एक बार पार्टी का लिया हुआ निर्णय अन्ततोगत्वा मन, वचन और कर्म से सबका निर्णय बन जाता है।"

"तो मनुष्य के तर्क का कोई मूल्य नही।" जगतप्रकाश बोला।

मुह बनाते हुए सामन्त ने उत्तर दिया, "तर्क स्वय म मनुष्य के विश्वासो का सुदृढ बनाने का साधन है, और विश्वास वातावरण, परिस्थितियो और समाज से अनुप्राणित होते हैं। मनुष्य का आधारभूत सत्य है भावनाओ का विस्तार। तब उसी भावना की व्युत्पत्ति है, उससे अलग या बाहर

नही।" कामरेड सामन्त ने नाश्ता समाप्त कर लिया था। उसने उठते हुए कहा, "अच्छा, अब मैं चलूगा। शायद आज शाम तक जमीलअहमद आ जाएँ। उनसे कह दना कि वह आते ही पार्टी-ऑफिस म फोन कर ल, या फिर वही साथ चले आएँ।"

जमील उसी दिन दोपहर के समय डाकगाडी से वापस आ गया। कामरेड सामन्त की ही बात ठीक थी। पार्टी की वह मीटिंग निश्चय ही महत्त्वपूण हागी। जमील के चेहरे पर एक तरह का तनाव था, वह काफी चिन्तित दिख रहा था। जगतप्रकाश ने पूछा, "क्यो, घर मे सब खरियत ता है, देर लगा दी आन म यहा ? आज सुबह कामरेड सामन्त आए थे, बडे चिन्तित थे कि तुम अभी तक वापस नही लौट, कल सुबह कोई मीटिंग है।"

कुछ झुझलाहट के स्वर म जमील बोला, "उन्ह चिन्ता करने की इतनी जरूरत नही थी, मैं उसी मीटिंग के लिए आज लौट आया, वरना कुछ दिन और लखनऊ कानपुर मे रुकना चाहता था। बस उस मीटिंग म जो कुछ होने वाला है उसस मैं सहमत नही हूँ। बदकिस्मती यह है कि लोग चीजो को ठीक तौर स समझने और सोचने की कोशिश नही करते, असलियत को नजरदाज कर रह है।"

"आखिर बात क्या है ? मै जान सकता हूँ कुछ ?" जगतप्रकाश बाला।

"तुम्ह बतलाए दता हूँ, गाकि जब तक फसला न हो जाए तब तक तुम किसी से कुछ कहना नही चाहिए। कम्युनिस्ट पार्टी मुस्लिम लीग के रवय का समथन कर रही ह, और इसके मानी यह है कि वह पाकिस्तान की माग का समथन कर रही है।"

जगतप्रकाश चौक उठा, 'क्या कहा जमील काम्रे ? बात यहा तक पहुँच गई है।"

उदास स्वर म जमील बोला, "इसम ताज्जुब की कोइ बात नही है। कांग्रेस का चुनौती सिफ एक ही पार्टी दे सक्ती है और दे रही है वह है मुस्लिम लीग। यह काग्रेस सरमाएदारा और खास तौर से हिन्दू सरमाएदारो की जमात है। हिन्दुस्तान की बागडोर अगर काग्रेस के हाथ मे आ गइ ता पूरा-का-पूरा मुल्क सरमाएदारा क कैम्प म चला जाएगा। काग्रेस के हाथ म हिन्दुस्तान की बागडोर नही आनी चाहिए। इस वक्त हिन्दुस्तान

की आजादी के माने होंगे हिंदुस्तान का सरमाएदारों की गुलामी में जकड़ जाना। अंग्रेजों की गुलामी से तो हम कभी-न-कभी छूट सकते हैं, आज नहीं तो कल, क्योंकि वे विदेशी हैं, लेकिन अगर देश के सरमाएदारों के शिकंजे में यह देश जकड़ गया तो कोई उम्मीद नहीं।" और कुछ रुककर जमील ने फिर कहा, "मुसीबत यह है कि पार्टी देश के बँटवारे के नारे को ठगों का नारा समझती है, वह यह समझती है कि देश का बँटवारा हो ही नहीं सकता। उसका खयाल है कि इस बीच पार्टी को वक्त मिल जाएगा कि वह अवाम में अपनी जड़ जमा ले। जब पार्टी अवाम में पहुँच जाएगी तब वह कांग्रेस की जगह ले लेगी।"

कुछ सोचकर ज्ञानप्रकाश ने कहा, "पार्टी वालों का तर्क ग़लत तो नहीं दिखता।"

सिर हिलाते हुए जमील ने कहा, "लेकिन यह तर्क असलियत से बहुत दूर है। यह पाकिस्तान का नारा नफरत का नारा है। नफरत की बुनियाद क्लास-स्ट्रगल पर नहीं है, इसकी बुनियाद मज़हब पर है। मज़हब की जड़ें बड़ी गहरी होती हैं बरखुरदार! कब्ल इसके कि हम क्लास-स्ट्रगल का प्रोग्राम लेकर अवाम के पास तक पहुँचें, पूरा मुल्क मज़हबी नफरत की लपटों से घिर जाएगा। नहीं, यह पाकिस्तान का नारा गलत है।"

जमील के स्वर में गहरी वेदना थी। वह उठ खड़ा हुआ, "मैं पार्टी आफिस जा रहा हूँ, एक दफा मैं फिर कोशिश करूँगा कि लोग अपना इरादा बदलें, गोकि मुझे इसकी उम्मीद नहीं के बराबर दिखती है। देश भर में यह मज़हबी तनाव बढ़ता जा रहा है, खास तौर से उत्तरी हिंदुस्तान में।" और कुछ देर तक वह चुपचाप खड़ा रहा। फिर उसने एक ठण्डी सांस ली, "लेकिन खुदा को शायद यही सब मंजूर है। आज सारी दुनिया में नफरत का जबर्दस्त दौर चल रहा है, यह विश्व-युद्ध इस नफरत की ही तो उपज है। हमें इस नफरत से छुटकारा नहीं मिलने का। बहरहाल इंसान होने के नाते एक दफा कोशिश तो करूँगा, होगा वही जो खुदा को मंजूर है।"

शाम हो गई थी, ज्ञानप्रकाश ने घड़ी देखी, छः बज चुके थे, यद्यपि अभी अन्धकार होने में घण्टे भर की देर थी। कपड़े बदलकर वह कुल्सुम के यहाँ के लिए रवाना हो गया। शाम को कुल्सुम के यहाँ कुछ समय के लिए

ना उसका नित्य का कार्यक्रम था।

कुल्सुम उस समय अकेली नहीं थी, एक स्त्री उसके साथ बैठी बातें कर ही थी। कुलसुम ने जगतप्रकाश को देखते ही कहा, "तुम बड़े अच्छे आ गए गत! यह मालती मेहता, इन्हें तो तुम जानते हो। मालती मनुभाई, पिछले अक्तूबर से मालती मेहता। त्रिभुवन से इनका विवाह हो गया है।"

"अच्छा! तो मेरी बधाई मालती बेन! मैं उन दिनों कलकत्ता में था।" जगतप्रकाश ने बैठते हुए कहा, "त्रिभुवन तो कानपुर में हैं, या वह कानपुर छोड़कर यहां बम्बई में आ गए हैं?"

कुलसुम के उत्तर देने के पहले ही मालती बोल उठी, "वह यहां क्यों आएगा! वह कानपुर—गन्दा शहर, और वहां चोरबाजारी और मुनाफाखोरी की गन्दी जिन्दगी—वह उसका आदी हो गया है। मुझे अगर पहले मालूम होता कि उसकी सारी गन्दगी को अपनाकर मुझे उस गन्दे शहर में जिन्दगी बितानी पड़ेगी तो मैं उससे विवाह ही क्या करती?"

जगतप्रकाश ने गौर से मालती को देखा, मुख पर किसी प्रकार के दुःख का चिह्न नहीं। वैसी ही दुबली पतली, वैसा ही तेज-तर्रार—जैसी उसने पिछली बार मालती को देखा था। कुल्सुम बोली, "दिसम्बर में ही मालती कानपुर छोड़कर चली आई। त्रिभुवन का बाप तो राजी है कि त्रिभुवन बम्बई आ जाए, वह अपने छोटे लड़के वीरेन्द्र को कानपुर भेजने को तैयार है लेकिन त्रिभुवन नहीं आना चाहता। सुना है इस बीच उसने कपड़े और अनाज का धन्धा भी बढ़ा लिया है, पिछले दो वर्षों में उसने पांच सात लाख रुपया पैदा किया है। इस मालती का बाप—मनुभाई जीवराज—वह महात्मा गांधी का बहुत बड़ा चेला है, वह बहुत नाराज है त्रिभुवन पर। त्रिभुवन का बाप भी उससे खुश नहीं है—यह त्रिभुवन सरकार के साथ भी बेईमानी करने में नहीं चूकता—न जाने कब जेल चला जाए।" फिर उसने मालती से कहा, "त्रिभुवन से तुम्हारा फिर से मेल हो जाना चाहिए, अगर तुम कहो तो मैं जगतप्रकाश को कानपुर भेज दूं।"

मालती ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा, "बिल्कुल नहीं, मैं उस आदमी से घृणा करने लगी हूं। अगर अब वह बम्बई आ भी जाए तो मैं उनके साथ न रह पाऊंगी।"

कुलसुम बोली, "तो फिर तुम इतनी लम्बी जिन्दगी बिताओगी कैसे ?"

"बड़े मज़े मे।" मालती बोली, "मैंने सोशल वर्क आरम्भ कर दिया है। फिर बापू ने मेरे नाम से एक जिनिंग फैक्टरी भी खरीद दी है, उसका काम-काज देख रही हूँ। तुम भी तो अपनी मिल का काम काज देख रही हो।"

कुल्सुम मुसकराई, "नाम के लिए। वैसे सब काम-काज तो परवेज़ ही देखता है।"

मालती मुसकराई, "तुम भाग्यवान् हो परवेज़-जैसा सीधा और नेक पति पाकर।" और अब वह जगतप्रकाश की ओर घूमी, "कुल्सुम बहन से तुम्हारी बाबत सुना था कि तुम चौपाटी पर रह रहे हो। वहां से मेरा घर नज़दीक ही है मालाबार हिल पर। कभी फुरसत हो तो उधर भी आ जाया करो।" और उसने हँसते हुए कुल्सुम से कहा, "मैं इन जगतप्रकाश को तुमसे छीनूंगी नही, इतना विश्वास रखो।"

और कुल्सुम भी हँस पड़ी, "यह जगतप्रकाश पूरी तौर से अपने हैं, मेरा इन पर कोई अधिकार नही।" और एकाएक कुल्सुम फिर गम्भीर हो गई एक ठण्डी सांस लेकर उसने कहा, "काश इन पर कोई अपना अधिकार कर लेता।"

इसी समय परवेज़ और जमशेद कावसजी वापस लौटे। कार से उतरते ही जमशेद कावसजी ने मालती को देख लिया, और वहीं से उन्होंने आवाज़ लगाई, "ए मालती, तुमसे जरूरी बात करनी है। यह त्रिभुवन। इसने मुझे समझ क्या रखा है ?" और घर के अन्दर न जाकर वह बरामदे में आ गए। वहां बैठकर उन्होंने अपना पोर्टफोलियो खोला, उससे एक एक हजार के दस नोट निकालकर उन्होंने मेज़ पर रख दिए, "विलायती मशीन नही आता तो उसने कानपुर मे कपड़े का धन्धा कर लिया है, बड़ा अच्छा है। मैंने वह दिया था कि मैं मदद करूँगा। दस गाठें छींट की दे दी थीं—वह मिल के किसी खाते मे नहीं थी। अब सौ गाठें मांग रहा है—यह दस हजार रुपया ब्लैक का भेजा है पेशगी। सौ रुपया फी गांठ ब्लैक का। यह हिम्मत कैसे पड़ी ? जमशेद कावसजी ब्लैक का धन्धा नहीं करते। आज ही इसको फ़ौरन से उसने यह दस हजार रुपया भेजा है, देख रही हो।"

मालती ने नोट उठाकर अपने पर्स मे रख लिए, "आप डांटकर उस

लिख दीजिए, और यह भी बतला दीजिए कि दस हजार रुपए मैंने आपसे ले लिए हैं।"

जमशेद कावसजी को अनुभव हुआ कि यह रुपया मालती के सामने रखने में उनसे गलती हो गई है। वह बोले, "मैं उसे डाटकर लिख दूगा और मैं उसका रुपया भी वापस कर दूगा। तुम्हारा तो त्रिभुवन से शायद कुछ झगडा भी चल रहा है।"

मालती बोली, "यह त्रिभुवन जो ब्लैक मार्केट का धन्धा कर रहा है, वह मुझे जरा भी पसन्द नही। मुझसे पचीस हजार रुपए कर्ज लेकर उसने इस धन्धे में लगा दिए हैं। मैंने जब अपने रुपए मागे तो बोला कि नही देगा, मैं मुकदमा चलाऊँ उस पर। तो अब मैं भला उस पर मुकदमा चलाऊँगी? चलो, दस हजार रुपए तो वापस मिल गए।"

जमशेद कावसजी ने उलझन के स्वर में कहा, "लेकिन यह रुपया तो त्रिभुवन ने मेरे पास भेजा है और मुझे चाहिए कि मैं उसका रुपया उसे वापस कर दू। यह रुपया तुम मुझे दे दो।"

"नही डैडी, यह रुपया तो अब मेरे पास आ गया है, त्रिभुवन को वापस नही जाएगा।"

"तो फिर मुझे सौ गाठें त्रिभुवन को भेजनी पडेगी।" जमशेद कावसजी बोले और उन्होंने परवेज की ओर देखा, "परवेज! कल सौ गाठें त्रिभुवन को भेज देना, क्योंकि हम उसका रुपया वापस नही भेज सकते।"

एकाएक मालती उठकर खडी हो गई, उसका चेहरा तमतमा उठा, "नही, सौ गाठें उसे नही जाएगी, किसी हालत में नही जाएँगी।" और उसने पर्स से निकालकर वे नोट जमीन पर फेंक दिए, "लो उसका यह अभिशापित रुपया उसे भेज दो, लेकिन उसे कपडा नही जाना चाहिए डैडी!" और वह घूमकर तेजी के साथ अपनी कार की ओर चल दी। परवेज ने जमीन से नोट उठाकर जमशेद कावसजी को दे दिए।

कुल्सुम उठकर मालती के पीछे दौडी, मालती अपनी कार की पिछली सीट पर गिर-सी पडी थी, वह रो रही थी।

कुल्सुम ने मालती के ड्राइवर को बुलाया, फिर उसने जगतप्रकाश से कहा, मालती को उसके घर पहुँचा दो जगत! इसकी नब्ज बडी खराब

हैं कहीं रास्ते म कुछ कर न बठे। बेचारी मालती ! एक जानवर के साथ बँध गई।"

जगतप्रकाश मालती की बगल म बैठ गया और कार चल पडी। कम्प कामर तक पहुँचते पहुँचते मालती स्वस्थ हो गई थी। उसने जगतप्रकाश से कहा, "रुपया हाथ मे आकर निकल गया। लेकिन—लेकिन—यह त्रिभुवन बचेगा नही, इसे इसके पापा का दण्ड मिलेगा, जरूर मिलेगा। बस मुझे कुछ भी नही हुआ है, मेरी नब्ज बिलकुल ठीक है।" और मालती के मुख पर एक मुसकराहट आ गई, "कुल्सुम बकार चिन्तित हो गई, तुम्हें मेरे साथ भेजने की कोई जरूरत नहीं थी। लेकिन अच्छा ही हुआ, इस बहाने तुम मेरे घर तो चल रहे हो। और इसके बाद तुम कभी-कभी मेरे यहाँ आ रहोगे ! बोलो, आते रहोगे न ! मैं बिल्कुल अकेली हूँ। मेरे बापू को अप काम से फुरसत नही, मेरा बडा भाई त्रीकम सिंगापुर म फँस गया है, छोट भाई श्यामल कालेज म पढता है या खेल-कूद म उलझा रहता है। क्रिके का शौक है उसे। मेरा कुछ वक्त मिल का काम काज देखने म कट जात है, बाकी समय म सोशल वर्क। इस सोशल वर्क म लाख कोशिश करत हू, मेरा मन नहीं लगता, जैसे एक घुन लग गया है मेरी जिन्दगी मे। तुम समझदार आदमी हो, मेरी हालत तुम समझ ही सकते हो।"

मालती की मुसकान म कहीं कोई सम्मोहन है, जगतप्रकाश को अना यास ही यह अनुभव हुआ और इसके साथ यह भी अनुभव हुआ कि उस दुबली-पतली सांवले वर्ण की लडकी म कहीं कोई आकर्षण है जो उस पर छाता चला जा रहा है। उसने धीमे स्वर म कहा, "मेरी आपके साथ हार्दि संवेदना है !"

मालती फिर गम्भीर हो गई 'अच्छा, एक बात बताओ सच-सच झूठ मत बोलना। मैं जो कानपुर से चली आई हूँ त्रिभुवन को छोडक क्योंकि मैं त्रिभुवन की बेईमानी और उसकी अर्थ लिप्सा को बरदाश्त नह कर सकती थी, यह मैंने सही किया या गलत किया ?"

कुछ सोचकर जगतप्रकाश बोला, 'मैं त्रिभुवन को अच्छी तरह जानत नहीं हूँ लेकिन दूर से उसमें मैं जितना भी जान पाया हूँ वह मुझे बहुत बुर नहीं लगा। वह दुनिया का एक सफल आदमी बनना चाहता है, और

पूँजीपति वर्ग का होने के नाते वह अपनी सफलता आर्थिक सम्पन्नता में ही समझता है। शायद आपने अपना कदम उठाने में कुछ जल्दबाजी कर दी।"

"मेरे बापू भी यही कहते है, मेरे मिलने-जुलने वाले, सगे-सम्बन्धी भी यही कहते हैं।" मालती बोली, "मुझे इस कदर उतावलेपन से काम नहीं लेना चाहिए था। और इसकी वजह यह है कि वे त्रिभुवन के असली रूप को नहीं जानते। मेरी भावना कोई समझ ही नहीं पाता—तुम आज भी नहीं समझ पा रहे हो। मैं बेईमानी को सबसे बड़ा चारित्रिक दोष समझती हूँ, क्योंकि ईमानदारी से ही हमारा जीवन शासित होता है, चाहे वह सामाजिक जीवन हो, चाहे वह पारिवारिक जीवन। मुझे यह नहीं मालूम था कि त्रिभुवन आधार रूप से बेईमान आदमी है। उसका ऊपरी रूप कुछ और है, किन्तु उसका वास्तविक रूप ठीक उसके विपरीत बड़ा कुत्सित है।"

जगतप्रकाश मुसकराया, "वर्तमान सभ्यता वाली दुनिया इसी बेईमानी से भर दिखावे की दुनिया है, और हम सब एक तरह से बेईमान हैं। आप त्रिभुवन के प्रति बहुत अधिक अनुदार हो रही हैं।"

कार अब मालती के घर के कम्पाउण्ड में आ गई थी। मालती ने कहा, "आइए न, एक प्याला चाय पी लीजिए।"

जगतप्रकाश मालती के साथ उसके ड्राइंग रूम में बैठ गया। प्याले में चाय ढालते हुए मालती ने कहा, "अभी तुमने कहा था कि हम सब बेईमान हैं। यह गलत है। यह सामाजिक शिष्टाचार, यह नेकी का प्रदर्शन—ये सब स्वाभाविक हैं, क्योंकि नेकी हमारे अन्दर है, दूसरे को दुःख न पहुँचाने की भावना भी हमारे अन्दर है। नहीं मिस्टर जगतप्रकाश! अधिकांश में बेईमान दिखने वाले आदमी बेईमान नहीं हैं, क्योंकि उन्हें विवश होकर बेईमान बनना पड़ता है। यह विवशता की भावना भी तो आन्तरिक है। उन्हें बेईमान बनने में क्लेश होता है। मैं जो त्रिभुवन की बात कह रही थी वह मैं ठीक-ठीक समझा नहीं पा रही हूँ। लेकिन इतना सच है कि मैं त्रिभुवन से घृणा करने लगी हूँ।"

जगतप्रकाश ने बात आगे नहीं बढ़ाई, मालती काफी उत्तेजित थी, और इस उत्तेजना की हालत में वह कोई बात समझ नहीं सकेगी।

मालती की कार जगतप्रकाश को उसके घर छोड़ गई। जमील लौट

आया था और चुपचाप वैठा हुआ कुछ सोच रहा था। जगतप्रकाश ने कहा, "बडी जल्दी लौट आए जमील काका! वडे उदास हो।"

एक ठडी सास लेकर जमील वोला, "हाँ वरखुरदार! सोच रहा था कि कुछ वहुत खराव होने वाला है—और वदकिस्मती यह है कि उसे रोका नही जा सकता।"

"तुम तो पहेली वुझा रहे हो जमील काका! आखिर वात क्या है?"

"हिंदुस्तान के वँटवारे की जवरदस्त तैयारियाँ हो रही हैं, और यह वँटवारा हिंदुस्तान को तोडकर रख देगा। यह वँटवारा जवान की विना पर नही हो रहा है, यह हो रहा है मजहव की विना पर। जवान की विना पर हिंदुस्तान के मुख्तलिफ हिस्सो के अलग हो जाने की वात तो समझ म आ सकती है, लेकिन मजहव की विना पर यह वँटवारा, समझ म नही आ रहा। यह सव कैसे होगा?"

जगतप्रकाश वैठ गया, "भाषा के आधार पर हिंदुस्तान के टुकडे हो, यह तो वडी आकस्मिक वात होगी।"

जमील ने जगतप्रकाश को गौर से देखा, "यूरोप म इस जवान की विना पर जो इतने मुल्क है, वे कैसे स्वाभाविक हैं? करोड-दो करोड आवादी वाले न जाने कितने मुल्क हैं वहाँ पर, हालण्ड, वेल्जियम, डेनमार्क, स्वीडेन, नॉरवे, और भी न जाने कितने छोटे छोटे हिस्से! लेकिन मैं कहता हूँ इस वँटवारे की जरूरत क्या है? इकवाल ने पहले पहले आवाज उठाई थी इस पाकिस्तान की, और इकवाल एक वक्त सवसे वडा देश भक्त था। मुझे याद है उसकी नज्म—'सारे जहा से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा!' और उसी इकवाल ने नफरत से भरकर पाकिस्तान का सपना देखा। और इसके वाद मुहम्मदअली जिन्ना। यह जिन्ना भी किसी वक्त काग्रेस म शामिल था और राष्ट्रीय नेता था। उसने आगे वढकर पाकिस्तान की स्कीम वनाई, और आज उसकी तहत म पाकिस्तान नारा न रहकर एक वदसूरत असलियत वन रहा है।"

जगतप्रकाश ने जमील की वात पर कोई टीका नही की, वह चुप वैठा जमील की वातें सुन रहा था। कुछ रुककर जमील ने फिर कहा, "यह वँटवारे की वात, यह नफ़रत का नजरिया—यह उन लोगो का है जो

राजनीति मे हैं। इकबाल शायर था—जज्बात का आदमी। उसने एक कल्पना की—मौलिक कल्पना, और वह अपनी ही कल्पना के ताने-वाने मे फँस गया। उसकी इस कल्पना का असर समाज पर क्या पडेगा, शायर होने के नाते उसने इस पर कभी सोचा ही न था। लेकिन जिन्ना—शायरी से बहुत दूर, वह राजनीतिज्ञ है। जिन्ना से यह उम्मीद की जा सकती है कि इस बँटवारे का जो असर मुल्क पर पडेगा, उसे वह जानता है। और यह जिन्ना इस बँटवार पर अड गया है—यह मुल्क की बदक़िस्मती है।"

'जिन्ना गुजराती है।" जगतप्रकाश बोला, "वह मज़हब से भी बहुत दूर है।"

"लेकिन जिन्ना मुस्लिम घर म तो पैदा हुआ है।" जमील बोला, "और उसे आगे बढने में पग-पग पर हिन्दुओ से बाधा मिलती है। हिन्दुओ की तादाद मुसलमानो की तादाद से बहुत ज्यादा है न! मैं जिन्ना की भावना को समझ सकता हूँ—उसके अन्दर नफरत का जहर भर गया है। लेकिन यह कम्युनिस्ट पार्टी जो जिन्ना के नारे का समथन करने पर आमादा हो गई है, यह सरासर गलत है।"

थोडी देर तक दोनो अपने विचारो मे खोए रहे, फिर जैसे जगतप्रकाश को कुछ याद आ गया, "कांग्रेस म भी तो एक ऐसा आदमी है जो पाकिस्तान के नारे की ताईद करता है," जगतप्रकाश बोला, "राजगोपालाचारी का कहना है कि महात्मा गाधी जिन्ना के साथ मिलकर समझौता कर लें, और अगर जिन्ना पाकिस्तान की माग पर अडा है तो देश के बँटवारे पर राज़ी हो जाएँ।"

जमील के मुह पर एक कडुवी हँसी आई, "राजगोपालाचारी मद्रासी है और यह हिन्दू मुस्लिम-समस्या उत्तरी हिन्दुस्तान की है। मैंने कहा न कि बँटवारे की बात उन लोगो म चल रही है जो ताकत के भूखे हैं।" जमील उठ खडा हुआ, "खैर छोडो भी इस बात को! मेरा ऐसा खयाल है कि यह बटवारा नही होने पाएगा, क्योकि यह बँटवारा उसी हालत मे हो सकता है जब अग्रेज हिन्दुस्तान की हुकूमत छोड दे। और अग्रेज अपनी हुकूमत नही छोडेगा। अच्छा, अब खाना खा लिया जाए।"

हिन्दुस्तान म साम्प्रदायिक तनाव दिनो दिन बढता जा रहा था। देश

की सारी चेतना जैसे मर गई थी। काग्रेस के वरिष्ठ नेता धीरे धीरे छोडे जा रहे थे, टूटे हुए और पराजित। और जेल मे बीमार पड जाने के कारण मई के प्रथम सप्ताह मे महात्मा गाधी भी जेल से छोड दिय गए।

यूरोप मे ब्रिटन और रूस जमनी पर निणयात्मक प्रहार की तयारी कर रहे थे। जमनी की सेना अफ्रीका से निकलकर इटली म आ गई थी, और करीब-करीब यह निश्चय हो गया था कि वप के अन्त तक यह युद्ध समाप्त हो जाएगा।

गर्मी अब भयानक रूप से पडने लगी थी। जून के पहले या दूसरे सप्ताह म बम्बई मे मानसून आता है, और मानसून आने के पहले वहां का वातावरण जैसे जलने लगता है। उस दिन जगतप्रकाश अखबार पढते ही चाक उठा। राजाजी के नाम से देश म काग्रेस और मुस्लिम लीग क समझौते का एक सुझाव निकला था और यह कहा गया था कि महात्मा गाधी उस सुझाव से सहमत हो गए है।

जमील उस समय अपने कमरे म था। जगतप्रकाश न जमील को आवाज दी, "जमील काका! जरा यहा आना, देखो तो महात्मा गाधी ने राजाजी क फामूले पर अपनी सहमति दे दी है। यह फामूला राजाजी ने प्रकाशित करा दिया है।"

यह सुनते ही जमील जगतप्रकाश के कमरे म आ गया, "या खुदा! यह क्या कह रहे हो? बतलाओ तो जरा।"

जगतप्रकाश ने उस फामूले का मतलब समझाते हुए पढना आरम्भ किया, "पहला पैरा कहता है कि नीचे लिखी शर्तों के मुताबिक स्वतन्त्र भारत क निमाण के लिए मुस्लिम लीग भारत की स्वतन्त्रता के आन्दोलन म काग्रेस को पूरा सहयोग देगी तथा स्वतन्त्र भारत की अन्तिम उपचार म काग्रेस से सहयोग करेगी ..."

वे शर्तें क्या है बरखुरदार?" जमील ने उतावलेपन के साथ पूछा।

"सुनाता हूँ।" जगतप्रकाश बोला, "पहली शत यह है कि युद्ध की समाप्ति के बाद हिन्दुस्तान के उत्तर-पश्चिम और हिन्दुस्तान के पूव म, उन इलाको को तय करने के लिए जिनम मुसलमानो का पूर्ण बहुमत है एक कमीशन बनाया जाएगा। और उसके बाद उन इलाको म जनमत लिया जाएगा

कि वहाँ के निवासी हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं या हिन्दुस्तान से अलग होना चाहते हैं। अगर बहुमत तय करता है कि वे इलाके हिन्दुस्तान से अलग होना चाहते हैं तो वे अलग हो सकेंगे। इसमें सीमावर्ती इलाकों को यह छूट होगी कि वे चाहें तो हिन्दुस्तान में रहें, चाहे नए इलाके में शामिल हो जाएँ।"

"बड़ा खतरनाक सुझाव है बरखुरदार! महात्मा गांधी इस बात को स्वीकार करने पर राज़ी कैसे हो गए? कांग्रेस के और नेता इस सुझाव को क्या मंजूर कर लेंगे?"

"तीसरे सुझाव में इस खतरे का इलाज है। हिन्दुस्तान की सब पार्टियों को यह अधिकार होगा कि वे जनमत-संग्रह के पहले उन इलाकों की जनता के समक्ष अपना-अपना दृष्टिकोण रखें तथा उन्हें प्रभावित कर सकें।"

जमील ने एक ठंडी सांस ली, "सब समझता हूँ बरखुरदार, लेकिन उससे होगा कुछ नहीं। यह मज़हबी पागलपन जो भड़क उठा है उसमें नफरत का ही बोल-बाला रहेगा। भला इस नफरत के पागलपन में कोई सोचने-समझने तैयार होगा! इसके माने यह हैं कि देश के बँटवारे की बुनियाद पड़ गई ।"

"लगता तो ऐसा ही है, क्योंकि चौथे सुझाव में कहा गया है कि बँटवारे की हालत में रक्षा, वाणिज्य, यातायात तथा अन्य आवश्यक बातों पर इन भागों में आपसी समझौता हो जाएगा।"

जैसे निराशा अब जमील के अन्दर पूरी तौर से समा गई थी, "लेकिन यह सब होगा नहीं। ये दोनों हिस्से एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन जाएँगे। उस हालत में कहाँ का समझौता और कहाँ की एकता!"

"शायद तुम ठीक कहते हो जमील काका!" जगतप्रकाश मुरझाए स्वर में बोला, "क्योंकि पाँचवें सुझाव में सम्भावित वैमनस्य का आभास है। वह कहता है कि जनता में अगर कोई स्थान परिवर्तन हो तो वह जनता की मर्जी से हो, लोग अपने-अपने वतन को छोड़ने के लिए जबर्दस्ती मजबूर न किए जाएँ।'

"और जनता मजबूर की जाएगी—इसे रोका नहीं जा सकता।" ज[illegible] बोला, 'जिस नफ़रत का माहौल पैदा किया जा रहा है उसमें [illegible]

और मुसलमान साथ-साथ कैसे रह सकेंगे ? जहा हिन्दू ज्यादा हैं वहाँ से मुसलमान भागने को मजबूर हांगे, क्योंकि उनके जान माल पर आ पडेगी, और जहा मुसलमान ज्यादा है वहा के हिन्दुओ का भी यही हश्र होगा। या खुदा ! क्या होने वाला है ?"

भयानक निराशा का वातावरण छा गया उस कमरे म, जगतप्रकाश को यह अनुभव हो रहा था। और वह इस निराशा के वातावरण को दूर करने को ही जैसे मुसकराया, "लेकिन शायद यह सब होगा नही। छठा सुझाव कहता है कि यह सब उसी हालत मे होगा जब ब्रिटेन हिन्दुस्तान को पूरी तौर से आज़ाद कर दे। और ब्रिटेन हिन्दुस्तान को आज़ाद नही करगा। इस युद्ध का विजेता ब्रिटन—भला वह अपनी मर्ज़ी से अपने साम्राज्य का अन्त कसे कर लेगा ? नही जमील काका ! बिना आन्तरिक क्रान्ति के देश स्वतन्त्र नही हो सकता और उस आन्तरिक क्रान्ति मे अभी समय लगेगा। इस आन्तरिक क्रान्ति के बाद देश की जो शक्ल होगी, वह बिलकुल भिन्न होगी।"

जमील ने भी अपन को उस निराशा के वातावरण से निकालने का प्रयास करते हुए कहा "ठीक कहते हो बरखुरदार ! लेकिन मेरी समझ म नहीं आता कि महात्माजी ने यह फार्मूला मान कैसे लिया ? जहाँ तक मुझे याद है कि अगस्त १९४२ के क्विट इण्डिया मूवमेण्ट के तीन चार महीने पहले राजगोपालाचारी न ए० आई० सी० सी० म यह बँटवारा मान लेने का प्रस्ताव रखा था, और तब यह प्रस्ताव नामंज़ूर हो गया था। और इस दफा महात्मा गाधी बिना अपने साथियो की सलाह के मान कसे गए ?"

जगतप्रकाश उठ खडा हुआ, "पराजय और निराशा !" वह बोला "१९४२ का मूवमेण्ट असफल हो गया—बुरी तरह स। ब्रिटन इस साम्प्रदायिक विग्रह की आड म हिन्दुस्तान को गुलाम बनाए रखने की जिद पर अडा हुआ है। परिस्थितियो क प्रति आत्मसमपण। इतन महान् और दृढ़ आदमी का इस तरह टूटना कुछ अजीब-सा दिखता है, लेकिन शायद दुनिया मे कोई भी आदमी ऐसा नही है जो टूट न सके। अच्छा, अब क्या प्रोग्राम है तुम्हारा ? मुझे तो अभी थोडी देर म माल्ती के यहाँ जाना है, कल रात को उसका ड्राइवर आया था, तो मैंने आज सुबह नौ बजे आने का कह दिया

। उसकी कार आती होगी ।"

जमील बोला, "मैं भी अब पार्टी-आफिस जाऊँगा। लेकिन बरखुरदार, मालती और त्रिभुवन के मामले से अगर हाथ खींच लो तो ज़्यादा अच्छा गा। यह मालती आगे चलकर तुम्हारे लिए खतरनाक साबित हो सकती —या यूँ कहना ज़्यादा ठीक होगा कि तुम इस मालती के लिए ज़्यादा तरनाक साबित हो सकते हो।"

जगतप्रकाश हँस पड़ा, "मैं किसी के लिए खतरनाक साबित नहीं हो रता जमील काका—तुम्हें मुझ पर तो भरोसा होना चाहिए। लेकिन मैं म्हारी इस बात से सहमत हूँ कि यह मालती खतरनाक औरत है, क्योंकि ठ्रता की हद तक पहुँचता हुआ उसका भावनात्मक व्यक्तित्व है, और मैं कभी-कभी त्रिभुवन के साथ सहानुभूति होने लगती है। यह स्त्री दूसरा ी कमज़ोरी बर्दाश्त ही नहीं कर पाती, यह अपने अलावा किसी दूसरे के ष्टिकोण को समझ ही नहीं सकती। लेकिन मेरे लिए वह खतरनाक नहीं । उसकी नैतिक मान्यताओं के आगे कभी-कभी मुझे झुक जाना पड़ता है।

जमील हँस पड़ा, 'तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। बहरहाल मुझे म्हारी ज़्यादा फ़िक्र नहीं होनी चाहिए क्योंकि तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिए ल्सुम बेन हैं।"

ठीक नौ बजे मालती की कार जगतप्रकाश को लेने आ पहुँची। जगत-काश जब मालती के यहाँ पहुँचा, वह ड्राइंगरूम में उदास बैठी कुछ सोच ही थी। जगतप्रकाश को देखते ही वह उठ खड़ी हुई "मैं बड़ी उलझन में ड़ गई हूँ, और तुम्हारी मदद चाहती हूँ। बैठो!"

जगतप्रकाश ने बैठते हुए कहा, "कहिए, क्या बात है?"

"कल सुबह कानपुर से एक हम लोगों के मिलने वाले आए हैं, उनका हना है कि त्रिभुवन कानपुर में दूसरा विवाह करने वाला है, एक ग़रीब जराती परिवार में।"

"यह तो बुरी खबर है। लेकिन इसकी सम्भावना हो सकती है शायद स बात पर आपका ध्यान नहीं गया था।"

सिर हिलाते हुए मालती बोली, "नहीं, यह मैंने कभी सपने में नहीं सोचा था। लेकिन त्रिभुवन अगर दूसरा विवाह करता है तो मुझे ज़रा भी

बुरा न लगगा, मैं उससे घृणा करती हूँ।"

जगतप्रकाश मालती की इस बात पर कुछ नही बोला, वह ए मालती के मुख पर आए भावो के उतार-चढाव को देख रहा था।

थोडी देर चुप रहन के बाद मालती फिर बोली, "लेकिन त्रिभुवन क्यो भूल जाता है कि मैं उसे बरबाद कर सकती हूँ। तो इतना तय है कि दूसरे विवाह के बाद मैं उसे पूरी तरह से बरबाद कर दूगी, उसे दर-दर भीख मागनी पडेगी। मालती क्षमा करना नहीं जानती।"

क्रोध से मालती का मुख तमतमा उठा था और जगतप्रकाश का ल कि इस क्रोध और उत्तेजना की अवस्था मे मालती का सौन्दय निखर प हैं। जगतप्रकाश न दबी जबान म कहा, "यह तो ठीक नही हो रहा है। क चीजो को टूटने से बचाया नही जा सकता ?"

"कल से मैं भी यही सोच रही हूँ। बापू का कहना है कि इस मामले मे वह दखल नही दगे मैं ही त्रिभुवन से बात कर लू। इसीलिए मैंन तुम्हें बुलाया है। मैं तुम्हारी मदद चाहती हूँ।"

'मैं क्या कर सकता हूँ ? त्रिभुवन से तो मेरी मित्रता कभी नही रही।' जगतप्रकाश बोला।

"मैं यह जानती हूँ—तुम्हे त्रिभुवन से कुछ कहना नही है, तुम्हे सिर्फ मेरे साथ कानपुर चलना है। तुम उधर के रहन वाले हो। मैं वहाँ त्रिभुवन के साथ नही ठहरूँगी, वह बडा कमीना आदमी है। कल मैंने कुलसुम स फोन पर सलाह की थी तो उसने कहा था कि मैं तुम्हे अपन साथ लेती जाऊँ। मैं कल दोपहर को मेल से ही कानपुर जाना चाहती हूँ। तो तुमसे प्रार्थना है कि तुम मेरे साथ चलो, मुझे निराश मत करना।"

मालती के आग्रह को अस्वीकार करना जगतप्रकाश को असम्भव लगा, 'अच्छी बात है, मैं कल चलूगा।'

मालती न कृतज्ञता स जगतप्रकाश को देखा, "मुझे तुम पर पूरा भरोसा है। मैं ट्रैवल एजेण्ट स तुम्हारा बर्थ रिजर्व कराए देती हूँ, मैं स्टशन आऊँगी।"

मालती के पिता मनुभाई जीवराज ने तार द्वारा कानपुर के इम्पीरियल होटल म दो कमरे रिजर्व करा दिए थे। कानपुर पहुँचकर दूसरे दिन सुबह

जगतप्रकाश को साथ लेकर मालती त्रिभुवन के यहा पहुँची। त्रिभुवन का बँगला तिलकनगर म था। मालती का देखकर वह चौक उठा, "अरे तुमने आने की कोई सूचना नही दी, नही तो मैं कार लेकर स्टेशन आ जाता।"

'मैं कल रात मेल से आई हूँ।" मालती ने रूखे स्वर मे कहा, "इम्पीरियल होटल मे ठहरी हूँ। इन जगतप्रकाश को तो जानते ही हो, इनके साथ आई हूँ, बापू ने कहा कि मेरा अकेले जाना ठीक नही।"

त्रिभुवन के माथे पर बल पड गए, लेकिन उसने अपने स्वर को सयत रखा, "अपना घर रहते हुए होटल मे ठहरने की क्या आवश्यकता थी? इस मकान म काफी कमरे है, यह तो तुम जानती ही हा, यह मिस्टर जगतप्रकाश भी यहाँ ठहर सकते ह।"

"और मैं यह जानती हूँ कि यह घर मेरा नही है। मैं तुमसे कुछ बात करने आई हूँ, इसके बाद आज रात को ही एक्सप्रेस से वापस चली जाऊँगी —मैं इस कानपुर शहर से घृणा करती हूँ।"

'क्या काफी बाते नही हो चुकी हैं, जबानी और चिट्ठी पत्री द्वारा?" त्रिभुवन के स्वर मे भी अब रूखापन आ गया था।

"हा, लेकिन उस बातचीत का कोई अन्त नही है। मैने सुना है कि तुम दूसरा विवाह करने वाले हो। क्या यह सच है?"

'मैं अकेला ता नही रह सकता, मुझे कोई जीवन-साथी तो चाहिए ही। तुम मुझे छोडकर चली गइ, इसम दोष तुम्हारा है।"

मालती ने तीखे स्वर म कहा, "तुम्हारा जीवन साथी तो पैसा है, जिसके पीछे तुम अपना धम-इमान सब-कुछ छोड चुके हो। मैं तुमसे घणा करने लगी हूँ।"

तुम्हारे मुख से यह सब कितनी ही बार सुन चुका हूँ।" त्रिभुवन एक व्यग्यात्मक हँसी हँस पडा, "जब तुम मुझसे घणा करती हो तब तुम मुझसे बात करने क्यो दौडी आई हा?"

'इसलिए कि मैं किसी दूसरी अबोध लडकी को तुम्हारी पशुता का शिकार नहा बनने दूगी त्रिभुवन मेहता, मैं तुमसे यह कहने आई हूँ कि तुम अपना दूसरा विवाह नही कर सकते हो, इतना समझ लो।"

'मैं दूसरा विवाह करूँगा, और तुम मुझे रोक नहीं सकोगी—तुम भी

जहाज़ मिल जाएगा—मैं कल ही वम्वई पहुँचना चाहती हूँ। मैं अव कानपुर म एक मिनट के लिए नही रुकना चाहती।"

हावडा-कालका-मेल म उन लोगा को दिल्ली के लिए जगह मिल गई। ट्रेन म मालती गुम-सुम वैठी रही। कभी-कभी वह जगतप्रकाश की ओर देख लेती थी और फिर वह अपने म खो जाती थी। वह रात इन दोनो ने दिल्ली म एक होटल मे विताई और दूसरे दिन सुवह साढे पाच वजे ये लोग एयर लाइंस के दफ्तर म पहुँचे। वहा पता चला कि वम्वई के लिए सब सीटें भर गई है।

मालती ने झल्लाए स्वर मे कहा, "यहा भी निराशा! चलो फ्रंटियर मेल तो मिल जाएगा।" और यह दोनो दिल्ली-स्टेशन पहुच।

ये लोग फ्रंटियर मेल म जगह ढूढ ही रहे थे कि एकाएक जगतप्रकाश को एक परिचित आवाज़ सुनाई दी, "अरे जगतप्रकाश, तुम—अरे, मालतीजी, आप भी यहा? वम्वई चल रही है आज?"

आवाज जसवन्त कपूर की थी जो एक सेकण्ड क्लास कम्पाटमेण्ट मे वठा था। जगतप्रकाश ने कहा, "तुम्हारे कम्पाटमेण्ट मे क्या जगह है? तुम अनायास यहा मिल जाओगे—यह सोचा ही न था। ट्रेन वेतरह भरी है, फस्ट और सेकण्ड क्लास के लेडीज कम्पाट भरे हुए है।"

जसवन्त बोला, "मेरे कम्पाटमेण्ट म ऊपर की दो वर्थें खाली है। इसम तुम दोनो आ जाओ। मालतीजी मेरे नीचे वाली वथ ले ल। मैं ऊपर की वथ पर चला जाऊँगा।" और उसने कुली से कहा, "सामान अन्दर ले आओ।"

दोनो उस सेकण्ड क्लास कम्पाटमेण्ट म वैठ गए। इतने मे वेयरा जसवन्त के लिए चाय और नाश्ता ले आया। जसवन्त ने मालती से पूछा, "आप लोगो ने नाश्ता तो शायद किया न होगा?"

मालती कुछ नही वोली। उत्तर जगतप्रकाश ने दिया, "सुवह की चाय भी नही पी है। सुवह साढे पाच वजे से दौड-धूप कर रह है वम्वई के लिए। तव हारकर स्टेशन आए है।"

जसवन्त ने दो नाश्तो का ऑडर और दे दिया। अव जगतप्रकाश ने पूछा, "क्या लाहौर से आ रहे हो या दिल्ली से चल रहे हो?"

"लाहौर से आ रहा हूँ। लालाजी और शर्मिष्ठा कश्मीर म हैं। मैं भी वहा गया था, लेकिन मेरी तबीअत नही लगी। लाहौर वापस लौटा तो वहा भयानक गर्मी पड रही है। तो सोचा कुछ दिन के लिए बम्बई हो आऊँ, गोकि वहा भी अब बरसात मिलेगी।"

जगतप्रकाश ने सिर हिलाया, "हाँ, आज-कल म मानसून आ जाना चाहिए, लकिन मानसून का पहला दौर बम्बई म सुहाना होता है।"

"बात यह है कि महात्मा गाधी ने देश के बटवारे वाला राजाजी का जो फार्मूला मान लिया है उससे पजाब म साम्प्रदायिक तनाव बढने लगा है। मैं महात्मा गाधी से मिलकर उनसे पूछना चाहता हूँ कि वह इस फार्मूले पर राजी कैसे हो गए!" फिर कुछ रुककर उसने जगतप्रकाश स पूछा, "तुम दोनो यहाँ दिल्ली मे कैसे?"

मालती का मौन अब टूटा, उसने विस्तार के साथ अपने और त्रिभुवन के सम्बन्ध मे तथा अपने कानपुर आने के सम्बन्ध म सब-कुछ बतला दिया।

मालती की पूरी बात सुनकर जसवन्त गम्भीर हो गया, "यह तो अच्छा नही हुआ। बुरा न मानना मालती बेन, इसमे गलती तुम्हारी भी है। तुम्हे इस तरह त्रिभुवन को छोडकर नही आना चाहिए था।"

मालती ने तडपकर कहा, "तुम भी तुम भी—उस कमीने-बेईमान का पक्ष ले रहे हो। उसकी इतनी हिम्मत कि वह दूसरा विवाह करे। देखू, वह यह सब कैसे करता है!"

"तुम उस विवाह करने स रोक न सकोगी मालती बेन! हिन्दू-ला के अनुसार वह विवाह कर सकता है। खास तौर से जब तुम उसके साथ कान पुर मे रहने को नही तैयार हो।" जसवन्त बोला।

'वह क्यो नही बम्बई म आकर रहता है? बापू ने मेरे लिए एक जिनिंग फैक्टरी खरीद दी है, वह उसे सँभाले आकर।"

"वह फैक्टरी तुम उसके नाम कर दोगी?" जसवन्त ने पूछा।

"यह कसे हो सकता है? वह फैक्टरी मेरी है, भला मैं वह फैक्टरी क्यो उसके नाम कर दू? उस पर इस वक्त भी मेरा पचास हजार रुपया है जिसका प्रोनोट मेरे पास है। तुम उसे समझाओ। तुम उसे यह भी समझा देना कि अगर उसने दूसरी शादी की तो मैं उसे मिट्टी म मिला दूगी। वह

मर्दों की गुलामी का युग अब गया।"

जसवन्त ने मालती की इस बात का उत्तर न देना ही ठीक समझा।

जिस समय गाडी बम्बई सेण्ट्रल पहुँची, कुलसुम स्टेशन पर मौजूद थी, परवेज़ के साथ। जसवन्त ने उसे लाहौर से ही तार कर दिया था। जगतप्रकाश और मालती को देखकर कुलसुम बोल उठी, "तुम लोग भी दिल्ली होते हुए आ रहे हो। क्या नतीजा निकला कानपुर मे? चलो, मै तुम लोगो को तुम्हारे यहा पहुँचाए देती हूँ।"

मालती को उसके यहाँ पहुँचाकर कुलसुम ने जगतप्रकाश से कहा, "चलो, अपने फ्लैट मे असबाब रखकर तुम मेरे यहा। यह जसवन्त आये हैं तो मैं आज आफिस नही जा रही हूँ, परवेज़ मेरा काम भी देख लेंगे।"

और परवेज़ निस्पृह भाव से बोला, "अपने तो इस कुलसुम का काम हफ्ते मे चार पाच दिन देखते हैं। इसे फुरसत ही नही मिलती। यह तो नेता है, परवेज़ बेचारा इसका गुलाम।"

कुलसुम ने बिगडकर कहा, "मुझे यह सब काम-काज अच्छा नही लगता। मैंने कितनी दफा कहा कि तुम बन जाओ मनेजिंग डायरेक्टर, लेकिन तुम राज़ी ही नही होते। मैं आज ही रिज़ाइन कर दूगी।"

"ना बाबा, यह हगामा मत खडा करो, कहो तो घर पर ही सब कागज़-पत्तर भेज दिया करूँ। तुम सिर्फ दस्तखत भर कर दिया करो। अरे, एक घण्टा रोज़—वह भी जिस बखत चाहो उस बखत। माफ करो!"

कुलसुम खिलखिलाकर हँस पडी। उसने जसवन्त से कहा 'देख रहे हो जसवन्त! यह परवेज़ कितना प्यारा आदमी है, दिन-ब-दिन मुझे इससे प्यार बढता ही जाता है। यह अपने को मेरा गुलाम कहता है। सच कहती हूँ मैं हर तरह से इसकी गुलाम बन गई हूँ।" और परवेज़ ने शरमाकर आँखें नीची कर ली।

जगतप्रकाश मन-ही-मन कुलसुम और मालती मे कितना अन्तर है, यह सोचने लगा और तभी उसके सामने परवेज़ और त्रिभुवन मे जो अन्तर है वह आ गया।

जमील उस समय घर मे ही था। वह पार्टी-आफिस जाने के लिए तैयार हो रहा था। कुलसुम ने जगतप्रकाश का असबाब उसके फ्लैट मे रखवाकर

जमील से कहा, "कामरेड जमीलअहमद । आप भी मेरे साथ मेरे यहाँ चलिए, पार्टी-ऑफिस म कोई जरूरी काम तो नही है ?"

"जी, लोगो से गप लडाना और दिन भर चाय पीते रहना—अगर इसे जरूरी काम न समझा जाए तो नही है ।"

"तो फिर आप मेरे यहाँ गप लडाइये चलकर और जितनी चाह उतनी चाय की प्यालिया पीजिए । दोपहर का लच ऊपर से । जसवत आए हैं, बहुत दिनो के बाद । तो जगतप्रकाश और आप मेरे साथ चलें ।"

कुलसुम के यहाँ पहुँचकर परवेज आफिस चला गया और ये लोग बरामदे मे बैठ गए । समुद्र से ठण्डी-ठण्डी हवा आ रही थी और दूर पर बादल की टुकडी दिख रही थी । चाय और नाश्ता बरामदे म ही मँगवा लिया गया और बातो का सिलसिला शुरू हो गया ।

बातो ने राजनीतिक रग पकड लिया । क्या यह आवश्यक है कि वर्तमान परिस्थितियो म देश की स्वतन्त्रता के लिए लडा ही जाए ? जसवन्त के सामने प्रश्न यह था । जगतप्रकाश बोला, "बगाल के अकाल से और देश मे फैली हुई भयानक गरीबी से तो नितान्त आवश्यक हो जाता है कि देश जल्दी-से-जल्दी स्वतन्त्र हो । हम कितने दिनो तक यह पशुता का जीवन बिता सकते हैं, हर जगह अपमानित, हर जगह लाछित, हर जगह विवश ।"

"लेकिन यह देश का बँटवारा । यह सम्भव कैसे है ? तुम्हारी बात मानते हुए मेरे सामने प्रश्न यह है कि राजाजी का फार्मूला महात्मा गाधी ने स्वीकार कैसे कर लिया ? क्या इसके स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नही था ?"

"चीजें बुरी तरह उलझ गई है ।" कुलसुम ने ठण्डी सास लेकर कहा ।

और तभी जमील बोला, "जहा तक मेरा खयाल है राजाजी का जो फामूला है वह मिस्टर जिन्ना को मजूर नही होगा ।"

सब लोग चौक उठे जमीलअहमद की बात सुनकर । जसवन्त ने पूछा, "क्यो कामरेड जमीलअहमद, राजाजी के फामूले म जिन्ना की माँग मजूर कर ली गई है, फिर वह जिन्ना को क्यों नही मजूर होगा ?"

"इसलिए कि जनमत सग्रह के बाद बँटवारे की माग खत्म हो जाएगी। एक तो इस शर्तनामे की रू से बगाल और पजाब के वे हिस्से, जहाँ हिन्दुआ

की आबादी ज्यादा है, हिन्दुस्तान में ही रहेंगे, हिन्दुस्तान का बहुत थोडा हिस्सा ऐसा है जहा मुसलमानो का बहुमत हो। सिंध, फंटियर, पश्चिमी पजाब और पूर्वी बगाल—हिन्दुस्तान का एक बटे आठ या नौ हिस्सा, और यह वह हिस्सा है जहा कोई उद्योग धन्धे नही हैं, और हो भी नही सकते, क्योकि वहाँ कोयला नही है, लोहा नही है, दूसरी मिनरल्स नही है।" जमील सिर हिलाते हुए बोला, "यह हिन्दुस्तान का और खास तौर से दक्खिन का बरहमन। इसकी अक्ल की दाद देनी पडती है। साप मर गया और लाठी भी नही टूटी। जिन्ना एक गरीब और अपाहिज पाकिस्तान बनाकर मुल्क के मुसल्मानो को तबाह नही कर सकते, और अगर वह तबाह करने पर आमादा भी हो जाएँ तो देश के मुसलमान तबाह होने पर राजी नही होंगे।"

जसवन्त थोडी देर तक मौन बैठा सोचता रहा, फिर उसने एक ठण्डी सास ली, 'शायद तुम ठीक कहते हो कामरेड जमील अहमद! लेकिन मुझे कुछ ऐसा लगता है कि कुछ बहुत अप्रिय और भयानक होने वाला है। आज तुमने बँटवारे के सिद्धान्त को मान लिया, कल तुम पूरे पश्चिम को और पूरे पूरब को एक इकाई मान लोगे और परसो तुम शायद जनमत-सग्रह की बात की भी आवश्यकता नही समझोगे।"

जसवन्त की बात म जो निराशा थी वह वहा के समस्त वातावरण मे व्याप्त हो गई थी। जसवन्त ने कुछ रुककर फिर कहा, "सारा देश हम हिन्दुओ की सस्कृति का है। हम हमेशा छल-कपट से विपक्षी को दबाना चाहते है, और अन्त म हम स्वय उस अपने ही छल-कपट के शिकार बन जाते हैं। राजगोपालाचारी ब्राह्मण है, भारतवर्ष की समस्त बौद्धिकता इस ब्राह्मण वर्ग म है। मैं तुम्हारी बात स्वीकार करता हूँ कि उन्होने जो फार्मूला रखा है, उसमे ऊपर से भले ही यह बात दीखे कि बँटवारे की बात मान ली गई है, लेकिन उन शर्तों पर हिन्दुस्तान का बँटवारा मुसलमानो को किसी हालत मे मजूर नही होगा। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि उस फार्मूले की महात्मा गाधी से स्वीकृति लेकर उन्होने देश के बँटवारे के सिद्धान्त को महात्मा गाधी द्वारा मनवा लिया है। और मैं इतना कह सकता हूँ कि आगे चलकर बडी मुसीबत खडी होगी। म पजाब के हिन्दुओ और सिक्खो की

भावना को जानता हूँ।"

इस गम्भीर और निराशाजनक वातावरण से घुल्सुम ऊब उठी थी। उसने उठते हुए कहा, "महात्मा गाधी पर हम लोगा को भरोसा रखना चाहिए, उनके हाथा कोई गलत काम नही होगा।"

दोपहर को खाना खाने के बाद जगतप्रकाश जमील के साथ वहा से चल पडा। नाना चौक तक दोनो पैदल ही आए, फिर जमील ने जगतप्रकाश से कहा, "अब घर जाकर आराम करो बरखुरदार—सफर की थकावट होगी। मैं यहा से पार्टी-ऑफिस जाऊँगा। आज शायद जोर की बारिश हो, देख रहे हो कितनी गहरी घटा उठ रही है।'

जगतप्रकाश अपने घर पहुँचकर लेट गया। उसके तन म थकावट थी, उसके मन मे थकावट थी। बाहर पानी बरसना आरम्भ हो गया था, और मौसम मे सुहानापन आ गया था। वह सोचने लगा। तरह-तरह के विचार उसके अन्दर आ रहे थे, और इन सब विचारो से अधिक प्रबल था माल्ती के सम्बन्ध मे विचार। इस मालती का भावी कार्यक्रम क्या होगा? माल्ती के सामने सचमुच एक विचित्र समस्या आ गई थी, क्या कही उस समस्या का निदान है?

त्रिभुवन मेहता के सम्बन्ध म कभी भी उसकी धारणा अच्छी नही रही और त्रिभुवन जो कुछ कर रहा था वह उसकी प्रकृति के अनुकूल ही था। हिन्दुस्तान के सभी व्यापारी चोरबाजारी करके रुपया बना रहे हैं, परिस्थितिया ही इस समय ऐसी हैं। ईमानदारी स्वय म सापेक्ष हुआ करती है, समाज त्रिभुवन मेहता के विरुद्ध नही है कानून भी उसके विरुद्ध नही है। केवल माल्ती उसके विरुद्ध है, मालती का कहना है कि वह त्रिभुवन की चोरबाजारी और बेईमानी बदाश्त नही कर सकती।

माल्ती की आत्मा की जो झाँकी जगतप्रकाश को दिखी वह उसे अच्छी लगी। दुनिया म कोई तो ऐसा है जो चरित्रहीनता और बेईमानी को नापसद करता है। पति-पत्नी होने के नाते माल्ती और त्रिभुवन मेहता के आर्थिक हित एक हैं। माल्ती त्रिभुवन का विरोध करके स्वय अपने हित पर लात मार रही है।

यह सोचते-सोचते कब जगतप्रकाश को नींद आ गई, इसका उसे पता

नहा चला। जिस समय जगतप्रकाश की नींद खुली, पानी रुक गया था और धूप निकल आई थी। उसके अन्दर का उदासी जाती रही थी। चाय पीकर उसने कपडे पहने और वह बाहर निकला। तभी उसके सामने से एक खाली टैक्सी निकली। बिना सोचे विचारे उसने टैक्सी रोक ली। टैक्सी वाले को उसने माल्ती के घर का पता बतला दिया।

जगतप्रकाश को बठाते हुए मालती उदास स्वर म बाली, "मै दोपहर से तुम्हारी राह देख रही हूँ। कितनी उदास पडी रही हूँ मैं दिन भर। बापू कहते हैं कि गलती मेरी है, मेरे मिलने जुलने वाले कहते ह कि गलती मेरी है। सच बतलाना, क्या तुम भी समझते हो कि गलती मेरी है ?"

कुछ सोचकर जगतप्रकाश बोला, "इतना बडा कदम जो तुमने उठा लिया है, उसका कोई महत्त्वपूण कारण तो होना ही चाहिए। क्या तुमने कभी उस कारण पर सोचा है ?'

'वह कारण मेरे अन्दर वाला विद्रोह है, म त्रिभुवन से घृणा करने लगी हूँ।" मालती आवेश मे बाली। फिर जैसे अपने आवेश से वह स्वय ही थक गई हो, 'सच बताना, क्या यह त्रिभुवन घृणास्पद नही ह ? तुम साक्षी हो इस बात के, उसने मेरे ऊपर ही नही, तुम्हारे ऊपर भी एक झूठा घृणास्पद आक्षेप किया है।"

जगतप्रकाश ने केवल इतना कहा, "म समझ रहा हूँ तुम्हारी मनोव्यथा, मेरी समस्त सवेदना तुम्हारे साथ है।'

और तभी माल्ती ने एकाएक जगतप्रकाश का हाथ पकड लिया, "उस कमीने ने तुम्हे लेकर मेरे ऊपर जो आक्षेप किया ह मैं चाहती हूँ वह सच हो जाए।" और तभी उसने जगतप्रकाश का हाथ छोड दिया और वह जगतप्रकाश से कुछ दूर हटकर बैठ गई। एक ठडी सास लेकर उसने कहा, "लेकिन यह सच नही हो सकता, इसे सच होना भी नही चाहिए। मैं कितनी अभागी हू!"

यह सब क्या हो रहा है ? यह सब क्या हो रहा है ? जगतप्रकाश की समझ म नही आ रहा था। लेकिन एक पुलक अनायास ही उसके अन्दर जाग उठी। माल्ती कहती जा रही थी, "कोई भी नही समझ पा रहा है मुझे, बापू तक मेरी भावना नहीं समझ पा रहे हैं। एक तुम हो जो मेरी भावना

२४

दिन बीत रहे थे और जगतप्रकाश के अन्दर मालती के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा था।

और जगतप्रकाश में मालती के प्रति जो राग जाग रहा था, जगतप्रकाश को उस राग के असली रूप का पता तक न था। वह ऊपर से भावनात्मक दिखता था, लेकिन वह शुद्ध रूप से शारीरिक था। अगर वह अपने राग के असली रूप को देख पाता तो उसके अन्दर वाला विकसित और परिष्कृत मानव उसे रोकता, लेकिन जगतप्रकाश अपने अन्दर वाले भुलावे में खोया हुआ था।

विश्व-युद्ध समाप्त होने वाला था, क्योंकि जर्मनी की पराजय के चिह्न अब स्पष्ट रूप से दिखने लगे थे। और इस विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद क्या देश में फिर से एक नया आन्दोलन होगा? जगतप्रकाश के सामने जमील का यह प्रश्न था। जहाँ तक ब्रिटिश सरकार का प्रश्न था वह मौन थी। कांग्रेस का आन्दोलन ठंडा पड़ चुका था—मर चुका था। देश का नैतिक बल समाप्त हो गया था। कांग्रेस के छोटे नेता जेलों से एक-एक करके छूटकर आने लगे थे, और वे टूटे हुए थे, थके हुए थे, हारे हुए थे। और दूसरी ओर देश भर में तेजी के साथ बेईमानी और स्वार्थ से भरी लूट बढ़ती जा रही थी, जिससे देश के करोड़ों आदमी कराह रहे थे। इस लूट और चरित्रहीनता का कहीं से कोई विरोध भी तो नहीं हो रहा था, देश की आत्मा मूर्च्छित पड़ी थी। ये करोड़ों आदमी जो लुट रहे थे, इस लूट और अनैतिकता का विरोध करने के स्थान पर स्वयं लूट और अनैतिकता का सहारा ले रहे थे। देश में इस सबको रोकने का एक-मात्र साधन था एक नया आन्दोलन। और जमील

ने पूछा था, "क्या इस विश्व-युद्ध के खतम होने पर देश में फिर से एक नया आन्दोलन हो सकता है ?"

जगतप्रकाश बोला, "नहीं जमील काका, नये आन्दोलन के कोई आसार नहीं दिखते । 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की असफलता ने जैसे कांग्रेस की रीढ़ ही तोड़ दी है।"

जमील ने उदास भाव से जगतप्रकाश को देखा, "शायद तुम ठीक कहते हो। और शायद जो कुछ हुआ है वह ठीक ही हुआ है। लगता तो ऐसा है कि महात्मा गांधी का अपने ऊपर से विश्वास जाता रहा है।"

जगतप्रकाश बोला, "यहीं हम गलती करते हैं जमील काका ! दुर्भाग्य की बात तो यह है कि अपनी असफलता और पराजय के बावजूद उन्हें इस बात का पूरा विश्वास है कि देश की समस्या का हल एक-मात्र उनके हाथ में है। राजगोपालाचारी का फार्मूला उन्होंने मान लिया, यह समझकर कि उनके मान लेने से समस्त देश उस फार्मूले को मान लेगा। देश के बटवारे को एक सत्य के रूप में उन्होंने स्वीकार कर लिया। और पाकिस्तान की मांग उठाने वाले जिन्ना ने उसे नहीं माना। अजीब बात है !"

"इसमें अजीब कुछ नहीं है।" जमील बोला, "असलियत यह है कि जिन्ना मुल्क का बटवारा चाहते ही नहीं हैं।"

जगतप्रकाश ने आश्चर्य से जमील को देखा, "यह क्या कह रहे हो जमील काका ? पाकिस्तान की मांग जिन्ना की नहीं तो किसकी है ? यह जो पिछले कई वर्षों से देश में साम्प्रदायिक घृणा का बीज बोया जा रहा है, इसे कौन बो रहा है ? यह जिन्ना ही तो है !"

जमील मुस्कराया, 'ठीक कहते हो बरखुरदार, यह सब जिन्ना ने किया है आजकल यह सब जिन्ना कर रहे हैं और आगे भी यह सब जिन्ना करते रहेंगे, लेकिन फिर भी जिन्ना देश के बटवारे पर राजी नहीं होंगे, क्योंकि जिन्ना देश का बटवारा नहीं चाहते। पन्द्रह दिन से महात्मा गांधी और मिस्टर जिन्ना में बातें चल रही हैं आज चौबीस सितम्बर है न ! नौ सितम्बर को यह बातचीत शुरू हुई थी। लेकिन कोई समझौता नहीं हो सका है अभी तक, और मेरा कहना यह है कि कोई समझौता नहीं होगा आखिर तक। यह बातचीत नाकामयाब होगी।'

जगतप्रकाश कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने पूछा, "जमील बाबा ! तुम्हारे इस अनुमान का कोई कारण तो होना चाहिए !"

"बिना वजह तो मैं अपनी बात नहीं कह रहा हूँ बरखुरदार ! महात्मा गांधी देश के बटवारे का सत्य मानकर यह बात कर रहे हैं, जिन्ना अपने व्यक्तिगत अहम को आरोपित करने के लिए यह बात कर रहे हैं। सारी मुसीबत यह है कि महात्मा गांधी जिन्ना की महत्त्वाकांक्षा को समझ नहीं पा रहे हैं, और अगर समझ भी रहे हों तो उसे जान बूझकर नजर-अन्दाज़ कर रहे हैं। आखिर यह आपसी बातचीत है। जिन्ना हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा आदमी बनना चाहते हैं उतना ही बड़ा जितने बड़े महात्मा गांधी हैं। लेकिन जिन्ना हिन्दुओं के बहुमत वाले इस हिन्दुस्तान में वह जगह नहीं पा सकते जो महात्मा गांधी की है। यही नहीं, वह जवाहरलाल नेहरू का दर्जा भी नहीं पा सकते।"

जगतप्रकाश को जमील की यह बात अच्छी नहीं लगी, "महात्मा गांधी ने अपने त्याग और अपनी तपस्या से अपना स्थान बनाया है, यही बात नेहरू पर लागू होती है।"

जमील हँस पड़ा, "गलती करते हो बरखुरदार ! महात्मा गांधी ने जरूर अपने त्याग और अपनी तपस्या से अपनी जगह बनाई है, वह इस देश के ऋषि मुनियों की परम्परा में आते हैं उनका रहन-सहन, आचार विचार, तौर-तरीका, सब उसी तरह का है। लेकिन यह नेहरू ! यह तो राजकुमार है। इस नेहरू को महात्मा गांधी ने बनाया है, न जाने कितने लोगों को कुर्बान करके ! और इसमें मैं महात्मा गांधी का कसूरवार भी नहीं करार दे सकता। अहम हरेक बड़े आदमी में होता है, महात्मा गांधी में अहम है, जिन्ना में अहम है, नेहरू में अहम है। लेकिन तुम हिन्दुओं की तहज़ीब में इस अहम को छिपाया जा सकता है, जिन्ना अपने अहम को छिपा नहीं पाता और इसलिए जिन्ना महात्मा गांधी के करीब नहीं आ सका। नेहरू मौका पड़ने पर अपने अहम को बड़ी खूबी के साथ छिपा सकता है।"

"मैं समझता हूँ कि जीवन में यह अहम ही सब-कुछ नहीं है।" जगतप्रकाश बोला।

"मैं मानता हूँ। लेकिन जिन्ना के अहम के पीछे देश के करोड़ों मुसलमान

ने पूछा था, "क्या इस विश्व-युद्ध के खत्म होने पर देश मे फिर से एक नया आन्दोलन हो सकता है ?"

जगतप्रकाश बोला, "नही जमील काका, नये आन्दोलन के कोई आसार नही दिखते। 'भारत छोडो' आन्दोलन की असफलता ने जसे कांग्रेस की रीढ ही तोड दी है।"

जमील ने उदास भाव से जगतप्रकाश को देखा, "शायद तुम ठीक कहते हो। और शायद जो कुछ हुआ है वह ठीक ही हुआ है। लगता तो ऐसा है कि महात्मा गाधी को अपने ऊपर से विश्वास जाता रहा है।"

जगतप्रकाश बोला, "यही हम गलती करते हैं जमील काका! दुर्भाग्य की बात तो यह है कि अपनी असफलता और पराजय के बावजूद उन्हें इस बात का पूरा विश्वास है कि देश की समस्या का हल एक-मात्र उनके हाथ मे है। राजगोपालाचारी का फार्मूला उन्होने मान लिया, यह समझकर कि उनके मान लेने से समस्त देश उस फार्मूले को मान लेगा। देश के बटवारे को एक सत्य के रूप मे उन्होने स्वीकार कर लिया। और पाकिस्तान की माँग उठाने वाले जिन्ना ने उसे नही माना। अजीब बात है!"

"इसमे अजीब कुछ नही है।" जमील बोला, "असलियत यह है कि जिन्ना मुल्क का बटवारा चाहते ही नही हैं।"

जगतप्रकाश ने आश्चर्य से जमील को देखा, "यह क्या कह रहे हो जमील काका ? पाकिस्तान की माग जिन्ना की नही तो किसकी है ? यह जो पिछले कई वर्षों से देश मे साम्प्रदायिक घृणा का बीज बोया जा रहा है, इसे कौन बो रहा है ? यह जिन्ना ही तो है!"

जमील मुस्कराया, "ठीक कहते हो बरखुरदार, यह सब जिन्ना ने किया है, आजकल यह सब जिन्ना कर रहे हैं और आगे भी यह सब जिन्ना करेंगे, लेकिन फिर भी जिन्ना देश के बटवारे पर राजी नही होंगे, क्योंकि जिन्ना देश का बटवारा नही चाहते। पन्द्रह दिन से महात्मा गाधी और मिस्टर जिन्ना मे बातें चल रही हैं, आज चौबीस सितम्बर है न! नौ सितम्बर को यह बातचीत शुरू हुई थी। लेकिन कोई समझौता नहीं हो सका है अभी तक, और मेरा कहना यह है कि कोई समझौता नहीं होगा आखिर तक। यह बातचीत नाकामयाब होगी।"

जगनप्रकाश कुछ दर तक सोचता रहा, फिर उसने पूछा, "जमील काका! तुम्हारे इन अनुमान का कोई कारण तो होना चाहिए।"

"बिना वजह तो मैं अपनी बात नही कह रहा हूँ बरखुरदार! महात्मा गाधी देश के बँटवारे का सत्य मानकर यह बात कर रहे है, जिन्ना अपने व्यक्तिगत अहम को आरोपित करने के लिए यह बात कर रहे हैं। सारी मुसीबत यह है कि महात्मा गाधी जिन्ना की महत्त्वाकाक्षा को समझ नहीं पा रहे हैं, और अगर समझ भी रहे हो तो उसे जान-बूझकर नजर-अन्दाज़ कर रहे हैं। आखिर यह आपसी बातचीत हैं। जिन्ना हिन्दुस्तान का सबसे बडा आदमी बनना चाहते है उतना ही बडा जितने बडे महात्मा गाधी है। लेकिन जिन्ना हिन्दुओ के बहुमत वाले इस हिन्दुस्तान मे वह जगह नही पा सकते जो महात्मा गाधी की है। यही नही, वह जवाहरलाल नेहरू का दर्जा भी नहीं पा सकते।"

जगतप्रकाश को जमील की यह बात अच्छी नही लगी, "महात्मा गाधी ने अपने त्याग और अपनी तपस्या से अपना स्थान बनाया है, यही बात नेहरू पर लागू होती है।"

जमील हँस पडा, "गलती करते हो बरखुरदार! महात्मा गाधी ने जरूर अपने त्याग और अपनी तपस्या से अपनी जगह बनाई है, वह इस देश के ऋषि मुनियो की परम्परा मे आते है, उनका रहन-सहन, आचार-विचार, तौर-तरीका, सब उसी तरह का है। लेकिन यह नेहरू! यह तो राजकुमार है। इस नेहरू को महात्मा गाधी ने बनाया है, न जाने कितने लोगो का कुर्बान करके! और इसमे मैं महात्मा गाधी को कसूरवार भी नही करार दे सकता। अहम हरेक बडे आदमी मे होता है, महात्मा गाधी मे अहम है, जिन्ना मे अहम है, नेहरू मे अहम है। लेकिन तुम हिन्दुओ की तहजीब मे इस अहम को छिपाया जा सकता है, जिन्ना अपने अहम को छिपा नही पाता और इसलिए जिन्ना महात्मा गाधी के करीब नही आ सका। नेहरू मौका पडने पर अपने अहम को बडी खूबी के साथ छिपा सकता है।"

"मैं समझता हूँ कि जीवन मे यह अहम ही सब-कुछ नहीं है।" जगतप्रकाश बोला।

"मैं मानता हूँ। लेकिन जिन्ना के अहम के पीछे देश के करोडो मुसलमान

हैं और इन मुसलमानों में जिन्ना को बेतहाशा ताकत मिल गई है। देश का बँटवारा रुक सकता है अगर महात्मा गाधी जाती ढग मे जिन्ना का सारे देश का नेतत्व दन का तैयार हो जाए। बँटवारे की बिना पर समझौता करने की जगह अगर शख्सियतो की बिना पर महात्मा गाधी यह समझौता करने को तैयार हो जाएँ तो शायद कोई हल निकल आए—जिन्ना यही चाहता है। उसके लिए पाकिस्तान एक नारा भर है, अपनी शख्सियत को हावी करने के लिए, वह असलियत नही है, जबकि महात्मा गाधी पाकिस्तान के नारे को असलियत मान बैठे हैं। और इसीलिए मै कहता हूँ कि यह समझौता नही हो सकता।"

जमील की बात जगतप्रकाश के गल के नीचे नही उतर रही थी। वह उठ खडा हुआ, "मुमकिन है तुम्हारी ही बात सच निकले। लेकिन लगता ऐसा है कि समझौता हो जाएगा। महात्मा गाधी इस बात पर तुले हुए हैं कि अग्रेजो को हिन्दुस्तान से जाना ही चाहिए, और अग्रेज का हिन्दुस्तान से जाना देश के हिन्दू मुसलमानो के सयुक्त और सम्मिलित आन्दोलन पर ही निभर है। जिन्ना से समझौता न होने के माने होंगे देश मे गुलामी की स्थिति का कायम रहना।"

इतने मे फ्लैट के बाहर एक कार के रुकने की आवाज सुनाई दी, और साथ ही मोटर का हार्न बज उठा। जगतप्रकाश बोला, "शायद मालती की कार है, उसने मुझे बुलाया होगा।" और वह फ्लैट के बाहर निकला। लौट कर उसने कहा, "हा, मालती का ड्राइवर ही है। इधर दो-तीन दिन से मैं मालती के यहा नहीं गया हूँ। सच पूछो तो जमील काका, मुझे उसके यहाँ जाने मे डर लगता है।"

जमील ने थोडी देर तक जगतप्रकाश को एकटक देखा, फिर एकाएक उसकी आँखो मे चमक आ गई, "मालती से डर लगता है बरखुरदार, या अपने से?" जमील के मुख पर मुस्कराहट थी।

"शायद मालती से, या—या—खुद अपने से। यह नहीं कह सकता, शायद दोनो से ही। मालती इतनी आकर्षक है, मैंने पहले कभी यह अनुभव ही नहीं किया था। उसकी ओर मैं अपने को बरबस खिचता हुआ महसूस करता हूँ, और इसीलिए मैं अपने को रोकता हूँ। लेकिन अपने को रोक पाता मैं हूँ,

मालती की ओर से बाधा मिलती है। बाहर कार खड़ी है, मालती अपने घर पर मेरा इन्तजार कर रही है। यह क्यों?"

"इसलिए कि मालती में तुम्हारे लिए भी कोई कशिश है। तो फिर जाओगे नहीं क्या?"

जगनप्रसाद ने घड़ी देखी, "अभी साढ़े पांच बजे हैं। शायद वह मुझे अपने साथ किसी पिक्चर में ले जाए, और उस अँधेरे सिनेमा हॉल में किसी करुण दृश्य को देखते-देखते मेरा हाथ पकड़कर, या अगर भीड़ कम हुई, मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर सिसकने लगे। वह त्रिभुवन के कारण इतनी दुखी है जबकि त्रिभुवन को, अपने ही शब्दों के अनुसार अपने जीवन से बाहर कर चुकी है—और त्रिभुवन भी अपने मत के अनुसार मालती के जीवन से दूर हो चुका है—इस बात को सोचकर ही मुझे अजीब सा लगता है।"

जमील की समझ में यह सब नहीं आ रहा था। उसने पूछा, "तो—तो—तुम्हारा मतलब यह है कि मालती तुमसे मुहब्बत नहीं करती?"

"कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ। कभी लगता है कि वह मुझसे प्रेम करने लगी है, और कभी लगने लगता है कि उसका अपना एक निजी अस्तित्व है और किसी पुरुष का उसके जीवन में आना उसकी सुविधा पर निर्भर है। और जब दूसरी बात का आभास मुझे होता है तब मेरी झुंझलाहट बढ़ जाती है।"

जमील पूछ बैठा, "अच्छा बरखुरदार, सच सच बतलाना, क्या तुम भी मालती से मुहब्बत करने लगे हो?"

"प्रेम के आरम्भ में जो एक प्रकार का पागलपन होता है अगर उसे ही सच मान लिया जाए, तो अभी तक नहीं, लेकिन अपने ऊपर इस पागलपन के छा जाने के लक्षण दिन ब दिन मेरे अन्दर बढ़ते जा रहे हैं। न जाने कितनी बार मुझमें यह इच्छा जागी कि उसे मैं अपने आलिंगन पाश में जकड़ लूं, लेकिन मालती ने मुझे इस बात का मौका ही नहीं दिया। जैसे उसके अन्दर वाला यौवन का समस्त उन्माद मर गया है, उसके स्थान पर एक घुटन से भरी करुणा आ गई है। लेकिन जमील चाचा, एक अजीब बात यह है कि उस करुणा में कहीं भी कोमलता नहीं दिख पाती है मुझे।"

जमील को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में कोई दिलचस्पी नहीं थी, उसने

उठते हुए कहा, "अच्छा, अब जाओ बरखुरदार, पौने छ बज हैं। मालती तुम्हारे इन्तजार म बचैन होगी।"

जगतप्रकाश जब मालती के यहा पहुँचा, मालती की नौकरानी ने उससे कहा, बाई की तबीयत अच्छी नही है, कमरे म लेटी हैं। वही बुलाया है है आपको।"

भारी परदा स ढके हुए मालती के बड रूम मे काफी अँधेरा था। मालती न नौकरानी से कहा, 'लाइट जला दो।" और वह अपने पलग पर ही लेटी रही। उसन एक कुरसी की ओर सकेत करते हुए कहा, 'बठो! परसो से बडी जोर का सिर-दद है, चन नही पडता। उजाला सहा नही जाता। मोचती थी कि तुम आओगे लेकिन तुम भी नही आए।" उसन अपनी नौकरानी से कहा, "जाओ चाय बनाकर ले आओ!"

नौकरानी के चले जान के बाद मालती ने कहा, "दिन भर नौकरानी से सिर दबवाती रही हूँ लेकिन दद कम होन का नाम नही लेता। कुरसी थोडी-सी मेरे पास खीच लो।"

कुरसी खीचते हुए जगतप्रकाश ने पूछा, 'बुखार तो नही है?"

'नही बुखार तो नही मालूम होता सिर्फ सिर-दद है।"

जगतप्रकाश न मालती के सिर पर हाथ रखा, उसे बुखार नही था जगतप्रकाश ने मालती के सिर को दबाया और मालती बोली, 'कितना अच्छा लग रहा है! नौकरानी के हाथ मे बल ही नहीं है। कितना आराम मिल रहा है तुम्हार हाथ के दबाव से!"

जगतप्रकाश मालती का सिर दबान लगा। मालती चुपचाप आख बन्द किये हुए लेटी थी, उसके मुख पर आई पीडा की विकृति जाती रही थी, एक तरह की शान्ति थी उसके मुख पर। करीब पाच मिनट तक जगतप्रकाश ने उसका सिर दबाया होगा कि मालती क हाथो न उसके हाथो को पकड लिया, 'अब बस करो, थक गए होगे। फिर मेरा दद भी बहुत कम हो गया है।' और मालती न उसके हाथो को चूम लिया, फिर उसन जगतप्रकाश के हाथो को छोडते हुए कहा, "तुम कितने अच्छे हो!"

जगतप्रकाश का सारा शरीर झनझना उठा। अनायास ही उसे लगा जैसे उसने झुककर मालती के मस्तक को चूम लिया हो, और तभी मालती

एक भटके के साथ उठकर बैठ गई, "चलो, डाइग रूम मे चलकर बैठ। मैंने तुम्हें यहाँ बुलाकर गल्ती की। नौकर-चाकर क्या सोचेंगे।" और वह उठ खडी हुई, "सच तुम्हारे आने से मेरी बीमारी आधी जाती रही।"

नौकरानी चाय की ट्रे ला रही थी। मालती ने उससे कहा, "ड्राइग-रूम म रखा चलकर।"

जगतप्रकाश के अन्दर वाला पशु अब जाग उठा था, उसका शरीर जल रहा था। वह चाहता था किसी तरह नौकरानी चली जाए और वह मालती को अपने बाहु पाश में कस ले। ड्राइग रूम मे पहुँचकर मालती ने कहा, "दो प्याले चाय बनाओ।" और वह जगतप्रकाश की ओर घूमी, "डॉक्टर का कहना है कि मुझे स्थान और वायु-परिवतन की आवश्यकता है। किसी पहाड पर जाने की सलाह दी है उसने। महाबलेश्वर अच्छी जगह है, लेकिन वहा जाने की तबीयत नहीं करती, न जाने कितनी बार हो आई हूँ वहा पर। यही हाल ऊटी का है। मैं हिमालय की गोद म जाना चाहती हूँ, पन्द्रह दिन के लिए। सुना है मसूरी और नैनीताल सितम्बर-अक्तूबर के महीनो मे बडे रमणीक स्थान हो जाते ह।"

"हाँ प्राकृतिक सौन्दय वहा निखर उठा करता है विशेष रूप से नैनी-ताल म।" जगतप्रकाश बोला।

"मैं भी यही सोच रही थी। मैं पन्द्रह दिन के लिए नैनीताल जाना चाहती हूँ। बापू कल कराची चले गए है। मैंने उन्हे डाक्टर की सलाह बताई तो बोले कि मैं नैनीताल हो आऊँ, उन्हे भी नैनीताल बडा पसन्द है। लेकिन मेरी अकेली नैनीताल जाने की हिम्मत नहीं पडती। तुम्हें इसीलिए बुलाया है। तुम्हे यहा कोई काम तो नहीं ह ?"

"अभी तो नहीं। जीवानन्द कालेज म पहली जनवरी से अथशास्त्र के हैड आफ डिपाटमेंट की हैसियत से ज्वाइन करना है तब तक के लिए मैं मुक्त हूँ।"

"तो फिर तुम मेरे साथ चल सकते हो। मैं परसो यहा से जाना चाहती हूँ। ट्रेवल एजेण्ट को फोन करके मैं तुम्हारा रिज़र्वेशन भी परसों के लिए कराए लेती हूँ। तुम कितने अच्छे हो।"

नौकरानी ने चाय बना दी। दोनो चाय पीने लगे और नौकरानी जाने

लगी, तभी मालती बोली, "यहीं रुको, न जाने कब तुम्हें बुलाना पड़ जाए। मुझमें चिल्लाकर बुलाने की ताकत नहीं है।" और फिर उसने जगतप्रकाश से कहा, "यह त्रिभुवन पूरी तौर से कमीनेपन पर उतर आया है। नवम्बर के दूसरे हफ्ते में उसका विवाह हो रहा है। पता लगाया तो मालूम हुआ कि बनारस के एक बहुत गरीब घर की लड़की है। लड़की के पिता की कानपुर में बनारसी साड़ियों की एक छोटी-सी दूकान है। उसने लड़की के पिता को एक लम्बी रकम दी है, अपने विवाह का पूरा खर्चा वह उठा रहा है।"

जगतप्रकाश के अन्दर वाली उत्तेजना इस समय तक दब चुकी थी। उसने स्वाभाविक स्वर में कहा, "तो इसके माने यह हैं कि त्रिभुवन अपना विवाह नहीं कर रहा है, लड़की खरीद रहा है।"

मालती मुसकराई, "इसमें आश्चर्य की क्या बात है? कहीं लड़की खरीदी जाती है, कहीं लड़का खरीदा जाता है, इस दुनिया ही का समस्त व्यापार क्रय विक्रय का है। इस खरीदारी और बिक्री के अनेक रूप दिखें इस दुनिया में, जिन्हें अलग-अलग नाम दे दिये गए हैं, लेकिन हैं वे वास्तव में क्रय विक्रय ही। मेरे बापू ने त्रिभुवन के बापू का दो लाख का कर्ज दिया था बिना ब्याज के, और इस तरह उन्होंने त्रिभुवन को मेरे लिए खरीदा था। और अब वह मेरा खरीदा हुआ आदमी खुद खरीदार बन रहा है। देखना है त्रिभुवन यह सब कैसे करता है!"

अब रात घिरने लगी थी, नौकरानी ने ड्राइंग रूम की सब बत्तियाँ जला दीं, और कमरा प्रकाश से जगमगा उठा। उसी समय पोर्टिको में एक कार रुकी और दो औरतों ने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया। मालती ने उठकर कहा, "आओ मनसावन—अरे चम्पावन तुम भी बैठो!"

ये दोनों युवतियाँ मालती की समवयस्का दिख रही थीं और जगतप्रकाश ने अनुमान लगाया कि ये मालती की सहेलियाँ हैं। चम्पावन नाम की युवती ने कहा, "मनसावन ने बताया कि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। कितनी दुबली हो गई हो, मुँह सूख गया है! तो मैंने सोचा कि तुम्हें देख आऊँ चलकर मनसावन के साथ।"

"हाँ दिन-भर सिर-दर्द में तड़पती रही हूँ। अभी थोड़ी देर पहले जब मिस्टर जगतप्रकाश आए, तब बेडरूम से बाहर निकली हूँ। ये हैं मिस्टर

जगतप्रकाश। इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे, वहा से छोडकर बम्बई आ गए है और जीवानन्द कालेज म प्रोफेसर हो रहे हैं पहली जनवरी स।"

मनसाबेन के मुख पर एक कुटिल मुस्कान आई, "इन्हे मैंने कभी कभी कुल्सुम के साथ देखा ह।" फिर जगतप्रकाश से बोली, 'आप शायद चौपाटी पर कुल्सुम के फ्लैट मे रहते ह।"

मनसा गोरी और दुबली-सी स्त्री थी उसके स्वर म एक प्रकार का तीखापन था जो जगतप्रकाश को कणकटु लग रहा था। जगतप्रकाश को आश्चय हो रहा था उसकी बाबत सब-कुछ मनसा को कैसे मालूम, और तभी चम्पाबेन ने बडी कोमल और मीठी आवाज म कहा, "हम लोगो ने आपकी बडी प्रशसा सुन रखी है, मालती तो आपकी तारीफ करते थकती नही। आपके दशनो का सौभाग्य मुझे आज मिला।' और जगतप्रकाश न देखा कि मनसा और चम्पा एक-दूसरे को देखकर मुसकराई।

तभी मालती बोली, "डाक्टर ने मुझसे कहा है कि मुझे वायु-परिवतन के लिए किसी पहाड पर जाना चाहिए कम से-कम पन्द्रह दिन के लिए। बापू ने सलाह दी है कि मै नैनीताल हो आऊँ लेकिन वे खुद किसी काम से कराची चले गए। तो परसो मैं नैनीताल जा रही हूँ, हिमालय कभी नही देखा है, इस बार हिमालय के भी दशन कर लूगी। मिस्टर जगतप्रकाश ने नैनीताल की बडी तारीफ की है।"

मनसा ने पूछा, "तो क्या तुम्हारे साथ मिस्टर जगतप्रकाश जाएगे ?"

"मैं इनसे कह रही हू, लेकिन यह राजी नही हो रहे। मनसाबेन, तुम भी जगतप्रकाश से आग्रह करो कि यह मेरे साथ चलें।"

मनसा ने जगतप्रकाश से कहा, "देखिए, यह मालती बीमार है, इसकी देख भाल करने वाला तो कोई चाहिए। फिर यह आपको इतना मानती है, और किसी देवता की तरह। यह बेचारी दुख से टूट गई है, आप ही इसे कुछ सहारा दीजिए।"

चम्पाबेन भी बोल उठी, "हाँ, हम लोगो का अनुरोध है कि आप मालती के साथ नैनीताल जाएँ।"

"जी, आप दोनो का अनुरोध मेरे सिर-आखो पर, मैं मालती के साथ

जाऊँगा।" और वह उठ खडा हुआ, "अब आप लोग बातें कीजिये, मुझे एक जरूरी काम से जाना है।" और जगतप्रकाश वहाँ से चल पडा। उसे ऐसा लगा कि वे तीनों औरतें हँस रही हैं।

छब्बीस सितम्बर को जगतप्रकाश मालती के साथ लखनऊ होते हुए नैनीताल के लिए रवाना हो गया। मालती लेडीज़ कम्पाटमेण्ट में थी, उसी के बगल वाले कम्पाटमेण्ट में जगतप्रकाश था।

दूसरे दिन शाम के समय जब गाडी कानपुर में रुकी, जगतप्रकाश ने देखा कि त्रिभुवन प्लेटफाम पर खडा है। न जाने क्या बिना सोचे-समझे जगतप्रकाश ने खिडकी का शटर चढा दिया ताकि त्रिभुवन उसे न देख सके। उसे यह भी लगा कि त्रिभुवन ने मालती को देख लिया है, और वह मालती के कम्पाटमेण्ट की ओर बढ रहा है। फिर उसे मालती की आवाज़ सुनाई दी, "तुम त्रिभुवन मेहता! यहाँ कैसे? क्या लखनऊ जा रहे हो?" और जगतप्रकाश को लगा कि मालती अपने कम्पाटमेण्ट से निकलकर बाहर प्लेटफाम पर आ गई है।

उसे त्रिभुवन का स्वर सुनाई पडा, 'नहीं लखनऊ तो नहीं जा रहा हूँ। मुझे खबर मिली थी कि तुम जलवायु परिवतन के लिए नैनीताल जा रही हो, तुम्हारी तबीअत ठीक नहीं थी, तो तुम्हें देखने चला आया हूँ। वैसे पहले से तो तुम अधिक स्वस्थ दिखती हो। अकेली जा रही हो? कोई साथ में नहीं है क्या?'

मालती बोली, अकेली नहीं हूँ त्रिभुवन मेहता, साथ में मिस्टर जगतप्रकाश भी हैं जो किसी दूसरे कम्पाटमेण्ट में होंगे, आखिर किसी को साथ में तो होना चाहिए मैं बीमार हूँ न!"

जगतप्रकाश को अब अपना मुँह छिपाने की कोई जरूरत नहीं थी, अपने कम्पाटमेण्ट से निकलकर वह त्रिभुवन की बगल में आकर खडा हो गया। मालती बोली, लो, यह भी आ गए हैं।"

त्रिभुवन के मुख पर एक धुँधलापन आ गया, "देख रहा हूँ। मैं तुम्हें बधाई देता हूँ तुम्हारा विश्वास और तुम्हारी ममता प्राप्त कर लेने पर।'

मालती बोली, 'अच्छा हुआ जो तुम चले आए। तुम देख ही रहे हो कि मैं लेडीज़ कम्पाटमेण्ट में चल रही हूँ बम्बई की बुकिंग से लोअर बर्थ

करने का कष्ट तुम्हे नही उठाना पडेगा। और नैनीताल मे मैं मार्टिस होटल म ठहर रही हूँ और यह जगतप्रकाश सेवाय म। हम दोना ने बुकिग करा ली है। तुम्ह पता लगाने में असुविधा न हो इसलिए मै तुम्ह बताए देती हूँ। तो इतना सब अपने बारे मे मैंने बतला दिया। अब तुम्हारा विवाह किस दिन हा रहा है ?"

"तुम्ह मेरी बातो मे इतनी दिल्चस्पी क्या है ?" त्रिभुवन के स्वर से अब शिष्टाचार का मीठापन जाता रहा था।

"इसलिए कि तुम्हें मेरी हरेक हरकत मे दिल्चस्पी है। लेकिन त्रिभुवन मेहता, इतना याद रखना कि अगर मैंने तुम्हे तोडकर न रख दिया तो मेरा नाम मालती नहीं।"

जगतप्रकाश ने देखा कि त्रिभुवन कुछ सहम-सा गया मालती का यह उग्र रूप देखकर। पता नहीं, वह त्रिभुवन के अन्दर वाले भय की प्रतिक्रिया थी, या वह स्वय जगतप्रकाश की निजी भावना थी, जगतप्रकाश भी काप-सा उठा। त्रिभुवन ने अपने का सम्हाल्ते हुए कहा, "इसम सारा दोष तुम्हारा है। जो कुछ मै कर रहा हूँ उसे करने को तुम मुझे मजबूर कर रही हा।"

"अभी मजबूरी का रूप तुमने नही देखा है त्रिभुवन मेहता, मजबूरी का घुटन और पीडा क्या होती है, उसे मैं जानती हूँ।" माल्ती के स्वर मे एकाएक एक गहरी उदासी आ गई।

मालती के उस स्वर से मानो त्रिभुवन के अन्दर एक नया साहस आ गया। उसने कहा, "मैं तो तुम्हारी कुशल-क्षेम पूछने आया था, अपने अन्दर वाली भावना से प्रेरित होकर। तुम्हारी बीमारी की खबर सुनकर मैं बहुत चिन्तित हो गया था और तुम मुझसे लडने लगी। मैं सोच रहा हूँ मैंने यहा आकर गल्ती की।"

"तुम जिस काम के लिए आए थे वह हो गया त्रिभुवन मेहता ! मैं दिल्ली होकर बरेली जा सकती थी, लेकिन मैं कानपुर-लखनऊ होकर जा रही हू ताकि तुम स्टेशन आकर मुझे देख लो। मेरी खबरें तुम्ह मिल्ती रहती हैं, लेकिन अगर मैं चाहूँ तो मेरी खबर मिलना तुम्ह बन्द हा जाए। मेरी उतनी ही खबर तुम्हे मिल सकती है जितनी मैं चाहूँगी। अच्छा,

अब मैं गाड़ी में बैठकर आराम करूँगी, मैं बीमार हूँ न! मैं तो भूल ही गई थी, तुमसे बात करके मुझे बड़ी थकावट आ गई है।" और मालती ने अपने कम्पार्टमेण्ट के अन्दर जाकर शटर चढ़ा लिए।

त्रिभुवन ने जगतप्रकाश से कोई बात नहीं की। घूमकर वह तेजी के साथ वहाँ से चला गया।

पन्द्रह दिन की जगह जगतप्रकाश एक महीना नैनीताल रहा, और एक महीने बाद जब वह मालती के साथ नैनीताल से बम्बई लौटा, मालती से वह उतना ही दूर था मालती के वह उतना ही निकट था जितना बम्बई से जाने के पहले था। एक प्रगाढ़ सौहार्द की भावना जो किसी भी समय प्रेम का रूप धारण कर सकती है। प्रतीक्षा थका देने वाली और ऊबा देने वाली लेकिन किसी भी हालत में साथ न छोड़ने वाली आशा से भरी प्रतीक्षा— वह प्रतीक्षा नहीं एक सुखमय जीवन की आशा थी, एक धुन से भरा निश्चिन्तता के साथ।

जमील को जगतप्रकाश की मनःस्थिति का पता था, लेकिन उसके पास कोई निदान नहीं था जिससे जगतप्रकाश की यह मनःस्थिति दूर हो सके। दिन बीत रहे थे महीने बीत रहे थे, हिन्दुस्तान की राजनीतिक और नैतिक अवस्था लगातार गिरती जा रही थी। गांधी जिन्ना वार्ता असफल हो गई थी। चारों ओर लूट और बेईमानी का साम्राज्य था। पहली जनवरी को जीवानन्द कालेज में जगतप्रकाश को ज्वाइन करना था, और पन्द्रह दिसम्बर को उसे कालेज की मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन का पत्र मिला कि विभाग के अध्यक्ष की हैसियत से उसकी नियुक्ति सत्र के आरम्भ अर्थात् जुलाई सन् १९४५ से होगी। अगर जगतप्रकाश चाहे तो पहली जनवरी से कालेज में पार्ट-टाइम लेक्चरर की हैसियत से काम कर सकता है।

उस पत्र को लेकर शाम के समय जगतप्रकाश कुलसुम के यहाँ पहुँचा। जमशेद कावसजी जीवानन्द कालेज की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य थे, उन्हीं की सिफारिश से जगतप्रकाश की नियुक्ति हुई थी उस कालेज में। क्रोध से भरी हुई कुलसुम जगतप्रकाश के साथ जमशेद कावसजी के पास पहुँची। जमशेद कावसजी ने जगतप्रकाश को देखते ही कहा, 'मुझे बड़ा अफसोस है जगतप्रकाश! आजकल जो अस्थायी हेड ऑफ डिपार्टमेण्ट है उसने रिप्रजेण्टे

दिया है कि इस टर्म के अन्त तक उसे उसी पद पर रहने दिया जाए, नहीं तो उसकी बड़ी बदनामी होगी। चेयरमन का वह शायद कोई रिश्तेदार है, नहीं तो उतना अयोग्य आदमी उस पद पर आ ही नहीं पाता। चेयरमन ने उसके रिप्रेज़ेण्टेशन को मंजूर कर लिया है। मैंने उनसे कहा भी कि यह गैर-कानूनी है, क्योंकि तुम्हारा एप्वाइंटमेण्ट हो चुका है, लेकिन कमेटी के दूसरे मेम्बर चेयरमैन के साथ थे। फिर यह तय हुआ कि पहली जनवरी से पार्ट-टाइम लेक्चरर की हैसियत से तुम आ जाओ। कुल छः महीने की तो बात है।"

कुल्सुम ने बिगड़कर कहा, "डैडी! मैनेजिंग कमेटी का यह निर्णय गैर-कानूनी है। जगतप्रकाश कानूनी कारवाई कर सकते हैं।"

"कालेज के प्रिंसिपल ने भी यही बात कही थी, यह मौजूदा हेड आफ डिपार्टमेण्ट के खिलाफ है।" फिर कुछ सोचकर जमशेद कावसजी ने कहा, "आम तौर से मैं इस मुकदमेबाजी से दूर रहना ही पसन्द करता हूँ, लेकिन इस मामले में मैं समझता हूँ, तुम्हें कानूनी कारवाई करनी चाहिए। मैं अपने सालीसिटर को फोन किये देता हूँ—तुम उन्हें अपना केस समझा दो।"

"नहीं, मैं कालेज वालों से मुकदमेबाजी नहीं करूँगा।" जगतप्रकाश बोला, "ये शिक्षा-संस्थान! ये बड़े पवित्र स्थान होते हैं जहाँ सद्भावना और विश्वास की नींव पर मनुष्य का निर्माण किया जाता है। मैं पार्ट-टाइम लेक्चरर की हैसियत से ज्वाइन कर लूँगा, पार्ट टाइम काम के लिए वह मुझे स्थायी लेक्चरर की तनख्वाह दे रहे हैं।"

कुल्सुम बोली, "ऐसी हालत में तुम्हें यज्ञदत्त तलाल पारिख की अध्यक्षता में काम करना पड़ेगा, क्योंकि विभाग का अध्यक्ष तो वही रहेगा।"

जमशेदजी बोले, "हाँ, कानून से तो यह उसकी मातहती में काम करेंगे, गोकि पार्ट-टाइम लेक्चरर होने के नाते यह पद में उससे नीचे नहीं रहेंगे।"

कुल्सुम उठ खड़ी हुई "वह पार्ट-टाइम नौकरी तुम्हें नहीं करनी है जगत! जहाँ तुमने इतने दिनों तक प्रतीक्षा की है वहाँ तुम छः महीने तक और प्रतीक्षा कर लो।"

बर्लिन म प्रवेश किया। और तीस अप्रैल सन् १९४५ को हिटलर ने आत्म-हत्या कर ली।

नाजीवाद पराजित हुआ—जगतप्रकाश नाजीवाद के इस अन्त की प्रतीक्षा कर रहा था। जर्मनी की इस पराजय से जगतप्रकाश को किसी तरह की प्रसन्नता नही हुई। एक अनजाना असन्तोष उसके प्राणो मे भर गया था।

लेकिन फिर भी जगतप्रकाश प्रतीक्षा कर रहा था—जुलाई म जीवानन्द कालेज म अपनी नियुक्ति की, किसी भी दिन मालती से प्रेम की परिणति की, और निकट भविष्य म देश की राजनीतिक कशमकश के किसी हल की, जिसके फलस्वरूप देश म व्यवस्था कायम हो सके। जून का पहला सप्ताह समाप्त हो गया था और मानसून आ गया था। सुबह के समय जगतप्रकाश जमील के साथ बैठा चाय पी रहा था, तभी नौकर न आकर उससे कहा, "साहब, कोई आपसे मिलने आया है, अपना नाम त्रिभुवन मेहता बतलाता है।"

जगतप्रकाश चौंक उठा—त्रिभुवन मेहता, यहा बम्बई मे! उसन कहा, "उन्हे बठाओ, मैं आता हूँ।"

ड्राइग रूम मे पहुँचकर उसने त्रिभुवन स कहा, 'अरे आप! कब आए बम्बई?

"दो दिन हुए। कल शाम आपके यहा आया था, लेकिन आप थ नहीं। आप पिक्चर गय थे।"

"हाँ, मैं पिक्चर गया था, लेकिन अपने नौकर को तो मैंने बताया नहीं था, न जमील को यह मालूम था। और जमील भी यहा नही थे कल शाम। आपको कैसे पता चला?" और जगतप्रकाश बैठ गया।

क्या कीजिएगा जानकर, लेकिन बता ही दूँ। कल शाम मैंने मालती के यहा फोन मिलाया था, वहा पता चला कि वह पिक्चर गई है—देर स लौटेगी। तो अकेली तो वह जाएगी नहीं, कोई-न-कोई उसके साथ गया होगा।"

त्रिभुवन की इस बात की जगतप्रकाश ने कोई टीका नहीं की वह त्रिभुवन के बोलने की प्रतीक्षा करने लगा।

त्रिभुवन ने कुछ रुककर कहा, "आपको यह पता तो होगा कि मालती ने मेरे ऊपर तीन दावे दायर किए हैं—करीब पांच लाख रुपये का मामला है।"

सहज भाव से जगतप्रकाश ने उत्तर दिया, "मुझे इस सबका पता नहीं है। मालती के व्यक्तिगत तथा पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में मुझे कोई जानकारी नहीं है, और मुझे दिलचस्पी भी नहीं।"

तेज निगाह से जगतप्रकाश को देखते हुए त्रिभुवन बोला, "आप सच कह रहे हैं?"

"जहां तक हो सकता है मैं झूठ नहीं बोला करता। और आपसे झूठ बोलने का मुझे कोई कारण नहीं दिखता।"

त्रिभुवन ने एक ठंडी सांस खींची, मैं आपकी बात माने लेता हूं मिस्टर जगतप्रकाश! तो इस समय मैं और मेरे पिता भयानक आर्थिक संकट में हैं। जर्मनी की पराजय की खबरों से शेयर मार्केट में जो उथल-पुथल हुई उसमें करीब पांच लाख का घाटा आ गया है हम लोगों को। और उसके ऊपर मालती का यह पांच लाख का दावा। हम लोग टूट जाएंगे।'

जगतप्रकाश को याद हो आया मालती का वह वाक्य—'त्रिभुवन मेहता मैं तुम्हें तोड़कर रख दूंगी।' उसने त्रिभुवन से पूछा, 'क्या आपने दूसरा विवाह कर लिया है?"

त्रिभुवन ने सिर झुकाकर कहा "वह तो नवम्बर में ही हो गया था। जनवरी में मालती ने ये मुकदमे दायर कर दिए थे, मई में इन मुकदमों की डिगरी भी हो गई।"

जगतप्रकाश ने देखा कि त्रिभुवन का स्वास्थ्य काफी गिर गया है और उसके चेहरे की चमक जाती रही थी। एक अत्यन्त टूटा हुआ आदमी बैठा था उसके सामने। जगतप्रकाश को उसके ऊपर दया आई, "तो फिर स्थिति यह है! इस सबका मुझे पता नहीं था, मैं आपसे सच कहता हूं। अब मैं क्या कर सकता हूं इस सबमें—जो आप मेरे पास आए हैं?"

त्रिभुवन ने बड़े करुण स्वर में कहा 'मिस्टर जगतप्रकाश! यह मालती मुझे और मेरे सारे परिवार को तबाह करके छोड़ेगी, मुझे इस बात का पूरा यकीन हो गया है। केवल एक व्यक्ति मुझे बचा सकता है, वह आप हैं।

मालती आपको प्यार करने लगी है, वह आपकी बात टालेगी नहीं। आप उनसे कहिए कि वह अपनी डिग्री एक्जीक्यूट न कराए।"

जगनप्रकाश न कहा, "मैं, आपको यकीन दिलाता हूँ कि मालती से मेरी मित्रता भर है, उसके आगे कुछ नहीं है।"

निभुवन बोला, "जानता हूँ, मालती को इसके आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं पड़ती है, क्योंकि वह अब भी मेरी पत्नी है। यह रुकावट उसमें मेरे कारण है। मनसा बेन ने मुझे सब-कुछ बतला दिया है। अगर वह आपसे कानूनन विवाह कर सकती तो निश्चय कर लेती—वह आपसे बेहद प्यार करती है।"

एक पुलक जाग उठा जगतप्रकाश के अन्दर, लेकिन उसने अपनी भावना को दबाते हुए कहा, "आप तो जानते ही हैं मालती कितनी ज़िद्दी है, वह मेरी बात किसी हालत में नहीं मानेगी।"

'यह मैं जानता हूँ। मैंने अपना दूसरा विवाह कर लिया है, वह अपना दूसरा विवाह नहीं कर सकती। हिन्दू-लॉ यही कहता है। इसका निदान लेकर मैं आपके पास आया हूँ। मैं कुछ दिनों के लिए अपना धर्म परिवर्तन कर लूँगा, यानी मुसलमान बन जाऊँगा। और वैसे ही मैं मालती को तलाक दे दूँगा। फिर वह अपना दूसरा विवाह करने को मुक्त हो जाएगी। आप उससे अपना विवाह कर लीजिए। और बाद में मैं फिर अपना धर्म-परिवर्तन कर लूँगा।"

यह भी हो सकता है, जगतप्रकाश ने कभी यह न सोचा था। तो फिर उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ नहीं थी, उसकी प्रतीक्षा फलवती होगी। वह मन-ही-मन बड़ी तेजी के साथ सोच रहा था। निभुवन जगतप्रकाश को मौन देखकर बोला, "कोर्ट से हम लोगों ने छः महीने का समय ले लिया है, आप मालती से बात करें। मैं जानता हूँ कि मुझसे गलती हो गई है, अब वह गलती नहीं सुधारी जा सकती। आप मुझे बचा सकते हैं, मैं आपसे यही विनय करने आया हूँ। आप मालती से बात करें।"

'मेरी सलाह यह है कि आप स्वयं मालती से मिलकर सब बातें कर लें, मेरा बात करना अनुचित होगा।" जगतप्रकाश बोला।

'तो फिर ऐसा करें कि आप मेरे साथ चलें, मैं ही बातें कर लूँगा। यह

हम तीनो के बीच का मामला है, तीनो का एक साथ होना आवश्यक है। आप फोन करके मालती से कह दीजिए कि हम दोनो आ रहे हैं, वह घर पर है कि नही।"

जगतप्रकाश ने कपडे बदले फिर पास वाले, ईरानी के रेस्तरा से उसने मालती को फोन मिलाया। मालती घर पर ही थी। दोनो मालती के यहा पहुँचे। त्रिभुवन को देखते ही मालती बोली, "तो मुझसे मिलने आए हो! लेकिन जगतप्रकाश को साथ लाने की क्या जरूरत थी?"

'अकेले आने की हिम्मत नही पडती थी, मैं अपराधी जो हूँ। तुमसे क्षमा की भीख मागने आया हूँ। मुझ पर डिगरी हो गई है, छ महीने समय माग लिया है मैंने, लेकिन हम लोगो को सम्हलने म दो-तीन व र्षगे।"

'इसमे क्षमा की क्या बात है? यह तो अपने-अपने अधिकारो ल्डाई है। तुमने अपना अधिकार ले लिया है, अपना विवाह करके, अपना अधिकार ले रही हूँ तुमसे अपना रुपया वसूल करके।"

"मैं तबाह हो जाऊँगा, मैं ही नही, मेरा पूरा परिवार तबाह जाएगा।"

"तो मैं क्या कर सकती हूँ, इसमे मेरा कोई दोष नही है। तुमने दू विवाह करते समय मेरी तबाही के सम्बन्ध म कुछ सोचा था?"

"मुझसे गलती हो गई, मैं अपनी गलती के लिए क्षमा मागता हू। त्रिभुवन रुआसे स्वर म बोला, "मालती, मुझ पर दया करो!"

"तुम दया के पात्र नही हो त्रिभुवन मेहता, तुम घृणा के पात्र हो! मैं तुम्हे पहले ही आगाह कर दिया था कि मैं तुम्हे तबाह कर दूगी, तुमसे भी मँगवाऊँगी, और मैंने जो सकल्प किया था वह पूरा करूँगी। तुमने मेरा जीवन बरबाद किया ह उसके बदले मे मैं तुम्हारा ही नहा तुम्हारे समस्त परिवार वालो का जीवन बरबाद करूँगी।"

थोडी देर तक मौन छाया रहा, फिर त्रिभुवन बोला, "मैंने माना कि मेरे दूसरे विवाह करने से तुम्हारा जीवन बरबाद हो गया, लेकिन तुम मुझसे घृणा जो करती थी।'

'हाँ, और अब तो मैं तुमसे और भी अधिक घृणा करने लगी हूँ।"

मालती ने फुफकारते हुए कहा।

त्रिभुवन ने अब अपना समस्त साहस बटोरते हुए कहा, "मालती, मैं एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ—इन जगतप्रकाश को मैं अपना वह प्रस्ताव बतला चुका हूँ, और यह उससे असहमत नहीं हैं।"

मालती ने जगतप्रकाश की ओर देखा, लेकिन वह बोली कुछ नहीं।

त्रिभुवन ने अपनी बात आगे बढाई, "मुझे यह पता है कि तुम जगतप्रकाश से प्रेम करती हो, मनसा वेन से मुझे तुम्हारी हरेक बात का पता मिलता रहता है। लेकिन तुम हिन्दू ला के अनुसार जगतप्रकाश से विवाह नहीं कर सकता।"

मालती के माथे पर बल पड गए, लेकिन उसने केवल इतना कहा, "आगे?"

"इसमें मैं तुम्हारी सहायता करने को तैयार हूँ। मैं अपना धर्म-परिवर्तन करके मुसलमान बन जाऊँगा कुछ समय के लिए। मुसलमान बनकर मैं तुम्हें तलाक दे दूगा, वह तलाक कानूनन होगा। उसके बाद तुम जगतप्रकाश से विवाह कर लो। तुम्हारा जगतप्रकाश से विवाह वैध होगा।"

मालती उठ खडी हुई, "और इसके बदले मे मैं तुम्हारा कर्जा माफ कर दूं त्रिभुवन मेहता! नरक के कीडे—अब तुम जाओ यहाँ से। मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुम्हें तोडूगी, मैंने अपने टूटने की बात नहीं कही थी।"

त्रिभुवन बोला, 'तुम मेरी बात नहीं समझ रही हो—"

मालती अब काफी उग्र हो उठी थी, उसने चीखकर कहा, "त्रिभुवन मेहता, तुम जाते हो कि नहीं? तुम्हारे मुह से यह बात निकली कैसे? मैं कहती हूँ तुम जाओ! मैं तुम्हारा मुह नहीं देखना चाहती।'

इस बार वह जगतप्रकाश की ओर मुडी, 'मेरे सम्बन्ध म इस कमीने से बात करने वाले तुम कौन होते हो? इतने दिनो तक मुझे जानकर भी तुम मुझे नहीं पहचान पाए? तुम भी जाओ मेरे सामने से!" और यह कहकर मालती घर के अन्दर चली गई।

हतप्रभ और अपने से ही कुमलाया हुआ जगतप्रकाश त्रिभुवन के साथ लौट पडा। सडक पर आकर उसने त्रिभुवन से कहा, "मैं अब अपने घर जाऊँगा। आपने देख लिया न! यह आपका और मालती का निजी मामला

है, मुझे इसमें पडना ही नहीं चाहिए था।"

और जगतप्रकाश की एक प्रतीक्षा टूट गई। मालती मृगतृष्णा थी, और मालती ही क्या, उसे लगा कि उसके चारों ओर जो कुछ है वह सब मृगतृष्णा है, उसकी सारी ज़िन्दगी एक भयानक मृगतृष्णा की ज़िन्दगी है जहां तृप्ति की कोई सम्भावना नहीं। एक सूनापन फिर से उसके जीवन में आ गया। शायद यह सूनापन उसके जीवन से कभी अलग ही नहीं हुआ था। एक झूठी आशा लेकर वह समझ रहा था कि उसके जीवन का सूनापन दूर हो रहा है उस झूठ का प्रकट होना तो अनिवार्य ही था। और इस घटना की चर्चा जगतप्रकाश ने न जमील से की, न कुल्सुम से। इस चर्चा की ज़रूरत ही नहीं थी, वह स्वयं अपराधी था।

एक सप्ताह बीत गया, उदासी और निष्क्रियता से भरा एक सप्ताह। जमील को आश्चर्य हो रहा था कि जगतप्रकाश को क्या हो गया है, कुल्सुम को आश्चर्य हो रहा था कि जगतप्रकाश को क्या हो गया है।

उस दिन जब सुबह के समय जगतप्रकाश जमील के साथ बैठा चाय पी रहा था और अखबार में आई हुई उस दिन की खबरों को पढ़ रहा था, जमील को जैसे कुछ याद आ गया और उसने जगतप्रकाश से पूछ लिया "इन दिनों बड़े उदास रहते हो बरखुरदार—ज्यादातर घर में ही पड़े रहते हो। तबीयत तो ठीक है?"

"तबीयत तो ठीक है, मन कुछ थोड़ा-सा भारी है। सब-कुछ सूना-सूना और निरर्थक लगता है।"

"क्या आजकल मालती बम्बई में नहीं है?" जमील ने पूछा।

"मुझे पता नहीं, एक हफ्ते से मैं उसके यहां नहीं गया और अब जाऊंगा भी नहीं।"

"और वह भी इस बीच नहीं आई तुम्हारे यहां, न उसने तुम्हें बुलाया ही। क्या बात है?"

"हम दोनों एक-दूसरे के जीवन से हट गए हैं, हमें हटना भी चाहिए था।"

"तो फिर मेरा कयास गलत नहीं था," जमील बोला, "उस दिन जब त्रिभुवन साहब तुम्हारे यहां आए थे तो मुझे लगा था कि वह मालती से

समझौता करने आए हैं। चलो अच्छा ही हुआ।"

जगतप्रकाश ने जमील की भ्रान्ति को दूर करने की कोई आवश्यकता नहीं समझी। वह फिर से अखबार पढ़ने लगा। तभी एक कार उसके फ्लैट के सामने रुकी। जगतप्रकाश प्रतीक्षा करने लगा कि नौकर आने वाले की सूचना उसे दे कि मालती के साथ कुल्सुम ने कमरे में प्रवेश किया। कुल्सुम ने दरवाज़े से ही कहा, "देखो तो जगत, मैं मालती को अपने साथ लाई हूँ।"

जगतप्रकाश ने उठकर मालती और कुलसुम का स्वागत किया। सब लोगों के बैठने के बाद जमील ने कहा, 'अब आप लोग बातें करें—मुझे ऑफिस जाने के लिए तैयारी करनी है।"

जमील के जाने के बाद कुल्सुम ने कहा, "जगत! यह मालती शिकायत करती है कि तुम एक हफ्ते से इसके यहां नहीं गए।"

शान्त भाव से जगतप्रकाश बोला, "शायद मालती ने तुम्हें यह भी बतलाया होगा कि मैं क्यों इनके यहां नहीं गया।"

कुलसुम के जवाब देने के पहले मालती बोल उठी, "मैंने तुम्हारा अपमान कर दिया था—यही बात है न! लेकिन मैं उस वक्त आप में नहीं थी। तुम मेरे सबसे बड़े दुश्मन के साथ आए थे। मैं उसे किसी हालत में क्षमा नहीं कर सकती। अगर मेरे नितान्त अनजाने मुझसे तुम्हारा अपमान हो गया है तो उसके लिए मैं तुमसे क्षमा मांग रही हूँ।"

और कुल्सुम मुसकराई, "यह मालती, इसे तुम अभी तक नहीं पहचान पाए हो। यह बड़ी जिद्दी है, अगर यह मुहब्बत कर सकती है तो यह नफरत भी कर सकती है और दोनों ही हालतों में इसके लिए कोई सीमा नहीं है। त्रिभुवन इसके स्वभाव को नहीं जान सका यही उसकी सबसे बड़ी गलती थी। इसने तुम्हारा अपमान नहीं किया, तुम यह समझ लो।"

जगतप्रकाश चुप रहा। कुल्सुम ने फिर कहा, 'यह मालती आज शाम को मुझे पिक्चर दिखा रही है और पिक्चर के बाद यह मुझे पुरोहित में वेजीटेरियन खाना खिला रही है। तुम्हें भी यह पिक्चर में और खाने पर बुलाने आई है गोकि तुमसे यह कहने की इसे हिम्मत नहीं पड़ रही है। 'क्यों मालती, अब तुम्हीं जगतप्रकाश से यह कहो!"

मालती ने धीमे स्वर में कहा, "जगत! यह कुल्सुम ठीक कह रही

है। अगर तुम न चलोगे तो मैं समझूंगी कि तुमने मुझे माफ़ नहीं किया।"

जगतप्रकाश को कहना पड़ा, "अच्छी बात है, मैं चलूंगा।"

जगतप्रकाश ने मालती का निमंत्रण स्वीकार नहीं किया था, उसने कुल्सुम का निमंत्रण स्वीकार किया था।

कुल्सुम और मालती के जाने के बाद जमील फिर जगतप्रकाश के पास बैठ गया। उसने कहा, 'बरखुरदार! इधर कुछ दिनों में देश की सियासी जिन्दगी में एक सन्नाटा और घुटन-सी भर गई है, कहीं किसी तरह की कोई हलचल नहीं नजर आ रही।'

जगतप्रकाश बोला, 'अंग्रेज़ी का एक फिकरा है 'ल्ल बिफोर द स्टॉम'—यानी तूफान के पहले एक उमस! तो यह उस तूफान के पहले वाली उमस भर है कुछ-न-कुछ जल्दी होने वाला है।"

जमील ने सिर हिलाया 'नहीं बरखुरदार, कुछ नहीं होने का। ब्रिटिश सरकार को अब कांग्रेस मूवमेण्ट से कोई खतरा नहीं रह गया। १९४२ के मूवमेण्ट को तोड़कर उसने जैसे कांग्रेस की रीढ़ ही तोड़ दी है। बरमा में जापान की जो शिकस्त हुई है उससे रही-सही उम्मीद भी जाती रही है।"

थोड़ी देर तक दोनों चुपचाप बैठे रहे, फिर जगतप्रकाश बोला, 'जमील चाचा! जापानी हिन्दुस्तान की सीमा में घुस आए थे, सुभाष बोस ने इण्डियन नेशनल आर्मी बनाकर उनकी सहायता भी की, और देश में जैसे उनकी सहायता के लिए हो इतना बड़ा आन्दोलन उठ खड़ा हुआ, फिर भी जापान को पराजय ही मिली। अजीब बात है।"

जमील मुसकराया, "इसमें अजीबो गरीब कुछ भी नहीं है। हिन्दुस्तान की जन भावना अंग्रेज़ों के हक में नहीं थी, लेकिन वह अंग्रेज़ों के इतनी खिलाफ भी नहीं थी कि जापानियों के हक में हो! रही इण्डियन नेशनल आर्मी की बात! तो उसमें आदमी ही कितने थे। जापान को न उस हिन्दुस्तानी सेना पर भरोसा था और न इस हिन्दुस्तान के मूवमेण्ट पर भरोसा था। आखिर अहिंसा के पुजारियों के मूवमण्ट में दम ही क्या था?' और फिर एक ठंडी सांस लेकर उसने कहा, 'यह हिन्दुस्तान मुर्दों का देश है। बंगाल के कहत को तो तुमने अपनी आंखों देखा है उस वक्त वहां कोई विद्रोह हुआ था? लाखों आदमी कलकत्ता की सड़कों पर भीख मांगते हुए

भूख से तड़पकर मरकर गिर पड़े और कलकत्ता की दुकानें भरी-पूरी थी, होटल आबाद थे, दावतें हो रही थी। किसी ने उन दुकानो को नही लूटा, उन होटलो को नही लूटा, उन दावतो को नही लूटा। जिन्दा रहने की कोशिश तक नही बरखुरदार ! हिन्दुस्तान मुरदो का देश है—जापान ने यह देख लिया था।"

एक कड़वाहट भर गई जगतप्रकाश के अन्दर जमील की बात सुनकर, लेकिन जमील की बात म सत्य है, इससे वह इनकार नहीं कर सकता था। इस देश मे भयानक विग्रह है, भयानक स्वार्थपरता है। जमील कहता जा रहा था, "मैं महात्मा गाधी को उनकी अहिंसा के लिए दोष नही देता, महात्मा गाधी देश की नस पहचानते हैं। यह मुल्क हिंसा अपनाने के काबिल ही नही रह गया है—इस कदर बुजदिली और नामर्दी भर गई है इसम। अगर इसे जगाया जा सकता है, ऊपर उठाया जा सकता है, तो सिर्फ अहिंसा से। लेकिन अहिंसा का व्रत बड़ी मुश्किल बात है। खुद महात्मा गाधी उस व्रत पर कायम रह सकते हैं, मुझे इस पर शक है। इस अहिंसा के व्रत के सबसे बड़े दुश्मन हैं क्रोध, निराशा और कटुता। इन कमजोरियो मे इन्सान भटक जाता है।"

"मुझे तो महात्मा गाधी डिगे हुए नही नजर आ रहे।" जगतप्रकाश ने कहा।

"तुम्हारी ही बात सच निकले बरखुरदार !" जमील बोला, "लेकिन मुझे तो ऐसा ही लगता है कि महात्मा गाधी खुद अहिंसा का व्रत नही निभा पा रहे हैं। राजगोपालाचारी के फार्मूलो का मजूर करके जिन्ना से बातचीत के दौरान मे उन्होंने पाकिस्तान की माँग को मजूर कर लिया था। यही नही, उड़ती हुई खबर तो यह है कि उन्होंने भूलाभाई देसाई और लियाकत अली मे जो समझौता हुआ है उसकी ताईद करके काग्रेस के लिए एक खतरा पैदा कर लिया है। उस समझौते के मुताबिक उन्होंने यह मजूर कर लिया है कि ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तान मे एक राष्ट्रीय सरकार बना दे जिसम काग्रेस और मुस्लिम लीग के बराबर-बराबर मेम्बर हो। भला यह भी कोई बात हुई। मुस्लिम लीग मे देश के सब मुसल्मान नही ह, न जाने कितने मुसल्मान काग्रेस म हैं। काग्रेस तो पूरे देश की प्रतिनिधि सस्था है। पता नही

यह देसाई-लियाकतअली पैक्ट की बात कहा तक सही है, लेकिन कुछ दाल मे काला जरूर है।"

जगतप्रकाश बोला, "लेकिन ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तान म राष्ट्रीय सरकार नहीं बनाएगी इतना मैं कह सकता हूँ। चर्चिल हिन्दुस्तान को स्वराज्य किसी हालत मे नहीं देगा।"

"यही तो बदकिस्मती है। ब्रिटेन यहा से हट, महात्मा गाधी इसके लिए सही गलत सब-कुछ करन पर आमादा हो गए हैं। तुम्हीने एक दफा कहा था कि 'भारत छोडो' आन्दोलन की असफलता की कटुता महात्मा गाधी म भर गई है। और इस कटुता स अगर कुछ मिला भी तो वह स्वराज्य का मखौल भर होगा।" जमील बोला।

रात मे मालती और कुसुम के साथ पिक्चर देखकर और खाना खाकर जब जगतप्रकाश वापस लौटा, ग्यारह बज रहे थे। जमील वैसे नौ-दस बजे के बीच म सो जाया करता था, लेकिन जगतप्रकाश न देखा कि जमील अभी जाग रहा है और उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। उसन जमील से कहा, "अभी तक जाग रहे हो जमील काका ! क्या बात ह ?"

जमील बोल उठा, तुम्हारी ही बात सच हुई बरखुरदार! आज रेडियो पर यह ऐलान हुआ है कि वाइसराय चौबीस जून को शिमला में एक कान्फ्रेंस बुला रहे हैं, देश म एक राष्ट्रीय सरकार कायम करने के लिए। उस कान्फ्रेंस म कांग्रेस मुस्लिम लीग व अछूतो और सिखो के नुमाइन्दे रहेंगे। साथ ही महात्मा गाधी और मिस्टर जिना को भी बुलाया गया है।"

जगतप्रकाश चौंक उठा, 'आज चौदह तारीख है, सिर्फ दस दिन बाकी हैं इस कान्फ्रेंस मे और कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेम्बर अभी जेल म हैं। यह कैसे होगा ? '

इन लोगो की रिहाई का भी हुक्म हो गया है। शायद आज रिहा कर दिए गए होंगे, या कल रिहा कर दिए जाएँगे।"

अधिक बात नहीं हुई इन दोनो म, दोनो को ही नींद आ रही थी। सुबह पत्रो म वाइसराय का पूरा भाषण प्रकाशित हो गया।

विश्व-युद्ध अब करीब-करीब समाप्त हो गया था। जर्मनी के हटने के बाद अकेला जापान बचा था, एक छोटा-सा देश और उसके खिलाफ सारा

दुनिया। इस युद्ध का विजेता ब्रिटेन! युद्ध के दौरान उसने किन्हीं सिद्धान्तों की घोषणा की थी—और ब्रिटेन के लिए यह अनिवार्य था कि वह अपने वादे पूरे करे। अमेरिका का दबाव पड रहा था ब्रिटेन के ऊपर।

देश में एक तरह की राजनीतिक चहल पहल मच गई थी इस घोषणा के बाद। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के जो सदस्य छूटे थे वे बम्बई आ रहे थे। इक्कीस जून को बम्बई में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की एक मीटिंग हो रही थी। इस बीच में यह स्पष्ट हो गया था कि वाइसराय यह शिमला-कान्फ्रेंस देसाई लियाकतअली-पैक्ट के आधार पर आयोजित कर रहे हैं। महात्मा गांधी के वक्तव्य से भी यह स्पष्ट हो गया था।

लेकिन शिमला कान्फ्रेंस देसाई लियाकतअली पैक्ट के जिन सिद्धान्तों के आधार पर बुलाई गई है, वे गलत हैं। जगतप्रकाश काफी उत्तेजित था। हिन्दुओं को सवर्ण और वर्णहीन—दो श्रेणियों में विभक्त करके ब्रिटिश सरकार भारत की एकता पर प्रहार कर रही है। यह डिवाइड एण्ड रूल' वाली नीति ब्रिटिश सरकार की नस-नस में भरी गई है। और यह कांग्रेस—क्या यह सवर्ण हिन्दुओं की संस्था है जो इसमें और मुस्लिम लीग में साम्य स्थापित किया गया है? यह कांग्रेस और मुस्लिमलीग में साम्य निश्चित रूप से सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों में साम्य था, जैसा सप्रू-कमीशन की रिपोर्ट में कहा गया था। देश का यही दुर्भाग्य था कि सब अपनी अपनी कह रहे थे बिना जन भावना का ज्ञान हुए। और जन भावना की एक-मात्र प्रतिनिधि संस्था कांग्रेस ऊपर से उदात्त और उदार दिखने वाली महात्मा गांधी के अन्दर वाली पराजय की कटुता और विवशता से भरे आत्म-समर्पण से श्रीहत और निष्क्रिय थी। कांग्रेस के नेताओं में थकावट भर गई थी, उनका विवेक नष्ट हो चुका था।

जगतप्रकाश ने जवाहरलाल नेहरू का वह वक्तव्य पढ़ा जो जेल से छूटते ही उन्होंने दिया था। जवाहरलाल ने कहा था कि ब्रिटेन एक कमजोर चतुर्थ श्रेणी का देश बन चुका था। इस युद्ध के बाद भारत को गुलाम बनाए रखने की क्षमता अब उसमें नहीं रह गई थी। जगतप्रकाश को आश्चर्य हुआ था इस वक्तव्य को पढ़कर। क्या वास्तव में ब्रिटेन इतना कमज़ोर हो गया है? जवाहरलाल में राजनीतिक सूझ बूझ है, जवाहरलाल में यौवन है, वह थका

नहीं है, वह हारा नहीं है। कांग्रेस का नेतृत्व जवाहरलाल के हाथ में आ रहा है। शायद जवाहरलाल की बात ही सच हो। लेकिन लक्षण तो ऐसे नहीं दिखते थे। देश में मतभेद और आपसी विग्रह बेतरह बढ गया था। हर तरफ लूट और बेईमानी का बाजार गरम था।

चौदह जुलाई को परवेज की वर्षगाठ थी। कुलसुम का आग्रह था कि जगतप्रकाश रात के समय उस भोज में सम्मिलित हो जो उसने विशिष्ट व्यक्तियों को दिया था। बहुत थोडे-से चुने हुए आदमी आमन्त्रित थे उस भोज में। जिस समय जगतप्रकाश कुलसुम के यहा पहुँचा, परवेज बरामदे में खडा एक आदमी का स्वागत कर रहा था।

जगतप्रकाश को देखते ही वह बोला, "आओ मिस्टर जगतप्रकाश ! मैं अपने मिलो के सोल सेलिंग एजेण्ट लालचन्द हीराचन्द मोदी से तुम्हारा परिचय करा दू। जीवानन्द कालेज की मैनेजिंग कमेटी के यह चेयरमैन हैं।" और फिर उसने लालचन्द हीराचन्द मोदी से कहा, "लालचन्द भाई ! यह डाक्टर जगतप्रकाश हैं, बडे विद्वान् ! परसो सोलह तारीख है न, तो यह तुम्हारे जीवानन्द कालेज मे अर्थशास्त्र के अध्यक्ष का भार सँभाल रहे हैं।"

पैनी नजर से लालचन्द ने जगतप्रकाश को देखा, उस नजर मे कुछ ऐसा था जो जगतप्रकाश को अच्छा नही लगा। लालचन्द हीराचन्द की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की रही होगी, मझोले कद के स्वस्थ आदमी। उन्होने परवेज से कहा "इनकी बाबत सुना तो बहुत कुछ है, लेकिन इनसे मिलना आज ही हुआ है।"

उस पार्टी मे मालती भी आमन्त्रित थी और वह हॉल मे थी। हाल से बरामदा साफ दिखता था। जगतप्रकाश को देखकर मालती इन लोगो के पास आ गई, उसने जगतप्रकाश से कहा, 'मैं तुम्हारे यहा गई थी जगत, लेकिन तुम घर पर थे नही" और फिर उसने लालचन्द हीराचन्द से कहा, "अरे लालचन्द भाई ! मैंने तो तुम्हे देखा ही नहीं। अभी-अभी आ रहे हो क्या ?"

'हाँ, तुम्हारे घर से होते हुए। कल तुमने मुझसे कहा था न कि तुम्हारा कार गैरेज मे है, मैं तुम्हे अपने साथ लेता चलूं।'

"अरे ! मैं तो भूल ही गई थी। मेरी गाडी आज दोपहर को ही गरेज से आ गई, और गाडी आने की खुशी मे मैं तुम्हारी बात भूल ही गई।"

लालचन्द भाई ने अब जगतप्रकाश की ओर देखा, "आप मालती के भी बहुत बडे दोस्त हैं। आपसे मिलकर बडी प्रसन्नता हुई।"

मालती हँस पडी, "लेकिन लालचन्द भाई, तुम्हारी शक्ल से तो ऐसा नही लगता कि तुम इन जगतप्रकाश से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए हो। तुम झूठ का छिपा नही पाते।"

और परवेज बोला, "ऐसा मत कहो मालती बेन! लालचन्द भाई के मुकाबले कामयाब व्यापारी इस बम्बई के बाजार मे मुश्किल मे मिलेगा। और आजकल बिजनेस म कामयाब वही हो सकता है जो झूठ को सिर्फ छिपा ही नही सके, उसे पूरी तौर से पचा ही जाए।"

जगतप्रकाश को लगा कि प्रसग कुछ अप्रिय हो रहा है। उसने कहा, "सुना है शिमला-कान्फ्रेंस फेल हो गई है, रेडियो लगाया जाए चलकर।"

परवेज बोला, "हा-हा, तुम रेडियो लगाओ मिस्टर जगतप्रकाश, मुझे तो मेहमानो को रिसीव करना है।"

जगतप्रकाश ने रेडियो लगाया, अधिकाश मेहमान रेडियो के इद गिर्द खडे हो गए। और रेडियो से खबर आई कि शिमला-कान्फ्रेंस असफल हो गई। मिस्टर जिन्ना की यह जिद थी कि देश के मुसलमानो का प्रतिनिधित्व करने वाली एक मात्र मुस्लिम लीग है और वाइसराय को यह दावा मजूर नही था। साथ ही बिना मुस्लिम लीग के सहयोग के कोई भी राष्ट्रीय सरकार नही बन सकती। ब्रिटिश शासन वैसा-का-वैसा नौकरशाही के बल पर चलता रहगा। और जगतप्रकाश की दूसरी प्रतीक्षा टूट गई, रेडियो उसने बन्द कर दिया।

कुल्सुम के जो अतिथि आए थे वे दूसरे वर्ग के थे, जगतप्रकाश अपने को उस पार्टी मे नितान्त अकेला अनुभव कर रहा था। बातें हो रही थी, राजनीति की, व्यापार की और समाज की घटनाओ की। बम्बई के उस समाज का वह सदस्य नही था, व्यापार के सम्बन्ध मे उसे कोई ज्ञान नही था, राजनीति के सम्बन्ध म उसके अन्दर एक उलझन पैदा हो गई थी।

जिस समय जगतप्रकाश उस पार्टी से वापस लौटा, जमील जाग रहा था। जगतप्रकाश को देखते ही उसने कहा, "बरखुरदार, शिमला-कान्फ्रेंस भी फिस्स हो गई मैंने क्या कहा था?"

"मैंने रेडियो से यह खबर सुन ली है।" जगतप्रकाश का स्वर बहुत कमजोर था।

"बहुत ज्यादा उदास हो बरखुरदार! क्या वजह है?" जमील ने पूछा।

जगतप्रकाश ने कुछ देर सोचकर कहा, "यही तो मेरी समझ में नहीं आ रहा।"

"मैं बतलाऊँ, तुमने इस शिमला-कान्फ्रेंस से बड़ी उम्मीद लगा रखी थी और मैं कहता हूँ कि अच्छा ही हुआ जो वहाँ कोई फैसला नहीं हुआ। यह कांग्रेस सरमायेदारों की जमात है यह मुस्लिम लीग भी सरमायेदारों की जमात है। इन लोगों की सरकार बन जाने से देश बुरी तरह सरमायेदारों के चंगुल में जकड़ जाएगा, जबकि हिन्दुस्तान का इन्सान भूखा है मुहताज है उसे जानवरों की जिन्दगी बितानी पड़ रही है। खुदा जो करता है अच्छा ही करता है। हिन्दुस्तान अभी स्वराज्य के लिए तैयार नहीं है क्योंकि यहाँ का इन्सान सोया पड़ा है।"

जगतप्रकाश ने बड़े ध्यान से जमील की बातें सुनीं और उसे लगा कि उसके अन्दर वाली उदासी कम हो रही है।

और जमील कहता जा रहा था, "हिन्दुस्तान के इन्सान को जगाना पड़ेगा। बड़ी गहरी नींद सोया हुआ है वह। मुझे तो कभी-कभी शक होने लगता है कि कहीं यह मौत की बेहोशी तो नहीं है। एक रूस का भरोसा है। वैसे हम सब लोगों को इस इन्सान को जगाने के काम में लग जाना चाहिए। हाँ, परसों से तुम्हें जीवानन्द कालेज में जाना है, तुम वहाँ के स्टूडेण्ट्स को जगाने का काम शुरू कर दो। दुनिया में जितनी क्रान्तियाँ हुई हैं उनमें तालिबइल्मों का बड़ा हाथ रहा है। नया खून, नया जोश।

एक नया उत्साह, एक नई उमंग। जगतप्रकाश का मन अब हल्का हो गया था।

दूसरे दिन दोपहर के समय जब वह खाना खाकर कुलसुम के यहाँ जाने की तैयारी कर रहा था, जीवानन्द कालेज के एक चपरासी ने उसे एक पत्र दिया। जगतप्रकाश ने वह पत्र पढ़ा और वह स्तब्ध रह गया। यह पत्र जीवानन्द कालेज की मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन लाला हीराचन्द

मोदी का था। उसमे लिखा था कि कालेज के अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर की नियुक्ति के लिए फिर से विज्ञापन दिया जा रहा है, यह निर्णय कालेज की मनेजिंग कमेटी ने उसी दिन किया है।

और जगतप्रकाश की तीसरी प्रतीक्षा भी टूट गई, कुलसुम के यहा न जाकर वह अपने पलग पर गिर पडा—टूटा हुआ, निराश, बहोश सा।

३५

'अपने हाथ में कुछ नहीं है बिल्कुल कुछ नहीं है जगतप्रकाश भाई, जो कुछ है वह मुकद्दर है। हरेक चीज की एक तकदीर होती है इस दुनिया में और एक दमर की तकदीर ऐसी एक दूसरे की तकदीर से बधी है कि अक्ल चक्कर म पड जाए।" परवेज कह रहा था, "वह यह सब कैसे करता है ? बिना उसकी मर्जी के एक पत्ता तक नहीं हिल सकता।"

जगतप्रकाश मुसकराया "लेकिन परवेज, वह है कौन ?"

'इस दुनिया का मालिक—खुदा। यह सब खुदा की मर्जी है खुदा यह सब क्यों करता है अगर वह कहीं मिल जाए तो मैं उससे पूछ लेकिन खुदा मिलता तब है जब आदमी मर जाए, और जब आदमी मर गया तब उसे यह सब पूछने की जरूरत क्या है ? फिर आखिर मरा क्यों जाए ? और मरना इतना आसान काम नहीं है। हम अगर मरना भी चाहें तो मर नहीं सकते।' परवेज ने जोर से अपना सिर हिलाया, 'नहीं जगतप्रकाश भाई, यह सब बेकार। उसकी मर्जी चलेगी, जीना उसकी मर्जी से, मरना उसकी मर्जी से। तो अगर इस इलेक्शन म मिस्टर चर्चिल हार गए तो इस पर ताज्जुब क्या ? उसकी मर्जी थी कि चर्चिल साहब हारें।'

जगतप्रकाश बोला, "लेकिन यह ब्रिटिश जाति ! इसकी मनोवृत्ति मेरी समझ में नहीं आती। यह चर्चिल ! एक अति महान् व्यक्तित्व, जिसने उस जाति को नष्ट होने से बचा लिया, जिसने असम्भव को सम्भव कर दिखाया, जिसने जर्मनी की दानवी शक्ति तोड दी, उसे इस ब्रिटिश जाति ने उखाड़ फेंक दिया।"

'छोडो भी इस बात को !" कुलसुम बोली, 'डॉक्टर का कहना है कि

तुम ज्यादा सोचो मत, फिक्र मत करो। तुम्हें आराम की जरूरत है फिजि-कल ही नहीं, मेन्टल आराम की भी तुम्हें सख्त जरूरत है।"

ज्ञानप्रकाश ने उत्तर दिया, "आज सुबह तो डॉक्टर ने मुझसे कहा था कि मैं अच्छी तरह चलूं फिरूं, सब काम काज करूं।"

"यह तो ठीक है बरखुरदार!" जमील बोला, लेकिन डॉक्टर ने तुम्हें फिक्र करने को मना किया है। और अब तुम्हें फिक्र पैदा हो गई है कि यह चर्चिल इस चुनाव में कैसे हार गया, चर्चिल की कजर्वेटिव सरकार गायब कैसे हो गई और उसकी जगह लेबर पार्टी कैसे आ गई!"

"इसकी कुछ वजह तो होनी चाहिए।" ज्ञानप्रकाश बोला।

"हम बता सकते हैं इसकी वजह, लेकिन यह कुलसुम हमें बेपढ़ा समझती है हँसकर हमारी बात काट देती है। तो हम नहीं बताएंगे। परवेज ने रूठे हुए स्वर में कहा।

कुलसुम ने परवेज के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "देखो परवेज झूठ मत बोलो। मैंने तुम्हें बेपढ़ा कब कहा? कभी-कभी तुम बच्चों की-सी बातें करने लगते हो तब मुझे गुस्सा आ जाता है और मैं तुम्हें कुछ सख्त सुस्त कह देती हूँ। तो इस पर कहीं इस तरह बुरा माना जाता है।"

परवेज बड़ी गम्भीरतापूर्वक बोला, "नहीं, तुम्हारे मुकाबले में बेपढ़ा तो हूँ ही, इसलिए तुम्हारे मुकाबले में मूरख हूँ।' और उसने अपना मुह लटका लिया।

कुलसुम ने परवेज की ठोडी पर हाथ रखते हुए कहा, "बस यही तो तुम्हारी मूर्खता है कि तुम बिना वजह नाराज हो जाते हो। अरे तुम मुझसे कहीं ज्यादा बुद्धिमान हो, तभी तो तुम दो दो मिलों का काम सँभाल रहे हो डैडी तो एक मिल का काम भी अच्छी तरह नहीं सँभाल पाते थे। वह मुझसे कह रहे थे कि अगर तुम न आ जाते तो हमारा सब काम-काज चौपट हो जाता।"

परवेज के मुख पर अब एक चमक आ गई, "हा, डैडी मुझ पर पूरा भरोसा करते हैं। वह तो गवर्नर ने मुझे डाँट-डाँटकर मेरा हौसला पस्त कर दिया था। लेकिन तुम जो मुझे डाटती हो तो मुझे बड़ा बुरा लगता है। मेरा हौसला तो अब खुल गया है, वह पस्त होने का नहीं। जानती हो, मैं

आज ही लालचन्द भाई का सोल सेलिंग एजेंसी वाला कान्ट्रेक्ट रद्द कर दिया। मैंने ऐसे तीन प्वाइंट निकाले कि हमारा सोलीसिटर बोला—ऐ परवेज तुमने वकालत क्या नहीं की? तो हम बोला—वस्ता बाबा! यह वकालत का जाल-बट्टा हमसे नहीं चलेगा।"

कुलसुम चौंक उठी, "लालचन्द भाई के हाथ से तुमने सोल सेलिंग एजेंसी ले ली?"

"क्यों न ले लेते! तीन दफा कहा कि माल हमारा, तुम ब्लैक मार्केटिंग करने वाला कौन होता है, और उसका जवाब मिला कि कानून उसके हक में है। तो हम बोला—अच्छा बाबा तुझे खुली छूट, जब कानून तेरे हक में है, और लगा दिया अपना मनसुखलाल को उसके पीछे। तो मनसुख इकट्ठा करता रहा सब मसाला। लेकिन अपन ने सोचा कौन मुकदमाबाजी करे—डैडी भी तो मुकदमबाजी के खिलाफ हैं। तभी यह लालचन्द भाई हमारे जगतप्रकाश भाई पर हमला कर बैठा। तो फिर हमें भी आ गया गुस्सा, हम बोला—अच्छा लालचन्द भाई, तुमने न मजा चखाया तो अपन का नाम परवेज झाबवाला नहीं। और आज हम उसे नोटिस भेज दिया। सोलीसिटर बोला कि उसे फोजरी के जुर्म में सज़ा भी दिलाई जा सकती है। तो हम बोला—यह जेल वेल नहीं बाबा, अपना जगत भाई अब अच्छा हो गया है। सिर्फ इसकी सोल सेलिंग एजेंसी गायब। हम अपना सेल खुद करेंगे। मनसुख लाल को सेल्स मैनेजर बना दिया है, पन्द्रह सौ रुपया महीने की पगार पर।"

कुलसुम चिल्ला उठी "मनसुखलाल जैसे नौकर को पन्द्रह सौ रुपए महीना पगार! तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया है परवेज!"

"फिर तुमने डाँटा! अरे बाबा पन्द्रह सौ रुपया महीना पगार न दे तो वह भी बेईमानी करने लगे। क्यों मिस्टर जगतप्रकाश! ज्यादातर लोग बेईमान इसलिए होता है कि उसे वाजिब पगार नहीं मिलता।"

जगतप्रकाश हँस पड़ा, "बिलकुल ठीक किया परवेज तुमने। अच्छा बतलाओ कि ब्रिटेन में कंजर्वेटिव पार्टी क्यों हार गई?"

"देखो मिस्टर जगतप्रकाश! यह इतनी सीधी बात है कि पढ़े-लिखे आदमियों की समझ में नहीं आ सकती। अच्छा, एक बात बताओ, इस

वार मे ब्रिटेन हारा या जीता ?"

कुलसुम ने परवेज को डाटा, "फिर वही ऊट-पटाग बात ! दुनिया जानती है कि ब्रिटेन जीता है।"

एक हल्की सी मुसकान परवेज के मुख पर आ गई, "लेकिन मैं कहता हू कि इस वार मे ब्रिटेन हारा—बुरी तरह हारा ! सिवा जान निकलने के और सब गत हो गई उसकी। वैसे हारे तो जमनी, जापान और इटली हैं, लेकिन ब्रिटेन बुरी तरह पिट गया है। इतने आदमी मर गए उसके, इतना क़र्ज़ लद गया है उस पर, और ब्रिटेन मे लोग खाने कपडे को तरस रहे हैं, रहने को मकान नही—उजाड बना दिया है जमनी ने।"

अब जमील बोला, "हा यह तो ठीक कहते हो। तो आगे।"

परवेज़ बोला, "यह जग कज़र्वेटिव पार्टी की सरकार ने शुरु की थी जिससे ब्रिटेन की यह हालत हो गई है। तो लोग कज़र्वेटिव सरकार के दुश्मन बन गए थे। जहा उन्हे मौका मिला उन्होने इस कज़र्वेटिव सरकार को उखाड फेंका।"

"लेकिन यह कज़र्वेटिव सरकार की पराजय तो चर्चिल की पराजय है। अभी तक युद्ध पूरी तौर से खत्म नही हुआ है।" जगतप्रकाश बोला।

परवेज़ के मुख पर आई मुसकान अब कुछ अधिक प्रस्फुटित हो गई, "जापान को बस खत्म ही समझो ! मरने के बाद भी लाश कभी-कभी हरकत करती रहती हैं—तो वही हाल जापान का है। हा, तो अपना कहना है, कि दूसरे का मारना एक काम, अपने को बनाना दूसरा काम। चर्चिल का जो काम था वह खत्म हो गया, ब्रिटेन के आगे अब अपने मुल्क को बनाने का काम है। तो भला, मिटानेवाला कहीं बना सकता है ?" और उत्साह के साथ परवेज़ चिल्ला उठा, "चर्चिल अलविदा !"

कुलसुम उठ खडी हुई, "अब आठ बजे हैं, डैडी हम लोगो का इन्तज़ार करते रहे होगे, चलो परवेज !" और उसने जगतप्रकाश से कहा, "कल शाम तुम मेरे यहा आना। अब तुम्हे ठीक तौर से खाना-पीना और चलना फिरना चाहिए। कामरेड जमील अहमद ! आप इनका हौसला बढाइए, इन्हे धीरज बधाइए, इन्हे फ़िक्र किस बात की है ?"

जगतप्रकाश ने भी उठकर कहा, "मैं कल तुम्हारे यहाँ आऊँगा। मुझे

किसी तरह की फिक्र नहीं है कुम्कुम, जब तक तुम हो।"

रात के समय जब जगतप्रकाश अपने कमरे में अकेला रह गया, उसने अपने अन्दर शान्ति अनुभव की। उसे लगा कि मनुष्य के अन्दर कहीं कोई प्राण शक्ति है जो उसके टूटते-टूटते भी उसे टूटने नहीं देती। यही प्राण शक्ति मनुष्य को कायम रखे है। सारी आशाएँ, सारी प्रतीक्षाएँ टूटने के लिए बनी हैं। स्वयं मनुष्य ही टूटने के लिए बना है। तब फिर इतनी निराशा क्या? इतनी कसक क्यों? इतनी पीड़ा क्या? जो कुछ होना है वह हो चुका है, भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है, अपने हाथ में कुछ नहीं है। व्यक्ति स्वयं में नगण्य और अस्तित्वहीन प्राणी होता है, व्यक्ति का स्थान केवल एक सामाजिक इकाई के रूप में है। और यह समाज भी तो बनते और टूटते रहते हैं। नया ज्ञान, नई मान्यताएँ। परवेज ने ठीक ही कहा था कि ब्रिटेन इस युद्ध में जीतकर भी हार गया है। दूसरे देशों से गुलामी करानेवाला देश स्वयं गुलाम बनते-बनते बचा। उसके साम्राज्यवाद ने ब्रिटेन को खोखला कर दिया था।

युद्ध! युद्ध का काम ही है संहार। मनुष्य का, सम्पत्ति का, चरित्र का, आस्था का। महात्मा गांधी द्वारा अपनाया जाने वाला अहिंसा का मार्ग ही एकमात्र सही मार्ग है। हिंसा का प्रवर्तक हिटलर मर चुका है, मुसोलिनी मर चुका है, और वह सुभाष! वह सुभाष भी खबरों के अनुसार मर चुका है। बरमा से जापान जाते समय हवाई दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई थी। इण्डियन नेशनल आर्मी, जो भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए निर्मित हुई थी, वह खत्म हो चुकी थी, उस सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया था।

लेकिन इस हिंसा का विनाश भी तो हिंसा के ही द्वारा हुआ है। हिंसा दूसरे को नष्ट करती है, हिंसा स्वयं अपने को नष्ट करती है। हिंसा विनाश का तत्व है निर्माण का तत्व है शान्ति! और क्या यह शान्ति अहिंसा का भाग नहीं है।

जगतप्रकाश अपने अन्दर ही मनन कर रहा था, हिंसा को हिंसा ही नष्ट कर सकती है, अहिंसा तो स्वयं में नष्ट हो जाने वाली सत्ता है। ब्रिटेन बच गया, क्योंकि उसने अहिंसा का सहारा नहीं लिया, यूरोप के अन्य छोटे

छोटे देशो तक ने अहिसा का सहारा नही लिया और वे भी बच गए। ज्ञानप्रकाश महात्मा गाधी की उस सलाह को याद करके हँस पडा जो उन्होने युद्ध के प्रारम्भिक काल मे ब्रिटेन को दी थी—सत्याग्रह करने वाली सलाह! लेकिन क्या वास्तव मे ब्रिटन महात्मा गाधी की सलाह न मानकर बच सका? यह सच है कि उसने जमनी को तोड दिया लेकिन वह स्वय भी तो टूट रहा है। उस ब्रिटेन का साम्राज्य बचेगा नही, क्योकि अब उसमे अपने साम्राज्य को बचाए रखने की क्षमता नही रह गई है। शोपण पर पनपने वाले देश स्वय ही नष्ट हो जाएँगे।

ताकत उसमे है जिसे अपने निजी बाहुबल पर विश्वास है। जमनी के पास कोई साम्राज्य नही था, और अकेले उसने सारी दुनिया को झकझोरकर रख दिया। अमेरिका के पास कोई साम्राज्य नही था, और अमेरिका के उत्पादन एव वैज्ञानिक उपकरणो द्वारा मित्रराष्ट्रो ने यह युद्ध जीता था। औद्योगिक क्रान्ति को जन्म देन वाला ब्रिटेन अपने साम्राज्य के बोझे से दबकर औद्योगिक दृष्टि से यूरोप का सबसे पिछडा देश रह गया था। उसके युवक उसके साम्राज्य के देशो का शोपण करने मे लग गए—ब्रिटेन का स्वावलम्ब जाता रहा।

जेल से छूटते ही जवाहरलाल ने कहा था कि ब्रिटेन म अब यह क्षमता नही रह गई कि वह अपने साम्राज्य को कायम रख सके, ब्रिटेन अब एक चतुथ श्रेणी का देश रह गया है। बात कुछ अजीब-सी लगी थी, लेकिन शायद वह बात सत्य थी।

और अगस्त के प्रथम सप्ताह मे अमेरिका ने जापान पर निणयात्मक प्रहार किया। हिरोशिमा नगर मे एटमबम गिराकर भयानक विध्वस, एक नया सहारात्मक अस्त्र जो दुनिया को नष्ट कर सकता था। पूरा नगर का नगर नष्ट हो गया था, लाखो आदमी मर गए थे। उसके ठीक तीन दिन बाद नागासाकी नगर पर दूसरा एटमबम गिराया गया। जापान ने घुटने टेक दिए थे।

इस विश्व-युद्ध मे विजय केवल एक देश को मिली थी। वह था अमेरिका, रूस बुरी तरह टूट गया था, फ्रास बुरी तरह टूट गया था, ब्रिटेन बुरी तरह टूट गया था। ये तीनो देश जमनी की मार मे थे, स्वय नष्ट होते-होते

उधर तुम सरदार वल्लभ भाई की अदालत मे हारे। तो अब सरदार की अदालत के आगे तुम महात्मा गाधी की अदालत म जाओ, वहा भी तुम हारोगे।" और जगतप्रकाश को देखते ही परवज बोल उठा, "आओ जगतप्रकाश भाई, तुम भी सुन लो इन लालचन्द भाई की बात। कहते हैं कि तुम कम्युनिस्ट हो, इसलिए जीवानन्द कालेज मे नही लिये गए। और मैं कहता हूँ कि जगतप्रकाश भाई कभी भी कम्युनिस्ट नही हो सकते, उनसे पूछ तो लेते।"

जगतप्रकाश ने मुस्कराते हुए कहा, "अभी तक तो मैं कम्युनिस्ट नही था, लेकिन अब हो गया हूँ। फिर जब मुझे जीवानन्द कालेज की नौकरी नही करनी, झगडा किस बात का ?"

कुल्सुम घर के अन्दर थी, अब वह बाहर आ गई। उसने परवेज से पूछा, "अभी तक लालचन्द भाई से तुम्हारी बात खत्म नही हुई, एक घण्टा से ऊपर हो गया।"

"एक बात हो तो खत्म हो जाए। यह लालचन्द भाई कभी सफाई देते हैं, कभी खुशामद करते हैं, कभी धमकाते हैं। कहते हैं कि यह मिस्टर जगतप्रकाश कम्युनिस्ट ह, इसलिए इन्हे जीवानन्द कालेज मे नही लिया गया। फिर कहते हैं कि मालती को लेकर इनकी बडी बदनामी है गुजराती समाज मे। फिर कहते है कि यह तबाह हो जाएँगे। कसम खाते है कि अब ब्लैक मार्केटिंग नही करेंगे। और अभी-अभी बोले कि हाईकोर्ट जाएँगे।"

लालचन्द भाई ने कुलसुम से हाथ जोडकर कहा, "कुल्सुम बेन मुझसे खता हो गई है, मुझे माफ कर दो। इन जगतप्रकाश को मैं कल से ही जीवानन्द कालेज म ले लूगा, मैं वादा करता हूँ।"

जगतप्रकाश बोला, "मैं कम्युनिस्ट बन गया हूँ लालचन्दजी, जीवानन्द कालेज मे मेरे जाने का अब कोई प्रश्न ही नही उठता।"

तभी कुलसुम बोल उठी, "लालचन्द भाई! जगतप्रकाश के कालेज मे लिए जाने या न लिए जाने की वजह से आपकी साल सेलिंग एजेंसी पर कोई असर पडा है इस गलतफहमी को आप अपने मन से निकाल दीजिए। आपसे यह सब किसने कहा ?"

'मालती बेन ने! मालती बेन ने मुझे बताया कि तुम इन जगतप्रकाश

को बम्बई लाई हो, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की नौकरी इनसे छुड़वाकर। उन्होंने मुझे पहले ही आगाह कर दिया था कि कुलसुम बेन इसका बदला लेगी। तब मैंने इसे हँसी समझा था।"

एकाएक परवेज उठ खड़ा हुआ, "आगे बातचीत करना बेकार! लालचन्द भाई अब तो हाईकोर्ट और प्रिवी कौंसिल मे इसका फैसला होगा। यह कुलसुम कम्युनिस्ट है, यह जगतप्रकाश कम्युनिस्ट है—तुमने सरदार से यही सब तो कहा था। तो सुन लो, वह माल्ती बेन कम्युनिस्ट है, और मैं—मैं भी कम्युनिस्ट हूँ। अब जो बिगाड़ सकते हो वह बिगाड़ लेना।" और परवेज तेजी से घर के अन्दर चला गया।

परवेज के जाने के बाद लालचन्द भाई ने कुलसुम से कहा, "कुलसुम बेन! मैं तुम्हारी शरण आया हूँ। मैं मिट जाऊँगा।"

कुलसुम बोली, "लालचन्द भाई मालिक परवेज है। तो परवेज जब अच्छे मूड मे हो तब उससे बात करना। लेकिन उसे डराना धमकाना मत। यह परवेज जितना नेक व भला है, उतना जिद्दी भी है।"

लालचन्द के जाने के बाद कुलसुम बोली, 'कल बीस तारीख है न! तो कल जसवन्त आ रहा है—मुझे आज सुबह उसका तार मिला है। मुझे फ्रंटियर मेल से उसे रिसीव करना है। स्टेशन जाते हुए मैं तुम्हें ले लूँगा।"

जसवन्त आ रहा है—यह जानकर जगतप्रकाश को प्रसन्नता हुई। जगतप्रकाश के अनजाने ही उसके अन्दर जसवन्त के प्रति गहरे सौहार्द की भावना पैदा हो गई थी। यह जसवन्त जगतप्रकाश के जीवन से दूर—बहुत दूर था, उससे मिलने और बात करने का मौका भी उसे अधिक नहीं मिला था, लेकिन फिर भी जगतप्रकाश को जसवन्त मे आत्मीयता मिली, दृढ़ता और सकल्प मिले। जगतप्रकाश बोला, "जरूर! मैं सुबह तैयार रहूँगा।" और फिर कुछ रुककर उसने कहा "कुलसुम! यह निष्क्रियता का जीवन मुझे अखर रहा है। मैंने आज जमील से बात की, उसका सुझाव है कि मैं कम्युनिस्ट पार्टी ज्वाइन करके अपने को काम-काज मे व्यस्त कर लूँ।'

कुलसुम के मुख पर प्रसन्नता की चमक आ गई, "शायद मैं भी यही सुझाव देती लेकिन मेरी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। आखिर कोई काम-काज तो करना है तुम्हें। मैंने दामन और सामन्त को तुम्हारी बाबत कहीं

दिलाया था कि तुम पार्टी के मेम्बर बन जाओगे। फिर यह सोचकर कि तुम्हारे जैसा बौद्धिक और महान् आदमी अनुशासन में बँधे—यह गलत होगा, मैं चुप हो गई थी।"

"तो फिर मैं जमील को अपनी स्वीकृति दे दूँ ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"इसमें जल्दी क्या है ?" कुलसुम बोली, "अगर किसी पार्टी में बँधना है तो ऐसी पार्टी में बँधो जहाँ तुम्हारा विचार-स्वातन्त्र्य कायम रह सके। दूसरों के नेतृत्व में चलने के स्थान पर तुम्हें नेतृत्व करना है। तुम कांग्रेस क्यों नहीं ज्वाइन कर लेते ?"

"वहाँ भी तो दूसरों के नेतृत्व में चलना होगा।" जगतप्रकाश बोला, "और ऐसे लोगों के नेतृत्व में जिनमें मेरा ज़रा भी विचार साम्य नहीं है। कम्युनिस्ट पार्टी से कम-से-कम मेरा विचार-साम्य तो है।"

कुलसुम कुछ देर सोचती रही, फिर उसने कहा, "शायद तुम ठीक कहते हो। कहने को तो कांग्रेस लोकतान्त्रिक संस्था है, लेकिन वहाँ सबसे दूषित डिक्टेटरशिप है जहाँ एक आदमी जो चाहे वह करे, सबको उसकी हाँ में-हाँ मिलानी पड़ती है। लेकिन तुम अभी जमील अहमद से हाँ मत कहो। परसों से ए० आई० सी० सी० की मीटिंग हो रही है उसमें भाग लेने के लिए कल जसवन्त आ रहा है। तो मेरी सलाह है कि तुम उससे भी बात कर लो।"

दूसरे दिन सुबह जब जगतप्रकाश ने उस दिन का पत्र खोला, उसकी नज़र लार्ड वेवल के वक्तव्य पर जम गई जो पिछली रात रेडियो पर उन्होंने दिया था। पिछली रात जगतप्रकाश ने रेडियो नहीं सुना था। लार्ड वेवल ने देश भर में नए चुनावों की घोषणा की थी, और कहा था कि नई केन्द्रीय एसम्बली द्वारा देश में राष्ट्रीय सरकार बनाई जाएगी, इसके बाद वह स्वतन्त्र भारत का नया संविधान बनाएगी।

जसवन्त को लेकर जगतप्रकाश के साथ कुलसुम अपनी कोठी में पहुँची, उसने जसवन्त से कहा, 'जसवन्त ! कल रात जब तुम ट्रेन में थे, लार्ड वेवल का रेडियो पर ब्राडकास्ट हुआ था। वह वक्तव्य आज के पत्रों में निकला है, उसे शायद तुमने अभी तक न पढ़ा हो। लो यह आज का 'टाइम्स', इसे पढ़ जाओ, तब तक चाय आती है।"

जसवन्त ने उस वक्तव्य को आद्योपान्त पढ़कर कहा, "नए चुनाव तो

होने ही चाहिए, इसके अलावा इस ब्राडकास्ट म और काइ महत्त्वपूर्ण बात नही है। हम वही है जहा हम शिमला कान्फ्रेंस के समय थे। जब तक यह हिन्दू मुस्लिम समस्या नही सुलझती तब तक कुछ नही होने का।"

"शायद इन चुनावो के बाद कुछ हो!" दबी जबान म जगतप्रकाश ने कहा, "मुझे तो ऐसा लगता है कि ब्रिटेन अपनी नीतियो म आमूल परिवतन करेगा। यह ब्राडकास्ट ए० आई० सी० सी० की मीटिंग के दो दिन पहले हुआ है।"

जसवन्त ने आश्चय स जगतप्रकाश को देखा, "यह बात तुमने किस आधार पर कही?'

जगतप्रकाश बोला, "मुमकिन है मेरा अनुमान गलत हो, लेकिन जो ब्रिटेन के आम चुनावो मे कजर्वेटिव पार्टी की पराजय हुई और चर्चिल की सरकार को हटा दिया, तथा उसके स्थान पर मज़दूर सरकार आ गई है, वह ब्रिटिश जाति के बदले हुए दृष्टिकोण का द्योतक है। ब्रिटेन भारतवर्ष को स्वतन्त्र कर देगा, वह अपने साम्राज्य को अब कायम नही रख सकता।'

जसवन्त मुसकराया "मुमकिन है तुम्हारा अनुमान ही सही हो, लेकिन मुसीबत यह है कि स्वय यह हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होने को तैयार नही है। आज हालत यह हो गई है कि अगर अंग्रेज हिन्दुस्तान से चला जाता है तो देश में हिन्दू-मुसलमानो मे भयानक गृह-युद्ध मच जाएगा। इतनी अधिक साम्प्रदायिक दुर्भावना फैला दी गई है इस देश मे।" और फिर कुछ गम्भीर होकर उसने कहा, "मुझे तो ऐसा लगता है कि देश का कल्याण इसमें है कि वह अभी स्वतन्त्र न हो। देश इस समय आन्तरिक विग्रह की चरम स्थिति म है। अंग्रेज के यहाँ से जाने के अथ होगे, अराजकता, गृह-युद्ध और न जाने क्या-क्या!"

अब जगतप्रकाश की बारी थी कि वह जसवन्त को आश्चय स देखे, "क्या स्थिति इतनी बिगड गई है? मेरा तो ख्याल था कि यह हिन्दू मुस्लिम समस्या वास्तविक नही है।"

'यह हिन्दू-मुस्लिम समस्या वास्तविक नही थी किसी समय, लेकिन अंग्रेजो की 'डिवाइड एण्ड रूल' की नीति ने तथा महात्मा गाधी की अदूरदर्शिता ने इसे वास्तविक बना दिया।"

"यह कैसे ?" कुलसुम ने पूछा।

'इसके लिए हमें अपने इतिहास पर एक नजर डालनी पड़ेगी", जसवन्त बोला "अंग्रेजों ने मुगल साम्राज्य समाप्त करके हिन्दुस्तान को जीता था। उसके बाद अधिकांश सरकारी नौकरियों पर हिन्दू आए, और मुसलमानों के अन्दर अंग्रेजों के विरुद्ध एक प्रकार का आक्रोश भर गया। अपने ऊपर से यह आक्रोश हटाने के लिए अंग्रेजों ने मुसलमानों को उकसाया। उन्हें विशेषाधिकार देकर अपना पक्षपाती बनाने की नीति अंग्रेजों ने अपनाई। सर सैयद अहमद के जरिए उन्होंने यह काम आरम्भ किया। और क्रिया प्रतिक्रिया के रूप में यह हिन्दू मुस्लिम भेदभाव बढ़ने लगा। हिन्दू यूनिवर्सिटी, मुस्लिम यूनिवर्सिटी, हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीग—क्रम चल पड़ा। और प्रथम महायुद्ध के बाद इस कृत्रिम भेद को वास्तविक भेद समझने की सबसे बड़ी गलती कर बैठे। असहयोग आन्दोलन के साथ खिलाफत आन्दोलन को जोड़कर उन्होंने मुसलमानों को एक अलग इकाई मानकर अपने साथ जो लेने की कोशिश की उसने ही रूप से यह घोषित कर दिया कि मुसलमान की वफादारी अपने देश के प्रति नहीं है, अपने मजहब के प्रति है, और मजहब के प्रति वफादारी होने के नाते उसकी वफादारी तुर्की के खलीफा के प्रति है। वह आन्दोलन असफल हुआ—उसे असफल होना ही था, लेकिन उस आन्दोलन के बाद ही हिन्दू मुस्लिम दंगों का एक देशव्यापी तांता बंध गया। उस आन्दोलन में अंग्रेजों ने समझ लिया था कि उनके द्वारा कृत्रिम रूप से उत्पन्न किया जाने वाला हिन्दुओं और मुसलमानों का भेदभाव, गांधी के एक गलत कदम से वास्तविकता बन गया है।"

कुलसुम ने एक ठंडी सांस भरकर कहा, "जसवन्त, बड़ी खतरनाक बात कह डाली है तुमने, लेकिन तुम्हारी बात को मैं काट नहीं सकती।"

जसवन्त का स्वर अब धीमा पड़ गया था, "महात्मा गांधी अपनी पुरानी धार्मिक भावनाओं से ग्रस्त हैं। यह राम रहीम, ईश्वर अल्ला का नारा एकता का नारा न होकर विभेद का द्योतक है। राम रहीम, ईश्वर-अल्ला—यह दो मनोवृत्तियों की स्थापना की द्योतक हैं जहां समझौते की भावना है। समझौता वहीं होना है जहां दो विरोधी सत्ताओं की मौजूदगी है। दो विरोधी सत्ताओं की मौजूदगी महात्मा गांधी को स्वीकार ही नहीं करनी

चाहिए थी। मनुष्य की आधारभूत समस्या है रोटी-कपड़ा। मजहब तो बहुत बाद की चीज़ है। उस इकबाल ने जिसने पहली बार पाकिस्तान की परिकल्पना की थी, आरम्भ में लिखा था—

मजहब नहीं सिखाता, आपस में वैर करना,
हिन्दी हैं, हमवतन हैं, हिन्दोस्ता हमारा!

लेकिन वही इकबाल उस प्रथम महायुद्ध के बाद मजहब को मायना दे बैठा।"

जगतप्रकाश मन्त्रमुग्ध-सा जसवन्त की बातें सुन रहा था—कुछ ऐसा जिस पर कभी उसका ध्यान नहीं गया था, जिस पर उसने सोचा नहीं था।

और जसवन्त कहता जा रहा था, "सन् १९३० के आन्दोलन में उतने मुसलमान नहीं सम्मिलित हुए जितने होने चाहिए थे। इसके बाद महात्मा गांधी ने पहले कदम से भी अधिक घातक कदम उठाया सन् १९३६ में हिन्दुस्तानी नाम की भाषा को जन्म देकर। आखिर यह हिन्दुस्तानी थी क्या? मजहब के आधार पर हिन्दी और उर्दू में एक समझौता! और यह समझौता क्यों? महात्मा गांधी आरम्भ से ही कह रहे थे कि देश को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा हिन्दी है। महात्मा गांधी के दिमाग में यह बात थी कि देश के हिन्दुओं की सांस्कृतिक भाषा हिन्दी है। मुसलमानों को मिलाने के लिए उन्होंने उर्दू को मुसलमानों की सांस्कृतिक भाषा के रूप में स्वीकार करके हिन्दुस्तानी नाम की एक कृत्रिम भाषा को जन्म दिया जो दो लिपियों में लिखी जाती थी। इस समझौते वाली भाषा से महात्मा गांधी ने हिन्दुस्तान में दो संस्कृतियों को स्वीकार किया, और दो संस्कृतियों को स्वीकार करके—जैसे मिस्टर जिन्ना का कहना है, टू नेशंस यानी दो राष्ट्रों को स्वीकार कर लिया।"

कुछ रुककर जसवन्त बोला, "जो कृत्रिमता थी उसे महात्मा गांधी ने वास्तविकता की तरह से स्वीकार कर लिया, यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य था। आज की परिस्थितियों में हम यदि स्वतन्त्रता मिलती है तो देश का बँटवारा अनिवार्य है। और उस बँटवारे के साथ गृह-युद्ध, अमानुषिक हत्याकाण्ड।"

अब कुल्सुम बोली, "तो तुम्हारा खयाल है कि देश को गुलामी की ही हालत में रहना चाहिए?"

"हाँ, तब तक, जब तक हम इस मजहब के पागलपन को मिटा नहीं लेते। इस मजहब के पागलपन की सिर्फ एक काट है—कम्युनिज्म। देश के निन्यानवे प्रतिशत भूखे मरने वाले और अभावग्रस्त आदमियों के लिए मजहब सिर्फ एक भुलावा है, उनको गुलाम बनाए रखने का एक साधन है। जहाँ इतने वर्ष गुलामी की है, वहाँ दस बीस साल और गुलामी करने से कुछ बिगड़ नहीं जाएगा। हमें रूस के अभ्युत्थान की प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

तभी कुल्सुम बोली, "जसवन्त, यह जगतप्रकाश—इन्हें कम्युनिस्ट पार्टी वाले अपना मेम्बर बनाना चाहते हैं, यह भी कुछ काम-काज करना चाहते हैं। क्या खयाल है तुम्हारा?"

"लेकिन यह काम करेंगे क्या? हिन्दुस्तान कृषि प्रधान देश है और कम्युनिस्ट पार्टी की पहुँच केवल औद्योगिक नगरों के मजदूरों तक है, और इन मजदूरों की हालत देश के किसानों से कहीं अच्छी है। असल में काम करना है किसानों के बीच में, देश के अनगिनती गावों में। और गावों तक कांग्रेस पहुँच चुकी है।"

"लेकिन कांग्रेस का कार्यक्रम गलत है।" जगतप्रकाश बोला।

"इसलिए कि कांग्रेस का नेतृत्व गलत है।" जसवन्त उदास स्वर में बोला, "शायद देश में जो कुछ हो रहा है वह सब का सब गलत है। और इन्हीं गलतियों में हम रहना है। मेरी समझ में तुम कांग्रेस ज्वाइन कर लो। मैंने कम्युनिस्ट पार्टी को अन्दर से देखा है, और मैं समझता हूँ कि देश की जनता का विश्वास प्राप्त करने में अभी कम्युनिस्ट पार्टी को लम्बा समय लगेगा।"

फिर जगतप्रकाश के सामने एक अँधेरा—अँधेरे के सिवा और कुछ नहीं। जसवन्त तीन दिन बम्बई में रहा और जसवन्त के साथ जगतप्रकाश भी ए० आई० सी० सी० की बैठक में जाता रहा। मूसलाधार वर्षा में वह अधिवेशन हुआ, और जगतप्रकाश ने स्पष्ट रूप से यह देखा कि कांग्रेस का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथ से निकलकर जवाहरलाल के हाथ में आ रहा है शायद स्वयं महात्मा गांधी की मर्जी से। जवाहरलाल में जीवनी शक्ति थी, जवाहरलाल में प्रतिभा थी, और जवाहरलाल को

महात्मा गाधी का पूण विश्वास प्राप्त था। महात्मा गाधी का उत्तराधिकारी जवाहरलाल अब पूरी तौर से शक्तिशाली बन गया था।

हवाई दुघटना म सुभापच द्र बोस की मृत्यु हो जाने की खबर आ चुकी थी और सुभाप न भारत की स्वत त्रता के लिए युद्ध करने के कारण जिस इण्डियन नेशनल आर्मी की स्थापना की थी, उसने जापान की पराजय के साथ ही आत्म-समपण कर दिया था। इण्डियन नेशनल आर्मी के कुछ अफसरो पर लाल किले मे मुकदमा चलाया गया, जवाहरलाल के आग्रह से उस मुकदमे म अभियुक्तो की पैरवी का भार काग्रेस ने अपने ऊपर ले लिया था। पाँच नवम्बर को यह मुकदमा आरम्भ हुआ। जनमत अभियुक्तो के पक्ष मे था। तीन जनवरी को तीना अभियुक्ता को कमाण्डर इन चीफ न क्षमा प्रदान करके मुक्त कर दिया। और इस आई० एन० ए० के मुकदम से देश मे एक नया उत्साह फैल गया।

१९४६ का नया वप आ गया था, और जगतप्रकाश के अ दर निराशा का अ धकार गहरा होता जा रहा था। देश मे के द्रीय असेम्बली के चुनाव हो रहे थे और ऐसा दिखता था कि काग्रेस के मुस्लिम सदस्यो को चुनाव म सफलता नही मिलेगी। उस दिन जब जगतप्रकाश घर से बाहर जाने की तैयारी कर रहा था, जमील अपने ऑफिस से लौट आया। उसके हाथ म एक किताब थी, और वह काफी उत्तेजित था। उसने कहा, 'बरखुरदार! यह राजे द्र बाबू की नई किताब है—'इण्डिया डिवाइडेड', इसम उन्होने मिस्टर जिना को मुह-तोड जवाब दिया है।"

"देखू तो!" और जगतप्रकाश ने किताब जमील के हाथ से ले ली। उसने किताब के पष्ठ उल्टे और वह बैठ गया, "अब नही जाऊँगा। यह किताब तो काफी महत्त्वपूण दिखती है। जिन्ना का दावा ग़लत है, पाकिस्तान के सपने को ही तोड दिया गया है इसमे।"

जगतप्रकाश ध्यान से उन आँकडा को देखने लगा जो १९४१ की जनमत-गणना के आधार पर उस किताब मे प्रस्तुत किये गए थे। और तभी जमील ने एक ठडी साँस ली, "बरखुरदार, मुझे तो एसा लगता है कि पाकिस्तान न अब असलियत की शक्ल अख्तियार कर ली है। देश के बटवारे का नामजूर न करके अब कहा-सुनी इस बात पर हो रही है कि पाकिस्तान

की क्या शक्ल होगी। राजगोपालाचारी के फार्मूले मे कहा गया था कि एक कमीशन बैठे जो यह तय करे कि मुल्क के किन हिस्सो मे मुसलमानो की तादाद ज्यादा है। उस कमीशन का काम किया है इस किताब ने।"

जगतप्रकाश ने कहा, 'शायद यही बात है। इस किताब के अनुसार पाकिस्तान की जो शक्ल बनेगी देश के मुसलमान और मिस्टर जिन्ना उसे किसी हालत मे मजूर न करेंगे।"

जमील बोला, "कुछ कहा नही जा सकता। इन्सान का चाहा कब होता , इन्सान तो अपनी मजबूरियो का गुलाम है। बदकिस्मती की बात तो यह कि इधर चन्द साला मे हम जिसे गैर मुमकिन समझते थे, देश के बँटवारे ो यह बात हर तरफ खुल्लमखुल्ला होने लगी है। देश का बँटवारा होकर हेगा, इस किताब से यह साबित हो जाता है।"

फिर उस शाम को जगतप्रकाश घर के बाहर नही निकला, वह उस ताब को पढने बैठ गया जमकर।

केन्द्रीय असेम्बली के चुनावो मे मुस्लिम सीटो को लेकर काग्रेस को री पराजय मिली। मुस्लिम लीग के ही उम्मीदवार चुने गए। जिन्ना का दावा सच निकला कि मुस्लिम लीग ही देश के मुसलमाना की एकमात्र तिनिधि सस्था है, और दस जनवरी का देश भर मे मुस्लिम लीग ने अपनी जय का दिवस मनाया। हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य अब अपनी चरम सीमा पहुँच रहा था। उसे रोका नहीं जा रहा था, शायद उसे रोका भी नही सकता था। गाधी और जिन्ना इन दो व्यक्तियो ने सघर्ष को जो रूप रण कर लिया था, उसे देश देख क्या नही पा रहा है? जगतप्रकाश को त्चर्य हो रहा था इस बात पर। आई० एन० ए० के मुकदमे की प्रति- ा देश म ब्रिटेन के खिलाफ तो हुई, लेकिन उसका इस हिन्दू-मुस्लिम स्या पर कोई असर नही पडा।

कशमकश चल रही थी और कोई हल निकलता नजर नही आ रहा । ब्रिटिश सरकार के प्रति देश मे विद्रोह मुखर होता जा रहा था और ह के मुखर होने मे सहायक हो रही थी, ब्रिटन की नई मजदूर सरकार भारत मे स्थित ब्रिटिश नौकरशाही मे तीव्र मतभेद। ब्रिटन की नई र सरकार जल्दी-से जल्दी भारतवर्ष को स्वराज्य देकर भारत की

समस्या से छुटकारा पाना चाहती थी, देश के अन्दर बैठी हुई ब्रिटिश नौकर-शाही देश के गुलाम बने रहने मे ही अपने विशेष अधिकारो की रक्षा समझती थी। और देश का आर्थिक ढाचा लडखडा रहा था।

देश मे एक भयानक अकाल की छाया मँडरा रही थी। बगाल मे ततीस लाख आदमी अकाल से भूखो मरे थे, इस बार दक्षिण मे चार-पाच करोड आदमियो के भूखो मरने की सम्भावना थी। भारत सरकार के खाद्य सदस्य ने अमेरिका आदि देशो से अपील की थी कि वह भारत को प्रचुर मात्रा म खाद्यान्न दे। भारत के खाद्य-सदस्य ने केन्द्रीय असेम्बली मे घोषणा भी की थी कि वह विदेशो मे खाद्यान्न खरीदने के सम्बन्ध मे एक शिष्ट मण्डल ले जाएँगे।

यह भूख, अकाल, बेकारी और दरिद्रता से लडखडाता देश! यह कैसे बचेगा ब्रिटिश सरकार की गुलामी मे रहते हुए? लेकिन यह ब्रिटिश राज जाएगा कैसे? जनता मुर्दा थी। जनता का जो सम्पन्न और शक्तिशाली वर्ग था वह लूट-खसोट मे लगा था, जनता का नेता वर्ग आपसी सघर्षों मे उलझा हुआ था। विद्रोह अगर कही हो सकता था तो वह सेना मे।

इण्डियन नेशनल आर्मी के रूप मे सेना का पहला विद्रोह दिखा था, लेकिन वह विशेष परिस्थितियो मे। सेना का दूसरा विद्रोह फूट पडा १६ मई १६४६ को बम्बई मे।

उस दिन थाना मे मजदूरो की एक सभा मे जमील को जाना था जमील ने जगतप्रकाश को अपने साथ ले लिया था। इन दोनो को विक्टोरिया टर्मिनस म लोकल ट्रेन पकडनी थी। करीब नौ बजे सुबह दोनो बस पर बठे घोबी तालाब आकर बस रुक गई। एक भीड इकट्ठा थी वहा पर, वहाँ विक्टोरिया टर्मिनस का रास्ता बन्द था। बस से यात्रियो को उतरना पडा दोनो पैदल ही विक्टोरिया टर्मिनस की ओर बढे, और तभी उन्हे विक्टोरिया टर्मिनस की तरफ से कुछ लोग भागते नजर आ रहे थे, जो चिल्ला रहे

"क्या हो गया—क्या हो गया!"

ये दोनो आगे बढते गए। विक्टोरिया टर्मिनस के पास पहुँचकर लोगो ने देखा कि कुछ लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शनकारी नेवी की वर्दी पहने हुए थे। एक एंग्लो इण्डियन पुलिस सार्जेंट से जगतप्रकाश ने अ

मे पूछा, "यह प्रदशन कैसा हो रहा है, क्या मामला है ?"

वह पुलिस सार्जेंट खुद घबराया हुआ था। उसने कहा, "मुझे खुद नहीं मालूम, लेकिन ये नेवी के आदमी है।" और तभी वह पुलिस सार्जेंट तेजी से क्राफड मार्केट की ओर भागा। प्रदर्शनकारियो ने एक ब्रिटिश सैनिक को जमीन पर गिरा दिया था।

जमील ने जगतप्रकाश से कहा, "हम लोगो का थाना जाना मुल्तवी। यह नजारा मजदूरो की उस कान्फ्रेंस से ज्यादा दिलचस्प है। जरा आगे बढा जाए फ्लोरा फाउंटेन की तरफ।"

"रास्ता बन्द है। देख रहे हो जमील काका, वहा जाना खतरे से खाली नही है।"

"चलो, गलियो के अन्दर होते हुए निकल चले, जो कुछ हो रहा है वह तो हार्नबी रोड पर।" जमील ने जगतप्रकाश का हाथ पकडकर आगे बढते हुए कहा। पीछे की गलियो से होते हुए दोनो फ्लोरा फाउंटन पहुँच गए।

दूकाने बन्द थी और प्रदर्शनकारियो की भीड बढती जा रही थी। यह प्रदर्शन अब उग्र हिंसात्मक रूप धारण करने लगा था। फ्लोरा फाउंटेन पहुँचकर इन लोगो ने देखा कि वहा नेवी के लोगो ने एक मोरचाबन्दी भी कर रखी है। प्रदर्शनकारियो की भीड़ लगातार बढती जा रही थी। रायल इण्डियन नेवी के हिन्दुस्तानी नाविक डॉक्स से चले आ रहे थे।

एक हिन्दुस्तानी नौसेना का अफसर एक कोने मे उदास खडा यह सब देख रहा था, जगतप्रकाश ने उससे पूछा, "क्या मामला है ?"

"अंग्रेज अफसरो का हिन्दुस्तानी नाविको के प्रति दुर्व्यवहार! जहाज पर काम करने वाले हिन्दुस्तानी नाविको को सडा गला भोजन दिया जाता है, उनके साथ जानवरो की तरह पेश आया जाता है।"

"क्या यह सब अभी होने लगा है या पहले से हो रहा है ?" जमील ने पूछा।

"होता तो पहले से रहा है, लेकिन अब यह सब असह्य हो गया है हम लोगो का। हम लोगो की सहायता से ब्रिटेन इस युद्ध मे विजयी हुआ है और उस पर भी हमारे साथ यह दुर्व्यवहार हो रहा है।" वह बोला, "बीस हजार हिन्दुस्तानी नाविको ने हडताल कर दी है। हमे अच्छा खाना चाहिए,

अच्छा व्यवहार चाहिए। लेकिन मैं सोच रहा हूँ, यह सब कैसे हो सकेगा? हमारा देश कामचोरों का देश है। सामूहिक जोश में ये हड़ताली यहां चले आए हैं। लेकिन क्या इन लोगों में विद्रोह करने का वास्तविक साहस है, कम-से-कम मेरी समझ में यह नहीं आता।"

उस दिन वह हड़ताल अपेक्षाकृत अहिंसात्मक रही। लेकिन सेना में विद्रोह हो गया, यह स्वय में भयानक स्थिति थी।

करीब बारह बजे तक जमील के साथ जगतप्रकाश उस क्षेत्र में घूमता रहा। लौटते समय जमील बोला, "बरखुरदार! अंग्रेज के पैर अब इस देश से उखड़ चुके। ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तानी फौज के बल पर इस देश में हुकूमत करती रही है, और हिन्दुस्तानी फौज उसके हाथ से जाती रही। इतनी अहम बगावत, और सरकार इस बगावत को दबाने के लिए फौज नहीं बुला सकती, क्योंकि हिन्दुस्तानी फौज पर उसे भरोसा नहीं, क्योंकि अगर वह भी इन जहाजियों की हमदर्दी में बगावत कर दे तो इसमें ताज्जुब की बात नहीं होगी।

"लेकिन अंग्रेज फौज तो बुलाई जा सकती है।" जगतप्रकाश बोला।

"हां, लेकिन हिन्दुस्तान में ब्रिटिश फौज है कितनी? हिन्दुस्तान में ज्यादातर अमरीकी फौज थी जो चली गई, थोड़ी-सी ब्रिटिश फौज बच गई है, जिसका जमाव बंगाल और आसाम में है। वह ब्रिटिश फौज बुलाई जाएगी, लेकिन उसमें वक्त लगेगा।"

उस नौ सेना के अफसर का कहना ठीक था, हड़तालियों में मतैक्य नहीं था, और फिर सरकार ने हड़ताल को दबाने के साधन जुटा लिए थे। यह हड़ताल तीन चार दिन चली, इन हड़तालियों की सहानुभूति में बम्बई के मजदूर भी खुलकर आ गए। इस बीच में ब्रिटिश फौज बुला ली गई। नगर में गोलियां चलीं, सैकड़ों मजदूर और नागरिक मरे, हजारों जख्मी हुए, कर्फ्यू लगा और अन्त में ब्रिटिश सरकार ने हड़तालियों की मांग मान ली। पच्चीस फरवरी को यह हड़ताल समाप्त हो गई।

हिन्दुस्तान की स्थिति का अध्ययन करने के लिए ब्रिटिश पार्लमेण्ट का जो मिशन जनवरी में आया था, उसने अपनी रिपोर्ट दे दी थी और इस रिपोर्ट के फलस्वरूप ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के तीन आदमियों का एक मिशन

भारत के स्वराज्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए तेईस मार्च को कराची पहुँच गया।

जगतप्रकाश को अब विश्वास होने लगा था कि देश के स्वतन्त्र होने का समय आ गया है। ब्रिटेन स्वयं देश को स्वतन्त्र करने पर तुल गया था। विश्व-युद्ध में टूटा हुआ ब्रिटेन साम्राज्यवाद का मोह त्याग चुका है। हिन्दुस्तान की खाद्य समस्या लगातार बिगड़ती जा रही थी और हिन्दुस्तान में ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा भी उसी अनुपात से बढ़ती जा रही थी।

जमील बोला, "यह तो है, लेकिन देस को आजादी मिलने में अभी वक्त लगेगा। यह सब एक दिखावा है। हिन्दू मुस्लिम प्राब्लेम ने अब इतना तूल पकड़ लिया है कि इस देश में एका हो ही नहीं सकता, और बिना एका के आजादी नहीं मिलनी।"

"यह हिन्दू-मुस्लिम समस्या अंग्रेज ने पैदा की है, वह इसे सुलझा भी सकता है।" जगतप्रकाश बोला।

"यहीं गलती करते हो बरखुरदार! बिगाड़ना इन्सान के हाथ में है, बनाना उसके हाथ में नहीं है। मैं कहता हूँ कि हिन्दू मुस्लिम समझौता अब हो ही नहीं सकता जिन्ना की मौजूदगी में, और बिना यह समझौता हुए स्वराज्य नहीं मिल सकता।"

"तो फिर तुम्हारा मतलब है कि यह सब महज एक धोखा है?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"यकीनन! हिन्दुस्तान से अंग्रेजों के पैर उखड़ चुके हैं, यह सच है। अब ब्रिटेन इस हिन्दू मुस्लिम निफाक की आड़ में कुछ ऐसा करेगा कि हिन्दुस्तान खुद अपनी मर्जी से इस ब्रिटिश हुकूमत को अपने ऊपर लादे रहे, यानी कुछ कमानी सुधार मिल जाएँगे।"

"मेरा ऐसा खयाल है कि अगर यह जाल फैलाया गया तो इसमें न महात्मा गाधी फँसेंगे, न मिस्टर जिन्ना फँसेंगे।" जगतप्रकाश बोला।

और हुआ भी ऐसा ही। उन्नीस जून को कैबिनट मिशन चला गया, और कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग में कोई समझौता नहीं हो सका। कैबिनट मिशन ने पाकिस्तान की माग नामंजूर कर दी थी, लेकिन जिस संविधान की रूपरेखा इस मिशन ने बनाई थी, वह कांग्रेस को भी मान्य नहीं थी। तो

क्या जमील का ही अनुमान सही था? क्या ब्रिटेन की मजदूर सरकार भी हिन्दुस्तान को स्वतन्त्रता देने मे आनाकानी कर रही है?

लेकिन ब्रिटेन हिन्दुस्तान को बाधे कैसे रहेगा? कितनी ब्रिटिश सेना यहा रखकर वह हिन्दुस्तान पर शासन करेगा? महात्मा गाधी पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते है, जिन्ना भी पाकिस्तान के रूप मे पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते हैं।

जुलाई का महीना बम्बई का सबसे बुरा महीना कहा जाता है, दिन रात वर्षा होती रहती है, कोई घर के बाहर नही निकल पाता। उस दिन जब जगतप्रकाश को अपने गाँव से सुमेर का पत्र मिला कि वह बडी मुसीबत मे है, गाव वाले उसे बहुत परेशान करते हैं, तो उसने जमील से कहा "जमील काका! मौसम तो यहा बडा खराब है। सोच रहा हूँ कि कुछ दिनो के लिए गाव हो आऊँ, वहा अपनी जमीन और अपने मकान का भी निपटारा कर दू।"

"क्यो, यह जमीन और मकान का निपटारा करने की ऐसी क्या जरूरत आ पडी?" जमील ने पूछा।

"निपटारा तो करना ही होगा, आज नही तो कल। जहा से अपनी जडें उखड चुकी हैं, वहाँ का अब मोह क्यो? आखिरी दफा अपने गाव को देख अपनी भूमि को प्रणाम कर लू और फिर वहा से हमेशा के लिए अपना नाता तोड लू।" जगतप्रकाश का गला भर आया था, "उस गाव मे मेरे पिता आकर बसे थे, उससे पहले हमारे परिवार का उस गाव से कोई सम्बन्ध था। मेरे पिता ने वहा अपना मकान बनवाया, उन्होने कुछ जमीन खरीदी, और फिर वह मकान और जमीन छोडकर मेरे पिता भी चले गये। मेरी जीजी ने मकान पक्का करवाया, कुछ और जमीन खरीदी। जमीन खरीदने की अभिलाषा लिये हुए वह भी चली गइ। मैं सोच रहा हूँ उस जमीन और मकान से मोह क्यो रखू।"

"तो फिर कब जाने का इरादा है?"

"आज दो तारीख है कल या परसो चल देना चाहता हूँ। जमीन मकान का इन्तजाम करने मे करीब पन्द्रह दिन लगेंगे, फिर वहाँ से हुआ एक हफ्ते के लिए इलाहाबाद ठहरने का इरादा है। डॉक्टर

मिलने की बड़ी अभिलाषा है, वह जब-तब पत्र लिखकर मेरा हाल पूछ लेते हैं।"

जगतप्रकाश जब महोना पहुँचा सुमेर के मानो प्राण मे प्राण आ गए। सुमेर ने मकान खोल दिया। जगतप्रकाश ने घूम फिरकर एक बार पूरा मकान देखा, कमरो मे धूल इकट्ठी हो गई थी और मरम्मत न होने के कारण जहा-तहा मकान का कच्चा हिस्सा गिरने लगा था। जगतप्रकाश ने अपना असबाब पीछे वाले अपने कमरे मे रखवाया जिसे अनुराधा ने कुछ साल पहले पक्का बनवा दिया था, और फिर अचानक ही उसकी आखो मे आँसू आ गए। अपने उस मकान मे वह अकेला खड़ा था। वह अनुराधा, जो इस मकान को भरा-पूरा देखने को इतनी लालायित थी, वह वहा नही थी। उसकी माता चली गई थी, उसके पिता चले गए थे, उसकी बहन चली गई थी—इसी मकान से! वे मरकर इस मकान से गये, लेकिन जगतप्रकाश उस मकान से जीवित ही जाएगा। कैसा मोह किसका मोह?

बाहर सहन मे एक दो साल का बच्चा खेल रहा था और एक स्त्री उस बच्चे के साथ थी। सुमेर ने उसे बताया कि उसने विवाह कर लिया है और वह बच्चा उसका है। वह और उसकी पत्नी दोनो मिलकर उसकी जमीन और उसके मकान की देखभाल करते है। वह बच्चा मैला-कुचैला और बद-शक्ल था, वह स्त्री भी मैली-कुचैली और बदशक्ल थी।

"यह क्या हालत बना रखी है तुमने, और तुम्हारे बच्चा ने!" जगतप्रकाश ने सुमेर को डाटा।

और सुमेर ने खीसे निपोरते हुए कहा, "जसी अपनी औकात है मालिक, तसी अपनी रहन सहन है।" यह कहकर उसने पन्द्रह सौ रुपये जगतप्रकाश के सामने रख दिए, "जब से मालिक गये हैं, लगान दै के इतना बचा है, वह सँभाल लें मालिक! हिसाब किताब तो लिखना आता नही—वह न मागे।"

"और तुम्हारी तनख्वाह?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"खाना-पीना तो सब इसी से निकलता रहा है, बाकी तो मालिक की मरजी हो वह दे दें।"

"अच्छा, तो यह बतलाओ कि तुम्हारे ऊपर मुसीबत क्या है?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"मालिक, जमींदार साहेब कहत हैं कि मालिक का कौनो पता नाहीं, तौन जमीन जब्त कर लेन की धमकी देत हैं। हम कहा कि मौरूसी जमीन आय तो मारन पर आमादा हो गए—कहन लागे कि पटटा का हमरे नाम आय! अब कहत हैं कि हम जुताई बुवाई न करी आगे से, जमीनका वारिस न होने से जमीन और मकान सब जब्त कर लेह।"

"हूँ! लेकिन अभी तक उन्होंने तुम्हारे ऊपर हाथ नहीं उठाया, ताज्जुब है!" जगतप्रकाश बोला।

"हाथ उठाने की हिम्मत नहीं है मालिक, गाँववाले हमारे साथ हैं। अगनू साह ने हम सलाह दी थी कि मालिक को बुला ला। अगनू साह यह जमीन और मकान खरीदने को तैयार हैं, सुबह खुद आएँगे बात करने। पाँच छः हज़ार तक वह दे देंगे।"

जगतप्रकाश ने रुपए उठाकर अपने पास रख लिए, "अच्छी बात है यहाँ से चलते समय मैं तुम्हारा हिसाब किताब कर दूँगा।"

"खाने का क्या प्रबंध होगा?" सुमेर ने पूछा।

"अपनी घरवाली से कह देना कि वह मेरे लिए भी रोटी-दाल बना ले।"

"हमारे हाथ की रोटी-दाल! नहीं मालिक हमार धरम न लेयी। पूरा साग बनाय देई रमदेइया, घी की पूड़ी।"

दूसरे दिन गाँव के कई आदमी जगतप्रकाश से मिलने आए और उनमें अधिकांश ने जमीन मकान खरीदने की बात चलाई। किसी भी आदमी में किसी तरह की आत्मीयता नहीं, किसी ने जगतप्रकाश की कुशल-क्षेम नहीं पूछी। सब अपनी-अपनी ही कहते रहे।

जुलाई का महीना समाप्त हो गया था और बरसात भी अब खत्म हो गई थी। उसने सब लोगों से अपनी जमीन और अपना मकान बेचने से इनकार कर दिया। और धीरे-धीरे लोगों ने उसके यहाँ आना जाना कम कर दिया। उसने अपने गाँव से आत्मीयता बढ़ाने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन वह असफल रहा। उसके मन में एक तरह की ऊब भर गई थी। उसने सुमेर को बुलाकर कहा, "मैं अब जाऊँगा यहाँ से सुमेर, और शायद अब मैं इस गाँव में न लौटूँगा। अगर लौटना भी हुआ तो बहुत दिनों के बाद।"

'लेकिन जमीन और मकान का तो कोई इन्तज़ाम किया नहीं है

मालिक ! जमीदार साहब से मिलके बातें कर लो, नही तो वह कोई बखेडा खड़ा कर देंगे।"

"तुम कल मेरे साथ बस्ती चलो, वहा तहसील मे चलकर मैं सब इन्तजाम कर दूगा।"

बस्ती पहुँचकर जगतप्रकाश ने जमीन सुमेर के नाम करा दी। सुमेर को जैसे विश्वास ही नही हो रहा था कि वह दस बीघे जमीन का स्वय मालिक बन गया है। जगतप्रकाश ने सुमेर से कहा, "उस मकान में तुम रहना, उसमें जो कुछ है वह आज से तुम्हारा हुआ।"

"अरे मालिक ! यह क्या कर रहे हो ? इस गाव से, घर जमीन से क्यो इस तरह ममता तोड रहे हो ?" सुमेर रो पडा।

उदास दृष्टि से जगतप्रकाश ने सुमेर को देखा 'सुमेर ! तुम्हारे बाप ने इस घर मे काम किया है, तुमने इस घर मे काम किया है—तुम हम लोगो के परिवार के आदमी बन गए थे और इसलिए मेरे आगे पीछे एक तुम ही बचे हो। रही जमीन की बात—तो जमीन भगवान् की है। हम तो उस जमीन से जन्मते हैं और फिर उसी मे समा जाते हैं। जो जमीन को जोतता है, जो उसकी सेवा करता है जमीन उसकी है।"

सुमेर की समझ मे कुछ भी नही आ रहा था, आश्चर्यचकित वह जगतप्रकाश को देख रहा था, और जगतप्रकाश कहता जा रहा था, तुम नही समझ रहे हो समझने की कोशिश करो। आज से तुम इस जमीन के मालिक हुए, क्योकि तुम इस जमीन को जोतते हो, तुम इस जमीन पर मेहनत करते हो। तुम्हारे बाद तुम्हारा लडका इस जमीन को जोतेगा। तुम्हे मेरा पता तो मालूम है, अगर कभी किसी तरह की तकलीफ हो तो तुम मुझे लिख देना।"

और जगतप्रकाश ने हमेशा के लिए महाना से अपना नाता तोड लिया।

जगतप्रकाश की ट्रेन जब बम्बई पहुँची, पाच बज गए थे, गाडी काफी लेट थी। घर पहुँचकर उसने देखा कि जमील पार्टी से वापस होकर चाय पी रहा है। जगतप्रकाश को देखते ही वह बोला, "आओ बरखुरदार ! चाय तैयार है। बडी देर लगा दी।"

अपना असबाब रखवाकर जगतप्रकाश जमील के पास आकर बैठ गया,

"इलाहाबाद मे ज्यादा रुकना पड गया, इसी म देर हो गइ। तुम्हारे बीवी-बच्चे अच्छी तरह हैं, लेकिन भाभी उदास हैं, उनका मन अब गाव म नही लगता।"

"साच रहा हूँ उन लोगो को यही लेता आऊँ," जमील बोला, "लेकिन यहाँ से निकलना ही नही होता। बम्बई मे यह कम्यूनल फीलिंग बहुत खराब हो रही है। मिस्टर जिना न जो डाइरेक्ट एक्शन का नारा लगाया है वह बडा खतरनाक है। कल सोलह अगस्त है—डाइरेक्ट एक्शन का दिन। लेकिन बम्बई मे कुछ न होने पाए हम लोग इसकी कोशिश कर रहे हैं।"

"अखबारो मे मैंने भी पढा है। लेकिन यह वाकई खतरनाक नारा है, आखिर होगा क्या ?"

"खून खराबा ! सिवा इसके और क्या हो सकता है ? दिल्ली मे राष्ट्रीय सरकार बन रही है जवाहरलाल नेहरू की तहत मे। मुस्लिम लीग ने इस सरकार मे शामिल होने से इन्कार कर दिया है, उसका नतीजा यह हुआ कि यह सरकार काग्रेस की होगी।"

एक उलझन के भाव से जगतप्रकाश ने कहा, "आखिर मिस्टर जिना चाहते क्या है ?"

और जमील ने उत्तर दिया, 'किसी की तहत म न रहना। मिस्टर जिना को इस सरकार म जवाहरलाल की मातहती करनी होगी। यही नही, इस हिदुस्तान में रहकर उन्हे जवाहरलाल की मातहती करनी पडेगी, जिना को यह मजूर नहीं। अपनी खुदी को हावी करने के लिए अब पाकिस्तान महज नारा न रहकर उनके लिए असलियत बन गया है।'

दूसरे दिन रात के समय रेडियो से खबर आइ कि कलकत्ता में भयानक साम्प्रदायिक दगा हो गया है, उस डाइरेक्ट एक्शन के फलस्वरूप। हजारो आदमी मार गए हैं और जख्मी हुए है। शहर में जगह-जगह आग लग दी गई है।

यह खबर सुनकर जमील ने एक ठडी सास ली, बगाल में मुस्लिम लीग की सरकार—और मुस्लिम लीग का डाइरेक्ट एक्शन। लेकिन दूसरी जगहों म इसका बदला भी लिया जाएगा। यह आग तो देश भर में भडकेगा।

जमील का कहना सच निकला। देश में साम्प्रदायिक दगो का एक व्यापक दौर आरम्भ हो गया।

केन्द्र मे जो काग्रेस की कामचलाऊ सरकार बनी थी, डेढ महीने के बाद उसमें मुस्लिम लीग भी सम्मिलित हो गई। अब यह सरकार सघर्षों का एक मच बन गई। देश मे जगह जगह साम्प्रदायिक दगे हो रहे थे—बम्बई, इलाहाबाद, ढाका, बिहार, नोआखाली और न जाने कितनी जगह। केन्द्रीय सरकार अपनी कशमकश मे उलझी हुई थी और देश मे भयानक अकाल की छाया मँडरा रही थी। और इस अकाल पर विजय पाने मे उसे सफलता अवश्य मिल रही थी। विदेशो से बतहाशा अनाज मँगवाया जा रहा था। देश को इस अकाल से बचाना होगा। और इधर यह साम्प्रदायिक विग्रह! यह सब क्या हो रहा है?

थका-सा जगतप्रकाश देश की इन घटनाओ की खबरें पढ रहा था और सुन रहा था। गाधी जिन्ना की कशमकश अब नेहरू-जिन्ना की कशमकश बन गई थी। अग्रेज के वश मे नही था कि वह हिन्दुस्तान को अपने काबू मे रख सके, इस देश को सम्हालेगा या बिगाडेगा हिन्दुस्तानी ही। पुरानी मान्यताएँ समाप्त हो गई थी। ब्रिटेन को अपनी ही आर्थिक अवस्था सम्हालनी थी। तेजी के साथ बिगडती हुई हिन्दुस्तान की आर्थिक अवस्था का उसके पास कोई निदान नही था।

विश्व-युद्ध मे अग्रेज सनिक लाखो की सख्या मे मरे थे, हिन्दुस्तान मे शान्ति की स्थापना के लिए तथा हिन्दुस्तान को गुलाम बनाए रखने के लिए हिन्दुस्तान मे अग्रेज सैनिको का आना असम्भव था। ब्रिटेन की मजदूर सरकार स्वय ब्रिटेन के पुनर्निर्माण मे व्यस्त थी, ब्रिटेन को बचाने के लिए उसे अपना साम्राज्य छोडना पडेगा। उसका साम्राज्य तैरते हुए आदमी के गले मे पत्थरो के बोझ के समान बन गया था।

भारत का सविधान बनाने के लिए दिल्ली मे कान्स्टीटुएण्ट एसेम्बली की बैठक हो रही थी, लेकिन मुस्लिमलीग ने इस असेम्बली का बहिष्कार कर रखा था। केन्द्रीय सरकार मे पग पग पर मुस्लिम लीग के मन्त्री बाधा उत्पन्न कर रहे थे, हिन्दुस्तानी सरकार अपने अन्दरूनी मनभेदो के कारण असफल हो रही थी।

और २० जनवरी, १९४७ को ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ने घोषणा की कि जून, १९४८ के पहले ही ब्रिटेन भारत को स्वतन्त्र कर देगा—हर हालत में। इस घोषणा के साथ ही हिन्दुस्तान के वाइसराय लार्ड वेवल के स्थान पर लार्ड माउन्टबेटन को वाइसराय नियुक्त किया गया।

इतिहास का एक नया पृष्ठ आरम्भ हुआ।

२६

एक टूटा हुआ व्यक्ति बैठा था जगतप्रकाश के सामने जिसकी आँखें बुझी-बुझी थीं, जिसके मुख की श्री जाती रही थी और फिर भी जो मुस्करा रहा था।

कुल्सुम चाय बना रही थी और मालती कह रही थी, "इस त्रिभुवन को आखिर कानपुर छोडना ही पडा। जानती हो कुल्सुम, बापू ने जो मिल मेरे लिए ले दी थी उसे और मशीन लगाकर बढा लिया गया है और त्रिभुवन उस मिल की देखभाल करने लगा है। मैरीन ड्राइव की नरसी ठाकुरसी बिल्डिंग मे दूसरे माले पर पाच कमरो वाला एक फ्लैट खाली हो रहा है अगले महीने से। बीस हजार की पगडी है उसकी फर्नीचर के साथ, तो बापू ने उसे ले दिया है मेरे लिए। उनके घर मे कब तक रहेगे हम लोग ?"

कुल्सुम ने चाय का प्याला त्रिभुवन को देते हुए उससे पूछा, "क्यो त्रिभुवन ! तुम्हारे बापू का मकान तो है।"

त्रिभुवन बोल उठा, "मालती को वह मकान पसन्द नहीं। भूलेश्वर की घनी आबादी—वहाँ इसका दम घुटता है।"

त्रिभुवन जो कुछ कह रहा था, जो कुछ कर रहा था वह सब एक मशीन की भाति। कुलसुम ने अब मालती से पूछा, "लेकिन इस त्रिभुवन की दूसरी बीवी, उसका क्या इतजाम होगा ? वह कहा रहेगी ?"

मालती मुसकराई, लेकिन उसकी मुसकराहट न जाने क्यो जगतप्रकाश को बडी कुरूप दिखी, "यह सब त्रिभुवन से पूछो।"

और त्रिभुवन ने तत्काल उत्तर दिया, "वह बम्बई नही आई, शायद वह कानपुर मे रहेगी।"

मालती की आवाज़ एकाएक कड़ी हो गई, "कानपुर में रहेगी, बनारस में रहेगी या और कहीं रहेगी—त्रिभुवन को इसका पता नहीं है क्योंकि त्रिभुवन से उसका सम्बन्ध टूट गया है हमेशा के लिए। उसका बाप बम्बई आया था, मैंने उस औरत के नाम पच्चीस हजार रुपया कर दिया है और उसके बाप को दस हज़ार रुपया देकर राजीनामा कर लिया है। राजीनामे के मुताबिक वह अपनी दूसरी शादी कर सकती है। त्रिभुवन ने उस पर से अपना अधिकार छोड़ दिया है।"

आश्चर्य से कुलसुम ने त्रिभुवन को देखा, "क्या त्रिभुवन, यह ठीक है?"

और इस बार भी त्रिभुवन ने मशीन की भांति कहा, "मालती ने जो कुछ किया वह ठीक किया।"

कितनी बुरी तरह टूट गया है यह त्रिभुवन—जगतप्रकाश एकटक त्रिभुवन के चेहरे को देख रहा था। कहीं कोई भावना नहीं, कहीं किसी तरह का हर्ष विषाद नहीं।

इतने में परवेज़ ऑफिस से आ गया। कार से उतरकर वह बरामदे की ओर बढ़ा और बोल उठा, 'अरे त्रिभुवन भाई तुम! अच्छा, मालती बहन भी साथ में हैं। सुना था त्रिभुवन भाई बम्बई लौट आया है अपनी दूसरी बीवी को छोड़कर। ठीक खबर है क्या?"

कुलसुम ने परवेज़ के लिए चाय का प्याला बनाते हुए कहा, "पहले चाय पियो! आज बड़ी देर कर दी है तुमने—डैडी नहीं आए तुम्हारे साथ?"

"डैडी हुरमोमजी ट्रस्ट की मीटिंग में चले गए, उन्हें वहाँ छोड़कर आ रहा हूँ, इसी में मुझे देर हो गई।" और परवेज़ चाय पीने लगा।

जगतप्रकाश सोच रहा था—यह त्रिभुवन इतनी बुरी तरह टूट गया है, यह क्या? और तभी जैसे उसके अन्दर से ही किसी ने कहा—दुनिया में कोई आदमी ऐसा नहीं है जो टूट न सके। यह पैसा—यह हरेक आदमी को तोड़ सकता है यह पैसा आदमी को बनाता भी तो है। अभी-अभी मालती जो कुछ कह रही थी उसमें उसका पैसा बोल रहा था। त्रिभुवन ने बनने की कोशिश की थी, लेकिन भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया था, और मालती के पैसे ने त्रिभुवन को तोड़कर रख दिया। जगतप्रकाश ने अब मालती को देखा।

मालती हँस रही थी, "परवेज ! हम लोगों ने मैरीन ड्राइव पर एक शानदार फ्लैट ले लिया है। पूरी तरह से फर्निश्ड। बीस हजार पगडी दी है उस फ्लैट के लिए बापू ने। सिंगापुर से मेरा भाई वापस आ गया है, कराची से दूसरा भाई वापस आ रहा है। कराची का कारबार बन्द करना पडेगा बापू को, सुना है वहाँ पाकिस्तान बन रहा है। कल ही बापू कराची से वापस लौटे हैं, हिन्दू-मुसलमानों की दुश्मनी बहुत बढ गई है।"

चाय पीकर परवेज बोला, "डैडी की मीटिंग खत्म हो गई होगी, कार भिजवा देने को कहा था। ड्राइवर कहाँ है ?"

"वह तो आज छुट्टी ले गया है, मैं चली जाती हूँ।"

"नहीं, मैं जा रहा हूँ।" परवेज उठ खडा हुआ, "चलते हो त्रिभुवन ! तुम्हारा फ्लैट भी देख लूँ रास्ते में।"

ऐसा दिखता है कि त्रिभुवन भी वहाँ से जाना चाहता था। उसने उठते हुए कहा, "चलो।"

परवेज और त्रिभुवन के जाने के बाद मालती बोली, "बडा कमीना है यह त्रिभुवन ! अपनी दूसरी बीवी को यह गुजारा भर देना चाहता था, लेकिन मैंने उसे पचीस हजार रुपया देकर राजीनामा लिखवा लिया।" और मालती के मुख पर उसके अहम् की, उसके संतोष की उसकी विजय की मुस्कराहट खेल रही थी। वह मुस्कराहट कितनी कुरूप थी ! स्वयं मालती भी जगतप्रकाश को भयानक रूप से कुरूप दिख रही थी।

शाम की डाक आ गई थी, एक पत्र कुलसुम ने उठाया, जगतप्रकाश को लगा कि लिफाफे पर जसवन्त की लिखावट है। बडी व्यग्रता के साथ कुलसुम ने वह पत्र खोला, उसे आदि से अन्त तक पढकर उसने एक ठंडी सांस ली, "बेचारा जसवन्त ! बडी मुसीबत में फँसा हुआ है।"

"क्या हुआ ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"लाला देवराज लाहौर से हटने का नाम नहीं लेते और लाहौर में हिन्दू मुस्लिम दंगे हो रहे हैं, किसी की जान महफूज नहीं है वहाँ पर। शर्मिष्ठा अपने पिता को वहाँ अकेला छोडना नहीं चाहती, साल भर पहले जब उसकी माँ की मौत हुई थी, तब से वह अपने बाप को छोड ही नहीं रही है। जसवन्त ने मुझे लिखा है कि मैं लाहौर आकर उसे समझाऊँ, वह अगर

अपने बाप पर ज़ोर डाले तो लाला देवराज भी लाहौर छोड़ दें।"

जगतप्रकाश ने कुल्सुम की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ रुककर कुल्सुम बोली, "जब से पहले जो वाइसराय ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पन्द्रह अगस्त तक आज़ादी दे दी जाएगी, उसमें उलझन और भी बढ़ गई है। यह तय है कि हिन्दुस्तान का बँटवारा होकर रहेगा, लेकिन इस बँटवारे की शक्ल क्या होगी, यह नहीं कहा जा सकता। आज आठ जून है, आठ जुलाई एक, आठ अगस्त दो, और सात दिन अगस्त के, इसके माने हुए सवा दो महीने। क्या होने वाला है?"

"इन घृणा और रक्तपात के दौर का अन्त जो इतने दिनों से चल रहा है।" जगतप्रकाश बोला।

"मुमकिन है तुम्हारी ही बात ठीक हो, लेकिन लगता ऐसा है कि अभी और ज़्यादा खून-खराबा होगा। जसवन्त की प्राब्लेम वैसी-की-वैसी है। लाहौर पाकिस्तान में जाएगा, यह तय है।" फिर कुछ रुककर उसने झटके के साथ कहा, "जगत! मैं सोचती हूँ कि मुझे लाहौर जाना ही पड़ेगा। शर्मिष्ठा और लाला देवराज का क्या होगा?"

अब मालती बोली, "तुम क्या दूसरे लोगों के बीच में पड़ रही हो? जसवन्त और शर्मिष्ठा से तुम्हें क्या लेना-देना? अगर जसवन्त अपनी पत्नी को नहीं समझा सकता तो तुम उसे क्या समझा सकोगी?"

कुल्सुम ने मुस्कराते हुए कहा, "सब औरतें तो मालती नहीं होतीं दुनिया में। मैं न मालती की भाँति कठोर और हृदयहीन बन सकती हूँ और न शर्मिष्ठा-मालती की तरह ज़िद्दी हूँ।"

कुल्सुम के इस कथन की कटुता पर उसकी मुस्कराहट का कितना सुन्दर आवरण था—जगतप्रकाश को आश्चर्य हो रहा था। मालती ने खिसियाहट के स्वर में कहा, "मैं तो तुम्हारे भले के लिए ही यह कह रही थी। कराची, लाहौर—सभी जगह हिंसा की भट्ठी जल रही है—बापू का यही कहना है।"

कुल्सुम ने मालती की बात पर ध्यान ही नहीं दिया, उसने जगतप्रकाश से कहा, 'तुम मेरे साथ चल सकोगे? कल सुबह के प्लेन से ही मैं चलना चाहती हूँ—हमें जल्दी करनी है।"

"मुझे यहाँ कोई काम नहीं है।" जगतप्रकाश बोला।

दूसरे दिन ग्यारह बजे सुबह जगतप्रकाश कुलसुम के साथ दिल्ली पहुँच गया। जसवन्त दिल्ली में ही था, इन दोनों को देखकर जैसे उसे बहुत अधिक सान्त्वना मिली। उसने कुलसुम से कहा, "बड़ा अच्छा हुआ जो तुम आ गई! हम लोग आज रात को ही फ्रंटियरमेल से लाहौर के लिए रवाना हो जाएँ।"

दूसरे दिन सुबह के समय सब लोग लाहौर पहुँच गए। जब ये लोग स्टेशन के बाहर निकले, इन्होंने देखा कि चारों ओर शान्ति छाई हुई है, सब काम-काज बदस्तूर चल रहा है। लेकिन कहीं कोई घुटन-सी भरी हुई है वातावरण में, जगतप्रकाश को यह अनुभव हो रहा था। चारों ओर एक अनिश्चितता का वातावरण, एक दूसरे पर अविश्वास, एक दूसरे से घृणा।

लाला देवराज ने सब लोगों का स्वागत किया। दोपहर के समय खाना खाकर सब लोग ड्राइंग-रूम में इकट्ठे हुए। कुलसुम ने लाला देवराज से कहा, "लालाजी! हम लोग आपको अपने साथ दिल्ली ले चलने को आए हैं।"

लाला देवराज ने उदासी के साथ सिर हिलाया, "नहीं बेटी—इस आखिरी फैसले के वक्त मैं लाहौर छोड़कर नहीं भागूँगा। यह लाहौर मेरे बाप-दादों का शहर है, यहाँ मैं पैदा हुआ, यहाँ मेरी जड़ें हैं, मेरी जमीन-जायदाद है।"

"लेकिन यहाँ आपकी जान को खतरा हो सकता है।" कुलसुम बोली।

"जान का खतरा दुनिया में कहाँ नहीं है बेटी, लेकिन लाहौर में लाला देवराज पर कोई आँच नहीं आएगी। फिर अब यहाँ दंगे भी करीब-करीब खत्म हो चुके हैं।"

"लेकिन लालाजी! लाहौर तो पाकिस्तान में चला जाएगा, यह करीब-करीब तै हो चुका है।" इस बार जसवन्त बोला।

"मैं जानता हूँ, और मैं पाकिस्तान का नागरिक बन जाऊँगा। सदियों से हम मुसलमानों की हुकूमत में रहे हैं अब भी तो पंजाब में मुसलमानों की सरकार है। मैं अपनी जमीन जायदाद तो यहाँ से नहीं उठा ले जा सकता। हिन्दुस्तान आज़ाद हो जाए, मुल्क का बँटवारा हो जाए और सब जगह

शान्ति छा जाए, तभी मैं लाहौर छोड़ूँगा।"

"अगर आप हम लोगों के साथ इसी वक्त दिल्ली चलें तो क्या कोई हर्ज है ?" जगतप्रकाश ने पूछा।

"हां ! हमारे घर की रक्षा कौन करेगा ?" और यह कहते कहते लाला देवराज थोड़ा-सा तन गए, "मेरे यहां रहते किसी की हिम्मत नहीं कि लाला देवराज की कोठी की तरफ कोई आँख उठा सके। बीस नौकर हैं मेरे, हथियारों से लैस। लेकिन इस सब की नौबत नहीं आएगी। मैं तब तक लाहौर न छोड़ूँगा जब तक समस्या न हो जाए।"

सब लोग वहां दो दिन रुके। शर्मिष्ठा लाला देवराज को छोड़ने को राजी नहीं हुई, उसे कुल्सुम ने कितना ही समझाया। तीसरे दिन जसवन्त, जगतप्रकाश और कुलसुम दिल्ली वापस चले गए।

दिल्ली पहुँचकर जगतप्रकाश ने कुलसुम से कहा, "मैं सोच रहा हूँ, कुछ दिनों के लिए मैं दिल्ली ठहर जाऊँ।"

"मैं भी तुमसे यही कहना चाहती थी," कुलसुम बोली, "जसवन्त को इन दिनों एक साथी की सख्त जरूरत है। क्या जसवन्त, क्या खयाल है तुम्हारा ?"

"अगर जगतप्रकाश यहां रुक सकें तो अच्छा ही हो। मेरी तो अक्ल काम नहीं करती।" जसवन्त ने एक ठंडी सांस भरकर कहा।

कुल्सुम बम्बई चली गई और जगतप्रकाश दिल्ली में रुक गया।

तैयारी हो रही थी देश को दो हिस्सों में बांटने की, हिंदुस्तान और पाकिस्तान ! इस बँटवारे पर जिन्ना अड़े हुए थे, मुस्लिम लीग अड़ी हुई थी। लेकिन इस बँटवारे का रूप क्या होगा ? पाकिस्तान वहीं बनेगा जहाँ मुसलमान बहुसंख्यक हैं, मुस्लिम लीग की पूरे बंगाल, पूरे आसाम, पूरे पंजाब की मांग गलत थी—और पूर्व एवं पश्चिमी पाकिस्तान को मिलाने के लिए एक गलियारा और ! जो उचित है वही मिलेगा मुसलमानों को अंग्रेज़ों जब हिंदुस्तान में रहना ही नहीं है तब वह मुसलमानों का पक्ष क्या लें ?

सन् १९४१ की जनगणना के अनुसार आसाम का सिलहट जिला ही एक ऐसा था जहां मुसलमान बहुसंख्यक थे। बंगाल का पूर्वी भाग मुस्लिम बहुसंख्यक था, पंजाब का पश्चिमी भाग ऐसा था। इन दो प्रान्तों में

मुस्लिम विधायकों ने पाकिस्तान में जाना स्वीकार किया था। सिलहट में जनमतगणना की गई, यहाँ के मुसलमानों ने भी पाकिस्तान में जाना स्वीकार किया। फैसला हो रहा था—सीमाप्रान्त में कांग्रेसी सरकार थी, वह पाकिस्तान नहीं चाहती थी, लेकिन जनमतगणना में वहाँ के मुसलमानों ने पाकिस्तान में जाना स्वीकार किया। पाकिस्तान की एक अलग केन्द्रीय असेम्बली बन गई थी। सीमा-निर्धारण के लिए एक अलग कमीशन बैठ गया था।

देशी राजों की समस्या का हल हिन्दुस्तान के वाइसराय लार्ड माउंटबेटन ने स्वयं निकाल लिया था। ब्रिटेन सत्ता हस्तान्तरित करेगा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को, देशी नरेशों को हिन्दुस्तान अथवा पाकिस्तान के साथ समझौता करना होगा।

और जो निर्णय ब्रिटिश सरकार ने किया उससे सन्तोष किसी को नहीं था।

कांग्रेस असन्तुष्ट थी, क्योंकि देश का बँटवारा हो रहा था। न जाने कितने मुसलमान देश का बँटवारा नहीं चाहते थे, लेकिन पिछले कई वर्षों से घृणा और हत्या का जो दौर मुस्लिम लीग ने ब्रिटिश शासकों की शै पाकर चलाया, उससे यह साफ हो गया कि इस अमानुषिक नर-संहार को अब सिर्फ़ देश का बँटवारा ही रोक सकता है।

मुस्लिम लीग को घोर असन्तोष था, क्योंकि जो पाकिस्तान उसे मिल रहा था वह पंगु था। आधा बंगाल—अविकसित और कृषि प्रधान, आधा पंजाब, वह भी अविकसित और कृषि प्रधान। सिन्ध और सीमाप्रान्त—वीरान और उजाड़ इलाके। जो कुछ मिला वह जिन्ना को जबरदस्ती स्वीकार करना पड़ा। उसने तो जमील के शब्दों के अनुसार पाकिस्तान का नारा भर लगाया था, पाकिस्तान की वास्तविकता पर उसने कभी ध्यान ही नहीं दिया था, उसे असम्भव और अव्यावहारिक समझकर। और असम्भावना अब सत्य बन गई थी—उसे स्वीकार करना ही होगा।

भारत का ब्रिटिश वाइसराय स्वयं चक्कर में था, किस तरह व्यवस्था कायम रखी जाएगी भविष्य में।

पन्द्रह अगस्त—दिन प्रतिदिन यह तारीख नजदीक आती जा रही थी।

साम्प्रदायिक दगो मे कमी आ रही थी, जिससे लगता था कि यह बँटवारा ही एकमात्र उपाय था हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को शान्त करने का। इस बँटवारे के बाद यह हिन्दू मुस्लिम समस्या हमेशा के लिए शान्त हो जाएगी। लेकिन यह बँटवारा कैसे होगा ?

महात्मा गाधी की आवाज इस बँटवारे के खिलाफ उठ रही थी—लेकिन राजगोपालाचारी फार्मूले को स्वीकार करके उन्होंने सन् १९४४ मे ही बँटवारे के सिद्धान्त पर अपनी सहमति प्रदान कर दी थी।

और जो वास्तविक समस्या थी वह सिक्खो की थी।

पजाब की यह वीर और लडाकू जाति, यह पूरे पजाब म फैली हुई थी। इस विभाजन से सिक्खो की आधी सख्या हिन्दुस्तान म चली आएगी, आधी पाकिस्तान म चली जाएगी।

यह सिक्ख जाति, जो हिन्दू जाति का ही एक भाग थी। यह जाति दो तीन सदी पहले मुसल्मानो के साम्प्रदायिक अत्याचारो से लोहा लेने के लिए बनी थी—और इस जाति ने अपना एक नया मत भी चलाया। इस जाति ने मुसलमानो से सफलतापूर्वक लोहा लिया भी, अग्रेजो के हाथ म पजाब के आने के पहले पजाब पर सिक्खो ने राज्य किया था। क्या इस सिक्ख जाति को अब मुसल्मानो की गुलामी करनी पडेगी ? पजाब का बँटवारा सारा अधिक सिक्ख जाति के विरुद्ध था—एक बार फिर मुसलमानो से लोहा लेने का नारे लग रहे थे—सिक्खो म। भयानक आशका का वातावरण था। लेकिन सिक्खो म नेतृत्व की कमजोरी थी। फिर आज की परिस्थितियाँ बदल हुई हैं।

सत्ता हस्तान्तरित होने की तिथि नजदीक आती आ रही थी, और सत्ता हस्तान्तरित होने के दो चार दिन पहले ही पजाब म साम्प्रदायिक हत्याकाण्ड आरम्भ हो गया। और ऊपर से नव-युग का [illegible] भरा जा रहा था। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—[illegible] जगह स्वातन्त्र्य दिवस मनाए जा रहे थे। चौदह अगस्त को पाकिस्तान स्वतन्त्र हुआ, [illegible] अगस्त को हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हुआ।

पजाब के प्रथम गवनर जनरल मिस्टर जिन्ना बने, जवाहरलाल [illegible] स्तान के प्रथम प्रधान मन्त्री बने। और महात्मा गांधी इस सत्ता ह[illegible]

के समय दिल्ली मे नही थे। पन्द्रह अगस्त की शाम को जब जगतप्रकाश और जसवन्त स्वतन्त्रता समारोहो से घर वापस लौटे, जसवन्त बहुत उद्विग्न और चिंतित था। उसने जगतप्रकाश से कहा, "आज महात्मा गाधी स्वतन्त्रता के उत्सव मे नही थे, यह बहुत बडा अपशकुन है।"

जगतप्रकाश ने कुछ सोचकर कहा, "शकुन और अपशकुन तो मैं नही जानता, लेकिन मुझे ऐसा लगता है आज महात्मा गाधी की पराजय का दिवस है।"

जसवन्त ने आश्चय से जगतप्रकाश को देखा, "क्या कहा ? आज महात्मा गाधी की पराजय का दिवस है! देश की स्वतन्त्रता तो महात्मा गाधी के प्रयत्ना से मिली है।"

"शायद हा, शायद नही!" जगतप्रकाश के अन्दर सचित अनुभवो ने ज्ञान और सत्य का एक ऐसा रूप ले लिया था जिस पर जगतप्रकाश को स्वय आश्चय हो रहा था, "नही, यह स्वतन्त्रता हमे गाधी ने नही दिलाई है, यह स्वतन्त्रता हम दिलाई है हिटलर ने, यह स्वतन्त्रता हम दिलाई है सुभाष ने! ब्रिटेन बेतरह कमजोर और तबाह हो गया है। हिटलर ने स्वय मरते मरते ब्रिटन को बेतरह तोड दिया है। वह स्वतन्त्रता हमे दिलाई है सुभाष ने जिसने हिन्दुस्तानी सेना और नौ-सेना म हिंसा और विद्रोह के बीज बो दिए थे, जिसने स्वय मरकर देश को एक नया जीवन प्रदान किया। और यह हिन्दुस्तान का बँटवारा! गाधी द्वारा इस बटवारे का समस्त विरोध अथहीन हो जाता है, क्योकि सन् १९४४ मे राजगोपालाचारी के फामूले को स्वीकार करके उन्होने देश के बँटवारे के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया था। मैं फिर कहता हूँ कि यह गाधी की पराजय का दिवस है!"

जसवन्त बोला, "नही, ऐसा मत कहो, गाधी ने हमे नई चेतना दी है।"

जगतप्रकाश का स्वर अब धीमा पड गया, एक ठडी सास लेकर उसने कहा, "गाधी ने हम नई चेतना दी, गाधी महात्मा है, गाधी सत्य और अहिंसा के पुजारी हैं, गाधी का जीवन त्याग और निष्ठा का जीवन है। इससे कोई इन्कार नही कर सकता। सब-कुछ ठीक है, लेकिन गाधी मनुष्य हैं, और मनुष्य होने के नाते गाधी अडिग नही हैं, गाधी गलतिया कर सकते

मानो नरक उतर आया हो उस भूमि पर। जगतप्रकाश यह सब देख रहा था, लेकिन जसवन्त को जग इस सबकी कोई खबर ही नहीं थी, वह अधाधुन्ध अपनी कार ड्राइव कर रहा था। जिस समय वह अमृतसर पहुँचा, पौ फट रही थी।

शहर के बाहर उसे सेना का जमाव मिला—शहर के अन्दर कई स्थानों में धुँआ उठ रहा था। उसकी कार रोक दी गई। किसी ने पंजाबी में जसवन्त से कहा, 'अरे जसवन्त! तू यहाँ कैसे? शहर जा रहा है क्या? वहाँ नरक की भट्ठी जल रही है।"

जसवन्त ने कर्नल बालीराम को पहचान लिया, बालीराम जसवन्त का सहपाठी रहा था। उसने कहा, "अमृतसर नहीं लाहौर जा रहा हूँ।"

"जान देने के लिए लाहौर जा रहा है?" कर्नल बालीराम बोला "ऐसी क्या मुसीबत आ गई जो लाहौर जा रहा है?"

जसवन्त ने बालीराम को सारी स्थिति बतलाई। बालीराम गम्भीर हो गया, कुछ सोचकर उसने कहा, "यहाँ से लाहौर के लिए ट्रेनों का आना-जाना बन्द हो गया है। अभी तक तीन ट्रेनों के मुसाफिर काट डाले गए हैं। अच्छा मैं तेरे साथ तेरी कार पर चलता हूँ, फौज वालों से लोग डरते हैं। दो जवानों को अपने साथ लिए लेता हूँ मशीनगनों के साथ। और देख, कहीं अपनी कार रोकना नहीं, चाहे जो तुझे रोके—जिन्दगी-मौत का मामला है।'

कर्नल बालीराम और दो सिपाही कार पर बैठ गए जसवन्त लाहौर की ओर रवाना हो गया।

जिस समय जसवन्त अपनी कोठी पर पहुँचा, वह अवसन्न-सा रह गया। कोठी जल रही थी और सड़क सुनसान पड़ी थी। आग बुझाने वाले तक वहाँ नहीं थे। वह कार से उतरकर फाटक में प्रवेश करने ही वाला था कि किसी ने आवाज दी, "फाटक के अन्दर मत जाना! अरे जसवन्त साहेब—आप!'

कुछ आदमियों की भीड़ आती हुई दिखी कुछ दूर से। बालीराम ने घसीटकर जसवन्त को कार पर बिठा लिया। सिपाहियों ने अपनी मशीनगनें ठीक कर लीं और भीड़ कुछ पीछे हटकर रुक गई। एक आदमी जसवन्त की ओर बढ़ा, वह गजनफर था, लाला देवराज का मुख्तार। उसने

और अपने बच्चे की तलाश मे। लेकिन कहीं पता नही चल रहा था, कौन किसकी सुनता है, कौन किसकी परवाह करता है ?

कैसी घृणा है यह—कैसी हिंसा है यह ? मनुष्यता मर गई हो जैसे ! पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के नेताओ ने आश्वासन दिए थे कि उनके देशो मे अल्पसख्यको की रक्षा की जाएगी। लेकिन इन नेताओ ने देश के टुकडे कर दिए थे, मनुष्य के टुकडे होना वह कैसे रोक सकते थे ?

और महात्मा गाधी ! बडी पीडा थी उनके हृदय म। क्या महात्मा गाधी ने कभी कल्पना की थी कि देश के बँटवारे का इतना भयकर परिणाम होगा ? महात्मा गाधी कलकत्ता म थे, बगाल का भी तो बँटवारा हुआ था। महात्मा गाधी के प्रभाव से बगाल इस अमानुषिक हत्याकाण्ड और नर सहार से बचा रहा। लेकिन पजाब जल रहा था, वहा हत्याकाण्ड हो रहे थे।

दिन का उदय होता था और जसवन्त की दौड धूप आरम्भ हो जाती थी अपनी पत्नी और अपने बच्चे को ढूढने के लिए। दिन डूब जाता था, अधकार और निराशा से भरी रात आ जाती थी, और फिर दूसरे दिन की प्रतीक्षा करनी पडती थी। एक पखवारा—नारकीय रक्तपात और हत्याकाण्ड का एक पखवारा बीत गया। हिन्दू शरणार्थी अब दिल्ली मे आ रहे थे, अमानुषिक अत्याचारो की कहानी लिए हुए। इन लोगो के घर-बार लुट गए थे, इनके कपडे-लत्ते, बरतन-गहने सब लुट गए थे। उनके न जाने कितने सगे-सम्बन्धी, परिवार के लोग मार डाले गए थे। बिना मा के बच्चे, विधवाएँ, बूढे—सब तरह के लोग। सरकार को इनकी व्यवस्था करनी पडेगी। इन राजनीतिक नेताओ की सत्ता और शक्ति की भूख ने करोडो आदमिया की सम्पत्ति को, करोडो आदमिया के परिवारो को खा डाला था। इन लोगो की भूख की कितनी बडी कीमत चुकानी पडी इस अभागे देश को !

सितम्बर का पहला सप्ताह आ गया था और शरणार्थियो के कैम्प खुलना आरम्भ हो गए थे। एक कैम्प दिल्ली के निकट कुरुक्षेत्र मे खुल गया था और वहाँ तम्बुओ का एक शहर बसाया जा रहा था। लाखो आदमियो के रहने की व्यवस्था, उनके खाने-पीने की व्यवस्था ! बडा कठिन काम था यह। जगनप्रकाश ने जसवन्त से कहा, 'सुना है कुरुक्षेत्र के कैम्प मे शरणार्थियों का आना आरम्भ हो गया है। वहा काम करने वालो की जरूरत

है। मैं सोच रहा हूँ वहा चलकर हम लोग काम करें, शायद वहाँ शर्मिष्ठा का पता लग जाए।"

उदास भाव से जसवन्त ने सिर हिलाया, "नहीं, वहा शर्मिष्ठा क्या जाएगी भला, दिल्ली में अपनी कोठी होते हुए! वह अगर हिन्दुस्तान आ गई होती तो यहा पहुँच जाती। तुम जाओ, मैं यहा सरकारी क्षेत्रों में, शर्मिष्ठा का पता लगाने का प्रयत्न करूँगा।"

जगतप्रकाश बोला, "मैं आज वहा जा रहा हूँ। देखूगा वहाँ की क्या हालत है। कुछ सक्रिय काम तो करना होगा वहा। आज रात या कल सुबह मैं वहा से लौटकर वहा की हालत बतलाऊँगा तुम्हे।"

कुरुक्षेत्र पहुँचकर जगतप्रकाश ने वहा की हालत देखी। बहुत थोड़े-से समय मे वहा दस हजार आदमियो का टिकान की व्यवस्था कर दी गई थी। लेकिन क्या यह व्यवस्था काफी होगी? अभी तो शरणार्थियो का आना आरम्भ ही हुआ था, और कैम्प आधे के करीब भर गया था। देश के बँटवारे के साथ जनसख्या के स्थान-परिवर्तन के सिद्धान्त को भी तो माना गया था। पश्चिमी पजाब से साठ लाख हिन्दुओ और सिक्खो को पूर्वी पजाब मे आना था। न जाने कितने कैम्प खोलने होंगे यहा इन लोगों का बसाने के पहले! अभी तो केवल वे लोग आ पाए थे जिन्हे सेना पाकिस्तान से कत्ल होने से बचा लाई थी अपने सरक्षण मे।

जगतप्रकाश खेमो की उस बस्ती का चक्कर लगा रहा था कि एक जगह वह एकाएक ठिठककर खडा हो गया। क्या उसकी आँखो को धोखा तो नही हुआ? एक बडे-से टट के बाहर जमीन पर फटे कपडे पहने मैली सी एक स्त्री गुम-सुम बैठी आसमान की ओर देख रही थी, उसकी बगल मे एक छ-सात वरस का लडका मुँह लटकाए खडा था।

वह स्त्री जडवत् बैठी रही और वह लडका सहमा-सा थोडी दूर पर जमीन पर बैठ गया। जगतप्रकाश सोच रहा था—क्या वह स्त्री शर्मिष्ठा तो नही है? वह अब उस स्त्री के पास गया, उसने उस स्त्री से पूछा, "क्या आपका नाम शर्मिष्ठा देवी तो नही है?"

'शर्मिष्ठा' नाम सुनकर वह स्त्री चौंक उठी, उसने जगतप्रकाश को अजीब सहमी हुई निगाह से देखा लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

लडका अब जमीन से उठकर उस स्त्री की बगल मे खडा हो गया ।

इस बीच टेण्ट मे निकलकर दो वृद्धाएँ आ गइ । एक ने जगतप्रकाश से पूछा, "इसे तुम पहचानते हो क्या ?"

"पहचान तो रहा हूँ कुछ-कुछ । पाच साल पहले शायद इन्हे देखा था । क्या इनका नाम शर्मिष्ठा है ?"

दूसरी ने कहा, "यह तो अपना नाम ही भूल गई है । न इसे अपने पिता का नाम याद है, न इसे अपने मालिक का नाम याद है । लडके को यह तिलक कहती है ।"

जगतप्रकाश अब उस स्त्री की ओर घूमा, "आप लाहौर के लाला देवराज की लडकी शर्मिष्ठा तो नही है ? आपके पति का नाम जसवन्त कपूर है ।"

एकाएक वह स्त्री चीख पडी और बेहोश हो गई । उसके साथ वाला लडका रोने लगा ।

जगतप्रकाश ने पास खडी वृद्धा से कहा, "यह मेरे मित्र जसवन्त कपूर की पत्नी हैं, इनके पिता लाला देवराज लाहौर मे मारे गए । आप जरा इन्हे सँभालिए, मैं इन्हे दिल्ली ले जाने का इन्तजाम करता हूँ—इनकी कोठी दिल्ली म है और इनके पति इन्ह ढूढ ढूढकर परेशान हो रहे है ।"

जगतप्रकाश ने तार द्वारा जसवन्त को सूचना दी कि शर्मिष्ठा उसे मिल गई है और रात को ग्यारह बजे जसवन्त अपनी कार लेकर वहाँ पहुँच गया । जसवन्त को देखते ही शर्मिष्ठा उससे लिपटकर चीखने लगी, "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ ! लालाजी को वे लोग मारे डाल रहे हैं । तिलक को बचाओ, मुझे बचाओ !"

उसी रात जसवन्त और जगतप्रकाश शर्मिष्ठा तथा तिलक को लेकर दिल्ली के लिए रवाना हो गए ।

जसवन्त के चेहरे का धुधलापन अब जाता रहा लेकिन शर्मिष्ठा घर आकर भी अपने आपे को नही पा सकी । डरी हुई और सहमी हुई, वह अपने घर का जैसे पहचान ही नही पा रही हो । जसवन्त न डाक्टर को बुलाकर शर्मिष्ठा को दिखाया । डॉक्टर ने शर्मिष्ठा की परीक्षा करके कहा, "बहुत बडा मानसिक आघात लगा है इन्ह, सँभालने म कुछ वक्त लगेगा । इन्ह

शान्ति की आवश्यकता है, सहानुभूति की आवश्यकता है। वैसे मैं दवा लिखे देता हूँ, लेकिन इनका सबसे बड़ा इलाज है मानसिक आराम।"

लेकिन दिल्ली मे शान्ति कहां? आठ-सितम्बर को दिल्ली म ही हत्या काण्ड आरम्भ हो गया। पश्चिमी पजाब के हिंदुओ की हत्याओ का बदला चुकाया जा रहा था दिल्ली के निरीह, बेगुनाह और असहाय मुसलमानो की हत्याओ से। नौकरो से खबर शर्मिष्ठा को भी मिलती थी और वह पागलो की तरह चीखने लगती थी। उसी रात जगतप्रकाश ने ट्रक काल करके सारी स्थिति बतला दी। कुसुम ने कहा कि वह सुबह के प्लेन से ही दिल्ली पहुँच रही है।

और तीसरे दिन सुबह के समय फ्रटियर मेल म कुसुम शर्मिष्ठा, तिलक तथा जसवत और जगतप्रकाश को साथ लेकर बम्बई के लिए रवाना हो गई।

जसवत और शर्मिष्ठा को कुसुम के घर म छोडकर जब जगतप्रकाश अपने मकान की ओर चला, उसका मन काफी भारी था। वह एक भयानक नरक से निकलकर आया था और उस नरक की छाया उस पर मँडरा रही थी। वैसे उसके चारो ओर शान्ति थी, बम्बई का सब काम-काज बाकायदा हो रहा था, कही किसी तरह की हिंसा नही, कही किसी प्रकार की घृणा नही। लेकिन कही कोई कसक जमकर बैठ गई थी उसके अन्दर। जिस दृश्य को देखकर वह लौटा था वह कितना अमानुषिक था!

जगतप्रकाश को देखते ही जमील ने कहा, "बडे अच्छे आ गए बरखुरदार, मुझे गाव जाना है, घर से चिट्ठी आई है।"

जगतप्रकाश का दिल धक स रह गया, उसने पूछा, "खैरियत तो है? वहा तो किसी तरह का फसाद नही है?"

'खैरियत गायब हो चुकी है इस मुल्क से। न जाने कब क्या हो जाए वहाँ पर नफरत का माहौल वहा भी पहुँच गया है, वहा के मुसलमान भाग रहे हैं।'

नौकर ने चाय बनाई, दोनो चाय पीने बैठ गए। जगतप्रकाश ने अपने अनुभव सुनाए किस तरह शर्मिष्ठा को लूट करके व लाग लाए, किस तरह लाला देवराज मारे गए।

जमील का मुह उतर गया, "या खुदा ! यह सब हो चुका है ! अख-बारा मे पढा तो है लेकिन हालत की अहमियत का पता नही था। जसवन्त साहब का सब कुछ खत्म हो गया पाकिस्तान म।" और जमील सिर झुका कर बैठ गया। फिर सिर उठाकर उसने कहा, 'मुल्क का बँटवारा नफरत की बिना पर हुआ है, उसकी शक्ल यह होनी ही थी। सईदा का खौफ गलत नही मालूम होता। सोच रहा था कि तुम आ गए हो, दो-चार रोज रुककर जाऊँ लेकिन अब तो मुझे आज ही जाना पडेगा। जसवन्त साहेब से मिलना चाहता था लेकिन—लेकिन गाव से लौटकर ही मिलूगा उनसे, अभी उनका जख्म ताजा है।"

उसी दिन शाम की गाडी से जमील महोना के लिए रवाना हो गया।

बम्बई आकर शर्मिष्ठा की हालत सँभलने लगी। अब वह थोडा बहुत बोलने लगी थी, कुल्सुम के साथ वह कभी-कभी घूम भी आती थी। जसवन्त का अधिकाश समय परवेज के साथ बीतता था। जसवन्त को अपने को फिर से स्थापित करना था। और जगतप्रकाश अकेला रह गया था—नितान्त अकेला।

जसवन्त सब कुछ खो चुका था। सिवा दिल्ली मे लाला देवराज की कोठी के उसके पास और कुछ न रह गया था। जगतप्रकाश को कुल्सुम ने जसवन्त के सम्बन्ध म सब कुछ बताया था जसवन्त के सामने समस्या थी कि वह अब क्या करे! लाड-प्यार मे पली शर्मिष्ठा उसके साथ थी, और वह शर्मिष्ठा भी बुरी तरह टूटी हुई थी। फिर जसवन्त का पुत्र तिलक भी तो था, उसे पालना, उसे पढाना लिखाना! जसवन्त को बनना है, अपने लिए उतना नही जितना अपनी पत्नी के लिए, अपने बच्चे के लिए।

लेकिन जगतप्रकाश! वह अकेला है। उसके आगे-पीछे कोई नही है। वह किसके लिए बने! निरुद्देश्य और लक्ष्यहीन! उसके अकेलेपन की भावना ने उदासी का एक घना कुहरा बनकर उसके सारे अस्तित्व को ढँक लिया था। एक कुलसुम है जो अभी तक आत्मीयता की एक की भाँति उसके जीवन मे कभी-कभी प्रकाश भर देती है, लेकिन वह कुल्सुम! इसका पति है इसके माता पिता हैं आगे चलकर शायद इसके बाल-बच्चे भी हो। और कुल्सुम की यह आत्मीयता केवल जगतप्रकाश के प्रति सीमित नही थी, वह

असीम थी। वह आत्मीयता एक अक्षय निधि की भाँति सब ओर वितरित हो रही थी, वह आत्मीयता जसवन्त के प्रति थी, शर्मिष्ठा के प्रति थी, तिलक के प्रति थी।

जिस आत्मीयता की भूख जगतप्रकाश को थी, वह इधर कुछ समय से उसे जमील से ही मिल रही थी, और जमील अब अपने गाँव चला गया था। जाते समय जमील ने उससे कहा था कि महोना पहुँचकर वह उसे पत्र लिखेगा। लेकिन जमील ने महोना पहुँचकर उसे कोई पत्र नहीं लिखा। दिन बीत रहे थे, सप्ताह बीत रहे थे और जगतप्रकाश अपने अकेलेपन में छटपटा रहा था।

परवेज़ की सहायता से जसवन्त कपूर और त्रिभुवन मेहता की एक पार्टनरशिप फर्म की योजना बन गई थी, और इस पार्टनरशिप फर्म को बम्बई एवं अहमदाबाद की कपड़ा मिलों की एजेंसी दिल्ली पंजाब के लिए दिलाने का वादा परवेज़ ने कर लिया था। कपड़े पर से कंट्रोल हट गया था। अप्रैल के महीने में दिल्ली जाकर जसवन्त इस फर्म का कामकाज सँभालेगा, त्रिभुवन बम्बई में रहकर काम काज देखेगा। कुलसुम ने इस पार्टनरशिप में जगतप्रकाश को सम्मिलित करने की बात चलाई थी, लेकिन जगतप्रकाश ने इनकार कर दिया था। वह यह सब क्या करे, किसके लिए करे?

देश के विभिन्न भागों के हत्याकाण्ड करीब-करीब समाप्त हो गए थे, अब समस्या उठ खड़ी हुई थी विस्थापितों को बसाने की। बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू मुसलमान पंजाब के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में आ रहे थे। जूनागढ़ और कश्मीर को लेकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के सम्बन्ध बिगड़ते जा रहे थे।

जूनागढ़, कश्मीर—और उसके बाद, क्या हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच युद्ध अनिवार्य है? देश के बँटवारे के बाद भी क्या शांति सम्भव नहीं है?

समय बीतता जा रहा था और जगतप्रकाश को जमील की कोई खबर नहीं मिल रही थी। यह जमील को क्या हो गया, वह कहाँ रह गया? युक्त प्रान्त में भी तो मुसलमानों की हत्याएँ हुई हैं। क्या जमील की भी तो हत्या नहीं कर दी गई? एक गहरी आशंका भरती जा रही थी जगतप्रकाश में। डेढ़ महीना हो गया था जमील को गये हुए, और नवम्बर का पहला सप्ताह

आ गया था। जगतप्रकाश सोच रहा था कि वह स्वयं महोना जाकर जमील का पता लगाए। लेकिन जगतप्रकाश को जाना नही पड़ा। पाच नवम्बर को जमील अपने परिवार के साथ बम्बई आ गया।

जमील को देखते ही जगतप्रकाश का मन खिल गया "अरे जमील काका! कहा रह गए थे? तुमने जाने के बाद से मुझे अपनी कोई खबर ही नही दी। फिक्र हो रही थी कि न जाने तुम्हे क्या हो गया। कल परसो मैं महोना जाने की सोच रहा था तुम्हे ढूढने के लिए।"

जमील के मुख पर एक तरह की थकावट से भरी उदासी थी, "पहले सामान रख लू, फिर बतलाता हूँ।"

अपने कमरे मे अपने बीवी बच्चो को ठहराकर और अपना असबाब रखवाकर जमील जगतप्रकाश के पास आकर बैठ गया। कुछ रुककर उसने कहा, "क्या बतलाऊँ, मैं अपनी मुसीबतो मे फँसा रहा। एक महीने से अपने बीवी-बच्चो के साथ भटक रहा हूँ।"

"क्या, ऐसी क्या बात आ पडी?"

"यही बताता हूँ। हम लोग पाकिस्तान जा रहे है, अपने वतन से हमेशा के लिए नाता तोड रहे है हम लोग।"

जगतप्रकाश की चेतना पर जैसे बहुत बडा प्रहार हुआ हो, "पाकिस्तान जा रहे हो जमील काका! तुम पाकिस्तान जा रहे हो?"

करुण स्वर मे जमील बोला, 'हा बरखुरदार! मैं मुसलमान हूँ न! इस हिन्दुस्तान मे अब मुसलमान महफूज नही है और पाकिस्तान मे हिन्दू महफूज नही है। जिस नफरत की बुनियाद पर इन दो देशो की तामीर हुई है उसे नजरअन्दाज नही किया जा सकता।"

"लेकिन महात्मा गाधी इस घृणा के वातावरण को दूर कर रहे हैं। हिन्दुस्तान धर्म निरपेक्ष राज्य होगा, इसकी घोषणा महात्मा गाधी ने की है जवाहरलाल नेहरू ने की है।"

जमील हँस पडा, एक फीकी हँसी, 'महात्मा गाधी इस नफरत को दूर नही कर सकेंगे, किसी हालत मे दूर नही कर सकेंगे। कुदरत का कानून है क्रिया प्रतिक्रिया! पाकिस्तान मे पनपने वाली नफरत का जवाब होगा हिन्दुस्तान मे नफरत का पनपना। जो कुछ होगा वह मजहबी नफरत की

"जमील काका! मै तुमसे विनय करता हूँ कि तुम पाकिस्तान मत जाओ, मैं बिल्कुल अकेला रह जाऊँगा। एक तुम हो जिसे मैं अपना समझता हूँ, तुम भी मेरा साथ छोड़े जा रहे हो।"

जमील ने एक ठंडी सास ली "कौन किसका है बरखुरदार! हिम्मत करो और जँवा मर्द बनो! यहाँ तक हम दोनो का साथ था, अब हम दोनो का जुदा होना है। जुदाई का सदमा जितना तुम्हे है उससे कम मुझे नही है, क्योंकि मुझे तो अपने वतन से भी जुदा होना पड रहा है।

पाँचवे दिन सुबह के समय जमील को जहाज पर चढाकर जब जगतप्रकाश वापस लौटा उसके पैर काँप रहे थे। अपने कमरे म वह मर्माहत-सा बैठ गया। नौकर से उसने कह दिया कि उसकी तबीअत ठीक नहीं है, वह खाना नही खाएगा।

और जगतप्रकाश सोच रहा था—जमील न गलत कहा है, गलत समझा है। जमील के पास उसका आधार था, उसकी पत्नी म, उसके बच्चा म। वतन किसका किसके साथ रहा है? अपने गाव को छोडकर जगतप्रकाश भी तो बम्बई मे आ पडा है। और यह जमील, वह भी तो अपने गाँव को छोडकर बम्बई म रह रहा था, जिसे वह अपना वतन समझता था और कहता था, वहाँ से हजार मील की दूरी पर। शायद इतनी ही या फिर इससे भी कम दूरी होगी उसके गाँव की लाहौर स।

वह जमील, जिसे जगतप्रकाश अपना अभिन्न साथी समझता था, वह भी चला गया। वह जमील, जो साम्प्रदायिकता से इतना दूर था, जो इतना निस्पृह था, इस साम्प्रदायिकता की लपट में आ गया। दिन भर वह चुपचाप अपने कमरे मे लेटा रहा। वह जाग रहा था या वह सो रहा था, इसका उसे पता नही था, वह होश म है या बेहोश है इसका उसे ज्ञान नहीं था। उसका अतीत चलचित्र की भाँति उसके सामने आ रहा था। उसकी माता, उसके पिता, उसकी बहन! माता गई, पिता गए, बहन गई।

कितनी ममता थी, कितनी साध थी उसकी बहन म, और वह गोगी गायब हो गई। कहाँ गए उसके पिता? कहाँ गई उसकी माता? कहाँ गई उसकी बहन? और तभी एकाएक शिवकुमारी का चित्र उसके आगे आ गया। वह शिवकुमारी कहाँ गई?

बुनियाद पर।" और फिर रुककर जमील ने कहा, "मैं हमेशा से जानी तौर से मजहब के खिलाफ रहा हूँ, लेकिन मजहब को मैं छोड भी तो नही सकता। मै मुसलमान घर मे पैदा हुआ हूँ, इस्लाम को अगर मैं छोड दू तो क्या हिंदू बनू, वहा फिर मजहब का झमेला। बदकिस्मती तो यह है कि मजहब को छोडकर रहा भी तो नही जा सकता।"

जगतप्रकाश बोला, 'जमील' कावा! थोडे दिना मे यह मजहब का पागलपन दूर हो जाएगा। इतना बडा कदम मत उठाओ! तुम यही रहो।"

और जमील बोला, "काश कि मैं यहाँ रह सकता! लेकिन अब मुमकिन नही। मौजूदा हालात म मुसलमाना को हिंदुआ का गुलाम बनकर रहना पडेगा इस देश मे। मैं नही चाहता था कि मौजूदा हालात मे आजादी मिले, लेकिन होनेवाला होकर रहता है। मुझे अब जाना ही है, पाकिस्तान मे हिंदुओ की गुलामी तो नही करनी पडेगी। वहा जाकर कम्युनिस्ट पार्टी का काम करूँगा। इस हिंदुस्तान मे तो अब सरमाएदारी का शिकजा पुरी तरह कस जाएगा, यह सेठ, मिल्मालिक, बनिए, बरहमन—इही का बोलबाला रहेगा यहाँ, यहा कम्युनिज्म के कायम होने के चासेज करीब करीब खत्म हो चुके है। इस्लाम कम्युनिज्म के ज्यादा नजदीक है।"

जगतप्रकाश ने दबी जबान मे कहा, "मेरा ऐसा खयाल है कि गाधीवाद कम्युनिज्म के ज्यादा नजदीक है।"

और जमील ने तत्काल उत्तर दिया, "अगर गाधीवाद नाम की कोई चीज है। लेकिन मैं गाधीवाद को महज उलझना का ताना-बाना समझता हूँ। खैर छोडो भी। हुआ यह कि युक्त प्रात म भी दगे हुए हैं, कत्ल हुए हैं और आगे चलकर शायद और भी हा। गाव पहुचकर मैंने महसूस किया कि इस जमीन से हमारी जडें उखड गई हैं। वहाँ के मुसल्मान या तो पाकिस्तान चले गए हैं या जा रहे हैं। अपने बीवी-बच्चा के साथ मैं भी दिल्ली गया, वहा होते हुए पाकिस्तान जाने के लिए। लेकिन दिल्ली और पजाब से पाकिस्तान का रास्ता बन्द कर दिया गया है। अब सिर्फ बम्बई स जहाज पर जाया जा सकता है।"

जगतप्रकाश को लग रहा था कि उसकी चेतना लोप हाती जा रही है उसने अपने को सम्हालने की कोशिश की। बडे करुण स्वर म उसने कहा

"जमील बाबा ! मैं तुमसे विनय करता हूँ कि तुम पाकिस्तान मत जाओ, मैं बिल्कुल अकेला रह जाऊँगा। एक तुम हो जिसे मैं अपना समझता हूँ, तुम भी मेरा साथ छोड़े जा रहे हो।"

जमील ने एक ठंडी साँस ली 'कौन किसका है बरखुरदार ! हिम्मत करो और जँवा मर्द बनो ! यहा तक हम दोनो का साथ था, अब हम दोनो का जुदा होना है। जुदाई का सदमा जितना तुम्हे है उससे कम मुझे नही है, क्योकि मुझे तो अपने वतन से भी जुदा होना पड रहा है।"

पाचवे दिन सुवह के समय जमील को जहाज़ पर चढाकर जब जगतप्रकाश वापस लौटा उसके पैर काप रहे थे। अपने कमरे म वह मर्माहत-सा बैठ गया। नौकर से उसने कह दिया कि उसकी तबीअत ठीक नहीं है, वह खाना नही खाएगा।

और जगतप्रकाश सोच रहा था—जमील न गलत कहा है गलत समझा है। जमील के पास उसका आधार था, उसकी पत्नी म, उसके बच्चा मे। वतन किसका किसके साथ रहा है ? अपने गाव को छोडकर जगतप्रकाश भी तो बम्बई मे आ पडा है। और यह जमील, वह भी तो अपन गाँव को छोडकर बम्बई मे रह रहा था, जिसे वह अपना वतन समझता था और कहता था, वहा से हजार मील की दूरी पर। शायद इतनी ही या फिर इससे भी कम दूरी होगी उसके गाव की लाहौर से।

वह जमील, जिसे जगतप्रकाश अपना अभिन्न साथी समझता था वह भी चला गया। वह जमील, जो साम्प्रदायिकता स इतना दूर था, जो इतना निस्पृह था, इस साम्प्रदायिकता की लपेट मे आ गया। दिन-भर वह चुपचाप अपने कमरे मे लेटा रहा। वह जाग रहा था या वह सो रहा था, इसका उसे पता नही था, वह होश मे है या बेहोश है, इसका उसे ज्ञान नहीं था। उसका अतीत चलचित्र की भाति उसके सामने आ रहा था। उसकी माता, उसके पिता, उसकी वहन ! माता गई, पिता गए, बहन गई।

कितनी ममता थी, कितनी साध थी उसकी बहन मे, और वह गोली खाकर मरी। कहा गए उसके पिता ? कहा गई उसकी माता ? कहाँ गई उसकी बहन ? और तभी एकाएक शिवदुलारी का चित्र उसके आ आगे गया। वह शिवदुलारी कहाँ गई ?

यमुना, सुषमा, मालती—एक के बाद एक ये चित्र उभर रहे थे जगत प्रकाश के सामने असम्बद्ध, उलझे हुए! और जब जगतप्रकाश की आंख खुली, शाम हो रही थी। वह उठा, उसने चाय पी और फिर वह घूमने निकल पड़ा। लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि एक अजीब तरह की थकान भर गई है, उसके तन में, उसके मन में। उसके पैरों में जैसे ताकत ही नहीं है। उसके चारों ओर जो कुछ था वह बेपहचाना हुआ धुंधला धुंधला। किसी प्रकार का हर्ष नहीं, उल्लास नहीं। हर तरफ निराशा की एक घुटन! रात के समय जब वह कुसुम के यहाँ पहुँचा, जसवन्त ने उसे देखते ही कहा, "अरे! तुम्हारा चेहरा बड़ा उतरा हुआ है! क्या बात है?"

"कोई खास बात नहीं।" वह बोला, "जमील और उसके बीवी-बच्चा को सुबह जब जहाज पर चढ़ाकर लौटा हूँ, तब से तबीयत बहुत उदास है।"

शर्मिष्ठा ने कहा, 'वे लोग सही सलामत यहाँ से चले गए, यह बड़ा अच्छा हुआ। हिन्दुस्तान में मुसलमानों को रहने का कोई अधिकार नहीं है।"

जगतप्रकाश शर्मिष्ठा की बात सुनकर चौंक उठा, इतनी भयानक कटुता और आक्रोश! और तभी कुसुम ने शर्मिष्ठा के कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'नहीं शर्मिष्ठा देन! ऐसा नहीं कहते।"

शर्मिष्ठा की आखों में आसू आ गए, "मैं क्या करूँ? मेरा तो सब कुछ लुट गया। लालाजी गए, जमीन-जायदाद गई, गहने कपड़े गये। अब तो दूसरों के सहारे जीवित रहने की अवस्था आ गई है।" और एकाएक शर्मिष्ठा की हिचकियां बँध गईं।

इसके बाद वहाँ का वातावरण अजीब तरह से विक्षुब्ध हो गया। और मन में एक तरह की कड़ुवाहट लिए हुए जगतप्रकाश अपने घर वापस लौटा।

यह साम्प्रदायिक घृणा का जहर! यह देश के कोने कोने में फैल गया है। जमील ने ठीक ही कहा था कि महात्मा गांधी इस जहरीले जहर को दूर नहीं कर सकते। रोज शाम के समय महात्मा गांधी दिल्ली में अपनी प्रार्थना-सभा में अपनी बात कहते थे, रोज रात के समय रेडियो द्वारा

महात्मा गाधी की वातो का प्रसारण होता था। लेकिन सब व्यर्थ। महात्मा गाधी के प्रवचना मे कभी कभी एक खीझ भी दिखती थी हिन्दुआ की भर्त्सना भी मिलती थी उनकी साम्प्रदायिकता के लिए और घृणा उस वातावरण मे उन प्रवचनो का उल्टा असर पडता था जनता पर। रास्ता चलते, ट्रामो पर, बसा पर लोग महात्मा गाधी का भला बुरा कहते थे। नफरत के जहर से भरा जन-समुदाय प्रेम, दया और अहिंसा का पाठ सुनने को तैयार नही था।

कश्मीर म हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच युद्ध आरम्भ हो चुका था, साम्प्रदायिक घृणा अपनी चरम सीमा पर थी।

और उधर भारत सरकार मे प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू और उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल मे मतभेद बढते जा रहे थे। जवाहरलाल नेहरू का साथ महात्मा गाधी दे रहे थे, काग्रेस का सगठन सरदार वल्लभभाई पटेल के हाथ म था। कश्मीर मे शीत-काल के कारण युद्ध की गति धीमी पड गई थी, लेकिन पाकिस्तान और हिन्दुस्तान मे आपसी युद्ध की धमकियाँ चल रही थी।

महात्मा गाधी नफरत के इस जहर का दूर करने के लिए कृतसकल्प थे। लेकिन व अपना वश केवल हिन्दुआ पर ही समझते थे—देश के बँटवारे मे वे हिन्दू पक्ष का ही तो प्रतिनिधित्व कर रहे थे। १३ जनवरी १९४८ को उन्होने हिन्दुस्तान की, और विशेष रूप से दिल्ली की साम्प्रदायिक अवस्था का सम्हालने के लिए अनशन आरम्भ कर दिया। इस अनशन से हिन्दुस्तान म साम्प्रदायिक स्थिति मे काफी सुधार हुआ। अठारह जनवरी को महात्मा गाधी ने अनशन समाप्त कर दिया।

लेकिन क्या इस तरह के अनशना से नफरत का जहर दूर किया जा सकता है? हिंसा का उत्तर हिंसा है, अहिंसा अस्वाभाविक है क्योकि अहिंसा नकारात्मक तत्व है।

क्या महात्मा गाधी की हिन्दुआ की भर्त्सना मे हिंसा नही है? क्या महात्मा गाधी के अनशन म हिंसा नही है? जगतप्रकाश इन प्रश्नो म उलझा हुआ था, लेकिन वह देख रहा था कि जहा जहा महात्मा गाधी गये वहा से हिंसा जाती रही।

महात्मा गाधी ने कुछ दिन पहले कहा था—मैं सवा सौ वर्ष जीवित रहना चाहता था, लेकिन अब मेरी जीने की इच्छा जाती रही है। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे दुनिया से उठा ले।

देश का विगठन हुआ मानवता का विगठन हुआ, मूल्यों का विगठन हुआ और महात्मा गाधी नितान्त निरुपाय से यह सब देखते रहे—सम्मोहन से। उनके स्वर में पीडा थी, उनकी वाणी में पीडा थी उनके प्राणों में पीडा थी। लेकिन उनकी यह पीडा कभी-कभी उनके अनजाने ही कटु हो सकती थी। यह कटुता दूसरो के प्रति नही थी, यह कटुता अपना के प्रति थी, अपने प्रति थी।

भारत की राजनीति से महात्मा गाधी टूट चुके थे, चीजें उनके हाथ से बाहर हो चुकी थी। न प्रेम किसी पर आरोपित किया जा सकता है, न हिंसा को किसी से जबरदस्ती निकाला जा सकता है। यह कटुता भी तो एक तरह की हिंसा ही है, चाहे वह कटुता अपने प्रति क्यो न हो।

जगतप्रकाश अपने से उलझ गया, अहिंसा का दर्शन ही उलझा हुआ है। यह दर्शन आदर्शों के कवित्व में ओत प्रोत है, यह दर्शन भावना की उदात्तता का प्रतीक है, लेकिन यह दर्शन सत्य नही है, क्योंकि यह नित्य नही है।

महात्मा गाधी के अनशन तोडने के तीन दिन बाद ही उनकी प्रार्थना सभा के पास ही बम का एक विस्फोट हुआ। जिस व्यक्ति ने वह बम फेंका था वह गिरफ्तार कर लिया गया। और महात्मा गाधी ने उस आदमी के प्रति दया का भाव दिखाया। अपनी कोई चिन्ता नही, अपनी हत्या के या प्रयत्न करने वाले के प्रति उनका कोई आक्रोश नही। वास्तव में व महात्मा हैं।

लेकिन महात्मा भी तो मनुष्य है, और कोई भी मनुष्य पूर्ण नही है। कहीं कोई कमी होनी ही चाहिए हरेक मनुष्य में।

जगतप्रकाश अब अपने को नितान्त टूटा हुआ अनुभव कर रहा था। उसकी सारी आस्थाएँ बिखर चुकी थी, उसके सारे विश्वास मर चुके थे। उसके सामने था केवल सूनापन—उस सूनेपन के सिवा और कुछ नही।

महात्मा गाधी ने कहा था—अब मुझे जीने की इच्छा नही रह

लेकिन जगतप्रकाश को अनुभव हो रहा था कि उसके अन्दर जीने की इच्छा मर चुकी है। घुटन—भयानक और असह्य घुटन! उस घुटन को वह कभी कभी दूर कर लेता था जमील से बात करके, उसके सामने अपनी मनोव्यथा को उँडेल करके। और जिस जमील को वह अभिन्न, अडिग और आदर्श समझता था, वह जमील कायर की भांति भाग गया था उसे अकेला छोडकर। जिस दिन जमील गया था उसी दिन वह निष्प्राण-सा हो गया था। चलते चलते जमील उसे गले लगाकर रो पड़ा था, "बरखुरदार, किस्मत को यही मंजूर है! लेकिन हम दोनों एक दूसरे के हमेशा हमेशा नजदीक रहेंगे।" और उस समय भावावेश में उसके भी आंसू आ गए थे। लेकिन वह सब क्षणिक आवेग था। कौन किसके नजदीक रहा है? कौन किसके नजदीक रह सकता है?

जगतप्रकाश अकेला था, शायद यह अकेलापन ही सत्य है। जिसे 'साथ' कहा जाता है, वह सिर्फ भुलावा है। यह भुलावा उसके भाग्य में नहीं था, और जिन्दगी भुलावे का ही तो दूसरा नाम है।

जगतप्रकाश को अपनी विचारधारा से स्वयं भय लग रहा था। कहीं कोई सहारा तो चाहिए जीवित रहने के लिए, और उसे कहीं कोई सहारा नहीं दिख रहा था। बाहर जो कुछ है, वह स्वयं ही बे-सहारे हैं। यह सहारा तो उसे अपने अन्दर ही ढूंढना पड़ेगा। आस्थाओं को फिर से बटोरना होगा, विश्वास को पुनर्जीवित करना होगा। जीवन निर्माण है, लेकिन यह निर्माण अपने हाथ में कहां है?

उस दिन दोपहर को जगतप्रकाश खाना खाकर सो गया और देर से उसकी आंख खुली। कुसुम ने उससे वादा कर लिया था कि वह शाम के छ बजे आएगी—शाम को सब लोग पिक्चर देखने चलेंगे। उसने घड़ी देखी पौने छ बजे थे। जल्दी-जल्दी तैयार होकर वह चाय पीने के लिए उठ गया और तभी कुसुम की कार उसके फ्लैट के सामने रुकी। कुसुम के साथ परवेज और जसवन्त थे। दरवाजे से ही उसे जसवन्त की आवाज सुनाई पड़ी, "जगत! बड़ा गजब हो गया। अभी कुछ देर पहले महात्मा गांधी की हत्या हो गई! अभी अभी रेडियो से यह खबर आई है।"

इन शब्दों के आते ही जगतप्रकाश खड़ा हो गया था, जसवन्त की बात

सुनकर वह बोल उठा, "नहीं नहीं—यह नहीं हो सकता !"

और कुसुम ने कहा, "जसवन्त ठीक कह रहा है, महात्मा गांधी की हत्या हो गई।"

'महात्मा गांधी की हत्या हो गई—महात्मा गांधी की !" रुंधे हुए गले से जगतप्रकाश ने कहा और वह कुर्सी पर गिर-सा पड़ा।

सब लोग बैठ गए, जसवन्त कह रहा था, "अपनी प्रार्थना-सभा में जा रहे थे, उसी समय एक आदमी ने उन पर रिवाल्वर से फायर किया। तीन गोलियाँ लगीं उन्हें और उसी समय उनकी मृत्यु हो गई। उनके मुख पर अन्तिम शब्द थे—'हे राम !' हत्या करने वाला पकड़ लिया गया, वह हिंदू था।'

पता नहीं जगतप्रकाश ने जसवन्त की बात समझी या नहीं, वह फटी फटी आंखों से ऊपर की छत की ओर देख रहा था, शायद अपने अन्दर वाले प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए। कुसुम जगतप्रकाश की इस मुद्रा से डर गई, "अरे जगत ! इस तरह क्या देख रहे हो ?"

जगतप्रकाश ने कोई उत्तर नहीं दिया, अपलक वह ऊपर देख रहा था उसके मुख पर असह्य पीड़ा की छाप थी।

कुसुम चिल्ला उठी, "अरे परवेज देखो तो ! जगत को क्या हो गया।'

जसवन्त ने बढ़कर जगतप्रकाश का कन्धा हिलाया, और तभी उसका सिर लुढ़क गया। परवेज बोला, "अरे—मैं अभी डॉक्टर को बुलाता हूँ।" और वह बाहर की ओर दौड़ा।

कुसुम ने बढ़कर जगतप्रकाश का हाथ पकड़ लिया—उसमें नब्ज़ नहीं थी। उसने पीछे हटकर कहा, "क्या—महात्मा के पीछे एक फरिश्ता भी गया।' और उसकी आँखों से दो आँसू टपक पड़े। ●